

प्रकाशक—

आगम अनुयोग प्रकाशन

पोस्ट बॉक्स ११४१

दिल्ली-७

प्रथमावृत्ति

वीर सदन २४६२

विश्व मदन २०२३

ईशा मन १६६७

मूल्य २५ रु०

मुद्रक —

उद्योगशाखा प्रेम,

दिल्लीके डिफेंस-३

## समर्पण

जैनाग्रमो के  
अध्ययन मे  
अभिरुचि रखनेवाले  
जिज्ञासु जनो को

-- मुनि कमल

## विज्ञप्ति

पूर्व प्रकाशित सूचना के अनुसार अनुयोग शब्द सूची त्मी पुस्तक में दत्त की याचना थी किन्तु पृष्ठ संख्या अधिक्त हो जाने से अनुयोग शब्द सूची एवं कनिषथ परिशिष्ट पृथक् पुस्तिका के रूप में प्रकाशित करने की योजना है। यह पुस्तिका ब्रह्म जैनागम निर्देशिका के ग्रन्थों को ही दत्त का नियम है एवं अन्य सम्बन्धित कवच इस पुस्तिका के लिए आवेदन पत्र न भेजें।

आगम अनुयोग-ग्रन्थराज का प्रकाशन कार्य चल रहा है निकट भविष्य में इसके प्रथम विभाग चरणानुयोग स्वाध्याय के लिए उपलब्ध हो सकेगा।

श्री गान्धिभाई बनमाला शर्मा के उदारता पूर्ण सहयोग में यह विद्यालय पुस्तक इस रूप में दत्त अल्प समय में आपकी करकमला में पट्टावाप्त है। इसका कारण हम उनके चिरञ्जन्य हैं।

—मन्त्री

# जैनागम-निर्देशिका

## आगम-सूची

श्रंग आगम	पृ० संख्या	श्रंग आगम	पृ० संख्या
१. आचाराग	१	२६. नन्दीसूत्र	८३२
२. सूत्रकृताग	६३	२७. अनुयोगद्वार	८३१
३. स्थानांग	६७	४ छेद आगम	
४. समवायांग	२०१	२८. वृहत्कल्प	८४५
५. भगवतीसूत्र	२६१	२९. जौनकल्प	८५७
६. ज्ञाताधर्मकथा	४३१	३०. व्यवहार	८५६
७. उपानकदशा	४६७	३१. दशाश्रुतराज्य	८७३
८. अन्तकृद्दशा	४८३	३२. निशीथ	८७७
९. अनुरोत्तपपातिकदशा	४९७	३३. श्रावश्यक	७६३
१०. प्रश्नव्याकरण	५०३	३४. कल्पसूत्र	८६६
११. विपाक	५१३	१० प्रकीर्णक	
१२ उपांग आगम		३५. चतुष्करण	प्रकीर्णक ६१६
१२. औपपातिक	५२७	३६. आतुर-प्रत्याख्यान	... ६१६
१३. राजप्रदनीय	५४५	३७. महाप्रत्याख्यान	... ६२१
१४. जीवाभिगम	५६५	३८. भवतपरिज्ञा	... ६२४
१५. प्रज्ञापना	६२३	३९. तन्दुलवैचारिक	... ६२७
१६. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति	६७३	४०. संस्तारक	... ६३०
१७. चन्द्रप्रज्ञप्ति.	७२६	४१. गच्छान्तर	... ६३१
१८. सूर्यप्रज्ञप्ति	७२६	४२. गणिविद्या	... ६३३
१९-२३ निरयाचनिकादि	७४५	४३. देवेन्द्रस्तव	... ६३५
२ मूल आगम		४४. मरणसमाधि	... ६३८
२४. दशवैकालिक	७५७	१ नियुक्ति आगम	
२५. उत्तराध्ययन	७६७	४५. पिण्ड-नियुक्ति	६४१

## रिपय-निर्देशन में प्रयुक्त आगमों की प्रतियाँ

१ आचारान —	आगमोदय समिति मूल
२ सूत्ररत्न	जैनाचार्य श्री जगद्गुरुनाथ जी म० क. लखनऊ में सम्पादित
३ स्थानांग	मुनि श्री बल्लभविजयजी सम्पादित
४ समवायांग	जैनधर्म प्रसारक समी भावनगर
५ भगवती सूत्र	प० बेचरदास जा डोगी सम्पादित
६ ज्ञानाधर्म कथा	आगमोदय समिति मूल
७ उपामक इति	“ “
८ शान्तकृष्ण	“ “
९ अनुतरावशानिक	“ “
१० प्रश्नव्याकरण	“ “
११ विराट	“ “
१२ श्रीपत्रिक	“ “
१३ रावप्रश्नीय	“ “
१४ जीवाभिगम	“ “
१५ प्रपायना	प० भगवानदास हर्षचन्द्र सम्पादित
१६ लम्बुदाय प्रशस्ति	आगमोदय समिति मूल
१७ चन्द्रप्रज्ञप्ति — सूर्यप्रज्ञप्ति	“ “
१८ निरयावलिहाडि	“ “
१९ दशरुहाजिक	जैनाचार्य श्री कामाराम जी म० सम्पादित

- |                         |                                       |
|-------------------------|---------------------------------------|
| २१ नन्दीसूत्र           | पूज्य श्री हस्तिमल जी म० संशोधित      |
| २२ अनुयोग द्वार         | जैनाचार्य श्री आत्माराम जी म० संपादित |
| २३ व्यवहार सूत्र        | पूज्य श्री अमोलख ऋषि जी म०            |
| २४ बृहत्कल्प सूत्र      | डा० जीवराज घेलाभाई टोशी संपादित       |
| २५ दशा श्रुतस्कंध       | जैनाचार्य श्री आत्माराम जी म० संपादित |
| २६ निशीथ                | मुनि श्री जिनविजय जी संपादित          |
| २७ जीतकल्प              | मुनि श्री पुण्यविजय जी म० संपादित     |
| २८ दस प्रकीर्णक         | आगभोदय समिति, सुरत                    |
| २९ विरडनिर्युक्ति       | गणिवर्य श्री हंससागर जी म० संपादित    |
| ३० प्रवचन किरणावली      | आचार्य विजयपदम जी म० लिखित            |
| ३१ अभिधान राजेन्द्र कोश |                                       |
| ३२ अर्धमागधी कोश        |                                       |
| ३३ पाइयसद्द महण्णव      |                                       |





## प्रवचन-प्रभावना

### श्रमूत्य आगम-निधि की सुरक्षा

वीर-निर्वाण के पश्चात् एक हजार वर्ष की अवधि में एक-एक युग लम्बे तीन दुर्मिक्ष आये और गये । इन दुर्मिक्षों में निर्ग्रन्थ श्रमणों से आगम-वाचना, पृच्छना-परिवर्तना और अनुप्रेक्षा न हो सकी । इसलिए क्रमशः प्रत्येक दुर्मिक्ष के अन्त में पाटलीपुत्र, मथुरा और वलभी में म० नद्रवाहु स्कंदिलाचार्य और आचार्य नागार्जुन की अध्यक्षता में आगमों की सुरक्षा के लिए श्रमण संघ ने वाचनाओं का आयोजन किया ।<sup>१</sup> यहाँ तक श्रुतपरम्परा प्रचलित रही ।<sup>२</sup>

वीर-निर्वाण के ६८० वर्ष पश्चात् वलभी में देवधि गणि क्षमा श्रमण की अध्यक्षता में श्रमण-संघ ने आगमों को लिपिवद्ध किया ।<sup>३</sup> लिखना और पुस्तक रखना निर्ग्रन्थ श्रमण के लिए यद्यपि सर्वथा निषिद्ध था, किन्तु देवधिगणि ने जब स्मृति-दीर्घत्य का स्वयं अनुभव किया तो आगमों की सुरक्षा के लिए संघ के समक्ष पुस्तक लेखन के अपवाद का नव विधान किया । आगमों के लिपिवद्ध होने के पश्चात् १४०० वर्ष की अवधि में दुष्काल के कुचक्र ने जैन संघ से अनेक आगम छीन

१ (क) पाटलीपुत्र वाचना वीर निर्वाण के १६० वर्ष पश्चात्

(ख) माथुरी वाचना वीर निर्वाण के ८२७ वर्ष पश्चात्

(ग) वालभी वाचना माथुरी वाचना के समकाल हुई है ।

२ कुछ विद्वानों का मत है कि—माथुरी और वालभी वाचनाओं में आगम लिपिवद्ध हो गये थे ।

३ वीर निर्वाण के ६६३ वर्ष पश्चात् वलभी में देवधि गणि ने आगम और प्रकीर्णक लिपिवद्ध करवाए । यह भी एक मान्यता है ।



लिए । आचारान्त का सातवा महापरिज्ञा अध्ययन और दमर्षा प्रश्न व्याकरण अग पूण' टीकाकारों के धुग म भी उपनन्द नहीं थे । आगमों के लेखनकाल में संकलित गद्योच्च में जिन कालिक और उक्तिक सूत्रों को एक सम्बन्धी सूची अंकित है उनमें से अनेक आगम वनमान में अनुपलब्ध हैं २ ये आगम क्व और कने अदृष्ट हुए । इस सम्बन्ध में पूण विवरण प्रस्तुत करने का मापन हमारे पास नहीं है ।

प्राकृतिक विषयों से जिन-जागी की सुरक्षा का उत्तरदायित्व अधिकाधिक वेद-वेदियों का है । किन्तु ह्यस्त-काल के प्रभाव से बहिए या हमारे दुर्भाग्य से बहिए वे भी आगम-सुरक्षा से सबसा उदासीन रहे । फिर भी जेहनमेर पाठन आदि के विज्ञान मान मण्डार में प्रचुर अनुभूय आगम निधि सुरक्षित है । जिनजागी प्रभो जिज्ञासु जन उनक सहायकों एवं सरसकों के पदव आभारी रहेंगे ।

### स्वाध्याय साधना

आगम निधि की सुरक्षा के लिए स्वाध्याय की प्रवृत्ति बढ़ाना अत्यावश्यक है और इसके लिए एक व्यापक कार्यक्रम की आवश्यकता है । इस कार्यक्रम का उद्देश्य सधसाधारण के लिए जनजागमों का महत्व समझाना तथा जन साधारण को जनजागमों व स्वाध्याय के लिए प्रोत्साहित करना है । इस कार्यक्रम के तीन प्रमुख अंग हैं

- १ अनुविद्य सघ म जनजागमों व स्वाध्याय की प्रवृत्ति को बढ़ाया देगा ।
- २ जनजागमों का वृत्तान्त्रिक पद्धति से सोजप्रिय प्रकाशन ।

१ स्थानगत व जिन २ उपनन्द का स्वल्प में उल्लेख प्रश्नव्याकरण का स्वल्प मद्रवा मिन है ।

२ क्व-व्याकरण विद्वत्सु दगा आदि अनेक प्रयोगर द्य ।

३ विश्व की प्रमुख भाषाओं में जैनागमों का प्रकाशन ।  
श्रीर

४ विश्व के शोध संस्थानों को जैन आगमों का उपहार ।

### स्वाध्याय की प्रवृत्ति बढ़ाना

(क) प्रत्येक धर्म स्थान में एक आगम पुस्तकालय स्थापित कराना । यह धर्म-स्थान मन्दिर हो या उपाश्रय, स्थानक हो या पीपल गाला । प्रत्येक क्षेत्र के स्थानीय संघ को आगम-स्वाध्याय के लिए उत्साहित करना । स्वाध्याय मण्डल की स्थापना करना । दर्यभर में समस्त आगमों का पारायण करनेवाले स्वाध्यायशील श्रमणोपासक को अ० भा० जैन संघ द्वारा सम्मानित या पुरस्कृत किया जाना ।

(ख) धर्मकथा करनेवाले श्रमणवर्ग या श्रमणोपासक वर्ग को जैनागमों का विशाल ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रबल प्रेरणा दी जाय । आगम ज्ञान की अभिवृद्धि के लिए वे स्वयं उत्सुक बने, ऐसा वातावरण बनाया जाय । प्रत्येक धर्म-कथक के लिए प्रति वर्ष किसी एक आगमिक विषय पर शोध निबन्ध लिखना अनिवार्य कर दिया जाय । जो धर्म कथक सर्वश्रेष्ठ महत्त्वपूर्ण निबन्ध लिखे उसे अ० भा० जैन संघ द्वारा सम्मानित किया जाय ।

(ग) आगम-पारायण का एक वार्षिक कार्यक्रम बनाया जाय और पारायण के माहात्म्य का इतना अधिक व्यापक विचार किया जाय कि— सर्वत्र वार्षिक पारायण प्रारम्भ हो जाय ।

### जैनागमों के लोकप्रिय प्रकाशन

आगम प्रकाशन का कार्य वैज्ञानिक पद्धति से होना आवश्यक है ।  
१ चूटों व अल्प-पठित स्वाध्याय प्रेमियों को बड़े सुवाच्य अक्षरों में प्रकृत शिखर आगम प्रतियाँ प्रिय होती हैं ।

२ मुखा व अपवयस्क स्वाध्यायशील व्यक्तियों को सूक्ष्माक्षरी में सघकाय सस्करण रचिकर होते हैं ।

३ विद्वद्ग के लिए प्रौढ़ साहित्यिक सुचलित सरल भाषा में आगमों का अनुवाद प्रभावोत्पादक होता है ।

४ अल्प पठित पुरुष एवं महिलाओं के लिए सरल भाषा में आगमों का अनुवाद अधिक रचिकर एवं ज्ञानबधक होता है ।

इस प्रकार आगमों को लोकप्रिय बनाने के लिए विविध प्रकार के सस्करणों का प्रकाशन आवश्यक है ।

### विश्व के विद्यालयों को जनागमों का उपहार

विश्व की साहित्यिक भाषाओं में अनुवाद एवं सुद्वित जनागमों का अति शुद्ध सस्करण विश्व के विश्वविद्यालयों में पढ़वाना तथा आधुनिक विषयों पर शोध निबन्ध लिखने वाले जन जनेतर बंधुओं को समान भाव से सम्मानित करना या पुरस्कृत करना । इस प्रकार भारतीय जन सघ प्रवचन की प्रभावना करके असूक्ष्म आगम निधि की सुरक्षा करने में समर्थ हो सकेगा ।

### जनागम निदेशिका में पतालीस आगमों का विषय निर्देशन

उपलब्ध पतालीस आगमों का जनागम निर्देशिका में उपयोज किया है। बत्तीस आगमों के अतिरिक्त तेरह आगमों में स्थानकवासी परम्परा से मौनिक मतभेद रखनेवाला कोई सदभ नहीं है । यह निष्पन्न जनागम निदेशिका के आद्योवात अध्ययन से पाठक स्वयं कर सकगे ।

### जनागमों की रचना शली

जनागमों की रचनाशली चार प्रकार की है—

१ सधादात्मक शली—

एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से प्रश्न करता है और वह उसका उत्तर

देता है । यथा— भगवान महावीर और गौतम का संवाद । केशी गौतम का संवाद । राजा प्रदेशी और केशी मुनि का संवाद । राजा श्रेणिक और अनायी निर्ग्रथ का संवाद आदि ।

२ वर्णनात्मक शैली—

किसी श्रमण या श्रमणी तथा श्रमणोपासक या श्रमणोपासिका के जीवन का वर्णन । यथा—दस उपासकों का तथा अन्तकृत आत्माओं का वर्णन अथवा ऐसे अन्य सभी वर्णन ।

३ उपदेशात्मक शैली—

साधक या साधिका को किसी प्रकार का उपदेश देना । यथा—

जरा जाव न पीडेइ, वाही जाव न वड्ढइ ।

जाविंदिया न हायंति, ताव धम्म समायरे ॥

४ विधि-निषेधात्मक शैली—

साधक के लिए किसी प्रकार का विधान या निषेध करना । यथा—

कप्पइ निग्गंथाणं आउंचण-पट्टगं धारेत्तए वा, परिहरित्तए वा ।  
नो कप्पइ

निग्गंथीणं आउंचण-पट्टगं धारेत्तए वा, परिहरित्तए वा ।

जैनागमों के प्रमुख विषय—

१ आचार-सम्बन्धी विधि-निषेध ।

२ आचार-सम्बन्धी उपदेश ।

३ आचार-सम्बन्धी औत्सर्गिक और आपवादिक नियमों का विधान ।

४ प्रायश्चित्त विधान ।

५ भूगोल-खगोल वर्णन ।

६ तत्त्व-निरूपण ।

७ जैनधर्मानुयायी साधकों के जीवन ।

८ कनिषथ संप्रदाय ।

९ गुणागुण कमरूपों का बणन ।

## विषय निर्देशन में बाधाएँ

१ सब प्रथम आचारारण्य के प्रथम धनुस्तोत्र की समस्या सामने आई ।

यह समस्या थी सूत्र सभ्या की—

मेरे सामने आचारारण्य की इनकी प्रणियाँ हैं —

क जमन ३० गुणित सभ्यादिन प्रति देवनागरी लिपि सस्करण ।

ख प्रो० रवजी भाई देवराज सभ्याग्नि द्वितीय सस्करण ।

ग आगमोदय स मति सूरन ।

घ आचार थी आचारारण्य जो महागज सभ्या सन ।

इन सब प्रणियाँ मे प्रथम धनुस्तोत्र क सूत्रों की सभ्या भिन्न भिन्न है अतः प्रत्येक सूत्र का आदि और अन्त समान नहीं है । कम प्रति के सूत्राक सही हैं—यह विषय करना सामान्यतया कर्त्तव्य है । अनागम निष्पत्तिका प्रथम धनुस्तोत्र की सूत्र सभ्या में एककरना नहीं है । अर्थात्—एक किसी प्रात के आधार सूत्र सभ्या नहीं बा है । एक सूत्रातपन भिन्न भिन्न विषयों का नदगन वामाला द्वारा किया है ।

२ सूत्ररूपा टगवद्विहित उत्तरायनजाति में अनेक औरगैरिक्त गाथाएँ ऐसी हैं जिनमें एक से अधिक विषय हैं उन सब विषयों का विरगन बरभाग द्वारा किया गया है ।

जिस अध्ययन का आढोपान्त एक ही विषय है उसका मैंने भी एक ही विषय किया है । यथा—सूत्ररूपाग अ० ४ ५ ६ का विषय । मुख्य विषय का शोधक १२ प्वाइंट जोनो स्नक में दिया है और उसके अन्तगत विषय १२ प्वाइंट ह्वाइंट में किये हैं । यह कम अनागम निर्देशनका मे सचर है ।

३ समाना के सूत्राक आगमोदय स मति सूरन की प्रणि के अनुकार किये हैं । इन सूत्रों में अनेक सूत्र ऐसे हैं जिनके अतपत अनेक सूत्र हैं ।

टीकाकार भ यत्र-तत्र इन सूत्रों की संख्या का निर्देश स्वयं करते हैं। टीकाकार सम्मत सूत्र-संख्या सम्पूर्ण स्थानांग की जानने के लिए बहुत बड़े उपक्रम की आवश्यकता थी, किन्तु मैं ऐसा न कर सका। फिर भी विषय निर्देशन में बहुत सावधानी बरती है। जहाँ तक हो सका है किसी विषय को छोड़ा नहीं है।

४. समवायांग के सूत्रांक 'जैनधर्म प्रसारक समा भावनगर' से प्रकाशित प्रति के दिये हैं। इस प्रति में प्रत्येक समवाय के सूत्रांक क्रमशः दिये हैं। किन्तु टीकाकार प्रत्येक समवाय में कई सूत्र मानते हैं। जैनागम-निर्देशिका में प्रत्येक सूत्र का विषय निर्देशन किया है।

५. भगवती सूत्र की एकमात्र प्रति पं० वेचरदास जी सम्पादित मेरे सामने है। अब तक प्रकाशित भगवती सूत्र की प्रतियों में सर्वशुद्ध यही संस्करण है। इसके प्रथम भाग में दो शतक हैं, प्रथम शतक की प्रश्नोत्तर संख्या ३२६ है और द्वितीय शतक की प्रश्नोत्तर संख्या ७६ है। तृतीय शतक से प्रत्येक उद्देशक की प्रश्नोत्तर संख्या दी गई है। इसलिए एकरूपता नहीं है। वर्णनात्मक सूत्रों के सूत्रांक और प्रश्नोत्तरांक भिन्न-भिन्न नहीं दिए हैं अतः यह पता नहीं चलता कि वास्तव में इस उद्देशक में प्रश्नोत्तर कितने हैं और सूत्र कितने हैं। इस प्रति में जहाँ-जाव-एवं-जहा आदि से संक्षिप्त पाठ दिए हैं उनमें प्रश्नांक या सूत्रांक कितने होते हैं। यह अंकित नहीं है इसलिए प्रश्नोत्तरों की निश्चित संख्या जानना सरल नहीं है।

विषय निर्देशन में मैंने इसी प्रति का उपयोग किया है किन्तु प्रश्नोत्तरांकों की एकरूपता नहीं रह सकी।

६. विषय-निर्देशन के लिए जिन प्रतियों का उपयोग किया है उनकी सूची अन्यत्र दी है। अनुवाद एवं टीका के शुद्ध संस्करण आगमों के अब तक अप्राप्य हैं। यही एक बहुत बड़ी कठिनाई विषय-निर्देशन में रही है।

## चौरासी आगम—

आगमों की संख्या के सम्बन्ध में तीन प्रमुख मायताभेद हैं —

- १ ८४ आगम
- २ ४५ आगम
- ३ ३२ आगम २६ उल्का लक ३० कालिक १२ अग—७१
- ७२ आवाचक<sup>१</sup>
- ७३ अतदृष्टा अन्य वाचना का
- ७४ प्रानव्याकरण
- ७५ अनुत्तरोपपातिक दगा
- ७६ बघ दगा
- ७७ द्विगद्वि दगा
- ७८ दीध दगा
- ७९ स्वप्न भावना
- ८० चारण भावना
- ८१ तेजोनिस्तग
- ८२ आ गविय भावना
- ८३ दण्डिविष भावना<sup>२</sup>
- ८४ कल्याण कल विषाक के ५५ अध्ययन  
पाप कल विषाक के ५५ अध्ययन<sup>३</sup>

१ ये ७२ नाम नन्दी सूत्र में उपलब्ध हैं ।

२ ये ६ नाम स्थानाग सूत्र में हैं ।

३ ये ५ नाम व्यवहार सूत्र में हैं ।

४ यह पञ्चमनव समवाय में है ।

### पैतालीस आगम—

१० प्रकीर्णक

११ अंग

१२ उपांग

६ छेद सूत्र—१. व्यवहार । २. बृहत्कल्प । ३. जीतकल्प ४. निशीथ ।  
५. महानिशीथ । ६. दशा श्रुतस्कन्ध ।

६ मूल सूत्र—१. दशवैकालिक । २. उत्तराध्ययन । ३. नन्दीसूत्र ।  
४. अनुयोग द्वार । ५. आवश्यक निर्युक्ति । ६. पिण्ड-निर्युक्ति ।

४५

### वत्तीस आगम—

११ अंग

१२ उपांग

४ मूल सूत्र—१. दशवैकालिक । २. उत्तराध्ययन । ३. नन्दीसूत्र ।  
४. अनुयोग द्वार ।

४ छेद सूत्र—१. व्यवहार । २. बृहत्कल्प । ३. निशीथ । ४. दशा  
श्रुतस्कन्ध ।

३१

३२ वां आवश्यक

### जैनागम निर्देशिका के प्रकाशन की पृष्ठभूमि

विश्व के भाषा-साहित्य में प्राकृत भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है, प्राकृत भाषा साहित्य के प्रकाशन की स्थिति ऐसी नहीं है और जैनागमों के प्रकाशन की स्थिति देखकर तो मन में ऐसा लगता है कि समाज का साक्षर एवं सम्पन्न वर्ग प्रवचन प्रभावना के प्रमुख अंग आगम साहित्य को प्रमुख न मानने की भयंकर भूल कर रहा है, क्योंकि भगवान महावीर की विश्वकल्याणकारिणी वाणी का प्रचार व प्रसार जैनागमों के विश्व-



व्यापी प्रचार व प्रसार से ही सम्भव है ।

क जमन आदि विद्वेगों के प्रमुख विश्वविद्यालयों में प्राकृत भाषाओं का अध्ययन हो रहा है ।

ख भारत के कतिपय विश्वविद्यालयों में प्राकृत भाषाओं का अध्ययन हो रहा है ।

ग अनेक भारतीय विद्वान जनागमों के अध्ययन के लिए उत्सुक हैं ।

घ अनेक भारतीय छात्र जनागमों के अभिलषित विषयों पर जोध निश्चय लिखना चाहते हैं । किंतु जनागमों का प्राथमिक परिचय प्राप्त करने के लिए कोई पुस्तक सुलभ नहीं है ।

बहुत वर्षों पहले गुजराती भाषा में 'प्रबन्धन किरणावली' नाम की एक पुस्तक प्रकाशित हुई थी । उसका सम्बन्ध प्राचीन पद्धति से हुआ था । प्रत्येक गाथा या सूत्र का विषय क्या है यह उसमें नहीं बिलखाया गया है । अतः हिन्दी भाषा भाषी जनता के हित के लिए जनागम निदेशिका के सम्बन्ध का आयोजन किया गया है ।

अल्प धारणा शक्ति वा अल्प भ्रागम भक्ति

ह्रस्व काल (अवसर्पिणी काल) के प्रभाव से मानव की धारणा शक्ति का उत्तरोत्तर ह्रास होने लगा । अतः जनागमों का लेखन प्रारम्भ हुआ और इस मुद्रण काल के युग में जनागमों का मुद्रण हो रहा है । इस ऐतिहासिक घटनाचक्र में जनागमों के लेखन का हेतु धारणा शक्ति का अल्प होना बताया गया है । यह वहाँ तक सत्य है । यह शोध का विषय है । अतीत में दुर्भिक्ष के कारण बहुत लम्बे समय तक भ्रमण-धमनियाँ जनागमों का पारायण न कर सके । इसलिये उनका आगम-आन सुप्त होने लगा था । यह ऐतिहासिक सत्य है । किंतु उस समय भक्ति की विस्मृति का कारण दुर्भिक्ष था—अल्प धारणा शक्ति नहीं । यद्यपि काल का प्रभाव अनिवार्य है और स्मृति शोभत्य को घटना के घीरे भी कुछ तथ्य अवश्य हैं । फिर भी धारणा शक्ति का ह्रास इतना नहीं हुआ है कि—

बिना पुस्तक के हम आगम-ज्ञान को सुस्थिर न रख सकें ।

राजस्थानी भाषा के बृहत् काव्य बगड़ावत, तेजाजी आदि वर्तमान में भी राजस्थान के अनेक कृषकों को कण्ठस्थ हैं, वे उन काव्यों का यदा-कदा पारायण भी करते हैं, यद्यपि उन्हें अक्षर-ज्ञान नहीं है, फिर भी उनकी धारणा-शक्ति प्रबल है । इसी प्रकार राजस्थान की देवियाँ अपने सामाजिक गीतों को सदा कण्ठस्थ रखती हैं । वे सामाजिक प्रसंगों पर उनका पारायण करती रहती हैं । राजस्थानी भाषा के ये बृहत् काव्य और वे गीत अब तक लिपिबद्ध नहीं हुए हैं । कृषकों और स्त्रियों में अब तक भी श्रुत-परम्परा चल रही है । कृषकों और स्त्रियों से तो हमारे पूज्य संयमी श्रमण-श्रमणियों की धारणा-शक्ति निर्बल नहीं होनी चाहिए ।

हमारे पूज्य श्रमण श्रमणियों में आज स्मरण-शक्ति का चमत्कार दिखानेवाले कई शतावधानी और कई सहस्रावधानी हैं । इसलिए अतीत के समान आज भी जैनागमों का ज्ञान कण्ठस्थ करने की शक्ति हमारे पूज्य श्रमण-श्रमणियों में विद्यमान है । यदि आगम-भक्ति अधिक हो तो अतीत के स्वर्ण युग की पुनरावृत्ति असम्भव नहीं है ।

पुस्तक रखना अपवाद नार्ग है

पुस्तक परिग्रह है एवं असंयम का हेतु है ।<sup>१</sup> यह असंदिग्ध है । पर अनेक शताब्दियों से हमारे ऐसे संस्कार बन गए हैं कि—पुस्तक हमारे ज्ञान का साधन है । बिना पुस्तक के हम ज्ञानोपार्जन करने में असमर्थ हैं । इसलिए पुस्तक हमारी साधना का एक प्रमुख अंग बन गया है । अतीत में आचार्यों ने पुस्तक या लेखन अपवाद रूप में स्वीकार किया था वह अपवाद रूप आज प्रायः समाप्त हो गया है, यह उचित नहीं है । पुस्तक ज्ञान का साधन है और इस युग में बहुश्रुत होने के लिए पुस्तकों

१ पोत्यएमु धेप्पतेमु असंजमो—दशवीकालिक-अगस्त्यचूर्णी

का पठन-पाठन अनिवार्य है। यह मानने में भी किसी को कोई आपत्ति नहीं है। फिर भी पुस्तक का विवेकपूर्ण सीमित उपयोग ही उचित है। धर्मशास्त्रकार वर्ग इस सम्बन्ध में अपने उत्तरदायित्व को समझे और निभाए तो पुस्तक का अपवाद रूप में उपयोग आज भी सम्भव है।

### पुस्तक लेखन और मुद्रण का विरोध

जन्मागम जब सर्व प्रथम लिखे गए उस समय लिखने का घोर विरोध हुआ था। विरोध करनेवाला सद्यस्मिन् सवधच्छ धर्मजगत् था। अत आगम लेखन भी अपवाद रूप में ही स्वीकार किया गया और पुस्तक लेखन एवं पुस्तक के रखने के प्रायश्चित्त का नव विधान<sup>१</sup> हुआ। विरोध करनेवाले धर्मजगत् की लेखन के विरोध में दी हुई बुक्तियाँ<sup>२</sup> अहिंसा की दृष्टि से सधात्तम हैं। उनका जबाब न किसी के पास पड़े या और न आज ही है। युग में स्वर बदला और पुस्तक लिखने की महिमा<sup>३</sup>

१ एक अक्षर लिखने या एक वार पुस्तक वाचन का तथा एक पुस्तक रखने का चार अनु प्रायश्चित्त का विधान है।

२ पुस्तक पठन में दी हुई बुक्तियाँ विचारणीय हैं —

(क) ज्ञानं म फसा हुआ अनु या वना

(ख) ज्ञानं म फसा हुई मछली

(ग) धानी (जिन् आदि पीठन या य इ) म पथा हुआ निड कीट

(घ) वरिष्ठा म धिरा आ प्राणी

(ङ) अध आदि नर क पदाश्री म पत्त हुए प्राणी

(च) नर आदि निम्न पदाश्री म पत्त हुए प्राणी

जन्मागम म प्रव ज्ञान न किन्त पुस्तक व बीज म दया हुआ प्राणी रिर्मा प्रकाश प्रव नरा मरना।

न न नरा दानावमानुर्वा इ न भूशना नैव जडम्बभावम्।

न रा इती उडिनि नना न य नष्टनीट शिपदय पापाम् ॥

गाई गई। एक दिन जो असंघम का हेतु माना गया था। वही संघम' का हेतु मान लिया गया। फिर भी पुस्तक अपवाद रूप में ही ग्रहण किया गया—क्योंकि सभी श्रमण-श्रमणियों की समान धारणा-शक्ति नहीं होती। कुछ अल्पधारणा शक्तिवाले भी होते हैं। उनके लिए पुस्तक रखना उपयोगी था और आज भी उपयोगी है।

लेखन का स्थान मुद्रण ने लिया तो जैनागमों का भी मुद्रण होने लगा और मुद्रण का भी घोर विरोध हुआ।

विरोध करनेवालों ने कहा—

निर्ग्रन्थ प्रवचन के विरोधी मुद्रित प्रतियाँ प्राप्त करके छिद्रान्वेषण करेंगे और यत्र तत्र पारिभाषिक शब्दों का मनमाना अर्थ करके भ्रान्तियाँ पैदा करेंगे। अपवाद विधानों का रहस्य समझे बिना श्रमण संस्कृति का उपहास करेंगे। किन्तु इन तर्कों में कोई तथ्य नहीं है। आगम लेखन काल से कई शताब्दी पूर्व सात निन्द्य हो गये थे। ये सब प्रवचन-निन्द्य थे। प्रवचन उड़टाह की परिकल्पना भी बहुत पहले हो चुकी थी। ऐसी स्थिति में प्रकाशन का विरोध करके प्रकाशन से होनेवाले असाधारण लाभ से जन साधारण को वंचित रखना सर्वथा अनुचित है।

‘आगम-अभुयोग’ ग्रन्थराज के प्रकाशन में—

सांडेराव के स्थानकवासी संघ का महत्वपूर्ण योगदान

सांडेराव ऐतिहासिक नगर<sup>१</sup> है। बांकलीवास नगरके एक मोहल्ले का नाम है, स्थानकवासी जैनों की अधिक संख्या इसी मोहल्ले

१ उद्वरण मंजमा पांत्याणमु अमंजमा, वज्जणं तु मंजमा।  
कालं पट्टच्च चरण-करणदुं अट्वांशित्तिनिमित्तं गेहंनस्स मंजमा भवति ॥

२ सांडेर मच्छ की उत्पत्ति ने टग नगर का संबंध रहा है, ऐसे ऐतिहासिक उल्लेख हैं। यहाँ ७५० जैनों के ४०० घर हैं, दो जैन मन्दिर हैं, दो जैन स्थानक हैं, राजकीय निकटस्थालय और प्राथमिक शाला है।

में है और वे सभी घोरवाल हैं । बड़ेवांस में भी स्वानकवासी जनों के कुछ घर हैं । उनमें कुछ घर ओसवाल हैं और कुछ घर घोरवाल हैं ।

स्वर्गीय स्वामीजी श्री दत्ततावरमलजी महाराज की आत्मध्या-साधना का केन्द्र-साडेराव नगर ।

आप मेरे स्वर्गीय गुरुदेव श्री प्रताप चन्द्रजी म० ता० के गुरुदेव के गुरुभ्राता थे । आपका आगम ज्ञान एवं आत्मबल प्रतिष्ठ था । आपने सविन्न शाखा के अनेक मुनियों व साधियों को ज्ञान दान दिया था । आपके आत्मध्या जीवन की अनेक दिव्य चमत्कारी घटनाएँ बूढ़े पुरुष मुनाया करते हैं । आपका जैन जनेतर जनतापर समान प्रभाव था । बम्बई क्षेत्र की पावन बरनेवाले प्रथम स्वानकवासी श्रमण आप ही थे । पञ्जाब के नामा पटियाला क्षेत्र भी आपके चरण रज से पावन हुए थे सारा गोडवाड प्रांत आपकी प्रमुख विहार भूमि रहा, आपका स्वर्गवास इसी ऐतिहासिक नगर में हुआ ।

साडेरावमें स्वामीजी महाराज के प्रमुख उपासक—

१ शा० धनमल जी हीराजी पुनमिया बडावास

आपने अपने एक म्त्र० प्रिय पुत्र की स्मृति से जाकलीवास से शिवालय धर्म स्वानक का निर्माण करवाया, आपके सुपुत्र श्री धानमलजी और श्री राजमलजी विद्यमान हैं दोनों साइधों का धर्म प्रथम व गुरुभक्ति प्रशस्तनीय है, एक निजी मोहरे का सावजनिक के हित में उपयोग करके दोनों भाई पुण्योवाहन कर रहे हैं ।

२ शा० पोमाजी दलचन्दजी जाकलीवास

आप स्वामीजी महाराज के परम भक्त, सरल स्वाभावी एवं परोप-कारी थावक थे आपका बहुत बड़ा परिवार हम समय विद्यमान है, जो चोवटिया परिवार के नाम से प्रसिद्ध है, आपके सारे परिवार की धर्म पर दृढ़ धडा है ।

३. शा, प्रतापजी कपूरजी, बांकलीवारा,

आप दृढ़धर्मी एवं विवेकी श्रावक थे, आपके चार पुत्रों में से तीन पुत्र इस समय विद्यमान हैं, बड़े पुत्र, श्री हिम्मतमल जी आपके पहले ही स्वर्गस्थ हो गये, आपके चारों पुत्रों का परिवार धर्मप्रेमी एवं सेवाभावी है ।

मेरे श्रमण-जीवन की जन्मभूमि,

आज से तीन युग पूर्व मेरे श्रमण-जीवन का जन्म इसी नगर में चतुर्विध संघ के समक्ष हुआ था, अतः यहाँ के सभी धार्मिक जन मेरे प्रति अगाध स्नेह एवं पूज्य भाव रखते हैं । मेरी शिक्षा-दीक्षा में यहाँ का संघ प्रमुख रहा है ।

सार्वजनिक हित के लिए शिक्षण-शाला की स्थापना

स्वर्गीय गुरुदेव श्री के प्रवचनों से प्रभावित होकर संघ ने उदारता दिखाई और राजस्थान शिक्षा विभाग को बहुत बड़ी अर्थराशि अर्पित कर प्राथमिक शाला प्रारम्भ करवाई । कुछ समय से शिक्षकवर्ग को माध्यमिक शाला की आवश्यकता प्रतीत हो रही थी, किन्तु स्थान की कमी थी, इसके लिए स्थानीय जैन दानवीरों ने उदारता दिखाकर चार विशाल कमरे बनवा दिए हैं, इनकी उदारता प्रशंसनीय है ।

'आगम अनुयोग' प्रकाशन की स्थापना,

पैंतालीस आगमों को चार अनुयोगों में विभक्त करना और प्रत्येक विषय का अनुयोगानुसार वर्गीकरण करना समय-साध्य एवं श्रमसाध्य रहा, संकलन कार्य में ही कई वर्ष बीत गये । श्रद्धेय कवि श्री तथा पं० बलसुख भाई मालवणिया से दिशा निर्देशन मिला, और धैर्यपूर्वक कार्यरत रहने की प्रेरणा मिली । गणितानुयोग का अनुवाद डा० मोहनसिंहजी महता ने किया, चरणानुयोग का अनुवाद पं० शोभाचन्द्रजी भारिल्ल ने किया, इस प्रकार कुछ कार्य-भार हल्का तो हुआ, किन्तु प्रकाशन पर्यन्त सारा

उत्तरदायि'य मु'न निमाना था इगणिए मन ह'का नग हो पा रहा था ।

चारो अनुयोग क प्रकाशन का काय मागाय नथा बहुत बडी अथ रा ग इसके लिए प्रोक्षिन थी हो वय पत्र न सरलिन सघ' पडा रहा । देहनी आनेपर धमस्नेही मज्जन ताराच'द प्रतापजी दशनाथ भाये आगम अनुयोग क प्रकाशन क सघ' मे विचार विनिमय हुआ फलस्वरूप आगम अनुयोग प्रकाशन की स्थापना हुई । आपका सहयोग प्रारम्भ से ही था अनुया' काय भी आपकी ही प्ररणा से सम्पन्न हुआ था इसलिय प्रकाशन काय सम्पन्न करवाने की आपके मन म बडी लगन ह आपके उसाह को देखकर शा० हिम्मतमल प्रमच'दजी मेघराज जतराजजी पूलच'द चुन्नीलाल जी निहानच'द कपूरजी आ'ि ने प्रकाशन व्यय के लिए विपुल वितरानि का सघ' करवाने मे तथा प्रकाशन काय में पूण सहयोग देने की दद प्रतिज्ञा की है आप सब भ० महावीर के प्रयचनों की प्रभावना करनेवाले मज्जन है ।

तपस्वी जी श्री गौरीलालजी महाराज का अनुपम सेवाभाव

तपस्वीजी स्व० दिवाकर जी महाराज क प्रशिष्य हैं और तपस्वी श्री नेमीच'दजी म० के शिष्य हैं आपने अतीत मे बहुत तपश्चर्या की है बतमान मे आप प्रयोतिष एव मत्र शास्त्र विशारद यद्योवद्ध स्वामी जी श्री करनूरच'दजी म० के आनानुचर्ता हैं । मेरे साथ आपका ततीय वरवासा है आपके उदार सहयोग मे ही मैं इस पुस्तक के तथा आगम अनुयोग पथराज के सक्तनादि कार्यों मे सलग्न रह सका ह । मेरे जीवन मे आपका यह सहयोग चिरस्मरणीय रहेगा यद्योवद्ध होनेपर भी आपका अग्रपन्न नाव एव साहम आदरणीय व अनुकरणीय है ।

आगमज्ञ विद्वानो से विनम्र अनुरोध

अत मे आगमज्ञ विद्वानों से मेरा विनम्र अनुरोध है कि वे जनागम निवशिका का आद्योपा'त निरीक्षण करके सशोधनाय सूचनाएं भेजें

प्राप्त सूचनाओं का उपयोग द्वितीय संस्करण में अवश्य किया जायगा । प्रस्तुत पुस्तक में कई कमियाँ रह गई हैं जिनका अर्थ में स्वयं अनुभव कर रहा हूँ फिरभी ऐसी कई भूलें हो सकती हैं, जिनको ओर मेरा ध्यान न गया हो ।

ये नाम केचिदिह नः प्रथयन्त्यवज्ञां ।

जानन्तु ते किमपि तान् प्रति नैव यत्नः ॥

विनम्र धृत नेवक

मुनि कन्हैयालाल "कमल"





समिप्य हि मन्त्रमारुह्य  
 समिप्य वा असमिप्य वा समिप्य होसि उच्यते न  
 असमिप्य हि मन्त्रमारुह्य  
 समिप्य वा असमिप्य वा असमिप्य हो न उच्यते

—भाषारणि



## चरणानुयोग-प्रधान आचाराङ्ग

श्रुतस्कंध	..	२
अध्ययन		२५
उद्देशक	....	८५
चूलिका	...	५
पद	...	१८०००
उपलब्ध पाठ		२५०० श्लोक परिमाण
मूलपाठ गद्य-सूत्र संख्या		४०१
,, पद्य गाथा संख्या		१५४

१ ब्रह्मचर्य श्रुतस्कंध		२ आचाराग्र श्रुतस्कंध	
अध्ययन	.... ६	अध्ययन	... १६
महापरिज्ञा अध्ययन लुप्त		उद्देशक	.... ३४
उद्देशक	.... ५१	चूलिका	.... ४
सूत्र संख्या	.... २२२	सूत्र संख्या	.... १७६
गाथा संख्या	... ११५	गाथा संख्या	.... ३६

## जिणपवयणत्थुई

निश्वुइपहसामणय जयइ तथा सत्त्वभावदेसणय ।  
कुसमयमयतासणय जिणदवरधीरसासणय ॥  
जिणवयण अणुरत्ता जिणवयण ज करति भावेण ।  
अमला घसकिलिद्धा ते होति परित्तससारी ॥  
बालमरणाणि बहुसो अकाममरणाणि चव य बहूणि ।  
मरिहति ते वराघा जिणवयण ज न जाणति ॥



णमो चरित्तस्स

## आचारांग विषय-सूची

प्रथमश्रुतस्कंध

प्रथम अध्यायन शस्त्रपरिज्ञा (जीव-संयम)

प्रथम जीव-अस्तित्व उद्देशक

सूत्राङ्क

- |      |                                 |
|------|---------------------------------|
| १    | उत्थानिका                       |
| २    | पूर्वभव के स्थान का अज्ञान      |
| ३    | पूर्वभव और परभव का अज्ञान       |
| ४    | पूर्वभव और परभव जानने के हेतु   |
| ५    | आत्मवादी आदि                    |
| ६-१२ | कर्मबंध परिज्ञा                 |
| १३   | कर्मबंध परिज्ञा वाला ही मुनि है |

सूत्र संख्या १३

द्वितीय पृथ्वीकाय उद्देशक

अहिंसा

- |    |           |                                |
|----|-----------|--------------------------------|
| १४ | पृथ्वीकाय | के हिंसक                       |
| १५ | क-        | में जीवों का अस्तित्व          |
|    | ख-        | की हिंसा में विरत मुनि         |
|    | ग-        | की हिंसा में अविरत-द्रव्यानिगी |
| १६ | क-        | की हिंसा                       |
|    | ख-        | " " के रेनु                    |

- १७ क- पृथ्वीनाथ की शिक्षा का जन्म  
 ख- " " के जन्म का ज्ञान  
 ग- " का शिक्षण अथ अनेक जीवों का शिक्षण  
 घ- " की बदना—अनेक तम उदाहरण  
 ङ- " " " " मुद्दिन का उदाहरण  
 च- " का शिक्षण का बदना का ज्ञान  
 १८ क- " का अध्यात्म का बदना का ज्ञान  
 ख- " की शिक्षा का किरण ज्ञान का उदाहरण  
 ग- " की परिणाम का ज्ञान ही मुनि ज्ञान है

सूत्र संख्या २

सूतीय अध्याय उद्देश्य

अहिंसा

अनाथ परिणाम

- १९ भाषा न बहने वाला ही धनदार है  
 २० अज्ञा—मरण  
 २१ अज्ञा म मुक्ति  
 २२ गणध  
 २३ अकारण म जीवों का अस्तित्व  
 २४ क- अकारणिक शिक्षा म किरण मुक्ति  
 ख- " " अकिरण उदाहरणों  
 ग- " की परिणाम  
 घ- " के हनु  
 ङ- " का जन्म  
 च- " के जन्म का ज्ञान  
 २५ जीवों का शिक्षण अथ अनेक जीवों का शिक्षण  
 २६ अनाथ के आश्रित अनेक जीव  
 २७ अकारणिक जीवों का स्वरूप

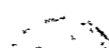
२६	अपूरुताय के अन्वय
२७	अपूरुताय के अन्वय में अज्ञान
२८	अपूरुताय के अन्वय में अज्ञान
२९	अपूरुताय के अन्वय में अज्ञान
३०	अपूरुताय के अन्वय में अज्ञान
३१ क	अपूरुताय के अन्वय में अज्ञान
ग	अपूरुताय के अन्वय में अज्ञान
घ	अपूरुताय के अन्वय में अज्ञान
ङ	अपूरुताय के अन्वय में अज्ञान
च	अपूरुताय के अन्वय में अज्ञान
छ	अपूरुताय के अन्वय में अज्ञान

सूत्र संख्या १३

चतुर्थ अग्निधाय उद्देशक

अहिता

३२ क	अहिताय परिज्ञा
ग	अहिताय परिज्ञा
३३	अहिताय परिज्ञा
३४	अहिताय परिज्ञा
३५	अहिताय के हिमक
३६	अहिताय के हिमक
३७ क	अहिताय के हिमक
ग	अहिताय के हिमक
घ	अहिताय के हिमक
ङ	अहिताय के हिमक
च	अहिताय के हिमक
छ	अहिताय के हिमक
३८	अहिताय के हिमक



३६	क	अभिनवाय	के इतिहास को वेदना का अज्ञान
	ख		के अहिंसक का वेदना का ज्ञान
	ग		की हिंसा से विरत होने का उपदेश
	घ		की परिज्ञा वाचा ही मुनि है

सूत्र सत्या ८

पञ्चम वनस्पतिकाय उद्देशक

४०	अनगरि लक्षण
४१	विषय ससार
४२	ससार का स्वरूप
४३	विषयी आराधक नहीं
४४-४५	प्रमत्त

अहिंसा

वनस्पतिकाय परिज्ञा

४६	क	वनस्पतिकायिक जीवों की हिंसा से विरत मुनि
	ख	, हिंसा से अचिरत इव्यलिंगी
	ग	वनस्पतिकायिक हिंसा की परिज्ञा
	घ	हिंसा के हनु
	ङ	हिंसा का फल
	च	हिंसा के फल का ज्ञान
	छ	वनस्पतिकायिका हिंसक अन्य अनेक जीवों का हिंसक
४७		मानव शरीर में वनस्पतिकाय की तुलना
४८	क	वनस्पतिकाय के इतिहास को वेदना का अज्ञान
	ख	अहिंसक की वेदना का ज्ञान
	ग	की हिंसा से विरत होने का उपदेश
	घ	परिज्ञा वाचा ही मुनि है

## षष्ठ त्रसकाय उद्देशक

## त्रसकाय परिज्ञा

## अहिंसा

- ४६-५० विविध त्रसजीव
- ५१ क प्राण, भूत, जीव और सत्व के विभिन्न सुख-दुख  
ख त्रसजीवों का लक्षण
- ५२ क त्रसकायिक हिंसा के प्रयोजन  
ख पृथ्वीकायादि के आश्रित त्रसकायिक जीव
- ५३ क त्रसकायिक हिंसा से विरत मुनि  
ख " " अविरत द्रव्यलिगी  
ग " " की परिज्ञा  
घ " " के हेतु  
ङ " " का फल  
च " " के फल का ज्ञान  
छ त्रसकाय का हिंसक अन्य अनेक जीवों का हिंसक
- ५४ " " को हिंसा के विभिन्न प्रयोजन
- ५५ क त्रसकाय के हिंसक को वेदना का अज्ञान  
ख " " अहिंसक को वेदना का ज्ञान  
ग " " की हिंसा से विरत होने का उपदेश  
घ " " परिज्ञा वाला ही मुनि है

## सूत्र संख्या ७

## सप्तम वायुकाय उद्देशक

## अहिंसा

## वायुकाय परिज्ञा

- ५६-५७ क वायुकायिक हिंसा से निवृत्त होने में समर्थ व्यक्ति  
ख आत्म-समत्व



- ५८ वायुकाय का अहिंसक सपत्नी
- ५९ क वायुकायिन हिमा में विरत मुनि  
 ख अविरत द्रव्यलिप्ती  
 ग हिमा की परिणा  
 घ हिमा के हेतु  
 ङ का फल  
 च के फल का नाना
- ६० क वायुकाय का हिंसक अन्य अनक जीवों का हिंसक  
 ख से सप्त निम्न जीवों का सहार  
 ग के हिंसक को वेदना का अज्ञान  
 घ के अहिंसक को वेदना का ज्ञान  
 ङ की हिमा से विरत होना का उपदेश  
 च की परिणा वाला ही मुनि है
- ६१ क हिंसक से प्रचुर कमवध
- ६२ क मन्त्रक वी का लक्षण  
 ख यह वायुकी हिमा का सवथा "यागी ही मुनि है

सूत्र संख्या ७

द्वितीय अध्ययन लोकविजय  
 प्रथम स्वजन उद्देशक

- ६३ क समार के मूल कारण  
 ख विषयी जीव
- ६४ विवेक हीन
- ६५ अज्ञान भावना
- ६६ अप्रभार का उपदेश (अनिष्ट भावना)
- ६७ परिग्रह (अज्ञान भावना)
- ६८ अ मोपदेश

सूत्र संख्या १०

द्वितीय अवृद्धता उद्देशक

३३	सृष्टि
३४	व्यक्तिगी
३५-३६	अनमन्त्र
३७ क	अहिंसा (हिंसा के सर्वथा परिचय या उन्मूलन)
ख	सुविनियोग

सूत्र संख्या ५

तृतीय मदनियेष उद्देशक

३८	गोत्रमन्त्र नियेष
३९	भामा विवेक प्रमत्त
४०	त्रिपथी की विपरीत प्रत्यक्षा
४१ क	नयन-उन्मूलन
ख	मृत्यु
ग	जीवन
घ	सुख-दुःख
ङ	वृद्ध-जीवन
च	असुखी
छ	मयति मोह
ज	परतीक्षिक-माध्वस्य
४२	ब्रान्जिव

{  
न  
न  
त्व

सूत्र संख्या ६

चतुर्थ भोगसहित उद्देशक

४३ क	भोग के रोग
ख	अमरण भावना
ग	एकत्व

घ	भाषामक्ति
८४	सम्पत्ति-माह
८५ क	भाग विरक्ति
ख	परिषद् की वि शारना
ग	स्वा-माह
घ	अशिवक
ङ	अप्रमाद, स्त्री मे भावना
८६ क	कामच्छा भयकर है
ख	अहिंसा
ग	सयम का पावन
घ	आहार

सूत्र सख्या ४

पचम लोकनिधा उद्देशक

८७	आहार
८८ क	
ख	सक्षम
८९ क	अथ विच्छेद
ख	भागभाग
९० क	
ख	वच
९१ क	अज्ञान का परिमाण
ख	आगार विचने पर न हूय न विचने पर न लोक
ग	वागर-नरह का निवृथ
९२ क	आदिद
ख	आरोक भाग

श्रु०१, अ०२. उ०६ सू०१०१ ११

६३ क	कामभोग
ख	आयु
ग	कामी-व्यक्ति
६४ क	सर्वज्ञ
ख	विषयगृह्य
ग	"
घ	मुक्ति
ङ	पंडित
६५ क	"
ख	आश्रव
ग	आसक्ति
६६	सावद्य चिकित्सा का नि

सूत्र संख्या-१०

पठ अममत्व उद्देश

६७	अहिंसक
६८ क	हिंसक
ख	असंयत वक्ता
ग	प्रमत्त श्रमण
घ	परिज्ञा कर्मोपशमन
६९ क	मुनि-अममत्व
ख	लोकसंज्ञा
ग	रति-अरति
१०० क	लौकिक सुखों का नि
ख	मुक्ति
ग	रुक्ष-शुष्क आहार
१०१ क	सतस-दर्वस मुनि

	ख	लोक संयोग का त्याग मोक्षमाग
१०२	क	दुःख परिज्ञा
	ख	कम
	ग	परमाद्य
	घ	उपदेश (सम्भाव)
१०३	क	धर्मोपदेश
	ख	धर्मोपदेशक
	ग	अङ्कित
१०४	क	आधीन
	ख	हिंसा नोक्षणज्ञा का परिचयान
१०५	क	उपदेश
	ख	वानज्जीव

सूत्र संख्या ६

तृतीय शीतोष्णीय अध्यायन

प्रथम भाष्यसुप्त उद्देशक

१०६		भावनिद्रा भाव जागरण (अमुनि मुनि)
१०७	क	अपान
	ख	अहिंसा
	ग	
१०८	क	आत्मज्ञ आनि (मुनि)
	ख	समाप्त के कारण राय द्वय
१०९	क	धीन उष्ण परीषह
	ख	वैर (भाव जादून)
	ग	जग मयु (धम)
११०	क	नयम (अधमस्त)
	ख	मनप्राणी

ग-	दुःख का कारण-आरम्भ
घ-	जन्म मरण (मायात्री-प्रमादी)
ङ-	उपेक्षाभाव
च-	अप्रमत्त-वेदज्ञ
छ-	मयम (मन्त्रज्ञ)
ज-	कर्ममुक्त आत्मा
झ-	कर्म-उपाधि
ञ-	कर्म (जागृति)
१११ क-	„ (हिमा)
ख-	„ (राम-द्वेष)
ग-	लोकसजा का त्याग

सूत्र संख्या ६

द्वितीय दुःखानुभव उद्देशः

११२ क-	जन्म-जरा
ख-	ममत्त्व
ग-	सम्यग्दर्शी (पाप निषेध)
घ-	स्नेहपाश
ङ-	जन्म-मरण
च-	बाल
छ-	आतकदर्शी
ज-	कर्म
झ-	मुक्त मुनि
ञ-	भय (मुनि)
ट-	परमदर्शी
ठ-	कर्म
११३ क-	सत्य

	य	उपरत म गवी वमक्षय
११४	व	परिग्रह
	य	न्या (चानी का पानी म भरने का उदाहरण)
११५	व	सृष्टावा नियम
	य	अमार भोग
	ग	ज म मरण
	घ	अहिमा
	ङ	भोग निदा (स्त्री चिरति)
	च	सम्यक्त्व
	छ	कषय निजय (हिमा)
	ज	शोक
	झ	परिग्रह और शोक का त्याग
	ञ	अहिमा का उपदेश

सूच सख्या ४

तृतीय अत्रिया उद्देशक

११६	व	अप्रमाण का उपदेश
	य	अहिमा (ममत्व)
	ग	विनिर्मिता (मनि)
११७	व	ममभाव
	य	अप्रमाण
	ग	आत्मबुद्धि
	घ	मात्र मात्रा
	ङ	रूप विनिर्मित
	च	मनि जागति
११८	क	अथ तीर्थिया की मा यनाम

१ पूर्वभव का विस्मृति और परभव की कोई सभावना नहै।

२ जीवका अतीत और भविष्य अचिन्त्य है ।

३ जीव का अतीत और भविष्य समान है ।

४ सर्वज्ञ का मन

स- अनासक्ति

ग- समय-कच्छप का उदाहरण

घ- आत्मा की मित्रता

११६ क- मोक्ष

ख- आत्मदान

ग- सत्य (मात्र-समात्र)

घ- श्रेय-मोक्ष

१२० प्रमाद

१२१ क- दृष

ख- प्रपञ्चमुक्त मुनि

सूत्र संख्या ६

चतुर्थ कषाय-वमन उद्देशक

१२२ कषाय-वमन

१२३ ज्ञान (अणु-संसार)

१२४ क- प्रमत्त को भय, अप्रमत्त को अभय

ख- कर्म (मोह) क्षय-उपशम

ग- मोक्ष (लोक-मयोग)

घ- समय मोक्ष-महायान

१२५ क- कर्म (एक का क्षय होने पर सब)

ख- आज्ञा

ग- लोक ज्ञान (आज्ञा)

घ- हिमा (अम्य-मग्नम)

१२६ क- कषाय का ज्ञान

ख- कर्म-उपाधि (सर्वज्ञ)

सूत्र संख्या ५



चतुर्थ सम्प्रदाय अध्ययन  
प्रथम सम्प्रदाय उद्देशक

- १२७ अहिंसा धर्म सम्प्रदाय है  
१२८ क धर्म में दृढ़ता  
ख निर्वै (वैराग्य)  
ग लोकवैषा निवेद  
१२९ क ,  
ख धर्मोपदेश  
ग भोगी का काम मरण  
१३० क रत्न तप की आराधना  
ख अप्रमाद का उपदेश

सूत्र संख्या ४

द्वितीय धर्मप्रवादी परीक्षा उद्देशक

- १३१ क कर्मव्यय एवं कर्मफल के हेतुओं में समानता  
ख धार्मिक—सर्वर  
१३२ क धर्म में अप्रमाद  
ख स तु अव्यभिचायी है  
ग काम मरण  
१३३ क , तर्क में  
ख कर्म वेदना  
ग शुकदेवजी और कृष्णजी का समान बचन  
१३४ क अहिंसा की परिभाषा

सूत्र संख्या ४

तृतीय अमवष्ट तप उद्देशक

- १३५ क उपेक्षा भाव वाला विन है

	ख	अहिंसा
	ग	दुःख-परिज्ञा
१३६	क	आज्ञा-पंडित
	ख	समाधि—जीर्णकाण्ठ का उदाहरण
१३७	क	दुःख क्रोधमूलक है
	ख	अनिदान (पापकर्मों से निवृत्ति)

सूत्र संख्या ३

### चतुर्थ संक्षेप वचन उद्देशक

१३८	क	सयम-तपश्चर्या में वृद्धि
	ख	वीरमार्ग
	ग	तप से कृशता
	घ	ब्रह्मचर्य
१३९		बाल-मोहान्ध
१४०	क	सम्यक्त्व
	ख	बुद्ध (आरम्भ से उपरत)
	ग	निष्कर्मदर्शी (आरम्भ से उपरत)
	घ	वेदवित् (कर्मबन्ध से निवृत्ति)
१४१	क	सत्य
	ख	सर्वज्ञ को कोई उपाधि नहीं

सूत्र संख्या ४

### पंचम लोकसार<sup>१</sup>अध्ययन

#### प्रथम एकचर उद्देश्यक

१४२	क	हिंसा (अर्थ-अनर्थ) हिंसक की गति
	ख	विषयेच्छा का त्याग अति कठिन

१. इत्त अध्ययन का दूसरा नाम "अवन्नि" है। अध  
चारणाद्"—आचा० टीका,

- १४३ व मोह, बाल-जीव, कुशाघ विदु का उदाहरण  
 ख माह से जन्म-मरण  
 १४४ सशय से ससार का ज्ञान  
 १४५ क ब्रह्मचर्य  
 न भाग दुःख का हेतु  
 १४६ क आमक्ति से नरक  
 न हिमा, हिनक का जन्म मरण  
 ग बाल-जीव  
 घ एक चर्या  
 ङ अविद्या से मोह मानने का

सूत्र सरणी ३

द्वितीय विरत मुनि उद्देशक

- १४७ क निर्दोष आहार  
 न अग्रमाद  
 ग विभिन्न प्रकार का दुःख  
 १४८ तद्वर पत्नीर  
 १४९ रत्नत्रय की आराधना  
 १५० परिग्रह महाभय है  
 १५१ क अपरिग्रह  
 न परम धनु क लिए प्रयत्न  
 ग ब्रह्मचर्य  
 घ अग्रमत्त होने का उपदेश

सूत्र सरणी ४

तृतीय अपरिग्रह उद्देशक

- १५२ क अपरिग्रह  
 न समता धर्म

	ग	वीर्यं— आत्म-दक्षित
१५३		संयम के चार भागों
१५४		शील आराधना
१५५	क	आत्मदमन (बाह्य शत्रु आत्म-शत्रु )
	ख	परिज्ञा
	ग	रूप-आसक्ति (हिंसा)
	घ	मुनि
	ङ	अहिंसा (कर्म)
	च	नमस्त्व
	छ	अहिंसा
	ज	अनामकत (स्त्री ने विरक्ति)
१५६	क	वमुमान् (तपोधन)
	ख	नम्यक्त्व
	ग	मुनिधर्म, विरति
	घ	सम्यक्त्व (रुक्ष आहार)
	ङ	मुनि ससार-समुद्र उतीर्ण है

सूत्र संख्या ५

चतुर्थं अव्यक्त उद्देशक

१५७		अव्यक्त (अगीतार्थ) एकल विहारी
१५८	क	हित-शिक्षा देने पर कुपित
	ख	महामोह
	ग	कुशल दर्शन, भ० का आशिर्वाद, बाधा न हो
	घ	अहिंसा
१५९-क		कर्म (इस भव में भोगने योग्य और प्रायश्चित्त से शुद्ध होने योग्य कर्म)
	ख	अप्रमाद

१६०	क	कमक्षय के लिये प्रयत्न
	ख	स्त्री के मसग का निषेध
	ग	स्त्री से विरक्त होने के उपाय
	घ	स्त्री सुप्त से पूव या पश्चात् कष्ट ध्वंसवम्भायी है
	ङ	युद्ध का निमित्त—स्त्री
	च	स्त्री-कथा स्त्री दान तथा ममत्व स्वागत व नवीन एव स्त्री की अभिलाषा का निषेध
	छ	मुनिधर्म

सूत्र सप्तम ४

पचम हृदोपम उद्देशक

१६१	क	आचार्य को जलाशय की उपमा
	ख	के समान अमरण
१६२	क	विचिकित्सा (अममाधि)
	ख	आचार्य का अनुसरण न करने पर स
१६३		जो जिन प्रवेष्टित है वह सत्य है
१६४	क	उद्धा के चार भागे
	ख	सम्यक्त्वा का चिन्तन-अम्यक परिणामन
	ग	मिथ्या वी का चिन्तन अमम्यक परिणामन
	घ	सम्यक् चिन्तन में कमण्य
	ङ	बाल भाव का निषेध
१६५		अर्द्धिना का मनोविज्ञान
१६६	क	सात्मा विज्ञानात्मा
	ख	ज्ञान और आत्मा अभिन्न है

सूत्र सप्तम ५

षष्ठ उभाय ध्यान उद्देशक

१६७	क	आज्ञा धर्म
-----	---	------------

	ख	गुरु के तत्त्वावधान में रहना
१६८	क	तत्त्वदर्शन
	ख	जिनाजा की आराधना
	ग	प्रवाद-परीक्षा
	घ	वस्तु स्वरूप का बोध
१६९	क	स्वसिद्धान्त और परसिद्धान्त का ज्ञान
	ख	गुप्तात्मा सयमी
	ग	अप्रमाद
१७०	क	सर्वत्र आश्रव
	ख	अकर्मा होने के लिये प्रयत्न
	ग	कर्म-चक्र
१७१	क	गति-आगति
	ख	मोक्षमुख
१७२		मुक्तात्मा का स्वरूप

सूत्र संख्या ६

### पण्ड धूत अध्ययन

#### प्रथम स्वजन विधूनन उद्देशक

१७३	क	उपदेश
	ख	मुक्तिमार्ग का कथन
	ग	सकिलपृ व्यक्ति
	घ	कमलाच्छादित जलाशय और कूर्म का उ०
	ङ	वृक्ष का उदाहरण
	च	सोलह रोग
	छ	जन्म-मरण का अन्त
१७४	क	दुःख (मोहान्ध)
	ख	हिंसा

१७५	क	दुःख
	ख	सावद्य चिकित्सा का निषेध
१७६	क	धृतवाद
	ख	अनेक मुनि हुए
१७७	क	वीक्षा
	ख	अशरण भावना

सूत्र सप्त्या २

द्वितीय कर्म विधूनन उद्देशक

१७८		कुशील
१७९		
१८०		महामुक्ति
१८१	क	सम्पक दृष्टि
	ख	नग्न
	ग	आशाधम
	घ	सधम
	ङ	एकचर्या—निर्दोष आहार परीपह सहना

सूत्र सप्त्या ४

तृतीय उपकरण-शरीर विधूनन उद्देशक

१८२		अचेल परीपह
१८३	क	प्रज्ञा का अभाव (कृश शरीर)
	ख	कषाय मुक्त
१८४	क	अरति
	ख	धर्म को द्वीप की उपमा
	ग	मुनि (पंडित)
	घ	पक्षीशिशु (शावक) की तरह शिष्य का बालन और शिष्यण

सूत्र सप्त्या ३

चतुर्थ गौरवत्रिक विधूनन उद्देशक

१८५	कुशिष्य
१८६	वाल
१८७	पाप-श्रमण का जन्म-मरण
१८८	कुशिष्य
१८९ क	धर्मानुशासन
ख	आज्ञा विराधक हिंसक है
१९० क	पाप-श्रमण
ख	संयमोपदेश

सूत्र संख्या ६

पंचम उपसर्ग-सन्मान विधूनन उद्देशक

१९१ क	उपसर्ग-सहन
ख	धर्मोपदेश
१९२ क	धर्मोपदेशक (श्रोता की अवज्ञा न करे)
ख	मुनि को द्वीप की उपमा
ग	भिक्षु की संयम साधना
घ	सम्पददर्शी
ङ	परिग्रह
च	भिक्षु
छ	कपाय विजय
१९३ क	मरण (आत्म शत्रुओं के साथ आत्मा का)
ख	पारगामी मुनि (पादपोपगमन)

सूत्र संख्या ३



सप्तम महा परिजा अध्ययन<sup>१</sup>  
 अष्टम विमोक्ष अध्ययन  
 प्रथम असमनोज विमोक्ष उद्देशक

१६४

मिशु का व्यवहार

१६५

१६६ क

ख

ग

अन्य तीर्थिक

अन्य तीर्थिका का क्या अर्थ है

१६७ क

ख

ग

घ

ङ

आनुग्रह मुनि

गुप्ति (वचनगुप्ति)

धन (ग्रामवास और अरण्य)

महाजन<sup>२</sup> (तीन धाम)

पापकर्मों से निवृत्ति

१६८

दण्ड हिंसा (औद्गिक हिंसा)

द्वितीय अकल्पनीय विमोक्ष उद्देशक

१६९

औद्गिक आदि छ शेष महिन आहार वस्त्र धान वस्त्रि  
 ग्रहण करने का निषेध

२००

औद्गिक आदि शेष जानने के हेतु

२०१

उपमग सहन (मौन विधान)

२०२

असमनोज की आहारार्थि देने का निषेध -

१ (क) यह अध्ययन अनुग्रह है

(ख) समराधन टिका में यह आचार्य का आठवा अध्ययन माना गया है

(ग) आचार्य मिशु ति में इस अध्ययन के ८ उ० २०२ गये हैं किन्तु  
 समराधन टिका में ७ उ० २०२ गये हैं

२ आचार्य टिका

२०३ समनोज्ञ को आहारादि देने का विधान

सूत्र संख्या १०

तृतीय अंग चेष्टा भाषित उद्देशक

- २०४ क दीक्षा (मध्यम वय मे)  
 ख समता  
 ग अपरिग्रही  
 घ अग्रथ (निर्ग्रथ)  
 ङ एक चर्या
- २०५ क आहार से शरीरोपचय (परीपह से शरीर क्षय)  
 ख इन्द्रियों की क्षीणता
- २०६ क दया (श्रमण)  
 ख भिक्षु के लक्षण
- २०७ क शीत से कम्पित भिक्षुओंको देखकर गृहस्थ की आशंका  
 ख भिक्षु का यथार्थ कथन, अग्नि से तपने का निषेध

सूत्र संख्या ४

चतुर्थ वेहानसादि मरण उद्देशक

- २०८ क तीन वस्त्र और एक पात्रधारी श्रमण का आचार  
 ख चौथा वस्त्र लेने का संकल्प न करे  
 ग तीन वस्त्र न हो तो निर्दोष वस्त्र ले  
 घ जैसे वस्त्र मिले वैसे ले  
 ङ वस्त्रों को धोए अथवा रंगे नहीं  
 च धोए हुए या रंगे हुवे वस्त्र पहने नहीं  
 छ अन्य ग्राम जाते समय वस्त्र पिछावे नहीं
- २०९ क ग्रीष्म ऋतु आने पर जीर्णवस्त्र डालदे (परठडे)  
 ख आवश्यकता ही तो अल्प वस्त्र रखे

- ग अक्षरक बने  
 २१० क उपकरण लाघव तपश्चर्या हे  
 ख सचेत अचेत अवस्थामे समत्व रखे  
 २११ असह्य शीतादिका उपमग होनेपर ब्रह्मानम मरण मरे

सूत्र सख्या ४

पञ्चम स्नान-भक्षत परिज्ञा उद्देशक

- २१२ क दा वस्त्र और एक पात्रधारी धमण का आचार  
 ख पूर्वोक्त सूत्र के समान  
 २१३ क अस्वस्थ एव अशक्त होनेपर भी अभिद्रत आहारादि न ले  
 ख वैद्यादृत्य का अभिद्रत  
 ग वैशाख्य (सेवा) क चार भागे  
 घ मरणपयत अभिद्रत का इटना से पानन करे

सूत्र सख्या २

षष्ठ एकत्व भावना इगित मरण उद्देशक

- २१४ एक वस्त्र और एकपात्रधारी धमण का आचार  
 २१५ पूर्वोक्त सूत्र २१० के समान  
 २१६ अम्वादेशत-तप  
 २१७ अस्वस्थ एव अनि शक्त होने पर इगित मरण से मरण  
 २१८ इगित मरण का मृत्य

सूत्र सख्या ५

सप्तम पट्टिमा पादपोषणम उद्देशक

- २१९ अचल पटीपट्ट और लज्जा परीपट्ट न सहभव तो एक कटी-  
 वस्त्र लेने का विधान  
 २२० अचेत तप

- २२१ दैयावृत्य के चारभागें  
 २२२ पादपोषगमन मरण की विधि

सूत्र संख्या ४

अष्टम भक्त, इंगित, पादपोषगमन मरण उद्देशक

गाथा १-२५ भक्त परिज्ञा, इंगित और पादपोषमरण की विधि

नवम उपधान श्रुत अध्ययन

गाथांक प्रथम चर्या उद्देशक

- १ दीक्षा के अनन्तर भ० महावीर का हेमन्त ऋतु में विहार
- २ भ० महावीर का देवदूष्यवस्त्र-धारण पूर्व तीर्थकरों का अनुसरण मात्र था
- ३ भ० महावीर को चार मास पर्यन्त भ्रमर आदि जन्तुओं का उपसर्ग रहा
- ४ भ० के म्कंध पर तेरह मास देवदूष्य वस्त्र रहा, पश्चात् वे अचेलक हो गये
- ५ भ० महावीर को आक्रोश परीपह एवं वध परीपह हुआ
- ६ भ० महावीर को स्त्रियों के द्वारा अनेक उपसर्ग हुए
- ७-१० भ० महावीर का मौन विहार
- ११ भ० महावीर ने दो वर्ष पूर्व ही सच्चित्त का त्याग कर दिया था
- १२ भ० महावीर ने छः काय के आरंभ का परित्याग कर दिया था
- १३ भ० महावीर द्वारा पुनर्जन्म का प्ररूपण
- १४-१६ " " " कर्म सिद्धान्त का प्रतिपादन
- १७ " " " अहिंसा का आचरण और अन्नह्यका परित्याग

भ० महावीर द्वारा पुनर्जन्म का प्रक्षयण

- १८ आवाकम आहार का त्याग  
 १९ पर (शुद्धस्थ) क वस्त्र और पर (शुद्धस्थ) क पात्रका त्याग  
 २० परिमिन आहार ग्रहण एवं सात्र सुत्रताने का त्याग  
 २१ की इर्ष्या (विहार विधि)  
 २२ द्वारा तेरह माम पश्चान देव दूष्य वस्त्र का परिचयान  
 २३ उपसहार

द्वितीय शय्या उद्देशक

गाथाक

- १ ३ भ० महावीर का विविध वसतिषा मे विहार  
 ४ की तेरह वष पयन साधना  
 ५ ६ के निद्रायाग  
 ७ के सपानि का उपसग  
 ८ १४ को घोर जार आनि पुरुषा द्वारा उपसग  
 १५ का शीन परीषह सहन करना  
 १६ उपसहार

तृतीय परीषह उद्देशक

गाथाक

- १ भ० महावीर के वृषलपण आदि परीषह  
 २ का लाट देश के वज्रभूमि और दुष्प्रभूमि म विहार  
 ३ १३ के (लाट देश मे) उपसग भगवानि को मुद्द के मोक्षपर स्थित हाथी की उपमा (दुष्टजनों को वज्रक की उपमा ग्राम वटक)

## १४ उपसंहार

## चतुर्थ आतङ्कित उद्देशक

गाथांक	भ० महावीर की तपश्चर्या
१-२	भ० महावीर की मित्ताहार करने की प्रतिज्ञा और रोगों- की चिकित्सा न करवाने की प्रतिज्ञा
३	भ० महावीर का अल्पभाषण
४	" " की शीत और ग्रीष्म ऋतु में ध्यान साधना
५	" " ने आठ मास तक निरस अन्न ग्रहण किया था
६-७	" " के विविध प्रकार के तप
८	" " का त्रिकरण से पापकर्म-परित्याग
९-१३	" " की पिण्डपणा
१४	" " के ध्यानासन
१५-१६	" " का अप्रमत्त जीवन
१७	उपसंहार

## द्वितीय श्रुतस्कंध

प्रथमा चूलिका

प्रथम पिण्डपणा अध्ययन

प्रथम उद्देशक

## सूत्रांक

१	क	सचित मिश्रित आहार लेने का निषेध
	ख	असावधानी से लेने पर निरवद्य भूमि में डालने (परठने) का विधान
२	क	सजीव (अप्रासुक) फलियों के लेने का निषेध
	ख	निर्जीव (प्रासुक) " " विधान

- ३ क अथवा या अथवा गान्धि आदि क लेने का निषेध  
 ख अनेक बार पत्र या तीन बार पत्र विधान
- ४ क भिन्ना समय की प्रवेग विधि  
 ख गौचभूमि म  
 ग स्वाध्याय भूमि म  
 घ प्रामाण्य विहार की विधि
- ५ क भिक्षु अथवा भिक्षुणी अन्वतीविक को और गृहस्थ को  
 आहार न दे और न स्निगा  
 ख पारिहारिक-अपारिहारिक को आहार न दे और न  
 स्निगा
- ६ क एक स्वधर्मों के निमित्त बने हुए (औद्दिक) आहार  
 लेने का निषेध  
 ख अनेक स्वधर्मियों के  
 लेने का निषेध  
 ग एक स्वधर्मियों के  
 लेने का निषेध  
 घ अनेक स्वधर्मियों के  
 लेने का निषेध
- ७ क धर्मशास्त्रों को गिनकर बनाये हुए (औद्दिक) आहार  
 के लेने का निषेध  
 ख पुरुषान्तर कृत (अथ पुरुष सेवित) आदि होनेपर लेने  
 का विधान
- ८ क धर्मशास्त्रों को गिने बिना बनाये हुए (औद्दिक) आहार  
 के लेने का निषेध  
 ख पुरुषान्तर कृत (अथ पुरुषसेवित) आदि होनेपर लेने  
 का विधान
- ९ भिक्षु अथवा भिक्षुणी का निर्यपिण्ड अथपिण्ड अथ

भाग और चतुर्थं भाग दिये जाने वाले कुलों में प्रवेश  
निषेध

सूत्र संख्या ६

### द्वितीय उद्देशक

- १० क पर्वदिन या विशेष प्रसंग में जहाँ नियत परिमाण में  
श्रमणादि को आहार दिया जाता हो, वहाँ से भिक्षु  
अथवा भिक्षुणी को आहार लेने का निषेध  
ख पुरुषान्तरकृत आदि होनेपर लेने का विधान  
११ उग्रकुल आदि कुलों में शुद्ध आहार लेने का विधान  
१२ क सामुहिक भोज, मृतक-भोज, उत्सव-भोजादि में जहाँ  
नियत परिमाण में श्रमणादि को आहार दिया जाता हो  
वहाँ से भिक्षु अथवा भिक्षुणी को आहार लेने का निषेध  
ख पुरुषान्तरकृत आदि होनेपर लेने का विधान  
१३ क संखडि (जीमनवार) में जाने का निषेध  
ख आचाकर्म, औद्देशिक, मिश्रित, क्रीत, उधार लाया हुआ  
आहार लेने का निषेध

सूत्र संख्या ७

### तृतीय उद्देशक

- १४ रोगोत्पत्ति की संभावना से संखडि भोजन लेने का निषेध  
१५ स्थानाभाव आदि अनेक दोषों की संभावना से संखडि  
में जाने का निषेध  
१६ क संखडि के समय अन्य कुलों में भी जाने का निषेध  
ख पश्चात् अन्य कुलों से शुद्ध आहार लेने का विधान  
१७ संखडि के निमित्त किसी ग्राम आदि में जाने का निषेध  
१८ संदिग्ध आहार लेने का निषेध



१९	क	गृह प्रवेग विधि
	ख	गौचभूमि प्रवेग विधि
	ग	स्वाध्याय भूमि प्रवेग विधि
	घ	ग्रामानुष्ठान विहार की विधि
२०	क	वर्षा षष्ठर व रज वर्षा के समय भिगाथ गृह प्रवेगविधि
	ख	गौचभूमि प्रवेग विधि
	ग	स्वाध्यायभूमि
	घ	ग्रामानुष्ठान विहार की

**सूत्र सख्या \***

**चतुर्थ उद्देशक**

२१		निदिष्ट कुत्तो म आहार के लिए जाने का निषेध
२२	क	जिम सखडि मे—भासादि बना हो जाने के माग म जीवजन्तु हो श्रमणादि की भीड क कारण प्रवश निष्प्रमण न हो सकता हो स्वाध्याय न हो सकता हो ता उमम जाने का निषेध
	ख	जहाँ उनन बात न हो वहाँ जाने का विधान
२३		जहाँ ग य हुँो जाती हो वहाँ आार क विषय न ने की विधि
२४		आगन्तुक अनिधि मुनियो के साथ आहार के लिए जाने की विधि

**सूत्र सख्या \***

**पचम उद्देशक**

२५		अग्रपिड लने का निषेध
२६	क	भिक्षा के लिए समवाग स जान का विधान

- य विषम मार्गं यद्यपि सीधा ह्यं तो भी उस मार्ग में भिक्षा के लिए जाने का निषेध
- ग विषम मार्ग में गिर जानेपर अशुभ पुद्गलों में निप्त शरीर को पंछने की विधि
- २७ क सीधे मार्ग में यदि उन्मत्त या हिंसक पशु आदि हों तो उस मार्ग में भिक्षा के लिये जाने का निषेध
- ग सीधे मार्ग में यदि गद्दे आदि हों तो उस मार्ग में भिक्षा के लिये जाने का निषेध
- २८ क भिक्षाकाल में आज्ञा लिये बिना गृहद्वार गोलने का निषेध  
ग आज्ञा लेकर गृहद्वार गोलने का विधान
- २९ पूर्वं प्रविष्ट तथा पश्चात् प्रविष्ट श्रमण को भिन्नी घर में सम्मिलित आहार प्राप्त हो तो उसके परिभोग की विधि
- ३० जिम गृह में पूर्वं प्रविष्ट श्रमण हो उन गृह में भिक्षार्थ जाने की विधि

### सूत्र संख्या ६

#### पण्ड उद्देशक

- ३१ कुलकुट आदि जिस मार्ग में दाना चुगते हों उस मार्ग से भिक्षार्थ जाने का निषेध
- ३२ क गृहस्थ के घर में निर्दिष्ट स्थानों में गड़े रहने का तथा  
द्वार उधर देगने का निषेध  
ग अविधि से याचना करने का निषेध  
ग गृहस्थ को कठोर वचन कहने का निषेध
- ३३ कालत्रय में औद्देशिक आहार लेने का निषेध
- ३४ क दाता यदि अविधि से आहार दे तो लेने का निषेध  
ख विधि से दे तो लेने का विधान
- ३५ कालत्रय में पिष्ट या भिन्न अप्राप्तुक दे तो लेने का निषेध
- ३६ अग्निपर रखा हुआ आहार लेने का निषेध

सप्तम उद्देशक

- ३७ क ऊँच स्थानों में रखा हुआ आहार दे तो लेने का निषेध  
 ग ऊँच स्थान से आगर उतारने वायु को हानेवाली हानियाँ  
 ग नीचे स्थान में आहार निकालकर दे तो लेने का निषेध  
 ३८ क मिट्टी का आच्छादन तोड़कर दे तो लेने का निषेध  
 ल पृथ्वीकाय पर रखा हुआ आहार लेने का निषेध  
 ग जलकाय पर " " "  
 घ अग्निकाय पर " " "  
 ३९ अशुष्क आहार को सूय आदि में टूटा करके दे तो लेने का निषेध  
 ४० क जलम्पिकाय पर रखा हुआ आहार लेने का निषेध  
 घ मकाय पर " " "  
 ४१ पानी लेने की विधि  
 ४२ क मशीक पृथ्वी आदिपर रखे हुए बरत में पानी दे तो लेने का निषेध  
 ग गन्नीक पृथ्वी आदि से मिश्रित पानी दे तो लेने का निषेध

सूय सम्बन्धी ६

अष्टम उद्देशक

- ४३ जालादि का अशुभुक्त (मशिन) एवं औद्योगिक पानी लेने का निषेध  
 ४४ अनादि की आसक्ति पूरक रूप सूषणे का निषेध  
 ४५ क गान् अग्नि अशुभुक्त लेने का निषेध  
 ग जिनगी " "  
 ग अक आदि अशुभुक्त पान लेने का निषेध  
 घ अशुभुक्त उद्यान "  
 इ कनिष्ठ " सरसु "  
 घ उषर " "

४६		आमडाग-आदि अपक्व या अर्धपक्व लेने का निषेध		
४७	क	इक्षु खंड आदि अप्रासुक लेने का निषेध		
	ख	उत्पल	"	"
४८	क	अग्रवीज	"	"
	ख	इक्षु	"	"
	ग	लशुन	"	"
	घ	अस्तिक	"	"
	ङ	कण	"	"

सूत्र संख्या ६

नवम उद्देशक

५९		औद्देशिक आहार लेने का निषेध
५०		जहाँ श्रमण के स्वकुल के तथा स्वसुर कुल के रहते हों वहाँ आहार के लिए जाने की विधि
५१		जहाँ मांसादि बना हो वहाँ आहार के लिए जाने का निषेध
५२		आहार खाने की विधि
५३		पानी पीने की विधि
५४		अधिक आहार के परिभोग की विधि
५५		किसी को देने के लिए निकाले हुए आहार के लेने की विधि

सूत्र संख्या ७

दशम उद्देशक

५६		श्रमण समूह के लिए प्राप्त आहार के परिभोग की विधि
५७		सरस आहार को छिपाने का निषेध
५८	क	इक्षु आदि अल्प खाद्य अधिक त्याज्य पदार्थ लेने का निषेध
	ख	बहु अस्थिक आदि के परिभोग की विधि

५६ अग्रामुक सवण के लेने का निषेध भूल में लिए हुए के परिभोग की तथा डालने (परठने) की विधि

**सूत्र सख्या ४**

**एकादश उद्देशक**

६० ग्लान के निमित्त मिले हुए आहार के सब्ध में माया करने का निषेध

६१ सूत्र ६० के समान

**६२ सात पिण्डघणा**

- क अलिप्त हाथ एव अलिप्त पात्र से आहार लेना
- ख लिप्त हाथ एव लिप्त पात्र से आहार लेना
- ग अलिप्त और लिप्त पात्र या लिप्त हाथ और अलिप्त पात्र से आहार लेना
- घ पश्चात् कम दोषरहित आहार लेना
- ङ भोजन से पूर्व धोये हुए हाथ सूकने के पश्चात् आहार लेना
- च स्वयं या दूसरे के लिए पात्र में लिया हुआ आहार लेना
- छ डालने योग्य आहार लेना

**सात पाण्डघणा**

पिण्डघणा के समान

ज आहार के स्थान में पानी समझना

६३ पन्निमाचारी की निन्दा का निषेध

**सूत्र सख्या ५**

**द्वितीय शम्पघणा अध्ययन**

**प्रथम उद्देशक**

६४ क पतियों के अडे आनि जिस उपाश्रय में हो उसमें टहरने का निषेध

- ग परिष्कृत के छत्र तद्विधि द्वारा उपाश्रय में न ली, उद्योग  
 टहरने का विधान
- घ पूरा उपाश्रयों के निर्मित होने हुए औद्योगिक उपाश्रयमें  
 टहरने का विधान
- ङ अनेक उपाश्रयों के निर्मित होने हुए औद्योगिक उपाश्रय में  
 टहरने का विधान
- च पूरा उपाश्रयों के निर्मित होने हुए औद्योगिक उपाश्रय में  
 टहरने का विधान
- छ अनेक उपाश्रयों के निर्मित होने हुए औद्योगिक उपाश्रय  
 में टहरने का विधान
- ज अश्रयों के विभिन्न प्रकार के बनाये हुए औद्योगिक उपाश्रय में  
 टहरने का विधान
- झ अश्रयों के निर्मित मरम्मत कराये हुए औद्योगिक उपाश्रय  
 में टहरने का विधान
- ३५ ट अश्रयों के निर्मित कुत्त परिवर्तन कराये हुए औद्योगिक  
 उपाश्रय में टहरने का विधान
- ड अश्रयों के निर्मित कंठमूत्रादि स्थानांतरित किये जायें ऐसे  
 उपाश्रय में टहरने का विधान
- ण पुष्पाक्षरक आदि होनेपर टहरने का विधान
- प अश्रयों के निर्मित पीठ-फाक आदि स्थानांतरित किए  
 जायें ऐसे उपाश्रय में टहरने का विधान
- ६६ क बहुत ऊँचे मकानों में या तलघरों में टहरने का विधान
- ग ऐसे स्थानों में टहरने से होनेवाली हानियाँ
- ६७ क स्त्री आदि वाले उपाश्रय में टहरने का विधान
- ग ऐसे स्थानों में टहरने से होनेवाली हानियाँ

- ६८ क जिस उपाध्यय मे गृहस्थ रहना हो ऐस उपाध्यय म ठहरने का निषेध
- न ऐसे उपाध्यय म कहन आदि का उगडव होता है
- ६९ ऐस उपाध्यय म अग्निवाय का आरभ होना है
- ७० अनहन तरुणिया को देखने स मन विडून हाता है
- ७१ ऐस उपाध्यय मे ओज्जम्बी पुत्र शान्ति निमित्त मैथुन क विण स्त्रियां निमत्रण देती हैं

मूत्र सख्या स

द्वितीय उद्देशक

- ७२ ऐसे उपाध्यय मे भिक्षु के स्वेद का दुर्गंध के प्रति जीव वादि गृहस्थ को घृणा होनी है
- ७३ ऐस उपाध्यय म गृहस्थ या भिक्षु क निमित्त बने हुए गरम भोजन पर भिक्षु का मन बसता है
- ७४ ऐस उपाध्यय मे भिक्षु के निमित्त कण्ठ भेदन और अग्नि का आरभ हाता है
- ७५ ऐसे उपाध्यय म मलमूत्रादि मे निवृत्त हाने के लिए रात्रि मे द्वार खोलनेपर चौरा क घुसने की सम्भावना अथवा भ्रम से साधु को चोर मान लेना चोर क मवध मे भाषा का विवक
- ७६ क जीव अनुवाला तुण पलाल आदि जिस उपाध्यय मे हो, उसमे ठहरने का निषेध
- ख जीव अनु रहित तुण पलाल आदि जिस उपाध्यय मे हा उसमे ठहरने का विधान
- ७७ जिन स्थानो म स्वधर्मी अधिक आते हो उन स्थानो म अधिक ठहरने का निषेध

- ७८ जिन स्थानों में मासकल्प या वर्षावास रह चुके हों, उनमें पुनः रहने का निषेध
- ७९ उक्त स्थान में दो तीन मास का व्यवधान किये बिना ठहरने का निषेध
- ८० श्रमण या गृहस्थ के निमित्त बनवाये हुए स्थान में अन्य मतानुयायी श्रमणों के ठहरनेपर भिक्षु के ठहरने का विधान
- ८१ उक्त स्थान में अन्य मतानुयायि श्रमण न ठहरे हों तो भिक्षु के ठहरने का निषेध
- ८२ गृहस्थ अपने लिए बनवाया हुआ मकान साधुओं को समर्पित करे और अपने लिए दूसरा मकान बनवावे तो उसमें ठहरने का निषेध
- ८३ श्रमणादि की गिनती करके बनवाये हुए एवं समर्पित किये हुए स्थान में ठहरने का निषेध
- ८४ सूत्र ८१ के समान
- ८५ एक भिक्षु के निमित्त निर्माण कराए हुए एवं समर्पित किए हुए स्थान में ठहरने का निषेध
- ८६ गृहस्थ ने अपने लिए मकान बनवाया हो और अपने लिए ही अग्नि का आरंभ किया हो, ऐसे स्थान में ठहरने का विधान

### सूत्र संख्या १५

#### तृतीय उद्देशक

- ८७ उपाश्रय के दोषों का कथन, और उनकी यथार्थता
- ८८ बहुत छोटे द्वार वाले उपाश्रय में अथवा अनेक श्रमण जहां ठहरे हुए हों, ऐसे उपाश्रय में ठहरने की विधि
- ८९ उपाश्रय के लिए आज्ञा प्राप्त करने की विधि
- ९० क शय्यातर का नाम गोत्र पूछना



न गध्यातर क घर से आहार लेने का निषेध

६१ त्रिम उपाधय मे गृहस्थ का निवाग हो अग्नि-पानी का आरभ हो स्वाध्याय स्थान का अभाव हो उममे टहरने का निषेध

६२ गृहस्थ के घर मे होकर उपाधय म जाने का माग हो तो उस उपाधय मे टहरने का निषेध

६३ गृहस्थ के घर मे गृहकलह होता है

६४ तेल मदन होता है

६५ स्नानादि होता है

६६ जलक्रीडा होती है

६७ नान या अध नग्न स्त्रियां होती है

६८ विकार बधक भित्ति चित्र होते हैं

६९ क जीव जन्तु वाला सस्तारक लेने का निषेध

ख भारी

ग प्रशयण के अयोग्य

घ शिथिल बधवाला

ङ जीव जन्तु रहित लघु प्रत्यर्पण याग्य एव दृढ सस्तारक लेने का विधान

चार सस्तारक पडिमा

१०० १ प्रथमा पडिमा—सस्तारको का नाम जेकर किसी एक सस्तारक का ग्रहण करना

१०१ २ द्वितीया पडिमा—इन सस्तारको मे से अमुक एक सस्तारक ग्रहण करना

३ तृतीया पडिमा—उपाधय मे विद्यमान सस्तारक ग्रहण करना अथवा उ बटुक आसन आदि से रात्रि व्यतीत करना

- १०२ ४ चतुर्थी पडिमा—शिला या काष्ठ का संस्तारक लेना  
अन्यथा उत्कटुक आसनादि से रात्रि व्यतीत करना
- १०३ पडिमा घारी की निन्दा का निषेध
- १०४ जीव-जन्तु सहित संस्तारक प्रत्यर्पित नहीं करना
- १०५ जीव-जन्तु रहित संस्तारक प्रत्यर्पित करना
- १०६ मल-मूत्र डालने की भूमि का देखना, न देखने से होनेवाली  
हानियाँ
- १०७ आचार्य आदि के शय्यास्थल को छोड़कर अन्यत्र शय्या-  
स्थल देखना
- १०८ क जीव-जन्तु रहित शय्यापर बैठना  
ख बैठने से पूर्व शरीर का प्रमार्जन करना
- १०९ क एक-दूसरे का परस्पर स्पर्श न हो ऐसी शय्या पर सोना  
ख मुँह ढककर उच्छ्वास आदि लेना  
ग मलद्वार के ऊपर हाथ देकर अपानवायु छोड़ना
- ११० सम-विषम शय्या में समभाव रखना
- सूत्र संख्या २४

### तृतीय इर्या अध्ययन

#### प्रथम उद्देशक

- १११ वर्षाकाल में विहार का निषेध
- ११२ क अयोग्य स्थान में वर्षावास न करना  
ख योग्य " " करना
- ११३ वर्षाकाल के पश्चात् भी मार्ग में जीव जन्तु अधिक हों तो  
विहार न करना
- ११४ क जीव-जन्तु वाले मार्ग में न चलना  
ख अन्यमार्ग के अभाव में त्रसजीवों की रक्षा करते हुए  
चलना

- ग बीज आदि वनस्पतिवाप्य माग म न चलना  
 घ अय माग क अभाव म स्यावर जीवो की रक्षा करते हुए  
 चलना  
 ११५ क म्लच्छ आदि क उपद्रव वाद माग म विहार म करना  
 ख अय माग से विहार करने का विधान  
 ११६ क अराजक आदि प्रदेशो मे होकर विहार करने का निषेध  
 ख अय माग स विहार करने का विधान  
 ११७ क अनेक दिनों म लाधने योग्य अटवी मे होकर जाने का  
 निषेध  
 ख ऐसी अटवी मे होकर जाने मे जानेवाली हानिया  
 ११८ क कीनादि श्लेष युक्त अथवा मुद्गर गामिनी नौका म बठने  
 का निषेध  
 ख निशगामिनी नौका म बँठने का विधान व बठने की  
 विधि  
 ११९ नाव म बठने की विधि—कतव्याकृतय

सूत्र सख्या ६

**द्वितीय उद्देशक**

- १२० नाव मे बठने क पदचाल किमा के उपकरण ग्रहण न कर  
 १२१ अधिक भार के कारण यदि कोई मुनि को नौका से नीचे  
 गिरावे तो ममाधिभाष्य रखने का उपपन्न  
 १२२ क नौका मे गिराए जाने के पश्चात् शरीर के अवयवो का  
 परस्पर स्पृश न करे  
 ख ऽवकी न लगावे कान आदि म पानी न जाने द  
 ग निकलने म बठिनाई मायूम द तो उपधि का परिष्कार  
 करे किनारे पहुँचने पर ऽवो का ह्यो खना रहे  
 घ गीना शरीर सूखने पर आगे विहार करे

- १२३ क वात करते हुए चलने का निषेध  
 ख पानी के अल्प-प्रवाह को पार करना
- १२४ क पानी को पार करने की विधि  
 ख पानी को पार करते समय अवयवों का परस्पर स्पर्श निषेध  
 ग ठण्डक के लिये गहरे पानी में जाने का निषेध, किनारे पहुंचने पर ज्यों का त्यों खड़ा रहना  
 घ गीला शरीर सूखने पर आगे विहार करना
- १२५ क कीचड़ से भरे हुए पावों को हरे घास से घिसते हुए चलने का निषेध  
 ख हरे घास रहित मार्ग में चलने का विधान  
 ग किले की टूटी दिवार आदि मार्ग में हो तो उस मार्ग से जाने का निषेध  
 अन्य मार्ग के अभाव में उस मार्ग से जाना पड़े तो उसकी विधि  
 घ धान्य की गाड़ियां आदि जिस मार्ग से जा रही हो उस मार्ग से जाने का निषेध  
 ङ जिस मार्ग में छावनी हो उस मार्ग से जाने का निषेध  
 च अन्य मार्ग के अभाव में—उस मार्ग से जाते समय यदि उपसर्ग हो तो समभाव रखने का उपदेश
- १२६ पथिकों के प्रश्नों का उत्तर न देना

सूत्र संख्या ७

### तृतीय उद्देशक

- १२७ क गढ़, किला आदि दिखाते हुए चलने का निषेध  
 ख कच्छ आदि दिखाते हुए चलने का निषेध

- दिवाने से एगादि प्राणिया को होने वाला भय
- २८ ग गुरुदेव के साथ विवेक पूरक चमने का विधान  
 क आचाय उपाध्याय के हस्त आदि अवयवों में स्पष्ट करने  
 हुए चमन का निषेध
- २९ ग आचाय उपाध्याय—पथिकों क प्रश्नों का उत्तर दे रहें  
 हो उस समय बीचने बोलने का निषेध
- ग आनदृष्टों के हस्तादि अवयवों में स्पष्ट करते हुए चमने का  
 निषेध
- घ शानदृष्ट—पथिकों क प्रश्ना का उत्तर देरहे हा उस समय  
 बीचने बोलने का निषेध
- ३६ क भिन्नु अथवा भिन्नुगी में कुछ पथिक—मनुष्य पशु आदि के  
 सम्बन्ध में पूछे तो उत्तर देने का निषेध
- ग भिन्नु अथवा भिन्नुगी में कुछ पथिक जन्म कद आदि के  
 सम्बन्ध में पूछे तो उत्तर देने का निषेध
- ग भिन्नु अथवा भिन्नुगी में कुछ पथिक धान्य की गादिया के  
 सम्बन्ध में पूछे तो उत्तर देने का निषेध
- घ द्वावनी आदि के सम्बन्ध में पूछे तो उत्तर देने का निषेध
- ३७ क भिन्नु अथवा भिन्नुगी में कुछ पथिक ग्राम स्त्रिनी दूर है  
 ऐसा पूछे तो उत्तर देने का निषेध
- घ भिन्नु अथवा भिन्नुगी में कुछ पथिक अनुक गाव का मार्ग  
 स्त्रिनी दूर है ऐसा पूछे तो उत्तर देने का निषेध
- ३८ क उभयतः पाद आदि त्रिम माग में हा उभयतः जाने  
 की विधि
- ग त्रिम अथवा चर्रा का उद्वेग हो उस अथवा में चार  
 होने की विधि

- १३१ भिक्षु अथवा भिक्षुणी के उपकरण मार्ग में चौर छीनें तो उस समय के लिए समाधिभाव रखने का उपदेश तथा उस समय के लिए कुछ विशेष सूचनाएँ

---

सूत्र संख्या ५

चतुर्थ भाषा जात श्रध्ययन

प्रथम वचन विभक्ति उद्देशक

- १३२ क कठोर वचन और निश्चित वचन का निषेध  
 ख सोलह प्रकार के वचनों का विवेक पूर्वक प्रयोग  
 ग चार प्रकार की भाषा के सम्बन्ध में तीनकाल के तीर्थकरों की समान प्रहृषणा, भाषा का पौद्गलिक रूप
- १३३ क भाषा का त्रैकालिक रूप  
 ख सावद्य- यावत्- प्राणियों का घात करने वाली चारों भाषाओं का निषेध  
 ग असावद्य यावत्-प्राणियों का घात नहीं करने वाली सत्य और व्यवहार भाषा के प्रयोग का विधान
- १३४ क पुरुष को अप्रिय सम्बोधन करने का निषेध  
 ख " प्रिय " " विधान  
 ग स्त्रियों " अप्रिय " " निषेध  
 घ " प्रिय " " विधान
- १३५ क आकाश आदि को देव कहने का निषेध  
 ख वर्षा धान्य आदि के सम्बन्ध में "हो या न हो" ऐसी भाषा के प्रयोग का निषेध  
 ग राजा की जय पराजय कहने का निषेध  
 ग आकाशादि के संबन्ध में विवेकपूर्ण भाषा का प्रयोग

---

सूत्र संख्या ४

द्वितीय क्रोधादि उत्पत्ति वर्जन उद्देशक

- १३६ क रोगी या अंगविकल को कुपित करने वाले वाक्य न कहना

	न करने वाले वाक्य कहना	
ग	चित्ते आदि को देखकर सावद्य भाषा के प्रयोग का निषेध	
घ	निरवद्य	विधान
१३७ व	आहार के सम्बन्ध में सावद्य भाषा के प्रयोग का निषेध	
ख	निरवद्य	विधान
१३८ क	मनुष्य पशु आदि के सम्बन्ध में सावद्य भाषा के प्रयोग का निषेध	
ग	मनुष्य पशु	निरवद्य विधान
घ	गाय बल के	सावद्य निषेध
ङ		निरवद्य विधान
च	उद्यान में लड़कने वृत्तों के सम्बन्ध में सावद्य भाषा के प्रयोग का निषेध	
छ	उद्यान या वन में लड़े वड़े वृत्तों के सम्बन्ध में निरवद्य भाषा के प्रयोग का विधान	
ज	फलों के सम्बन्धमें सावद्य भाषा के प्रयोग का निषेध	
झ		निरवद्य विधान
ञ	घातके सम्बन्धमें सावद्य	निषेध
१३९ क		निरवद्य विधान
ख	शब्द सुनकर सावद्य भाषा का प्रयोग न करना	
ग		न करना
घ	नप देखकर सावद्य	न करना
ङ		न करना
च	गद्य श्लोक सावद्य	न करना
छ		न करना
ज	रस का आम्बान्तकर सावद्य	न करना
झ		न करना
ञ	निरवद्य	करना

भ स्पर्श के पश्चात् सावद्य " " न करना  
 ब " " निग्वद्य " " करना

१४० विवेक पूर्वक बोलने का उपदेश

सूत्र संख्या ५

पंचस वस्त्रैपणा अध्ययन

प्रथम वस्त्र ग्रहण विधि उद्देशक

- १४१ क छह प्रकार के वस्त्र  
 ख निर्ग्रथ के लिए एक वस्त्र का विधान  
 ग निर्ग्रथी के लिए चार चदर का विधान  
 घ चार चदर का परिमाण  
 १४२ वस्त्र के लिये अर्ध योजन से अधिक जाने का निषेध  
 १४३ क एक स्वधर्मि के उद्देश्य से बनाया या बनवाया हुआ कपड़ा लेने का निषेध  
 ख अनेक स्वधर्मियों के उद्देश्य से " "  
 ग एक स्वधर्मिनी के " " "  
 घ अनेक स्वधर्मिनियों के " " "  
 ङ श्रमणादि को गिनकर उनके निमित्त बनाया या बनवाया हुआ कपड़ा लेने का निषेध  
 च पुरुषान्तरकृत आदि होने पर लेने का विधान  
 छ श्रमण समूह के लिए बनाया या बनवाया हुआ कपड़ा लेने का निषेध  
 ज पुरुषान्तरकृत आदि होनेपर लेने का विधान  
 १४४ क भिक्षु के निमित्त क्रीत, धौत आदि दोष सहित वस्त्र लेने का निषेध  
 ख पुरुषान्तरकृत आदि होनेपर लेने का विधान



१४५	क	बहुमूल्य वस्त्र लेने का निषेध
	ख	चर्म " " "
		चार वस्त्र पट्टिमा
		प्रथमा पट्टिमा—द्वह प्रकार के वस्त्रों में से किसी एक प्रकार के वस्त्र का मकल्प करके लेना, स्वयं याचना करना बिना याचना किए दे तो लेना
		द्वितीया पट्टिमा—दृष्ट वस्त्र का मनमें सकल्प करके लेना
		तृतीया पट्टिमा—परिभुक्त वस्त्र लना
		चतुर्थी पट्टिमा—फेंकने योग्य वस्त्र लना
	क	पट्टिमा धारी की निन्दा का निषेध
	ख	वस्त्र लने की विधि
१४७	क	ओषध अन्तु सहित वस्त्र लेने का निषेध
	ख	" रहित " " विधान
	ग	टिकाउ आदि गुण सम्पन्न वस्त्र लेने का विधान
	घ	वस्त्र को मचीन दिखाने के लिए प्रयत्न न करे
	ङ	" " "
	च	सुगन्धित करने " "
१४८	क	वस्त्र को सुगन्धित करने की विधि
	ख	" " "
	ग	" " "
	घ	" " "
	ङ	" " "

सूत्र सख्या ७

द्वितीय वस्त्र धारण विधि उद्देशक

१४९	क	यथा प्राप्त वस्त्र धारण करने का विधान
	ख	घोने व रमने का निषेध

- ग भिक्षा के समय सारे वस्त्र साथ में लेजाने का विधान  
 घ स्वाध्याय स्थान में जाते " " " "  
 ङ शौच-स्थल में जाते " " " "  
 च वर्षा घुंअर रजघात हो तो ग-घ-ङ में निर्दिष्ट समयों में सारे वस्त्र साथ लेजाने का निषेध
- १५० क किसी श्रमण से अल्पकाल के लिए याचित वस्त्र के प्रत्यर्पण की विधि
- ख मायापूर्वक अल्पकाल के लिए वस्त्र याचना का निषेध
- १५१ क शोभनीय वस्त्र को अशोभनीय और अशोभनीय वस्त्र को शोभनीय बनाने का निषेध
- ख अन्य वस्त्र के प्रलोभन से स्वकीय वस्त्र का विनिमय आदि न करे
- ग अन्य वस्त्र के प्रलोभन से हढ़ वस्त्र को फाड़कर न फेंके
- घ वस्त्र छीनने वाले चोर के भय से उन्मार्ग गमन का निषेध
- ङ अटवी में " " " "
- च " चोरों का उपद्रव होनेपर समभाव रखने का उपदेश

सूत्र संख्या ३

षष्ठ पात्रैषणा अध्ययन

प्रथम उद्देशक

१५२

तीन प्रकार के पात्र

- क निर्ग्रन्थ के लिए एक पात्र का विधान
- ख पात्र के लिए आधे योजन से आगे जाने का निषेध
- ग एक स्वधर्मी के उद्देश्यसे बनाया या बनवाया पात्र लेने का निषेध
- घ अनेक स्वधर्मियों के उद्देश्य से बनाया या बनवाया पात्र

- उ एक स्वधमिनी के उद्देश्य से बनाया या बनवाया पात्र लेने का निषेध
- च अनेक स्वधमिनियों के उद्देश्य से बनाया या बनवाया पात्र लेने का निषेध
- छ श्रमणों को गिनकर बनाये या बनवाये पात्र लेने का निषेध
- ज श्रमण समूह के लिए बनाया या बनवाया पात्र लेने का निषेध
- झ बहुमूल्य पात्र लेने का निषेध
- ञ बहुमूल्य वधनों से बंधे हुए पात्र लेने का निषेध

### चार पात्र पट्टिमा

प्रथम पट्टिमा—तीन प्रकार के पात्रों में से किसी एक प्रकार के पात्र का मन्त्र करके लेना स्वयं याचना करे या बिना याचना के मिले तो ग्रहण करना

द्वितीय पट्टिमा—देखने के पश्चात् उपयुक्त पात्र लेना

तृतीय पट्टिमा—फकने योग्य पात्र लेना

चतुर्थ पट्टिमा—परि भुजन पात्र लेना

ट पट्टिमाधारी की निन्दा का निषेध

ठ पात्र याचना विधि

१५३ पात्र का प्रमात्रन करके भिक्षार्थ जाने का विधान

१५४ क सचिव शीतल जल दूमरे पात्र में लेकर मात्सी किया हुआ पात्र दे तो लने का निषेध

ख भिक्षार्थ जाने समय सारे पात्र माथ से जाने का विधान

ग स्वाध्याय स्थान में जाने समय सारे पात्र माथ में जाने का विधान

- घ शौच स्थान में जाते समय सारे पात्र साथ ले जाने का विधान  
 ङ वर्षा, धुंअर व रजघात के समय ख-ग-घ में निदिष्ट स्थानों में सारे पात्र ले जाने का निषेध

सूत्र संख्या ३

### सप्तम अवग्रह प्रतिमा अध्ययन

#### प्रथम उद्देशक

- १५५ अदत्तादान लेने का सर्वथा निषेध  
 साथी मुनियों के छत्र आदि भी आज्ञापूर्वक लेने का विधान  
 १५६ क धर्मशाला आदि में ठहरने के लिये जितने काल की आज्ञा ले उतने काल तक ठहरना  
 ख स्वयं के लाये हुए आहार के लिए स्वधर्मी श्रमण को निमंत्रण दे, दूसरे के लाये हुए आहार के लिए निमंत्रण न दे  
 १५७ क स्वयं के लाये हुए पीढा आदि के लिए स्वधर्मी श्रमणको निमंत्रण देना, दूसरे के लाये हुए के लिए निमंत्रण न देना  
 ख सुई, कैंची आदि के प्रत्यपर्ण की विधि  
 १५८ क संजीव भूमि की आज्ञा न लेना  
 ख स्तूप आदि की आज्ञा न लेना  
 ग भीत पर बने स्थानादि की आज्ञा न लेना  
 घ ऊंचे बने स्थानादि की आज्ञा न लेना  
 ङ गृहस्थादि जहाँ रहते हो ऐसे उपाश्रय की आज्ञा न लेना  
 च गृहस्थ के घर में होकर उपाश्रय में जाने का मार्ग हो ऐसे उपाश्रय की आज्ञा न लेना

घ तेने उपाधय म से टहरने से होने वाली हानिवां  
 ज भित्तिविच वाच उपाधय की आणा न लेना

सूत्र सप्तम्य ४

### द्वितीय उद्देश्य

- १५२ धमनावा आनि स्थाना मे पूष निवर्गित धमन को अग्रिम  
 न मने इन प्रकार आणा सेवर रहना
- १६० क आग्रवन मे जीव-जन्तु सहित आन्न लेने का निषेध  
 ख आग्रवन म प्रामुक आन्न लेने का विधान  
 ग आग्रवन मे अप्रामुक आन्न लेने का निषेध  
 घ आग्रवन मे जीव जन्तु सहित आन्न मण्ड लेने का निषेध  
 ङ आग्रवन म अप्रामुक अप्रामुक आन्न मण्ड लेने का निषेध  
 च आग्रवन म प्रामुक आन्न-मण्ड लेने का विधान  
 ज इक्षु वन म अप्रामुक इक्षु लेने का निषेध  
 झ इक्षु वन मे प्रामुक इक्षु लेने का विधान  
 ञ इक्षु वन मे प्रामुक इक्षु-मण्ड लेने का विधान  
 ट लज्जु वन के तीन विरल्य आग्रवन के समान

१६१

### सप्तम्य अथग्रह पडिमा

प्रथम पडिमा—अज्ञा काल पयन टहरणा  
 द्वितीय पडिमा—अन्य के लिए निर्दोष स्थान की आणा  
 लणा और उमीम टहरणा  
 तृतीय पडिमा अय के लिए निर्दोष स्थान की आणा  
 लूणा किन्तु उसमे टहरणा नही  
 चतुर्थ पडिमा—अय के लिए आणा नही लूणा किन्तु  
 अय से याचित उपाधय में टहरणा  
 पंचम पडिमा—केवल अपने लिए स्थान की आचना  
 कथणा अय के लिए नही  
 षष्ठ पडिमा—याचित स्थान मे शय्या समस्तारक होगा



नवम निषीधिका अध्ययन प्रथम उद्देशक  
निषीधिका' सप्तकक

- १६४ क जीव-जन्तुवाले स्थान में स्वाध्याय करने का निषेध  
द्वितीय गर्भपणा अध्ययन-सूत्र ६४ के म में च पयन्त और  
सूत्र ६५ की पुनरावृत्ति  
ख एक से अधिक स्वाध्याय स्थान में जाके तो बैठने की विधि

सूत्र सख्या २

दशम उच्चार-प्रश्रवण अध्ययन प्रथम उद्देशक  
तृतीय उच्चार प्रश्रवण सप्तकक

- १६५ क मनवेग में व्यथित धमन क पास मनोत्सग क लिए स्वय  
का वस्त्र खड या पात्र न हो तो स्वधर्मों धमन से  
याचना का विधान  
ख जीव-जन्तुवाली भूमि में मनोत्सग करने का निषेध  
ग जीव जन्तु रहित विधान  
घ एक स्वधर्मों के लिए बनाई हुई गौचभूमि में मनोत्सग  
का निषेध  
ङ अनेक स्वधर्मियो  
च एक स्वधर्मिनी  
छ अनेक स्वधर्मिणियो  
ज धमणां को गिनकर  
झ पुरुषान्तर कृत्न होनेपर मनोत्सग का विधान  
ञ धमन स्पृश के लिए बनाई हुई गौचभूमि में मनोत्सग  
करने का निषेध

	ब्र	कीटादि दोषमुक्त उष्णार-प्रश्रवणभूमि में मन्तोत्सर्ग निषेध
	ट	कंशादि जिम भूमि में स्थानांतरित किए गए हों ऐसी भूमि में
	ड	अनेक पदार्थ जिम भूमि में " " "
	ड	सजीव भूमि में मन्तोत्सर्ग करने का निषेध
१६६	क	जिम भूमिमें कंशादी फेंके जाते हों ऐसी भूमिमें म० नि०
	ग	" " में नाभी आदि धान्य बिखारे हों " "
	ग	" " में कचरे का ढेर हों " "
	घ	भोजन बनाने के स्थान में मन्तोत्सर्ग करने का निषेध
	ड	इमदान में " "
	घ	घगीचे आदि में " "
	छ	अट्टानिका आदिमें " "
	ज	निराहू चौराहू आदि में " "
	क	फोयना आदि बनाने के स्थान में " "
	ब्र	जलाशयों में " "
	ट	स्थानों में " "
	ड	घाक पैदा होने वाले स्थानों में " "
	ड	धान्यादि पैदा होने वाले स्थानों में " "
	ड	पत्र, पुष्प फलादि पैदा होने वाले स्थानों में " "
१६७		एकान्त स्थान में मन्तोत्सर्ग की विधि

सूत्र संख्या ३

इग्यारहवां शब्द श्रध्ययन. प्रथम उद्देशक  
चतुर्थ शब्द सप्तकक

१६८	क	मृदंग आदि वाद्य सुनने के लिए जाने का निषेध
	ख	वीणा " "
	ग	ताल " "
	घ	शंस " "



१६९	क	किले आदि मे होनेवाला सगीत सुनने का निषेध
	ख	कच्छ
	ग	ग्राम
	घ	बगीचे
	ङ	अट्टालिका
	च	तिराहे चौराहे
	छ	भैसे आदि बाधने के स्थानो मे होनेवाला सगीत सुनने का निषेध
	ज	भैसे आदिके के गुहस्थलो मे
	झ	चिवाह स्थलो मे
१७०	क	कथा
	ख	कलह
	ग	वच
	घ	शकट आदि के समुह में
	ङ	मनोःभव मे
	च	सभी प्रकार के शब्दो मे आमति रखने का निषेध

**सूत्र सख्या ३**

द्वारहृवा रूप अध्ययन प्रथम उद्देशक  
पचम रूप सप्तैकक

१७१	क	गुथी हुई फूल मालाए आदि अवलोकनाथ जाने का निषेध
	ख	किले
	ग	कच्छ
	घ	बगीचे
	ङ	अट्टालिका
	च	तिराहे चौराहे
	छ	भैसे आदि बाधने के स्थान

ज	भैसे आदि के युद्ध के स्थल अवलोकनार्थ जानेका निषेध		
झ	विवाह स्थल	"	"
ञ	कथा "	"	"
ट	कलह "	"	"
ठ	वध "	"	"
ड	शकट आदि का समूह	"	"
ढ	महोत्सव	"	"
ण	सभी प्रकार के रूपों में आसक्ति रखने का निषेध		

सूत्र संख्या १

तेरहवां परक्रिया अध्ययन. प्रथम उद्देशक  
षष्ठ परक्रिया सप्तैकक

१७२ क	गृहस्थ से पैरों का प्रमार्जन न कराना	
ख	" " मर्दन "	
ग	" " स्पर्श "	
घ	" " मालिश "	
ङ	" " के लेपन "	
च	गृहस्थ से पैरों का न धुलाना	
छ	" " पैरों के विलेपन न कराना	
ज	" " पैरों के धूप न दिलाना	
झ	गृहस्थ से पैरों के काँटे न निकलवाना	
ञ	गृहस्थ से पैरों का पीप न निकलवाना	
क	" " शरीर का प्रमार्जन न कराना	
ख	" " व्रण का मर्दन न कराना	
ग	पैर विषयक ग से ञ तक की पुनरावृत्ति	
क	गृहस्थ से गड़ (फोड़ा) आदि का शस्त्र से छेदन न कराना	

ख	गृहस्थ से गड (फोडा) आदि का शस्त्र से रफ्त न निकालना
ग	आदि का प्रमाजन न करवाना
घ	आदि का मदन न करवाना
<u>ङ</u>	पैर विषयक ग से अ तक की पुनरावृत्ति
क	गृहस्थ से शरीर का मैल साफ न करवाना
ख	शैल्य आदि का मैल साफ न करवाना
ग	नवे बाल आदि न कटवाना
<u>घ</u>	लीस जू न निकलवाना
क	गोश या पलग पर सेटाकर गृहस्थ पैरो का प्रमाजन करे तो न करवाना
ख	गोश या पलग पर सटानर गृहस्थ परा का मदन करे तो न करवाना
<u>ग</u>	पैर विषयक ग से अ तक की पुनरावृत्ति
क	गोश या पलगपर सेटाकर गृहस्थ हार आदि पहनाये ता न पहनना
ख	आराम या उद्यान मे लजाकर गृहस्थ पैरो का प्रमाजन करे तो न करवाना
<u>ग</u>	पर विषयक ग से अ तक की पुनरावृत्ति
क	साधु दूसरे साधु से अवारण पैरो का प्रमाजन न करावे
<u>ख</u>	पर विषयक ग से अ तक की पुनरावृत्ति
ट	काय विषयक ग से अ तक की पुनरावृत्ति
ठ	वण विषयक ग से अ तक की पुनरावृत्ति
ड	गड विषयक ग से अ तक की पुनरावृत्ति
इ	वणदेशन विषयक ग से अ तक की पुनरावृत्ति
ण	स्वश विषयक ग से अ तक की पुनरावृत्ति
त	साधु जू विषयक ग से अ तक की पुनरावृत्ति

१७३ क गृहस्थ ने मंग निकित्ना न करवाना  
 ग गृहस्थ ने कदादि निकित्ना न करवाना

सूत्र संख्या २

चौदहवां अन्योऽन्य क्रिया अध्ययन. प्रथम उद्देशक  
 सप्तम अन्योऽन्य क्रिया सप्तैकक

१७४ क गन्ध निर्गन्त साधु ने परों का प्रमाजंन न करवाना  
 ग सूत्र १७२-१७३ की पुनरावृत्ति

सूत्र संख्या १

तृतीय चूला

पंदरहवां भावना अध्ययन. प्रथम उद्देशक

१७५ भ० महावीर के कल्याण (पूर्वभव का देहत्याग, और  
 गर्भावतरण, जन्म, दीक्षा, केवल ज्ञान, और मोक्ष)

१७६ भ० महावीर का गर्भावतरण

" गर्भ साहरण

" जन्म

" जन्मोत्सव

" नाम करण

" सवर्धन

" तारुण्य

" के तीन नाम

" के पिता के तीन नाम

" की माता के तीन नाम

" के काका का नाम

" के बड़े भ्राता का नाम

" की बड़ी भगिनी का नाम

	अ० महावीर की आर्शा का नाम
	"    "    गुनी के दो नाम
१७७	"    "    दोहिवी के दो नाम
१७८	"    के माना रिता का स्वर्गनाम
	"    "    "    निर्वाण
१७९	"    का वर्षादान
	"    "    अभिनिष्कमण
	"    को मनपर्यंत जानोत्पत्ति
	"    का अभिग्रह
	"    "    कुमार ग्राम गमन
	"    की उत्कृष्ट भाषना
	"    का उपसर्ग सहन
	"    के केवन जानोत्पत्ति
	"    के केवन ज्ञान का महोत्सव
	"    का धर्मास्थान
१८०	अ० महावीर का पथ महावन प्ररूपण
	प्रथम महावन की पाच भावना
	द्वितीय    "
	तृतीय    "
	चतुर्थ    "
	पंचम    "

सूत्र संख्या ६

चतुर्थी चूला

सोलहवा विमुक्ति अध्ययन प्रथम उद्देशक

गाथाक

१

अनिस्थ भावना

- १ मृनि की ज्ञपी की उगमा
- २ मृनि की पंज की उगमा
- ३-४ मृनि के जमंनन का योगनन की उगमा
- ६ मृनि मन्त्र की मन्त्रे जपुत्र की उगमा
- १० मन्त्र की मन्त्रे की उगमा
- ११ मन्त्रे मृनि
- १२ मन्त्रे मन्त्रे मृनि

तमेव सच्चं णीसंकं जं जिणेहिं पवेद्वयं



णमो दंसणस्त

## द्रव्यानुयोग-प्रधान सूत्रकृतांग

श्रुतस्कंध	२
अध्ययन	२३
उद्देशक	३३
पद्य	३६०००
उपलब्ध पाठ परिमाण श्लोक	२१००
गद्य सूत्र	८५
पद्य "	७१६

प्रथम श्रुतस्कन्ध

द्वितीय श्रुतस्कन्ध

अध्ययन	१६	अध्ययन	७
उद्देशक	२६	उद्देशक	७
गद्य सूत्र	४	गद्य सूत्र	८१
पद्य "	६३१	पद्य "	८८



प्रथम अतस्कन्ध

अध्यायन	उद्देशक	गाथांक	अध्यायन	उद्देशक	गाथांक
१	१	२७	५	१	२७
	२	३२		२	१५
	३	१६	६	१	२६
	४	३३	७	१	३०
२	१	२२	८	१	२६
	२	३२	९	१	३६
	३	२२	१०	१	२८
३	१	१७	११	१	३८
	२	२२	१२	१	२२
	३	२१	१३	१	२३
	४	२२	१४	१	२७
४	१	३१	१५	१	२५
	२	२२	१६	१	४ सुत्र

द्वितीय अतस्कन्ध

अध्यायन	उद्देशक	सूत्रांक	अध्यायन	उद्देशक	गाथांक
१	१	१५	५	१	३३
२	१	४२	६	१	५५
३	१	६२	७	१	८१ सुत्र
४	१	६७			

# सूत्रकृतांग विषयसूची

## प्रथम श्रुतस्कंध

प्रथम समय अध्ययन

प्रथम उद्देशक

गाथांक

- १ बंधन तोड़ने के लिए प्रेरणा
- २ परिग्रह के सर्वथा त्याग से मुक्ति
- ३ हिंसा से वीर वृद्धि
- ४ आसक्त व्यक्ति का जीवन
- ५ धन और परिवार को अत्राता एवं जीवन को अल्प जानने वाला कर्म मुक्त होता है
- ६ भताग्रही एवं आसक्त श्रमण ब्राह्मण
- ७- ८ १ पंचमहाभूतवाद
- ९-११ २ आत्माईतवाद  
एकात्मवाद का परिहार
- १२ ३ देहात्मवाद
- १३ ४ अकारकवाद
- १४ देहात्मवाद और अकारकवाद का परिहार
- १५-१६ ५ आत्म पण्डवाद
- १७ पंच स्कंधवाद
- १८ चार धातुवाद
- १९-२० ६ अफलवाद  
पूर्वाक्तवादियों का निष्फल जीवन

## द्वितीय उद्देशक

गाथाक

- १ १३ नियतिवाद और उसका परिहार  
 १४ २० अज्ञानवाद और उसका परिहार  
 २१ २३ ज्ञानवाद  
 २४ ३२ क्रियावाद और उसका निरसन

## तृतीय उद्देशक

गाथाक

- १ ४ आधाकम आहार का निषेध  
 ५ १० जलकृतत्ववान् और उसका निषेध  
 ११ १३ शराणिकवाद का परिहार  
 १४ १६ अनुष्ठानवाद का निरसन

## चतुर्थ उद्देशक

गाथाक

- १ ३ परिग्रही अमणो की सगति का निषेध  
 ४ शुद्ध आहार लेने का विधान  
 ५ ६ लोकवाद निरसन  
 ७ असवज्ञवाद का निरसन  
 ८ १० अहिंसा  
 ११ चर्चा आसन शय्या भक्त्यान ममिति का पानन  
 १२ कषाय जय  
 १३ ५ ममिति ५ सवर

## द्वितीय वैतालीय अध्ययन

### प्रथम उद्देशक

गाथाक

- १ शेष प्राप्ति के लिए प्ररणा मानवभाव की बुलभना  
 २ आयु की अनिश्चयता



- १४ सुपाप्त क पापान विहार करने का मन्वथा निषेध (द्वया समिति)
- १५ १६ सुयष्टुह मन्वथो विधि (वमनि एषणा)
- १७ विर्षोष वसति (वमनि एषणा)
- १८ राज-ममग का निषेध (उष्णो-कमेवी विरोषण)
- १९ कलह निषेध ( अठारह पाप मे)
- २० समभावी क्षमण की आचार विधि
- २१ मन्व निषेध
- २२ नरक गति मे जाने वाल और मोक्ष गति मे जाने वाल
- २३ २४ उत्तम धम का आराधन
- २५ विषय वासनापर विजय प्राप्त करने वाला ही धर्मारथक है
- २६ धार्मिक ही हमरे को धार्मिक बना सकता है
- २७ मृत भागो क स्मरण का निषेध (घोषा महाजन)
- २८ विक्रया प्रदनेपन वृष्टि की भविष्यवाणी आदि का कथन धनोपाजन के उपाय बनान का और ममत्व का निषेध अनुत्तर धम क आराधन का उपदेश (भाषा समिति)
- २९ कथाय विजय का उपदेश मथमा की महिमा
- ३० क ममत्व निषेध
- स मन्वाय-मवर धम जो इन्द्रिय विजय का उपदेश
- ग क्षाम कथाय की दलभता
- ३१ म मन्वावीर कविन माम्वाधिक का अश्वरुण या अनाचार ही भवधमण का कारण है
- ३२ गन्व का निर्मित मुक्ति माग
- तृतीय उद्गारक

माथक

- १ सबर और निजरा से ही पडित को मुक्ति
- २ स्त्री त्यागी-स्त्री त्याग से ही मुक्ति राग का कारण भोग बह्यजन महावत है

- ३ महाव्रतों की रत्नों से तुलना-रत्नों का धारक राजा होता है  
और महाव्रतों का धारक महात्मा होता है—महाव्रत
- ४ सुखैपी एवं कामी पुरुष, समाधि के रहस्य को नहीं समझ सकता
- ५ आत्म बलहीन साधक को दुर्बल बल की उपमा, संयम-भार
- ६ कामभोग निवृत्त होने का उपदेश
- ७ विषयों से निवृत्त होने का उपदेश, कामी की दुर्दशा
- ८ आसक्त पुरुष की अकाल मृत्यु
- ९ क हिंसक की गति  
ख बाल तपस्वी की गति
- १० बालजन की मान्यता, जीवन में पापाचरण  
वर्तमान सुख की कामना, पुनर्जन्म के प्रति अनास्था
- ११ सर्वज्ञ की वाणीपर श्रद्धा करने का उपदेश, मोहान्ध की अश्रद्धा
- १२ क स्तुति-पूजा का निषेध  
ख समत्व का उपदेश
- १३ समभावी एवं सुव्रती पुरुष की देवगति
- १४ क संयम में पुरुषार्थ करने का उपदेश  
ख इर्या का निषेध  
ग शुद्ध आहार लेने का उपदेश
- १५ संवर धर्म और तप के आचरण का उपदेश  
त्रिगुप्त होकर परमार्थ के लिये प्रयत्न करने का उपदेश
- १६ वित्त, पशु और स्वजन-रक्षक नहीं है (अशरण भावना)
- १७ मृत्यु आनेपर एकाकी जाना पड़ता है, घनादि से रक्षा नहीं होती
- १८ कर्मानुसार दुःख, जन्म-जरा-मरण एवं भव भ्रमण (कर्म-फल)
- १९ मनुष्य जन्म और वीधि की दुर्लभता का चिंतन  
सभी तीर्थकरों का समान कथन
- २०-२२ गुणों के सम्बन्ध में तीर्थकरों की और उनके अनुयायियों की  
समान प्ररूपणा—एक वाक्यता

तृतीय उपसर्ग अध्ययन

प्रथम प्रतिकूल-उपसर्ग उद्देशक

गाथाक

- १ भीरु भिक्षु को गिणुपाल की ओर उपसर्गों का महारणी धीहृष्ण की उपमा
- २ ३ भीरु भिक्षु की कायर पुरर की ओर उपसर्गों को थोड़ा या बड़ की विभीषिका की उपमा
- ४ गानगाडिन अमण को राज्यहीन शत्रिय की उपमा शीतपरीषह
- ५ शीष्म और विपासा से पीड़ित भिक्षु को पानी के अभाव से तन्कनी हुई मच्छली की उपमा उष्ण विपासा परीषह
- ६ आबोस वाचा परीषह
- ७ आशोच पराषह भीरु भिक्षु को सधाम भीरु की उपमा
- ८ वध परीषह पीडित भिक्षु को कुत्त के कान्ते पर अग्निगह क समान बना
- ९ १० आशोच परीषह—शोही पुरुषों के क्रूर बचन  
११ क्रूर बचनों का फल
- १२ १ दग मगक पराषह २ तृष्णस्पा परीषह उपसर्ग अन्य प्रदण दु म से परलाक के प्रति बनास्था
- १३ केगलोच और ब्रह्मचय के वृष्ट से पीड़ित भिक्षु को जाल में फसी हुई मच्छली की उपमा
- १४ १५ वध परीषह—बनाय पुरुषों द्वारा किये गये उपसर्ग
- १६ वध परीषह घर से निकली हुई झुंडा स्त्री के स्वजन के समान दण्ड मुष्टि आदि द्वारा प्रताडित भिक्षु का स्वजन स्मरण
- १७ उपसर्ग पीडित भिक्षु का सपन खोडकर पनायन बाण विड गजराज क पलायन के समान है

## द्वितीय उद्देशक-अनुकूल उपसर्ग

गाथांक

- १ अनुकूल उपसर्गों में संयम की अधिक ज्ञानि
  - २-६ विविध प्रकार के अनुकूल उपसर्गों में संयम त्यागकर पुनः गृही बनना
  - १० भिक्षु को परिवार का मोह बांध लेता है यथा-वृक्ष को लता
  - ११ भिक्षु के गृहस्थ बनने पर परिवार वालों का घेरे रहना
  - १२ स्वजन स्नेह समुद्र की तरह दुस्तर है, स्नेह बंधन से दुःख
  - १३ स्वजन संसर्ग महाश्रय, धर्म श्रवण के पश्चात् असंयमी जीवन की वृद्धा का निषेध
  - १४ बुद्धों का आवर्तों से हटना और अबुद्धों का आवर्तों में फंसना
  - १५-१८ रागा आदि द्वारा भिक्षु से भोग भोगने का आग्रह
  - १९ भिक्षु को प्रलोभन, यथा—चाँदलों का सूत्रर को प्रलोभन ✓
  - २० ऊँचे मार्ग में यथा-दुर्बल वृषभ का गिरना, तथैव संयम मार्ग में आत्मबल हीन श्रमण का गिरना
  - २१ संयमी जीवन और तपश्चर्या के कष्टों से पीड़ित भिक्षु का संयमी जीवन से पतन, यथा-ऊँचे मार्ग में वृद्ध वृषभ का पतन
  - २२ भागों में आसक्त भिक्षु का पुनः गृही जीवन स्वीकार करना
- तृतीय उद्देशक-परवादी वचन जन्य श्रद्ध्यात्म दुःख

गाथांक

- १-५ संयम भीरु और युद्ध भीरु की तुलना
- ६-७ युद्धवीर और संयमवीर की तुलना
- ८-९ आक्षेप वचन कहनेवाले अन्यतीर्थी समाधिभावको प्राप्त नहीं होते
- १०-१५ वांस के अग्रभाग के समान. अन्य तीर्थियों को दुर्बल आक्षेप का विवेक पूर्ण प्रत्युत्तर



- १६ दान के सम्बन्ध में अथर्ववेदिक का आक्षेप बचन  
 १७ अथर्ववेदियों की स्वपक्ष सिद्धि के लिये धृष्टता  
 १८ परास्त्र अथर्ववेदिकों का गालीमान  
 १९ परवेदिकों के साथ विचक पूर्वक दान करने का विधान  
 २० ग्यान सेवा  
 २१ उपसग सहन करने का उपदेश

चतुर्थ उद्देशक यथावस्थित अथ प्ररूपण

गाथा

१

- १ सिद्धि के सम्बन्ध में त्रिविध मायताएँ—  
 १ जल से सिद्धि  
 २ नदी की आहार न बाने से और रामगुप्त की आहार बाने से सिद्धि हुई  
 ३ बाहक और तारायन ऋषि ने पानी पीकर सिद्धि प्राप्त की  
 ४ धामिल ऋषि देविल ऋषि द्वीपायन ऋषि और पाराशर ऋषि ने पानी पीने से और वनस्पति के लवने से सिद्धि कही है  
 ५ भारवाही मन्त्र के समान समयभार से भिक्षु का दुग्नी होना गृष्टसर्पों पशुके समान शिविल धमणको शिवप्राप्त नहीं होता  
 ६ ७ मिथ्याभाग और आयमाण का अंतर आयमाण ग्रहण किये बिना लोह बनिये की तरह दुग्नी होना  
 ८ पचाथव मन्त्री समयधी  
 ९ १३ मित्रों के सम्बन्ध में पादवरणों के अभिप्राय  
 १४ सुस्ययी का परचात्ताप  
 १५ धीर पुरुष का जीवन  
 १६ स्त्री वनरथी गी के समान दुस्तर है  
 १७ स्त्री द्यागी को समारि की प्राप्ति  
 १८ उपसग सहना समुद्र के समान दुस्तर है



सप्तम सुशील परिभाषा अध्ययन  
प्रथम-उद्देशक

गाथांक

- १३ हिमक—जिन जीवनिकायो की हिंसा करना है उही जीव  
निकायो से उत्पन्न होकर वेदना भागना है
- ४ कमकन
- ५ ७ अग्निजाय के आरम्भ से निवृत्त होने का उपदेश
- ८ १० वनस्पतिकाय की हिंसा और उमका फल
- ११ क मनुष्यभव और बोधि की दुग्धना  
ख दुग्धमय सभार से मुक्त के लिये किये गये प्रयत्नों से भी दुग्ध  
होना है
- १२ क पर समय—नमक त्याग से मोक्ष  
ख शान्त जन संवन से मोक्ष  
ग यज्ञ से मोक्ष
- १३ क स्वभय—प्राण कान के स्नान से मोक्ष नहीं  
ख नमक न खाने से मोक्ष नहीं  
ग अयनीर्धी का मद्य मांस आहार से भयभ्रमण
- १४ १७ जलपान से मुक्ति की दिव्या मायना
- १८ १६ यज्ञ हवन से मुक्ति की दिव्या मायना
- २० हिंसा का फल और अहिंसा
- २१ सरस आहार स्नान बन्ध प्रणालन और बरस परिकर्म का  
नियेय
- २२ स्नान बन्ध आहार और मंदुह का नियेय
- २३ रस मीठुन की अमायुता
- २४ तारण आहार के विषे पर से धमकवा करने का और रघुनी  
स्कीनन का नियेय

- २५ सरस आहार के लिये दाता की प्रशंसा न करना
- २६ दाता का प्रशंसक, पार्श्वस्थ एवं कुशील है उसका संयम निस्सार है
- २७ अज्ञात कुल की भिक्षा लेने का विधान, पूजा-प्रतिष्ठा के लिये तपश्चर्या न करना. शब्द रूप आदि में आसक्ति न रखना
- २८ संग परित्याग, सहिष्णु, रत्नत्रय की साधना, अनासक्ति एवं अभयदान के सम्बन्ध में उपदेश, समभाव से संयम पालन का उपदेश
- २९ संयम निर्वृत्ति के लिये आहार. पाप-निवृत्ति, उपसर्ग-सहन. संयम व मोक्ष सूत्र. कर्म शत्रु का दमन
- ३० उपसर्ग सहन और राग-द्वेष की निवृत्ति से सर्वथा कर्मक्षय एवं मोक्ष

### अष्टम वीर्य अध्ययन

#### प्रथम उद्देशक

#### गाथांक

- १ वीर्य के दो भेद, वीर्य का भावार्थ
- २ कर्मवीर्य और अकर्म वीर्य
- ३ प्रमाद कर्म और अप्रमाद अकर्म  
प्रमाद वालवीर्य, अप्रमाद पंडितवीर्य
- वाल-वीर्य**
- ४ वाल जीव का शस्त्राम्यास और मंत्र साधना
- ५ सुख के लिये मायावी जीवों द्वारा धन और प्राणों का हरण
- ६ असंयमी की मानसिक हिंसा
- ७ हिंसा से वैर परम्परा की वृद्धि
- ८ साम्प्रदायिक कर्म-वालजीवन के अनेक पापकृत्य

## पंडित वीथ

- ६ बालजीव का सक्रम वीथ समाप्त पंडित का अक्रम वीथ प्रारम  
 १० वधन मुक्त साधक द्वारा कम धर्षन का छेदन  
 ११ रानत्रय की साधना से मोक्ष बालवीथ से दुख और अशुभ  
 विचारो की वृद्धि  
 १२ १३ उच्चपन्न और स्वजन सम्बन्ध की अनियता अमम व और  
 आर्यधर्माधरण के लिए उपदेश  
 १४ गुरु निद्रिष्ट धम का आचरण पाप कर्मों का प्रत्याख्यान  
 १५ आय क अतिम क्षणो मे सलेष्वता करना  
 १६ क्रम के अग सकोच की भांति पापकर्मों का सकोच करना  
 १७ शरीर मन और इन्द्रिया का नियह भाषानीय का असेवन  
 १८ कर्षण विजय का उपदेश  
 १९ अहिंसा सत्य और अस्तेय धम है  
 २० अहिंसा सवर का उपदेश  
 २१ प पाकर्मों का त्रिकरण से निषेध  
 २२ असम्यगदर्शो वीर पुण्यो का दान धौर तप कमवध का हेतु है  
 २३ सम्यगदर्शो वीर पुण्यो का दान और तप कमवध का हेतु है  
 २४ पूजा प्रह्लिष्टा के लिये किया गया तप तप नही  
 तप को गुप्त रखने का उपदेश आत्म प्रगसा निषेध  
 २५ अल्पभोजन आपभायण क्षमा अलोभ इन्द्रियदमन और अना  
 सक्रि का उपदेश  
 २६ मन वजन और कर्षण का नियह मोक्ष पथ त परीयह सहने  
 का उपदेश  
 नवम धर्म अध्ययन  
 प्रथम उद्देशक

### गाथांक

- १ धम स्वरूप की शृंखला और उपदेश  
 २ ३ सभी जातियो के मनुष्य परिग्रही हिनक एक विषय सोनुव है

- ४ धन का भोग स्वजन और कर्मफल का भोग संग्रहकर्ता भोगता है
- ५-६ पाप का फल भोगते समय कोई रक्षक नहीं बनता, रत्नभय की आराधना, ममत्व और अहंकार का त्याग, जिनभाषित धर्म का अनुष्ठान
- ७ वाह्य और आन्व्यंतर परिग्रह का त्याग, मंथन का पालन
- ८-९ विविध प्रकार के जीव, जीवहिंसा और परिग्रह का निषेध
- १०-११ मृपावाद, अदत्तादान, मंथन, परिग्रह, कषाय तथा शस्त्र कर्म-वध के हेतु हैं अतः इनका त्याग करना
- १२-१३ अनाचारों का त्याग
- १४ दोषयुक्त आहार का त्याग
- १५ अनाचारों का त्याग
- १६ सांसारिक वार्ता, पापकार्य की प्रशंसा, निमित्त कथन और शय्यातर के आहार का निषेध
- १७-१८ अनाचारों का त्याग
- १९ हरे घाग आदि पर मलोत्सर्ग का निषेध तथा बीजादि अप्रासुक (सजीव) को निकाल कर प्रामुक (निर्जीव) जल से गुदा प्रक्षालन का निषेध
- २०-२१ अनाचारों का त्याग
- २२ यज्ञ के लिये प्रयत्न न करना
- २३ स्वधर्मों का सदोष अन्न-जल देने का निषेध
- २४ निर्ग्रथ महावीर का उपदेश
- २५-२७ भाषा विवेक
- २८ कुशील की संगति न करना
- २९ अकारण गृहस्थ के घर में बैठने का, बच्चों के खेल खेलने का और अधिक हंसने का निषेध

- ३० विषयो मे अनाशक्ति भिक्षाचरी म अप्रमाद और उपमर्ग सहने का उपदेश
- ३१ वध परीपह
- ३२ गुरुजनो से इच्छा निरोध सीसना
- ३३ योग्य गुरु की उपासना
- ३४ गृहवास मे सम्यग् ज्ञान साधना समभव नहीं अन प्रशङ्गा का उपदेश
- ३५ अनामकिन, असावज्ञ अनुष्ठान और सर्व अनाचारो का निषेध
- ३६ मोक्ष पर्यंत कृपाय का श्वाय

### दशम समाधि अध्ययन

#### प्रथम उद्देशक

#### गाथाक

- १ धम धवण के लिए प्ररणा, निदान और हिंसा का निषेध मयम पालन
- २ प्राणानिपात विरमण तथा अदत्तादान विरमण का उपदेश
- ३ आश्रव का निषेध और धन धान्य सचय का निषेध
- ४ स्त्री परित्याग का उपदेश
- ५ बालजीव का भव भ्रमण
- ६ भाव समाधि और प्राणानिपात विरति का उपदेश
- ७ ममस्व का उपदेश, पूजा प्रतिष्ठा के इच्छुक और उपमर्ग पीडित का मयम मे पनन
- ८ आशान्त आहार और स्त्री का श्वाय
- ९ हिंसक को दुगति
- १० धन सचय आयक्ति तथा पापकथा का निषेध विवेत्पूर्णभाषण का उपदेश
- ११ आशान्त आहार का निषेध

- १२ एकत्व भावना  
 १३ मैथुन और परिग्रह से निवृत्त को ही समाधि भाव की प्राप्ति  
 १४ परीपह सहन  
 १५ वचन गुप्ति और शुद्ध लेश्या रखने का उपदेश, गृह निर्माण  
 और स्त्री-सम्पर्क निषेध  
 १६ अक्रियावाद से मोक्ष कहने वाले धर्मज्ञ नहीं है  
 १७ विश्व में कई क्रियावादी, कई अक्रियावादी और कई बालक की  
 बलि देने वाले हैं  
 १८ अर्थासक्त व्यक्तित्व  
 १९ अशरण्य भावना  
 २० जिस प्रकार मृग सिंह से दूर रहता है, इसी प्रकार धार्मिक व्यक्ति  
 को पाप से दूर रहना चाहिये  
 २१ अहिंसा का उपदेश  
 २२ मृपावाद निषेध  
 २३ संदोष आहार, परिग्रह और यशः कीर्ति की कामना का निषेध  
 २४ निरपेक्ष होने का उपदेश. शरीर का ममत्व, निदान, जन्म-मरण  
 की आशा का त्यागी मुक्त होता है

### एकादश मार्ग अध्ययन :

#### प्रथम उद्देशक

#### गाथांक

- १-२ मोक्ष मार्ग के लिये प्रश्न  
 ३-६ मुनने के लिए प्रेरणा  
 ७-१२ हृत्काय की रक्षा के लिये विरति का उपदेश  
 १३-१५ पिण्डपणा, आधाकर्म आहार का निषेध  
 १६ उपाश्रय का निर्माण कराने के लिये अनुमति न देना  
 १७-२१ दान-पुण्य के कार्यों में विधि-निषेध का प्रयोग न करना,  
 विधि-निषेध के प्रयोग से होने वाली हानियां



- २२ मोनार्थी चन्द्रमा के समान प्रधान पुरुष है  
 २३ सम्भवत्त्व द्वीप है  
 २४ गुड घर्मोपनेगक  
 २५ अपने आपको बद्ध मानने वाला समाधि को प्राप्त नहीं होता  
 २६ औद्गुणिक आहार करने वाला भाव समाधि को प्राप्त नहीं होता  
 २७ २८ विषय लोभ—पापी होना है  
 २९ जमाथ नाविक के समान गुड माग के विरापक की दृष्टि  
 ३० ३१ मिथ्यादृष्टि धमण की दृष्टि  
 ३२ कल्प कथिन घम न आत्मा का उदार  
 ३३ द्विद्वय विजय का उपनेग  
 ३४ ३५ निवास का इच्छक कथाओं का परिव्याग करे  
 ३६ गानि के सम्बन्ध में सम्मन लीयकरो की समान प्ररूपणा  
 ३७ महागिरि के समान बनधारी की दृष्टता  
 ३८ जीवन पयन गुड आहार लने का उपनेग  
 द्वादश समवसरण अध्ययन  
 प्रथम उद्देशक

गाथाक

- १ तार वाट  
 २ अज्ञानवाणी  
 ३ ३ विनयवाणी  
 ४ अक्रियावाणी  
 ५ न० गुणवाट अक्रियावाट है  
 ६ अक्रियावाणी का अज्ञान  
 ७ निमित्तशाम्भ का अध्ययन गुणवाट के विद्वान्त से विरुद्ध है  
 १० अक्रियावाणी द्वारा निमित्त शाम्भ के अध्ययन का निषेध  
 ११ एकान्त क्रियावाट से मुक्ति नहीं अपितु सवन सम्मन ज्ञान क्रिया से मुक्ति है

- १२ मिथ्यात्व से संसार की वृद्धि  
 १३ देव दानवों का भवभ्रमण  
 १४ अंगनाओं के अनुराग से भवभ्रमण  
 १५ कर्मक्षय वालजीव नहीं कर सकता है, संतोपी मेघावी पापकर्म नहीं करता  
 १६ बुद्ध पुरुषों का ही मोक्ष होता है  
 १७ कुट्ट लोभ एकान्त ज्ञानवादी हैं—किन्तु धीर पुरुष पापकर्मों से सर्वथा विरत हैं  
 १८ आत्मसमदर्शी को दीक्षा ग्रहण करने के लिए उपदेश  
 १९ धर्मोपदेशक ही रक्षक है, धर्मोपदेशक के समीप ही निवास करने का विधान  
 २० आत्मदर्शी ही लोकदर्शी है, जो संसार और मोक्ष का ज्ञाता है, वह जन्म मरण का ज्ञाता है  
 २१ जो नरक की वेदना जानता है वह आश्रय संवर और निर्जरा को जानता है  
 २२ अनासक्त रहने का उपदेश  
 त्रयोदश यथातथ्य अध्ययन  
 प्रथम उद्देशक

## गाथांक

- १ शील और अशील का रहस्य, शांति (मोक्ष) और अशांति (बंध) का रहस्य सुनने के लिए प्रेरणा  
 २-४ समाधि मार्ग पर न चलने वाले निन्हवों का अविनय  
 ५ क्रोधान्ध का दुःखमय जीवन  
 ६ क्रोधी समभाव को प्राप्त नहीं होता, सुशिष्य के लक्षण, आज्ञा पालन, पापकर्म भीरु, लज्जावान, श्रद्धालु और अमायावी होना

- ८ अभिमानी तपस्वी का तप निरथक है  
 ९ ज्ञान का मद करने वाला अज्ञानी  
 १० सच्चा धर्मण गुड आहार लेनेवाला एवं विरभिमानी होता है  
 ११ दुर्गति में रक्षा रत्नत्रय की साधना में होती है जाति कुल से नहीं  
 १२ पूजा प्रतिष्ठा के इच्छुक अभिमानी धर्मण की भिषाचर्या केवल आजीविका एवं भवधर्मण का हेतु  
 १३ मन्त्रे मायु के लक्षण मद करने वाला गुणी धर्मण भी मन्त्र धर्मण नहीं  
 १४ ज्ञान-मन्त्रा नाम मद करने वाला निन्दक धर्मण बात है तमको समाधि प्राप्त नहीं होती  
 १५ १६ मद न करने वाला ही पंडित है एवं मोक्ष गामी है  
 १७ गुड आहार लेना  
 १८ नयम म अरति और अमयम म रति का निषेध भाषा विवेक और एकत्व भावना का उपदेश  
 १९ २० उपदेश देने की पद्धति  
 २१ हिमा और माया के त्याग का उपदेश

चतुर्दश ग्रंथ अध्ययन

प्रथम उद्देशक

गाथाक

- १ अपरिग्रह ब्रह्मचर्य आजापानन और अप्रमान का उपदेश  
 २ ३ अविनयी गिष्य की दुर्गति सभी गाथक की उपमा  
 ४ ५ गुरुकुल निवास का उपदेश  
 ६ शब्दा में राग-द्वेष निद्रा और चिन्तिरहा का निषेध  
 ७ मूल स्वीकार न करके शोध करने वाला धर्मण मुक्त नहीं होता

- ८-१२ हिन शिक्षा देने वाले पर शोध न करना अपितु प्रमन्न होना  
 १३ जिन वचनों से धर्म के स्वरूप का ज्ञान  
 १४ प्राणातिपात विरमण  
 १५ प्रश्न पूछने की विधि  
 १६ प्राणातिपात विरमण, नमिति, गुणित और अप्रमाद का उपदेश  
 १७ आचार का ज्ञान एव शुद्ध आहार नैनेवाला मुक्त होता है  
 १८ विवेकपूर्वक प्रश्नों का उत्तर देने वाला धर्मोपदेशक मुक्त होता है  
 १९ प्रश्नों का यथार्थ उत्तर देना, आत्म प्रशमा और अन्य का उपहान न करे, आशीर्वाद न दे  
 २० आशीर्वाद न दे, मग्न प्रयोग और अधर्मोपदेश का निषेध, निस्पृह रहने का उपदेश  
 २१ हास्य, अप्रिय मत्य, प्रतिष्ठा की कामना और कषाय का निषेध  
 २२ भाषा विवेक और ममभाव का उपदेश  
 २३ प्रश्नों का सक्षिप्त एव मरस भाषा में उत्तर देना  
 २४ प्रश्न का उत्तर विस्तृत देना ही तो भी निर्दोष भाषा में देना  
 २५ आगमोक्त सिद्धान्तों का उपदेष्टा भाव समाधि को प्राप्त होता है  
 २६ सूत्र का यथार्थ अर्थ करना  
 २७ सूत्र का शुद्ध उच्चारण और यथार्थ अर्थ करने वाला तपस्वी भाव समाधि को प्राप्त होता है

पंचदश आदान अध्ययन

प्रथम उद्देशक

गाथांक

१

दर्शनावरणीय के क्षय से त्रिकालज्ञ होना

- २ मत्स्य मिटाने वाला-सर्वत्र नहीं होता
- ३ सप्तज्ञोक्त मत्स्य ही सुभाषित है, मैत्रीभाव का उपदेश
- ४ अविरोध ही क्षमण धर्म है, धर्म भावना का उपदेश
- ५ भावना से आरम बुद्धि एवं निर्वाण
- ६ ७ पाप स्वरूप का शांता और नये पाप कर्मों को न करने वाला कर्मों से मुक्त होता है
- ८ ९ स्थियों के मोह से मुक्त पुरुष ही मुक्त होता है
- १० मोक्षमाग का दशक ही मुक्त होता है
- ११ धर्मोपदेश का प्रत्येक प्राणी पर भिन्न २ प्रभाव, मुक्तपुरुष का लक्षण
- १२ स्त्री सग से भवभ्रमण
- १३ प्राणीमात्र के साथ अविरोध रखने वाला परमार्थ दर्शी है
- १४ अनाकाली ही माग दर्शक है, मोह का अंत ही समार का अन्त है
- १५ खुसा मून्वा खाने वाला निष्काम क्षमण मुक्त होता है
- १६ १७ शिवपद और स्वर्ग का अविकारी मनुष्य है अमनुष्य (देव तिर्यक आदि) नहीं—मनुष्य भव की दुलभता
- १८ बोधि और शुभ लक्ष्या दुलभ है
- १९ धर्मोपदेशक का भव भ्रमण नहीं होता
- २० मुक्त का पुनर्गमन नहीं होना तीर्थंकर और गणधर लोक के देव हैं
- २१ कालव्यय कथित समय के चलने से निर्वाण की प्राप्ति
- २२ पापकर्मों का अकर्ता ही मुक्त होता है
- २३ २४ समय से शिवपद और स्वर्ग
- २५ रत्नत्रय की श्रद्धा से भव भ्रमण नहीं होता

## पोडश गाथा अध्ययन

### प्रथम उद्देशक

अनगार के चार पर्याय

माहण श्रमण भिक्षु और निर्ग्रंथ.

माहण की व्याख्या

श्रमण की व्याख्या

भिक्षु की व्याख्या

निर्ग्रंथ की व्याख्या

या ४

## द्वितीय श्रुत स्कन्ध

### प्रथम पुंडरीक अध्ययन

#### प्रथम उद्देशक

पुष्करिणी (वापिका) में अनेक कमल, मध्यभाग में एक पद्मवर पुंडरीक

पुंडरीक के उद्धार के लिए पूर्व दिशा से प्रयत्नशील प्रथम पुरुष

" " दक्षिण " " द्वितीय "

" " पश्चिम " " तृतीय "

" " उत्तर " " चतुर्थ "

" का केवल आह्वान से उद्धार करने वाला पंचम "

म० महावीर द्वारा निर्ग्रंथ-निर्ग्रथियों को निमंत्रण और उनके सामने दृष्टांत के भाव का कथन

दृष्टांत	श्रीर	दार्ष्टान्तिक
१ पुष्करिणी		१ मनुष्य लोक
२ उदक		२ कर्म
३ पंक		३ विषय भोग
४ नाना प्रकार के कमल		४ नाना प्रकार के मनुष्य

५ पञ्चवर पृथ्विक	५ राजा प्रमुख पुरुष
६ एक निम्न चार पुरुष	६ भाग एक निम्न चार लोषिक
७ तट	७ उत्तम धर्म
८ नन्दिन पाँचवाँ पुरुष	८ धर्म तीर्थ
९ शब्द	९ धर्म कथा
१० पृथ्वीक का बाहर आना	१० निर्वाण

६ राजा राजसभा, धर्मोपदेश देहात्मवादी द्वारा देहात्मवाद का प्रतिपादन

आत्मा और शरीर को भिन्न भिन्न दिखाने के लिए मुक्ति युक्त प्रश्न

शरीर के प्रतीक

आत्मा के प्रतीक

१ कौश

१ अग्नि

२ मूत्र

२ शलाका

३ मूत्र

३ अस्थि

४ करपत्र

४ आमलक

५ दधि

५ नवनील

६ निल

६ तन

७ हनु

७ रत्न

८ अरणि

८ अग्नि

किया, अकिया सुकृत, दुष्कृत आदि का निषेध देहात्मवादी शाक्य श्रमण का विषयभोगमय जीवन

१० राजा राजसभा धर्मोपदेशक, पञ्चमहाभूतवादी द्वारा पञ्च महाभूतवाद का प्रतिपादन किया अकिया, सुकृत-दुष्कृत आदि का निषेध

पञ्चमहाभूतवादी श्रमण का भागमय जीवन

११ राजा, राजसभा धर्मोपदेशक, ईश्वर का

ईश्वर कर्तव्य का प्रतिपादन, क्रिया अक्रिया, सुकृत-दुष्कृत आदि का निषेध

ईश्वर कारणिकवादी श्रमण का भोगमय जीवन

१२ राजा, राजसभा, धर्मोपदेशक, नियतिवादी द्वारा नियतिवाद का प्रतिपादन. क्रिया-अक्रिया, सुकृत-दुष्कृत आदि का निषेध

१३ भिक्षावृत्ति स्वीकार करना तथा एकत्व भावना भावित श्रमण का तत्त्वज्ञान

१४ गृहस्थ और अन्य तीर्थिकका सावद्य जीवन.

श्रमण का निरवद्य जीवन.

१५ छ जीविकाय की हिंसा का युक्तिपूर्वक निषेध, समस्त तीर्थ-करों द्वारा अहिंसा का प्रतिपादन

क प्राणातिपात से विरत और अनाचार सेवन न करनेवाला भिक्षु

ख संयम साधना से भिक्षु का स्वर्ग या सिद्धलोक में गमन

ग अनासक्त पाप-विरत भिक्षु

घ प्राणातिपात से सर्वथा विरत भिक्षु

ङ काम भोग से सर्वथा विरत भिक्षु

च क्रोधादिपूर्वक की गई सांपरायिक क्रिया से सर्वथा विरत भिक्षु

छ क्रीत आदि दोष रहित आहार लेने वाला भिक्षु

ज गृहस्थ के निमित्त बने हुए आहार को अनासक्त होकर खाने-वाला और समस्त कार्य यथा समय करनेवाला भिक्षु

झ निस्पृह होकर धर्मोपदेश करनेवाला भिक्षु

ञ उक्त सर्वगुण संपन्न भिक्षु के उपदेश से भव्य आत्माओं का उद्धार

श्रमण के गुण

श्रमण के चौदह पर्याय वाची



द्वितीय क्रिया-स्थान अध्ययन

प्रथम उद्देशक

- १९ दो प्रकार के स्थान  
 १ धर्म स्थान २ अधर्म स्थान  
 १ उपशांत स्थान २ अनुपशांत स्थान

तेरह क्रियास्थान

अधर्म स्थान

- १७ प्रथम अर्थ-दण्ड की व्याख्या  
 १८ द्वितीय अनर्थ-दण्ड ..  
 १९ तृतीय हिमा-दण्ड ..  
 २० चतुर्थ अकस्मात् दण्ड की व्याख्या  
 २१ पंचम दृष्टि विपर्यसि दण्ड ..  
 २२ षष्ठ मृपावाद प्रत्ययिक क्रियास्थान की व्याख्या  
 २३ सप्तम अदत्तादान प्रत्ययिक की व्याख्या  
 २४ अष्टम अध्यात्म .. ..  
 २५ नवम मान .. ..  
 २६ दशम मित्र दोष .. ..  
 २७ एकादश माया .. ..  
 २८ द्वादश लोभ .. ..  
 २९ त्रयोदश धर्मस्थान, इर्ष्या पथिक क्रियास्थान की व्याख्या  
 ३० पापशास्त्रो के नाम  
 पापशास्त्रो के अध्ययनकर्त्ताओ की गति  
 ३१ पापात्मो के चतुर्दश पाप कार्य  
 ३२ क महापापियो के कार्य, भोगमय जीवन विनाशवाने अनार्य हैं,  
 धूर्त हैं

## त- अधर्म पक्ष हेय है

- ३३ धर्म पक्ष उपादेय है  
 ३४ मिश्र पक्ष हेय है  
 ३५-३७ अधर्म पक्ष (महा आरंभी गृहस्थों का वर्णन)  
 ३८ धर्म पक्ष (मुनि जीवन का वर्णन)  
 ३९ मिश्र पक्ष (घासिक गृहस्थों का वर्णन) यह मिश्र पक्ष उपादेय है  
 ४० अधर्म पक्ष के आराधक ३६३ वादी  
 ४१ हिंसा के समर्थकों का भवभ्रमण, अहिंसा के समर्थकों की मद्गति  
 ४२ वारह क्रिया स्थान सेवियों का भवभ्रमण, तेरहवें क्रियास्थान सेवियों की मिद्व गति

## सूत्र संख्या २७

## तृतीय आहार परिज्ञा अध्ययन

## प्रथम उद्देशक

- ४३ चार प्रकार के बीज, पृथ्वी योनिक वनस्पतियों का आहार वनस्पतियों की उत्पत्ति के कारण. वनस्पति में जीव के अस्तित्व की युक्ति पूर्वक सिद्धि  
 ४४ वृक्ष योनिक वृक्षों के जीवों का आहार, वृक्षयोनिक वृक्षों में जीवों की उत्पत्ति का कारण  
 ४५ वृक्ष योनिक वृक्षों में जीवों की उत्पत्तिका कारण, वृक्षयोनिक वृक्षों का आहार, वृक्ष योनिक वृक्ष के जीवों का शरीर  
 ४६ वृक्ष के दक्ष अवयवों में भिन्न-भिन्न जीव और उन जीवों का आहार  
 ४७ अध्यारुह वृक्षों की उत्पत्ति का कारण  
 " का आहार

- अध्याच्छ्रुत्वा वा शरार  
 ५८ योनिक  
 वृक्षा की उत्पत्ति का कारण  
 का आहार  
 का शरीर
- ५९ यानिक  
 वृक्षा व जीवा की उत्पत्ति का कारण  
 योनिक  
 वृक्ष व जीवा का आहार  
 शरीर
- ५० दश अवयवा न भिन्न भिन्न जीव  
 उन जीवा का आहार और उन जीवों के शरीर
- ५१ वृण वनस्पति की उत्पत्ति का कारण  
 का आहार और शरीर
- ५२ पृथ्वी यानिक वृणों की उत्पत्ति व कारण  
 का आहार और शरीर
- ५३ वृण योनिक वृणों के दश अवयवों में भिन्न भिन्न जीव और  
 शरार
- ५४ क आय वाय काश्च आदि वनस्पतियों की उत्पत्ति का कारण  
 उनका आहार और शरीर सूत्र ४४ ४५ ४६ की पुनरावृत्ति  
 ख उक्त योनिक वनस्पतियों की उत्पत्ति का कारण  
 का आहार और शरीर  
 सूत्र ४४ ४५ ४६ की पुनरावृत्ति
- ग औषधि और हरित वनस्पतियों के सम्बन्ध में सूत्र ४३ ४४  
 ४५ ४६ की पुनरावृत्ति
- घ उदक यानिक अनेक प्रकार की वनस्पतियाँ उनकी उत्पत्ति,  
 आहार और शरीर

- ५५ पृथ्वी योनिक वृक्ष, वृक्ष योनिक वृक्ष और वृक्ष योनिक मूल-  
इस प्रकार सबके ३-३ विकल्प हैं,
- ५६ पाँच प्रकार के मनुष्य, इनकी उत्पत्ति, आहार और शरीर
- ५७ जलचर जीवों की उत्पत्ति, आहार और शरीर
- स्थलचर " " " " "
- उरपरिसर्प " " " " "
- भूजपरिसर्प " " " " "
- सेचर " " " " "
- ५८ नाना प्रकार की योनियों में पैदा होने वाले जीवों की उत्पत्ति  
आहार और शरीर
- ५९ वायु योनिक अप्काय में विविध प्रकार के जीवों की उत्पत्ति  
आहार और शरीर
- ६० क- त्रस-स्थावर जीवों के शरीरों में अग्निकाय की उत्पत्ति  
आहार और शरीर "
- ख- " " " वायुकाय की "
- ६१ " " " पृथ्वीकाय की "
- ६२ सर्व प्राण, भूत, जीव और सत्वों की अनेक योनियों में "  
इन जीवों की उत्पत्ति आहार और शरीरों का ज्ञाता मुनि  
आहारगुप्त आदि गुणों का धारक बने

सूत्र संख्या २०

चतुर्थ प्रत्याख्यान अध्ययन

प्रथम उद्देशक

६३ अप्रत्याख्याती आत्मा द्वारा सर्वदा पापकर्मों का उपार्जन

६४ प्रश्न— अव्यक्त विज्ञान वाले प्राणी पापकर्मों का उपार्जन कैसे

उत्तर— वे छ काय की हिंसासे एव पापों से विरत नहीं हैं बधक का दृष्टान्त

६५ प्रश्न— जा प्राणी बट्टष्ट या अधृत है उनके साथ वैर किस प्रकार हो सकता है ?

६६ उत्तर— मत्नी और अमनी का दृष्टान्त

६७ प्रश्न— मनुष्य समय विरत आदि गुण सम्पन्न किस प्रकार हो सकता है ?

६८ उत्तर— छ काय की हिंसासे विरत भिन्नु एकान्त पठित है

सूत्र सख्या ६

पचम आचार श्रुत अध्ययन

प्रथम उद्देशक

गा.ग.क

- |       |   |
|-------|---|
| १     | अनाचार सेवन न करने का उपदेश   |
| २ ५   | जगत् के सम्बन्ध में एकांत वचन का प्रयोग न करना                                |
| ६ ७   | एकेन्द्रिय तथा पञ्चन्द्रिय की हिंसा के सम्बन्ध में एकांत वचन का प्रयोग न करना |
| ८ ९   | आषाकम आहार सेवी के  |
| १० ११ | औगारिकादि शरीरों के   |
| १२    | लोक और अलोक का अभाव नहीं किन्तु अस्तित्व है                                   |
| १३    | जीव और अजीव का  |
| १४    | अम और अथम का  |
| १५    | बाध और मोन का   |
| १६    | गुण्य और पप का  |
| १७    | आश्रय और सवर का   |
| १८    | वेत्ता और निजरा का  |
| १९    | क्रिया और अक्रिया का  |

२०	क्रोध और मान का अभाव नहीं किन्तु अस्तित्व है	
२१	माया और लोभ का	”
२२	राग और द्वेष का	”
२३	चार गति वाले ससार का	”
२४	देव और देवी का	”
२५	सिद्धि और असिद्धि का	”
२६	सिद्धि स्थान का	”
२७	साधु और असाधु का	”
२८-२९	कल्याण और पाप का	”
३०	जगत् और प्राणियों का	”
३१	साधुता के सम्बन्ध में सही दृष्टि रखने का उपदेश	
३२	दान की प्राप्ति के सम्बन्ध में सही दृष्टि रखने का उपदेश	
३३	मोक्ष पर्यन्त जिनोपदिष्ट धर्म की आराधना	

### षष्ठ आर्द्रकीय अध्ययन

#### प्रथम उद्देशक

#### गाथांक

१-२६ गोशालक आर्द्रकुमार संवाद  
 भ० महावीर के सम्बन्ध में गोशालक के आक्षेप

#### आक्षेप के विषय—

क- भ० महावीर पहले एकचारी थे अब अनेकचारी हैं

ख- धर्मोपदेश—भ० महावीर की आजीविका है

ग- महावीर डरपोक हैं

घ- महावीर लाभार्थी वैश्य जैसा है

आर्द्र कुमार द्वारा आक्षेपों का समाधान

२७-४२ शाक्य भिक्षुओं के साथ आर्द्र कुमार का संवाद

घाद के विषय

क वध्य प्राणी को जड़ वस्तु मानने पर हिंसा नहीं होगी  
 ग गावप भिक्षुओं को भाजन देने से पुण्य और स्वयं  
 आद्रकुमार का समाधान

४३ ४६ ब्राह्मणा के साथ आद्रकुमार का नवाद  
 वाच का विषय—ब्रह्मभोज करवाने से पुण्य और स्वयं प्राप्त  
 होगा है आद्रकुमार द्वारा समाधान

४७ ५२ एक दृष्टि से क साथ आद्रकुमार का सवाद  
 वाच का विषय—एकान्तवाद आद्रकुमार द्वारा समाधान

५३ ५५ इति तपसो के साथ आद्रकुमार का सवाच  
 वाच का विषय—हिंसा निर्दोष है  
 आद्रकुमार द्वारा समाधान

सप्तम नास्तदीय अध्ययन

प्रथम उद्देशक

६८ राजशूद्र का उपनगर नाशदा  
 ६९ नव गाथापति का धार्मिक जीवन  
 ७० मेनद्विषा—उदकशाला हस्त्रियाम—वनस्रङ्ग  
 ७१ म० गौतम और पार्श्वपितृ पेडाल पुत्र का मित्रन और  
 सवाच

७२ ७३ वेणाल पुत्र द्वारा कुमार पुत्र निग्रथ की प्रयाश्चिदान पद्धति  
 की आलोचना

७४ म० गौतम द्वारा पार्श्वपितृ पेडाल पुत्र की मा यता का भण्डन

७५ ७६ पा० वेणाल पुत्र का प्रश शान्त के मन्व ध मे प्रश्न

म० गौतम द्वारा समाधान

७७ पा० पेडाल पुत्र का श्रावक की प्रजागतपात विरति के सबध  
 म प्रश्न

- ७८ भ० गोतम का पार्श्वपत्य स्वधियों से प्रतिप्रश्न
- ७९ भ० गोतम द्वारा समाधान
- ८० भ० गोतम का आदर किये बिना ही पा० पेंडान पुत्र का  
गमन
- ८१ भ० गोतम का पार्श्वपत्य पेंडान पुत्र को नोकता, तथा  
भ० महावीर के पास लेजाकर पंच महायज्ञ स्वीकार करवाना
-





## द्रव्यानुयोग-प्रधान स्थानांग

(इहानांग-समसायांग का ज्ञाना धर्म स्थिति होता है)

ध्रुवमंडल	१
स्थान	१०
उत्प्रेषक	२१
पद	२२०००
उत्प्रेषक पद परिमाण संख्या	२२००
मूल मूल	२००
पद मूल	१००

## आगमों का अध्ययन काल

१	वर्ष के शीतल को	साधारण प्रयोग
२	"	मूल प्रयोग
३	"	द्रव्याध्रुवमंडल, पदपद का व्यवहार
४	"	स्थानांग, मनसायांग
१०	"	भगवती मूल
११	"	गुणिक विमानादि पाठ अध्ययन
१२	"	असतोवपान आदि पाठ अध्ययन
१३	"	उत्प्रेषक ध्रुव आदि पाठ अध्ययन
१४	"	आशिमिष भावना
१५	"	दृष्टिमिष भावना
१६	"	धारण भावना
१७	"	महा स्वप्न भावना
१८	"	तेजो निवर्त
१९	"	दृष्टियाद
२०	वर्ष के शीतल को	शेष सर्व आगम

एक धनसूच्य

क्र.सं.	वर्ष	प्रमाण सूत्र संख्या	प्रत्यक्ष स्थान क सूत्र
१	१	१६	१६
२	१	७६	२०
	२	८०	४
	३	१४	१४
	४	११८	१४
३	१	१५२	३४
	२	१६७	१५
	३	१६०	२३
	४	२३६	४४
४	१	२७७	६३
	२	३१०	२३
	३	३३६	२६
	४	३८८	४६
५	१	४११	२३
	२	४४०	७६
	३	४७६	३६
६	१	५४०	६६
७	१	५६३	५३
८	१	६६०	६७
९	१	७०३	६३
१०	१	७८३	८०



शय	रम	स्वर्ग
मुग्ध	मुग्ध	कृष्ण
दीर्घ	हृत्थ	वृत्त
त्रिकोण	चतुष्कोण	त्रिकोण
महत्कार	कृष्ण	नील
सोपान	हासिद्र	गुण
मुग्ध	दुग्ध	विष्ण
कटु	कषाय	आम्ल
मधुर	कषय	दुग्ध
वीर्य	ऊर्ध्व	गुह
सपु	स्निग्ध	रस

४८ वाग

४९ वागविरति

२० अथवागिणी वाग के ६ आर, उगविरति वाग के ६ आर

२१ क बीर्यम दग्धको की वगना

ग अथ विद्रिका की वगना

अथ विद्रिका की

बीर्यम दग्धका से अथविद्रिका की वगना

अथविद्रिका की वगना

ग गन्धद्रुता का वगना

बीर्यम दग्धका से गन्धद्रुता की वगना

विष्ण द्रुता का वगना

बीर्यम दग्धका से विष्णद्रुता का वगना

गन्धद्रुता का वगना

बीर्यम दग्धको से गन्धद्रुता का वगना

क कृष्ण वर्तिका की वगना

बीर्यम दग्धका से कृष्णवर्तिका की वगना



गघ	रस	रुपा
गुगल्	गुरुप	बुरुप
दीघ	ह्रस्व	उत्त
त्रिकाण	चतुष्कोण	विस्तीर्ण
मन्वाकार	कृष्ण	नील
लोहित	शान्ति	गुक्क
गुगध	दुग्ध	निकन
कटु	नपाय	आम्ल
मधुर	वक्त्र	शु
गीत	उष्ण	१६
लघु	स्निग्ध	रुपा

४८ पाप

४९ पापधिरति

५० अक्षरमिणी काल के ६ आरे ७ मिणी काल के ६ अक्षर

५१ क चौबीस दण्डों की वगणा

न भव मिद्धिका की वगणा

अभव मिद्धिकों की

चौबीस दण्डों के भवमिद्धिका की वगणा

अभवमिद्धिका की वगणा

ग सम्यग्दृष्टिया की वगणा

चौबीस दण्डों के सम्यग्दृष्टिया की वगणा

सम्यग्दृष्टियों की वगणा

चौबीस दण्डों के सम्यग्दृष्टिया की वगणा

सम्यग्दृष्टिया की वगणा

चौबीस दण्डों के सम्यग्दृष्टिया की वगणा

ध कृष्ण पात्रिका की वगणा

चौबीस दण्डों के कृष्णपात्रिकों की वगणा

- ५२ जम्बूद्वीप की परिधि  
 ५३ अतिम तीर्थंकर महावीर अकेले मुक्त हुए  
 ५४ अनुत्तर देवों की अवगाहना  
 ५५ आर्द्रा नक्षत्र का तारा  
 चित्रा " " "  
 स्वाति " " "  
 ५६ पुद्गल  
 एक प्रदेशावगाढ पुद्गल  
 एक समय स्थिति वाला पुद्गल  
 एक वर्ण वाला पुद्गल  
 " शंघ " "  
 " रम " "  
 " स्पशं " "

सूत्र संख्या ५६

द्वितीय स्थान  
 प्रथम उद्देशक  
 लोक में दो प्रकार के पदार्थ  
 जीव-अजीव  
 जीव  
 सयोनि, अयोनि  
 सायु, अनायु  
 सेन्द्रिय, अनेन्द्रिय  
 सवेदक, अवेदक  
 सरूपी, अरूपी  
 सपुद्गल, अपुद्गल



समान प्राप्त असमान प्राप्त

गाम्बुज गाम्बुज

अज्ञीव

५८ आनाग तो आकाग घम अधम

५९ वष माग पुष्प पाग

आश्वव मवर केना निजरा

क्रिया विचार

६० क दो प्रकार की क्रिया

जीव क्रिया दो प्रकार का

अज्ञीव

ख दो प्रकार की क्रिया

कार्यिकी क्रिया दो प्रकार की

आधिकारणिकी

ग दो प्रकार की क्रिया

आहुषिकी क्रिया दो प्रकार की

पारिवापनिकी

घ दो प्रकार की क्रिया

प्राणनिपातक्रिया दो प्रकार की

अप्रयाम्यान क्रिया

ङ दो प्रकार की क्रिया

आरनिवा क्रिया दो प्रकार की

परिग्रहिका

च दो प्रकार की क्रिया

माया प्रत्ययिकी क्रिया दो प्रकार की

मिष्यात्पान

छ दो प्रकार की क्रिया

दृष्टिका त्रिया दो प्रकार की

पृष्टिका " " "

ज- दो प्रकार की क्रिया

प्रातीत्यकी क्रिया दो प्रकार की

सामन्तोपनिपातिकी " "

भ- दो प्रकार की त्रिया

स्वाहस्तिकी क्रिया दो प्रकार की

नैमृष्टिकी " " "

व- दो प्रकार की क्रिया

आजापनिका क्रिया दो प्रकार की

वैदाग्णिणी " " "

ट- दो प्रकार की क्रिया

अनाभोग प्रत्यया क्रिया दो प्रकार की

अनवकाक्षा " " "

ठ- दो प्रकार की क्रिया

अनायुक्त आदानता क्रिया दो प्रकार की

" प्रमार्जनता " " "

ड- दो प्रकार की क्रिया

प्रेम प्रत्ययिका क्रिया दो प्रकार की

द्वेष " " "

६१ क-ख- गहीं दो प्रकार की

६२ व-ख- प्रत्यास्त्यान दो प्रकार के

६३ मुक्त होने के दो कारण

६४ क- केवली कथित धर्म का श्रवण

ग- बोधि की प्राप्ति

ग- अनगार प्रब्रज्या

घ- ब्रह्मचर्य वास

६ सधम

७ सवण

६५ मनिज्ञान-यावन-कवन ज्ञान की प्राप्ति न होने क दो कारण  
कवनी कथिन घम का अवन शवित् मनिज्ञान-यावन्-कैवप  
ज्ञान प्राप्ति हात क दो कारण

६६ सूत्र ६२ क ममान

६७ ममय (काव चक्र) के दो भेद

६८ इमाद " "

६९ दो प्रकार क दण्ड

चौथीम दण्डकी म दो प्रकार के दण्ड

७० क दशन दो प्रकार क

ख सम्पद्गन " "

ग निभनं सम्पद्गन " "

घ चमिगय " "

ङ मिध्या दर्शन " "

च अभिप्रतिष्ठ मिध्या दर्शन

छ अनभिप्रतिष्ठ " "

ज्ञान के दो भेद

७१ क प्रत्यक्ष ज्ञान के दो भेद

ख कवन ज्ञान , ,

ग भवस्थ कवन ज्ञान

घ सजोगी भवस्थ कवन ज्ञान क

ङ अजोगी " "

च मिद्ध कवन ज्ञान "

छ अनन्तर मिद्ध कवन ज्ञान

ज परपर , ,



द न वृद्ध दीर्घिन दृघस्य क्षारण वषाय वीतराग सयम दो प्रकार का  
प वैवनी

फ भ मन्नागी वैवनी

म अन्नोगी वैवनी

७३ क ञ दो प्रकार के पृथ्वीकाय यावन धनस्पति काय

च ञ

छ पृथ्वीकाय

ज ञ

झ पृथ्वीकाय

ञ द्रव्य

७४ काल क दो भन्

आकाश

७५ चौथीय दंडका से दो शरीर

विषद्वगति प्राप्त जीवों क दो शरीर

चौथाय दंडका से दो कारण से शरीर की रचना

शरीर प्राप्ति क दो कारण

दो प्रकार क काय

त्रय काय के दो भन्

स्थान

### दिग्गा विचार

७६ पूव और उत्तर दिग्गा म करने योग्य काय—

(१६) प्रसन्न्या भंडन दिग्गा उपस्थापन महभोज महवाग  
स्वाध्याय के लिए आदेश विशेष आदेश अध्यापन के लिए  
आदेश आलोचना प्रतिक्रमण दिग्गा महीं अतिचार त्याग के  
लिए सकल्प अतिचार गुदि पुन अतिचार सेवन न करने की

प्रतिज्ञा, प्रायश्चित्त, संलेखना, पादपोषगमन

सूत्र संख्या २०

द्वितीय उद्देशक

- ७७- चौबीस दंडकों में वेदना  
 ७८- चौबीस दंडकों में गति, आगति  
 ७९- चौबीस दंडकों में भवसिद्धिक, अभवसिद्धिक  
 " " अनतरोपपन्नक, परपरोपपन्नक  
 " " गति प्राप्त, अगति प्राप्त  
 " " प्रथमसमयोत्पन्न-अप्रथमसमयोत्पन्न  
 " " आहारक, अनाहारक  
 " " श्वासोच्छ्वास सहित, श्वासोच्छ्वास रहित  
 " " सेन्द्रिय, अनेन्द्रिय  
 " " पर्याप्त, अपर्याप्त.  
 " " संजी, असंजी  
 " " भाषा सहित, भाषा रहित  
 " " सम्यक्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि  
 " " अल्पसंसार भ्रमण वाले, अनंत संसार भ्रमण वाले  
 " " संख्येय समय की स्थिति वाले  
 " " असंख्येय समय की स्थिति वाले  
 " " सुलभ बांधि, दुर्लभ बांधि  
 " " कृष्णपाक्षिक, शुक्लपाक्षिक  
 " " चरिम, अचरिम

८० क- अधोलोक को आत्मा दो प्रकार से जानता है

तिर्यक्लोक	"	"
ऊर्ध्व लोक	"	"
सम्पूर्ण लोक	"	"

म	उपोनोष का आत्मा दो प्रकार से जानना है
	निषक लोह
	—व लोह
	सम्पूर्ण लोह
ग	१० प्रकार से आत्मा गान्धर्वा मुनता है
घ	अप न्येवना है
ङ	गघ मघना है
च	रसास्वाप्त करना है
छ	स्वर्गानुभव करना है
ज	प्रकाश करना है
झ	१० प्रकार से आत्मा विविध प्रकार करता है
झ	"
ट	मद्युन सधन करना है
ड	बोतना है
ण	आहार न्यास है
	आहार का परिणमन करना है
त	बन्ध करना है
थ	निद्रा करना है
द	देव गान्धर्वा मुनता है
ध	अप न्येवना है—धावन—
ध	निद्रा करना है
न	महान् अथवा प्रकार क ३
प	सिद्ध
फ	किपुण्य
ब	गणव
भ	नाम कुमार
म	सुवर्ण

य- अग्नि कुमार देव दो प्रकार के है

र- वायु "

ल- देव "

### सूत्र संख्या ४

#### तृतीय उद्देशक

८१ क- दो प्रकार के शब्द

ग- " के भाषा शब्द

ग- " नो भाषा शब्द

घ- " आतोद्य

ङ- " तत शब्द

च- " वितत

छ- " नो आतोद्य

ज- " भूषण शब्द

झ- " से शब्द की उत्पत्ति होती है

८२ क- दो प्रकार से पुद्गल चिपकते हैं

ग- " पुद्गलों का भेदन होता है

ग- " पुद्गल सड़ते हैं

घ- " " गिरते है

ङ- " " नष्ट होते हैं

१२ सूत्र-पुद्गल दो प्रकार के

"

"

"

८३ ६ सूत्र-दो प्रकार के शब्द

" रूप

" गंध



दो प्रकार क रस  
रस  
रस

- ८४ क आचार दो प्रकार का है  
नो ज्ञानाचार  
नो दशनाचार  
ना चारिखाचार
- ख ६ सूत्र प्रतिमा दो प्रकार की  
ग सामायिक
- ८५ क दा का उपपान  
उत्पन्न  
अपन्न  
की गभ म उत्पत्ति  
का गभ मे आहार  
की वृद्धि  
हानि  
का वकिय  
गयंतर म गमन  
ममुत्पात  
की गभ म कालकृत पर्याप्त  
का गभ म निगमन  
का गभ म मरण  
ग का अस्थि मय मज्जाभय धारी र  
का रज बीष म उत्पत्ति
- ख ग प्रकार की स्थिति  
बाप स्थिति  
भव
- ग का आयु

दो प्रकार का कालायु

” भवायु

” के कर्म

” का पूर्णायु

” परिवर्तन वाला आयु

८६

जम्बुद्वीप में—दो-दो समान क्षेत्र

३ सूत्र—मेरु पर्वत से उत्तर दक्षिण में दो-दो क्षेत्र

१ सूत्र— ” पूर्व-पश्चिम में ”

१ सूत्र— ” उत्तर-दक्षिण में ”

दो समान वृक्ष

१ सूत्र—दो कुहनों में दो वृक्ष दो देव

१ सूत्र—दो वृक्षों पर पल्योपम स्थिति वाले दो देव

८७

क- जम्बुद्वीप में—दो दो समान वर्षाघर पर्वत

३ सूत्र—मेरुपर्वत से उत्तर-दक्षिण में दो दो वर्षाघर पर्वत

१ सूत्र— ” ” दो वृत्तवैताड्य पर्वत

दो दो देव

१ सूत्र—वृत्त वैताड्य पर्वतों पर पल्योपम स्थिति वाले

दो दो देव

ख- जम्बुद्वीप में—दो दो समान वक्षस्कार पर्वत

१ सूत्र—मेरुपर्वत से दक्षिण में दो वक्षस्कार पर्वत

१ सूत्र-- ” उत्तर

जम्बुद्वीप में दो दो समान दीर्घ वैताड्य पर्वत

२ सूत्र—मेरुपर्वत से उत्तर-दक्षिण में दो दो दीर्घ वैताड्य

पर्वत, दो दो समान गुफा

२ सूत्र—दो दीर्घ वैताड्य पर्वतों पर दो दो समान गुफा

दो दो देव

२ सूत्र—इन गुफाओं में पल्योपम स्थितिवाले दो दो देव

ग जम्बुद्वीप में दो दो समान कूर्  
 बल्ल (छोटा) हिमवत वर्षा पवन पर दो कूर्  
 महा हिमवत वर्षा पवन पर दो कूर्

त्रिपथ

नीलवत

रुक्मी

गिखरी

८८ क जम्बुद्वीप में दो दो समान महा इह

१ सूत्र—बुल्ल हिमवत वर्षा पवन पर दो महा इह  
 गिखरी

दो-दो देव

इन इहों पर पत्नोपम स्थिति वाले दो दो देव

१ सूत्र—महा हिमवत वर्षा पवन पर दो महा इह  
 रुक्मी

नो दो देव

इन इहों पर पत्नोपम स्थिति वाले दो दो देव

१ सूत्र—त्रिपथ वर्षा पवन पर दो महाइह  
 नीलवत

दा दा देव

इन इहों पर पत्नोपम स्थिति वाले दो दो देव

ख जम्बुद्वीप में दो-दो नन्दिया

महा हिमवत वर्षा पवन के महाइह स निकलने वाली  
 दो नन्दियां

त्रिपथ

विनिच्छ

नीलवत

केगरी

रुक्मी

महा पीडरिक

ग जम्बुद्वीप के दो दो समान प्रपात इह

भरत क्षेत्र में दो समान प्रपात इह	
हिमवत वर्ष	" "
हरिवर्ष	" "
महाविदेह	" "
रम्यक् वर्ष	" "
हिरण्यवत वर्ष	" "
ऐरवत वर्ष	" "

घ- जम्बुद्वीप में दो दो समान नदियां

भरत क्षेत्र में दो महानदियां	
हिमवत वर्ष	"
हरिवर्ष	"
महाविदेह	"
रम्यक् वर्ष	"
हिरण्य वर्ष	"
ऐरवत क्षेत्र	"

क- जम्बुद्वीप में एक साथ उत्पन्न होने वाले उत्तम पुरुषों के दो दो वंश

भरत ऐरवत क्षेत्र में त्रिकालवर्ती दो अरिहंत वंश

ख-	"	"	दो अरिहंत थे, हैं और होंगे
ग-	"	"	चक्रवर्ती "
घ-	"	"	दशार "
ङ-	"	"	दो अरिहंत थे, हैं और होंगे
च-	"	"	चक्रवर्ती "
छ-	"	"	वलदेव "
			वासुदेव "

ज- जम्बुद्वीप में कालचक्र का अनुभव

झ- देवकुरु-उत्तर कुरु में सुपम-सुपम काल का अनुभव

ञ- हरिवर्ष-रम्यक् वर्ष में सुपम "

ट हिमवतवध हिरण्यवत वध मे सुपम रुपम वान का अनुभव

ठ पूव वि० पश्चिम विदेह म

ड भरत एरवत म छो काला का अनुभव

६० जम्बुद्वीप के चन्द्र मूढ आदि

दो चन्द्र दा मूय

कृत्तिका से भरणी पयन्त २८ नक्षत्र दो दा

अग्नि मे यम पय न नक्षत्रो क अधिपति दो दो

अगारक मे भावकतु पयन्त दो दो ग्रह

६१ जम्बुद्वीप वेत्तिका की ऊचाई

लवण समुद्र का वृत्ताकार विष्कम्भ

वेत्तिका की ऊचाई

६२ क धानकी खण्ड द्वीप के पूर्वाध मे सूत्र ८६ मे ८६ तक क समान

ख धानकी खण्ड द्वीप के पश्चिमाध मे सूत्र ८६ मे ८६ तक क समान

ग वृक्ष और देवो के नामा मे अंतर

घ धानकी खण्ड द्वीप मे वप-क्षेत्र वृक्ष देव वपधर पवन

वृत्त वताड्य पवत वक्षस्कार पवन कूट इह इहवामी देवो

महाननी आतर ननी भक्तवर्ती विजय विजया की राज

धानियो के नाम मेरु पवत क वनवृष्ण अभिषेक गिता

मेरु चूला

६३ कालोन्धि समुद्र क वेत्तिका की ऊचाई

पुष्करधर द्वापध के पूवभाग का वन्द

पश्चिमभाग

द्वीप— वेत्तिका की ऊचाई

समस्त द्वाप समुद्रो के वदिका की ऊचाई

६४ क १० सूत्र भवनवासी देवो के २० इन्द्र

ख १६ सूत्र-अंतर देवो के ३३ इन्द्र

ग १ सूत्र ज्योतिषी , का २

ध- ५ मूत्र-वैमानिक देवता के १० उन्म

ङ- महाशुक्र और सहस्रार कला के विभागों के दो वष

च- प्रेषक देवों की जंजाई

सूत्र-संख्या १३

चतुर्थ उद्देशक

६५ क- समय वाचक पचास नाम

ग-	ग्रामादि वसति	मूत्रक चवदह	नाम
	आराम आदि वाग	„ चार	„
	वापी आदि जनागय	„ आठ	„
	प्रकीर्णक	„ छियालीस	

जीव है अजीव है

ग- छाया आदि दश नाम जीव हैं, अजीव हैं

घ- राशि-जीव, अजीव

६६ क- दो प्रकार के बंध

ग- दो कारण से पापकर्म का बंध होता है

ग- „ „ „ पापकर्मों की उदीरणा होती है

घ- „ „ „ „ का वेदन होता है

ङ- „ „ „ „ की निर्जरा होती है

६७ क- दो प्रकार से आत्मा शरीर का स्पर्श करके निकलता है

„ „ „ „ को कंषित „ „ „

„ „ „ „ का भेदन „ „ „

„ „ „ „ संकोच „ „ „

„ „ „ „ को आत्मप्रदेशों से पृथक करके

निकलता है

६८ दो प्रकार से आत्मा केवली कथित धर्म का ध्वषण करता है

- यावत्-मनः पर्यव ज्ञान प्राप्त होता है

- ६६ दो प्रकार का औपमिक कान
- १०० शीशुम दण्डकों म दो प्रकार का शेष-यावन निम्न्यात्मान दण्ड
- १०१ क दो प्रकार क मसारी जीव  
 ख सव  
 ग के १४ भूष
- १०२ अ० मन्वाधार ने दो दो मरणा का निषेध किया है  
 क मरण निषेध क ५ भूष  
 ख कारण म दो प्रकार के मरण का विधान  
 ग पानोदगमन मरण दो प्रकार का है  
 घ भजन प्रत्याख्यान
- १०३ क लोक दो प्रकार का है  
 ख म अनन दो हैं  
 ग गाम्बन
- १०४ क बाघी दो प्रकार की  
 ख बड़ क  
 ग माह का  
 घ मूट " क
- १०५ क पानावरणीय कम दो प्रकार का  
 ख दानावरणीय  
 ग वन्तीय  
 घ मग्दनीय  
 ङ आतु  
 च नाम  
 छ गोत्र  
 ज अनराय
- १०६ क मूर्च्छा दो प्रकार की  
 ख प्रम मूर्च्छा

ग- द्वेष मूर्च्छा दो प्रकार की

१०७ क- आराधना "

ख- धर्मा राधना "

ग- केवली आराधना

१०८ क- दो तीर्थकर नील कमल के समान वर्ण वाले

ख- " " प्रियंगु " " "

ग- " " पद्मगौर " " "

घ- " " चन्द्रगौर " " "

१०९ सत्य प्रवाद पूर्व के दो वस्तु हैं

११० क- पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र के दो तारे

ख- उत्तराभाद्रपदा " "

ग- पूर्वा फाल्गुनी " "

घ- उत्तरा " " "

१११ मनुष्य क्षेत्र में दो समुद्र

११२ सातवीं नर्क में जाने वाले दो चक्रवर्ती

११३ क- नागकुमार आदि भवनवासी देवों की स्थिति

ख- सौधर्म कल्प के देवों की उत्कृष्ट "

ग- ईशान " " " "

घ- सनत्कुमार " " जघन्य "

ङ- माहेन्द्र " " " "

११४ दो कल्पों में देवियाँ हैं

११५ " " देवों की तेजोलेश्या है

११६ क- " " के देव काय परिचारक हैं

ख- " " " स्पर्श "

ग- " " " रूप "

घ- " " " शब्द "

ङ- " " " मन "



- ११७ दा स्थाना म जीवों द्वारा पाचनम क पुष्पता का वेदादिभ  
 चपन-यावनृ निवरा  
 ११८ क दो प्रयोगो स्वरु  
 ख नो प्रयोगावगाइ पुष्पन  
 ग दा समय की स्थितिवाले पुष्पन  
 घ दो गुण कार-यावन नो गुण रून् पुष्पन

सूय मध्या २३

तृतीय स्थान

प्रथम उद्भागक

- ११९ क-ग तीन प्रकार क रूद्र  
 १२० क-ग तीन प्रकार की विदुवया-वक्रिय गक्ति  
 १२१ उन्नीम दण्डों के सख्या भेद स तीन प्रकार  
 १२२ तीन प्रकार की परिचारणा  
 १२३ क का मयुन  
 ख-ग मयुन सेवन करन वान तीन वग  
 १२४ क सोनह दण्डका मे तीन प्रकार के योग  
 ख प्रयोग  
 ग करण  
 घ चौबीस  
 १२५ छ अन्वायु दध के तीन कारण  
 ख नीर्षायु  
 ग अगुम दीषायु  
 घ शुभनीर्षायु  
 १२६ क तीन गुप्ति  
 सवन मनुष्या की तीन गुप्ति  
 ख सानह दण्डों मे तीन अगुप्ति  
 ग तीन प्रकार के दड

घ- सोलह दण्डकों में तीन प्रकार के दण्ड

१२७ क- तीन प्रकार की गर्हा

ख- " के प्रत्यान्वयान

१२८क-व- तीन प्रकार के वृक्ष इमी प्रकार तीन प्रकार के पुरुष

ग-घ- " " पुरुष

ङ- तीन प्रकार के पुरुष

च- उत्तम पुरुष तीन प्रकार के

छ- मध्यम " "

ज- जघन्य " "

१२९ क- तीन प्रकार के मच्छ

" " अडज मच्छ

" " पोतज मच्छ

ख- " " पक्षी

" " अंडज पक्षी

" " पोतज पक्षी

ग- " " उरपरिसर्प

घ- " " भुजपरिसर्प

१३० क- तीन प्रकार की स्त्रियाँ

" " तिर्यंच स्त्रियाँ

" " मनुष्य "

ख- " " के पुरुष

" " तिर्यंच पुरुष

" " मनुष्य "

ग- " " नपुंसक

" " तिर्यंच नपुंस

" " मनुष्य "

१३१ " " तिर्यंच "

- १३२ कर्त्तव्य दृष्टि म प्रथम तान मया  
 क प्रथम बीज दृष्टि म प्रथम तीन मया  
 ग वाग्व दृष्टि म  
 ' अनिम  
 ग कर्त्तव्य दृष्टि प्रथम  
 घ श्रीरामर्षे अनिम
- १३३ क तान कारण म तारा व्यवधान ने कथित होने हैं  
 ल देवता विष्णु के ममान समझने हैं  
 ग देवता मंत्रना करने हैं
- १३४ क तान कारण म अथकार होना है  
 ल उद्योग  
 ग देवताओं म अथकार  
 घ उद्योग  
 ह देवता मनुष्य लोक मे आने हैं  
 घ देवता शोभाह्वन करते हैं  
 ह देव समूह आना है  
 ज सामानिक देव मनुष्य म आने हैं  
 झ चापस्त्रिक  
 च सावधान  
 ट अप्रमदृष्टिवा आती हैं  
 ट परिषद के देव आते हैं  
 ड देव मनाधिपति  
 ह आत्म रत्न देव  
 ल देव अपने आसन से उठते हैं  
 ल देवताओं का आसन कम्पित होता है  
 घ देवता सिंहना करने हैं  
 ह देवता वस्त्र दृष्टि करते हैं

घ- तीन कारणों में देवताओं के शीतपृथक् काचित होते हैं  
 न- " श्लोकान्तिक देव मनुष्य योक्त में भाते है

१३५ तीन का प्रत्युपकार दृष्टकर है

१३६ तीन कारणों में धनकार मगार का अंत करना है

१३७ क- तीन प्रकार की अगमपिणी

ग- " उत्तमपिणी

१३८ क- तीन कारणों में अन्विदप्र पुद्गल चरिते होते है

ग- तीन प्रकार की उपधि

ग- पन्द्रह दण्डकों में तीन प्रकार की उपधि

ग- तीन प्रकार का परिग्रह

घ- पौदह दण्डकों में तीन प्रकार का परिग्रह

ङ- तीन प्रकार का परिग्रह

च- चौबीस दण्डकों में तीन प्रकार का परिग्रह

१३९ क- तीन प्रकार का प्रणिधान

ग- " सुप्रणिधान

ग- संयत मनुष्यों का तीन प्रकार का सुप्रणिधान

घ- तीन प्रकार का दुप्रणिधान

ङ- सोलह दण्डकों में तीन प्रकार के दुप्रणिधान

१४० क- तीन प्रकार की योनी

ग- नव दण्डकों में तीन प्रकार की योनि

ग- तीन प्रकार की योनी

घ- दश दण्डकों में तीन प्रकार की योनी

ङ- तीन प्रकार की योनी

च- " "

कूमोन्नित योनि में उत्पन्न होने वाले तीन प्रकार के उत्तम पुरुष

१४१ तीन प्रकार के तृण वनस्पतिकाम्य

१४२ अट्ठाई द्वीप में तीर्थ

अग्रमहिषियों की तीन परिपद्

ख- पाप भवनेन्द्रो को परिपदाये-क-के समान

ख- सर्व व्यतरेन्द्रों " "

उ- सब वैमानिकेन्द्रो " "

१५५ क- तीन वाम

ख- नेवनी कथित धर्म का श्रवण-यावन-स्य सूत्र भक्तिभान-यावत्  
नेवल ज्ञान की प्राप्ति तीन वाम म होती है

ग- तीन वय

घ- ख के समान—तीन वय म होती है

१५६ क- तीन प्रकार की बोधी

ख- ' ' क बुद्ध

ग- ' ' का माह

घ- ' ' के मूर्ख

१५७ क- घ—तीन प्रकार की प्रवग्धा

१५८ क- तीन प्रकार के निर्बंध सङ्गोपयोग रहित हैं

ख- ' ' ' सहित और रहित भी हैं

१५९ क- नवदीक्षित को द्वेदोपस्थापनीय चारित्र्य देने का समय  
तीन प्रकार का

ख- तीन प्रकार के स्थविर

१६० क- मन के तीन विकल्प तीन प्रकार के पुरुष

ख- समान क्रिया ' '

अतीत काल "

वर्तमान "

भविष्य ' '

ग- गमन क्रिया वा निषेच तीन प्रकार के पुरुष

अतीत काल " "

वर्तमान ' " "

	भविष्य काल	तीन	प्रकार	के	पुरुष
घ-	आगमन क्रिया	तीन	प्रकार	के	पुरुष
	अतीत काल	"	"	"	"
	वर्तमान "	"	"	"	"
	भविष्य "	"	"	"	"
ङ-	आगमन क्रिया का निषेध.	तीन	प्रकार	के	पुरुष
	अतीत काल	"	"	"	"
	वर्तमान	"	"	"	"
	भविष्य	"	"	"	"
च-	खड़ा होना, खड़ा न होना	तीन	प्रकार	के :	
छ-	बैठना, न बैठना				"
ज-	हिंसा करना, हिंसा न करना				"
झ-	छेदन करना, छेदन न करना				"
ञ-	बोलना, न बोलना				"
ट-	भाषण करना, न करना				"
ठ-	देना, न देना				"
ड-	गाना, न खाना				"
ढ-	प्राप्त करना, प्राप्त न करना				"
ण-	पीना, न पीना				"
त-	सोना, न सोना				"
थ-	लड़ना, न लड़ना				"
द-	जीतना, न जीतना				"
ध-	हारना, न हारना				"
न-	सुनना, न सुनना				"
प-	रूप देखना, रूप न देखना				"
फ-	सूँघना, न सूँघना				"
ब-	रसास्वादन करना, रसास्वादन न करना				

भ स्पष्ट करना स्पष्ट न करना तीन प्रकार के पुरुष  
 प्रायेक विकल्प के साथ अतीत वर्तमान और भविष्य काल  
 का प्रयोग

१६१ क वृशील को प्राप्त होने वाले तीन स्थान  
 सुगीत

१६२ क तीन प्रकार के समारी जीव  
 ख सब

ग छ

१६३ क तीन प्रकार की लोक स्थिति  
 ख तीन स्थिति

ग तीन स्थितिओं से जीवों की गति

घ आगति

ङ व्युत्पत्ति

च वा आचार

छ की वृद्धि

ज हानि

झ गति पर्याय

ञ वा समुत्थान

ट की वानकृत अवस्था

ठ का दान का बोध

ड नान

ढ जीव

१६४ क तीन प्रकार के अम

ख स्थावर

१६५ क अद्वय है

ख अभेद्य

अदाह्य

घ-	तीन	अंग्राह्य
ङ-	"	अनर्घ
च-	"	अमध्य
छ-	"	अप्रदेश
ज-		अविभाज्य

१६६ दुःख के सम्बन्ध में तीन प्रश्नोत्तर

१६७ दुःख की वेदना के सम्बन्ध में अन्य तीर्थियों का मन्तव्य और उसका निराकरण

सूत्र संख्या १५

### तृतीय उद्देशक

१६८-	(१)	तीन कारणों से मायावी आलोचना	नहीं करता
क-	"	"	"
ख-	"	"	"
घ-	"	"	"
ङ-	"	"	"
च-	"	"	"
छ-	"	"	"
	(२)	तीन कारणों से आलोचना नहीं करता-क-से-छ-तक के समान	
	(३)	"	"
(१)	क-तीन	कारणों से मायावी आलोचना करता है	
ख-	"	"	प्रतिक्रमण
ग-	"	"	निन्दा
घ-	"	"	गर्हा
ङ-	"	"	बुरे विचारों का नाश करता है
च-	"	"	शुद्धि करता है
छ-	"	"	योग्य प्रायश्चित्त स्वीकार करता है



- (२) तीन कारणोंसे मायावी आलोचना करता है-क-से-द-तक के समान  
 (३) " " " " "
- १६६ तीन प्रकार के पुरुष  
 १७० क- निर्धैव निर्प्रथियों के कल्प्य वस्त्र तीन प्रकार के  
 ख- " " वस्त्र "
- १७१ वस्त्र धारण करने के तीन कारण  
 १७२ क- आत्म रक्षा करने वाले तीन  
 ख- ग्लान निर्धैव को पानी की तीन दत्ति माना-कल्पती है  
 १७३ तीन कारणों से साधर्मि निर्धैव को विसृज्यो करने पर  
 आज्ञा का उल्लेखन नहीं होता  
 १७४ क- तीन प्रकार की अनुज्ञा (शास्त्र पढ़ने की आज्ञा)  
 ख- ' समनुज्ञा " "  
 ग ' ' उपमपदा (अन्य गण के आचार्य को आचार्य  
 मानना)  
 घ- ' ' का विग्रहण (गण छाडना)  
 १७५ क तीन प्रकार के वचन  
 ख ' के अवचन  
 ग " के मन  
 घ ' के अमन  
 १७६ क अन्य दृष्टि के तीन कारण  
 ख महा  
 १७७ तीन कारणों से नवीन उत्पन्न देव इन्द्रा हाने हुए भी  
 मनुष्य लोक में नहीं आसक्तता  
 १७८ क देवताओं की तीन कामनाएँ  
 ग तीन कारणों से देवता दु खी होना है  
 १७९ क ' ' व्यवन (मरण) को जान लेता है

स- तीन कारणों से देवता उद्भिन्न होता है

१८० क- विमानों के तीन प्रकार के आकार

ख- " " " आधार

ग- तीन प्रकार के विमान

१८१ क- सोलह दंडकों में तीन दृष्टियां

ख- तीन प्रकार की दुर्गती

ग- " " मुगती

घ- दुर्गति प्राप्त तीन

ङ- मुगति " "

१८२ क- एक उपवास करने वाले को तीन प्रकार का पानी कल्पता है

ख- दो " " " "

ग- तीन " " " "

घ- तीन प्रकार का उपहृत (वरतन में निकालकर रखे हुये भोजन को लेने का अभिग्रह)

ङ- " " अवगृहीत (पानी में लिये हुए भोजन को लेने का अभिग्रह)

च- तीन प्रकार का ऊनोदर तप

छ- " " उपकरण ऊनोदर तप

ज- निग्रंथ के लिये तीन अहितकारी कार्य

झ- " " हितकारी "

ञ- तीन प्रकार के शल्य

ट- तेजोलेख्या की तीन प्रकार से साधना

ठ- त्रैमासिकी भिक्षु प्रतिमा की विधि

ड- एक रात्रिकी भिक्षु प्रतिमा की सम्यक् आराधना न करने से-  
-होने वाली तीन, विपदायें

ढ- एक रात्रि की " " करने " संपदायें

१८३ अट्टाई द्वीप में तीन-तीन कर्मभूमि क्षेत्र

- (३) शून्य कारणों से नश्वरी आयोजना करना है-कभी-कभी के  
 (३) " " " " " " " " " " " "

१३२ तीन प्रकार के प्रत्यय

१३३ क- निर्देश-निश्चयों के अन्वय वचन तीन प्रकार के  
 ख- " " " वचन "

१३४ वचन धारण करने के तीन कारण

१३५ क- अन्वय ग्राह्य करने वाले तीन

ख- काल निर्देश के पक्षों को तीन प्रति-आवा-कल्पने है

१३६ तीन कारणों से भाषा में निर्देश को विभक्तियों को  
 आवा का उपसर्ग नहीं हुआ

१३७ क- वचन प्रकार की अलगा (सम्बन्ध पदान की अलगा)

ख- " " " " " "

ग- " " " " (अन्वय वचन के आवा के  
 धारणा)

घ- " " " " (तय धारणा)

१३८ क- शून्य प्रकार के वचन

ख- " " " " " "

ग- " " " " " "

घ- " " " " " "

१३९ क- वचन शून्य के वचन कारण

ख- " " " " " "

१४० तीन कारणों से शून्य उपसर्ग शून्य वचन शून्य को  
 वचन वचन वचनों धारणा

१४१ क- शून्य शून्य के तीन कारण

ख- शून्य शून्यों से शून्य शून्य शून्य है

१४२ क- " " " " " " " " " " " "

- १- तीन कारणों से देवता उद्विग्न होता है  
 २- विमानों के तीन प्रकार के आकार  
 ३- " " " आघार  
 ४- तीन प्रकार के विमान  
 ५- सोलह दंडकों में तीन दृष्टियां  
 ६- तीन प्रकार की दुर्गती  
 ७- " " सुगती  
 ८- दुर्गति प्राप्त तीन  
 ९- सुगति " "  
 १०- एक उपवास करने वाले को तीन प्रकार का पानी कल्पता है  
 ११- दो " " " "  
 १२- तीन " " " "  
 १३- तीन प्रकार का उपहृत (वरतन में निकालकर रखे हुये भोजन को लेने का अभिग्रह)  
 १४- " " अवगृहीत (थाली में लिये हुए भोजन को लेने का अभिग्रह)  
 १५- तीन प्रकार का ऊनोदर तप  
 १६- " " उपकरण ऊनोदर तप  
 १७- निर्ग्रय के लिये तीन अहितकारी कार्य  
 १८- " " हितकारी "  
 १९- तीन प्रकार के शल्य  
 २०- तेजोलेश्या की तीन प्रकार से साधना  
 २१- त्रैमासिकी भिक्षु प्रतिमा की विधि  
 २२- एक रात्रिकी भिक्षु प्रतिमा की सम्यक् आराधना न करने से-  
 होने वाली तीन विपदायें  
 २३- एक रात्रि की " " करने " संपदायें  
 २४- अट्टाई द्वीप में तीन-तीन कर्मभूमि क्षेत्र

- क जम्बुद्वीप में तीन कमभूमि क्षेत्र  
 ख धातकी खड द्वीप के पूर्वांग में तीन कमभूमि क्षेत्र  
 ग पश्चिमाध में  
 ग पुष्करवर द्वीपाध के पूर्वाध में  
 घ पश्चिमाध में
- १८४ क तीन प्रकार के दगन  
 ख की रुची  
 ग का प्रयोग
- १८५ क का व्यवसाय  
 ख  
 ग  
 घ इह लौकिक व्यवसाय तीन प्रकार का  
 ङ लौकिक  
 च बहिर  
 छ सामयिक  
 ज अर्द्धोत्पत्ति के तीन कारण
- १८६ क तीन प्रकार के पुद्गल  
 ख नरको के तीन आधार  
 ग आहारो क सम्बन्ध में नशों की अपेक्षा में विचार
- १८७ क तीन प्रकार का मिथ्य च  
 ख की अस्मिता  
 ग प्रयोग किया  
 घ भामुनापिनौ किया  
 ङ का अज्ञान  
 च अविनय  
 छ अज्ञान

१८८	क-	तीन प्रकार का	धर्म
	ख-	" "	उपक्रम
	ग-	" "	" "
	घ-	" "	उभयोपक्रम
	ङ-	"	का वैयावृत्य
	च-	"	का अनुग्रह
	छ-	" "	अनुशासन
	ज-	" "	उपालम्भ

१८९	क-	तीन प्रकार की	कथा
	ख-	"	का विनिश्चय

१९० पर्युपासना के फल की परम्परा

सूत्र संख्या २३

### चतुर्थ उद्देशक

१९१	क-	प्रतिमाधारी तीन प्रकार के उपाश्रयों की	प्रतिलेखना करे
	ख-	" " " "	" " आज्ञा ले
	ग-	" " " "	में प्रवेश करे
	घ-	" " " " संस्तारकों की	प्रतिलेखना करे
	ङ-	" " " " " "	" " आज्ञा ले
१९२	क-	तीन प्रकार का	काल
	ख-	" " " "	समय
	ग-	" " " " आवलिका-यावत्-तीन प्रकार का	अवसर्पिणी काल
	घ-	" " " "	के पुद्गल
१९३	क-ग-	" " " "	के वचन
१९४	क-	तीन प्रकार की	प्रज्ञापना
	ख-	" " " "	के सम्यक्
	ग-	" " " "	उपघात

	घ	तीन प्रकार की	विशुद्धि
१६५	क	तीन प्रकार की	आराधना
	ख		नानाआराधना
	ग		दगनाराधना
	घ		चारिआराधना
	ङ	के	सकल
	च		असकल
	छ		अनिष्ट
	ज		व्यतिष्ट
	झ		अनिचार
	ञ		अनाचार
१६६			प्रायश्चित्त
१६७		अडाई द्वीप में तीन-तीन अक्षमभूमियाँ	
	क	नम्बद्वीप के मेरु से दक्षिण में	तीन अक्षमभूमियाँ
	ख		उत्तर
	ग	घातवीर द्वीप के पूर्वाध में मेरु से दक्षिण में	
	घ		पश्चिमाध में उत्तर में
	ङ	पुष्करवर द्वीप के पूर्वाध में	दक्षिण में
	च		पश्चिमाध में उत्तर में
		अडाई द्वीप में तीन-तीन-क्षेत्र कन्ने च-तक के समान	

बध धरपवन

महाह

देव

महानन्द्या

अनरनन्द्या

१६८ क प्रायश्चित्त भूषण के तीन कारण

- ख- सार्वदेशिक भूकम्प के तीन कारण  
 १९६ क- तीन प्रकार के किल्विपिक देव  
 ख- किल्विपिक देवों का स्थान  
 २०० क- शक्रेन्द्र के वाह्य परिपद् के देवों की स्थिति  
 ख- „ आम्यंतर „ देवियों „  
 ग- ईशानेन्द्र के वाह्य „ „ „  
 २०१ क- तीन प्रकार का प्रायश्चित्त  
 ख- अनुद्घातिको को (गुरु) प्रायश्चित्त  
 ग- „ पारचिक „  
 ग- „ अनवस्थाप्य „  
 २०२ क- तीन शिक्षा के अयोग्य  
 ख- „ मुडित करने के „  
 ग- „ शिक्षा „ „  
 घ- „ उपस्थापना „ „  
 ङ- „ सहभोज „ „  
 च- „ सहवास „ „  
 २०३ क ख- „ वाचना „ „  
 ग- „ दुर्वोध्य  
 घ- „ सुख बोध्य  
 २०४ „ माडलिक पर्वत  
 २०५ „ परिमाण मे सबसे महान्  
 २०६ क-न्द-„ प्रकार की कल्प स्थिति  
 २०७ क- चौदह दंडको मे तीन शरीर  
 ख- सात „ „ „ „  
 २०८ क- तीन गुरु प्रत्यनीक  
 ख- „ गति „



	ग	तीन	समूह	प्रथमीक
	घ		अनुकपा	
	ङ		भाव	
	च		श्रुत	
२०६	क	तीन	विश्वग	
	ख		माश्वग	
२१०			निग्रय की महानिजरा के तीन	कारण
२११		तीन	प्रकार का	पुद्गल प्रतिघात
२१२			के	चम्पु
२१३			का	अभिमतभागद-वसाथ मान
२१४	क	तीन	प्रकार की	श्रद्धि
	ख			देवश्रद्धि
	ग	घ		राश्रद्धि
	च			गणि श्रद्धि
२१५		तीन	प्रकार के	गव
२१६				कारण
२१७				धम
२१८			की	व्यावृत्ति निवृत्ति
२१९			का	धन
२२०	क	तीन	प्रकार के	जिन
	ख			नेवली
	ग			अरिहृत
२२१	क	तीन	दुग्ध चानी से	प्रा
	ख		सुग्ध	
	ग		दुग्ध गामिनी	
	घ		सुग्ध	
	ङ-		सकिलष्ट	

च- तीन असंक्लिष्ट लेश्या

छ- " मनोज्ञ "

ज- " अमनोज्ञ "

झ- " अविशुद्ध "

ञ- " विशुद्ध "

ट- " अप्रशस्त "

ठ- " प्रशस्त "

ड- " शीत-रुक्ष "

ढ- " उष्ण-स्निग्ध "

२२२ क- तीन प्रकार के मरण

ख- " " " वाल मरण

ग- " " " पंडित मरण

घ- " " " वाल-पंडित मरण

२२३ क- अव्यवसित के लिए तीन अहितकारी

ख- व्यवसित " " हितकारी

२२४ प्रत्येक पृथ्वी के तीन वलय

२२५ उन्नीस दंडकों में तीन समय की विग्रहगति

२२६ क्षीण मोह अरहंत के तीन कर्मप्रकृतियों का एक साथ क्षय

२२७ क- अभिजित के तीन तारे

ख- श्रवण " " "

ग- अश्विनी " " "

घ- भरणी " " "

ङ- मृगशिर " " "

च- पुष्य " " "

छ- जेष्ठा " " "

२२८ भगवान धर्मनाथ और भगवान शांतिनाथ का अन्तर

- २२६ म० महावीर के पश्चान् होने धान तीन युग पुष्प  
 २२७ म० महावीर के चौदह पूर्वी मुनि  
 २२१ तीन तीर्थंकर चक्रवर्ती थे  
 २२२ ईश्वरक देवों के तीन विमान प्रस्तुत  
 २२३ जीवों द्वारा तीन प्रकार की पाप कम प्रकृतियों के पुद्गलों  
 का त्रैकालिक चयन—शमत निबारा मूत्र ११७ के समान  
 २३४ क तीन प्रदेशी स्वयं  
 ख , प्रदेशावगाढ पुद्गल  
 ग , समय की स्थितियाँ पुद्गल  
 घ , गुण काले पुद्गल यावत्-तीन गुण हस्ते पुद्गल

सूत्र सख्या ४४

चतुर्थ-स्थान

प्रथम उद्देशक

- २३५ चार अनविद्या सिद्ध गति प्राप्त होने के अगम्य  
 उन्नत प्रणत  
 २३६ क चार प्रकार के रूप इसी प्रकार चार प्रकार के पुष्प  
 उन्नत परिणत प्रणत परिणत  
 ग चार प्रकार के रस इसी प्रकार चार प्रकार के पुष्प  
 उन्नत मन प्रणतमन  
 घ चार प्रकार के पुष्प  
 उन्नत प्रणत  
 ङ- चार प्रकार क महत्त्व  
 च की प्रज्ञा  
 छ की दृष्टि  
 ज्ञ का शीलचारा  
 झ- , का व्यवहार

ट- चार प्रकार का पराक्रम

ऋजु-वक्र

ठ-	चार	प्रकार	के	वृक्ष, इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष
ड-	"	"	"	"
ढ-	"	"	"	"
ण-	"	"	"	पुरुष
त-	"	"	"	सकल्प
थ-	"	"	की	प्रजा <sup>वृक्ष</sup>
द-	"	"	की	दृष्टि
ध'	"	"	का	शीलाचार
न-	"	"	"	व्यवहार
प-	"	"	"	पराक्रम

२३७ पडिमायुक्त अणगार के कल्प चार भाषा

२३८ चार भाषा

शुद्ध-अशुद्ध परिणत रूपमन

२३९ क- चार प्रकार के वस्त्र, इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष

ख- " " " " " " " "

ग- चार प्रकार के वस्त्र, इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष

घ- चार प्रकार के वस्त्र " " " "

ङ- " " " सकल्प-यावत्-पराक्रम, सूत्र २३६ के समान

२४० चार प्रकार के पुत्र

सत्य-असत्य

२४१ क- चार प्रकार के संकल्प-यावत्-पराक्रम, सूत्र २३६ के समान

शुचि-अशुचि

ख- चार प्रकार के वस्त्र, इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष, परिणत-

यावत्-नराकम सूत्र २३६ के समान

फलदान

२४२ फलदान—चार प्रकार के बीरक (मजरी) इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष

२४३ तप—चार प्रकार क धुन, इसी प्रकार चार प्रकार के भिक्षु

२४४ चार प्रकार का तृण बनस्पतिकार्य

२४५ चार कारणों से नैरिकी का मनुष्य लोक में न आगना,

२४६ निर्ग्रथियों की कल्पनीय चार चदरें और उनका परिमाण

२४७ चार ध्यान, प्रत्येक ध्यान के चार चार प्रकार, ध्यान के लक्षण आलवन और अनुप्रेक्षा

२४८ चार प्रकार की देव स्विनि

म , का सवास मँधुन

२४९ क- चौबीस दंडको में चार कपाय

ल- चौबीस दंडको में कपायों के चार आधार स्थान

ग , , की उत्पत्ति के चार कारण

घ = चार प्रकार का त्रोध

च-द्व , , मान

ज ऋ , , माया

झ-ट , , लोभ

२५० क (चौबीस दंडको में) अनीत बाल में आठ कर्म प्रवृत्तियों के चयन के चार कारण

वर्तमान "

भविष्य "

म चौबीस दंडकों में तीस कान में आठ कर्म प्रवृत्तियों के उप-चयन के चार कारण

ग- चौबीस दण्डकों में (तित काल में) आठ कर्म प्रकृतियों के वंध के चार कारण

घ-	”	”	”	”	उदीरणा	”
ङ-	”	”	”	”	वेदना	”
च-	”	”	”	”	निर्जरा	”

२५१ क- चार पडिमा

२५२ क- चार अस्तिकाय  
” अरूपि ”

वय एवं श्रुत से पक्व या अपक्व

२५३ चार प्रकार के फल, इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष

२५४ क-	”	”	का	सत्य
ख-	”	”	की	मृपा
ग-	”	”	का	प्रणिधान
घ-	”	”	का	सुप्रणिधान
ङ-	”	”	”	दुष्प्रणिधान

१६ पंचेन्द्रिय दंडकों में ”

२५५ क- सद् व्यवहार (चार प्रकार के पुरुष)

ख-	दोष दर्शन	”	”	”
ग-	” कथन	”	”	”
घ-	” उपशमन	”	”	”

आभ्यन्तर तप विनय—चार प्रकार के पुरुष

१ अभ्युत्थान, २ वंदना, ३ सत्कार, ४ सम्मान,

५ पूजन, ६ स्वाध्याय, ७ वाचना देना, ८ पूछना, ९ वार-वार

१० पूछना, ११ व्याख्या करना, १२ सूत्र, अर्थ, तदुभय,

२५६ क- भवनेन्द्रों के लोकपाल

ख- वैमानिकेन्द्रों ” ”

- ग चार प्रकार के वायु कुमार  
 २५७ चार प्रकार के देव  
 २५८ , " , प्रमाण  
 २५९ की देविषा  
 चार दिशा कुमारिणी  
 , विद्युत् "
- २६० देव स्थिति चार पत्न्योपम  
 शकेन्द्र की मध्यम परिषद् के देवों की स्थिति  
 , " , देवियो " "
- २६१ चार प्रकार का ससार  
 २६२ , दृष्टिवाद  
 २६३ कल चार प्रकार का प्रायश्चित्त  
 २६४ , , काल  
 २६५ , पुण्यमल परिणामन  
 २६६ चार महाजन  
 भरत ऐरवत के भाईस तीर्थकरों द्वारा चार महाजनो का कथन  
 महा विदेह के गर्व अरहतो , "
- २६७ क चार दृगति  
 ख दृगति  
 ग दृगति प्राप्त जीव  
 घ दृगति
- २६८ क अहन्तो के सब प्रथम (प्रथम समय के) चार घाति कर्मों का क्षय  
 ख- सिद्धो , , अघाति "
- २६९ हास्योत्पत्ति के चार कारण

- २७० चार प्रकार की विशेषता, इसी प्रकार स्त्री अथवा पुरुष की विशेषता
- २७१ " " के भृत्य
- २७२ " ; की लोकोत्तर पुरुष की विशेषता
- २७३ समस्त लोक पालो की अप्रमहिषियाँ  
" इन्द्रो की "
- २७४ चार गोरस की विकृतिया  
" स्नेह "  
" महा "
- २७५ वस्त्रावृत देह या गुप्तेन्द्रिय  
क- चार प्रकार के घर, इसी प्रकार चार के पुरुष, वस्त्रावृत देह या गुप्तेन्द्रिय  
ख- चार प्रकार की कूटागार शाला इसी प्रकार चार प्रकार-  
की स्त्रियाँ
- २७६ शरीर की अवगाहना  
चार प्रकार की अवगाहना
- २७७ चार अगवाह्य प्रज्ञप्तिर्याँ

सूत्र संख्या ४३

### द्वितीय उद्देशक

- २७८ कषाय निग्रह  
क- चार प्रति सलीन  
" अप्रति मलीन  
मन आदि का निग्रह  
ग- चार प्रति सलीन  
" अप्रति सलीन
- २७९ (१७) चार चार प्रकार के पुरुष. दीन-अदीन



१ परिणत २ रूप ३ मन ४ मच्छा ५ प्रज्ञा ६ हृत्ति ७ ज्ञाना  
 चार ८ व्यवहार ९ पराचम १० शक्ति ११ ज्ञानि १२ भावी  
 १३ अचभासी १४ सेवा १५ पर्याप्त १६ परिवार

२८० (१८) आच-अनाच चार चार प्रकार क पुरुष  
 (१९) परिणत ज्ञानि की पुनरावृत्ति और १ भाव

२८१ धरणा

क चार प्रकार क रूपम इसी प्रकार चार प्रकार क पुरुष  
 म ज्ञानि-ज्ञान म धरणा

चार प्रकार क रूपम इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष  
 न ज्ञानि और मन म धरणा

चार प्रकार क रूपम इसी प्रकार चार प्रकार क पुरुष  
 प ज्ञानि और रूप म धरणा

चार प्रकार क रूपम इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष  
 र रूप और मन म धरणा

चार प्रकार क रूपम इसी प्रकार चार प्रकार क पुरुष  
 च रूप और रूप म धरणा

चार प्रकार क रूपम इसी प्रकार चार प्रकार क पुरुष  
 छ धरणा-अल्प धरणा—भीत और विचित्र स्वभाव

चार प्रकार क हृत्ति इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष  
 म मन मन हृत्ति और मरणा

चार प्रकार क हृत्ति इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष  
 छ मन मन मन और मरणा

चार प्रकार के हृत्ति इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष  
 ट मन मन मन और मरणा

चार प्रकार क हृत्ति इसी प्रकार चार प्रकार क पुरुष



- ठ- भद्र, मंद, मृदु और संकीर्ण के लक्षण. चार गाथा
- २८२ क- चार विकथा, चार स्त्री कथा, चार भक्त कथा, चार देश कथा,  
चार राज कथा  
ख- चार धर्मकथा, चार आक्षेपिनी कथा, चार विक्षेपणी कथा,  
चार संवेगनी कथा, चार निर्वेदिनी कथा
- २८३ क- दुर्बल शरीर और दृढ़ भाव. चार प्रकार के पुरुष  
ख- " " शरीर " " "  
ग- ज्ञान दर्शन की उत्पत्ति " " "
- २८४ निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थियों के ज्ञान-दर्शन की उत्पत्ति में बाधक चार कारण .
- २८५ क- चार प्रतिपदाओं में अस्वाध्याय  
ख- चार संध्याओं में "  
ग- स्वाध्याय के चार काल
- २८६ चार प्रकार की लोकस्थिति
- २८७ क- विविध प्रकार का जीवन, चार प्रकार के पुरुष  
ख- भव भ्रमण का अंत " " "  
ग- क्रोध या अज्ञान " " "  
घ- आत्म दमन " " "
- २८८ चार प्रकार की गर्हा
- २८९ क- संतुष्ट या समर्थ  
ख- सरलता और वक्रता-चार प्रकार के मार्ग, इसी प्रकार चार  
प्रकार के पुरुष  
ग- क्षेम और अक्षेम-चार प्रकार के मार्ग, इसी प्रकार "  
घ- क्षेम और अक्षेमरूप- " " "  
ङ- अनुकूल और प्रतिकूल स्वभाव-चार प्रकार के शंख, इसी  
प्रकार चार प्रकार के पुरुष  
च- अनुकूल और प्रतिकूल स्वभाव  
छ- चार प्रकार की धूमशिखा, इसी प्रकार चार प्रकार की स्त्रियाँ

- अ चार प्रकार की अक्षर-विधा इसी प्रकार चार प्रकार की लिपि  
 म अक्षर-विधा  
 य अक्षर-विधा
- २६० निम्नलिखित-लिपियों के साथ चार नामों से जान करे ता ज्ञान  
 का उल्लेख नहीं हुआ
- २६१ अक्षर-विधा के चार नाम  
 य चार नामों पर अक्षर-विधा का आवरण
- २६२ अक्षर-विधा के स्वभाव चार प्रकार के पुराने  
 म अक्षर-विधा के चार प्रकार का ज्ञान इसी प्रकार चार प्रकार  
 के पुराने
- २६३ अक्षर-विधा  
 क चार प्रकार का अक्षर-विधा इसी प्रकार चार प्रकार की नामों  
 मान करके जाना की गति  
 म अक्षर-विधा  
 चार प्रकार के अक्षर-विधा इसी प्रकार चार प्रकार के नाम  
 मान करके जाना की गति  
 य अक्षर-विधा  
 चार प्रकार के नाम इसी प्रकार चार प्रकार के नाम  
 मान करके जाना की गति
- २६४ क चार प्रकार का नाम  
 य की धारणा  
 म के अक्षर-विधा  
 १२ क चार प्रकार का नाम  
 १६ कक्ष  
 क अक्षर-विधा  
 य " अक्षर-विधा

- ग- चार प्रकार का बंधनोपक्रम  
 घ- " " " उदीरणोपक्रम  
 ङ- " " " उपशमनोपक्रम  
 च- चार प्रकार का विपरिणमनोपक्रम  
 छ- " " " अल्प-बहुत्व  
 ज- " " " संक्रम—एक अवस्था से दूसरी अवस्था  
 ज- " " " निघत्त-दृढ़तर बंधन में पहुँचना  
 ञ- " " " निकाचित-दृढ़तम बंधन

- २६७ चार एक संख्यावाले  
 २६८ " बहु "  
 २६९ " सर्व "  
 ३०० पर्वत  
 मानुषोत्तर के चार दिशाओं में चार कूट  
 ३०१ जम्बूद्वीप के भरत-ऐरवत क्षेत्र में अतीत ७  
 " " " " वर्तमान ७  
 " " " " आगामी ७  
 ३०२ अकर्मभूमि क्षेत्र  
 क- जम्बूद्वीप में चार अकर्म भूमि  
 ख- पर्वत  
 जम्बूद्वीप में चार वैताह्य पर्वत  
 ग- पर्वतवासी देव और उनकी स्थिति  
 चार देवों के नाम  
 घ- क्षेत्र  
 जम्बूद्वीप में चार महाविदेह

सब निपट-नीलवन वषधर पवता की ऊर्वाई

० वषधर पवन

१ वषधर पवन—

१ अम्बुदाग के मध्यवत म पूव म और तीना नग के उत्तर मे  
चार वषधर पवन

दक्षिण मे

॥

३

पश्चिम म

४

उत्तर म

५

चार विन्ध्याश्रम म ॥ ॥

मन्दिप म (तीन काल म) वा चार

उत्तम पुरुषो की उत्पत्ति

७

मध्यवत पर चार वन

८

अभिषेक गिनाव

९ मध्य पवन का उपर स चौलाई

१० धानका वन द्वारा पूर्वाह्न मे—सूत्र ३०१ से ३०२ तक  
५ समान

११ पुष्कर वर शेष ५ पक्षि समाध म—सूत्र २०१ से ०२

तक ५ समान

२०३

अम्बुदाग के द्वार

अम्बुदाग के चार द्वार द्वारा का चौदाग द्वारा पर रहने धान  
चार देव उनकी स्थिति

२०४

(३) सूत्र अन्तर्द्वीप क (एक वन)

अम्बु शेष के मध्यवत म चतुर्दिग्गवत वषधर पवन के चार  
विन्ध्याश्रम मे (सवण समुद्र मे) २५ अन्तर्द्वीप उन अन्तर

द्वारा मे रहने वाले मनुष्य (७) सूत्र अन्तर्द्वीप के (एक वने)

अम्बुद्वीप के मध्यवत के चार विन्ध्याश्रम मे (सवण समुद्र म)

२८ अन्तर्द्वीप उनमे रहने वाले मनुष्य

३०५ क- पाताल कलश

चार महापाताल कलश इन कलशों में चार देव. देवों की स्थिति

ख- आवास पर्वत. देव

द्वीप के ल

र वेलंधर नागराज आवास

सब निपट नीलवत वपधर पवतो की ऊचाई

३ वपधर पवत

च म इस्कार पवत—

१ जम्बूद्वीप के मेरुपवन से पूव में क्षीर सीता नदी के उत्तर में  
चार वक्षस्कार पवत

दक्षिण में

३

पश्चिम में

४

उत्तर में

५

चार विदिशाओं में

६

मन्विषे म (तीन काल में) चार चार  
उत्तम पुरुषों की उत्पत्ति

७

मेरुपवत पर चार जन

८

अभिषेक गिलाव

९ मेरु पवत की उपर म चौड़ाई

१० घानकी खड द्वीप पूर्वाड में सूत्र ३०१ से ३०२ तक  
के समान

११ पुष्कर वर द्वीप के पश्चिमाध म—सूत्र ३०१ स ३०२  
तक के समान

३०३

जम्बूद्वीप के द्वार

जम्बू दीप क चार द्वार द्वारों की चौड़ाई द्वारा पर रहने वाले  
चार देव उनकी स्थिति

३०४

(७) सूत्र अन्तर्द्वीप के (एक जम)

जम्बू दीप के मेरुपवन में चु सहिमवन वपधर पवन के चार  
विदिशाओं में (सवण समुद्र में) २८ अन्तर्द्वीप उन अन्तर  
द्वीपों में रहने वाले मनुष्य (७) सूत्र अन्तर्द्वीप के (एक जम)  
जम्बूद्वीप के मेरुपवत के चार विदिशाओं में (सवण समुद्र में)  
२८ अन्तर्द्वीप उनमें रहने वाले मनुष्य

- चार प्रकार के वृक्ष, इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष  
 ३१४ विश्राम स्थल  
 चार प्रकार के लौकिक विश्राम  
 ,, लोकोत्तर ,,  
 लौकिक और लोकोत्तर विकास-ह्रास  
 ३१५ चार प्रकार के पुरुष  
 ३१६ चौबीस दण्डकों में चार प्रकार के युग्म  
 ३१७ चार प्रकार के पराक्रमी पुरुष  
 ३१८ प्रशस्त और अप्रशस्त अभिप्राय, चार प्रकार के पुरुष  
 ३१९ चार लेश्या—१० भवन पति १ पृथ्वी १ अप १ वायु  
 १ वन; (१४ दंडकों में चार लेश्या)  
 ३२० क- धर्म युक्त और धर्म अयुक्त  
 युक्त-अयुक्त, परिणत, रूप और शोभा ये चार विकल्प  
 चार प्रकार के यान, इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष  
 ख- चार प्रकार की गालकी, इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष  
 "क" के चार विकल्पों की पुनरावृत्ति  
 ग- कार्य बनाने वाला और कार्य विगाड़ने वाला  
 चार प्रकार के सारथी, इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष  
 घ- चार प्रकार के अश्व, इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष  
 "क" के चार विकल्पों की पुनरावृत्ति  
 ङ- चार प्रकार के गज, इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष  
 "क" के चार विकल्पों की पुनरावृत्ति  
 च- मोक्ष मार्ग गामी, और संसार मार्ग गामी, चार प्रकार के  
 मार्गगामी या उन्मार्गगामी, इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष  
 छ- गुण सम्पन्न और गुण अ सम्पन्न  
 चार प्रकार के पुष्प, इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष



मिडालय के द्वारो के आगे चार मुख्य मंडप चार मंडप चार अखाड़े चार मणिपीठिका चार सिंहासन विजय दूष्य चार वज्रमय अकुण चार चैत्य स्तूप चार प्रनिमा चार चैत्य वृक्ष चार महेन्द्र ध्वज चार पुष्करिणिया पुष्करिणिया का परिमाण चार शोषान तोरण चार वनखड चार दधिमुखपवन पशतो की आदि

चार रतिकर पवत पवलों की ऊचाई आदि ईगाने द्र की चार अग्रमहिवियो की चार चार शकद्र

- ३०८ चार प्रकार का सत्य
- ३०९ आजीविक सम्प्रदाय म चार प्रकार का तप
- ३१० क चार प्रकार का समय  
ख- त्याग  
ग की अविचनता

सूत्र संख्या ३३

तृतीय उद्देशक

- ३११ चार प्रकार का क्रोध शोधी की गति
- ३१२ गण और रूप  
क चार प्रकार के पक्षी हनी प्रकार चार प्रकार के पुष्प विद्वान्त और अविद्वान्त  
ग चार प्रकार के पुष्प  
ग  
घ प्रीति और अप्रीति  
घ चार प्रकार के पुष्प  
ङ  
३१३ परोरकार भाव



ज शब्द और अशब्द

१ ज्ञानि-कुल २ जाति बल ३ जाति रूप

४ ध्रुव ५ गीत ६ चरित्र

१ कुल बल २ कुल रूप ३ कुल श्रुत

४ शील ५ चरित्र

१ बल रूप २ बल श्रुत ३ बल गीत ४ बल रूप

१ रूप श्रुत २ रूप शील ३ रूप चरित्र

१ ध्रुव गीत २ ध्रुव चरित्र

१ शील चरित्र

कुल सस्या २१ चार प्रकार के पुरुष

झ मधुरता

चार प्रकार की मधुरता इसी प्रकार चार प्रकार के आचार्य

ञ आ म सेवा पर सेवा चार प्रकार के पुरुष

ट सेवा करने वाला और सेवा नहीं कराने वाला चार प्रकार के पुरुष

ठ काय करने वाला अभिमान नहीं करने वाला चार प्रकार के पुरुष

ड गण गण का काय

ड गण के योग्य सामग्री का मचय करने वाला किन्तु अभिमान नहीं करने वाला चार प्रकार के पुरुष

ण गण की शोभा बढ़ाके वाला किन्तु अभिम न नहीं करने वाला चार प्रकार के पुरुष

त गण की शुद्धि करने वाला किन्तु अभिमान नही करने वाला चार प्रकार के पुरुष

थ लिय और धम का त्याग धीमयी

द धर्म और गण का त्याग

ध धम प्रम और धम म दटना चार प्रकार के पुरुष

- न- चार प्रकार के आचार्य  
 प- " अंतैवामी  
 फ- " निर्ग्रन्थ  
 घ- " निर्ग्रन्थियां  
 भ- " श्रमणोपासक  
 म- " श्रमणोपासिकाणं  
 ३२१ क-ग " श्रमणोपासक

३२२ मोक्षार्थ कल्प में उत्पन्न होने वाले भ० महावीर के श्रावकों की स्थिति

३२३ शशजानदेव के मनुष्य लोक में न आने के चार कारण  
 " " " आने के चार कारण

३२४ क- लोक में अंधकार होने के चार कारण

ग- " उद्योग " "

घ- देवलोक में अंधकार " "

— — —

- स- लौकिक, पक्ष-दरिद्र और पतनवान चार भग  
 लोकोत्तर पक्ष ज्ञान रहित और ज्ञानवान "
- ग अमम्यग प्रति और सम्यग् प्रति "
- घ- अपम्ययी मितम्ययी "
- ङ- दुर्गतिगामी और सुगतिगामी "
- च- प्राप्न प्राप्न "
- छ- लौकिक पक्ष-अ-धकार और प्रकाश  
 लाकोत्तर पक्ष अज्ञान ,, ज्ञान "
- ज- लौकिक पक्ष दु शीन ,, सुशील  
 लाकोत्तर पक्ष अज्ञानी , ज्ञानी "
- झ अज्ञानानदी और ज्ञानानदी  
 अज्ञानाभिमानी ज्ञानाभीमानी "
- झ- पाप कार्यों का त्यागी और पाप कर्मों का ज्ञानी चार भग  
 ट , किन्तु गृहत्यागी नहीं  
 ठ- जानी "
- ड इहलोक सुखेपी और परलोक सुखेपी चौभगी
- ढ वृद्धी और हानी  
 ज्ञान दधान की वृद्धि हानी और राग द्वेष की वृद्धि हानी  
 चार प्रकार के पुरुष  
 लौकिक पक्ष वेगवान और वेग रहित  
 लाकोत्तर पक्ष गुणी और अवेगुणी  
 विनीत अविनीत  
 चार प्रकार के अश्व इन्ही प्रकार चार प्रकार के पुरुष  
 धरुठला जाति कुल जाति वन, जाति रूप, जाति शय, कुल-बल-  
 कुल रूप कुल गय बल रूप, वन-जय  
 चार प्रकार के अश्व, इन्ही प्रकार चार प्रकार के पुरुष

उन्नत (वर्द्धमान)परिणाम और अवनत (हायमान) परिणाम  
चार प्रकार के पुरुष

३२८ क-उ- चार समान परिमाण वाले

३२९ क- उर्ध्वलोक में दो शरीर वाले चार

ख- अधो " " "

ग- तिरछे " " "

३३० लज्जा, चंचलता, स्थिरता, चार प्रकार के पुरुष

३३१ अभिग्रह

चार शय्या प्रतिमा

.. वस्त्र ..

" " "

" स्थान "

स अजोषोक मे अषकार करने वाले चार  
नियमलोक मे उद्योत

उ०४

सूत्र सप्त्या ३३

चतुष उद्गक

३४० चार प्रकार के प्रवासा

३४१ मन्विका का चार प्रकार का आहार

नियन्त्रा

मनुष्या

न्वा

३४२ चार प्रकार के आगिविष और उनकी गमि

३४३ चार प्रकार की व्याधिया

चिकित्सा

स भौतिक पण-वृण

नाशान्तर पण अन्विचार

वृण करने वाला वृण का स्वरूप करने वाला

अन्विचार मन्त्र करने वाला अन्विचार का स्मरण करने वाला

ग भौतिक पण-वृण करने वाला वृण की रक्षा करने वाला

नाशान्तर पण अन्विचार मन्त्र करने वाला अन्विचार सेवी का

समय न करने वाला

घ भौतिक पण वृण करने वाला वृण का उपचार करने वाला

नाशान्तर पण अन्विचार मन्त्र करने वाला अन्विचार की

प्र उद्दिष्ट न गृह्य करने वाला

अन्विचार के चार चार प्रकार के पुरुष

च भौतिक वृण मन्त्र वृण

नाशान्तर वृण मन्त्र के समान अन्विचारों की आलोचना न

करने वाला









प्रयोग के चार चार विवरण

३४७ चार प्रकार के मय

३४८ क मय और अमय

चार प्रकार के करह इसी प्रकार चार प्रकार के आचार  
ग मयावना और मुद्रा

चार प्रकार के हृण इसी प्रकार चार प्रकार के आचार  
ग वाग्य अयोग्य आचार और वाग्य अयोग्य गिष्य

चार प्रकार के हृण इसी प्रकार चार प्रकार के आचार  
घ भिन्नाचर्या

चार प्रकार के मन्द इसी प्रकार चार प्रकार के भिन्नाचर  
ङ धमन की वचनारिह हृण और गिषिनता

चार प्रकार के गोच इसी प्रकार चार प्रकार के पुह्य

च अन्व गुण और अधिक गुण

चार प्रकार के गोच इसी प्रकार चार प्रकार के पुह्य

छ स्तन लेखन

चार प्रकार के पत्र

ज अन्व या अधिक स्नेह

चार प्रकार की चटाई

३५० क चार प्रकार के धनुष्य

ख सुप्रमाली

३५१ मयथ और अमयथ

चार प्रकार के पक्षी इसी प्रकार चार प्रकार के पुह्य

३५२ क लौकिक पक्ष कृग्रेह और पुष्टदेह

लौकीतर पत्र हृण कयाव और अहृण कयाव

ख दुबल और सबल देह दुबल और सबल आत्मा



मनित हृदय, पवित्र हृदय

चार प्रकार के कृष्ण इसी प्रकार चार प्रकार के पुण्य

३६१ क चार प्रकार क उपमग

ग उपमग देवकृत

ग मानवकृत

घ नियचकृत

ङ स्वयकृत

३६२ क ग चार प्रकार क कम

३६३ का राग

३६४ क की बुद्धि

ग मति

३६५ क क सगरी जीव

ग सव

३६६ क मित गनु चार प्रकार के पुण्य

स मनन अमुचन

३६७ क मति—आगति नियच पच द्वय की शक्ति आगति

ल मनुष्य ती

३६८ क वे द्वय जीवा की रक्षा स चार प्रकार का समय

ग हिमा असयम

३६९ माला लणका स चार विधा

३७० क विद्यमान गुणा का नाश होने के चार कारण

ग गुणा का क्षुद्धि क चार कारण

३७१ क चौबीस तन्त्रो स चार कारण स गरीर की उ पति

स रचना

३७२ धम क चार साधन



मलिन हृदय पवित्र हृदय

चार प्रकार क कुम्भ इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष

३६१ क धार प्रकार क उपसग

ख उपसग देवकृत

ग मानवकृत

घ नियमकृत

च स्वयंकृत

३६२ क ग चार प्रकार क वम

३६३ ना सग

३६४ क की बुद्धि

ख मनि

३६५ क के ममारी शीव

ख ड सब

३६६ क मित्र गुरु चार प्रकार के पुरुष

ख मन्त्र अमुत्र

३६७ क गनि—आगनि नियम पंचद्रिय की गति आगनि

ख मनुष्य की

३६८ क वेन्द्रिय जीवा की रक्षा म चार प्रकार का समय

ख हिमा असमय

३६९ मान लण्डना म चार शिवा

३७० क विद्यमान गुण का नाग होने क चार कारण

ख गुणा की उद्वि क चार कारण

३७१ क चौबीस लक्षणो म चार कारणो म शरीर की उपलब्धि

ख रचना

३७२ धम व चार साधन

- ३७३ नरकासु संघ के चार कारण  
 नियंत्रणसु " "  
 मनुस्वामि " "  
 देवासु " "
- ३७४ चार प्रकार के राज  
 " " नृप  
 " " का महीन  
 " " मान्य  
 " " के अलकार  
 " " का अभिनय
- ३७५ क- मनसुमार और माण्डव कल्प के विमानों के चार वर्ण  
 ग- महाशुक्र और महाभार कल्प के देवों की ऊर्ध्व
- ३७६ क- चार प्रकार के उदक गर्भ  
 ग- " " "
- ३७७ " " का मानव
- ३७८ उत्पाद पूर्वके चार मूल वस्तु
- ३७९ चार प्रकार के काव्य
- ३८० नैरविकों और वायुकायिकों में चार समुद्रघात
- ३८१ भ० अरिष्ट नेमिनाथ के चौदह पूर्वी मुनि
- ३८२ भ० महावीर के चादलविध सम्पन्न मुनि
- ३८३ नीचे के चार कल्पों की संस्थिति  
 मध्य " " "  
 ऊपर " " "
- ३८४ विभिन्न रमयाले चार समुद्र
- ३८५ चार प्रकार के आवर्त, दश प्रकार चार प्रकार का श्लोघ  
 श्लोघ करने वालों की गति
- ३८६ नक्षत्रों के तारे



३३ अन्तर्गत पुष्पावस्था और उपराष्ट्र का चार चार तारे  
 चार स्थानों में पातल के पुष्पावस्था का वैज्ञानिक चयन  
 उपराष्ट्र  
 वर्ष  
 उपराष्ट्र  
 वर्ष  
 निवृत्त

३४ पुष्पावस्था  
 चार प्रकाश वातावरण अन्त  
 प्रकाशवातु पुष्पावस्था  
 समय की स्थितिवात पुष्पावस्था  
 पुष्पावस्था-वर्ष चार वर्ष अन्त पुष्पावस्था

संवादाय ४६

पंचम स्थान  
 प्रथम उद्घाटन

३५ क पाच प्रकाश  
 ल अन्त

३६ क प्रकाश-वर्ष अन्त प्रकाश  
 घ प्रकाश ३ में जीवा की आयुक्ति  
 " " का राग  
 की मूर्च्छा  
 शक्ति  
 जीवन  
 न का विनाश

७ प्रकाश ३ का अन्तर्गत जीवा के अन्तर्गत-वर्ष-वर्ष  
 शक्ति के लिए

८ प्रकाश ३ का अन्तर्गत जीवा के अन्तर्गत-वर्ष-वर्ष  
 शक्ति के लिए

ए- गदशादि ५ के ज्ञान में सुगति, गदशादि ५ के अज्ञान में दुर्गति

३६१ क- प्राज्ञानिवाप आदि ५ में सुगति

ख- प्रज्ञानिवाप विगमन आदि ५ में सुगति

३६२ ग- वाच प्रविगा

३६३ घ- वाच अधारण वाच

च- " " वाचाधिपति

३६४ ङ- अथपि शान्ती वाच कार्यों में श्रुद्ध शीता है

क- केवल शान्ती वाच कार्यों में श्रुद्ध गती शीता

३६५ ख- चौथीम दृष्टी में वाच वर्ण, वाच रत्न

ग- वाच शरीर के वर्ण, रत्न

घ- शूल शरीरों के वर्ण, वाच, रत्न और रत्न

३६६ ङ- प्रथम और अन्तिम जिनके युग में वाच दुर्गम है

क- मध्यम चावीम " " " " युगम है

ख- भ. महावीर ने निर्ग्रहों को वाच स्थान की आज्ञा दी है

ग- " " " " " "

घ- " " " " " " वाच प्रकार की निष्ठा की आज्ञा दी है

ङ- " " " " " " वाच प्रकार की निष्ठा की आज्ञा दी है

च- " " " " " " के आहार की " "

छ- " " " " " " वागमो के लिए " "

३६७ क- श्रमण निर्ग्रह की महा निर्जरा और महाप्रमाण के पांच कारण

ख- " " " " " " " " "

३६८ संघ व्ययस्था

क- सांभोगिक साधर्मि को विनभोगी करने के पांच कारण

ख- साधर्मिक निर्ग्रह को पारंत्तिक प्रावृत्त देने के पांच कारण

३६९ क- आचार्य-उपाध्याय के गण में पांच विग्रह स्थान

ख- " " " " अविग्रह स्थान

- ४०० पाच निपद्या पाच आत्रव स्थान  
 ४०१ क पाच प्रकार के ज्योतिषी दव  
 ख पाच प्रकार क देव  
 ४०२ की परिचारणा  
 ४०३ क चमरेन्द्र की पाच अग्रमहिषिया  
 ख वलेन्द्र  
 ४०४ क भवने द्रो की पाच पाच मेनाए पाच पाच सेनाधिपति  
 ख वैमानिकेन्द्रो  
 ४०५ क गकट्ट क अम्यन्तर परिपत्र क देवी की सिधनि  
 ख ईगानन्द्र की देविया  
 ४०६ पाच प्रकार का प्रतिवध  
 ४०७ की आजीविवा  
 ४०८ के राज्य विद्व  
 ४०९ क छत्रम्भावम्या मे परिषद् सहने के पाच कारण  
 ख सवपावम्या म  
 ४१० क ष पाच प्रकार क हेतु  
 ख छ अर्तु  
 ज केवली क पाच पूण  
 ४११ क म० पद्यप्रभ के पाच बल्यानक  
 ख म० पुष्पदन  
 ग म० शासन नाथ  
 घ म० विमल नाथ  
 ङ म० अनन नाथ  
 च म० धम नाथ  
 छ म० गानि नाथ  
 ज म० कृशु नाथ  
 झ म० अर नाथ



- ४२० इ एक (इषकीमर्वे) दण्ड मे पेन्द्रवतिया आऽि पाच क्रियाए  
पाच प्रकार की परिज्ञा
- ४२१ वा व्यवहार
- ४२२ क मुप्त मयत क पाच जागृत  
जागृत क मुप्त
- ख असयत क पाच जागृत  
जागृत पाच जागृत
- ४२३ क कम बध क पाच कारण  
ख क्षय
- ४२४ पाच मामिकी बिधु पडिमा की विधि
- ४२५ पाच प्रकार की सन्तोष एषणा  
निर्तोष
- ४२६ बाधि की इतभता के पाच कारण  
मुलभता के
- ४२७ पाच इन्द्रिय जय  
परामय  
पाच सवर  
असवर
- ४२८ पाच प्रकार का मयम
- ४२९ क ऐकेन्द्रिय जीवो की रक्षा से पाच प्रकार का मयम  
ऐकेन्द्रिय जीवा की हिमा से पाच प्रकार का असयम
- ४३० क पचन्द्रिय जीवा रक्षा मयम  
ख हिमा असयम
- ४३१ क मव प्राण भून जीव और संचा की रक्षा करने मे पाच प्रकार  
का मयम  
ख हिमा असयम



४३८ आचार और उपाध्याय के नाम के ३ अक्षर  
 ४३९ के प्रकार के ३ अक्षर

सूच संख्या १३

तृतीय उद्भाग

४४० वाच प्रकार के अक्षरानुसृत

४४१ वाच अक्षरानुसृत

४४२ गति

४४३ क र्थि न्या के विषय

म मह

ग

४४४ क अक्षरानुसृत के अक्षर (आक्षर) वाच

अक्षरानुसृत

विषयानुसृत

स वाच प्रकार के अक्षरानुसृत वाच

ग वाच

घ अक्षरानुसृत

४४५ क के विषय

म पुनाक

ग अक्षरानुसृत

घ अक्षरानुसृत

ङ अक्षरानुसृत

च अक्षरानुसृत

४४६ क विषय विषयानुसृत के अक्षरानुसृत वाच प्रकार के अक्षर

स अक्षरानुसृत

४४७ वाच विषय (आक्षर) अक्षरानुसृत

४४८ विषय

४४९ प्रकार के अक्षर





स आनन्त्य—अविभाग

ग अनंत

घ

४६३ पाच प्रकार व ज्ञान

४६४ ज्ञानावरणीय वन

४६५ स्वाध्याय

४६६ प्रायास्थान

४६७ प्रतिजमण

४६८ क सूत्र वाचना के पाच कारण

स तीक्ष्ण

४६९ क सोपम और ईगान बल्प के विमानो के पाच वण

स की ऊचाई

ग ब्रह्मनोक और लातक देवो की ऊचाई

घ नीचीम दण्डको म पाच वण और पाच रस क पुद्गलों का  
(अकालिक) वधन

४७० नन्दिया

क जम्बूद्वीप क मरुपर्वत स दक्षिण मे गंगा मे मित्तने वाली  
पाच नदिया

स जमुना

ग मिथु

घ रक्षा

५ रक्तवती

४७१ कुमारवस्व म दीक्षित होने वाले पाच तीवकर

४७२ सभी इ द्र म्यालो म पांच पांच सभा

४७३ पाच-पाच त रा माल पाच नक्षत्र

४७४ क पाच स्थानो मे पापकर्मा के पुद्गलों का चयन

उपचयन

वध



४८३ क ग छह प्रकार के सब जीव

४८४ तृण वनस्पतिकाय

४८५ स्थान दुनभ

४८६ चिद्रियो के विषय

४८७ क छह सवर

ग अमवर

४८८ क छह प्रकार का मुख

ख दुःख

४८९ प्रायश्चित्त

४९० क-ख के मनुष्य

४९१ क न

४९२ क अवमपिणी के छह आरा

ख उ मपिणी

४९३ व अम्बुद्वीप के भक्त एरवत म —

१ जतीत उ मपिणी के मुमममममा आरा म मनुष्या की  
ऊचाई और आयु

२ वतमान अवमपिणी के

३ । मामी उत्सपिणी के

ग अम्बुद्वीप व दक्षिण और उत्तर कुरु म क के समान पुनरावृत्ति  
ग धानकी स्वर्ण द्वीप के पूर्वाध और पश्चिमाध म क के समान  
पुनरावृत्ति

४९४ छह प्रकार व महत्त

४९५ सम्धान

४९६ मरुप य आ मा क ६ अन्तिकारी

अवसाय , हितकारी

४९७ क छह प्रकार के जाति आय

ग- ८१ प्रकार के वृत्त गाने

५१८ .. .. दी शोभाश्री

५१९ ग- ८२ शिखा

ग- ८३ शिखाओं के लीयों की गाने

" " " " भागी

" " " " सूर्यश्री

" " " " वा आचार

" " " " की श्रुति

" " " " शक्ति

" " " " विदुष्यता

" " " " शिखाश्री

" " " " समुद्रश्री

" " " " वा आचार-मंगल

" " " " दर्शन

" " " " शान

" " " " श्रीदाशमिगम

" " " " श्रीदाशमिगम

५०० क- विधेय से आचार गाने के ६ कारण

ग- " " आचार न गाने, ..

५०१ उन्माद होने के ६ कारण

५०२ प्रमाद के ६ कारण

५०३ क- ६ प्रकार की प्रमाद प्रतिवेगना-धर्मोपकरणों को देखने में आलस्य करना

ग- ६ प्रकार की अप्रमाद प्रतिवेगना-धर्मोपकरणों को देखने में आलस्य न करना

५०४ छह निदया, दो (२०-२१वें) दण्डकों में

- ५०५ क गङ्गा के माथ लाङ्गाल की छह अग्रमहिषिया  
 ख यम
- ५०६ ईगाने के मध्य परिपद् क देवी की स्थिति
- ५०७ छह त्रिक कुमारियाँ, छह विद्युत् कुमारियाँ
- ५०८ क धर्म्य नागेन्द्र की छह अग्रमहिषियाँ—  
 ख भूतानन्द  
 ग गेप (दक्षिण उत्तर) भवनेन्द्रा की ६ अग्रमहिषियाँ
- ५०९ क धर्म्य नागेन्द्र का ६ सहस्र नामाच्य देवियाँ  
 ख भूतानन्द  
 ग गेप (दक्षिण उत्तर) भवनेन्द्रा की ६ हजार नामाच्य देवियाँ
- ५१० नाग के भ्रम  
 क छह प्रकार की अवग्रह मति  
 ख ईश मति  
 ग अजाय मति  
 घ धारणा
- ५११ तप के भ्रम  
 क छह प्रकार का बाह्य तप  
 ख आन्तरिक तप
- ५१२ विद्या
- ५१३ के सुप्राणी
- ५१४ गणना मिति—छह प्रकार की भिन्नाचर्या
- ५१५ क रत्नप्रभा के छह नरकावासो के नाथ  
 ख पद्मप्रभा
- ५१६ ब्रह्मलोक में छह विमान प्रसूत
- ५१७ क नाद के साथ तीस मूह्य रहनेवाले छह नक्षत्र  
 ख क साथ पद्म मुहूर्त रहनेवाले छह नक्षत्र  
 ग पनालिम

५१८ जम्बूद्वीप कुलदेव की उपाधि

५१९ अन्न भवद्गी का राज्य-विशेष

५२० म० पाण्डिताय के वाग्ज्योतिष्मात्म्य भूति  
 म० धामपूज्य के मातृ दीप्तिय लोनेप्रति  
 म० वाग्ज्योतिष्मात्म्य का राज्य-विशेष

५२१ क- भीष्मिन्द्र की रथा दत्तों से उत्पन्न प्रकार का मयम  
 ग- " " " " दिगा कर्मों से उत्पन्न प्रकार का भवदम

५२२ क- जम्बूद्वीप में उत्पन्न लक्ष्मीभूति  
 ग- " " " " क्षेत्र

ग- " " " " वर्षोंपर वर्षम

घ- " " " " कूट

ङ- " " " " महा इन्द्र

च- " " " " की अपिष्टात्री देवियों की स्थिति

छ- " " के मयमयम से उत्पन्न में उत्पन्न महा नदियाँ

ज- " " " " उत्तर " " "

झ- " " " " पूर्व में गोवानदी के दोनों किनारों पर  
 ६ उत्तर नदियाँ

ञ- जम्बूद्वीप के मयमयम से पश्चिम में गोवानदी के दोनों किनारों  
 पर ६ उत्तर नदियाँ

ट- धातकी मण्ड द्वीप के पूर्वार्ध में क-से-अ-नक पूर्वोक्त क्रम

ठ- धातकी मण्ड द्वीप के उत्तरार्ध में क-से-अ-नक का पूर्वोक्त क्रम

५२३ छद्म शत्रु

५२४ क- छद्म क्षय विविधता

ग- " " अधिक "

५२५ ज्ञान के भेद

आभिनविदोधिक ज्ञान के छद्म अर्थात्प्रवृत्त

५२६ छद्म प्रकार का अधिज्ञान

- १२७ निर्बंध विषयिका के छह अकल्प्य बचन
- १२८ कल्प-मानु मर्त्या (प्रावर्तित्त) के छह प्रकार
- १२९ कल्प के छह घातक
- १३० छह प्रकार की कल्प स्थिति
- १३१ म० महावीर की दीक्षा के पूर्व का छह  
 ' ' ' कवन ज्ञान म .. .. ताप  
 ' ' ' निवाण म .. ..
- १३२ क मनकुमार और माहुर कल्प के विमानों की ऊंचाई  
 म- ' ' ' देवों की ऊंचाई
- १३३ क भावन का परिणाम छह प्रकार का  
 म विषय ' ' ' "
- १३४ ६ प्रकार के प्रदत्त
- १३५ क सभी इन्द्रस्थाना का उत्कृष्ट विरह काल  
 ख मानवी नरक ' "  
 घ मिथ गति .. " "
- १३६ आनुत्तम  
 क छह प्रकार का आनु वष  
 ख वैश्वीय शब्दका से छह प्रकार का आनु-वष  
 ग मानव मान पूर्व आगर्था भव का आनु वष
- १३७ छह प्रकार के भाव
- १३८ का प्रतिफल
- १३९ छह पाठ का नमन
- १४० क छह स्थाना म पाप कर्मों के पुद्गलों का चयन  
 ' ' " उपचयन  
 ' ' " वष  
 ' ' " उदीरणा

इह स्थानों में पाप कर्मों की गणना  
 " " " निर्जग

ग- इह प्रदेसिह स्थान

" प्रदेसायगाड पुद्गल

" गमय की निचिजाते पुद्गल

" गुण काले पुद्गल-वायु-का गुण कर्म पुद्गल

सूत्र सख्या ६६

सप्तम स्थान. एक उद्देशक

५४१ गण में निकलने के मात कारण

५४२ गान प्रकार के विभग ज्ञान

५४३ ग- " " की गीति (जीवोत्थान के स्थान) .

ग- अज्ञान की गान गति. गान वागति

ग- पीनज " " "

घ- जरापुत्र " " "

ङ- रमज " " "

च- नन्देदज " " "

छ- समूद्धिम " " "

ज- उद्भिज " " "

५४४ संव षणवस्था

क- आचार्य और उपाध्याय के गण में गान संवह स्थान

ग- " " " " " " अमग्रह "

५४५ क- मात पिण्डपणा

ग- " पाणपणा

ग- सात अथग्रह पड़िमा

घ- " सप्तैकक आचाराङ्ग श्रुतस्कन्ध दो. चूलिका दो में

ङ- " महा अध्ययन सूत्रकुलाङ्ग श्रुतस्कन्ध दो में

च- सप्त सप्तमिका निधु प्रतिमा का परिमाण



- ५४६ क अधोन्विक से सात पृथ्वियों (तरक)  
 ख घनोत्थि  
 ग घनवात  
 घ तनुवान  
 छ- अत्रकाशान्तर  
 घनका समावेश क्रम  
 थ मान पृथ्वियों के नाम  
 छ गोत्र
- ५४७ सात स्वर (वाग्) वायुकाय  
 ५४८ सस्थान  
 ५४९ भयस्थान  
 ५५० क प्रकार से असवय (छत्रस्थ) की पहचान  
 ख सबज
- ५५१ क मूल गात्र  
 ख वाद्ययंत्र गोत्र के सात भन्  
 ग गीतम  
 घ वाम  
 इ कुस  
 ख कौशिक  
 छ मडव  
 ज वशिष्ठ
- ५५२ सात मूल नय  
 ५५३ क सात स्वर  
 स्थान  
 जीव निश्चित  
 अजीव  
 लक्षण

मान स्वरो के तीन ङान  
तीनों ग्राम की मान-मात सूचीना

मान स्वरो के उत्पत्ति स्थान  
केय ली उत्पत्ति

केय के तीन प्राकार

केय के छः दीप

केय के आठ गुण

" " तीन दून

" की दो भविति (भाषा)

मानन करने वाली निगमों के स्वर में इनके वर्णों का प्राण

मान प्रकार के स्वर नाम

मान-उत्पत्तियाम

स्वर संकेत पूर्ण

५५४ मान प्रकार का तात्पर्य

५५५ क- जम्बूद्वीप में मात क्षेत्र

ग- " " " वर्षधर पर्वत

घ- लवण समुद्र में मिलने वाली मात नदियां

च- " " " " " "

ट- धानकी लण्ड द्वीप के पूर्वार्ध के मात क्षेत्र

ड- " " " " " " वर्षधर पर्वत

ण- लवण समुद्र में मिलनेवाली मात नदियां

त- कातोद " " " " "

थ- धातकी लण्ड द्वीप के पश्चिमाधे में मात क्षेत्र

द- " " " " " " वर्षधर पर्वत

ड- लवण समुद्र में मिलने वाली मात नदियां

ण- कातोद " " " " "

त- पुष्कर वर द्वीपार्ध के पूर्वार्ध में मात क्षेत्र

थ- " " " " " वर्षधर पर्वत

- ष पुष्करोत्थि म मिनने वाला सात नर्षिया  
 त काला ममु मे मिनने वाली सात नर्षिया  
 य पुष्कर वर द्वीपस्थ मे पन्चमाय क टन्व-णनरु के मभान  
 ११६ क जम्बूद्वीप क भरतु की अतीत उमर्षिणी मे सात कुत्तकर  
 ल वनमान अवसर्षिणी  
 ग आगामी उमर्षिणी  
 ११७ मान प्रकार को दइ नीति  
 ११८ चक्रवर्ती क मान एकद्विय रान  
 पचन्धिय  
 ११९ बुटे कान क सात ल रण  
 अल्द्र  
 १२० सात प्रकार के समारी ल व  
 १२१ आनु धाय के सात राग्ण  
 १२२ क-सं सात प्रकार क सब जाव  
 १२३ ब्रह्मन्त चक्रवर्ती का आयु और गति  
 १२४ म० मन्वन्तस्य संहित दीक्षित होने वाले सात ध्यक्वि  
 १२५ मान प्रकार के दान  
 १२६ लक्ष्म्य बीनराय के मान कम प्रकृतिया का वेत्न  
 १२७ अमवण क मानने क अयोध माप पत्नय  
 मयन योग्य  
 १२८ म० महावीर की ऊचाई  
 १२९ मान विकथा  
 १३० आचाय और उपाध्याय के गण क सात अन्धिय  
 १३१ क सात प्रकार का मयम  
 ल अमयम  
 ग आरभ  
 घ अनारभ

- ए- भाग प्रकार का सारभ  
 घ- " " " सारभ  
 ङ- " " " सारभ  
 ज- " " " सारभ

- १७२ षोडश में रहे हुए मान्यों की स्थिति  
 १७३ ग- सादर अर्पण की स्थिति  
 घ- बानुजा प्रभा के मूरतियों की उत्कृष्ट स्थिति  
 ङ- एक प्रभा के मूरतियों की उत्कृष्ट स्थिति  
 १७४ क- ईशानेन्द्र के आभ्यन्तर परिवार के देवों की स्थिति  
 घ- ईशानेन्द्र के अग्रमहिषियों की स्थिति  
 ग- सौधर्म कल्प में परिष्कृत स्थितियों की उत्कृष्ट स्थिति  
 १७५ नारद्व्यन देव और उनका परिवार  
 आदित्य " " "  
 मरुतोय " " "  
 तुषित " " "  
 १७६ क- शकेन्द्र के अरुण लोकमान की मात्र अग्रमहिषियां  
 घ- ईशानेन्द्र के सोम " " " "  
 ग- " " यम " " " "  
 १७७ क- गनकुमार कल्प में देवों की उत्कृष्ट स्थिति  
 घ- माहेन्द्र " " " "  
 ग- ब्रह्मलोक " " " "  
 १७८ ब्रह्मलोक कला में विमानों की ऊंचाई  
 १७९ भवनवामी देवों की ऊंचाई  
 व्यंतर " "  
 ज्योतिषी " "  
 सोधर्म कल्प के " "  
 ईशान कल्प के "

- ५८० क नगीचर द्वीप म मान द्वीप  
 ख समुद्र
- ५८१ गाल जयिया
- ५८२ मत्र देवों की मान मात्र सेना और मान मान सेनादिपति  
 ५८ के कच्छ प्रवेश कच्छ क देवों की मन्त्र
- ५८४ वचन क मान विकला
- ५८५ क मान प्रकार का प्रगल्भ मन विनय  
 ख अप्रगल्भ  
 ग प्रगल्भ वचन  
 घ अप्रगल्भ  
 ङ प्रगल्भ काय  
 च अप्रगल्भ  
 छ लोकापचार
- ५८६ मान समुद्रपान
- ५८७ क म० महावीर के मान प्रवचन निहृ  
 ख निहृवा के मान जम नगर
- ५८८ गाना केन्द्रीप कम क मान अनुभाव
- ५८९ क मषा नमत्र के मान तारे  
 ख पूव लिंगा मे द्वारवान् मान नमत्र  
 ग दक्षिण लिंगा मे  
 घ पश्चिम  
 ङ उत्तर
- ५९० क वधम्कार पर्वत  
 जम्बूद्वीप म सोमनाथ वधम्कार पर्वत पर मान कुट  
 ख शषमान
- ५९१ द्वीन्द्रिय की कुम् कोठी

५६२	मान स्थानों में मान कर्मों के पुद्गलों का धैर्यात्मिक चयन	
	"	उपचयन
	"	बंध
	"	उदीरणा
	"	वेदना
	"	निर्जरा

५६३ मान प्रदेशिक स्थान

.. प्रदेशावगाठ पुद्गल

.. नमन की स्थिति वाले पुद्गल

.. गुण काले पुद्गल-यावत्-मान गुण स्मरे पुद्गल

" " "

सूत्र संख्या ३३

अष्टम स्थान. एक उद्देशक

५६४ एकाकी विहार प्रतिमा के योग्य आठ प्रकार के अनगार

५६५ क- आठ प्रकार की योगियाँ

ग- अंठजों की आठ गतियाँ. आठ भागतियाँ

ग- पोंतज " " " " "

घ- जरागुज " " " " "

५६६ चौबीस दण्डकों में आठ कर्म प्रकृतियों का धैर्यात्मिक चयन

" " " " उपचयन

" " " " बंध

" " " " उदीरणा

" " " " वेदना

" " " " निर्जरा

५६७ क- मायावी के आलोचना न करने के आठ कारण

ख- " " " " "

- ग आलोचना करने वाला आराधक  
 आलोचना न करने वाला विराधक
- घ आराधक और विराधक की गति में अन्तर
- ५६८ क आठ सधर  
 ख आठ असधर
- ५६९ आठ स्था
- ६०० आठ प्रकार की लोक स्थिति
- ६०१ गन्धि रूपता
- ६०२ प्रत्येक महानिधि की ऊंचाई
- ६०३ आठ समिति
- ६०४ क आलोचना (प्रायश्चित्त) सुनने योग्य अणुगार के आठ गुण  
 ख आत्म दोषों की आलोचना करनेवाले
- ६०५ आठ प्रकार का प्रायश्चित्त
- ६०६ आठ मन् स्थान
- ६०७ आठ अक्रियावादी
- ६०८ आठ प्रकार का निमित्त
- ६०९ आठ प्रकार की वचन विभक्ति
- ६१० क अक्षर आठ स्थानों को पूर्णरूप से नहीं जानता  
 ख अक्षर आठ स्थानों को पूर्णरूप से जानता है
- ६११ आठ प्रकार का आयुर्वन्
- ६१२ क अक्षर की आठ अक्षरमहियिया  
 ख ईगानेद्र  
 ग अक्षर के सोम लोकपाल की आठ अक्षरमहियिया  
 घ ईगानेद्र के अक्षरमण  
 ङ यह—आठ महाअक्षर
- ६१३ आठ प्रकार की पूर्ण अक्षरमहियिया

६१४. क- वायुनिःस्य शीतो वी श्या मे जात प्रवृत्त का समय  
 ग- " " " " शिवा " " " " " समय
- ६१५ आठ प्रकार के सूक्ष्म
- ६१६ भयम वृत्त शीत के प्रवृत्त आठ पुरुष सुवत्त पुरुष
- ६१७ भ० वायुनिःस्य के आठ प्रकार
- ६१८ आठ धर्मन
- ६१९ आठ प्रकार का प्रीतिमिक्त ज्ञान
- ६२० भा० अग्निष्ट नेमि के प्रवृत्त आठ पुरुष-प्रधान पुरुष
- ६२१ भ० वायुनिःस्य के उपदेश मे शीत शीत शीत आठ राजा
- ६२२ आठ प्रकार का प्रवृत्त
- ६२३ क- आठ शृणुशब्दो  
 ग- आठ शृणुशब्दो के नाम  
 ग- " " " धतवाभ में आठ शोषाग्नि क विमान  
 ग- " शोषाग्नि क देवों की स्थिति
- ६२४ क- धर्माग्निनाय के मध्य-प्रदेश आठ  
 ग- अधर्माग्निनाय के " "  
 ग- आकाशाग्निनाय के " "  
 ग- जीवाग्निनाय के " "
- ६२५ महापद्म तीर्थकर आठ राजाओं को दीक्षित करेंगे
- ६२६ सुवत्त होनेवाली श्री शृणु वी आठ अग्रमहिषियाँ
- ६२७ धीर्य प्रवाद पूर्व की आठ शूलिका वस्तु
- ६२८ आठ प्रकार की गति
- ६२९ गगा आदि ८ देवियों के द्वीपों का आयाम विष्कम्भ
- ६३० उत्कामुग आदि ४ देवों के द्वीपों का आयाम विष्कम्भ
- ६३१ कालोद समुद्र का आयाम विष्कम्भ
- ६३२ पुरुषार्थ द्वीप के अदर का आयाम विष्कम्भ  
 " " " बाहर " " "



- ६३३ प्रत्येक चक्रवर्ती के कारिणी रत्न का प्रमाण
- ६३४ मगध के योजना का प्रमाण
- ६३५ जवूडीप के मुद्रान रत्न के मध्यभाग का विष्कम्भ और ऊंचाई
- ६३६ निमिग गुफा की ऊंचाई  
स्रड प्रपात
- ६३७ वनस्कार पवन
- क जवूडीप के मेरुपवत से पूव में सीता महानदी के बिनारे आठ वनस्कार पवन
- ख जवूडीप के मेरुपवन से पश्चिम में सीता महानदी के बिनारे आठ वनस्कार पवन  
चक्रवर्ती विजय
- ग जवूडीप के मेरुपवन से पूरु में सीता नदी के उत्तर में आठ चक्रवर्ती विजय
- घ जवूडीप के मेरुपवत से पूव में सीतानदी के दक्षिण में आठ चक्रवर्ती विजय
- ङ जवूडीप के मेरुपवत से पश्चिम में सीतानदी के दक्षिण में आठ चक्रवर्ती विजय
- च जवूडीप के मेरुपवन से पश्चिम में सीता महानदी के उत्तर में आठ चक्रवर्ती विजय
- छ राजधानियाँ  
जवूडीप के मेरुपवन से पूरु में सीता महानदी के उत्तर में आठ राजधानियाँ
- ज जवूडीप के मेरुपवत से पूव में सीता महानदी के दक्षिण में आठ राजधानियाँ
- झ जवूडीप के मेरुपवन से पश्चिम में सीता महानदी के दक्षिण में आठ राजधानियाँ

४- जम्बूद्वीप के उत्तरपूर्व में पश्चिम में सीता नदी के उत्तर में  
आठ राजधानियाँ

६३८ क- जम्बूद्वीप के पूर्व में सीतानदी के उत्तर में उग्रशृं आठ अग्नि  
पे, १, और होमे

जम्बूद्वीप के पूर्व में सीतानदी के उत्तर में उग्रशृं आठ चन्द्रवर्ती  
पे, १, और होमे

जम्बूद्वीप के पूर्व में सीतानदी के उत्तर में उग्रशृं आठ चन्द्रवर्त  
पे, १, और होमे

जम्बूद्वीप के पूर्व में सीतानदी के उत्तर में उग्रशृं आठ वासुदेव  
पे, १, और होमे

५- जम्बूद्वीप के पूर्व में सीतानदी के दक्षिण में एक सुन की पुनरावृत्ति

ग- " पश्चिम में " दक्षिण " " "

घ- " " " उत्तर " " "

६३९ क- जम्बूद्वीप के पूर्व में सीतानदी के उत्तर में आठ दीर्घ चैतारुष्य  
पर्वत

जम्बूद्वीप के पूर्व में सीता नदी के उत्तर में आठ तिमिर गुफा

" " " " " गण्ड प्रपात गुफा

" " " " " कृत्तवान् देव

" " " " " वृत्तमाग देव

" " " " " गंगा कुण्ड

जम्बूद्वीप के पूर्व में सीता नदी के उत्तर में आठ तिमिर कुण्ड

" " " " " गंगा नदी

" " " " " तिमिर नदी

" " " " " ऋषभकुण्ड पर्वत

ग- " " " दक्षिण में दीर्घ चैतारुष्य पर्वत

" " " " " तिमिर गुफा

जम्बूद्वीप के पूर्व म सीता नदी के दक्षिण म दीघ बनाइयावन

तमिस्र गुफा

सुवर्णप्रपात गुफा

कृतमाल देव

शुभमात्र देव

रक्ता बंड

रक्तावनी वन

रक्ता नदी

रक्तावनी नदी

शुभम कुंड पवन

शुभम कुंड देव

ग जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से पश्चिम से सीता नदी के उत्तर से

क के समान

घ दक्षिण से

६४० मेरु श्रृंगिका का विष्कम्भ

६४१ क घातकी स्वर्ण द्वीप के पूर्वाध से घातकी वृक्ष की ऊंचाई

क मध्यभाग का विष्कम्भ

ख गेय मूत्र ६३६ म ६४० तक समान

ग घातकी स्वर्ण द्वीप के पश्चिमाधम महाधानकी वृक्ष की ऊंचाई

गण १ के समान

घ पुष्कराज द्वीप के पूवाध म पश्चत्य की ऊंचाई गेय क स्व

के समान

ङ पश्चिमाध म महापद्म वृक्ष की ऊंचाई

६४२ क जम्बूद्वीप क मेरु पर्वत पर मन्गल वन म आठ िगा हस्ति

कुंड

ख जम्बूद्वीप की जगति की ऊंचाई विष्कम्भ

६१३ अ- जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से दक्षिण में आठ दिक्कत परसेपर  
पर्वत पर आठ कूट

ग- " " " उग्र में स्थित " " "

ग- " " " पूर्व में स्थित पर्वत पर आठ कूट इन पर  
रहने वाली दिना कुमारियों की स्थिति

घ- जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से दक्षिण में स्थित पर्वत पर आठ कूट

ङ- जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से पश्चिम में स्थित पर्वत पर आठ कूट

च- " " " उत्तर में " " "

इन पर रहने वाली दिना कुमारियों की स्थिति

छ- अधोपोक से आठ दिना कुमारिया

ज- उर्ध्वपोक से " " "

६१४ क- आठ तल्पों में निवेद्य और मनुष्यों का उपवास

ग- " " " आठ दग्द

ग- " दग्दों के .. पारिवाहिक विमान

६१५ अष्ट अष्टमिता अष्ट प्रतिमा का परिमाण

६१६ क- आठ प्रकार के नमारी तीर्थ

ग- " " " नर्थ " "

ग- " " " " " "

६१७ " " " का समय

६१८ आठ पृथ्विया

ग- ईषत् प्राग्भारा पृथ्वी के मध्यभाग की गोटाई

ग- " " " " आठ नाम

६१९ प्रमाद त्याग करके करने योग्य आठ शुभ कार्य

६२० महाशुक्र और महेश्वर कल्प में विमानों की ऊंचाई

६२१ न० अरिष्ट नेमी के बाद—नववि मन्वन्त मुनि

- ६५२ केवली समुत्थात की स्थिति  
 ६५३ अनुनर विमानो मे उत्पन्न होने वाले भ० महावीर के मुनि  
 ६५४ आठ प्रकार के अंतर देव और उनके आठ अक्षय  
 ३५५ रत्नप्रभा से मूय विमान की ऊचाई  
 ६५६ चंद्र का स्पश करक गति करन वाले आठ नक्षत्र  
 ६५७ क जम्बूद्वीप के द्वारो की ऊचाई  
 स सय द्वीप समुद्रा के द्वारो की ऊचाई  
 ६५८ क पुरुष क्षेत्रीय कम की जघाय यथ स्थिति  
 स यगोकीनि नाम कम की  
 ग उ च गोत्र कम की  
 ६५९ श्रीरिद्रय की कुलकोटी  
 ६६० क आठ स्थानो मे पापकर्म के पुण्यो का शकालिक धयन  
 उवचयन  
 यथ  
 उनीरणा  
 क्षेत्रना  
 निजरा  
 स आठ प्रदेशी स्वयं  
 आठ प्रयोगावगाठ पुण्यत्रय  
 समय की स्थितिवाले  
 गुण वाले-शयन आठ गुणकमे पुदुगन  
 सत्र सख्या ६७  
 नयम स्थान एव उद्देशक  
 ६६१ गभोकी निशय या विमभागी करने के नो कारण  
 ६६२ ब्रह्मचर्य (आचाराग प्रथम ध्युन स्क०) के नव अध्ययन  
 ६६३ नव ब्रह्मचय गुणि

- ६६४ म० जनिमन्दन कीर म० सुमतिनाथ का उभर  
 ६६५ नव प्रकाश  
 ६६६ नव प्रकार के मगारी त्रीर  
 प्रणोत्पाय में नव की कवि, नव की ज्ञानि  
 प्रणाल " " " "  
 मेरुसूत्राय " " " "  
 सायुक्ताय " " " "  
 ननम्बनिताय " " " "  
 श्रीन्द्रिय " " " "  
 श्रीन्द्रिय " " " "  
 पतुन्द्रिय " " " "  
 पचेन्द्रिय " " " "  
 म- नव प्रकार के मगं त्रीर  
 न- " " की मगं त्रीरों की प्रवसाहना (जरीर का प्रमाण)  
 प- नासादिक त्रीरों की प्रेरानिक लयस्थिति  
 ६६७ रोमोत्पत्ति के नव कारण  
 ६६८ नव प्रकार का रथानावरणीय क्रम  
 ६६९ क- अभिजित का चन्द्र के साथ योग का  
 न- चन्द्र के साथ उत्तर की ओर में योग करने वाले नव नक्षत्र  
 ६७० नमभूभाग में ताराओं की उत्पत्ति  
 ६७१ जम्बूद्वीप में नव योजन के भस्मों का वैश्वानिक प्रवेश  
 ६७२ जम्बूद्वीप के भस्म में दश अवसर्पिणी में नव वनशैव-नव  
 कामुद्वेषों के पिना, शैव वर्णन नमथायास के समान  
 ६७३ प्रत्येक निधि का विष्कम्भ, चक्रवर्ती की नव निधि  
 ६७४ नव विष्कम्भ  
 ६७५ मरीर के नव द्वार  
 ६७६ नव प्रकार का वण

- ६७७ नव पाप स्थान  
 ६७८ नव पाप श्रुत  
 ६७९ नव निपुण आचार्य  
 ६८० भ० महावीर के नव गण  
 ६८१ ' ' निर्घंथा की नव कोटि शुद्ध भिक्षा  
 ६८२ ईशानेश क वरुण लोकात्म की नव अष्टमहिषिणा  
 ६८३ क ईशानेश की अष्टमहिषियो की स्थिति  
 ख ईशान कल्प मे दविद्या की स्थिति  
 ६८४ नव देव-निहाय  
 अय्यावाध देव थीर उनका परिवार  
 अगिच्चा " " "  
 गिद्धा ' ' " "  
 ६८५ नव शैवजग विमान प्रस्तर  
 ६८६ नव प्रकार का आयु परिणाम  
 ६८७ नव नवमिका भिक्षु प्रनिमा वा परिमाण  
 ६८८ नव प्रकार का प्रायश्चित्त  
 ६८९ क जवुदीप क दक्षिण भरत म दीप वैताद्वय पर्वतपर नव कूट  
 ख ' निषध " " "  
 ग मह पवन पर नदन वन म नव कूट  
 घ मा वन वपस्कार पर्वत पर नव कूट  
 ङ ' क०२ म दीप वैताद्वय पर्वतपर नव कूट  
 च मुक्कल मे ' ' ' कूट  
 राय सूत्र ६३७ के 'ग' म 'ख तन' के विजया म दीप वैताद्वय पर्वत पर नव नव कूट

द- जम्बूद्वीप के विद्युन्मूत्रम यथास्वार पर्यंतपर नव कूट

न- " " पश्चिम " "

शेष मूत्र ६३७ के "ग" से "घ" तक के विजयी में दीर्घ  
धैराक्ष पर्यंत पर नव-नव कूट

भ- जम्बूद्वीप के मंगलयंत्र में उत्तर में धीराक्ष पर्यंत पर्यंत पर  
नव कूट

स- जम्बूद्वीप के मंगलयंत्र में पश्चिम में दीर्घ धैराक्ष पर्यंत पर  
नव कूट

- ६६० न. पाठ्य नाम की ऊचाई
- ६६१ भ० नारायण के तीर्थ में तीर्थकर गीत नाम धर्म वांछने वाले
- ६६२ आगामी वर्षों में होनेवाले नव तीर्थकरों में नाम
- ६६३ महापद्म चरित्र
- ६६४ चन्द्र के नाम पीठ में योग करनेवाले नव नक्षत्र
- ६६५ ज्ञान आदि चार श्रेयस्वों में विमानों की ऊचाई
- ६६६ विमल वाहन कुलकर की ऊचाई
- ६६७ भ० ऋषभदेव का तीर्थ प्रथम काल
- ६६८ मनदनादि ४ अर्वाहियों का आयाम विष्णुमंत्र
- ६६९ शुक्र महापद्म की नव विनियों
- ७०० नव कपाल वेदनीय कर्म की नव प्रकृतियों
- ७०१ क- चतुरिन्द्रियों की कुलकोटी
- ग- भुजगों की "
- ७०२ नव स्थानों में पापकर्म के पुद्गलों का धैर्यात्मिक चयन
- " " " " उपचयन
- " " " " बंध
- " " " " उदीरणा



वेत्ता  
निजरा

- ७०३ नव प्रयेगी स्वध  
नव प्रदेगाधगाड पुद्गल  
नव समय की भिन्निवाले पुद्गल  
नव गुण काल यावत्त-नव गुण रुने पुद्गल

सूत्र सख्या ४३

दशम स्थान एक उद्देशक

- ७०४ दग प्रकार की लोक स्थिति  
७०५ वा शब्द  
७०६ अतीन काल मे इन्धियो के दग विषय  
वनमान  
आयामी  
७०७ अर्द्धन पुद्गला वा दग कारण से धवन  
७०८ त्रीधोपति क दग कारण  
७०९ क दग प्रकार का समय  
ख अमयम  
ग सवर  
घ असवर  
७१० अभिमान क दश कारण  
७११ दग प्रकार की नमाधि  
असमाधि  
७१२ क प्रवज्या  
ख का धमअधम  
ग की वधाष्टय  
७१३ क का जीव परिणाम  
ख अजीव

- ७१४ क- " " " अक्षरिण अस्वाप्त्वात्  
 ग- " " " औदारिक "
- ७१५ क- पंचेन्द्रिण जीवों की रक्षा में दश प्रकार का मयन  
 ग- " " " दिना " " " " अमयन
- ७१६ दश प्रकार के मूत्र
- ७१७ क- जम्बू द्वीप के मेरुपर्वत में रक्षिण में गंगा-विष्णु में मिनने  
 गान्धी दश नदियाँ  
 ग- " " " " उनर में रत्नधारिणी में " "
- ७१८ क- जम्बूद्वीप के भरत में दश राजधानियाँ  
 ग- इन राजधानियों में थीक्षित होनेवाले दश राजा
- ७१९ जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत का उद्बेध (गहसर्द)  
 " " " के मूल का विष्कम्भ-ओशर्द  
 " " " " मध्यभाग का विष्कम्भ  
 " " " की ऊपार्द
- ७२० क- जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत के मध्यभाग में आठ मन्त प्रदेश  
 ग- इन मन्त प्रदेशों में दश दिशाओं की उत्पत्ति  
 ग- दश दिशाओं के नाम  
 घ- लवण समुद्र का गोतीर्थ विरहित क्षेत्र  
 " " " उदक मान  
 " " के पाताल कलशों का उद्बेध  
 " " " " " " विष्कम्भ  
 " " " " " " वाहल्य  
 " " " धुद्रपाताल कलशों का,, उद्बेध-विष्कम्भ  
 और वाहल्य
- ७२१ क- घातकी संट द्वीप के मेरुपर्वत का उद्बेध और विष्कम्भ  
 ख- पुष्कर चर द्वीपार्ध के " " "

- ७२२ सब दृश वस्तुस्य पदो की ऊचाई और विष्कम्भ  
 ७२३ बम्बूनीप के दश दोष  
 ७२४ मानुषोत्तर पवत के मूल का विष्कम्भ  
 ७२५ क सब अजनय पवतो की ऊचाई स्थान और विष्कम्भ  
 ख सब दधिमुख पवता की ऊचाई और विष्कम्भ  
 ग सब रतिकर  
 ७२६ क रुचक वर पवत के मूल का और ऊपर का विष्कम्भ  
 ख कडल  
 ७२७ दश प्रकार का इन्द्रानुयोग  
 ७२८ सब दृश और लोकपालो के उत्पानपवता का परिमाण  
 ७२९ क बान्तर वनस्पतिकार्य की उद्बुध्य अवमाहना  
 ख जलचर पक्षिण्य नियचो की  
 ग नरपरिमप  
 ७३० भ० सभवनार्थ और भ० अभिनन्दन का अन्तर  
 ७३१ दश प्रकार का अनय  
 ७३२ उत्पान पूव की दस वस्तु  
 अस्तिनास्तिशवात् पूव की दश बूलवस्तु  
 ७३३ क दश प्रकार की प्रतिमवना  
 ख आलोचना के दश दोष  
 ग दश गुण युक्त अमण आत्मन्तोषो की आलोचना कर सकता है  
 घ दश प्रकार का प्रायश्चित्त  
 ७३४ दश प्रकार का मिथ्यात्व  
 ७३५ भ० पञ्च प्रभ का पूजासु और गति  
 भ० नमि नाथ  
 भ० पम नाथ

पुष्पसिद्धि धानुदेव ..

भ० नेमिनाथ की ऊर्ध्व, शीर धातु

कृष्ण धानुदेव की ..

७३६ क- दश भवनवासी देव

ग- भवनवासी देवों के संक्षेप

७३७ दश प्रकार का मूल

७३८ क- " " " उपवास (दीप)

ग- " " " विजोधि

७३९ " " " मन्त्र

७४० " " " दश

७४१ क- " " " मन्त्र

ग- " " " कृष्ण

ग- " " " अमृतमन्त्र

७४२ दृष्टिवाद के दश नाम

७४३ क- दश प्रकार के धान्य

ग- " " " दीप

ग- " " " विद्वान्

७४४ " " " शुद्ध वचन

७४५ क- " " " दान

ग- " " " गति

७४६ " " " के मुंठ

७४७ " " " की संग्रहा

७४८ " " " के प्रत्याग्यान

७४९ " " " की समाचारी

७५० भगवान महावीर के दश स्वप्न

७५१ दश प्रकार का सम्यग्दर्शन

७५२ दश संज्ञा

- ७१३ दश प्रकार की मरक वेदना
- ७१४ क ह्यस्य दश पदार्थों को पूरणरूप से नहीं जानता  
 ख मवज्ज ' " " ' जानता है
- ७१५ क दश-दशा (आमो क नाम)  
 ख कम विपाक दशा क दश अध्ययन  
 ग उपामक "
- घ अन्तहत '
- ङ अनुत्तरोपगतिक "
- च आचार दशा
- छ प्रश्नव्याकरण दशा "
- ज वष '
- झ द्विवृद्धि '
- ञ दोष
- ट म वेपिन '
- ७१६ उत्पत्तिशी काल का परिमाण  
 अवपत्तिशी
- ७१७ क शीवीन दण्डका मे-अनन्दरोपान्नक आदि दश प्रकार  
 ख पकप्रभा के नरकादान  
 ग तनप्रभा म जघप स्थिति  
 घ पकप्रभा मे उत्कृष्ट स्थिति  
 ङ धूमप्रभा म जघन्य स्थिति  
 च अमृ कृमाग आदि भवनवामियों की जघप स्थिति  
 छ वादर बनस्पति काय की उत्कृष्ट स्थिति  
 ज ध्यानर दवा की जघप स्थिति  
 झ- ब्रह्मनाक बन्ध मे उत्कृष्ट स्थिति  
 ञ मानक कल्प मे जघप स्थिति
- ७१८ आत्महितकारी शुभकर्म वष के दश कारण

- ७५६ दश प्रकार का जागमा (कामना) प्रयोग  
 ७६० " " " धर्म  
 ७६१ " " के हगदिर  
 ७६२ " " " पुत्र  
 ७६३ केदली (गर्भज) के दश मन्त्रोत्पृ  
 ७६४ क- ममय क्षेत्र में दश कुलक्षेत्र  
 ग- इनमें दश महा द्रुम  
 ग- इनपर रहनेवाले दश महलिक देव और उनकी विधिति  
 ७६५ क- मुक्तान के दश लक्षण  
 ग- दुष्काल " " "  
 ७६६ सुगम सुगमा नाम के प्रथम आरा में भोगोपभोग की सामग्री देनेवाले दश कल्प युवा  
 ७६७ क- जम्बुद्वीप के भरत में-अतीत उत्तमपिणो में दश कुलकर  
 ग- " " " आगामी " " " "  
 ७६८ क- जम्बुद्वीप के मेरुपर्वत से पूर्व में नीतानदी के दोनों किनारे दश चतुरकार पर्वत  
 " " " " पश्चिम में " " "  
 ग- घातकी गण्ड के पूर्वार्ध में "क" के समान  
 र- " " " पश्चिमार्ध में " " "  
 घ- पुष्करखर द्वीपार्ध के पूर्वार्ध में " " "  
 ङ- " " " पश्चिमार्ध में " " "  
 ७६९ क- इन्द्राधिष्ठित दश कल्प  
 ग- दश इन्द्रों के दश पारिव्यानिक विमान  
 ७७० दश दशमिका भिक्षु प्रतिमा का परिमाण  
 ७७१ क- दश प्रकार के संसारी जीव  
 ख-ग- " " " सत्य "  
 ७७२ क्षतायु पुरुष की दश दशा

- ७७३ दण प्रचार की तुल्यनस्पतिकार्य
- ७७४ क विद्याधर शशिवा का विष्णुम्भ  
 स अमिदीय
- ७७५ पक्षेय विमाना की ऊर्चाई
- ७७६ तैत्रायण्या मे मध्य होने के दण प्रमग
- ७७७ दण आन्ध्र
- ७७८ रत्नप्रभा के रत्न काण का बाह्य  
 वज्र  
 शेष १४ वाण्डों का आन्ध्र रत्न वाण्ड क ममान
- ७७९ क मन्त्रीय समुहो का उद्भव  
 म मन्त्र महा द्रहा  
 ग कुन्तो  
 घ मीता-मीताग नन्दिया के मुख मूल का उद्भव
- ७८० क चन्द्र के बाह्य मण्डल म दणव चन्द्र मण्डल म ध्रमण करने  
 वाला मण्डल  
 स आन्ध्र
- ७८१ गान वृद्धि कर्म बान र्ग मन्त्र
- ७८२ क मन्त्रवर नियम पञ्चेन्द्रिय का कुल कोटी  
 स उपरिष्ठ
- ७८३ क दण स्थानो मे पापकर्मों क पुण्यनो का प्रकानिष्ठ चयन  
 उपचयन  
 वध  
 उन्नीरणा  
 वेष्णा  
 नित्ररा
- स दण प्रणैपी स्वध  
 दण प्रणैगावपाण पुण्यन  
 दण समय की स्थितिबाने पुण्यन  
 दण गुण बाने पुण्यन-यावन-दण गुण स्ने पुण्यन

॥ नमो गणेशाय ॥

## द्रव्यानुयोग प्रधान समवायाङ्ग

ध्रुवग्रन्थ १ | अक्षयन १  
 उद्देगह १ | पद १ त्वाग्र ४४ द्वाग

उपलब्ध पाठ १६६३ इतीक प्रमाण

मय सूत्र १६० | पद्य सूत्र ६०

नव बलदेव, वासुदेव, प्रतिवासुदेव, परिचयाङ्कन पत्र

बलदेव-पूर्व वासुदेव-पूर्व पूर्वभद्र निदानभूमि निदान-हेतु अन्तर्देव  
 भय भय धर्माचार्य

१ अन्तर्देव	विश्वभूमि	सभृता	नारा	माय	क-पत्र
२ सुकभु	वर्णिक	सभद्र	कनकसु	पुत्र	विश्व
३ वासुदेव	धर्मदेव	सुदर्शन	भद्रको	समान	भद्र
४ अन्तर्देव	सुदर्शन	श्रेयस	योग	न्या	सुकभु
५ वासु	वशिष्ठा	हृषी	राजसूद्र	संभ-परायण	सुदर्शन
६ धर्मदेव	विश्वामित्र	संगद्वय	द्वारदी	नास-पुत्र	धर्मदेव
७ अक्षयनि	वशिष्ठा	आशासक	पैलांती	मोष्टी	संभद्र
८ राजवलि	पुनःसु	ससूद्र	विश्वाम	परमार्थ	पद्य
९ —	संगद्वय	इन्द्रदेव	द्वारि-पुत्र	नागा	राम

वासुदेव बल-वासु-विता बलदेव-माता वासुदेव-माता प्रतिवासुदेव

विश्व	प्रजापति	नद्रा	गृणाथनी	भद्रदेव
विश्व	मता	सुभद्रा	समा	गारक
स्वयंभु	सोम	सुभना	पृथ्वी	मेरुत
पुण्योत्तम	रुद्र	सुदर्शना	संवा	सधुर्देव
पुण्यसिद्ध	शिव	विश्व	अमृता	निशुंभ
पुण्यपुत्रोक्त	महाशिव	देवयती	लक्ष्मीमति	वदि
दत्ता	अग्निशिखा	ज्यंती	शेषमति	प्रह्लाद
नारायण	दशरथ	अपराजिता	कैकेयी	रावण
दृश्य	वसुदेव	देहिणी	देवयती	जरासंध



## समवायाङ्ग सूत्र संख्या

१	४३ ।	२	२३ ।	३	२४ ।	४	१८ ।	५	२२ ।
६	१७ ।	७	२३ ।	८	१८ ।	९	२० ।	१०	२५ ।
११	१६ ।	१२	२० ।	१३	१७ ।	१४	१८ ।	१५	१६ ।
१६	१६ ।	१७	२१ ।	१८	१८ ।	१९	१५ ।	२०	१७ ।
२१	१४ ।	२२	१७ ।	२३	१३ ।	२४	१५ ।	२५	१८ ।
२६	११ ।	२७	१५ ।	२८	१४ ।	२९	१८ ।	३०	१६ ।
३१	१८ ।	३२	२४ ।	३३	१४ ।	३४	६ ।	३५	६ ।
३६	४ ।	३७	५ ।	३८	४ ।	३९	४ ।	४०	८ ।
४१	३ ।	४२	१० ।	४३	५ ।	४४	४ ।	४५	८ ।
४६	३ ।	४७	२ ।	४८	३ ।	४९	३ ।	५०	७ ।
५१	५ ।	५२	५ ।	५३	४ ।	५४	४ ।	५५	६ ।
५६	२ ।	५७	५ ।	५८	६ ।	५९	३ ।	६०	६ ।
६१	४ ।	६२	५ ।	६३	४ ।	६४	६ ।	६५	३ ।
६६	६ ।	६७	८ ।	६८	५ ।	६९	३ ।	७०	५ ।
७१	४ ।	७२	८ ।	७३	२ ।	७४	४ ।	७५	३ ।
७६	२ ।	७७	४ ।	७८	४ ।	७९	४ ।	८०	७ ।
८१	३ ।	८२	४ ।	८३	५ ।	८४	१७ ।	८५	४ ।
८६	३ ।	८७	७ ।	८८	६ ।	८९	४ ।	९०	५ ।
९१	४ ।	९२	४ ।	९३	३ ।	९४	२ ।	९५	५ ।
९६	५ ।	९७	४ ।	९८	७ ।	९९	७ ।	१००	८ ।

१०१	१५०	३	।	१०२	२००	३	।	१०३	२५०	२	।
१०४	३००	५	।	१०५	३५०	२	।	१०६	४००	५	।
१०७	४५०	७	।	१०८	५००	८	।	१०९	६००	६	।
११०	७००	९	।	१११	८००	५	।	११२	९००	७	।
११३	१०००	१०	।	११४	११००	२	।	११५	२०००	१	।
११६	३०००	१	।	११७	४०००	१	।	११८	५०००	१	।
११९	६०००	१	।	१२०	७०००	१	।	१२१	८०००	१	।
१२२	९०००	१	।	१२३	१००००	१	।				

१२४	एक भाग में मूल	१	।	१२५	दो भाग में	१	।
१२६	तीन भाग में	१	।	१२७	चार भाग में	१	।
१२८	पाँच भाग में	१	।	१२९	छह भाग में	१	।
१३०	सात भाग में	१	।	१३१	आठ भाग में	१	।
१३२	नव भाग में	१	।	१३३	दस भाग में	१	।
१३४	एक करोड़ में मूल	१	।	१३५	एक करोड़ हजार में	१	।

मूल १३६ में १४८ पर्यन्त एक डर मूल । १४८ में मूल में ५ डर मूल

१५०	५	।	१५१	१	।	१५२	१	।	१५३	४	।	१५४	४	।
१५५	२	।	१५६	१	।	१५७	२१	।	१५८	१७	।	१५९	३६	।
						१६०	१	।						

कुल योग—गमवाय १३५ । मूल १०४६  
 ग्यारह मो पैनीग ११३५

---

तहमेयं	भंते !	निग्गंथं	पावयणं
अवितहमेयं	भंते !	निग्गंथं	पावयणं
असंदिद्धमेयं	भंते !	निग्गंथं	पावयणं

---

- ५ असह्य वर्ष की आयुवाले कुछ नियत्र पचेन्द्रियों की स्थिति
- ६ असह्य वर्ष की आयुवाले कुछ सनी मनुष्यों की स्थिति
- ७ सौम्य कल्प के कुछ देवा की स्थिति
- ८ ईगान कल्प के देवा की स्थिति
- ९ सौम्य कल्प के कुछ देवों की उत्कृष्ट स्थिति
- १० ईगान कल्प के कुछ देवों की उत्कृष्ट स्थिति
- ११ मनकुमार कल्प के देवों की जषय स्थिति
- १२ महेंद्र कल्प के देवों की जषय स्थिति
- १३ शुभ आन् विमानवासी देवों की उत्कृष्ट स्थिति
- 
- १ शुभ आन् विमानवासी देवा का श्वासोच्छ्वास काल
- १ शुभ आन् विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल
- १ कुछ ऋषिन्द्रियों की दो भव से मुक्ति

### मूय मन्वा २३

#### तनीय समवाय

- १ दद
- २ मृधि
- ३ मय
- ४ मय
- ५ विरागना
- 
- १ मृगिग न तत्र के तारे
- २ पुय नमत्र के तारे
- ३ मृग न तत्र के तारे
- ४ अभिजित नमत्र के तारे
- ५ श्वण न तत्र के तारे

- ९ अश्विनी नक्षत्र के तारे
- ७ भरिणी नक्षत्र के तारे
- 
- १ रत्नप्रभा के कुट्ट नैऋतियों की स्थिति
- २ शकंभप्रभा के कुट्ट नैऋतियों की स्थिति
- ३ शालुका प्रभा के कुट्ट नैऋतियों की स्थिति
- ४ कुट्ट अमुरकुमारों की स्थिति
- ५ अमर्य वर्ष की आयुधानि मंडी निर्देश पंचमिदियों की स्थिति
- ६ अमर्य वर्ष की आयुधानि नक्षी मनुष्यों की उत्पत्ति स्थिति
- ७ मौधम-हंसान कल्प के कुट्ट देवों की स्थिति
- ८ मनःकुमार-माहेन्द्र कल्प के कुट्ट देवों की स्थिति
- ९ आभकर आदि विमानवासी देवों की स्थिति
- 
- १ आभकर आदि विमानवासी देवों का ध्यामोच्यताम फल
- १ आभकर आदि विमानवासी देवों का आहारदेष्टा फल
- १ कुट्ट भवमिदियों की मीन भग ने स्थिति

सूत्र संख्या २४

### चतुर्थ समवाय

- १ कषाय
- २ ध्यान
- ३ विकथा
- ४ मज्ञा
- ५ वध
- ६ योजन का परिमाण
- 
- १ अनुराधा नक्षत्र के तारे

## समवायांग विषय-सूची

### प्रथम समवाय

१ आत्मा	२ अनारमा
३ दण्ड	४ अदण्ड
५ क्रिया	६ अक्रिया
७ लोक	८ अनाक
धर्म	१० अप्रम
११ पुण्य	१२ पाप
१३ अथ	१४ मोक्ष
१५ आश्रय	१६ मवर
१७ अदना	१८ निर्जरा

१ जम्बूद्वीप की लम्बाई चौड़ाई (आयाम विनमम)

२ अग्रनिष्ठान नरकायाम की लम्बाई चौड़ाई

३ पालक विमान की लम्बाई चौड़ाई

४ सर्वाथमिद्ध विमान की लम्बाई चौड़ाई

●

१ आर्द्रा नक्षत्र का तारा

२ विशा नक्षत्र का तारा

●

३ स्वाति नक्षत्र का तारा

१ रत्नप्रभा क कुछ नैरयिकों की स्थिति

२ रत्नप्रभा क कुछ नैरयिकों की उत्कृष्ट स्थिति

३ गहराप्रभा क कुछ नैरयिकों की अथ-य स्थिति

४ कुन्द अगुरुकुमारों की स्थिति

५ कुन्द अगुरुकुमारों की उत्कृष्ट स्थिति

६ नाग कुमारों आदि की स्थिति

७ अलग्न नक्षत्रों की आयुवाद मन्त्री निर्देश पंचेन्द्रिय की स्थिति

- ८ अतंग्य वर्षों की क्षामुसने मनुष्यों की स्थिति
- ९ व्यतर देवों की उत्कृष्ट स्थिति
- १० ज्योतिषी देवों की उत्कृष्ट स्थिति
- ११ मोघमं कल्प के देवों की अधन्य स्थिति
- १२ मोघमं कल्प के देवों की स्थिति
- १३ ईशान कल्प के देवों की अधन्य स्थिति
- १४ ईशान कल्प के देवों की स्थिति
- १५ नागर आदि देवों की स्थिति



- १ नागर आदि देवों का दशानोत्कृष्टम कल्प
- १ नागर आदि देवों का श्राद्धरेव्या कल्प
- १ कुछ भवगिदिकों की एक भवसे स्थिति

सूत्रमेव्या ४३

### द्वितीय समवाय

- १ दट
- २ राशि
- ३ वधन



- १ पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के तारे
- २ उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के तारे
- ३ पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के तारे
- ४ उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के तारे



- १ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- २ शर्कराप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- ३ कुछ अमुरकुमारों की स्थिति
- ४ नागकुमार आदि की उत्कृष्ट स्थिति

- ५ असुर्य वष की आयुवाले कुछ निधन पक्षियों को स्थिति
- ६ असुर्य वष की आयुवाले कुछ सनी मनुष्यों की स्थिति
- ७ सौवम कल्प के कुछ देवा की स्थिति
- ८ ईशान कल्प के देवों की स्थिति
- ९ सौवम कल्प के कुछ देवों की उत्कृष्ट स्थिति
- १० ईशान कल्प के कुछ देवों की उत्कृष्ट स्थिति
- ११ मन्तुमार कल्प के देवों की जषय स्थिति
- १२ महेश कल्प के देवों की जषय स्थिति
- १३ शुभ आनि विमानवासी देवों की उत्कृष्ट स्थिति
- 
- १ शुभ आनि विमानवासी देवों का इवामीच्छाम काल
- १ शुभानि विमानवासी देवा का आहारेच्छा काल
- १ कुछ स्वमिदिकों की दो भव से मुक्ति

### सूत्र शब्दा २३

#### ततोप समवाय

- १ दड
- २ मुधि
- ३ गप
- ४ गव
- ५ विरापना
- 
- १ सृनिग न इव के तारे
- २ पुप नगव के तारे
- ३ उ डा न इव के तारे
- ४ अभिजित नगव के तारे
- ५ अषण न इव के तारे

६ ज्येष्ठी नक्षत्र के तारे

७ भरिणी नक्षत्र के तारे

●

१ रत्नप्रभा के कुष्ठ नैरविकों की स्थिति

२ शर्कराप्रभा के कुष्ठ नैरविकों की स्थिति

३ चानुपा प्रभा के कुष्ठ नैरविकों की स्थिति

४ कुष्ठ अमूरकुमारों की स्थिति

५ अमन्य वर्ष की आमुवाले नक्षी निर्जन पनेन्द्रियों की स्थिति

६ अमन्य वर्ष की आमुवाले नक्षी मनुष्यों की उग्रहृष्ट स्थिति

७ गौधर्म-रंगान कल्प के कुष्ठ देवों की स्थिति

८ मनशुभार-मद्रेन्द्र कल्प के कुष्ठ देवों की स्थिति

९ आभंकर आदि विमानवासी देवों की स्थिति

●

१ आभंकर आदि विमानवासी देवों का श्वातोच्छ्राम काल

२ आभंकर आदि विमानवासी देवों का आहारच्छ्रा काल

३ कुष्ठ भवनिद्रिकों की तीन भव में मुक्ति

मृत्नी शंख्या २४

### चतुर्थ समवाय

१ तपाय

२ ध्यान

३ विक्रया

४ सजा

५ वध

६ योजन का परिमाण

●

१ अनुराधा नक्षत्र के तारे



- २ पूर्वाषाढा नक्षत्र के तारे
- ३ उत्तराषाढा नक्षत्र के तारे
- 
- १ रत्नप्रभा के कुक्ष नैऋति की स्थिति
- २ बाधुवाप्रभा के कुक्ष नैऋति की स्थिति
- ३ कुक्ष अमुक्तुमार का स्थिति
- ४ गौतम ईशान कल्प के कुक्ष देवा की स्थिति
- ५ सनत्कुमार पाट्टक कल्प के देवा की स्थिति
- ६ कृत्ति आदि विमानवासी देवा की स्थिति
- 

- १ कृत्ति आदि विमानवासी देवा का स्वामीच्छवास काल
- १ कृत्ति आदि विमानवासी देवा का आहारेच्छा काल
- १ कुक्ष भव निद्रिका की चार भव से मुक्ति

सूत्र मन्त्रा इति

पञ्चम समवाय

- १ विद्या
- २ महाजन
- ३ कामगुण
- ४ आश्रव द्वार
- ५ मकर द्वार
- ६ निद्रा स्थान
- ७ सभिति
- ८ अग्निवाय
- 

- १ रोहिणी नक्षत्र के तारे
- २ पुनर्वसु नक्षत्र के तारे
- ३ हस्त नक्षत्र के तारे
- ४ चिन्ता नक्षत्र के तारे

५ धनिष्ठा नक्षत्र के तारे

●

१ चानूका प्रभा के कुछ नक्षत्रों की स्थिति

२ रत्नप्रभा के कुछ नक्षत्रों की स्थिति

३ कुछ अमृत कुमारों की स्थिति

४ मोक्षमं-दंडान वरुण के देवों की स्थिति

५ ननदुमार-मातेन्द्र वरुण के देवों की स्थिति

६ वान आदि विमानवासी देवों की स्थिति

●

१ वान आदि विमानवासी देवों का आशुभ-शुभ काय

१ वान आदि विमानवासी देवों का आशुभ-शुभ काय

१ कुछ भवगिद्धियों की पान भव में स्थिति

सूत्र संख्या २२

षष्ठ समवाय

१ लेश्या

२ जीव-निकाय

३ बाह्य तप

४ आन्तरिक तप

५ द्वापस्थिक समुद्रघात

६ अर्थावग्रह

●

१ कृत्तिका नक्षत्र के तारे

२ अश्लेषा नक्षत्र के तारे

●

१ रत्नप्रभा के कुछ नक्षत्रों की स्थिति

२ चानूकाप्रभा के कुछ नक्षत्रों की स्थिति

- ४ सौधम ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति
- ५ सनत्कुमार माहेन्द्र कल्प के कुछ देवों की स्थिति
- ६ स्वयम्भू आदि विमानवासी देवों की स्थिति
- 
- १ स्वयम्भू आदि विमानवासी देवों का इत्थानोच्छ्रय काल
- १ स्वयम्भू आदि विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल
- १ कुछ भवतिष्ठिका की छह भय से मुक्ति

### सूत्र सख्या १०

#### सप्तमः अध्यायः

- १ भयस्थान
- २ समुद्रघात
- ३ म० महावीर की ऊर्चाई
- ४ जम्बूद्वीप के वयधर पर्वत
- ५ जम्बूद्वीप के वय-क्षेत्र
- ६ क्षीणमोह गुणस्थान से वेदने योग्य कम प्रकृतियाँ
- 
- १ मघा नक्षत्र के द्वारे
- २ पूवदिशा के द्वार वाले नक्षत्र
- ३ दक्षिणदिशा के द्वार वाले नक्षत्र
- ४ पश्चिमदिशा के द्वार वाले नक्षत्र
- उत्तरदिशा के द्वार वाले नक्षत्र
- 
- १ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- २ बानुकाप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- ३ एक प्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- ४ कुछ असुर कुमारों की स्थिति
- ५ सौधम ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति

- ६ मन्तकुमार कल्प के देवों की उत्कृष्ट स्थिति
- ७ माहेन्द्र कल्प के कुछ देवों की उत्कृष्ट स्थिति
- ८ ब्रह्मलोक कल्प के कुछ देवों की स्थिति
- ९ नम आदि विमानवासी देवों की स्थिति

●

- १ नम आदि विमानवासी देवों का इन्द्रागोचरध्याय काल
- २ नम आदि विमानवासी देवों का आहारिन्द्रा काल
- ३ कुछ भवनिद्रिकों की नान भव में मुक्ति

### सूत्रसंख्या २३

#### अष्टमः सर्गः

- १ मन्तस्थान
- २ प्रवचन माता
- ३ व्यंजर देवों के चैत्यवृक्षों की ऊंचाई
- ४ जम्बूद्वीप के मुद्रार्जन वृक्ष की ऊंचाई
- ५ कूट शाल्मली-गरुडध्याय की ऊंचाई
- ६ जम्बूद्वीप-जगती की ऊंचाई
- ७ केवली मधुसूता के समय
- ८ भ० पादवेनाथ के गण
- ९ भ० पादवेनाथ के गणधर
- १० चन्द्र के साथ योग

●

- १ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- २ पंकप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- ३ कुछ असुर कुमारों की स्थिति
- ४ सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति
- ५ ब्रह्मलोक कल्प के कुछ देवों की स्थिति

- ६ अग्नि आदि विमानवामी देवों की स्थिति
- 
- १ अग्नि आदि विमानवामी देवों का स्वर्गाच्छदान काव
- १ अग्नि आदि विमानवामी देवों का आह्वानेच्छा काव
- १ कुड्य भव मिथिलों की आठ भव न मुक्ति

### सूच्य मन्त्रा १३

#### नवमः सर्गः

- १ ब्रह्मचर्य गृह्णति
- २ ब्रह्मचर्यं श्रुत्वा
- ३ आचारान्न-ब्रह्मचर्यं धुनस्वयं क अध्ययन
- ४ म० पादवनाथ की ऊर्चाई
- ५ चन्द्र के साथ अभिचिन नक्षत्र का योगकाव
- ६ उत्तरदिशा से चन्द्र के साथ योग करने वाले
- ७ रत्नप्रभा के ऊपरी समभूभाग में तारात्रा की ऊर्चाई
- 
- १ लवण समुद्र में जम्बूद्वीप में प्रवेश करने वाले मत्स्यों की अवगाहना
- 
- १ विजय द्वार के एक एक पार्श्व में होने वाले भूमिधर
- 
- १ व्यन्तर देवों की सुवर्मा मभा की ऊर्चाई
- 
- १ दशनावरणीय की उत्तर प्रवृत्तियाँ
- 
- १ रत्नप्रभा के कुड्य नैरयिकों की स्थिति
- २ पद्मप्रभा के कुड्य नैरयिका की स्थिति
- ३ कुड्य अमुर कुमारों की स्थिति
- ४ सौधम ईशान कल्प के देवों की स्थिति

- ५ प्रतल्लोक कल्प के देवीं की स्थिति
- ६ पद्य आदि विमानवासी देवीं की स्थिति
- 
- १ पद्य आदि विमानवासी देवीं का स्थानोत्सृष्टान स्थान
- १ पद्य आदि विमानवासी देवीं का जाहादेवता स्थान
- १ कुछ भव गिद्धियों की नव भव में स्थिति

### मृत्यु संख्या २०

#### दशम समवाय

- १ धर्मल-धर्म
- २ चिन्मगमाधि स्थान
- ३ मेरुपर्वत के भूत का विष्णुस्थ
- ४ भ० अरिष्टनेसी की ऊचाई
- ५ कृष्ण धामुदेव की ऊचाई
- ६ नाम वनदेव की ऊचाई
- 
- १ ज्ञानवृद्धि करने वाले नक्षत्र . . . . .
- 
- १ अकर्मभूमि मनुष्यों के कल्प-वृक्ष
- 
- १ रत्नप्रभा के नैरयिकों की जघन्य स्थिति
- २ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- ३ पंकप्रभा के नरकावाम
- ४ पंकप्रभा के कुछ नैरयिकों की उत्कृष्ट स्थिति
- ५ धूमप्रभा के नैरयिकों की जघन्य स्थिति
- ६ कुछ अमुर कुमारों की जघन्य स्थिति
- ७ नाम कुमार आदि कुछ भवनवासी देवीं की जघन्य स्थिति
- ८ कुछ अमुर कुमारों की स्थिति

- ६ अचि आदि विमानवासी देवों की स्थिति
- 
- १ अचि आदि विमानवासी देवा का इक्ष्वाकुवधुवाम काव
- १ अचि आदि विमानवासी देवों का आहारेच्छा काव
- १ बुद्ध भव निद्रिकों की आठ भव से मुक्ति

सूत्र संख्या १६

### नवम समवाय

- १ ब्रह्मचर्य मुक्ति
- २ ब्रह्मचर्य अर्पण
- ३ आचारान्त ब्रह्मचर्य धुतरवध के अध्ययन
- ४ भ० पाशवनाथ की ऊचाई
- ५ चन्द्र के साथ अभिजित नक्षत्र का योगदान
- ६ उत्तरदिशा में चन्द्र के साथ योग करने वाले
- ७ रत्नप्रभा के ऊपरी समभूभाग से ताराशा की ऊचाई
- 
- १ सवण समुद्र में अम्बुद्वीप में प्रदेश वरन वाले मत्स्यों की अवगाहना
- 
- १ विजय द्वार के एक एक पाशव में होने वाले भूमिधर
- 
- १ व्यतर देवा की सुषर्मा मभा की ऊचाई
- 
- १ दशनावरणीय की उत्तर प्रवृत्ति
- 
- १ रत्नप्रभा के बुद्ध नैरविकों की स्थिति
- २ पुरुप्रभा के बुद्ध नैरविकों की स्थिति
- ३ बुद्ध अमुर कुमारों की स्थिति
- ४ गौधर्म-ईशान कल्प के देवा की स्थिति

- १ ब्रह्म आदि विमानवासी देवों का श्वासोच्छ्वास काल
- १ ब्रह्म आदि विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल
- १ कुछ भवसिद्धिकों की इग्यारह भव से मुक्ति

सूत्र संख्या १६

### वारहवां समवाय

- १ भिक्षु प्रतिमा
- २ श्रमणों के व्यवहार-संभोग
- ३ वदना के आवर्त
- ४ विजया राजधानी का विष्कम्भ
- ५ राम बलदेव का पूर्णायु
- ६ मेरु पर्वत की चूलिका का विष्कम्भ
- ७ जम्बूद्वीप-जगती के मूल का विष्कम्भ
- ८ जघन्य रात्रि के मुहूर्त
- ९ जघन्य दिन के मुहूर्त
- १० सर्वार्थसिद्ध विमान से ईपत्प्राग्भारा :
- ११ ईपत्प्राग्भारा पृथ्वी के नाम
- 
- १ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- २ धूम्रप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- ३ कुछ असुर कुमारों की स्थिति
- ४ सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति
- ५ लांतक कल्प के कुछ देवों की स्थिति
- ६ महेन्द्र आदि विमानवासी देवों की स्थिति
- 
- १ महेन्द्र आदि विमानवासी देवों का श्वासोच्छ्वास का
- १ महेन्द्र आदि विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल



१ कुछ भवमिडिका की बारत भव से मुक्ति

सूच सख्या २०

तरहवा समवाय

- १ क्रियास्थान
- २ मोषम ईगान कल्प क विमान प्रमन
- ३ मोषमोवनमक विमान का आगम विरहम्भ
- ४ ईगान वनमक विमान का आगम विरहम्भ
- ५ जनधर निदव पर्वी दशा की कुनवाग
- ६ प्राणापु पूव क वस्तु
- ७ मनी निदव पर्वीया क दाण
- ८ मूषमभन का परिमाण

- 
- १ रत्नप्रभा क कुछ नगविका का स्थिति
- २ धूमप्रभा क कुछ नगविका की स्थिति
- ३ कुछ अनुक कृमाग का स्थिति
- ४ मोषम ईगान कल्प क रत्ना की स्थिति
- ५ नानक वाप क कुछ रत्ना की स्थिति
- ६ वय आनि विमानवामी देवा का स्थिति

- 
- १ वय आनि विमानवामी देवा का इवाभोडवाम वान
- १ वय आनि विमानवामी देवा का आनरेच्छा काल
- १ कुछ भवमिडिका की तेरत भव से मुक्ति

सूच सख्या २०

चौदहवा समवाय

- १ मूनप्राम
- २ पूव
- ३ अग्रमणी पूव क वस्तु

- ४ भ० महावीर की उत्कृष्ट भ्रमण संपदा
- ५ गुणस्थान
- ६ भरत और ऐरवत क्षेत्र की जीवा का आयाम
- ७ चक्रवर्ती के रत्न
- ८ जम्बूद्वीप के लवणसमुद्र में मिलने वाली नदियाँ
- ९
- १ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- २ धूमप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- ३ कुछ असुर कुमारों की स्थिति
- ४ सौधर्म-ईशानकल्प के कुछ देवों की स्थिति
- ५ लांतक कल्प के देवों की उत्कृष्ट स्थिति
- ६ महाशुक्र कल्प के देवों की जघन्य स्थिति
- ७ श्रीकांत आदि विमानवासी देवों की स्थिति
- ८
- १ श्रीकांत आदि विमानवासी देवों का श्वासोच्छ्वास काल
- १ श्रीकांत आदि विमानवासी देवों का आहारच्छा काल
- १ कुछ भवसिद्धिकों की चौदह भवों से मुक्ति

### सूत्र संख्या १७

#### पन्द्रहवां समवाय

- १ परमाधार्मिक देव
- २ भ० नमिनाथ की ऊँचाई
- ३ कृष्णपक्ष में ध्रुवराहु द्वारा प्रतिदिन चन्द्रकला का आवरण
- ४ शुक्लपक्ष में ध्रुवराहु द्वारा प्रतिदिन चन्द्रकला का अनावरण
- ५ शतभिषादि छह नक्षत्रों का चन्द्र के साथ योग काल
- ६ चैत्र तथा आश्विन में दिन के मुहूर्त
- ७ चैत्र तथा आश्विन में रात्रि के मुहूर्त

- ८ विद्यानुग्रहाद के वस्तु
- ९ सती मनुष्य म योग
- 
- १ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिका की स्थिति
- २ धूमप्रभा क कुछ नैरयिका की स्थिति
- ३ कुछ अनुर कुमारी का स्थिति
- ४ सौधर्म ईशान कल्प क कुछ देवी की स्थिति
- ५ मदागुह कल्प के कुछ देवा की स्थिति
- ६ नद आदि विमानवासी देवा की स्थिति
- 
- १ नद आदि विमानवासी देवा का दवाभोच्छ्रय का नाम
- १ नद आदि विमानवासी देवा का आहारेन्द्र का नाम
- १ कुछ भवनिद्रिका की पादह भव से मुक्ति

### सूय मर्या १८

#### सोलहवा समवाय

- १ सूयनाम सोलहव अध्यायन की गाथाएँ
- २ कथाएँ क भद्र
- ३ मरु पवन क नाम
- ४ भ० पाशवनाथ की उत्कृष्ट धमण मर्या
- ५ आत्मप्रवाद पुत्र क वस्तु
- ६ चमरद और बलद क अवनारिकानयन का आयाम विष्कम्भ
- ७ सवण समुद्र के मध्य में जल की रुद्धि
- 
- १ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- २ धूमप्रभा के कुछ नैरयिका की स्थिति
- ३ कुछ अनुर कुमारी की स्थिति

- ४ सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति
- ५ महाशुक्र कल्प के कुछ देवों की स्थिति
- ६ आवर्त आदि विमानवासी देवों की उत्कृष्ट स्थिति
- 
- १ आवर्त आदि विमानवासी देवों का श्वासोच्छ्वास काल
- १ आवर्त आदि विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल
- १ कुछ भवसिद्धियों की सोलह भव से मुक्ति

### सूत्र संख्या १६

#### सत्रहवां समवाय

- १ असंयम
- २ संयम
- ३ मानुषोत्तर पर्वत की ऊँचाई
- ४ सर्व वेलंघर अनुवेलंघर नागराजों के आवास पर्वतों की ऊँचाई
- ५ लवण समुद्र के मध्यभाग में पानी की गहराई
- ६ चारण मुनियों की तिरछी गति
- ७ चमरेन्द्र के तिगिच्छ कूट उत्पात पर्वत की ऊँचाई
- ८ वलेन्द्र के रचकेन्द्र उत्पात पर्वत की ऊँचाई
- ९ मरण के प्रकार
- १० सूक्ष्म सम्पराय गुणस्थान में कर्म प्रकृतियों का बंध
- 
- १ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- २ धूमप्रभा के कुछ नैरयिकों स्थिति
- ३ तपः प्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- ४ कुछ असुर कुमारों की स्थिति
- ५ सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति
- ६ महाशुक्र कल्प के कुछ देवों की उत्कृष्ट स्थिति

- ७ सहस्रार कल्प के कुछ देवा की जघन स्थिति
- ८ सामान आदि विमानवासी देवा की स्थिति
- 
- १ सामान आदि विमानवासी देवों का स्वामोच्छवास काल
- १ सामान आदि विमानवासी देवा का आहारेच्छा काल
- १ कुछ भवनिद्रिकों की मत्रह भव से मुक्ति

### सूत्र सारथी २१

#### अष्टारहवीं समवाय

- १ ब्रह्मचर्य
- २ भ० अरिष्टनमी की उत्कृष्ट श्रमण सम्प्रदा
- ३ मत्र माधुजा के आचार स्थान
- ४ चूनिक् महिल आचाराङ्ग के पद
- ५ ब्राह्मी लिपि के प्रकार
- ६ अग्नि नाम्नि प्रवाद क वस्तु
- ७ धूमप्रभा का व्याहृत्य मोटाई
- ८ पोषमान म रात्रि क मूल
- ९ अपाडनाम के दिन म मूल
- 
- १ रत्नप्रभा के कुछ नरयिकों की स्थिति
- २ धूमप्रभा क कुछ नरयिकों की स्थिति
- ३ कुछ अमुर कुमारों की स्थिति
- ४ मीषम ईशान कल्प क कुछ देवों की स्थिति
- ५ सहस्रार कल्प क देवा की उत्कृष्ट स्थिति
- ६ आनन कल्प क देवों की जघन स्थिति
- ७ कान आदि विमानवासी देवों की स्थिति
-

- १ काल आदि विमानवासी देवों का श्वासोच्छ्वास काल
- १ काल आदि विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल
- १ कुछ भवसिद्धिकों की अट्टारह भव से मुक्ति

### सूत्र संख्या २१

#### उन्नीसवां समवाय

- १ ज्ञाताधर्मकथा—प्रथम श्रुतस्कंध के अध्ययन
- २ जम्बूद्वीप में सूर्य का ताप क्षेत्र
- ३ शुक महाग्रह के साथ भ्रमण करनेवाले नक्षत्र
- ४ एक कला का परिमाण
- ५ राज्यपद पाने के पश्चात् प्रव्रज्या लेनेवाले तीर्थकर

●

- १ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- २ तमः प्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- ३ कुछ असुर कुमारों की स्थिति
- ४ सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति
- ५ आनत कल्प के कुछ देवों की उत्कृष्ट स्थिति
- ६ प्राणत कल्प के कुछ देवों की जघन्य स्थिति
- ७ आनत आदि विमानवासी देवों की स्थिति

●

- १ आनत आदि विमानवासी देवों का श्वासोच्छ्वास काल
- १ आनत आदि विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल
- १ कुछ भवसिद्धिकों की उन्नीस भव से मुक्ति

### सूत्र संख्या १२

#### वीसवां समवाय

- १ असमाधि स्थान

- २ भ० मुनिमुन्न की ऊर्चाई
- ३ सब धनोदधि का बाह्य
- ४ प्राणत दबन्ध के सामानिक देव
- ५ नपूमक देवनीय की वधरिधि
- ६ पर्याख्यान पूर्व के वस्तु
- ७ उत्सपिणी और अवसपिणी—वालचक—का परिमाण

- 
- १ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- २ तम प्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- ३ कुछ अमुरकुमारों की स्थिति
- ४ सौम्य ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति
- ५ प्राणत कल्प के कुछ देवों की उ कृष्ट स्थिति
- ६ आरपन कल्प के कुछ देवों की जघन्य स्थिति
- ७ सान आदि विमानवासी देवों की स्थिति

- 
- १ सान आदि विमानवासी देवों का श्वासाच्छवास काल
- १ माह आदि विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल
- १ कुछ भवनिद्रिकों की बीस भव में मुक्ति

मूत्र मन्त्रा १०

### इक्कीसवा समवाय

- १ सबल दोष
- २ अष्टम गुणस्थान में कमप्रकृतियों की मत्ता
- ३ अवसपिणी के पाचवें छट्टे आरे के वर्षों का परिमाण
- ४ उत्सपिणी के पहने और दूसरे आरे के वर्षों का परिमाण
- 
- १ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- २ तम प्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति

- ३ कुछ असुर कुमारों की स्थिति
- ४ सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति
- ५ आरण कल्प के कुछ देवों की स्थिति
- ६ अच्युत कल्प के कुछ देवों की स्थिति
- ७ श्रीवत्स आदि विमानवासी देवों की स्थिति
- 
- १ श्री वत्स आदि विमानवासी देवों का स्वासोच्छ्वास काल
- १ श्री वत्स आदि विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल
- १ कुछ भव सिद्धिकों की इक्कीस भव से मुक्ति

### सूत्र संख्या १४

#### चावीसवां समवाय

- १ परिपह
- २ दृष्टिवाद में स्वसिद्धान्त के सूत्र ✓
- ३ दृष्टिवाद में आजीविक सिद्धान्त के सूत्र ✓
- ४ दृष्टिवाद में त्रैराशिक मत के सूत्र
- ५ दृष्टिवाद में नय चतुष्क के सूत्र
- ६ पुद्गल परिणाम के प्रकार
- 
- १ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- २ तमःप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- ३ तमस्तमप्रभा के कुछ नैरयिकों की जघन्य स्थिति
- ४ कुछ असुर कुमारों की स्थिति
- ५ सौधर्म-ईशानकल्प के कुछ देवों की स्थिति
- ६ अच्युत कल्प के देवों की उत्कृष्ट स्थिति
- ७ नीचे के तीन प्रवेयक विमानों की स्थिति
- ८ महित आदि विमानवासी देवों की स्थिति
- 
- १ महित आदि विमानवासी देवों का स्वासोच्छ्वास काल



- १ मन्त्रि धानि विमानवामा दवा का आहारेच्छा का
- १ कुल भवदिका की शरीर भव स मुक्ति

### सूत्र सख्या १०

#### तेईसवा समवाय

- १ सूत्र कृताग-१ धृतम्कथा क अध्ययन
- २ सूत्रो २ क मध्य कवनज्ञान हानि वान तीयकर
- ३ पूर्वभव म एकात्म अज्ञा का अध्ययन करनवान इम अवसपिणी क तीयकर
- ४ पूर्वभव म साहजिक राज्य करनेवाले इम अवसपिणी क तीयकर

- 
- १ राजप्रता क कुल नरविवा का स्थिति
- २ नमस्काय क कुल नरविवा की स्थिति
- ३ कुल अमर कुमारो की स्थिति
- ४ तीयम ज्ञान कल्प के कुल देवा की स्थिति
- ५ तीन मध्यम अवयव देवा की स्थिति
- ६ तीन अयम अवयव देवा की वृष्टि स्थिति

- 
- १ अवयव देवा का शवायाच्छास का
- १ अवयव देवा का आहारेच्छा का
- १ कुल भवदिका का तेईम भवम मुक्ति

### सूत्र सख्या ११

#### चौथीसवा समवाय

- १ देवादिदेव
- २ अष्ट हिमालय अपथर पवन की जीवाका आयाम
- ३ गिन्धरी अपथर पवन की जीवाका आयाम

- ४ इन्द्रवाले देवस्थान
- ५ सूर्य के उत्तरायण होने पर पौरुषी छाया का परिमाण
- ६ गंगा नदी के प्रवाह का विस्तार
- ७ सिन्धु नदी के प्रवाह का विस्तार
- ८ रक्ता नदी के प्रवाह का विस्तार
- ९ रक्तवती नदी के प्रवाह का विस्तार

●

- १ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- २ तमस्तमा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- ३ कुछ असुर कुमारों की स्थिति
- ४ सोधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति
- ५ नीचे के तीसरे ग्रैवेयकों की स्थिति
- ६ नीचे के दूसरे ग्रैवेयकों की स्थिति

○

- १ उक्त ग्रैवेयकों का श्वासोच्छ्वास काल
- १ उक्त ग्रैवेयकों का आहारेच्छा काल
- १ कुछ भवसिद्धिकों की चौबीस भवसे मुक्ति

---

सूत्र संख्या १८

### पच्चीसवां समवाय

- १ पाँच महाव्रत की भावना
- २ भ० मल्लीनाथ की ऊंचाई
- ३ सर्व महान् वैताढ्य पर्वतों की ऊंचाई और उद्बेध
- ४ शर्करा प्रभा के नरकावास
- ५ चूलिका सहित आचारांग के अध्ययन
- ६ अपर्याप्त मिथ्यादृष्टि विकलेन्द्रिय में बंधने वाली नाम कर्म की प्रकृतियाँ

- ७ गया नदी के प्रपात का परिमाण
- मिन्घु नदी के प्रपात का परिमाण
- ८ रक्षा नदी के प्रपात का परिमाण
- रक्तवती नदी के प्रपात का परिमाण
- ९ लोकबिन्दुमार पूर्व के वस्तु

- 
- १ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिको की स्थिति
- २ तमस्तमा के कुछ नैरयिको की स्थिति
- ३ कुछ अमुर कुमारो की स्थिति
- ४ सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति
- ५ मध्यम प्रथम श्रैवेयको की स्थिति

- 
- १ मध्यम प्रथम श्रैवेयको का श्वासोच्छ्वास काल
- १ मध्यम प्रथम श्रैवेयको का आहारेच्छा काल
- १ कुछ भवमिष्टिको की पञ्चीन भव से मुक्ति

सूत्र सख्या १७

### छत्वोसर्वा समवाय

- १ दशाधुनस्कथ रहस्यकल्प और व्यवहार के उद्देशक
- २ अभाव सिद्धिक जीवो के सत्ता मे मोहनीय की कर्म प्रकृतिया
- 
- १ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिको की स्थिति
- २ तमस्तमा के कुछ नैरयिको की स्थिति
- ३ कुछ अमुर कुमारो की स्थिति
- ४ सौधम ईशान कल्प के कुछ देवो की स्थिति
- ५ मध्यम दूसरे श्रैवेयको की स्थिति
- ६ मध्यम प्रथम श्रैवेयको की स्थिति
- 
- १ उक्त श्रैवेयको का श्वासोच्छ्वास काल

- १ उक्त ग्रंथेयकों का आहारेच्छा काल
- १ कुछ भवसिद्धिकों की छव्वीस भव से मुक्ति

सूत्र संख्या ११

### सत्तावीसवां समवाय

- १ अनगार गुण
- २ जम्बूद्वीप में नक्षत्रों का व्यवहार
- ३ नक्षत्रमास के दिन-रात
- ४ सौधर्म-ईशान कल्प के विमानों का वाहल्य
- ५ वेदक सम्यक्त्व के बंध से विरत जीव के सत्ता में मोहनीय की उत्तर प्रकृतियाँ
- ६ श्रावण शुक्ला सप्तमी को पौरुषी का प्रमाण
- 
- १ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- २ तमस्तमा के कुछ नैरयिकों का स्थिति
- ३ कुछ असुर कुमारों की स्थिति
- ४ सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति
- ५ मध्यम तीसरे ग्रंथेयक देवों की स्थिति
- ६ मध्यम दूसरे ग्रंथेयक देवों की उत्कृष्ट स्थिति
- 
- १ उक्त ग्रंथेयक देवों का श्वासोच्छ्वास काल
- १ उक्त ग्रंथेयक देवों का आहारेच्छा काल
- १ कुछ भवसिद्धिकों की सत्तावीस भव से मुक्ति

सूत्र संख्या १२

### अट्ठावीसवां समवाय

- १ आचार प्रकल्प
- २ भवसिद्धिक जीवों के सत्ता में मोहनीय की प्रकृतियाँ

- ३ ईशान कल्प के विमान
- ४ देवगति बाधने वाले जीव के नामकम की उत्तरप्रकृतियों का बंध
- 
- १ रत्नप्रभा क कुछ नैरयिको की स्थिति
- २ तमस्तमा के कुछ नैरयिका की स्थिति
- ३ कुछ अनुरकुमारा की स्थिति
- ४ सौधम ईशान कल्प क कुछ देवों की स्थिति
- ५ ऊपर के प्रथम प्रवेयको की स्थिति
- ६ मध्यम दूमरे प्रवेयको की स्थिति
- 
- १ उक्त प्रवेयको का श्वासोच्छ्वास काल
- १ उक्त प्रवेयका का आहारेच्छा काल
- १ कुछ भवमिदिको की अद्वावीस भवो से मुक्ति

सूत्र मरुपा १३

### उनतीसवा समवाय

- १ पापधुन
- २ आपाठ मास के दिन रात
- ३ भाद्रपद मास के दिन रात
- ४ कार्तिक मास के दिन रात
- ५ पौष मास के दिन रात
- ६ फाल्गुन मास के दिन रात
- ७ वैशाख मास क दिन रात
- ८ चन्द्र दिन के मूर्त
- ९ सम्बन्धि जीव के विमान वामो देवो से उत्पन्न होने स पूव सीर्यंर नामकम महित नामकम की प्रकृतियों का नियमा बंधन
- 
- १ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिका की स्थिति

- २ तमस्तमा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- ३ कुछ अमुर कुमारों की स्थिति
- ४ सौधर्म-ईशान कल्प के देवों की स्थिति
- ५ मध्यम ऊपर के ग्रैवेयक देवों की स्थिति
- ६ ऊपर के प्रथम ग्रैवेयक देवों की उत्कृष्ट स्थिति

७

- १ उक्त ग्रैवेयक देवों का स्वासीच्छावास काल
- १ उक्त ग्रैवेयक देवों का आहारेच्छा काल
- १ कुछ भवसिद्धिकों की उनत्तीस भवों से मुक्ति

सूत्र संख्या १६

### तीसवां समवाय

- १ मोहनीय स्थान
- २ स्वन्निर मंडित पुत्र का श्रमण पर्याय
- ३ एक अहोरात्र के गृहूर्त
- ४ तीस गृहूर्तों के नाम
- ५ भ० अरहनाथ की ऊंचाई
- ६ महन्नार देवेन्द्र के सामानिक देव
- ७ भ० पार्श्वनाथ का गृह्वास
- ८ भ० महावीर का गृह्वास
- ९ रत्नप्रभा के नरकावास

७

- १ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- २ तमस्तमा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
- ३ कुछ अमुर देवों की स्थिति
- ४ ऊपर के तृतीय ग्रैवेयक देवों की स्थिति
- ५ ऊपर के द्वितीय ग्रैवेयक देवों की स्थिति
- ६ रत्नप्रभा के नरकावास

७



४ सौधर्मकल्प के विमान

५ रेवती नक्षत्र के तारे

६ नाट्य के विविध भेद

●  
१ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति

२ तमस्तमा के कुछ नैरयिकों की स्थिति

३ कुछ असुर कुमारों की स्थिति

४ सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति

५ चार अनुत्तर विमानवासी देवों की स्थिति

●  
१ चार अनुत्तर विमानवासी देवों का श्वासोच्छ्वास काल

१ चार अनुत्तर विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल

१ कुछ भवसिद्धिकों की वत्तीस भव से मुक्ति

सूत्र संख्या १४

### तेतीसवां समवाय

१ आशातना

२ चमरचंचा राजधानी के बाहर दोनों ओर के भूमिघर

३ महाविदेह का विष्कम्भ

४ बाह्य तृतीय मंडल से सूर्यदर्शन की दूरी का अन्तर

●  
१ रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति

२ तमस्तमा के कुछ नैरयिकों की स्थिति

३ अप्रतिष्ठान नरकावास के नैरयिकों की स्थिति

४ कुछ असुर कुमारों की स्थिति

५ सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति

६ चार अनुत्तर विमानवासी देवों की उत्कृष्ट स्थिति

७ सर्वार्यसिद्ध विमान के देवों की स्थिति

●  
१. सर्वार्यसिद्ध विमान के देवों का श्वासोच्छ्वास काल





### सैंतीसवां समवाय

- १ भ० कुंथुनाथ के गणधर  
भ० अरहनाथ के गणधर
- २ हेमवंत क्षेत्र की जीवा का आयाम  
हिरण्यवत क्षेत्र की जीवा का आयाम
- ३ चार अनुत्तर विमानों के प्राकारों की ऊँचाई
- ४ धुद्रिका विमानप्रविभक्ति के प्रथम वर्ग के उद्देशक
- ५ कार्तिक कृष्णा सप्तमी के दिन पौरुषी-प्रमाण

### अड़तीसवां समवाय

- १ भ० पार्श्वनाथ की उत्कृष्ट श्रमणी सम्पदा
- २ हेमवत क्षेत्र की जीवा का धनुषृष्ठ  
हिरण्यवत क्षेत्र की जीवा का धनुषृष्ठ
- ३ मेरु पर्वत के द्वितीय कांड की ऊँचाई
- ४ धुद्रिका विमान प्रविभक्ति के द्वितीय वर्ग के उद्देशक

### उनचालीसवां समवाय

- १ भ० नमिनाथ के अवधिज्ञानी मुनि
- २ समय क्षेत्र के कुल पर्वत
- ३ द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, षष्ठ और सप्तम नरक के नरकावास
- ४ ज्ञानावरणीय, मोहनीय, गोत्र और आयुर्कर्म की उत्तर प्रकृतियां

### चालीसवां समवाय

- १ भ० अरिपृनेमी की श्रमणी सम्पदा
- २ मेरु चूलिका की ऊँचाई
- ३ भ० शांतिनाथ की ऊँचाई
- ४ भूतानन्द नागकुमारेन्द्र के भवन
- ५ धुद्रिका विमानप्रविभक्ति के तृतीय वर्ग के उद्देशक

- ६ षष्ठीय पुणिमा का पौर्णमी प्रमाण
- ७ कार्तिक पुणिमा को पौर्णमी प्रमाण
- ८ मन्मथ कल्प क विमान

### द्वितीयांशका समवाय

- १ म० नमिताय की छमणी सम्पत्ति
- २ प्रथम पंचम षष्ठ और मन्मथ नरक क नरकावास
- ३ मन्मथिता विमान प्रविमक्ति क प्रथम वग क उद्देश

### तृतीयांशका समवाय

- १ म० मन्मथीय का अमण पर्याय
- २ अम्बुदाय क पुत्रान्त मे गोम्बुय आवास पवन क पश्चिमान का अन्तर
- ३ क अम्बुदाय क अतिमान मे स्वभास पवन क उत्तरान्त का अन्तर
- ४ अम्बुदाय क पश्चिमान मे पञ्च पवन क पुत्रान्त का अन्तर
- ५ अम्बुदाय क उत्तरान्त मे स्वमीय पवन क दक्षिणान्त का अन्तर
- ६ वातान्त मसुड क अन्त-सूय
- ७ मसुष्टिम मन्मथपरिणय का उद्देश्य स्थिति
- ८ नामराम की उत्तर प्रकृतियाँ
- ९ लवण मसुड क अन्तप्रवास को रोकनवान नामधुमार स्व
- १० महाविद्या विमान प्रविमक्ति मे द्वितीय वग क उद्देश
- ११ अवसरिणा क पंचम और छठे अन्तरे का संयुक्त परिमाण
- १२ अन्तविद्या क प्रथम तथा द्वितीय अन्तरे का परिमाण

### चतुर्थांशका समवाय

- १ कर्म विनायक क अध्ययन
- २ प्रथम चतुर्थ और पंचम नरक क नरकावास
- ३ अम्बुदाय क पुत्रान्त मे गोम्बुय आवासपवन क पुत्रान्त का अन्तर

- ४ क- जम्बूद्वीप के दक्षिणान्त से दकभास पर्वत के दक्षिणान्त का अंतर  
 ख- जम्बूद्वीप के पश्चिमान्त से शंखपर्वत के पश्चिमान्त का अंतर  
 ग- जम्बूद्वीप के उत्तरान्त से दकसीम पर्वत के उत्तरान्त का अंतर  
 ५ महालिया विमान-प्रविभक्ति में तृतीय वर्ग में उद्देशक

### चौवालीसवां समवाय

- १ ऋषिभाषित के अध्ययन  
 २ भ० विमलनाथ के सिद्ध होनेवाले शिष्य-प्रशिष्यों की परम्परा  
 ३ घरण नागेन्द्र के भवन  
 ४ महालिका विमान प्रविभक्ति में चतुर्थ वर्ग के उद्देशक

### पैंतालीसवां समवाय

- १ समय क्षेत्र का आयाम-विष्कम्भ  
 २ सीमंतक नरकावास का आयाम-विष्कम्भ  
 ३ उडुविमान का आयाम-विष्कम्भ  
 ४ ईपत् प्राग्भारा पृथ्वी का आयाम-विष्कम्भ  
 ५ भ० अरहनाथ की ऊंचाई  
 ६ मेरु पर्वत का चारों दिशाओं से अन्तर  
 ७ घातकी खंड और पुष्करार्द्ध के नक्षत्रों का चन्द्रमा के साथ योगकाल  
 ८ महालिका विमान-प्रविभक्ति में पाँचवें वर्ग के उद्देशक

### छियालीसवां समवाय

- १ दृष्टिवाद के मातृकापद  
 २ ब्राह्मी लिपि के मातृकाक्षर  
 ३ प्रभंजन वायुकुमार के भवन

### सैंतालीसवां समवाय

- १ आम्यन्तर मण्डल से सूर्य दर्शन का अन्तर

- २ स्यविर अग्निभूति का गृह्वाम  
अडतालीमवा समवाय
- १ चक्रवर्ती के प्रमुख नगर  
२ म० धमनाथ के गणधर  
३ मूयमडल का विष्कम्भ  
उनपचासवा समवाय
- १ मयनपामिका भिक्षु प्रतिमा क स्ति  
२ दवकुह उत्तरकुह मे बाह्यकान क स्ति  
३ श्रीलिया की स्थिति  
पचासवा समवाय
- १ म० मुनिमुवन की धमणा सम्पत्ता  
२ म० अनननाथ की ऊचाइ  
३ पुण्यालम वागुन्नेव की ऊचाई  
४ मव गीध वनाण्या के मून का विष्कम्भ  
५ तानव कल्प के विमान  
६ क विमिन्व गुफा का श्रायाम  
स सवहप्रपान गुफा का श्रायाम  
७ सव काचनग धवना क गिषरो का विष्कम्भ  
इवावनवा समवाय
- १ आचारंग प्रथम अन्कय के अक्षयतो के उद्गाह  
२ चमण्ड की मुधर्मा मभा क म्मम  
३ वनण का मुधर्मा मभा क म्मम  
४ मुप्रभ वनण क आयु  
५ दगदावरणाय मम का उत्तर प्रहृनियाँ

### दावनवां समवाय

- १ मोहनीय कर्म के नाम
- २ गोस्तूप आवास पर्वत के पूर्वान्त से बलया मुख पाताल कलश के पश्चिमान्त का अन्तर
- ३ क- दगभास आवास पर्वत के दक्षिणान्त से केतुग पाताल कलश के उत्तरान्त का अन्तर  
ख- शंख आवास पर्वत के पश्चिमान्त से यूपक पाताल कलश के पूर्वान्त का अन्तर  
ग- दगसीम आवाम पर्वत के उत्तरान्त से ईशर पाताल कलश के दक्षिणान्त का अन्तर
- ४ जानावरणीय, नामकर्म और अंतराय कर्म की उत्तर प्रकृतियाँ सौवर्म सनत्कुमार और माहेन्द्र के विमान

### त्रेपनवां समवाय

- १ क- देवकुरु क्षेत्र की जीवा का आयाम  
ख- उत्तरकुरुक्षेत्र की जीवा का आयाम
- २ क- महा हिमवत वर्षधर पर्वत की जीवा का आयाम  
ख- रुक्मी वर्षधर पर्वत की जीवाका आयाम
- ३ भ० महावीर के अनुत्तर देवलोकों में उत्पन्न होने वाले शिष्य
- ४ सम्मूर्द्धिम उरपरिसर्प की स्थिति

### चोपनवां समवाय

- १ क- भरत क्षेत्र में उत्सर्पिणी में उत्तम पुरुष  
भरत क्षेत्र में अवसर्पिणी में उत्तम पुरुष  
ख- ऐरवत क्षेत्र में उत्सर्पिणी में उत्तम पुरुष  
ऐरवत क्षेत्र में अवसर्पिणी में उत्तम पुरुष
- २ भ० अरिष्ट नेमीनाथ का छद्मस्थ पर्याय
- ३ भ० महावीर के एकदिन के प्रवचन
- ३ भ० अनन्तनाथ के गणधर

## एकपनर्था समवाय

- १ म० मन्वानाय का आनु
- २ मेरुवहन व पश्चिमान्त से विजय द्वार के पश्चिमान्त का अन्तर
- ३ व मरुवहन व उत्तरान्त से विजय द्वार के उत्तरान्त का अन्तर
- ४ मरुवहन के पूर्वान्त से अथवा द्वार के पूर्वान्त का अन्तर
- ५ मेरुवहन के दक्षिणान्त से अथवा द्वार व दक्षिणान्त का अन्तर
- ६ म० मरुवहन व अग्नि प्रवहन
- ७ प्रथम द्वितीय नरक के अन्तरांतर
- ८ दानावरणीय नाम और आनुक्रम को उत्तर प्रवृत्ति

## द्वयपनर्था समवाय

- १ अथर्ववेद में नगरों का अन्त क माघ दोष
- २ म० विमलनाथ के मन मन्थन

## सत्तावनर्था समवाय

- १ आवागम (पूर्विका को छोड़कर) मूर्च्छनाग और स्थानाग के अध्ययन
- २ गाम्भूज आवास पवन के पूर्वान्त से अथवा मूर्च्छनाग कला के मध्यभाग का अन्तर
- ३ व अथवा आवास पवन के दक्षिणान्त से केतुक पानाग कला के मध्यभाग का अन्तर
- ४ गम आवास पवन व पश्चिमान्त से मूर्च्छनाग कला के मध्यभाग का अन्तर
- ५ दक्षिणीय आवास पवन के उत्तरान्त से ईश्वर पानाग कला के मध्यभाग का अन्तर
- ६ म० मल्लिकार्जुन के मन पवन शान्ति

५ क- महाहिमवत पर्वत के घनुषृष्ठ की परिधि

ख- रुक्मी पर्वत के घनुषृष्ठ की परिधि

### अठावनवां समवाय

१ प्रथम द्वितीय और पंचम नरक के नरकावास

२ ज्ञानावरणीय, वेदनीय, आयु, नाम और अन्तराय कर्म की उत्तर प्रकृतियां

३ क- गोस्तुभ आवास पर्वत के पश्चिमान्त से बलधामुख पाताल कलश का मध्यभाग का अन्तर

ख- दकभास पर्वत के उत्तरान्त से केतुक पाताल कलश के मध्यभाग का अन्तर

ग- शंख आवास पर्वत के पूर्वान्त से यूपक पाताल कलश के मध्यभाग का अन्तर

घ- दकसौम आवास पर्वत के दक्षिणान्त से ईसर पाताल कलश के मध्यभाग का अन्तर

### उनसठवां समवाय

१ चन्द्र संवत्सर के दिन-रात

२ भ० सम्भवनाथ का गृहवास

३ भ० मल्लीनाथ के अवधिज्ञानी

### साठवां समवाय

१ एक मण्डल में सूर्य के रहने का समय

२ लवण समुद्र के ज्वार-भाटे को रोकने वाले नागकुमार

३ भ० विमलनाथ की ऊँचाई

४ बलेन्द्र के सामानिक देव

५ ब्रह्म देवेन्द्र के सामानिक देव

६ मीघमं ईशान कल्प के नियम



## द्वसठवाँ समवाय

- १ पच वर्षीय युग के ऋतुमाम
- २ मेघ पवन के प्रथम काण की ऊचाई
- ३ चान विमान के समाग
- ४ मूय विमान के समाग

## बासठवाँ समवाय

- १ पच वर्षीय युग की पूर्णिमाय और अमावस्याय
- २ भ० वासुपूय के गण और गणधर
- ३ गुल्मपक्ष का —भाग—वृद्धि
- ४ कृष्णपक्ष की भाग—हानि
- ५ क सौधम कल्प के प्रथम प्रस्तर मे विमान
- ६ ख ईशान कल्प के प्रथम प्रस्तर मे विमान
- ६ सब बमानिक देवा के विमान प्रस्तर

## त्रसठवाँ समवाय

- १ भ० ऋषभमेघ का शृंगामकाल
- २ क हृग्वि का मनुष्या का बाल्यकाल
- ३ ख गम्यह वय के मनुष्या का बाल्यकाल
- ३ निपथ पवन पर मूय के मण्डन
- ४ नीलधन पवन पर मूय के मण्डन

## चोसठवाँ समवाय

- १ अष्ट अग्रिका मि तु पन्दिमा क त्ति रात
- २ अमर कृष्णा क भवन
- ३ चमर क सामानिक देव
- ४ मत्र दशमुख पवना का उमेघ—ऊचाई
- ५ सौधम ईशान और ब्रह्मलोक कल्प के विमान

६ चक्रवर्ती के मुक्तामणी हार की सरें

### पैंसठवाँ-समवाय

- १ जम्बूद्वीप में सूर्य मण्डल
- २ स्थविर मौर्यपुत्र का गृहवास
- ३ सीधर्मावतंसक विमान के भीम नगर

### छासठवाँ समवाय

- १ दक्षिणार्ध मनुष्य क्षेत्र के चन्द्र
- २ दक्षिणार्ध मनुष्य क्षेत्र के सूर्य
- ३ उत्तरार्ध मनुष्य क्षेत्र के चन्द्र
- ४ उत्तरार्ध मनुष्य क्षेत्र के सूर्य
- ५ भ० श्रेयांसनाथ के गण-गणधर
- ६ मतिज्ञान की उत्कृष्ट स्थिति

### सड़सठवाँ समवाय

- १ पंच वर्षीय युग के नक्षत्र-माम
- २ हेमवत की वाहा का आयाम
- ३ हैरण्यवत की वाहा का आयाम
- ४ मेरु पर्वत के पूर्वान्त से गीतम द्वीप के पूर्वान्त का अन्तर
- ५ सर्व नक्षत्रों के मीमा विष्कम्भ का समांश

### अड़सठवाँ समवाय

- १ धातकी खंडद्वीप के चक्रवर्तीविजय और राजधानियाँ
- २ धातकी खंडद्वीप में तीन काल में उत्कृष्ट तीर्थंकर
- ३ धातकी खंडद्वीप में तीन काल में चक्रवर्ती, बलदेव और वासुदेव
- ४ क- पुष्कर वर द्वीपार्ध में तीन काल में चक्रवर्ती विजय राजधानियाँ  
ख- पुष्कर वर द्वीपार्ध में तीन काल में उत्कृष्ट तीर्थंकर  
ग- पुष्कर वर द्वीपार्ध में तीन काल में चक्रवर्ती, बलदेव और वासुदेव
- ५ भ० विमलनाथ की श्रमण सम्पदा

## उत्तरार्ध समवाय

- १ नमय शेष म मेरु को छोड़कर दोय वर्षधर पर्वत
- २ मेरु पर्वत व गरिबमान्द से गौनम द्वीप के गरिबमान्द का अन्तर
- ३ मोहनीय को छोड़कर दस तान बर्षों की उत्तर कर्म प्रकृतियाँ

## सितरर्ध समवाय

- १ भ० महावीर के वर्षावाम के दिन रात
- २ भ० पार्श्वनाथ की धमण सम्पदा
- ३ भ० वागुपुत्र्य की ऊँचाई
- ४ माहनीय कर्म की उत्कृष्ट स्थिति
- ५ माहन्त के सामानिक देव

## द्वितीयाध समवाय

- १ सूर्य की आवृत्ति का काल
- २ वीर्य प्रवाद के प्राभुन
- ३ भ० अजितनाथ का गृहवाय काल
- ४ सागर चक्रवर्ती का गृहवाय काल

## चतुर्थार्ध समवाय

- १ सुवर्ण कुमार के भवन
- ४ लवण समुद्र की वाशवेना को रोसनेवाने नावकुमार
- ३ भ० महावीर का आयु
- ४ स्थविर अचलभ्राता का आयु
- ५ क पुष्कराज म चन्द्र
- ६ पुष्कराज म सूर्य
- ६ चक्रवर्ती क पुर
- ७ पुरुष की कस्तारों
- ८ सम्पूर्णम वेचर की उत्कृष्ट स्थिति

### तिहत्तरवाँ समवाय

- १ क- हरिवर्ष की जीवा
- ख- रम्यक् वर्ष की जीवा
- २ विजय बलदेव का आयु

### चौहत्तरवाँ समवाय

- १ स्थविर अग्निभूति का आयु
- २ निपथ पर्वत के तिगिच्छ द्रह से सीतोदा नदी का उद्गम प्रवाह
- ३ नीनवत पर्वत के सीता नदी का उद्गम प्रवाह
- ४ चतुर्थ नरक के अतिरिक्त छहों नरकों के नरकावास

### पचहत्तरवाँ समवाय

- १ भ० सुविधिनाथ के सामान्य केवली
- २ भ० शीतलनाथ का गृहवास काल
- ३ भ० शांतिनाथ का गृहवास काल

### छिहत्तरवाँ समवाय

- १ विद्युत्कुमार के भवन
- २ क- द्वीप कुमार के भवन
- ख- दिशा कुमार के भवन
- ग- उदधि कुमार के भवन
- घ- स्तनित कुमार के भवन
- ङ- अग्निकुमार के भवन

### सतहत्तरवाँ समवाय

- १ भरत चक्री की कुमारावस्था
- २ स्थविर अकंपित का आयु
- ३ क- सूर्य के उत्तरायण होने पर दिन की हानि-वृद्धि
- ख- सूर्य के दक्षिणायन होने पर दिन की हानि-वृद्धि

## अटहत्तरवाँ समवाय

- १ वैशम्पयण गन्धर्व के लोकपाल के आधिपत्य में सुवर्ण कुमार और द्वीप कुमार का भवन
- २ स्वधिर अकपित का आयु
- ३ सूर्य के उत्तरायण में लौटते समय दिन रात की हानि
- ४ सूर्य का दक्षिणायन से लौटते समय दिन रात की हानि

## उनहत्तरवाँ समवाय

- १ वलयामुख पाताल कलाश के अधस्तनभाग से रत्नप्रभा के अधस्तनभाग का अन्तर
- २ क केतु पाताल कलाश के अधस्तनभाग से रत्नप्रभा के अधस्तनभाग का अन्तर
- ख सूर्यक पाताल कलाश के अधस्तनभाग से रत्नप्रभा के अधस्तनभाग का अन्तर
- ग ईश्वर पाताल कलाश के अधस्तनभाग से रत्नप्रभा के अधस्तनभाग का अन्तर
- ३ तम प्रभा के मध्यभाग से तम प्रभा के अधोवर्ती धनोदधि का अन्तर
- ४ जम्बू द्वीप के प्रत्येक द्वार का अन्तर

## अस्सीवाँ समवाय

- १ भ० श्रेयामनाथ की ऊँचाई
- २ त्रिपृष्ठ वामुदेव की ऊँचाई
- ३ अचल बनदेव की ऊँचाई
- ४ त्रिपृष्ठ वामुदेव का राज्यकाल
- ५ अश्वह्वन काठ का वाहृत्य
- ४ ईशानन्द का सामानिक देव
- ७ जम्बूद्वीप में आम्बत्तर मण्डन में—सूर्योदय

## इक्यासीवाँ समवाय

- १ नवनवमिका भिक्षु प्रतिमा के दिन
- २ भ० कुंथुनाथ के मनः पर्यव ज्ञानीं
- ३ व्याख्या प्रज्ञप्ति के अध्ययन

## वयासीवाँ समवाय

- १ जम्बूद्वीप में सूर्य के गमनागमन के भण्डल
- २ भ० महावीर का गर्भ साहरण काल
- ३ महाहिमवंत पर्वत के उपरितनभाग से सौगंधिक काण्ड के अव-  
स्तन भाग का अन्तर
- ४ रुक्मि पर्वत के उपरितन भाग के सौगंधिक काण्ड के अवस्तन  
भाग का अन्तर

## तयासीवाँ समवाय

- १ भ० महावीर के गर्भसाहरण का दिन
- २ भ० शीतलनाथ के गण-गणधर
- ३ स्थविर मण्डितपुत्र की आयु
- ४ भ० ऋषभदेव का गृहवास काल
- ५ भरत चक्रवर्ती का गृहवास काल

## चौरासीवाँ समवाय

- १ समस्त नरकावास
- २ भ० ऋषभदेव का सर्वायु
- ३ क- भरत चक्रवर्ती का सर्वायु  
ख- वाहुवली का सर्वायु  
ग- ब्राह्मी का सर्वायु  
घ- सुन्दरी का सर्वायु
- ४ भ० श्रेयांसनाथ का सर्वायुः
- ५ त्रिपृष्ठ वासुदेव का सर्वायु

- ६ शकल क सामानिक देव
- ७ मभा बास मर पवनों की ऊँचाई
- ८ मभी अवनक पवनों की ऊँचाई
- ९ क हगि वय की जीवा की परिधि
- १० क मयन वग की जीवा की परिधि
- १० एक बहुप काण्ड क ऊारीभाग म नीच के भाग का अन्तर
- ११ व्याकरण प्रवृत्ति क पन
- १२ नायकमार क भवन
- १३ प्रकीर्णकी का अधिकतम सूच्या
- १४ जीवापोनी
- १५ पूव म शीघ्र प्रहेनिका पयन्त का गुणाकार
- १६ म० श्रुपमदेव की धमन मन्त्र
- १७ सब विमान

### पञ्चामीर्षी समवाय

- १ धुनिवा मडिन आचाराग के उद्गक
- २ धानकी शण्ड क मरु पवना की ऊँचाई
- ३ हचक मन्त्राक पवन की ऊँचाई
- ४ नन्वनवन के अघमनन भाग म सौदधिक काण्ड के अवस्तन भाग का अन्तर

### द्विधासीर्षी समवाय

- १ म० सुविधिनाथ क शण मणघर
- २ म० गुणात्रनाथ के वानि मुनि
- ३ द्वितीय नरक के मध्यभाग से द्वितीय धनोदधि का अन्तर

### सत्तासीर्षी समवाय

- १ मेरु पवन क पुवान्त से शास्त्रुभ आवास पवत के पश्चिमात्त का अन्तर

- २ मेरु पर्वत के दक्षिण चरमान्त से दगमास पर्वत के उत्तर चरमान्त का अन्तर
- ३ मेरु पर्वत के पश्चिमान्त से शंख आवास पर्वत के पूर्व चरमान्त का अन्तर
- ४ मेरु पर्वत के उत्तर चरमान्त से दगसीम आवास पर्वत के दक्षिण चरमान्त का अन्तर
- ५ ज्ञानावरणीय और अन्तराय को छोड़कर शेष छह कर्मों की उत्तर प्रकृतिर्याँ
- ६ महाहिमवत कूट के ऊपरी भाग से सौगंधिक काण्ड के अधोभाग का अन्तर
- ७ स्वमी कूट के ऊपरी भाग से सौगंधिक काण्ड के अधोभाग का अन्तर

### अठासीवाँ समवाय

- १ क- एक चन्द्र के ग्रह  
ख- एक सूर्य के ग्रह
- २ दृष्टिवाद के सूत्र
- ३ मेरुपर्वत के पूर्वान्त से गोस्तूभ आवास पर्वत के पूर्वान्त का अन्तर
- ४ क- मेरु पर्वत के दक्षिणान्त से दगभास आवास पर्वत के दक्षिणान्त का अन्तर  
ख- मेरुपर्वत के पश्चिमान्त से शंखपर्वत के पश्चिमान्त का अन्तर  
ग- मेरुपर्वत के उत्तरान्त से दकसीम आवास पर्वत के उत्तरान्त का अन्तर

५ उत्तरायन में दिन-रात की हानि-वृद्धि

६ दक्षिणायन में दिन-रात की हानि-वृद्धि

### नवासीवाँ समवाय

- १ भ० ऋषभदेव का निर्वाण-काल
- २ भ० महावीर का निर्वाण-काल



- ३ हरिगेण चक्रवर्ती का राज्य काल
- ४ भ० शातिनाथ की उत्कृष्ट अमणी मर्यादा

### नरदेवी समवाय

- १ भ० शीतलनाथ की ऊर्चाई
- २ भ० अजितनाथ के गण गणधर
- ३ भ० शातिनाथ के गण गणधर
- ४ स्वयम्भु वामुदेव का त्रिविजय काल
- ५ मयव्रत वैशाख पक्ष के त्रिपुरा से सौगन्धिका काण्ड के अघमन भाग का अन्तर

### द्वयानवैदी समवाय

- १ वशाख प्रतिमा
  - २ बानो मसुड की परिधि
  - ३ भ० कृष्णार्थ के अवधिजानी मुनि
  - ४ आयु और राज कर्म को छोड़कर शेष एतद् कर्मों की उत्तरप्रकृति
- ### षानवैदी समवाय

- १ मय प्रतिमा
- २ स्वविर दृग्भूति का आयु
- ३ मेरु पर्वत के मध्यभाग से सागुम आवास पर्वत के पश्चिम का अन्तर
- ४ क मेरु पर्वत के मध्यभाग से दक्षिण आवास पर्वत के उत्तर का अन्तर
- ५ मेरु पर्वत के मध्यभाग से शाल आवास पर्वत के पूर्ण का अन्तर
- ६ मेरु पर्वत के मध्यभाग से इक्ष्वाकु आवास पर्वत के दक्षिण का अन्तर

### निरानवैदी समवाय

- १ भ० चन्द्रमय के गण गणधर

- २- भ० शांतिनाथ के चौदहपूर्वी शिष्य  
३ दिन-रात की हानि-वृद्धि जिस मण्डल में होती है

**चौरानवेवाँ समवाय**

- १ क- निपथ पर्वत की जीवा का आयाम  
ख- नीलवंत पर्वत की जीवा का आयाम  
२ भ० अजितनाथ के अवधिज्ञानी मुनि

**पंचानवे वाँ समवाय**

- १ भ० सुपाश्र्वनाथ के गण-गणघर  
२ जम्बूद्वीप के अंतिमभाग से (चारों दिशा में) चारों पाताल कलशों का अन्तर  
३ लवण समुद्र के दोनों पार्श्व में उद्वेध और उत्सेध की हानि का प्रमाण

- ४- भ० कुंथुनाथ की परमायु  
५ स्थविर मौर्य पुत्र की सर्वायु

**छानवेवाँ समवाय**

- १ चक्रवर्ती के ग्राम  
२ वायुकुमार के भवन  
३ दण्ड का अंगुल प्रमाण  
४ क- धनुष का अंगुल प्रमाण  
ख- नालिका का अंगुल प्रमाण  
ग- अक्ष का अंगुल प्रमाण  
घ- मूसल का अंगुल प्रमाण  
५ आभ्यन्तर मण्डल में प्रथम मूर्हत की छाया-का प्रमाण

**सत्तानवेवाँ समवाय**

- १ मेरुपर्वत के पश्चिमान्त से गोस्तुभ आवास पर्वत के पश्चिमान्त का अन्तर

- २ मेघ पवन के उत्तरान्त में दशमाम पवन के उत्तरान्त का अन्तर
- ३ मेघ पवन के पूर्वान्त में गन्ध पवन के पूर्वान्त का अन्तर
- ४ मेघ पवन के दक्षिणान्त पर्वत में दशमाम पवन के दक्षिणान्त का अन्तर
- ५ अष्ट कर्मों का उत्तर प्रवृत्तियों
- ६ दक्षिण प्रवृत्तियों का आयु

### अष्टानवैधौ समवाय

- १ नन्दनवन के ऊपरी भाग में पटुपवन के अग्रभाग का अन्तर
- २ मेघ पवन के पश्चिमान्त में शम्भुन आवास पवन के पूर्वान्त का अन्तर
- ३ मेघ पवन के उत्तरान्त में दशमाम पवन के दक्षिणान्त का अन्तर
- ४ मेघ पवन के पूर्वान्त में गन्ध पवन के पश्चिमान्त का अन्तर
- ५ मेघ पवन के दक्षिणान्त में दशमाम पवन के उत्तरान्त का अन्तर
- ६ दक्षिणाय भवन के अष्टवृष्ट का आवास
- ७ उत्तरायण उन्वामव मण्डप में दिन रात का हानि-वृद्धि
- ८ दक्षिणायण उन्वामव मण्डप में दिन रात की हानि-वृद्धि
- ९ उन्वाम मण्डपों पर न नक्षत्रों के नारे

### त्रिनालवैधौ समवाय

- १ मेघ पवन का उच्छा
- २ नन्दनवन के पूर्वान्त में पश्चिमान्त का अन्तर
- ३ नन्दनवन के दक्षिणान्त में उत्तरान्त का अन्तर
- ४ उत्तरान्त में प्रथम मूष मण्डप का आवास विवरण
- ५ दिन में मूष मण्डप का आवास विवरण
- ६ नक्षत्र मूष मण्डप का आवास विवरण
- ७ उत्तरायण में अष्टम वाण्ड के अग्रभाग में अन्तरों के चोरेय विवरणों के ऊपरी भाग का अन्तर

### सौवां समवाय

- १ दश, दशमिका भिक्षु प्रतिमा के दिन
- २ शतभिषा नक्षत्र के तारे
- ३ भ० सुविधिनाथ की ऊचाई
- ४ भ० पार्श्वनाथ की आयु
- ५ स्थविर आर्य सुधर्मा की आयु
- ६ सभी दीर्घ वैताढ्य पर्वतों की ऊचाई
- ७ क- सभी चुल्ल हिमवन्त पर्वतों की ऊचाई  
ख- सभी शिखरी पर्वतों की ऊचाई
- ८ सभी कंचनग पर्वतों की ऊचाई, उद्वेध और मूल का विष्कम्भ

### डेढसोवाँ समवाय

- १ भ० चन्द्रप्रभ की ऊचाई
- २ आरण कल्प के विमान
- ३ अच्युत कल्प के विमान

### दो सोवाँ समवाय

- १ भ० सुपार्श्वनाथ की ऊचाई
- २ सभी महा हिमवन्त पर्वतों की ऊचाई और उद्वेध
- ३ जम्बूद्वीप के कांचनगिरी

### ढाई सोवाँ समवाय

- १ भ० पद्मप्रभ की ऊचाई
- २ असुर कुमार के प्रासादों की ऊचाई

### तीन सोवाँ समवाय

- १ भ० सुमतिनाथ की ऊचाई
- २ भ० अरिष्टनेमी का गृहवास काल
- ३ विमानों (वैमानिक देवों के) के प्राकारों की ऊचाई

४ भ० महावीर के चौदह पूर्वी मुनि

५ पाचमी अनुप की कायावालों के जीवप्रश्नों की व्यवसाहता

### साठ तीन सोवा समवाय

१ भ० पाश्वनाथ के चौदह पूवधारी मुनि

२ भ० अभिवन्त की ऊचाई

### चार सोवा समवाय

१ भ० मम्भवनाथ की ऊचाई

२ क सभी निपथ वषधर पवतो की ऊचाई

ख सभी भीलवन वषधर पवतो की ऊचाई

३ सभी वषम्कार पवतों की ऊचाई और उद्वेष

४ आशत प्राणत कल्प के दिमान

५ भ० महावीर के उरुष्ट्र वाणी मुनि

### साठ चार सोवा समवाय

१ भ० अजिननाथ की ऊचाई

२ सगर चक्रवर्ती की ऊचाई

### पाच सोवा समवाय

१ सब वषम्कार पवतों की ऊचाई उद्वेष

२ मय वषधर पवता क पूटा की ऊचाई उद्वेष

३ भ० मृषभनेत्र की ऊचाई

४ भरत चक्रवर्ती की ऊचाई

५ क मामनम पवन की ऊचाई और उद्वेष

ख गधमान पवन की ऊचाई और उद्वेष

ग विष्णु प्रभ पवन की ऊचाई

घ माणस्यवन पवत की ऊचाई

६ हरि हरिम्पहू कूटो का छोडकर शेष सभी कूटों की ऊचाई और मूल का विरकम्भ

- ७ वलकूट को छोड़कर सर्व नन्दन कूटों की ऊंचाई और मूल का विष्कम्भ  
 ८ सौधर्म-ईशान कल्प के विमानों की ऊंचाई

### छ सौवाँ समवाय

- १ क- सनत्कुमार कल्प के विमानों की ऊंचाई  
 ख- माहेन्द्र कल्प के विमानों की " "  
 २ चुल्ल हिमवत कूट के सर्वोपरि भाग से अधोभाग का अन्तर  
 ३ शिखरी कूट के सर्वोपरिभाग से अधोभाग का अन्तर  
 ४ भ० पाश्वनाथ के वादी मुनि  
 ५ अभिचंद्र कुलकर की ऊंचाई  
 ६ भ० वासुपूज्य के माथ दीक्षित होनेवाले पुण्य

### सात सौवाँ समवाय

- १ क- ब्रह्मकल्प के विमानों की ऊंचाई  
 ख- लांतक कल्प के विमानों की ऊंचाई  
 २ भ० महावीर के केवली शिष्य  
 ३ भ० अरिपृ नेमिनाथ का केवली पर्याय  
 ४ महाहिमवत कूट के ऊपरी तल से अधस्तल का अन्तर  
 ५ रुक्मि कूट के ऊपरी तल से अधस्तल का अन्तर

### आठ सौवाँ समवाय

- १ क- महाशुक्र कल्प के विमानों की ऊंचाई  
 ख- सहस्रार कल्प के विमानों की ऊंचाई  
 २ रत्नप्रभा के प्रथम काण्ड में व्यतर देवों के भौमिय त्रिहार-नगर  
 ३ भ० महावीर के अनुत्तर विमान से उत्पन्न होनेवाले शिष्य  
 ४ रत्नप्रभा के ऊपरीतल से सूर्य के विमान का अन्तर  
 ५ भ० अरिपृनेमी के उत्कृष्ट वादी मुनि

## नौ सोवा समवाय

- १ क आनन कल्प के विमाना की ऊचाई
- ख प्राणन कल्प के विमाना की ऊचाई
- ग धारण कल्प के विमाना की ऊचाई
- घ अच्यन कल्प के विमाना की ऊचाई
- २ निषघ कुट के ऊपरी तल से अक्षस्तल का अन्तर
- ३ नीलवत ब्रूट के ऊपरी तल से अक्षस्तल का अन्तर
- ४ विमान वाहन कुसकर की ऊचाई
- ५ रत्नप्रभा के ऊपरी तल से ताराओं का ऊचाई
- ६ निषघ पवत के शिखर से (रत्नप्रभा के) प्रथम वाण्ड के मध्य भाग का अन्तर
- ७ नीलवत के शिखर से (रत्नप्रभा के) प्रथम वाण्ड के मध्यभाग का अन्तर

## एक हजारवाँ समवाय

- १ मय अवयवक विमाना की ऊचाई
- २ मय समक पवता की ऊचाई उद्वेग और मूल का विष्कम्भ
- ३ क चित्रकूट की ऊचाई उद्वेग और मूल का विष्कम्भ
- ख चित्रकूट की ऊचाई उद्वेग और मूल का विष्कम्भ
- ४ मय वृत्त बनान्य पवतों की ऊचाई उद्वेग और मूल का विष्कम्भ
- ५ त्रिगुणिक कूटों की ऊचाई उद्वेग और मूल का विष्कम्भ
- ६ वरकूटों का ऊचाई उद्वेग और मूल का विष्कम्भ
- ७ म० अग्निपृ नमीनाथ की ऊचाई
- ८ म० पान्धनाथ के कवली शिष्य
- ९ म० पान्धनाथ के मुक्त शिष्य
- १ क पद्यग्रह का आयाम
- ख पुडराक ग्रह का आयाम

## इग्यारह सोवाँ समवाय

- १ अनुत्तरोपपातिक देवों के विमानों की ऊँचाई
- २ भ० पार्श्वनाथ के वैक्रिय लड्डिववाले शिष्य

## दो हजारवाँ समवाय

- १ महापद्मद्रह का आयाम
- २ महापुन्दरीकद्रह का आयाम

## तीन हजार वाँ समवाय

- १ रत्नप्रभा के चक्रकाण्ड के चरमान्न मे लोहिताक्ष काण्ड के चरमान्त का अन्तर

## चार हजारवाँ समवाय

- १ क- तिगिच्छ द्रह का आयाम
- ख- केसरि द्रह का आयाम

## पाँच हजारवाँ समवाय

- १ धरणितल में मेरु के मध्यभाग से अन्तिम भाग का अन्तर

## छह हजारवाँ समवाय

- १ सहस्रार कल्प के विमान

## सात हजारवाँ समवाय

- १ रत्नकाण्ड (रत्नप्रभा) के ऊपरीतल ने पुलक काण्ड के अग्र-स्तल का अन्तर

## आठ हजारवाँ समवाय

- १ क- हृत्विर्ष का विस्तार
- ख- रम्यक् वर्ष का विस्तार

## नौ हजारवाँ समवाय

- १ दक्षिणाधं भरत की जीवा का आयाम



## दस हजारवाँ समवाय

१ मेषवत का विष्कम्भ

## एक लाखवाँ-मावत-आठ लाखवाँ समवाय

१ जम्बूद्वीप का आयाम विष्कम्भ

१ लवण समुद्र का चक्रवाल विष्कम्भ

१ भ० पाशवनाथ की श्राद्धिका स्मृति

१ घानकी लण्ड द्वीप का चक्रवाल विष्कम्भ

१ लवण समुद्र के पूवान्त म पश्चिमान्त का अंतर

१ भारत चक्रवर्ती का राज्य काल

१ जम्बूद्वीप की पूव वेदिशा म घानकी लण्ड के पश्चिमान्त का अंतर

१ माहन्द्र रूप के विमान

## बौद्ध समवाय

१ भ० अरिननाथ के अवशिष्टान्ती

१ पुरुषनिष्ठ वामुदव का आयु

## कीर्त्तिकोटी समवाय

१ भ० मन्नापीर का पात्रित क भव न आयमय वर्षाव

१ भ० कृष्णभन्ध रीर भ० मन्नापीर का अन्तर

सूत्र संख्या १२९ म १४८ पद्य ११—श्राद्धशांति का परिषय

१४९ क दो शान्ति

न चौकीय शान्ति म पश्चिमा अश्वत्थिना

न मय ना मि मय भवनायाम, तत्र विमान

न नरनायाम रीर नरना म बदना

१५० क म नारायण का वजन

न पूषाशिवशिवशिवशिव का वजन यावन् मनुष्यायामा का वजन

न ध्वनशिवशिव का वजन

- घ- ज्योतिष्कावासों का वर्णन  
 ङ- वैमानिकावासों का वर्णन  
 १५१ चौबीस दण्डकों में स्थिति  
 १५२ पाँच शरीर का विस्तृत वर्णन  
 १५३ क- अबधिज्ञान का विस्तृत वर्णन  
 ख- वेदना का विस्तृत वर्णन  
 ग- लेश्या का विस्तृत वर्णन  
 घ- आहार का विस्तृत वर्णन  
 १५४ चौबिस दण्डक में विरह का विस्तृत वर्णन  
 १५५ क- चौबीस दण्डक में संघयण का वर्णन  
 ख- चौबीस दण्डक में संठाण का वर्णन  
 १५६ चौबीस दण्डक में वेदों का वर्णन  
 १५७ क- कल्पसूत्रान्तर्गत समवसरण वर्णन  
 ख- जम्बूद्वीप के भरत में अतीत उत्सर्पिणी के कुलकर  
 ग- जम्बूद्वीप के भरत में अतीत अवसर्पिणी के कुलकर  
 घ- जम्बूद्वीप के भरत में इस अवसर्पिणी के कुलकर  
 ङ- सात कुलकरों की भाग्यीं  
 च- जम्बूद्वीप के भरत में इस अवसर्पिणी के २४ तीर्थकरों के पिता  
 छ- चौबीस तीर्थकरों की माताएं  
 ज- चौबीस तीर्थकर  
 झ- चौबीस तीर्थकरों के पूर्वभद्र के नाम  
 ञ- चौबीस तीर्थकरों की शिविकाएं  
 ट- चौबीस तीर्थकरों की जन्मभूमियाँ  
 ठ- चौबीस तीर्थकरों के देवदूष्य  
 ड- चौबीस तीर्थकरों के साथ दीक्षित होनेवाले  
 ढ- चौबीस तीर्थकरों के दीक्षा समय के तप  
 ण- चौबीस तीर्थकरों के प्रथम भिक्षा दाता

- त चौबीस तीर्थंकरों के प्रथम भिक्षा भिखने का समय  
 थ चौबीस तीर्थंकरों के प्रथम भिक्षा में भिखने वाले पदार्थ  
 द चौबीस तीर्थंकरों के चैत्यदृष्ट  
 ध चौबीस तीर्थंकरों के चैत्यदृष्टों की ऊँचाई  
 न चौबीस तीर्थंकरों के प्रथम शिष्य  
 प चौबीस तीर्थंकरों के प्रथम भिक्षा  
 ११८ क जम्बूद्वीप के भरत में इन अवसरिणी में चक्रवर्तिया के पिता  
 ख ब्राह्म चक्रवर्तिया की मानाए  
 ग ब्राह्म चक्रवर्ती  
 घ ब्राह्म चक्रवर्तिया के स्वो रत्न  
 - जम्बूद्वीप के भरत में इन अवसरिणी में तो बलदेश और तो  
 वासुदेव के पिता  
 च तो वासुदेव की मानाए  
 छ तो बलदेश की मानाए  
 ज तो गणेश मन्त्र  
 झ तो बलदेश-वासुदेव के पूर्वभद्र के नाम  
 झ तो बलदेश वासुदेव के धर्माचार्य  
 ट तो वासुदेव की निम्न भूमिशा  
 ठ तो वासुदेव के निम्न के तो कारण  
 ड तो प्रतिवासुदेव  
 ङ तो वासुदेवों की गति  
 ञ तो बलदेशों का गति  
 ११९ क जम्बूद्वीप के एरबल क्षेत्र में इन अवसरिणी के चौबीस तीर्थंकर  
 ख जम्बूद्वीप के भरत में आगामी उत्सर्पिणी के नाम कुनकर  
 ग जम्बूद्वीप के गरवक क्षेत्र में आगामी उत्सर्पिणी में इन कुनकर  
 घ जम्बूद्वीप के भरत में आगामी उत्सर्पिणी में चौबीस तीर्थंकर  
 ङ चौबीस तीर्थंकरों के पूर्वभद्र के नाम

- च- चौबीस तीर्थकरों के पिता  
 छ- चौबीस तीर्थकरों की माताएं  
 ज- चौबीस तीर्थकरों के शिष्य  
 झ- चौबीस तीर्थकरों की शिष्याएं  
 ञ- चौबीस तीर्थकरों को प्रथम भिक्षा देने वाले  
 ट- चौबीस तीर्थकरों के चैत्यवृक्ष  
 ठ- जम्बूद्वीप के भरत में आगामी उत्सर्पिणी में  
 वारह चक्रवर्ती  
 ड- चक्रवर्तियों के पिता  
 ढ- चक्रवर्तियों की माताएं  
 ण- चक्रवर्तियों के स्त्री रत्न  
 त- नो बलदेव नो वामुदेव  
 थ- नो बलदेव-नो वामुदेवों के पिता  
 द- नो बलदेव की माताएं  
 थ- नो वामुदेव की माताएं  
 न- नो दशार मण्डल  
 प- नो बलदेव-वामुदेवों के पूर्वभव के नाम  
 फ- नो निदान भूमियां  
 व- नो निदान के कारण  
 भ- नो प्रति वामुदेव  
 म- जम्बूद्वीप के एरवत क्षेत्र में आगामी उत्सर्पिणी में-  
 चौबीस तीर्थकर  
 य- वारह चक्रवर्ती  
 र- वारह चक्रवर्तियों के पिता  
 ल- वारह चक्रवर्तियों की माताएं  
 व- वारह चक्रवर्तियों के स्त्री रत्न  
 श- नो बलदेव-नो वामुदेवों के पिता

प नो वनन्व का माताए  
 स नो वामुन्व की माताए  
 ह ना दगार मन्व  
 दा नो प्रतिवागुन्व  
 न नो वामुन्वो के पूवमव के नाम  
 न ना वामुन्वा के पूवमव के यर्मावाय  
 क्ष नो वामुन्वा की निदान भूषिवा  
 या निदान के कारण

१६० उपमन्व-समवायिग स वणित्त नात्प्य विषय

सुयक्खाए	ते भते	।	णिग्गथे	पावयणे
सुपण्णत्ते	ते भते	।	णिग्गथे	पावयणे
सुमासिए	ते भते	।	णिग्गथे	पावयणे
सुविणीए	ते भते	।	णिग्गथे	पावयणे
सुभाविए	ते भते	।	णिग्गथे	पावयणे
अणुत्तरे	ते भते	।	णिग्गथे	पावयणे

णमो णाणस्म

## सर्वानुयोगमय भगवती सूत्र

श्रुत स्कंध	१
शतक अयान्तर, शतक	१३८
उद्देशक	१६२७
प्रश्नोत्तर	३६०००
पद	२८८०००
गद्य सूत्र	५२६३
पद्य "	७२

## भगवती सूत्र शतक, उद्देशक और सूत्रसंख्या सूचक तालिका

शतक	उ०	सूत्र	श०	उ०	सूत्र	शतक	उद्देशक	सूत्र				
१	१०	३२६	११	१२	१३४	२१	८ वर्ग	१५	३१	२८	४१	
२	१०	७६	१२	१०	१७३	२२	६ "	६	३२	२८	३३	
३	१०	१५६	१३	१०	१४७	२३	५ "	५	३३	अ१२-१२४	१३६	
४	१०	६	१४	१०	६७	२४	२४	३३६	३४	वा१२	१२४	१५४
५	१०	१८६	१५	०	४६	२५	१२	५८१	३५	न्त१२	१२४	१२४
६	१०	१६०	१६	१४	६८	२६	१२	४३	३६	र१२	१२४	१२४
७	१०	१४६	१७	१४	७०	२७	११	११	३७	श१२	१२४	१२४
८	१०	४६०	१८	१०	१३३	२८	११	१४	३८	त१२	१२४	१२४
९	३४	१६६	१९	१०	६६	२९	११	१५	३९	क१२	१२४	१२४
१०	३४	७२	२०	१०	१०१	३०	११	५०	४०	है२१-१८७	१८७	

१४८

श० सू० उ०  
४१ १६६ २२२

११११

१००

१०१

## गणधर यत्र

गणधर नाम	प्राग	न सत्र	पिता	माता	गोत्र	वर्ष	वर्ष	वर्ष	वर्ष	वर्ष	मोक्षगमन
१ हरभूमि	गुह्यर वाद	श्लेष्य	कर्मभूमि	सुखी	गौतम	५०	१०	१२	१२	१२	महावर पर गच्छ
२ अग्निभूमि		दृष्टिवा				४६	१२	१६	७४	महावीर पूर्व	
३ नागभूमि		स्वाति				४२	१०	१८	७०		
४ व्याग	कोत्सावन्धर्मा	अश्लेष	धन ित्र	शारणी	ः रक्षाग	५०	१२	१८	८०		
५ दुग्धनी	मेघा संविनेरा	हर रोष्या	धम्मिल	मरिचा	अग्निवैश्व यन	५०	४२	८	८००	महावीर परन्तम्	
६ मरिच		मघा	प्राग्नेव	विमला	वसिष्ठ	५६	१८	१६	८३	महावीर पूर्व	
७ गौवदुष		रोहिणी	नीच		वाहन्य	६५	१४	१६	१५		
८ अरुणि	मिथिला	अश्लेषान	देव	अपनी	गौतम	४८	६	२१	७८		
९ अरुण आग	पौनस्य	पुणशिया	वज्र	जग	कारिल	४५	१२	१४	७२		
१० मेघवे	अनाभूमि मुनि	अरिषा	दल	वरलोदेषा	वीरिग	३६	१०	१६	६२		
११ मग	राजगृह	पुष्य	वज्र	अग्निमहा		१६	८	१६	४०		

१५५६ गणधरो वीर भूमि मातुग अन्वयन श्रीरुद्र पूर्व श्रीर वासरात्र वा गोक्षान्तर राजगृह

णमो संजयाणं  
 भगवती विषय सूची  
 प्रथम शतक

उत्थानिका

- क- नमस्कार मंत्र  
 ख- ब्राह्मी लिपि को नमस्कार  
 ग- श्रुत को नमस्कार  
 घ- दस उद्देशकों के नाम  
 ङ- प्रश्नोत्थान

भ० महावीर और गौतम गणधर का संक्षिप्त परिचय  
 प्रश्न के लिए उद्यत गौतम गणधर

प्रथम चलन उद्देशक

- १ चलमान चलित आदि ६ प्रश्नों के उत्तर  
 २ नौ पदों में से चार पद एकार्थ और पांच पद नानार्थ वाले हैं  
 चौबीस दण्डकों में स्थिति, श्वासोच्छ्वास, आहार और कर्म  
 पुद्गल व बन्ध आदि  
 ३ नैरयिकों की स्थिति  
 ४ नैरयिकों का श्वासोच्छ्वास  
 ५ नैरयिक आहारार्थी  
 ६ आहत पुद्गलों का परिणमन ४ प्रश्नोत्तर  
 ७ नैरयिकों द्वारा आहत पुद्गलों के चित आदि ६ प्रश्नोत्तर  
 ८ " कर्मद्रव्य वर्गणा के पुद्गलों का भेदन. आहार. द्रव्यवर्गणा  
 ९ " " पुद्गलों का चयन उपचयन  
 १० नैरयिकों द्वारा कर्मद्रव्य वर्गणा के पुद्गलों की उदीरणां  
 इसी प्रकार—वेदना, निर्जरा के प्रश्न



नैरयिकों के अथवनन, मकमण निषत्त और निष्ठाचिन के  
(तीन काल के) प्रश्न

- ११ नैरयिकों द्वारा सैत्रम कामन रूप में पुद्गलों का ग्रहण  
१२ शरीर पुद्गलना की उन्नीरणा  
इसी प्रकार—वेष्ना और निजरा
- १३ नरयिकों द्वारा अथनिन कर्मों का अथन  
१४ क धी उन्नीरणा  
ल का वेष्न  
ग अथवनन  
घ मकमण  
ङ निषत्त  
च निष्ठाचिन
- १५ चचित्त की निजरा
- १६ अमुर कुमारों की स्थिति  
१७ का श्वासोच्छ्वास काल  
१८ आहारार्थी  
१९ आहारेच्छा का समय  
२० आहार क पुद्गल  
२१ में जाहार के पुद्गलों का परिणामन  
२२ पूव अग्रहूत पुद्गलों की परिणति  
शेष प्रश्नोत्तर ७ में १५ के समान
- २३ नाग कुमारों की स्थिति  
२४ का श्वासोच्छ्वास काल  
२५ नागकुमार आहारार्थी  
२६ क नागकुमारों के आहारेच्छा का समय  
शेष प्रश्नोत्तर ७ से १५ के समान  
ख सूषण कुमार से स्तनिन कुमार पयत्त अमुर कुमार के समान

- २७ पृथ्वी कायिकों की स्थिति  
 २८ " " का श्वासोच्छ्वास काल.  
 २९ " कायिक आहारार्थी  
 ३० " कायिकों के आहारेच्छा का समय  
 ३१ " " " आहार के द्रव्य  
 ख- " " " " लेने की दिशा  
 ३२ क- " " में " का परिणमन,  
 शेष प्रश्नोत्तर ७ से १५ के समान  
 ख- अप्काय से वनस्पतिकाय पर्यंत पृथ्वीकाय के समान  
 ३३ स्थिति और श्वासोच्छ्वास प्रत्येक का भिन्न भिन्न,  
 ३४ क- द्वीन्द्रियों की स्थिति  
 ख- " का श्वासोच्छ्वास काल  
 ३५ द्वीन्द्रिय आहारार्थी  
 शेष प्रश्नोत्तर ३०-३१ के समान  
 ३६ द्वीन्द्रियों के आहार का परिमाण  
 ३७ " " " ग्राह्य अग्राह्य विभाग और उसका अल्पवहुत्व  
 ३८ " " " परिणमन  
 ३९ " " पूर्व आहत पुद्गलों की परिणति,  
 शेष प्रश्नोत्तर ७ से १५ के समान  
 ४० क- त्रीन्द्रियों की स्थिति  
 ख- चउरिन्द्रियों " " शेष प्रश्नोत्तर ७ से १५ के समान  
 ४१ क- त्रीन्द्रियों चउरिन्द्रियों के आहार का ग्राह्य-अग्राह्य विभाग  
 और उसका अल्प-बहुत्व.  
 ख- त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय के आहार का परिणमन  
 ४२ क- पंचेन्द्रिय तिर्यचों की भिन्न-भिन्न स्थिति  
 ख- उच्छ्वास की विभिन्न मात्रा

- ग पचेन्द्रिय त्रियत्वा के आहार का समय  
 नेप प्रश्नोत्तर ४० ४१ के समान
- ४३ क मनुष्या की भिन्न भिन्न स्थिति  
 ख उच्छ्वास की विभिन्न मात्रा  
 ग मनुष्या के आहार का समय  
 घ परिणामन  
 गण प्रश्नोत्तर ७ स १५ के समान
- ४४ न व्यन्तर देवों की भिन्न भिन्न स्थिति  
 ख शेष प्रश्नोत्तर २४ २५ २६ के समान
- ४५ क ज्यान्दिषी देवों की भिन्न भिन्न स्थिति  
 ख का श्वालोच्छ्वास काल  
 ग क आहार का समय  
 नेप प्रश्नोत्तर ७ स १५ के समान
- ४६ क वैमानिक देवा की भिन्न भिन्न स्थिति  
 ख का श्वालोच्छ्वास काल  
 ग के आहार का समय भिन्न भिन्न  
 गण प्रश्नोत्तर ७ स १५ के समान  
 आत्मारम्भ आदि
- ४७ आत्मारमा परारभी उभयारभी और अनारभी जीव
- ४८ जीवा का आत्मारभी आदि होना शक्ति समय
- ४९ ५२ चौबीस दण्डका म आत्मारम्भ आदि
- ५३ सत्वेन्द्र जीवा म आत्मारम्भ आदि  
 ज्ञानादि
- ५४ ५५ पान दान चारित्र्य तप और मयम का इह भव परभव औ  
 उभयभव के अग्निव या नाग्निव  
 समवृत्त अनगार
- ५६ समवृत्त अनगार के निर्वाण का विशेष

५७ " " " दृढकर्म बन्धन,

संवृत अनगार

५८ संवृत अनगार का निर्वाण

५९ " " के सिथिल कर्म बंधन.

असंयत जीव

६०-६१ असंयत अव्रत जीवों की देवगति और उसके कारण  
व्यंतरदेव

६२ क- व्यंतर देवों के रमणीय देव लोक,

ख- ' ' की स्थिति

द्वितीय दुःख उद्देशक

६३ उत्थानिका

४४ जीव का स्वयंकृत दुःख वेदन, (एक जीव की अपेक्षा)

६५ " " " " का कारण

ख- चौबीस दण्डकों में—जीव का स्वयंकृत दुःख वेदन

६६ जीवों का स्वयंकृत दुःख वेदन (बहुत जीवों की अपेक्षा)

६७ क- जीवों के स्वयंकृत दुःख वेदन का कारण

ख- चौबीस दण्डकों में जीवों का स्वयंकृत दुःख वेदन

आयुवेदन

६८ क- जीव का स्वयंकृत आयुवेदन, (एक जीव की अपेक्षा)

ख- " " " " " का कारण

ग- चौबीस दण्डकों में स्वयंकृत आयुवेदन

घ- जीवों का स्वयंकृत आयुवेदन (बहुत जीवों की अपेक्षा)

ङ- " " " " " का कारण

च- चौबीस दण्डकों में स्वयंकृत आयुवेदन

चौबीस दण्डकों में—आहार, शरीर, स्वासोच्छ्वास, कर्म, वर्ण  
लेश्या, वेदना, क्रिया, आयु और उत्पन्न होने का विचार

- ३६ ३०४ नरसिका म समान आगर  
 ग शरीर  
 ग दशाभास्त्रधाम  
 घ आगर शरीर और दशाभास्त्रधाम के समान  
 न होने का कारण
- ३७ ३१  
 ३७ ३४  
 ५३ ३६  
 ७ ३८  
 ७६ ८०  
 ८१ ८२  
 ८३ क प्रभु कुमारों से अ गर शरीर दशाभास्त्रधाम वेन्ना क्रिया  
 आयु और उत्पन्न होने में समानता  
 ग कम वष और लक्ष्मण म विविधता  
 ग इसी प्रकार नागकुमार म शत्रु-भिन कुमार एक प्रभु  
 कुमारा क समान  
 ८४ पृथ्वीसायिकों के आगर कम वष और लक्ष्मण नरसिकों  
 क समान
- ८५ ८६  
 ८७ ८८ क म समान बनना होने का कारण  
 क्रिया  
 ग प्रभु ओ उत्पन्न शाना नरसिका के समान
- ८९ अन्धों म यावन लडा क्रिया तक पृथ्वीसायिकों के समान  
 ९० वधेन्द्रिय निर्धको से अहार आि नरसिकों के समान  
 किन्तु क्रिया से भिन्नता
- ९१ ९२ म समान क्रिया न होने के कारण  
 ९३ क मनुष्या से शरीर से वेन्ना पथल नरसिकों के समान किन्तु  
 आहार और क्रिया से भिन्नता

ख- आहार में समानता न होने का कारण

६४-६५ क- मनुष्यों में समान क्रिया न होने का कारण

ख- आयु और उत्पन्न होना नैरयिकों के समान

६६ क- व्यंतर, ज्योतिषी और वैमानिक देवों में आहारादि  
नैरयिकों के समान किन्तु वेदना में भिन्नता

ख- व्यंतर, ज्योतिषी और वैमानिकों में वेदना समान न होने  
का कारण

६७ चौबीस दण्डकों में सलेश्य जीवों के आहारादि की समा-  
नता और भिन्नता

६८ लेश्या वर्णन,

६९ चार प्रकार का संसार संस्थान काल

१०० नैरयिकों " " " "

१०१ तिर्यचों " " " "

१०२ मनुष्यों और देवों " "

१०३ नैरयिकों के संसार संस्थान काल का अल्प-बहुत्व

१०४ तिर्यचों के " " " "

१०५ मनुष्य और देवों के " " "

१०६ चारों गतियों के संसार संस्थान काल का अल्प-बहुत्व

१०७ जीव की अंतक्रिया (मुक्ति)

उपपात

१०८ क- देवगति पाने योग्य असंयत जीवों का उपपात

ख- अखण्ड संयमियों का उपपात

ग- खंडित " " "

घ- अखण्ड संयमानंयमियों (श्रावकों) का उपपात

ङ- खंडित संयमासंयमियों (श्रावकों) का उपपात

च- असंज्ञी-अमैयुनिक नृष्टि-जीवों " "

छ- तापसों का उपपात

ज- कांदपिकों का "



- १२६-१३१ कर्मबंध के कारणों की परम्परा  
कांक्षामोहनीय  
ख- जीव का उत्थान आदि से सम्बन्ध
- १३२ उदीरणा, गर्हा और संवर आत्मकृत है
- १३३ अनुदीर्ण तथा उदीरणा योग्य कर्म की उदीरणा
- १३४ उत्थान आदि से कर्मों की उदीरणा
- १३५ क- उपशमन गर्हा और मवर आत्मकृत है  
ख- अनुदीर्ण कर्म का उपशमन
- १३६ उत्थान आदि से कर्म का उपशमन
- १३७ क- वेदन और गर्हा आत्मकृत है  
ख- उदीर्ण का वेदन  
ग- उत्थान आदि से कर्म का वेदन
- १३८ क- निर्जरा आत्मकृत है  
ख- उदय में आये हुए कर्मों की निर्जरा  
ग- उत्थान आदि से कर्मों की निर्जरा
- १३९-१४२ चौबीस दण्डकों में कांक्षामोहनीय कर्म का वेदन
- १४३-१४५ श्रमण निर्ग्रन्थों का " " "  
चतुर्थ कर्म प्रकृति उद्देशक
- १४६ आठ कर्म प्रकृतिया
- १४७ मोहनीय कर्म के उदयकाल में परलोक प्रयाण
- १४८-१४९ " " " बाल-वीर्य से परलोक प्रयाण
- १५०-१५१ क- मोहनीय के उदयकाल में बालवीर्य से अपक्रमण  
ख- पंडित वीर्य से मोहनीय का उपशमन
- १५२ आत्मा द्वारा ही अपक्रमण होता है
- १५३-१५४ मोहनीय कर्म का वेदन होने पर ही मुक्ति.
- १५५ क- दो प्रकार के कर्म  
ख- दो प्रकार की कर्म वेदना



ग कम बन्ध और परिणमन के द्रष्टा भवज्ञ  
घ कृत कम का भोग किये बिना मुक्ति नहा

१५६ १५७

पुद्गल की प्रकालिक स्थिति

१५८

क स्वप्न

ख नीय

१५९ १६०

सुप्तस्थिती केवन समय मकर ब्रह्मचर्य और समिति  
मुक्ति के पावन से मुक्ति नहीं

१६१

कर्मों की ही मुक्ति

१६२

अनकृत की मुक्ति प्रप्तात्तर १५९ म १६२ तक प्रत्येक  
प्रश्नोत्तर म ज्ञान वाच क तीन-तीन विवरण

१६३

कर्मों का पूरा मखझ \*

### पंचम पृष्ठों उद्देशक

श्रीराम दृष्टिकर्ता क आशय

१६४

मान पृथ्वी (मान नरक)

१६५

मान नरक क आशय

१६६

भवतशामी देवा क आशय

१६७

पृथ्वीवाचका के आशय वाचन् ज्योतिषी देवा क आशय

१६८

विमान वाच

१६९

वाशय दृष्टिकर्ता म वि गति आदि दश स्थान

गन्तव्य क नरकवाशयो म स्थिति स्थान

१७० १७१

अथ य म ३ कृत स्थिति वाच नैरविद्या म कथाय के  
२७ भाषे

१७२ १७३

नरक वाच न कृत अज्ञानवाच वाच नैरविद्या म कथाय के  
२७ भाषे

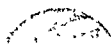
१७४

नरकवाच म नील मगीर

१७५

नील मगीर वाच नैरविद्या के कथाय के २७ भाषे

- १७६ नैरयिक असंघयणी है
- १७७ असंघयणी नैरयिकों में कपाय के २७ भांगे
- १७८ नैरयिकों का सस्थान
- १७९ हुंड संस्थानवाले नैरयिकों में कपाय के २७ भांगे
- १८० रत्नप्रभा में एक लेश्या
- १८१ कापोत लेश्यावाले नैरयिकों में कपाय के २७ भांगे
- १८२ रत्नप्रभा के नैरयिकों में तीन दृष्टि
- १८३ सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि नैरयिकों में कपाय के २७ भांगे  
सममिथ्यादृष्टि नैरयिकों में कपाय के ८० भांगे
- १८४ नैरयिक ज्ञानी भी हैं, अज्ञानी भी हैं
- १८५ ज्ञानी और अज्ञानी नैरयिकों में कपाय के २७ भांगे
- १८६ नैरयिकों में तीन योग
- १८७ तीन योग वाले नैरयिकों में कपाय के २७ भांगे
- १८८ नैरयिकों में साकारोपयोग और अनाकारोपयोग
- १८९ क- दोनों उपयोगवाले नैरयिकों में कपाय के २७ भांगे  
ख- शेष ६ नारकों में रत्न-प्रभा के समान  
ग- लेश्या में भिन्नता
- १९० क- अमुर कुमारों की स्थिति  
ख- असुर कुमारों में कपाय के प्रतिलोम भांगे  
ग- शेष भवनवानी देव अमुर कुमारों के समान
- १९१ क- पृथ्वीकायिकों की स्थिति  
ख- पृथ्वीकायिकों की स्थिति
- १९२ क- पृथ्वीकायिकों में कपाय के भांगे नहीं  
तेजोलेश्यावाले पृथ्वीकायिकों में कपाय के ८० भांगे  
ख- अष्कायिकों में कपाय के भांगे नहीं  
ग- तेजकायिकों में " " "  
घ- वाडकायिकों में " " "



- ६ वनस्पतिक्रायिको म  
 १६३ क विकलेत्त्रियो म स्थिति आदि दश स्थान  
 ल कपाय के भागो मे वविष्य  
 १६४ क त्रियत्र पचत्त्रियो म स्थिति आदि दश स्थान  
 ल कपाय के भागो मे वविष्य  
 १६५ क मनुष्यों मे स्थिति आदि दश स्थान  
 ल कषाथ के भागो मे वविष्य  
 १६६ क व्यतर आदि तीन दण्डको मे स्थिति आदि दश स्थान  
 ल कपाय के भागो मे वविष्य

### षष्ठ यावन्त उद्गक

#### सूर्य

- १६७ उन्ध्यास्त के समय समान दूरी से सूर्य दगन  
 १६८ २० १ क उन्ध्यास्त के समय समान दूरी से प्रकाश क्षेत्र  
 ल ताप क्षेत्र  
 ग स्थान  
 २०२ छाक यन्त्राक  
 मोकाल और अमोकाल का स्पश  
 २०३ छत्र निगाओ मे स्पश  
 २०४ द्वीप-समुद्र  
 द्वीपान और नागरात का स्पश  
 २०५ छत्र निगाओ म स्पश  
 २०६ क्रिया विचार  
 जीव द्वारा प्राणानिपान क्रिया  
 २०७ प्राणानिपान क्रिया का छत्र निगाओ मे स्पश  
 २०८ कृम है वह क्रिया है  
 २०९ क्रिया आरम्भत है

- २१० क्रिया सदा (तीन काल में) अनुक्रमपूर्वक कृत है
- २११-२१४ उन्नीस दण्डकों में प्राणातिपात क्रिया ।  
प्रश्नोत्तर २०६ से २१० के समान
- २१५ चौबीस दण्डकों में प्राणातिपात यावत्-मिथ्यादर्शन शल्य  
भ० महावीर और आर्यरोह  
भ० महावीर से आर्यरोह के ८ प्रश्न
- २१६ पूर्व या पश्चात् लोक-अलोक
- २१७ क- पूर्व या पश्चात् जीव-अजीव  
ख- " " भवसिद्धि-अभवसिद्धि  
ग- " " सिद्ध-असिद्धि  
घ- " " सिद्ध-असिद्धि
- २१८ " " अंड-कुर्कुटी
- २१९ " " लोकांत-अलोकांत
- २२० " " लोकांत-सप्तम अवकाशांतर आदि
- २२१ " " लोकांत-सर्वकाल
- २२२ क- " " अलोकांत के साथ २२०-२२१ के समान  
ख- " " सप्तम अवकाशांतर सप्तम तनुवात  
प्र० २२०-२२१ के समान
- २२३ " " सप्तम तनुवात सप्तम घनवात  
प्र० २२०-२२१ के समान (तीन काल में समान)  
लोक स्थिति
- २२४-२२५ क- आठ प्रकार की लोकस्थिति  
ख- मशक का उदाहरण
- २२६ जीव और पुद्गल  
जीव और पुद्गल का सम्बन्ध
- २२७ सद्धिद्र नाव का उदाहरण

अनन्त

२२८ २३० ग्रीक भाषा का गणन और अक्षरविधि

सामान्य मर्यादा उद्देश्य

२३१ पौरोहित्य मर्यादा का उद्देश्य

२३२ आहार

२३३ उद्देश्य

२३४ आहार

२३५ क उद्देश्य

ग आहार

२३६ उद्देश्य

विशेष गति

२३७ पौरोहित्य मर्यादा से विद्युत् गति और अक्षरविधि गति

२३८ जीव विद्युत् गति प्राप्त भी है और अक्षरविधि गति प्राप्त भी है

२३९ उद्देश्य मर्यादा से विद्युत् गति और अक्षरविधि प्राप्त की जा सकती है

आगामी भव का अनुभव का अनुभव

२४० मूर्च्छित रूप का अनुभव समय से पूर्व नियन्त्रण या अनुभव का अनुभव करना है

गर्भ विचार

२४१ २४२ गर्भ का उद्देश्य जीव अणुगत गति और अक्षरविधि

२४३ २४४ मर्यादा और अणुगत

२४५ का भव प्रथम आहार

२४६ आहार

२४७ स्थिति का मूलभूत का अभाव

२४८ आहार का परिणाम

२४९ २५० कवचाहार का अभाव

२५१ गम्य भाव का अनुभव

२५२ " " " पितृ "

मातृ-पितृ अंगों की जीवन पर्यंत स्थिति,

२५४ गर्भगत जीव की नरकोत्पत्ति के हेतु-अहेतु

२५-२५६ " " "देवलोकोत्पत्ति के " "

२५८ क- गर्भगत जीव का जयन उत्थान आदि माता के समान

ख- कर्मानुसार प्रसव

ग- " प्रशस्त-अप्रशस्त वर्ण, रूप, गंध, रस, स्पर्श आदि

अष्टम बाल उद्देशक

२५९ एकांत बाल जीव की चार गति में उत्पत्ति

२६० एकांत पंडित की दो गति

२६१ बाल-पंडित की एक देव गति

क्रिया विचार

२४२-२६५ मृग-घातक पुरुषको लगनेवाली क्रियाएँ

२६६-२६७ आग लगाने वाले को लगने वाली क्रियाएँ

२६८-२७१ मृग-घातक पुरुष को लगनेवाली क्रियाएँ

२७२-२७४ पुरुष-घातक " " " "

वीर्य विचार

२७५-२७६ जीव सवीर्य भी है, अवीर्य भी है

२७७-२७९ चौबीस दण्डक के जीव सवीर्य भी है और अवीर्य भी

नवम गुरुत्व उद्देशक

२८० जीव का गुरुत्व और उसके कारण

२८१ जीव का लघुत्व और उसके कारण

२८२ क- जीव की संसार वृद्धि और उसके कारण

ख- " " " हानि " " "

ग- " का " लम्बा होना " " "

घ- " " " छोटा होना " " "

ङ- " " " भ्रमण " " "

	व	जीविका	अन	और उसके कारण
२८३		सप्तम	अवकाशान्तर	अगुरु लघु
२८४	क		लघुवान	गुरु लघु
	ख		घनवान	
	ग		घनान्वि	
	घ		गृध्वा	
	ङ	सब अवकाशान्तर		अगुरु लघु
	च	द्वाप मनुष्य और त्र		गुरु लघु
२८५		चौबीस दण्डों में जीवा का लघुत्व और गुरुत्व		
२८६		चार अस्तित्वाय का अगुरु लघुत्व		
२८७		पुद्गाम्बित्वाय का अगुरुलघुत्व		
२८८ २६०		छत्त लक्ष्या का गुरुलघुत्व		
		छभाव लक्ष्या का अगुरुलघुत्व		
२६१	क	दृष्टि का	अगुरु लघुत्व	
	ख	चार दण्ड का		
	घ	पाच ज्ञान का		
	घ	तान अज्ञान का		
	ङ	चार मता का		
	च	औगण्डिक आदि चार गरीर का	गुरुत्व लघुत्व	
	छ	कामण गरीर का	अगुरु लघुत्व	
	ज	दो योग का		
	झ	सकारापथाय का		
	ञ	अनाकारोपयोग का		
	ट	सब द्रव्य		
	ठ	सब प्रपेणो		
	ड	सब पर्वणो		
	ढ	अनीत काव		

ण- अनागत काल का अगुरुलघुत्व  
त- सर्व " " " "

नीग्रंथ जीवन

निर्ग्रंथों के लिए लघुता आदि प्रशस्त है  
" " अक्रोध " " "

२६४ निर्ग्रंथों की अन्तः क्रिया के दो विकल्प

अन्य तीर्थियों की मान्यता

२६५ अन्य तीर्थी—एक समय में एक जीव के दो आयु का वंघ  
भ० का महावीर—

एक समय में एक जीव के एक ही आयु का वंघ  
पार्श्वार्पत्य कालास्यवेपी अणगर और स्थिवर

२६६-२६७ क- सामायिक—सामायिक का अर्थ

ख- प्रत्याख्यान—प्रत्याख्यान " "

ग- संयम —संयम " "

घ- संवर —संवर " "

अ- विवेक —विवेक " "

च- व्युत्सर्ग —व्युत्सर्ग " "

कालास्यवेपी के इन प्रश्नों का स्थविरों द्वारा समाधान

२६८ क्रोधादि की निंदा का प्रयोजन

२६९ गृही संयम और उसका प्रतिफल

३०० कालायस्वेशी द्वारा पंचमहाव्रत धर्म की स्वीकृति  
क्रिया विचार

३०१-३०२ श्रेष्ठ, दरिद्र, कृपण और क्षत्रिय को समान अप्रत्याख्यान  
क्रिया लगती है,

आहार विचार

३०३-३०४ आधाकर्म आहार करनेवाले निर्ग्रंथ के दृढ कर्मों का वंघ  
होता है



३०५ ३०६ शामुक एषणीय आहार करने वाले निषध के निश्चिन्त कर्मों का बध होता है

३०७ क अस्थिर में परिवर्तन होता है

ख स्थिर में परिवर्तन नहीं होता है

ग बाल और पंडित शास्त्र हैं

घ बालकपन और पंडितपन अज्ञास्त्र है

दशम खलन उद्देशक

अन्य तीर्थिका का मान्यताएँ

३०८ क्षणमान अचरित भावत निर्जीवमान अनिर्जीव

३०९ दो परमाणु पुद्गला का न विगमना

३१० तीन परमाणु पुद्गलों का विगमना

३११ पाच परमाणु पुद्गलों के चिपकने से कमवध

३१२ ३१३ खोलने से पूव या पश्चात् भाषा

३१४ ३१५ पूव क्रिया या पश्चात् क्रिया दूष का हेतु है

३१६ अदृश्य दुष है

३१७ ३२४ भ० महावीर द्वारा इन मान मान्यताओं का समाधान

अन्य तीर्थिका की मान्यता और उमका निराकरण

३२५ क एक समय में दो क्रिया

ख एक क्रिया

उपपात विरह

३२६ धौवीम दण्डकों में उपपात विरह

## द्वितीय शतक

प्रथम उच्छ्रयास-स्कंदक उद्देशक

१ ५ पृथ्वीकाद-यावत्-वत्सपतिहाय के स्वामीच्छयास का पौद्गलिक रूप

- ६-७ चौबीस दण्डकवर्तीजीवोंके श्वासोच्छ्वास का पौद्गलिक रूप  
 ८ वायुकाय वायुकाय का ही श्वासोच्छ्वास लेता है  
 ९ " " में उत्पन्न होता है  
 १० वायुकाय के जीव आघात से मरते हैं  
 ११-१२ " " सशरीरी एवं अशरीरी भी मरते हैं  
 प्रासुक भोजी अन्नगार  
 १३ अनिरुद्ध भववाले प्रासुक भोजी (मृत्तादि) निर्ग्रथ को पुनः मनुष्य  
 भव की प्राप्ति  
 १४-१५ उस निर्ग्रथ के छह नाम  
 १६ निरुद्ध भववाले प्रासुक भोजी निर्ग्रथ की मुक्ति  
 १७ उस निर्ग्रथ के छह नाम  
 स्कंदक परिव्राजक  
 १८ क- स्कंदक परिव्राजक का संक्षिप्त परिचय  
 क- स्कंदक से पिंगल निर्ग्रथ के प्रश्न  
 ग- लोक सान्त अनन्त  
 घ- जीव " "  
 ङ- सिद्धि "  
 च- सिद्ध " "  
 छ- संसार वृद्धि करने वाला मरण  
 ज- समाधान के लिए भ० महावीर के समीप स्कंदक का गमन  
 झ- भ० महावीर के कथन से स्कंदक के स्वागत के लिये श्री गौतम-  
 गणधर का जाना  
 ञ- भ० महावीर के समीप गौतम के साथ-साथ स्कंदक का पहुँचना  
 ट- भ० महावीर द्वारा स्कंदक के (पिंगल निर्ग्रथ के प्रश्नों से उत्पन्न)  
 संशयो का समाधान  
 ठ- भ० महावीर के समीप स्कंदक का प्रवज्या ग्रहण  
 ड- स्कंदक का एकादशांग अध्ययन, भिक्षु पडिमाओं की आराधना.

गुणरत्नमयस्वर तपकी आराधना मलेमना पादपोगमन अष्ट  
देवनोक मे समत महाविदेह प निर्वाण

### द्वितीय समुदघात उद्देशक

१९ क सान समुदघात

ख चौबीस देवको मे समुदघात

२० अणगार द्वारा केवली समुदघात

### तृतीय पृथ्वी उद्देशक

२१ मान पृथ्विया का वणन

२२ मय प्राणियो की सवय उत्पत्ति

### चतुर्थ इन्द्रिय उद्देशक

२३ ई द्रयो का वणन

### पचम अन्य तीर्थिक उद्देशक

२४ क जय तीर्थिक एक समय म दो वेद का वेत्त

ख भ० मन्वीर—एक समय मे एक वेद का वेत्त  
गम विचार

२५ उदक गम का जषय उत्कृष्ट काल परिमाण

२६ तिवय यानि मे गम का जषय उत्कृष्ट काल परिमाण

२७ मनुषी गम का जषय उत्कृष्ट काल परिमाण

२८ गम म मरकर पुन गम मे उत्पन्न हो तो उत्कृष्ट गमकाल म  
परिमाण

२९ मानुषी और तिवय स्त्री मे वीथ की जषय उत्कृष्ट स्थिति

३० एक भव मे एक जीव के उत्कृष्ट पिता

३१ ३२ एक भव म एक जीव के उत्कृष्ट पुत्र

३३ मैयुन सेवन मे होने वाला असप्तम  
तुमिका नगरी

३४ क तुमिका नगरी के श्रावकों का परिषय

ख- पार्श्वपत्य स्थविरों का परिचय

ग- श्रावकों का धर्मश्रवण

घ- स्थविरों से श्रावकों के प्रश्न

३५. १- समय का फल

२- तप का फल

३- देवलोक में उत्पन्न होने का कारण

४- काश्यप स्थविर का उत्तर

क- स्थवीरों का तुंगिका नगरी से विहार

ख- राजगृह में भ० महावीर और गौतम

ग- गौतम की भिक्षाचर्या

ङ- स्थविरों की योग्यता के सम्बन्ध में गौतम की जिज्ञासा

च- भ० महावीर द्वारा स्थविरों की योग्यता का समर्थन

३७-४६ पर्युपासना के फल की परम्परा

राजगृह के बाहर गर्मपानी का कुण्ड

४७ क- अन्य तीर्थिक राजगृह के बाहर यह गर्मपानी का कुण्ड अनेक योजन का लम्बा चौड़ा है

ख- भ० महावीर-इम "महातपोपतीर प्रभव" भरने का परिमाण  
५०० योजन है

षष्ठ भाषा उद्देशक

४८ अवधारिणी भाषा

सप्तम देव उद्देशक

४९ चार प्रकार के देव

५० भवनवासी देवों के स्थान-यावत्-वैमानिक देवों के स्थान

अष्टम चमरचंचा उद्देशक

५१ क- चमरेन्द्र की सुधर्मा सभा

ख- अरुणवर द्वीप, अरुणवर समुद्र

- ग त्रिपिच्छक बूट उत्पान पवन की ऊचाई और उदय  
 घ गोस्तूभ आचाम पवत  
 ङ पदमवर वदिका  
 च श्रामादि-चतसक की ऊचाई और विष्कम्भ  
 छ अरुणीदय ममुद्र मे अमरचचा राजधानी  
 ज राजधानी का आयाम विष्कम्भ  
 झ प्राकार आदि की ऊचाई और विष्कम्भ  
 ञ राजधानी के द्वारा की ऊचाई विष्कम्भ और परिक्षेप  
 ट ईशान कोण मे त्रिनगृह  
 ठ उपपत्ति मभा अभिवेक मभा आदि

### नवम समयक्षेत्र उद्देशक

५२ नमय क्षेत्र का परिमाण

### दशम अस्तिकाय उद्देशक

५३ पचास्तिकाय

५४ ५७ पचास्तिकाय के षण गंध रस, स्पश आदि

५८ ६२ धर्मास्तिकाय के प्रदेश धर्मास्तिकाय नहीं है

६३ ६४ उत्थाने आदि से जीव भाव का षणन

६५ दो प्रकार का आकाश

६६ लोकाकाश

६७ अलोकाकाश

६८ लोकाकाश मे षण गंध रस स्पश आदि

६९ पचास्तिकाय की महानता

७० अधोलोक का धर्मास्तिकाय से स्पर्श

७१ त्रियम्बोक का धर्मास्तिकाय से स्पर्श

७२ उच्चलोक का धर्मास्तिकाय से स्पर्श

७३ रत्नप्रभा का धर्मास्तिकाय से स्पर्श

- ७४-८५ क- रत्नप्रभा के घनोदधि आदि से धर्मास्तिकाय का स्पर्श  
 ख- इसी प्रकार धर्मास्तिकाय और लोकाकाश ,,

## तृतीय शतक

### प्रथम चमर विकुर्वणा उद्देशक

- १ गाथा (दश उद्देशकों के विषय)
- २ भोका नगरी में भ० महावीर का पदार्पण
- ३ क- चमरेन्द्र की विकुर्वणा के सम्बन्ध में अग्निभूति की जिज्ञासा  
 ख- भ० महावीर द्वारा चमरेन्द्र की ऋद्धि का वर्णन  
 ग- चमरेन्द्र की वैक्रिय करने की पद्धति का संक्षिप्त परिचय  
 घ- चमरेन्द्र की वैक्रिय शक्ति का वर्णन
- ४ चमरेन्द्र के सामानिक देवों की विकुर्वणा शक्ति
- ५ चमरेन्द्र के त्रायस्त्रिंशक देवों की विकुर्वणा शक्ति
- ६ चमरेन्द्र की अग्रमहीपियों की विकुर्वणा शक्ति
- ७ क- अग्निभूति का वायुभूति के समीप गमन  
 ख- वायुभूति के सामने अग्निभूति द्वारा चमरेन्द्र आदि की विकुर्वणा शक्ति का वर्णन  
 ग- अग्निभूति के कथन के प्रति वायुभूति की अश्रद्धा  
 घ- वायुभूति का भ० महावीर के समीप गमन  
 ङ- भ० महावीर द्वारा अग्निभूति के कथन का समर्थन  
 च- वायुभूति का अग्निभूति से क्षमायाचन
- ८ क- अग्निभूति और वायुभूति का भ० महावीर के समीप सह आगमन  
 ख- वैरोचनेन्द्र के सम्बन्ध में वायुभूति की जिज्ञासा  
 ग- भ० महावीर द्वारा चमरेन्द्र आदि के समान वैरोचनेन्द्र आदि की विकुर्वणा शक्ति का वर्णन

- ६ क धरम-नागवृक्षारोह आदि की विकृषणा व सम्बन्ध में अग्निभूति की विज्ञाना
- ख भ० महावीर द्वारा धरम-द्र आदि की विकृषणा का वर्णन
- ग शिव के इन्गे के सम्बन्ध में अग्निभूति की विज्ञाना और भ० महावीर द्वारा समाधान
- घ उत्तर व कद्रा के सम्बन्ध में वायुभूति की विज्ञाना और भ० महावीर द्वारा समाधान
- १० क शक्र-द्र की विकृषणा गति के सम्बन्ध में अग्निभूति की विज्ञाना
- ख भ० महावीर द्वारा शक्र-द्र की शक्ति का वर्णन
- ग शक्र-द्र आदि की विकृषणा गति का वर्णन
- ११ क भ० महावीर का शिव नियन्त्रक शक्र-द्र के सामानिक देव रूप में उत्पन्न
- ख नियन्त्रक देव की विकृषणा गति
- १२ क शक्र के अथ सामानिक देव की विकृषणा गति
- ख शक्र के आर्यस्थित देव की विकृषणा गति
- ग शक्र के लोकपान देव की विकृषणा गति
- घ शक्र के अग्रमहोपियो की विकृषणा गति
- १३ क ईशान-द्र की विकृषणा गति के सम्बन्ध में वायुभूति की विज्ञाना
- ख भ० महावीर द्वारा ईशान-द्र की विकृषणा का वर्णन
- १४ क भ० महावीर का शिव कर्तृ ईशान-द्र के सामानिक देव रूप में उत्पन्न
- ख कुरुवंत सामानिक देव का विकृषणा गति
- ग अथ सामानिक देव आर्यस्थित लोकपान और अग्रमहोपियो का विकृषणा गति
- १५ क भ० महावीर का महा नगरी स विहार
- ख भ० महावीर का राजगृह में पत्तपथ
- ग भ० महावीर की शक्ति के लिये ईशान-द्र का आवरण

- घ- ईशानेन्द्र की दिव्य ऋद्धि के सम्बन्ध में गौतम की जिज्ञासा
- ङ- भ० महावीर द्वारा समाधान
- १६ दिव्य ऋद्धि का ईशानेन्द्र के शरीर में प्रवेश
- १७ क- ईशानेन्द्र का पूर्व भव
- ख- ताम्रलिप्ती नगरी में मौर्यपुत्र नाथापति द्वारा प्रणामा प्रव्रज्या का ग्रहण करना
- ग- मौर्यपुत्र का अभिग्रह
- घ- प्रणामा प्रव्रज्या की विधि
- ङ- मौर्यपुत्र का अपरनाम तामली
- च- तामली का पादपोषण अतशन
- छ- इन्द्ररहित वलिचंचा राजधानी के अनेक असुरों द्वारा तामली से वैरोचनेन्द्र पद के लिये निदान करने का आग्रह
- ज- तामली की अस्वीकृति
- झ- तामली का ईशानेन्द्र होना
- ब- वलिचंचा राजधानी के असुरों द्वारा तामली के शव का अपमान
- ट- ईशानेन्द्र के सामने ईशान कल्पवासी देवों द्वारा वलिचंचावासी असुरों के कुकृत्य की चर्चा
- ठ- ईशानेन्द्र द्वारा वलिचंचा राजधानी भष्म
- ड- वलिचंचा राजधानीवासी असुरों द्वारा ईशानेन्द्र से क्षमा याचना
- १८ ईशानेन्द्र की स्थिति
- १९ ईशानेन्द्र का च्यवन, महाविदेह में जन्म और निर्वाण
- २०-२१ शक्रेन्द्र और ईशानेन्द्र के विमानों की ऊंचाई में अन्तर
- २२-२५ शक्रेन्द्र का ईशानेन्द्र के पास और ईशानेन्द्र का शक्रेन्द्र के पास गमन
- २६ शक्रेन्द्र-ईशानेन्द्र के और ईशानेन्द्र-शक्रेन्द्र के चारों ओर देखने में समय
- २७ शक्रेन्द्र-ईशानेन्द्र से और ईशानेन्द्र-शक्रेन्द्र से वार्तालाप करने में समय



- ६२ शब्दे इ और चमरे-इ की अशो उच्च गति का कालमान और  
अल्प-बहुत्व
- ६३ वय की अशो उच्च गति का कालमान और अल्प बहुत्व
- ६४ क गक इ वय और चमरे इ की अशो-ऊच्च गति का कालमान  
और अल्प बहुत्व
- ६५ क चमरे-इ की चिन्ता
- ६६ क चमरे इ का भ० महावीर की चरण वन्दना के लिए आयमन
- ६७ तीर्थम काल म जमुगो व जान का कारण
- तृतीय शिखा उद्देशक**
- ६८ क राजगृह भ० महावीर
- ६९ क क्रिया क सम्बन्ध में मद्रिलपुत्र की शिक्षामा
- ७० क पाच प्रकार की क्रिया
- ७१ दो प्रकार की वाचिकी क्रिया
- ७२ दो प्रकार की आधिकारिकी क्रिया
- ७३ दो प्रकार का प्रादुम्बिकी क्रिया
- ७४ दो प्रकार की परिनिर्णयिकी क्रिया
- ७५ दो प्रकार की प्राणानयन क्रिया
- ७६ क्रिया और वेदना की पूर्वापरता
- ७७ अमण निश्चया की क्रिया क दो कारण  
आव का कवन आदि
- ७८ जीव का कम्पन यावत-परिणमन क्रिया
- ७९ अण क्रिया क समय कवन-यावन परिणमन क्रिया का अभाव
- ८० कवन यावन परिणमन क्रिया के कारण
- ८१ शीघ की निष्क्रिय दशा
- ८२ निष्क्रिय का निर्वाण
- ८३ क निर्वाण क कारण
- लोके के जखने का उदाहरण

ग- तप्ततवेपर उदक विन्दु के नष्ट होने का उदाहरण

घ- रिक्त नौका का उदाहरण

ङ- संवृत अणुगार की इर्यावही क्रिया तथा अकर्म दशा

प्रमत्त और अप्रमत्त संयम

८१ एक या अनेक जीवों की अपेक्षा से प्रमत्त संयम की स्थिति

८२ एक या अनेक जीवों की अपेक्षा से अप्रमत्त संयम की स्थिति

लवण समुद्र में उवार-भाटा

८३ लवण समुद्र में उवार-भाटा आने का कारण

चतुर्थ यान उद्देशक

८४ अणुगार देवरूप यान को देखता भी है और नहीं भी देखता है  
देवरूप यान की चोभंगी

८५ क- अणुगार देवीरूप यान को देख भी संकता है और नहीं भी  
देख सकता है

ख- देवीरूपी यान की चोभंगी

८६ क- अणुगार देव-देवीरूप यान को देख सकता है और नहीं भी  
देख सकता है

ख- देव-देवी रूप यान की चोभंगी

८७-८८ क अणुगार वृक्ष के अन्दर-बाहर दोनों भागों को देख सकता है

ख- मूल और कंद की चोभंगी

ग- मूल और स्कंध की चोभंगी

घ- मूल और बीज की चोभंगी-यावत्

ङ- फल और बीज की चोभंगी—४५ भागे

वायुकाय

८९ वायुकाय की पताकारूप में विकुर्वणा

९० विकुर्वितरूप वायुकाय की गति का परिमाण

९१-९४ वायुकाय की गति के सम्बन्ध में विविध विकल्प

- २८ २९ गक २ और ईगानेन्द्र का एक-दूसरे के काय में परस्पर सहयोग  
 ३० ३१ गक ३ और ईगानेन्द्र के विधा ० का मनकुमारेन्द्र द्वारा निषेध  
 ३२ ३३ मनकुमार भवसिद्धिक-यावत् चमर है  
 ३४ मनकुमार देव ३ की स्थिति  
 ३५ मनकुमार का मन्त्रविन्दु म ज्ञान और निर्वाण

### द्वितीय चमरोत्पात उद्गक

- ३६ ४ रावगृह म भ० महाचार और गौतम तथा परिषद्  
 ख भ० म त्रोर व नामन चमरेन्द्र का सादय प्रमाण और पुन  
 स्वस्थानगमन  
 ३७ ३८ अनुरो का २ नप्रभा क बीच म निवास स्थान  
 ३९ ४१ क मानवी पृथ्वी पयन अमुरा व जाने का सामर्थ्य  
 म तृतीय पृथ्वी पयन अमुरा का सकारण गमन  
 ४२ ४४ क अमु १ का नन्ववर द्वाप म गमन  
 ग अमु ० का अग्रिहता इ पच क-याण प्रमगा म नियम लोक  
 म आगमन  
 ४५ ४७ क अनुरो का उच्च लोक म अच्युत देव लोक पयन गमन सामर्थ्य  
 ख अमु ० का मौजम पय न सकारण गमन  
 ४८ ५० क मुरा द्वारा वमानिक देवा के रत्ना का अपहरण  
 ख रना क अपहरण से अमुरा के शरीर में व्यथा  
 ग वमानक अ पराञ्ज क मास अमुरा का ऐन्द्रिक स्नह मय  
 ५१ अ न उ पपिणी अदसपिणी के पश्चात् अमुरा का मौजम  
 पय न गमन  
 ५२ अ न्त अ दि ती निशा म अमुरो का मौजम आदि के गमन  
 ५३ म त्रिक अमुरा का मौजम म गमन  
 ५४ चमरेन्द्र का मौजम म गमन  
 ५५ चमरेन्द्र की सक्रिय कृद्धि का चमरेन्द्र के शरीर म पुन प्रवेश  
 ५६ क चमरेन्द्र का पूर्वभाव

- ख- जंबूद्वीप. भरत क्षेत्र. विंध्यगिरि की तलहटी. बेमेल सन्निवेश  
 ग- पूरण गाथापति का "दानामा प्रव्रज्या" ग्रहण करना  
 घ- पूरण का अभिग्रह  
 ङ- दानामा प्रव्रज्या के विधि-विधान  
 च- पूरण का पादपोषण अनशन  
 छ- भ० महावीर के छद्मस्थ जीवन का इय्यारवां वर्ष  
 ज- सुंसुमारपुर के वाहर अशोक वन में भ० महावीर द्वारा एक  
 रात्री की भिक्षु प्रतिमा की आराधना  
 झ- पूरण का चमरेन्द्र के रूप में उपपात  
 ञ- चमरेन्द्र द्वारा सौधर्म कल्प के शक्रेन्द्र का अवलोकन  
 ट- चमरेन्द्र का रोष  
 ठ- भ० महावीर की निश्चा में चमरेन्द्र का सौधर्म कल्प में गमन  
 ड- चमरेन्द्र का शक्रेन्द्र को ललकारना  
 ढ- शक्रेन्द्र का चमरेन्द्र पर वज्रप्रहार  
 ण- चमरेन्द्र का पलायन और शक्रेन्द्र का पीछा करना  
 त- भ० महावीर के चरणों की शरण में चमरेन्द्र का पहुँचना  
 थ- शक्रेन्द्र का अवधि प्रयोग और वज्र को पकड़ना  
 द- शक्रेन्द्र का भ० महावीर से क्षमा याचना  
 ध- शक्रेन्द्र का चमरेन्द्र को अभयदान और शक्रेन्द्र का चमरेन्द्र  
 को न पकड़ सकने का कारण

५७-५८ पुद्गलगति और दिव्यगति का अन्तर

- ५९ क- शक्रेन्द्र की उर्ध्वगति और चमरेन्द्र की अधोगति तीव्र होती है  
 ख- इन्द्र और वज्र की गति में अन्तर  
 ६० उर्ध्व, अधो व मध्यलोक में शक्रेन्द्र की गति का अल्प-बहुत्व  
 ६१ क- ऊर्ध्व, अधो व मध्यलोक में चमरेन्द्र की गति का अल्प-बहुत्व  
 ख- वज्र की गति का अल्प-बहुत्व

- ६२ शबरेन्द्र और चमरेन्द्र की अधो-उर्ध्व गति का कालमान और अल्प-बहुत्व
- ६३ चन्द्र की अधो उर्ध्व गति का कालमान और अल्प बहुत्व
- ६४ क- शबरेन्द्र चन्द्र और चमरेन्द्र की अधो-उर्ध्व गति का कालमान और अन्य बहुत्व
- ख- चमरेन्द्र की चिन्ता
- ग- चमरेन्द्र का भ० महावीर की चरण वदना के लिए आगमन
- ६५ सौषर्भ का म अमुरो के जाने का कारण

### तृतीय विद्या उद्देशक

- ६६ क- शबरेन्द्र भ० महावीर
- ख- क्रिया के सम्बन्ध में मद्रितपुत्र की विज्ञाना
- ग- पाप प्रकार की क्रिया
- ६७ दो प्रकार की काविकी क्रिया
- ६८ दो प्रकार की आधिकारिकी क्रिया
- ६९ दो प्रकार की प्राद्विकी क्रिया
- ७० दो प्रकार की पत्न्यापनिकी क्रिया
- ७१ दो प्रकार की प्राणानिधान क्रिया
- ७२ क्रिया और वेदना का पूर्वपरला
- ७३-७४ धमय निर्देशा की क्रिया के दो कारण
- प्राण का कपन आदि
- ७५ जीव की कपन-यावन-परिणमन क्रिया
- ७६ अन् क्रिया के समय कपन यावन परिणमन क्रिया का अभाव
- ७७ कपन-यावन परिणमन क्रिया के कारण
- ७८ प्राण की निष्क्रिय दशा
- ७९ निष्क्रिय का विभाग
- ८० क- निर्वाण के कारण
- ख- पूने के अन्वये का उदाहरण

ग- तप्ततवेपर उदक त्रिन्दु के नष्ट होने का उदाहरण

घ- रिक्त नौका का उदाहरण

ङ- संवृत अणुगार की इयावही क्रिया तथा अकर्म दशा

प्रमत्त और अप्रमत्त संयम

८१ एक या अनेक जीवों की अपेक्षा से प्रमत्त संयत की स्थिति

८२ एक या अनेक जीवों की अपेक्षा से अप्रमत्त संयत की स्थिति

लवण समुद्र में ज्वार-भाटा

८३ लवण समुद्र में ज्वार-भाटा आने का कारण

चतुर्थ यान उद्देशक

८४ अणुगार देवरूप यान को देखता भी है और नहीं भी देखता है  
देवरूप यान की चोभंगी

८५ क- अणुगार देवीरूप यान को देख भी संकता है और नहीं भी  
देख सकता है

ख- देवीरूपी यान की चोभंगी

८६ क- अणुगार देव-देवीरूप यान को देख सकता है और नहीं भी  
देख सकता है

ख- देव-देवी रूप यान की चोभंगी

८७-८८ क अणुगार नृक्ष के अन्दर-बाहर दोनों भागों को देख सकता है

ख- मूल और कंद की चोभंगी

ग- मूल और स्कन्ध की चोभंगी

घ- मूल और बीज की चोभंगी-यावत्

ङ- फल और बीज की चोभंगी—४५ भागे

वायुकाय

८९ वायुकाय की पताकारूप में त्रिकुर्वणा

९० त्रिकुर्वितरूप वायुकाय की गति का परिमाण

९१-९४ वायुकाय की गति के सम्बन्ध में विविध विकल्प

मय

६५ बलाहक (मय) का स्त्रीरूप में परिगमन

६६ बलाहक (मघ) का स्त्रीरूप में गमन

६७ बलाहक (मेष) का परे श्रद्धि में गमन

६८ बलाहक बलाहक ही है

६९ बलाहक का मान आदि क रूप में गमन

अश्या के द्रव्य

१०० १०२ शोभाय दण्डका में लेपाइवो के अनुरूप नावा का उपाति

अणगार विकर्षण

१०३ १०४ बाह्य पुद्गला की ग्रहण करके की हृद विकुवणा से अणगारका

वैभारगिरि उकलघन

१०५ क बाह्य पुद्गला की ग्रहण करके की हृद विकुवणा से अणगार का

वैभारगिरि प्रवेग

ख बाह्य पुद्गला की ग्रहण करके की हृद विकुवणा से अणगार

का वैभारगिरि पवन को सम विषम रूप में परिवर्तन

१०६ माया अणगार ही विकुवणा करता है

१०७ क विकुवणा क कारण

ख भायी अनाराथक-अनाया आराथक

पक्षम स्त्री उहदाक

१०८ १०९ अणगार की स्त्रीरूप में विकुवणा

११० अणगार की सक्रिय सामर्थ्य

१११ अणगार का काल तत्त्ववाह वाचकर आकाश में गमन

११२ अणगार का सक्रिय सामर्थ्य

११३ १२४ अणगार की विकुवणा के विविधरूप

१२५ १२६ मायी और अमायी अणगार की देव शक्ति

### षष्ठ नगर उद्देशक

- १२७-१२६ राजगृह स्थित मिथ्या दृष्टि अणगार की वैक्रिय लविव से  
 वाराणसी विकुर्वण तथा विभंग ज्ञान से विपरीत दर्शन
- १३०-१३३ भावित आत्मा अणगार की विकुर्वणा का मायी मिथ्या दृष्टि  
 के विभंगज्ञान से विपरीत दर्शन
- १३४-१३६ भावित आत्मा अणगार की विकुर्वणा का अमायी सम्यग्दृष्टि के  
 अवधिज्ञान से यथार्थ दर्शन
- १४० भावित आत्मा अणगार द्वारा ग्राम, नगर आदि की विकुर्वणा
- १४१ भावित आत्मा अणगार का वैक्रिय सामर्थ्य  
 चमरेन्द्र
- १४२ चमरेन्द्र के आत्मरक्षक देवी का परिवार

### सप्तम लोकपाल उद्देशक

- १४३ शक्रेन्द्र के चार लोकपाल
- १४४ चार लोकपालों के चार विमान
- १४५ क- सोम लोकपाल के संध्यप्रभ महाविमान का स्थान  
 ख- संध्यप्रभ महाविमान की लम्वाई, चौड़ाई और परिधि  
 ग- सोमाराजधानी की लम्वाई-चौड़ाई  
 घ- सोम लोकपाल के आज्ञावर्ती देव-देवियाँ  
 ड- सोमलोकपाल के तत्वावधान में होनेवाले कार्य  
 च- सोम लोकपाल के अपत्यरूप देवी के नाम  
 छ- सोमलोकपाल की स्थिति  
 ज- सोमलोकपाल के अपत्यरूप देवी की स्थिति
- १४६ क- यम लोकपाल के वाशिष्ठ विमान का स्थान और लम्वाई-चौड़ाई  
 ख- —यावत्— प्रश्नोत्तरांक १४५ ग के समान  
 ग- यम लोकपाल के आज्ञानुवर्ती देव-देवियाँ  
 घ- यम लोकपाल के तत्वावधान में होने वाले कार्य



ड यमलोकपाल के अवताररूप देवा के नाम

च यमलोकपाल की स्थिति

छ यम लोकपाल के अवताररूप देवों की स्थिति

१४० क वरुण लोकपाल के सतजल महाविमान का स्थान  
सतजल महाविमान की लम्बाई चौड़ाई

ग १४५ के समय

घ वरुण लोकपाल के आगतनुवर्ती देव देवियाँ

ङ वरुण लोकपाल के तत्त्ववर्धान में होने वाले कार्य

च वरुण लोकपाल के आठ वररूप देवों के नाम

छ वरुण लोकपाल की स्थिति

ज वरुण लोकपाल के अष्ट वररूप देवों की स्थिति

१४८ क वैश्रमण लोकपाल के वज्रगु महाविमान का स्थान

ख वज्रगु महाविमान की लम्बाई चौड़ाई

ग वैश्रमण की राजधानी का स्थान १४५ के समय

घ वैश्रमण लोकपाल के आगतनुवर्ती देव देवियाँ

ङ वैश्रमण लोकपाल के तत्त्ववर्धान में होने वाले कार्य

च वैश्रमण लोकपाल के आठ वररूप देवों के नाम

छ वैश्रमण लोकपाल की स्थिति

ज वैश्रमण लोकपाल के अष्ट वररूप देवों की स्थिति

### आठम देव्याधिपति उद्गारक

१४६ अमृत कुमारों के अष्ट अधिपति

१५० क राग कुमारों के अष्ट अधिपति

ख सुवर्ण कुमारों के अष्ट अधिपति

ग विष्णु कुमारों के अष्ट अधिपति

घ अग्नि कुमारों के अष्ट अधिपति

ङ इन्द्र कुमारों के अष्ट अधिपति

- च- उदधिकुमारों के दश अधिपति  
 छ- दिशा कुमारों के दश अधिपति  
 ज- वायु कुमारों के दश अधिपति  
 झ- स्तनित कुमारों के दश अधिपति  
 ञ- दक्षिण दिशा के भवनपतियों के लोकपाल  
 १५१ क- पिशाचों के दो अधिपति-यावत्-पतंगदेव के दो अधिपति  
 ख- ज्योतिषी देवों के दो अधिपति  
 १५२ सौधर्म-ईशानकल्प के दश अधिपति-यावत्-सहस्रागार  
 पर्यंत दश अधिपति  
 आनतादि चार कल्प के दो अधिपति  
 नवम इन्द्रिय उद्देशक  
 १५३ पाच उन्द्रियों के विषय  
 दशम परिषद् उद्देशक  
 १५४ चमरेन्द्र की तीन सभायें-यावत्-अच्युत पर्यन्त तीन सभायें  
 चतुर्थ शतक  
 चार लोकपाल-विमान उद्देशक  
 १ ईशानेन्द्र के चार लोकपाल  
 २ चार लोकपालों के चार विमान  
 ३ क- सोम लोकपाल के सुमन महाविमान का स्थान लम्बाई-  
 चौड़ाई आदि  
 ख- शेष तीन विमानों के तीन उद्देशक  
 ग- चारों लोकपालों की स्थिति  
 घ- चारों लोकपालों के अपत्यरूप देवों की स्थिति  
 चार लोकपाल-राजधानी उद्देशक  
 ४ चार लोकपालों की चार राजधानियां

### नवम-नैरयिक उद्देशक

५ नैरयिक नैरयिका में उत्पन्न हाता है

### दशम लेश्या उद्देशक

६ नीललेश्या का लयौग पाकर कृष्ण लेश्या का नील लेश्या रूप में परिणमन

### पचम शतक

#### प्रथम सूर्य उद्देशक

१ क चपा नगरी पूणभद्र चैत्य

ख म० महावीर और गौतम

२ सूर्य का उदयास्त भिन्न भिन्न दिशाओं में

३ जम्बुद्वीप में दिवस और रात्रि का

४६ जम्बुद्वीप में दिवस और रात्रि का परिमाण  
नील षट्पुर्ण

१० ११ जम्बुद्वीप में वर्षा ऋतु

१२ क जम्बुद्वीप में हेमन्त ऋतु

ख जम्बुद्वीप में शीघ्र ऋतु

#### अथवा

१३ क जम्बुद्वीप में अथवा

ख जम्बुद्वीप में युगं वावन् सागरोपम

१४ क जम्बुद्वीप में उ मर्षिणी काल

ख जम्बुद्वीप में अवसर्षिणी काल

#### लवणसमुद्र

१५ लवण समुद्र में सूर्योन्मत्त सूर्याग्नि

१६ लवण समुद्र में उत्तमर्षिणी अवसर्षिणी

## घातकी खंड

- १७ घातकी खंड में सूर्योदय-सूर्यास्त  
 १८-१९ घातकी खंड में दिवस-रात्रि  
 २० घातकी खंड में उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी  
 कालोद् समुद्र  
 लवण के समान  
 पुष्करार्ध द्वीप  
 २१ घातकी खंड के समान

## द्वितीय वायु उद्देशक

- २२ चार प्रकार के वायु  
 २३ भिन्न-भिन्न दिशाओं में वायु का वहन  
 २४ द्वीप में चार प्रकार का वायु  
 २५ समुद्र में चार प्रकार का वायु  
 २६-२८ द्वीप और समुद्र के वायु का परस्पर विपर्यास  
 २९ चार प्रकार के वायु  
 ३० वायु की स्वाभाविक गति  
 ३१ चार प्रकार के वायु का वहन  
 ३२ वायु की वैक्रिय गति  
 ३३-३४ वायु कुमार द्वारा वायु की उदीरणा  
 ३५ वायु का श्वासोच्छ्वास

## ओदन आदि

- ३६ ओदन, कुल्माप और सुरा के पूर्व शरीर  
 ३७ लोहा, तांबा आदि के पूर्व शरीर  
 ३८ अस्थि, चर्म आदि के पूर्व शरीर  
 ३९ इंगल आदि के पूर्व शरीर

लवण समुद्र

- ४० लवण समुद्र का विष्कम्भ और परिवि  
तृतीय जालग्रथिका उद्देशक
- ४१ क अन्य लीपिक—एक समय में दो आनु का वेदन  
जाल ग्रथिका का उदाहरण  
ख भ० महावीर—एक समय में एक आनु का वेदन  
श्रु खला का उदाहरण
- ४२ ४३ चौबीस दंडक में आनुष्य मस्तिन जीवी का गनन  
४४ कर्मानुसार यानि का आनुवधन  
चतुर्थ शब्द उद्देशक
- ४५ छपस्य मनुष्य का आनाश गद सुता
- ४६ छपस्य मनुष्य का स्पष्ट शब्द सुता
- ४७ छपस्य मनुष्य का समीपवर्ती गद सुता
- ४८ ४९ कवनी समीप और दूर शाना प्रकार का गद सुत लता है
- ५० छपस्य मनुष्य हुमाता है
- ५१ कवनी हँसन ननी ३
- ५२ न हसन का कारण
- ५३ उत्तम दण्डक में करने वाले जाध मनि आठ कम बाधने हैं
- ५४ क छपस्य मनुष्य भी ब ऊध लता है  
ख कवनी नीद ब ऊध ननी लत  
ग नीद-ऊध न करने का कारण
- ५५ उत्तम दण्डक में नाद ब ऊध लत बनि जीवा के ७ ८ कम  
हरिणगमेपी त्र
- ५६ क हरिणगमेपी दव द्वाग गभ साहरण  
ख गभ साहरण की बीभवी
- ५७ हरिणगमेपी दव का तन्नाश में गभसाहरण सामर्थ्य

## आर्य अतिमुक्तक

- ५८ क- भ० महावीर का अंतेवासी अतिमुक्त कुमार श्रमण  
 ख- अतिमुक्त की नौका क्रीड़ा  
 ग- अतिमुक्त की इसी भव में मुक्ति  
 घ- अतिमुक्तक की निदान करने तथा सेवा करने के लिए  
 भ० महावीर का आदेश

## देव आगमन

- ५९ क- भ० महावीर के समीप दो देवों का महाशुक्र कल्प में आगमन  
 ख- भ० महावीर और देवों का मन से प्रश्नोत्तर करना  
 ग- देवों के सम्बन्ध में गौतम की जिज्ञासा  
 घ- गौतम और देवों का वार्तालाप  
 ङ- देवों का स्वस्थान गमन

६०-६३ देवों को नो संयत कहना उचित है

६४ देवताओं की भाषा अर्धमागधी भाषा है

केवली और छद्मस्थ

६५ केवली को मुक्त आत्मा का ज्ञान

६६ क- छद्मस्थ को मुक्त आत्मा का अज्ञान

ख- दो साधनों में छद्मस्थ को ज्ञान होता है

६७ जिनसे ज्ञान मुनकर छद्मस्थ ज्ञान प्राप्त करता है

६८ चार प्रकार के प्रमाण

६९ क- केवली को अंतिम कर्म वर्गणा का ज्ञान

ख- छद्मस्थ को अंतिम कर्म वर्गणा का अज्ञान

७० केवली का उत्कृष्ट मनोबल व वचनबल

७१-७२ वैमानिक देवों का उत्कृष्ट मनोबल व वचनबल

७३-७६ अनुत्तर देव और केवली का आलाप-संलाप

७७ अनुत्तर देव उपशांत मोही हैं

- ७८ ७९ केवली का अनीन्द्रिय ज्ञान
- ८० ८१ केवली का आकाश प्रदेशावगाहन सामर्थ्य  
चौदह पुर्वी
- ८२ ८३ चीन्ह धारणी का लब्धिनामर्थ्य  
पञ्चम छत्रस्थ उद्देशक
- ८४ छत्रस्थ की समय से निद्रि  
अन्य तीर्थिक—
- ८५ ८६ सभी प्राणी एव भूत वेदना का वेदन करते हैं  
भ० महावीर—  
सभी प्राणी एव भूत और अनेकभूत वेदना का वेदन करते हैं
- ८७ ८८ शीराम टडक में दानों प्रकार की वेदना का वेदन  
मसार मडल  
कलकर आदि
- ८९ क जम्बूद्वीप भरतक्षेत्र  
ख इस अवमर्षिणी में सात कुनकर हुए  
ग तीर्थकरो के माता पिता  
घ चक्रवर्ती की माता और स्त्री रत्न  
ङ वन्देय वासुदेव वासुदेव के माता पिता  
च प्रनिकामुन्द, सभी समवायाग के नमान  
षष्ठ आद्य उद्देशक
- ९० अन्त्यायु के तीन कारण
- ९१ दीर्घायु के तीन कारण
- ९२ अशुभ दीर्घायु के तीन कारण
- ९३ शुभ दीर्घायु के तीन कारण  
क्रिया विचार
- ९४ क चोरी में गये हुए माव की गोर करने में लगनेवाली क्रियाएँ

ख- चोरी में गया माल मिलने पर लगनेवाली क्रियाएँ

६५ विक्रेता और क्रेता को लगने वाली, क्रियाएँ  
विक्रेता के वीजक देने पर किन्तु क्रेता के माल न जाने तक  
लगनेवाली क्रियाएँ

६६ क्रेता के घर माल पहुँचने पर क्रेता को और विक्रेता को  
लगनेवाली क्रियाएँ

६७ क्रेता के मूल्य देने या न देने पर लगनेवाली क्रियाएँ  
अग्निकाय—कर्मबंधन

६८ अग्नि प्रज्वलित करनेवाले के अधिक कर्म बंध  
अग्नि शांत करनेवाले के अल्प कर्म बंध  
क्रिया विचार

६९-१०० शिकारी, धनुष, प्रत्यंचा आदि को लगनेवाली क्रियाएँ

१०१ अन्य तीर्थिक—

चार सौ पांच सौ योजन का मनुष्य लोक है

भ० महावीर—

चार सौ पांच सौ योजन का निरयलोक है

१०२ नैरयिकों का वैक्रिय

आधाकर्म आहार

१०३ क- आधाकर्म आहार का सेवी आलोचना करे तो आराधक

आधाकर्म आहार का सेवी आलोचना न करे तो अनाराधक

ख- क्रीत " "

ग- स्थापित " "

घ- रचित " "

ङ- कांतार भक्त " "

च- दुर्भिक्ष भक्त " "

छ- वादलिका भक्त " "

ज- ग्लान भक्त " "



॥ मन्मथानुरं भवन " "

ज- रात्रिनिद्रा भक्त " "

मन्मथ के दो-दो विकल्प

१०४ आशाकम आहार को निष्याप कहकर आशान प्रणय करने  
जाना धनाशयक

१०५ आशाकम आहार को अनवद्य ' ' "

मन्मथ के दो-दो विकल्प

आशाकम आशाकम

१०६ कनका निष्ठ आशाकम मन्मथ आशाकम की तीन भव से मुक्ति  
मृगामयी

१०७ मृगामयी से कम वचन

सप्तम पुद्गल कवन उद्देशक

१०८ परमाणु-पुद्गल का कवन

१०९ १११ क " मान और चतु प्रदेगी स्वयं का कवन

मन्मथ प्रणय पावन-अनन्य प्रदेगी स्वयं का कवन

११२ ११३ मन्मथ प्रणय पावन अनन्य प्रदेगी स्वयं का अतिपाठ  
में सुन्दर न ।

११४ अनन्य प्रदेगी स्वयं का अतिपाठ में सुन्दर  
अनन्य प्रदेगी स्वयं का अतिपाठ में सुन्दर  
अनन्य प्रदेगी स्वयं का पानी में आइ होना  
अनन्य प्रदेगी स्वयं का पुद्गलवचन में भी होना

११५ परमाणु पुद्गल अनन्य अनन्य और अप्रदेगी हैं

११६ ११७ दो प्रदेगी स्वयं मन्मथ और मन्मथी हैं

तीन प्रदेगी स्वयं अनन्य मन्मथ और मन्मथी हैं

११८ सत्त्वान्मन्मथान्मन्मथ और अनन्य प्रदेगी स्वयं मन्मथ  
और मन्मथी हैं

- ११६-१२१क- परमाणु पुद्गल का स्पर्शन-नव विकल्प  
 ख- दो प्रदेशी-यावत्-अनत प्रदेशी स्कंध का स्पर्शन
- १२२ परमाणु पुद्गल-यावत्-अनंत प्रदेशी स्कंध की स्थिति
- १२३ एक प्रदेशावगाढ पुद्गल-यावत्-असंख्यप्रदेशावगाढ पुद्गल का कंपन
- १२४ एक प्रदेशावगाढ-पुद्गल-यावत्-असंख्यप्रदेशावगाढ पुद्गल का निष्कम्प
- १२५ क- एक गुण काले पुद्गल की स्थिति  
 ख- यावत्-अनंतगुण काले पुद्गल की स्थिति  
 ग- शेष वर्णन---गघ, रस, स्पर्श की स्थिति  
 घ- सूक्ष्म परिणत पुद्गल की स्थिति  
 ङ- वादर परिणत पुद्गल की स्थिति
- १२६ शब्द परिणत पुद्गल की स्थिति  
 अशब्द परिणत पुद्गल की स्थिति
- १२७ स्कंध से परमाणु पुद्गल के विभक्त होने का काल
- १२८ द्विप्रदेशी-यावत्-अनत प्रदेशी स्कंध के विभक्त होने का काल
- १२९ एक प्रदेशावगाढ पुद्गल-यावत्-असंख्य प्रदेशावगाढ पुद्गल का कंपन काल
- १३० क- एक प्रदेशावगाढ पुद्गल-यावत्-असंख्य प्रदेशावगाढ पुद्गल का निष्कम्पन काल  
 ख- वर्णादि परिणत तथा सूक्ष्म-वादर परिणत पुद्गल का काल
- १३१ शब्द परिणत पुद्गल का काल
- १३२ अशब्द परिणत पुद्गल का काल  
 आयु अल्प-बहुत्व
- १३३ द्रव्यादि चार प्रकार के आयु का अल्प-बहुत्व परिग्रह
- १३४-१३६ चौबीस दण्डक में आरंभ-परिग्रह

हनु अहनु

१४० १४६ हनु-अहनु के आठ सूत्र

अष्टम निर्घोषी पुत्र उद्देशक

१४६ भ० के सिष्य नारदपुत्र और निर्घोषी पुत्र के प्रश्नोत्तर

१५० नारदपुत्र का मन सब पुद्गल साय, समध्य, सप्रदेग है  
निर्घोषीपुत्र का सापभवाद—

१५१ द्रव्यादग आदि का पुद्गला से अल्प-बहुल  
जीवों की वृद्धि हानि

१५२ जीव घटने नहीं हैं सदा समान रहने हैं ।

१५३ चौबीस दण्डक में जीव बटते भी हैं घग्ने भी हैं और  
समान भी रहने है

१५४ मिद्ध घग्ने नहीं है

१५५ चौबीस दण्डक में जीवों का हानि वृद्धि और अवस्थिति काल

१५६ मिद्धों का वृद्धि और अवस्थिति काल

१५७ क जाया का सोपचय निरुपचय ४ विकल्प

ख चौबीस दण्डक में जीवों का सोपचय-निरुपचय

१५८ मिद्ध सोपचय निरुपचय है

१५९ जीवों का सोपचय निरुपचय काल

१६० चौबीस दण्डक में जीवों सोपचय निरुपचय काल

१६१ मिद्धों का सोपचय निरुपचय काल

नवम राजगृह उद्देशक

१६२ राजगृह नगर को व्याख्या

महाला और अथकार

१६३ १६४ प्रहाग और अथकार का गुभागुभ

१६५ १७० चौबीस दण्डक में—प्रहाग और अथकार अथवा पुरस्वों  
का गुभागुभयन

## समय ज्ञान

१७१-१७४ चौबीस दण्डक में समय का ज्ञान

पार्श्वपत्य और महावीर

१७५-१७६क-पार्श्वपत्य स्थविरों का भ० महावीर से प्रश्न

असंख्य लोक में अनन्त रात्रि-दिन

ख- लोक के सम्बन्ध में भ० पार्श्वनाथ और भ० महावीर का एकमत

ग- पार्श्वपत्य स्थविरों का पंच महाव्रत ग्रहण

कुछ पार्श्वपत्यों की मुक्ति और कुछ की देवगति .

देवलोक

१७७ चार प्रकार के देवलोक

दशम चंद्र उद्देशक

चम्पा नगरी चन्द्र वर्णन

पंचम शतक प्रथम उद्देशक के समान

सूर्य के स्थान में चन्द्र का कथन

षष्ठ शतक

प्रथम वेदना उद्देशक

१ क- वेदना और निर्जरा की समानता

ख- महावेदना और अल्प वेदना में प्रशस्त वेदना की उत्तमता

२ छद्मी-सातवीं नरक में महावेदना

३ नैरयिकों और ध्रमण निर्ग्रथों के निर्जरा की तुलना

४ क- वस्त्र का उदाहरण

ख- एरण का उदाहरण

ग- घास के पूले का उदाहरण

घ- लोहे के गोले का उदाहरण

- जीव और करण
- ५-११ चार प्रकार के करण  
वेदना और निजरा
- १२ १३ वेदना और निजरा की चौभगी  
नैरयिको व थमणो के निजरा की तुपना
- द्वितीय आहार उद्देशक
- १४ राजशुह नगर आहार वषन
- तृतीय महा आश्रव उद्देशक
- १५ मरू व्याश्रव वाले के मश्राव-ध
- १६ वस्त्र का उदाहरण
- १७ अल्प आश्रव वाले क अल्पवध
- १८ वस्त्र का उदाहरण
- वस्त्र और पुद्गलोपचय जीव और कर्मोपचय
- १९-२० वस्त्रो के दो प्रकार का पुद्गलोपचय  
जीवो के प्रयोग से कर्मोपचय
- २१ चौवीस दण्डक म प्रयोग से कर्मोपचय
- २२ वस्त्र के पुद्गलोपचय सादि-मान्त
- २३ जीव के कर्मोपचय की चौभगी
- २४ जीव के कर्मोपचय सादि अनन्त न होने का कारण
- २५ वस्त्र सादि-मान्त आदि चौभगी
- २६ २७ जीव सादि मान्त आदि चौभगी
- कर्मों की स्थिति
- २८ आठ कम प्रवृत्तिया
- २९ आठ कम प्रवृत्तिया की स्थिति
- कर्मों क बाधन वादे
- ३०-३१ तीन वेदवान जीवो क आठ कर्मों का बाधन

- ३२ संयत आदि के आठ कर्मों का बन्धन  
 ३३ सम्यग्दृष्टि जीवों के आठ कर्मों का बन्धन  
 ३४ संज्ञी आदि के आठ कर्मों का बन्धन  
 ३५ भव सिद्धिक आदि के कर्मों का बन्धन  
 ३६ चक्षु दर्शन आदि दर्शन वाले जीवों के आठ कर्मों का बन्धन  
 ३७ पर्याप्त आदि के आठ कर्मों का बन्धन  
 ३८ भापक आदि के आठ कर्मों का बन्धन  
 ३९ परित्त आदि के आठ कर्मों का बन्धन  
 ४० आभिनिबोधिक ज्ञानी आदि के आठ कर्मों का बन्धन  
 ४१ मति अज्ञानी आदि के आठ कर्मों बन्धन  
 ४२ मनयोगी आदि के आठ कर्मों का बन्धन  
 ४३ साकारोपयुक्त आदि के आठ कर्मों का बन्धन  
 ४४ आहारक आदि के आठ कर्मों का बन्धन  
 ४५ सूक्ष्म आदि के आठ कर्मों का बन्धन  
 ४६ चरिम आदि के आठ कर्मों का बन्धन  
 ४७ वेदकों का अल्प-बहुत्व

### चतुर्थ सप्रदेशक उद्देशक

- ४८ काल की अपेक्षा जीव के सप्रदेश-अप्रदेश का चिन्तन  
 ४९ चौबीस दण्डक में काल की अपेक्षा जीव के सप्रदेश-अप्रदेश का चिन्तन  
 ५० काल की अपेक्षा जीवों के सप्रदेश-अप्रदेश का चिन्तन  
 ५१-५२ चौबीस दण्डक में काल की अपेक्षा जीवों के सप्रदेश-अप्रदेश भागों का चिन्तन

### प्रत्याख्यान और आयुष्य

- ५३ जीव प्रत्याख्यानी आदि है  
 ५४ चौबीस दण्डक के जीव प्रत्याख्यानी आदि हैं  
 ५५ चौबीस दण्डकों के जीव प्रत्याख्यान आदि के ज्ञाता-अज्ञाता हैं

५६ चौबीस दण्डको के जीव प्रत्यास्थान आदि के कर्ता हैं

५७ चौबीस दण्डक के जीवा का प्रत्यास्थान आदि से आसुष्य बय

पचम तमस्काय उद्देशक

५८ ५९ तमस्काय पानी है

६० तमस्काय का आदि अन्न

६१ तमस्काय का सस्यान

६२ तमस्काय का विष्कम्भ

६३ तमस्काय की मोटाई

६४-६५ तमस्काय मे घर ग्राम आदि नहीं हैं

६६ तमस्काय मे मेष है

६७ तमस्काय के शृष्टा देवादि हैं

६८ तमस्काय मे गाज बीज है

६९ गाज बीज देव आदि करते है

७० तमस्काय मे स्थूल पृथ्वी व अग्नि का नियेष

७१ ७२ तमस्काय मे चन्द्र सूर्य और चन्द्र सूर्य की प्रभा आदि नहीं हैं

७३ तमस्काय वा वण परम कृष्ण

७४ तमस्काय के तेरह नाम

७५ तमस्काय का परिणमन

७६ तमस्काय मे किन जीवों की उत्पत्ति और अनुपत्ति

कृष्ण रात्रि

७७ आठ कृष्ण रात्रियाँ

७८ आठ कृष्ण रात्रियाँ व स्थान

७९ कृष्णरात्रियाँ वा आयाम विष्कम्भ और परिधि

८० कृष्णरात्रियाँ की मोटाई

८१ ८२ कृष्णरात्रियों मे घर ग्राम आदि नहीं है

८३ कृष्णरात्रियाँ मे मेष है

८४ कृष्णरात्री की रचना देव करते हैं

८५ कृष्णराजियों में गाज-बीज हैं

८६ कृष्णराजियों में स्थूल अष्काय आदि नहीं हैं

८७-८८ कृष्णराजियों में चन्द्र, सूर्य आदि व उनकी प्रभा नहीं हैं

८९ कृष्णराजियों का वर्ण परम कृष्ण

९० कृष्णराजियों के आठ नाम

९१ कृष्णराजियों का परिणमन

९२ कृष्णराजियों में किन-किन जीवों की उत्पत्ति-अनुत्पत्ति

### लोकान्तिक देव

९३ क- आठ कृष्णराजियों के आठ अवकाशान्तरों में आठ लोकान्तिक विमान

ख- अर्चि विमान का स्थान

९४ अर्चिमाली विमान का स्थान

९५ रिप्ट विमान का स्थान

९६ सारस्वत देवों का विमान

९७ आदित्य देवों का विमान-यावत्-

९८ रिप्ट देवों का विमान

९९ सारस्वत आदित्य आदि देवों का परिवार

१०० लोकान्तिक विमानों का आधार

१०१ लोकान्तिक विमानों की स्थिति

१०२ लोकान्तिक विमानों से लोकान्त का अन्तर

### षष्ठ भव्य उद्देशक

१०३-१०४ सात पृथ्वियाँ-यावत्-

पांच अनुत्तर विमान

१०५-११० चौबीस दंडक में मारणान्तिक समुद्घात के पश्चात् अर्थात् उत्पन्न होने पर आहार, आहार परिणमन और शरीर रचना



## सप्तम शाली उद्देशक

- १११ शाली ब्रीहि आदि घायो की स्थिति  
 ११२ कलाद ममूर आदि घायो की स्थिति  
 ११३ अलसी कुमुम आदि घायो की स्थिति

## गणनीय काल

- ११४ एक मुहूर्त के स्वासोच्छ्वास  
 एक अहोरात्र के मुहूर्त  
 एक पत्र के अहोरात्र  
 एक मास के पक्ष  
 एक ऋतु के मास  
 एक अयन के ऋतु  
 एक सप्तमर के अयन  
 एक युग के सप्तमर  
 सौ वर्ष के युग-यावन तीथ प्रह्निका  
 ११५ दो प्रकार का औपमिक काल  
 ११६ पर्यायम और सांगोपम का वजन  
 सुपमा-सुपमा का भजन  
 ११७ इन अवर्माणो के प्रथम आरे का वजन

## अष्टम पृथ्वी उद्देशक

- ११८ आठ पृथ्वियां  
 ११९ १२५ मान पृथ्विया का वजन पण्डितक पथम तमन्भाव  
 उद्गार गुरु ६८ से ७२ के समान  
 १२६ १३१ गोमन्भाव यावन गर्वाय मिद्ध विमान परीत का वजन  
 पण्डितक पथम तमन्भाव उद्गार गुरु ६८ से ७२ के समान  
 १३२ बीरीम दण्डक म दण्ड प्रकार का सायुध  
 १३३ बीरीम दण्डक म दण्ड प्रकार का नियत रूप

१३४-१३५ चौबीस दण्डक में वारह आलापक

१३६ लवण समुद्र का वर्णन

१३७ द्वीप-समुद्रों के नाम

नवस कर्म उद्देशक

१३८ ज्ञानावरणीय के बंध के समय बंधनेवाली प्रकृतियाँ

महर्षिक देव और विकुर्वणा

१३९-१४० बाह्य पुद्गलों को ग्रहण करके महर्षिक देव का वैक्रिय करना

१४१ देवलोकवर्ती पुद्गलों को ग्रहण करके महर्षिक देव का वैक्रिय करना

१४२-१४३ वर्ण विपर्यय करने में महर्षिक देव का सामर्थ्य

देवता का जानना और देखना

१४४ अशुद्ध लेश्यावाले देवों का जानना और देखना (आठ विकल्प)

१४५-१४८ विशुद्ध लेश्यावाले देवों का जानना और देखना

दशम अन्य यूथिक उद्देशक

अन्य यूथिक

राजगृह में जितने जीव हैं उतने जीवों को भी सुख-दुःख होने में समर्थ नहीं हैं

महावीर

लोक के सभी जीवों को कोई सुख-दुःख देने में समर्थ नहीं है

१४९ क जीव की व्याख्या

ख चौबीस दंडक में जीव चैतन्य है

१५० क जीव की व्याख्या

ख चौबीस दंडक के जीव प्राणधारी हैं

१५१ चौबीस दण्डक के जीव भवसिद्धिक भी हैं, अबवसिद्धिक भी हैं  
अन्य यूथिक

१५२ सभी प्राणी एकान्त दुःख का वेदन करते हैं

महावीर

सभी प्राणी कभी मुख कभी दुःख का वेदन करते हैं

सब दुःख के वेदन का हनु

१३३ चौबीस दण्डन के जीव समीपवर्ति पुण्यना का आहार करते हैं

कवली इन्द्रिया द्वारा नहा जानना है

इन्द्रिया द्वारा न जानने का हनु

सप्तम सतक

प्रथम आहार उद्देशक

१ उत्पत्तिका

२ क परमेश प्राप्ति क प्रारम्भिक समय म जीव के आहारक और  
अनाहारक होने का निषय

ख चौबीस दण्डन के जीव के आहारक-अनाहारक होने का प्रण

३ जीव क अनाहार का प्रथम और अन्तिम समय  
जाक सम्भान

४ क लोक का सम्भान

ख साम्बत लोक मे जीव-अजीव के जाना हैं केवली हैं वे सिद्ध-  
बुद्ध और मुक्त होने हैं

क्रिया विचार

५ क अमणोपासक की सापरायिक क्रिया

ख सापरायिक क्रिया के हेतु  
प्रचालन

६ ७ प्रथम अणुवन के अतिचारो की मर्यादा

अमण को आहार देने का फल

८ ८ अमण को आहार देने का अमणोपासक को फल

कर्म रहित जीव की गति

१० ११ कम रहित जीव की गति के छ प्रकार

- १२ कर्मरहित की गति के सम्बंध में मृत्तिका से लिप्त तुम्बे का उदाहरण
- १३ कर्मरहित की गति के सम्बंध में पकी हुई फलियों का उदाहरण
- १४ कर्मरहित की गति के सम्बंध में धूम का उदाहरण
- १५ कर्मरहित की गति के संबन्ध में घनुप-वाण का उदाहरण  
दुःखी और दुःख
- १६-१७ दुःखी ही दुःख से युक्त है  
क- चौबीस दण्ड के दुःखी जीव ही दुःख से युक्त हैं  
ख- दुःख के संबन्ध में पांच विकल्प  
क्रिया विचार
- १८ अणुगार की इरियावही क्रिया  
श्रमण का आहार
- १९ अंगार, धूम और संयोजना दोषों की व्याख्या
- २० दोषरहित आहार
- २१ क्षेत्रातिक्रान्त आदि सदोष आहार
- २२ शस्त्रातीत शस्त्रपरिणत आदि आहार के विशेषणों की व्याख्या
- द्वितीय विरति उद्देशक**  
प्रत्याख्यान
- २३ सुप्रत्याख्यान और दुष्प्रत्याख्यान की विचारणा
- २४ दो प्रकार के प्रत्याख्यान
- २५ मूल गुण प्रत्याख्यान दो प्रकार का
- २६ सर्व मूल गुण प्रत्याख्यान पांच प्रकार का
- २७ देश मूल गुण प्रत्याख्यान पांच प्रकार का
- २८ उत्तरगुण प्रत्याख्यान दो प्रकार का
- २९ सर्व उत्तरगुण प्रत्याख्यान दश प्रकार का
- ३० देश उत्तरगुण प्रत्याख्यान दश प्रकार का

- ३१ जीव प्रत्याख्यानी और अप्रत्याख्यानी है
- ३२ चौबीस दण्डक में प्रत्याख्यानी और अप्रत्याख्यानी की विचारणा
- ३३ मूलगुण प्रत्याख्यानी आदि का अल्प बहुत्व
- ३४ ४३ चौबीस दण्डक में मूलगुण प्रत्याख्यानी का अल्प-बहुत्व समय असमय आदि
- ४४ क जीव समय असमय और समयसमय भी है
- ख चौबीस दण्डक में समय आदि हैं
- ग समय आदि की अल्प बहुत्व
- ४५ चौबीस दण्डक में प्रत्याख्यानी आदि
- ४६ प्रत्याख्यानी आदि का अल्प बहुत्व चाव शास्वत या अशास्वत
- ४७ जीव को शास्वत या अशास्वत मानना सापेक्ष है
- ४८ चौबीस दण्डक में जीव का शास्वत या अशास्वत मानना सापेक्ष है
- तृतीय स्थावर उद्देश्य**
- ४९ वनस्पतिकाय अल्पाहारी और महा आहारी
- ५० शीघ्र ऋतु में वनस्पति के पुष्पित फलित होने का कारण
- ५१ मूल कद यात्रण बीज भिन्न भिन्न जीवों से व्याप्त है
- ५२ वनस्पतिकाय का आहार और परिणमना
- ५३ आतृ आदि अनन्त जीवधानी वनस्पतियाँ है लक्षणा और कम
- ५४ व अल्प कम और महाकम का कारण
- ख चौबीस दण्डक में लक्षणा तथा अल्प कम का विचार
- ५५ वेदना और निजरा की भिन्नता
- ५६ चौबीस दण्डक में वेदना और निजरा की भिन्नता
- ५७ ५८ क वनस्पति और निजरा की भिन्नता तीन काल की अपेक्षा से विचार

ख- इसी प्रकार चौबीस दण्डक में 'क' के समान

- ५६ वेदना और निर्जरा का विभिन्न समय  
 ६० चौबीस दण्डक में वेदना और निर्जरा का विभिन्न समय  
 ६१ जीव को शास्वत या अशास्वत मानना सापेक्ष है  
 ६२ चौबीस दण्डक में जीव को शास्वत या अशास्वत मानना सापेक्ष है

### चतुर्थ जीव उद्देशक

- ६३ राजगृह-उत्थानिका  
 ६४ छ प्रकार के संसार स्थित जीव  
 ६५ पृथ्वी के छ भेद, छ भेदों की स्थिति, भवस्थिति, काय स्थिति, निर्लेपकाल, अनगार सम्बन्धि विचार, सम्यक्त्व क्रिया और मिथ्यात्व किया

### पंचम पक्षी उद्देशक

- ६६ तीन प्रकार का यानि संग्रह

### षष्ठ आयु उद्देशक

- ६७ क- राजगृह  
 ख- चौबीस दण्डक के जीव इसी भव में आयु बंध करते हैं  
 ६८ चौबीस दण्डक के जीव उत्पन्न होने के पश्चात् आयु का वेदन करते हैं

६९-७० चौबीस दण्डक के जीवों की अल्प या महा वेदना

७१ क- जीव के अनाभोग में आयु-बंध

ख- चौबीस दण्डक में अनाभोग (अनुपयोग) से आयु का बंध वेदनीय कर्म

७२ क- प्राणातिपात-यावत्-मिथ्यादर्शनशाल्य से जीव के कर्कश वेदनीय कर्म का बंध

ख- इसी प्रकार चौबीस दण्डक में 'क' के समान

- ७३ क जीव क अरुक्श वेदनीय कम का वध  
 ख अरुक्श वेदनीय कम के वध का हेतु  
 ग इसी प्रकार चौथीस दण्डक मे न ख के समान
- ७४ अज्ञाता वेदनीय कम का अस्तित्व
- ७५ न अज्ञाता वेदनीय के वध का हेतु  
 ग चौथीस दण्डक मे अज्ञाता वेदनाय के वध का हेतु  
 बाल चक्र
- ७६ इस अवसर्पिणी के दुषमदुषमा आरे का वर्णन
- ७७ छद्म आरे के मनुष्यो का आहार
- ७४ छद्म आरे के मनुष्यो की गति
- ७५ छद्म आरे के दवापदो की गति
- ७६ छद्म आरे क पक्षियो की गति  
 सप्तम अणगार उद्देशक
- ७७ क मृत अणगार की इरियाबही क्रिया  
 ख इरियाबही क्रिया के हेतु  
 काम भोग
- ७८ काम सृष्टी है
- ७९ काम सचित भी है अचित भी है
- ८० काम जीव भी है अजीव भी है
- ८१ काम जीवो को होता है
- ८२ काम दो प्रकार के है
- ८३ ८६ भोग प्रश्नोत्तरांक ७८ से ८१ के समान
- ८७ भोग तीन प्रकार के है
- ८८ काम भोग पाच प्रकार के है
- ८९ क जीव कामो भी है भोगी भी है  
 ख जीवो के कामी भोगी होने का हेतु
- ९० ९२ चौथीस दण्डक मे कामी भोगी

- ६३ कामी-भोगी का अल्प-बहुत्व
- ६४ क- उत्थानादि से छद्मस्थ का भोग सामर्थ्य  
ख- भोगों के त्याग से निर्जरा
- ६५ अधो अवधि ज्ञानी का भोग सामर्थ्य
- ६० परमावधि ज्ञानी का उसी भव से मोक्ष
- ६७ केवल ज्ञानी का उसी भव से मोक्ष
- ६८ असंज्ञी जीवों की अकाम वेदना
- ६९ संज्ञी जीवों की अकाम वेदना
- १०० संज्ञी जीवों की तीव्रेच्छापूर्वक वेदना
- अष्टम छद्मस्थ उद्देशक
- १०१ छद्मस्थ की केवल संयम, संवर, ब्रह्मचर्य और समिति-गुप्तिके पालन से मुक्ति नहीं होती
- जीव
- १०२ हाथी और कुंथुवे का जीव समान है  
सुख और दुःख
- १०३ चौबीस दण्डक में पापकर्म से दुःख, और कर्म निर्जरा से सुख संज्ञा
- १०४ चौबीस दण्डक में दश संज्ञा वेदना
- १०५ नरक में दश प्रकार की वेदना क्रिया विचार
- १०६ हाथी और कुंथुवे की समान अप्रत्याख्यान क्रिया आधाकर्म आहार
- १०७ आधाकर्म आहार करने वाले के कर्म प्रकृतियों का बंधन नवम असंवृत उद्देशक
- १०८ बाह्य पुद्गलों को ग्रहण करके असंवृत साधु का वैक्रिय करना



- १०६ ममीषवर्णी पुदगर्णों को ग्रहण करके असह्य साधु का वैश्विक करना  
महाशिला कटक सग्राम और रथ मुशल सग्राम
- ११० महागिता-कटक सग्राम का वणन
- १११ महागिता कटक नाम का हेतु
- ११२ महागिता-कटक म मनुष्यों का सहार
- ११३ महाशिला-कटक म मरे हुए मनुष्यों की गति
- ११४ रथ-मुशन सग्राम में जय-वराजय
- ११५ रथ-मुशन सग्राम नाम का हेतु
- ११६ रथ मुशन सग्राम म मनुष्यों का सहार
- ११७ रथ-मुशल सग्राम में मरे हुए मनुष्यों की गति
- ११८ काणिक के साथ शक्रेन्द्र और चक्रेन्द्र क महयोग का हेतु
- ११९ युद्ध म मरने वाले सभी स्वर्ग में नहीं जाते
- १२० वैशम्पैय निवामी नाग पीत्र वरुण का सग्राम में गमन
- १२१ क वरुण का अभिग्रह  
ख वरुण पर प्रहार  
ग वरुण का युद्ध में प्रहरण  
घ वरुण की आलोचना एवं मृत्यु  
च वरुण के बालनित्र की धारापना
- १२२ वरुण की देवगति
- १२३ वरुण के मित्र का महाविदेह में जन्म
- १२४ वरुण और उसके मित्र की मुक्ति
- दशम अन्य तीर्थिक उद्देशक
- १२५ क राजशूह  
ख कालादायी आदि अथ तीर्थिक  
ग पञ्चाभिन्नाय के मन्वन्त में अथ तीर्थिकों का प्रसन्न और गौरव  
गणधर का समाधान

- २६ क- पुद्गलास्तिकाय के कर्मबंध नहीं होता  
ख- कालोदायी का प्रब्रज्या ग्रहण
- २३ पापकर्मों का अशुभ फल
- २८ अशुभ कर्मफल के संबंध में विषमिश्रित भोजन का उदाहरण
- २९ शुभ कर्मों का शुभ फल
- ३० क- शुभ कर्मफल के संबंध में औपधिमिश्रित आहार का उदाहरण  
ख- प्राणातिपात विरति का फल
- ३१ अग्निकाय को प्रद्विप्त अथवा उपशांत करने वाले के कर्मबंध की विचारणा
- ३२ अचित्त पुद्गलों का प्रकाश
- ३३ क- तेजोलेश्या के पुद्गलों का प्रकाश  
ख- कालोदायी की अन्तिम आराधना एवं मुक्ति

## अष्टम शतक

### प्रथम पुद्गल उद्देशक

- १ क- राजगृह  
ख- तीन प्रकार के पुद्गल
- २-१७ चौबीस दण्डक में प्रयोग परिणत पुद्गल
- १८-२५ चौबीस दण्डक में-सूक्ष्म वादर तथा पर्याप्ता-अपर्याप्ता की अपेक्षा प्रयोग
- २६ क- चौबीस दण्डक में सूक्ष्म पर्याप्ता-अपर्याप्ता की अपेक्षा प्रयोग परिणत पुद्गल  
ख- चौबीस दण्डक में वादर पर्याप्ता-अपर्याप्ता की अपेक्षा प्रयोग परिणत पुद्गल  
ग- चौबीस दण्डक में इन्द्रियों की अपेक्षा प्रयोग परिणत पुद्गल  
घ- चौबीस दण्डक में शरीरों की अपेक्षा प्रयोग परिणत पुद्गल

- छ चौबीस दण्डक में वण, गंध, रस स्पर्श और सस्थान की अपेक्षा प्रयोग परिणत पुद्गल  
 च चौबीस दण्डक में शरीर तथा वण, गंध, रस स्पर्श सम्बन्धन की अपेक्षा से प्रयोग परिणत पुद्गल  
 छ चौबीस दण्डक में इंद्रिया तथा वर्णादि की अपेक्षा से प्रयोग परिणत

२६ मिश्रपरिणत पुद्गल प्रश्नोत्तराक २ में ३१ तक के समान नव दंडक (विकल्प)

२७ विद्यमापरिणत पुद्गल प्रश्नोत्तराक २ में ३१ तक के समान नवदंडक (विकल्प)

२८ एक द्रव्य के प्रयोग परिणत पुद्गल

२९ ३४ तीन योग की अपेक्षा एक द्रव्य के प्रयोग परिणत पुद्गल

३५ ४६ पाच शरीर की अपेक्षा एक द्रव्य के प्रयोग परिणत पुद्गल

५० ५१ एक द्रव्य के मिश्र परिणत पुद्गल

५२ एक द्रव्य के विद्यमा परिणत पुद्गल

५३ ५७ एक द्रव्य के वण, गंध, रस स्पर्श तथा सस्थान परिणत पुद्गल

५८ दो द्रव्यो के प्रयोग मिश्र तथा विद्यमा परिणत पुद्गल

५९ ६१ तीन योग की अपेक्षा दो द्रव्यो के प्रयोग परिणत पुद्गल

६२ मिश्र परिणत दो द्रव्य

६३ विद्यमा परिणत दो द्रव्य

६४ तीन द्रव्यो के प्रयोग मिश्र तथा विद्यमा परिणत पुद्गल

६५ तीन योग की अपेक्षा तीन द्रव्यो के परिणत पुद्गल

६६ ८९ चार पाच छह सात अठार द्रव्य परिणत पुद्गल

७० तीन प्रकार के पुद्गलों का अप-बहुत्व

- द्वितीय आशिविष उद्देशक  
 ७१ दो प्रकार के आशिविष  
 ७२-७४ जाति आशिविष चार प्रकार के  
 ७५-८५ चौबीस दण्डक में कर्म आशिविष का विचार  
 छद्मस्थ और सर्वज्ञ  
 ८६ क- छद्मस्थ दश वस्तुओं को नहीं जानता  
 ख- सर्वज्ञ दश वस्तुओं को जानता है  
 ज्ञान का विस्तृत वर्णन  
 ८७ पांच प्रकार का ज्ञान  
 ८८ मतिज्ञान चार प्रकार का  
 ८९ तीन प्रकार का अज्ञान  
 ९० मति अज्ञान चार प्रकार का  
 ९१ अवग्रह दो प्रकार का  
 ९२ श्रुत अज्ञान  
 ९३ विभंग ज्ञान (ज्ञान का संस्थान)  
 ९४-९६ चौबीस दण्डक में ज्ञानी-अज्ञानी  
 १०० सिद्ध-केवलज्ञानी  
 १०१-१०४ पांच गति में ज्ञानी-अज्ञानी  
 १०५-१०७ इन्द्रिय वर्गणा में ज्ञानी-अज्ञानी  
 १०८-१०९ काय वर्गणा में ज्ञानी-अज्ञानी  
 ११०-११२ सूक्ष्म आदि में ज्ञानी-अज्ञानी  
 ११३-१२० चौबीस दण्डक के पर्याप्त-अपर्याप्त में ज्ञानी-अज्ञानी  
 १२१-१२४ चार गति के भवस्थ जीवों में ज्ञानी-अज्ञानी  
 १२५-१२७ भवसिद्धिक आदि में ज्ञानी-अज्ञानी  
 १२८ संज्ञी आदि में ज्ञानी-अज्ञानी  
 १२९-१३६ दश प्रकार की लब्धियों के भेद  
 १३७-१५६ दश लब्धि सहित तथा दश लब्धि रहित में ज्ञानी-अज्ञानी

- १६० १६१ साकाराद्बुद्ध मे ज्ञानी-अज्ञानी  
 १६२ १६३ अनाकारोद्बुद्ध मे ज्ञानी अज्ञानी  
 १६४ योग वगणा मे ज्ञानी अज्ञानी  
 १६५ १६६ भेदया वगणा मे ज्ञानी-अज्ञानी  
 १६७ १६८ कथाय वगणा मे ज्ञानी अज्ञानी  
 १६९ वेद वगणा मे ज्ञानी-अज्ञानी  
 १७० १७१ आहारक वगणा मे ज्ञानी-अज्ञानी  
 १७२ १७६ पाच ज्ञान का विषय  
 १७७ १७९ तीन अज्ञान का विषय  
 १८० ज्ञानी की स्थिति  
 १८१ पाच ज्ञान की स्थिति  
 १८२ १८४ पाच ज्ञान तीन अज्ञान के पयव  
 १८५ पाच ज्ञान के पयवों का अल्प-बहुत्व  
 १८६ तीन अज्ञान के पयवा का अल्प-बहुत्व  
 १८७ पाच ज्ञान-तीन अज्ञान के पयवों का अल्प-बहुत्व  
 तृतीय वृक्ष उद्देशक  
 १८८ तीन प्रकार के वृक्ष  
 १८९ नान्येय जीव वाल वृक्ष अनेक प्रकार के  
 १९० असन्ध्येय जीव वाल वृक्ष दो प्रकार के  
 १९१ क एक बीजवाले वृक्ष अनेक प्रकार के  
 ल अनेक बीजवान वृक्ष अनेक प्रकार के  
 १९२ अनन जीववाले वृक्ष अनेक प्रकार के  
 नीचरु प्रदग्  
 १९३ देह का सुम्ननर सण्ड भी जीव प्रदेग से व्याप्त है  
 १९४ जीव प्रदग् को शम्न से पीडा नहीं हान्ती  
 पृथ्वा  
 १९५ आठ पृथ्विया  
 १९६ आठ पृथ्विया का चरम अचरम विचार

### चतुर्थ क्रिया उद्देशक

- १९७ क- राजगृह  
ख- पांच प्रकार की क्रिया

### पंचम आजीविक उद्देशक

- १९८ क- राजगृह. स्थविर  
ख- श्रावक सामायिक के पश्चात् अपने ही उपकरणों की शोध करता है
- २९९ श्रावक के ममत्व भाव का प्रत्याख्यान नहीं है
- २०० सामायिक व्रत स्वीकार करने पर भी स्त्री उसी की स्त्री है
- २०१ श्रावक का प्रेम वधन अविच्छिन्न है
- २०२ प्राणातिपात के प्रत्याख्यान का स्वरूप
- २०३ अतीत-कालीन प्रतिक्रमण के भागे
- २०४ वर्तमान-कालीन संवर के भागे
- २०५ भविष्य कालीन प्रत्याख्यान के भागे
- २०६ क- स्थूल मृपावाद प्रत्याख्यान के भागे  
ख- स्थूल अदत्तादान प्रत्याख्यान के भागे  
ग- स्थूल मैधुन प्रत्याख्यान के भागे  
स्थूल परिग्रह प्रत्याख्यान के भागे
- २०७ आजीविक का सिद्धान्त
- २०८ आजीविक वारह श्रमणोपासक
- २०९ श्रावकों के त्याज्य पद्रह कर्मादान  
देवलोक
- २१० चार प्रकार के देवलोक
- षष्ठ प्रासुक-आहारादि उद्देशक
- २११ उत्तम श्रमण को शुद्ध आहार देने से एकान्त निर्जरा

- २१२ उत्तम भ्रमण को अशुद्ध आहार देने से अधिक निजरा और  
अप पाप
- २१३ अक्षयन को शुद्ध जषवा अशुद्ध आहार देने से एकान पाप
- २१४ २१५ गृहस्थ ने जिम भ्रमण के निमित्त आहार दिया है वह भ्रमण  
न मिले तो उस आहार को एकांत स्थान में परठने का  
विधान  
दश भ्रमणों के निमित्त दिये दृष्ये हुए आहार की भी यही  
विधि है
- २१६ पात्र शुद्ध्या रजोहरण खोलपट्ट कवल दण्ड मस्तारक आदि  
के सम्बन्ध में भी पूर्वोक्त विधि
- २१७ २२२ आराधक नियंत्र
- २२३ आराधक निग्रही
- २२४ क आराधक होने का हेतु  
ख द्विदमान रोम आन् द्विन्न माने जाते है  
ग दह्यमान वृण आन् दग्ध माने जाते है  
घ प्रक्षिप्यमान वस्त्र प्रथिप्य माने जाते है  
ङ रज्यमान धस्य एवत माने जाते हैं  
प्रकाण्डक
- २२५ दीपक में ज्योति जलती है
- २२६ प्रवर्जित घर में ज्योति जलती है  
क्रिया विचार
- २२७ औत्तारिक शरीर सम्बन्धि क्रिया
- २२८ चौबीस दण्डक में औत्तारिक शरीर सम्बन्धि क्रिया
- २२९ औत्तारिक शरीर सम्बन्धि एक जीव द्वारा क्रिया
- २३० चौबीस दण्डक में औत्तारिक शरीर सम्बन्धि एक जीव द्वारा  
क्रिया
- २३१ औत्तारिक शरीर सम्बन्धि अनेक जीवों द्वारा क्रिया

- २३२ चौबीस दण्डक में औदारिक शरीर सम्बन्धि अनेक जीवों द्वारा क्रिया
- २३३ अनेक जीवों के औदारिक शरीर से होने वाली क्रियायें
- २३४ चौबीस दण्डक में अनेक जीवों के औदारिक शरीर से होने वाली क्रियायें
- २३५ क- वैक्रिय आदि शरीर सम्बन्धि क्रियायें  
ख- वैक्रिय आदि शरीरों से होने वाली क्रियायें  
ग- प्रत्येक शरीर के चार-चार विकल्प

### सप्तम अदात्तान उद्देशक

- २३६ राजगृह. गुणशील चैत्य. भ० महावीर  
अन्यतीर्थिक और स्थविरों का संवाद

### २३७-२४७ अन्य तीर्थिक

सभी स्थविर असंयत हैं क्योंकि वे अदत्त लेते हैं

### २४८-२४९ स्थविर

क- हम दत्त लेते हैं इसलिये संयत हैं

ख- किन्तु तुम सब असंयत हो

### २५०-२५१ अन्य तीर्थिक

सभी स्थविर बाल हैं

### २५२-२५६ स्थविर

क- हम सभी कार्य विवेक पूर्वक करते हैं, इसलिये बाल नहीं हैं  
तुम सब बाल हों

ख- स्थविरों द्वारा "गति प्रपात" अध्ययन की रचना

### २५७ पांच प्रकार का गति प्रपात

### अष्टम प्रत्यनीक उद्देशक

२५८ तीन प्रकार के गुरु प्रत्यनीक

२५९ तीन प्रकार के गति प्रत्यनीक



- २६० तीन प्रत्यनीक  
 २६१ तीन प्रकार के अनुकम्पा प्रत्यनीक  
 २६२ तीन प्रकार के श्रुत प्र यनीक  
 २६३ तीन प्रकार के भाव प्रत्यनीक  
 व्यवहार  
 २६४ पाच प्रकार वा व्यवहार  
 २६५ व्यवहार का फल  
 कर्मबन्ध  
 २६६ इयापयिक और सापरायिक कम ब ध  
 २६७ २६८ इयापयिक कम बाधने वाले (अनेक दिक्क)  
 २७० २७२ इयापयिक कम के भागे  
 २७३ २७५ सापरायिक कम बाधनेवाले  
 २७६ २७८ सापरायिक कम के भागे  
 कर्म प्रकृतिया  
 २७९ आठ कम प्रकृतिया  
 परापह  
 २८० २८६ क बाबीस परीपह  
 ख चार कम के उच्य से बाबीस परीपह  
 २८७ २८२ कर्मानुसार परापहा का निजय  
 सूर्य नशम  
 २८३ मूय नशम—प्रात मच्छात्त साथ  
 २८४ २८५ मय की मवत्र गमान ऊवाई  
 समीप और दूर से मूय के दिलाई देने का हेतु  
 २८६ ३०१ मय का प्रकाय शेष  
 ३०२ मय का नाप क्षेत्र  
 ३०३ मानुषात्तर पत्रत क अरर चउ मूय भादि  
 ३०४ मानुषोत्तर पत्रत के बाहर चउ मूय भादि

## नवम प्रयोग बन्ध उद्देशक

- ३०५ दो प्रकार के बन्ध  
 ३०६ दो प्रकार के विस्त्रमा बंध  
 ३०७-३१० तीन प्रकार के अनादि विस्त्रसा बन्ध  
 ३११ तीन प्रकार के सादि विस्त्रमा बन्ध  
 ३१२ बन्धन प्रत्ययिक बन्ध  
 ३१३ भाजन प्रत्ययिक बन्ध  
 ३१४ परिणाम प्रत्ययिक बन्ध  
 ३१५ क- तीन प्रकार का प्रयोग बन्ध  
 ख- चार प्रकार का सादि सान्त बन्ध  
 ३१६ आलापन बन्ध  
 ३१७ चार प्रकार का आलीन बन्ध  
 ३१८-४०८ दो प्रकार का शरीर बन्ध  
 ४०९ देश बन्धक, सर्व बन्धक और अबन्धक की अल्प-बहुत्व

## दशम आराधना उद्देशक

- ४१० क- राजगृह. अन्य तीर्थिक  
 ख- अन्य तीर्थिक—शील ही श्रेय है. धृत ही श्रेय है  
 ग- महावीर—शील और धृत सम्पन्न के चार भागे  
 आराधक-विराधक  
 ४११ तीन प्रकार की आराधना  
 ४१२ ज्ञान आराधना तीन प्रकार की  
 ४१३ क- दर्शन आराधना तीन प्रकार की  
 ख- चारित्र आराधना तीन प्रकार की  
 ४१४-४१६ तीन आराधनाओं का परस्पर सम्बन्ध  
 ४१७-४२२ तीन आराधनाओं के आराधकों का मोक्ष  
 पुद्गल परिणाम  
 ४२३-४२५ क- पांच प्रकार का पुद्गल परिणाम

स वर्णादि पुद्गल परिणाम के भेद

- ४२६ ४३० क पुद्गलास्तिकाय का एक प्रदेश-यावत  
 स पुद्गलास्तिकाय के अनन्त प्रदेश  
 ४३१ लोकावाग के प्रदेश  
 ४३२ एक जीव के प्रदेश  
 कर्म प्रकृतियाँ  
 ४३३ आठ वम प्रकृतिया  
 ४३४ चौबीस दण्डक में आठ कम प्रकृतिया  
 ४३५ ४३६ आठ कर्मों के अविभाज्य अंश  
 चौबीस दण्डक में आठ कर्मों के अविभाज्य अंश  
 ४३७ जीव के एक एक प्रदेशपर आठ कर्मों का आवरण  
 ४३८ ४३९ चौबीस दण्डक में प्रत्येक जीव के एक एक प्रदेशपर आठ  
 कर्मों का आवरण  
 ४४० ४४३ आठ कर्मों का परस्पर सम्बन्ध  
 जीव विचार  
 ४४४ जीव पुद्गली है वा पुद्गल इसका निर्णय  
 ४४५ चौबीस दण्डक के जीव पुद्गली है वा पुद्गल इसका निर्णय  
 ४४६ सिद्ध पुद्गली है वा पुद्गल इसका निर्णय

## नवम शतक

### प्रथम जम्बू उद्देशक

- १ क जम्बूद्वीप मिथिला नगरी मानिभद्र चत्वर म महावीर और  
 गीतम  
 स जम्बूद्वीप का स्थान  
 ग जम्बूद्वीप का सत्यान-यावत  
 घ जम्बूद्वीप के पूर्व-पश्चिम में चौन्ह लाख दण्डक हजार नदियाँ

## द्वितीय ज्योतिषीदेव उद्देशक

२-४ क- राजगृह

ख- अढाईद्वीप मे प्रकाश करने वाले चन्द्र-सूर्य

तृतीय से तीसवाँ पर्यन्त अन्तरद्वीप उद्देशक

५ अढाईस अन्तर्द्वीप

इकतीसवाँ असोच्चा उद्देशक

६ क- राजगृह

ख- केवली आदि से धर्म श्रवण किये बिना धर्म की प्राप्ति

७-१७ इसी प्रकार बोधि प्राप्ति, बोधि प्राप्ति का हेतु,

प्रव्रज्या प्राप्ति, प्रव्रज्या प्राप्ति का हेतु,

ब्रह्मचर्य धारण करना, ब्रह्मचर्य धारण करने का हेतु

संयमप्राप्ति, संयम प्राप्ति का हेतु,

संवर प्राप्ति, संवर प्राप्ति का हेतु,

आभिनिवोधक ज्ञान, आभिनिवोधक ज्ञान का हेतु,

श्रुत ज्ञान, श्रुत ज्ञान का हेतु,

अवधि ज्ञान, अवधिज्ञान का हेतु,

मनः पर्यव ज्ञान, मनः पर्यव ज्ञान का हेतु,

केवल ज्ञान, केवल ज्ञान का हेतु,

१८ बोधि आदि की प्राप्ति और उसके हेतु

१९ क- विभंग ज्ञान की उत्पत्ति, सम्यक्त्व की प्राप्ति

ख- चारित्र स्विकार, अवधिज्ञान की प्राप्ति

२० अवधिज्ञानियों में लेश्या

२१ अवधिज्ञानियों में ज्ञान

२२ अवधिज्ञानियों में साकारोपयोग

२३ अवधिज्ञानियों में योग

२४ अवधिज्ञानियों में उपयोग

२५ अवधिज्ञानियों का संघयण

- २६ अवधिज्ञानियों का संस्थान  
 २७ अवधिज्ञानियों की ऊँचाई  
 २८ अवधिज्ञानियों का आयु  
 २९ अवधिज्ञानियों में बड़  
 ३० अवधिज्ञानियों में कथाय  
 ३१ अवधिज्ञानियों के अध्ययनसाथ  
 ३२ अवधिज्ञानियों की मुक्ति  
 ३३ अवधिज्ञानियों का कथावसाय  
 ३४ अधुत्वा कवनी घर्मोपदेश नहीं करते  
 ३५ अन्तुत्वा कवनी दीक्षा नहीं देते  
 ३६ अधुत्वा कवनी मित्र हान हैं  
 ३७ अधुत्वा कवियों का सम्भावित स्थान  
 ३८ एक समय में अधुत्वा कवियों की संस्था  
 धर्म अध्वर्यु  
 ३९ कवनी आदि में धर्म अध्वर्यु करके धर्म की प्राप्ति  
 ४० केवली आदि में धर्म अध्वर्यु करके सम्भव की प्राप्ति  
 ४१ कवनी आदि में धर्म अध्वर्यु करके अवधिज्ञान की प्राप्ति  
 ४२ अवधिज्ञानियों में लक्ष्य  
 ४३ अवधिज्ञानियों में ज्ञान पत्र अवधिज्ञानियों का आयुष्य  
 ४४ अवधिज्ञानियों में बड़  
 ४५ अवधिज्ञानियों में कथाय  
 ४६ केवली आदि में धर्म अध्वर्यु करके धर्मोपदेश कर  
 ४७ ४९ कवनी आदि में धर्म अध्वर्यु करके दीक्षा दे  
 ५० ५२ कवनी आदि में धर्म अध्वर्यु करनेवाला मित्र हान है  
 ५३ अन्तुत्वा कवियों का सम्भावित स्थान  
 ५४ एक समय में अधुत्वा कवियों की संस्था

वत्तीसवाँ गाँगेय उद्देशक

५५ वाणिज्य ग्राम, दूतिपलाश चैत्य, भ० महावीर और पार्श्वपत्य गाँगेय

जन्म-मरण

५६-५८ चौबीस दण्डक में-जीवों की सांतर (अंतर सहित) निरंतर (अंतर रहित) उत्पत्ति

५९-६२ चौबीस दण्डक में जीवों का सांतर-निरंतर च्यवन (मरण)

६३ चार प्रकार का प्रवेशनक

६४-७७ क- नैरयिक प्रवेशनक

ख- एक संयोगी-यावत्-सप्तसंयोगी विकल्प

७८ नैरयिक प्रवेशनक अल्प-बहुत्व

७९-८२ तिर्यच योनिक प्रवेशनक

एक संयोगी-यावत्-पंच संयोगी विकल्प

८३ तिर्यच योनिक प्रवेशनक अल्प-बहुत्व

८२-८६ क- मनुष्य प्रवेशनक

ख- एक मनुष्य-आवत्-असंख्यात मनुष्य

९० मनुष्य प्रवेशक अल्प-बहुत्व

९१-९२ क- देव प्रवेशनक

ख- एक देव-यावत्-असंख्य देव

९३ देव प्रवेशनक अल्प-बहुत्व

९४ सर्व प्रवेशनक अल्प-बहुत्व

जन्म-मरण

९५ क- चौबीस दण्डक के जीवों का सांतर-निरंतर उत्पन्न होना

ख- चौबीस दण्डक के जीवों का सांतर-निरंतर मरण

९६ चौबीस दण्डक में विद्यमान की उत्पत्ति

९७ चौबीस दण्डक में विद्यमान का मरण

९८ क- प्रश्नोत्तर ९६-९७ की पुनरावृत्ति

ए उन्मान और उदवर्तन के हेतु

२६ भ० महावीर स्वयं ज्ञाना है

१०० १०२ चौबीस दण्डक क जीव स्वयं उन्मत्त होते हैं

१०३ क पार्वर्याय गाय का एक महावन ग्रहण

ख पार्वर्याय गाय का निर्वाण

तेनीसर्वा कूड ग्राम उद्देशक

मुद्राक

१ अश्वत्थ कूडग्राम बहुभाल चैत्य अश्वभक्त आश्वत्थ

न्वानना आश्वत्थो भ० महावीर का पराण

२ ३ भ० महावीर की वदना के लिये कूडग्राम और देवानन्दा का गमन

४ देवानन्दा क स्तना से दुग्धपारा का क्षरण

५ दुग्धपारा का हेतु पुष्यभेद

६ अश्वभक्त का प्रव्रज्या ग्रहण एव मुक्ति

७ क देवानन्दा का प्रव्रज्या साधना

८ २२ जत्रिय कूड ग्राम जमाती जत्रिय कुमार

जमाती का भ० महावीर की वदना के लिये जाना

२३ २६ जमाती की पाचमा पुष्यो क साथ प्रव्रज्या

३० जमाती का भ० महावीर से स्वतंत्र विचरण के लिये अनुमति प्राप्त करना

पाचमा मुनियो क साथ जमाती का विहार

३१ ३२ जमाती का आश्वत्थ नगरा क कोण्डक चैत्य में गमन

भ० महावीर का अश्वभक्त, पूर्णभद्र चैत्य में गमन

३३ अन्वय जमाती और उनकी विपरीत प्रवृत्तिया

३४ गौतम जमाती मराड मवाद का विषय

लोक और जीव का साम्य या असास्य होना

जमाती की आश्रयता

३५ भ० महावीर द्वारा समाधान

- ३६ क- जमाली की विराधकता  
ख- जमाली की किल्बिपिक देवरूप में उत्पत्ति और स्थिति
- ३७ भ० महावीर का जमाली के संबंध में गौतम को कथन
- ३८ किल्बिपिक देवों की स्थिति
- ३९-४१ किल्बिपिक देवों का निवासस्थान
- ४२ किल्बिपिक देव होने के हेतु
- ४३ किल्बिपिक देवों की भव परम्परा
- ४४ जमाली की साधना के संबंध में भ० महावीर से गौतम का प्रश्न
- ४५ जमाली की लातंक कल्प में उत्पत्ति
- ४६ जमाली का कुछ भवों के पश्चात् निर्वाण
- चोतीसवां पुरुष घातक उद्देश्यक**
- १०४ क- राजगृह  
ख- पुरुष को मारनेवाला पुरुष से भिन्न को भी हत्या करता है  
ग- पुरुष से भिन्न की हत्या का हेतु
- १०५ क- अश्व को मारनेवाला अश्व से भिन्न को भी मारता है
- १०६ क- त्रस को मारनेवाला त्रस से भिन्न को भी मारता है  
ख- त्रस से भिन्न को मारने का हेतु
- १०७ क- ऋषि को मारनेवाला ऋषि से भिन्न को भी मारता है  
ख- ऋषि से भिन्न को मारने का हेतु
- वैरभाव**
- १०८ पुरुष को मारनेवाला पुरुष और पुरुष से भिन्न के साथ भी वैर बांधता है (इसके अनेक विकल्प)
- १०९ ऋषि के सम्बंध में प्रश्नोत्तरांक १०८ की पुनरावृत्ति  
स्वासोच्छ्वास
- ११० पृथ्वीकाय आदि के स्वासोच्छ्वास का विचार
- १११ पृथ्वीकाय आदि के स्वासोच्छ्वास के समय लगनेवाली क्रियाएँ
- ११२ वायुकाय से होनेवाली क्रियाएँ



## दशम सतक

### प्रथम दिशा उद्देशक

- १-२ पूर्वादि दिशाएँ जीव अजीव रूप है  
 ३ दश दिशाएँ  
 ४ दश दिशाया के नाम  
 ५ क दिशाय जीव अजीव के दश प्रदेशरूप हैं  
 ख एकदि द्य-भावत अर्निर्द्वय व दश प्रदेशरूप हैं  
 ग रूपी अजीव चार प्रकार का  
 घ अरुपी अजीव सान प्रकार का  
 ६ अग्नेया दिशा जीवरूप नहीं है  
 ७ ८ दिशा विदिशाओ के जीव-अजीवरूप  
 ९ पाच प्रकार क शरीर

### द्वितीय सतक अष्टांगार उद्देशक

- १० कपाय भाव म सञ्जन अणगार का लगनेवाली क्रियाएँ  
 ११ क अकपाय भाव म सञ्जन अणगार को लगनेवाली क्रियाएँ  
 ख इयारबिकी अवदा सापरायिकी क्रियाआ क हेतु  
 १२ सान प्रकार का यानियाँ  
 १३ तीन प्रकार की बदनाय  
 १४ भिन्नु पडिमा  
 १५ क अकृप स्थान की आनाचना म आनाचना  
 ख अकृप स्थान की आनाचना न करने से विराधना

### तृतीय शात्म श्रद्धि उद्देशक

- क गजगृह  
 ग एक श्व म चार पाच देवाशासा के उन्वधन का मामर्थ्य  
 १७ अन्ध श्रद्धिक देव की शक्ति  
 १८ महर्द्धिक देव की शक्ति

- १६-२० देव विमोहित करके दूसरे देव के मध्य में होकर जाता है  
 २१-२२ महर्द्धिक देव का दूसरे देव के मध्य में होकर गमन  
 २३ अल्प ऋद्धि वाले देव का देवी के मध्य में होकर गमन-यावत्  
 २४ महर्द्धिक देव का देवी के मध्य में होकर गमन  
 २५-२६ अल्प ऋद्धिवाली देवी का देवी के मध्य में होकर गमन  
 २७-२८ महर्द्धिक देवी का देवी के मध्य में होकर गमन  
 उदर वायु  
 २९ घोड़े के पेट में कर्कट वायु  
 ३० बारह प्रकार की भाषा

### चतुर्थ श्यामहस्ती अगार उद्देशक

- ३१ क- वाणिज्यग्राम, दुतिपलाश चैत्य, भ० महावीर और इन्द्रभृति  
 ख- श्याम हस्ती अगार और गौतम का संवाद  
 ३२ क- असुर कुमार के त्रायस्त्रिंशक देव  
 ख- जम्बूद्वीप, भरत, काकंदी, तैतीस श्रमणोपासक  
 ग- सभी श्रमणोपासक विराधक हुए और वे त्रायस्त्रिंशक देव हुए  
 ३३ क- संदिग्ध गौतम का भ० महावीर के समीप समाधान के लिये उप-  
 स्थित होना  
 ख- अशुरेन्द्र के त्रायस्त्रिंशक देवों का पद शाश्वत है  
 ३४ क- बलेन्द्र के त्रायस्त्रिंशक देव  
 ख- जम्बूद्वीप, भरत, वेमेल संनिवेश, तैतीस श्रमणोपासक विराधक  
 हुए और वे सभी त्रायस्त्रिंशक देव हुए,  
 ग- धरणेन्द्र के त्रायस्त्रिंशक देव शेष भवनवासी एवं व्यंतर देवों के  
 त्रायस्त्रिंशक देव  
 ३५ क- शकेन्द्र के त्रायस्त्रिंशक देव  
 ख- जम्बूद्वीप, भरत, पलाशक संनिवेश, तैतीस श्रमणोपासक आरा-  
 धक अवस्था में मरकर त्रायस्त्रिंशक देव हुए

- ग शत्रुघ्न के त्रायस्त्रिंशक देवों का षष्ठ शास्वत है  
 ३६ क ईगानेन्द्र के त्रायस्त्रिंशक देव  
 स अम्बुद्वीप भरत चम्पानगरी तृतीस धर्मणोपासक आराधन  
 अवस्था में मरकर त्रायस्त्रिंशक देव हुए  
 ग ईगानेन्द्र के त्रायस्त्रिंशक देवों का षष्ठ शास्वत है  
 घ अक्षुतेन्द्र पयन्त इसी प्रकार समझ

### पंचम देव उद्देशक

- ३७ राजगृह मुखशील चण्ड भ० महावीर और स्वविर  
 ३८ क चमरेन्द्र की पाच अष्टमहीपियों के नाम  
 स मर्यादा का हेतु भाष्यक चैयस्तभ  
 ग जिन अस्थियों का सम्मान  
 ४० क चमरेन्द्र के सोमलोकपाल की चार अष्टमहीपियों के नाम  
 ग चार हजार देवियों का एक श्रुतिक वग कहा जाता है  
 घ सोमा रात्रधानी सोम लोकपाल की मधुन मर्यादा मर्यादा का हेतु  
 पूर्ववत्  
 ४१ क्षय लोकपालों का वणन सोम लोकपाल के समान  
 ४२ वरोचने की पाच अष्टमहीपियों के नाम परिवार पूर्ववत्  
 ४३ बलेन्द्र के चार लोकपालों का वणन  
 ४४ धरणेन्द्र की छह अष्टमहीपियों के नाम  
 ४५ धरणेन्द्र के कालवाल लोकपाल की चार अष्टमहीपियों के नाम  
 ४६ भूतानन्द की छह अष्टमहीपियों के नाम  
 ४७ भूताने क नागविल लोकपाल की चार अष्टमहीपियों के नाम  
 गण वणन धरणे क लोकपालों के समान  
 ४८ कालन्द्र की अष्टमहीपियों के नाम  
 ४९ मुरुषेन्द्र की चार अष्टमहीपियों के नाम  
 ५० पूणभद्र की चार अष्टमहीपियों के नाम

- ५१ भीम की चार अग्रमहीपियों के नाम  
 ५२ किन्नरेन्द्र की चार अग्रमहीपियों के नाम  
 किम्पुरेन्द्र की चार अग्रमहीपियों के नाम  
 ५३ सत्पुरेन्द्र की चार अग्रमहीपियों के नाम  
 ५४ अतिक्रायेन्द्र की चार अग्रमहीपियों के नाम  
 ५५ गीतरतीन्द्र की चार अग्रमहीपियों के नाम  
 ५६ क- चन्द्र की चार अग्रमहीपियों के नाम  
 ख- सूर्य की चार अग्रमहीपियों के नाम  
 ५७ अंगारक ग्रह की चार अग्रमहीपियों के नाम  
 ५८ शेष अठ्यासीमहाग्रहों का वर्णन  
 ५९ क- शक्रेन्द्र की आठ अग्रमहीपियों के नाम  
 ख- प्रत्येक अग्रमहीपी का परिवार  
 ग- एक लाख अट्टाईस हजार देवियों का एक त्रुटिक वर्ग  
 ६० शेष वर्णन चमरेन्द्र के समान  
 ६१ ईशानेन्द्र की आठ अग्रमहीपियों के नाम. लोकपालों का वर्णन  
 षष्ठ सभा उद्देशक  
 ४२ शक्र की सुधर्मा सभा  
 ६३ शक्रेन्द्र का सुख  
 सप्तम से चौतीसवें पर्यन्त अन्तर्द्वीप उद्देशक  
 ६४ उत्तर दिशा के अट्टाईस (एकोरुक से शुद्धदन्त) अन्तर्द्वीपों का वर्णन

### इग्यारहवाँ शतक

#### प्रथम उत्पल उद्देशक

१ क- राजगृह

ख- उत्पल के जीव

२ उत्पल में उत्पन्न होने वाले जीवों की पूर्व-गति

- ३ उत्पन्न में एक समय में उत्पन्न होने वाले जीव
- ४ उत्पन्न के जीवों को निकालने में लगनेवाला काल
- ५ उत्पन्न के जीवों की अवगाहना
- ६ उत्पन्न के जीवों के मानकमों का बंध
- ७ उत्पन्न के जीवों के आयुक्रम का बंध (आठ विकल्प)
- ८ उत्पन्न के जीवों के आठ कर्मों के वेदक
- ९ उत्पन्न के जीवों का आना-आना-बैठना
- १० उत्पन्न के जीवों के आठ कर्मों का उच्य
- ११ उत्पन्न के जीवों के आठ कर्मों की चरीरणा
- १२ उत्पन्न के जीवों में लक्ष्या (अम्मी विकल्प)
- १३ उत्पन्न के जीवों में दृष्टिया
- १४ उत्पन्न के जीवों में ज्ञान-अज्ञान
- १५ उत्पन्न के जीवों में योग
- १६ उत्पन्न के जीवों में उपयोग
- १७ उत्पन्न के जीवों का वर्ण-रूप-रस-स्पर्श
- १८ उत्पन्न के जीवों का श्वानोच्छ्वास (२६ विकल्प)
- १९ उत्पन्न के जीवों का श्वाह्वान अनाहारक (आठ विकल्प)
- २० उत्पन्न के जीवों में विरति-प्रविरति
- २१ उत्पन्न के जीवों में शक्ति
- २२ उत्पन्न के जीवों के मान-आठ कर्मों का बंध
- २३ उत्पन्न के जीवों में चार-मान (अम्मी विकल्प)
- २४ उत्पन्न के जीवों में चार-कपाय (अम्मी विकल्प)
- २५ उत्पन्न के जीवों में धर्म
- २६ उत्पन्न के जीवों में धर्मों का बंध
- २७ उत्पन्न के जीवों में अक्षय
- २८ उत्पन्न के जीवों में अक्षय
- २९ उत्पन्न के जीवों का उत्पन्न-के-रूप-में-रहने-का-बंध-में-उत्कृष्ट-मान

- ३०-३४ उत्पल के जीवों में पृथ्वीकाय आदि से गमनागमन का काल  
 ३५ उत्पल के जीवों का आहार  
 ३६ उत्पल के जीवों की आयु  
 ३७ उत्पल के जीवों में समुद्घात  
 ३८ उत्पल के जीवों का उद्घातन (मरण)  
 ३९ उत्पल में सर्व जीवों की उत्पत्ति

### द्वितीय शालूक उद्देशक

- ४० क- शालूक में जीव  
 ख- शेष उत्पल के समान

### तृतीय पलाश उद्देशक

- ४१ क- पलाश में जीव  
 ख- शेष उत्पल के समान  
 ग- पलाश में लेश्या

### चतुर्थ कुंभिक उद्देशक

- ४२ क- कुंभिक में जीव  
 ख- शेष उत्पल के समान  
 ग- स्थिति में विशेषता

### पंचम नालिक उद्देशक

- ४३ क- नालिक में जीव  
 ख- शेष उत्पल के समान

### षष्ठ पद्म उद्देशक

- ४४ क- पद्म में जीव  
 ख- शेष उत्पल के समान

### सप्तम कर्णिक उद्देशक

- ४५ क- कर्णिक में जीव

- ख गेप उत्पल के समान  
अष्टम नलिन उद्देशम
- ४६ क नलिन में जीव  
ख गेप उत्पल के समान  
नवम शिव राजपि उद्देशक

सूचाक

- १ क हस्तिनापुर सहधाम्न वन  
ख शिवराज धारिणी पट्टराणी शिवभद्र पुत्र
- २ शिवराज का दिशा प्रोत्सुक प्रज्जया लेने का संकल्प
- ३ शिवभद्र को राज्याभिषेक
- ४ शिवराज की प्रज्जया
- ५ शिव राजपि का अभिषेक
- ६ शिव राजपि की तपश्चर्चा
- ७ शिव राजपि की विभगनान
- ८ सात द्वीप समुद्र का गान
- ९ भ० महावीर का पत्न्याण इन्द्रभूति की आशंका
- १० भ० महावीर द्वारा समाधान  
अनाई द्वीप के द्वय
- ११ अम्बुद्वीप में वण गध रम स्पशयुत्तन द्वय
- १२ लवण समुद्र में वण गध रम स्पश युत्तन द्वय
- १३ घातकी स्वण-यावन-स्वयम्भुरमण समुद्र में वर्णाणि युत्तन द्वय
- १४ भ० महावीर का शिवराजपि के विभगनान के सम्बन्ध में यथाथ कथन
- १५ शिवराजपि का विपरीत कथन भ० महावीर का यथाथ कथन
- १६ सगन्धित शिवराजपि
- १७ १८ समाधान के लिये शिवराजपि का भ० महावीर के समीप आगमन

६ भ० महावीर के समीप शिवराजपि की दीक्षा तथा अन्तिम साधना

२० वज्ररूपभ नाराच संघयणवाला सिद्ध होता है

### दशम लोक उद्देशक

४७ क- राजगृह

ख- चार प्रकार का लोक

४८-५० क्षेत्रलोक तीन प्रकार का

५२ अधोलोक का संस्थान

५३ तिर्यंग्लोक का संस्थान

५४ उर्ध्वलोक का संस्थान

५५ लोक का संस्थान

५६ अलोक का संस्थान

५७-५८ तीनों लोक जीव, जीव के देश और प्रदेश रूप हैं

५९ सम्पूर्ण लोक जीव, जीव के देश और प्रदेश रूप हैं

६० अलोक जीव, जीव के देश और प्रदेश रूप है

६१-६२ तीन लोक में से प्रत्येक लोक के एक आकाश प्रदेश में जीव, जीव के देश और प्रदेश हैं

६३ सम्पूर्ण लोक का एक आकाश प्रदेश, जीव के देश, जीव के प्रदेश रूप हैं

६४ अलोक का प्रत्येक आकाश प्रदेश जीव-अजीव नहीं है

६५ द्रव्य आदि से तीनों लोक, लोक और अलोक का विचार

६६ लोक का विस्तार—चार दिक्कुमारियों का रूपक

६७ अलोक का विस्तार—आठ दिक्कुमारियों का रूपक

६८ लोक के एक आकाश प्रदेश में जीव के प्रदेशों का परस्पर संबंध और एक दूसरे को पीड़ा न पहुँचाना, नतंकी का रूपक

६९ एक आकाश प्रदेश में रहे हुए जीव प्रदेशों का अल्प-बहुत्व



### एकादश काल उद्देशक

- ७० वाणिज्य ग्राम इतिपञ्चाम चै य, म० महावीर से सुरार्शन धेन्डी का प्रश्न
- ७१ चार प्रकार का कान
- ७२ क दा प्रकार का प्रमाण काल  
ख उत्कृष्ट पौष्टी जघन्य पौष्टी
- ७३ मुहूर्त क एक ही बावीस भाग हानि वृद्धि से उत्कृष्ट तथा जघन्य पौष्टी
- ७४ अठारह मुहूर्त के दिन में उत्कृष्ट पौष्टी वारह मुहूर्त क दिन में जघन्य पौष्टी इसी प्रकार रात्रि की पौष्टियाँ समझना
- ७५ लपाइ पूर्णिमा को सबसे बड़ा दिन, पाप पूर्णिमा को सबसे छोटा दिन, इसी प्रकार रात्रि
- ७६ समान दिन समान रात्रि
- ७७ यथायु निवृत्ति काल
- ७८ फल्यु की व्याख्या
- ७९ अज्ञानान ममय-भावने उरमपिणी
- ८० पन्थापम और मागरोपम का प्रयोजन
- ८१ नैरयिकी की-भावने-सवार्थसिद्धि के देवों की स्थिति
- ८२ पन्थापम एवं मागरोपम का अपचय अपचय का हनु  
महादत्त वर्णन

### सूत्राक

- १-६ इन्दिरामपुर, महामास्त्रवने, बल राजा, प्रभावती रानी, सिद्धस्वप्न  
राजा द्वारा स्वप्नपत्र कथन
- ७-१० स्वप्नपाठको को निमंत्रण

- ११ स्वप्नपाठकों को प्रीतिदान एवं उनका विसर्जन  
 २२ गर्भ रक्षा, पुत्र जन्म  
 १३ वधाई  
 १४ जन्मोत्सव, नामकरण  
 १५ पंचघाय से पुत्र का पालन  
 १६ महाबल का अध्ययन काल  
 १७-१८ महाबल का आठ कन्याओं के साथ पाणिग्रहण व प्रीतिदान  
 (दहेज)  
 १९ धर्मघोष अणगार के समीप वाणी श्रवण, वैराग्य, राज्याभिषेक  
 दीक्षा ग्रहण, तपश्चर्या, संलेखना, ब्रह्मलोक में उत्पत्ति,  
 महाबल देव की स्थिति, सुदर्शन को जातिस्मरण, सुदर्शन की  
 प्रव्रज्या, श्रमण पर्याय, मुक्ति  
 द्वादश आलभिका उद्देशक

सूत्रांक

- १ क- आलभिका नगरी, शंखवन चैत्य, ऋषिभद्र प्रमुख श्रमणोपासक  
 ख- श्रमणोपासकों में परस्पर चर्चा  
 ग- देवताओं की जघन्य स्थिति  
 घ- देवताओं की उत्कृष्ट स्थिति  
 ङ- ऋषिभद्र के कथनपर श्रमणोपासकों की अश्रद्धा  
 २ क- भ० महावीर का पदार्पण  
 ख- देवताओं की स्थिति के मन्वन्ध में भ० महावीर का समावान  
 ३ गौतम की जिज्ञासा, ऋषिभद्र प्रव्रज्या स्वीकार करने में  
 असमर्थ  
 ४ ऋषिभद्र की सीधर्म के अरुणाभ विमान में उत्पत्ति  
 ५ ऋषिभद्र देव का च्यवन, महाविदेह में जन्म और मुक्ति

## बारहवाँ शतक

### प्रथम शत उद्देशक

- १ क- सावर्धी नगरी, कोष्ठक चैय, शस्त्र प्रमुख श्रमणोपासक, उत्पला श्रमणोपासिका पोम्बली श्रमणोपासक
  - स भ० महावीर की धर्मदेशना
- २ क श्रमणोपासको द्वारा पाण्डिक पोषण करने का निर्णय,
  - चार प्रकार का आहार निष्पन्न हुआ
  - स शस्त्र का सफल चारों आहार के त्याग या सकल
- ३ ४ पोम्बली का शस्त्र को भोजन के विषय निमंत्रण
- ५ पोम्बली को उन्नता की बदना
- ६ ८ पोम्बली को पोषण के सत्रय म शस्त्र का निवेदन
- ६ भ० महावीर की बदना के लिये पापघुक्कन दण्ड का गमन
- १० अन्य श्रमणोपासका का भ० महावीर की बदना के लिये गमन
- ११ भ० महावीर का दण्ड की निरा न करने के लिये आदेश
- १ क तीन प्रकार की जागरिका
  - स जागरिका की व्याख्या
  - २ कोष से कम बचन
  - ३ मान माया, और मोक्ष से कर्म बचन
  - ४ दण्ड से श्रमणोपासको की दामा याचना एवं स्वाधान गमन
  - ५ गौतम की विज्ञाना का समाधान
  - दण्ड प्रवृत्त्या स्वीकार करने से समर्थ नहीं है

### द्वितीय जयती उद्देशक

#### सूत्रांक

- १ क कोशावधी नगरी, चन्द्रायनराम शंख
- स मद्रघानीक राजा का वीर, शतानीक राजा का पुत्र, सेन्द्रराज

की पुत्री का पुत्र, जयंती श्रमणोपासिका का भतीजा,  
उदायन राजा

ग- सहस्रानीक राजा के पुत्र की पत्नि, शतानीक राजा की पत्नि,  
चेटक राजा की पुत्री, उदाई राजा की माता, जयंती श्रमणी  
पासिका की भोजाई, मृगावती देवी

घ- सहस्रानीक राजा की पुत्री, शतानीक राजा की भगिनी, उदाई  
राजा की पितृष्वसा-भुवा, मृगावती देवी की नणंद, भ० महावीर  
को सर्व प्रथम बसती देनेवाली जयंती श्रमणोपासिका

प्रश्नोत्तरांक

२ क- मृगावती और जयंती सहित भ० महावीर की वंदना के लिये  
राजा उदाई का गमन, भ० महावीर और जयंती के प्रश्नोत्तर

ख- प्राणातिपात-यावत्-मिथ्यादर्शन शल्य

३ जीव के भारीपने के हेतु

४ जीव का भव्यत्व स्वाभाविक है

५ सर्व भव्य जीव मुक्त होंगे

६ संसार भव्य जीवों से रिक्त नहीं होगा, रिक्त न होने का हेतु

७ जीव का सोना या जागना सहेतुक श्रेष्ठ है

८ जीव का सबल होना या निर्बल होना सापेक्ष श्रेष्ठ है

९ उद्यमी होना या आलसी होना सापेक्ष श्रेष्ठ है

१० पंचेन्द्रिय वशवर्ती का संसार भ्रमण

११ जयंती की प्रव्रज्या

तृतीय पृथ्वी उद्देशक

१२ सात पृथ्वियाँ

१३ सात पृथ्वियों के गोत्र

चतुर्थ पुद्गल उद्देशक

१४-२४ द्विप्रदेशिक स्कंध-यावत्-अनंत प्रदेशिक स्कंध के अनेक विकल्प

और उनकी स्थापना

२५ अनातानन्त पुद्गल परिवत

२६ सात प्रकार का पुद्गल परिवत

२७ चौबीस दण्डक म पुद्गल परिवत

२८ ३६ चौबीस दण्डक म औगारिक पुद्गल परिवत

चौबीस दण्डक मे किय पुद्गल परिवत यावत आन प्राण पुद्गल परिवत

४० औगारिक पुद्गल परिवत की व्याख्या यावत आन प्राण पुद्गल परिवत की व्याख्या

४१ औगारिक पुद्गल परिवत का निष्पत्ति काय यावत्-आन प्राण पुद्गल परिवत का निष्पत्ति काल

४२ औगारिक पुद्गल परिवत काय का अल्प-बहुत्व

४३ पुद्गल परिवतों का अल्प बहुत्व

सचम अतिपात उद्देशक

४४ ४६ प्राणानिपात-यावत मिथ्यात्पनशय म वर्णादि वीत है

५० प्राणानिपात निरमण यावत मिथ्यात्पनशय त्याग वर्णादि नहीं है

५१ चार प्रकार की मति मे वर्णादि नहीं है

५२ अवग्रहादि चार म वर्णादि नहीं है

५३ उ घानादि पाच मे वर्णादि नहीं है

५४ मन्म अवकाशातरा म वर्णादि नहीं है

५५ अ न पृथिव्या म और पनवान-ननुवाना म वर्णादि है

५६ चौबिस दण्डक मे वर्णादि है

५७ क घर्माग्निराय यावत जीवाग्निराय मे वर्णादि नहीं है

ख पुद्गलान्मिन्हाय मे वर्णादि है

ग मानावरणीय-यावत अन्नराय म वर्णादि है

५८ क इत्य सवया मे वर्णादि है

- ख- भाव लेश्या में वर्णादि नहीं हैं  
 ग- तीन दृष्टियों में वर्णादि नहीं हैं  
 घ- चार दर्शनों में वर्णादि नहीं है  
 ङ- पांच ज्ञानों में वर्णादि नहीं है  
 च- चार संज्ञाओं में वर्णादि नहीं है  
 छ- पांच शरीरों में वर्णादि हैं  
 ज- तीन योगों में वर्णादि हैं  
 झ- साकारोपयोग और निराकारोपयोग में वर्णादि नहीं है

- ५६ सर्व द्रव्यों में वर्णादि है  
 ६० गर्भस्थ जीव में वर्णादि है  
 ६१ जीव और जगत् का कर्मों से विविधरूप में परिणमन

### षष्ठ राहु उद्देशक

- ६२ क- राहु के सम्बन्ध में जनसाधारण की भ्रान्त धारणा  
 ख- राहुदेव का वर्णन  
 ग- राहु के नाम  
 घ- राहु का विमान  
 ङ- पूर्व-पश्चिम में गमन करता हुआ राहु चन्द्र के उद्योत को आवृत्त करता है  
 ६३ दो प्रकार का राहु  
 ६४ राहुसे चन्द्र और सूर्य के आवृत्त होने का जघन्य उत्कृष्ट काल  
 ६५ चन्द्र को शशि कहने का हेतु  
 ६६ सूर्य को आदित्य कहने का हेतु  
 ६७ चन्द्र के अग्रमहीपिया  
 ६८ सूर्य और चन्द्र के काम-भोग

### सप्तम लोक उद्देशक

- ६९ लोक का आयाम-विष्कम्भ

- ७० क लोक के सब आकाश प्रान्तों में सब जीवों का जन्म मरण  
ख अजात्रज का उदाहरण
- ७१ ८२ चौबीस दण्डक में सब जीवों का जन्म मरण  
८३ सब जीव सब जीवों के माता पिता आदि सम्बन्धी हो चुके हैं  
८४ सब जीवों के शत्रु आदि हो चुके हैं  
८५ सब जीव मन्त्र जीवों के राजा आदि हो चुके हैं  
८६ सब जीव मन्त्र जीवों के दास आदि हो चुके हैं

### अष्टम नाग उद्देशक

- ८७ ९१ क महर्षिक देव की सप हाथी मणी और वृषरूप में उत्पत्ति  
ख सप आदि रूप में अर्चा पूजा  
ग सप आदि का एक भव करके मोक्ष में जाना
- ९२ ९४ वानर आदि सिंह आदि और काक आदि की नरक में  
उत्पत्ति

### नवम देव उद्देशक

- ९५ पाच प्रकार के देव  
९६ भय द्रव्य देव कहने का हेतु  
९७ नरदेव कहने का हेतु  
९८ धमदेव कहने का हेतु  
९९ देवाधिदेव कहने का हेतु  
१०० भावदेव कहने का हेतु  
१०१ भय द्रव्य देव की उत्पत्ति  
१०२ १०४ नरदेव की उत्पत्ति  
१०५ धमदेव की उत्पत्ति  
१०६ १०८ देवाधिदेव की उत्पत्ति  
१०९ भवदेव की उत्पत्ति  
११० भय द्रव्य देव की स्थिति

- १११ नरदेव की स्थिति  
 ११२ धर्मदेव की स्थिति  
 ११३ देवाधिदेव की स्थिति  
 ११४ भावदेव की स्थिति  
 ११५ क- भव्य द्रव्य देव की विकुर्वणा शक्ति  
 ख- नरदेव की विकुर्वणा शक्ति  
 ग- धर्मदेव की विकुर्वणा शक्ति  
 ११६ देवाधिदेव की विकुर्वणा शक्ति  
 ११७ भावदेव की विकुर्वणा शक्ति  
 ११८ भव्य द्रव्य देव की मरणोत्तर गति  
 ११९ नरदेव की मरणोत्तर गति  
 १२० धर्मदेव की मरणोत्तर गति  
 १२१ देवाधिदेव की मरणोत्तर गति  
 १२२ भावदेव की मरणोत्तर गति  
 १२३ भव्य द्रव्य देव का अन्तर  
 १२४ नरदेव का अन्तर  
 १२५ धर्मदेव का अन्तर  
 १२६ देवाधिदेव का अन्तर  
 १२७ भावदेव का अन्तर  
 १२८ पांच देवों का अल्प-बहुत्व  
 १२९ भावदेवों का अल्प-बहुत्व  
 दशम आत्मा उद्देशक  
 १३० आठ प्रकार का आत्मा  
 १३१-१३४ आठ आत्माओं का परस्पर सम्बन्ध  
 १३५ आठ आत्माओं का अल्प-बहुत्व  
 १३६ आत्मा ज्ञान स्वरूप है



- १३७ नीवीम दण्डक म आत्मा का रूप  
 १३८ आत्मा ज्ञान स्वरूप है  
 १३९ धीवान् दण्डक मे आत्मा दानरूप है  
 १४० १४४ रत्नप्रभा-यावन ईष प्राग्भारा पृथ्वी सम्मत् रूप है  
 १४१ क एक परमाणु ज्ञान अनन प्रवेशिक स्वरूप सम्मत् रूप है  
 म सम्मत् रूप ज्ञान का ह्यु

## तेरहवा शतक

### प्रथम पृथ्वी उद्देशक

- १ क रात्रिपू  
 ख ज्ञान पृथ्वी  
 २ क रत्नप्रभा के नरकावास  
 ३ रत्नप्रभा के सम्मत्ता योजन विस्तार वाले नरकावासी म एक समय म उत्पन्न होने वाले जीव (उदधानीम विप्लव)  
 ४ रत्नप्रभा के नरकावासा मे एक समय म उत्पन्न मरने वाले जीव  
 ५ ज्ञान का म नरकजीवा की मत्ता  
 ६ रत्नप्रभा के अमर्याता योजन विस्तार वाले नरकावासी मे एक समय म जीवा की उत्पत्ति उत्पन्न और मत्ता  
 ७ १२ नरका प्रथम यवन तम प्रभा का यवन  
 १३ क सम्मत् नरक के पाच नरकावास  
 ख नरकावासा का उत्पन्न  
 १४ पाच नरकावासा म एक समय मे जीवा की उत्पत्ति उत्पन्न और मत्ता  
 १५ रत्नप्रभा के अमर्याता योजन विस्तार वाले नरकावासा में सम्मत् दृष्टि ज्ञान की उत्पत्ति  
 १६ १७ क सम्मत्दृष्टि ज्ञान का उत्पन्न मरण

ख- सम्यग्दृष्टि आदि का अविरह

ग- शर्करा प्रभा-यावत्-तमः प्रभा में रत्नप्रभा के समान

घ- रत्नप्रभा के असंख्याता योजन वाले नरकावासों में सम्यग्दृष्टि आदि की उत्पत्ति, उद्वर्तन, सत्ता

१८ सप्तम पृथ्वी के पांच नरकावासों में मिथ्यादृष्टि की उत्पत्ति, उद्वर्तन, सत्ता

१९-२१ अन्य लेश्यावाले कृष्ण, नील, कापोत लेश्या रूप में परिणत होकर नरक में उत्पन्न होते हैं

द्वितीय देव उद्देशक

२२ चार प्रकार के देव

२३ दश प्रकार के भवनवासी देव

२४ असुर कुमारों के आवास

२५ संख्यात या असंख्यात योजन वाले आवासों में एक समय में उत्पन्न होने वाले जीव

२६ नागकुमार-यावत् स्तनित कुमार असुर कुमारों के नमान

२७ व्यंतर देवों के समान

२८ व्यंतर देवों के आवासों में एक समय में उत्पाद, उद्वर्तन और सत्ता

२९ क- ज्योतिषिक देवों के आवास

ख- ज्योतिषीदेवों के आवासों में एक समय में जीवों का उपपात, उद्वर्तन और मरण

३०-३५ सौधर्म-यावत्-सर्वार्थसिद्ध विधानों में एक समय में जीवों का उपपात, च्यवन, और सत्ता

३६ कृष्णादि लेश्यावाले जीव देवों में कृष्णादि लेश्यारूप में परिणत होने पर उत्पन्न होते हैं

तृतीय नरक उद्देशक

नरक और नैरथिक

३७ नैरथिक अनन्तराहारी हैं

## चतुर्थ पृथ्वी उद्देशक

- ३८ सात पृथ्विया
- ३९ सात नरकों के नरकावासों की सख्या तथा नैरयिकों के कर्मादि
- ४० सात नरका के नैरयिकों का पृथ्वी यावत् वनस्पति का स्पर्शानुभव
- ४१ सात नरकों की बाह्य चौडाई
- ४२ समस्त नरकावासों के समीपवर्ती यावत् वनस्पति कायिक जीवों के वम और वेदना  
लोक
- ४३ लोक का मध्यभाग
- ४४ अचोलोक का मध्यभाग
- ४५ उच्चलोक का मध्यभाग
- ४६ तिर्यक लोक का मध्यभाग  
दिशा
- ४७ ४९ दिशा विदिशा विचार  
अस्तिकाय
- ५० पचास्तिकाय रूप लोक
- ५१ ५५ पचास्तिकायों की प्रवृत्ति
- ५६ ६६ क पचास्तिकाय के प्रदेशों का परस्पर स्पर्श  
ख पचास्तिकाय क प्रदेशों का काल समयों से स्पर्श
- ६७ क पचास्तिकाय द्रव्यों का पचास्तिकाय के प्रदेशों से स्पर्श  
ख पचास्तिकाय द्रव्यों का काल समयों से स्पर्श
- ६८ ७५ क प्रत्येक अस्तिकाय के एक प्रदेश में अन्य अस्तिकायों के प्रदेशों का अस्तित्व  
ख प्रत्येक अस्तिकाय के एक प्रदेश में काल समयों का अस्तित्व
- ७६ ७७ क एक अस्तिकाय के स्थान में अन्य अस्तिकायों के प्रदेशों का अस्तित्व  
ख एक अस्तिकाय के स्थान में काल समय का अस्तित्व

७८-७९ एक स्थावर जीव के स्थान में अन्य स्थावर जीवों का अस्तित्व

८० क- प्रत्येक अस्तिकाय के स्थान में एक पुरुष का बैठना-उठना असम्भव

ख- कृटागार शाला का उदाहरण  
लोक वर्णन

८१ क- लोक का समभाग

ख- लोक का संक्षिप्त भाग

८२ लोक का वक्रभाग

८३ लोक का संस्थान

८४ तीनों लोक की अल्प-बहुत्व

पंचम आहार उद्देशक

८५ नैरयिक अचित्ताहारी है

षष्ठ उपपात उद्देशक

८६ क- राजगृह

ख- नैरयिक सान्तर और निरन्तर उत्पन्न होते हैं

८७ क- असुरेन्द्र के चमरचंच आवास की दूरी

ख- चमरचंच आवास का आयाम-विष्कम्भ

ग- चमरचंच आवास के प्राकार की ऊंचाई

८८ क- मनुष्यलोक में चार प्रकार के लयन

ख- चमरचंच आवास केवल क्रीडाघर है

राजा उदायन

१ क- चम्पा नगरी, पूषभ चैत्य, न० महावीर

ख- सिन्धु सौवीरदेश (सोलह देश) वीतिभय नगर (१६० नगर)  
मृगचन उद्यान, उदायन राजा, प्रभावती रानी, शभीचीकुमार.

भाषेज (भागिनय) केशीकुमार, महासन आदि ऋग राजा

- २ क पौषणाना मे घम जागरणा करत समय राजा उपायन का एक सकल्प
- ख भ० महावीर का सुगदन मे पदापण
- ग राजा उपायन का दानाथ गमन एक प्रव्रज्या के निचे निवेदन
- ३ अभाचीकुमारक निच उपायन का शुभमकल्प और केनीकुमार को राधाभिषय
- ४ क राणा उपायन का प्रव्रज्या ग्रहण
- ख पद्मावती की शुभकामना
- ५ क अभाचीकुमार की मानसिक चेतना
- ख अभाचीकुमार का काणिक क समीप गमन
- ग अभाचीकुमार का धारकवृत्ति
- घ अभाचीकुमार का अमुर कुमार देव होना
- ङ एक वय की स्थिति
- च अभाची का मन्त्रित्वे म ज्ञान और मोक्ष

सप्तम भाषा उद्देशक

सोपानक

- ८६ क रावगु
- ख भाषा का पौण्यलिक रूप
- ८७ भाषा रूपी हे
- ८८ भाषा अचित्त हे
- ८९ भाषा अजीवहय हे
- ९० भाषा जीव के लक्षी हे
- ९१ बोलने समय भाषा ह
- ९२ भाषा का भजन
- ९३ चार प्रकार की भाषा

मन

- ६७ मन पुद्गलरूप है  
 ६८ मनन के समय मन है  
 ६९ मन का भेदन  
 १००- चार प्रकार का मन

काया

- १०१ काया का अत्मा ने कथञ्चित् भिन्नाभिन्न संवद  
 १०२ क- काया कथञ्चित् रूपी-अरूपी  
 ख- काया कथञ्चित् सचित्त-अचित्त  
 ग- काया कथञ्चित् जीवरूप-अजीवरूप  
 घ- काया जीव और अजीव दोनों के होती है  
 १०३ काया और जीव के सवय से पूर्व या पश्चात् भी काय  
 १०४ काय का भेदन  
 नात प्रकार की काया

मरण

- १०५ पाच प्रकार का मरण  
 १०६ पाच प्रकार का आवीचिक मरण  
 १०७ क- चार प्रकार का द्रव्य आवीचिक मरण  
 ख- चार प्रकार का क्षेत्र आवीचिक मरण  
 ग- चार प्रकार का काल आवीचिक मरण  
 घ- चार प्रकार का भाव आवीचिक मरण  
 १०८-१०९ नैरयिक क्षेत्र आवीचिक मरण कहने का हेतु  
 ११० पांच प्रकार का अवधिमरण  
 १११ चार प्रकार का द्रव्य अवधिमरण  
 ११२ क- नैरयिक द्रव्य अवधिमरण कहने का हेतु  
 ख- क्षेत्र अवधिमरण  
 ग- काल अवधिमरण

घ- भव अवधिमरण

ङ- भाव अवधिमरण

११३ पाच प्रकार का आत्यन्तिक मरण

११४ चार प्रकार का द्रव्य आत्यन्तिक मरण

११५ क- नैरयिक द्रव्य आत्यन्तिक मरण कहने का हेतु

ख- क्षेत्र आत्यन्तिक मरण

ग- काल आत्यन्तिक मरण

घ- भव आत्यन्तिक मरण

ङ- भाव आत्यन्तिक मरण

११६ चारह प्रकार का बालमरण

११७ दो प्रकार का पंडित मरण

११८ दो प्रकार का पादपोगमन मरण

११९ दो प्रकार का भजनप्रत्यास्थान मरण

अष्टम कर्मप्रवृत्ति उद्देशक

१२० आठ कम प्रवृत्तियाँ हैं

नवम अनगार वैक्रिय उद्देशक

१२१ भावित आत्मा अणगार का वैक्रिय लब्धि से आकाश गमन का सामर्थ्य

१२२ भावित आत्मा अणगार की वैक्रिय लब्धि से रूप विकुर्वणा

१२३ अणगार द्वारा विविधरूपों की विकुर्वणा का सामर्थ्य

१२४ अणगार द्वारा चन्द्रमाल के रूप की विकुर्वणा का सामर्थ्य

१२५ अणगार द्वारा जलौका के समान गति का सामर्थ्य

१२६ अणगार द्वारा बीजवाजक पक्षी के समान गति का सामर्थ्य

१२७ अणगार द्वारा विहानक पक्षी के समान गति का सामर्थ्य

१२८ अणगार द्वारा जीवजीवक पक्षी के समान गति का सामर्थ्य

१२९ अणगार द्वारा हंस पक्षी के समान गति का सामर्थ्य

- १३० अणगार द्वारा समुद्रवायस पत्नी के समान गति का सामर्थ्य  
 १३१ अणगार द्वारा चक्रहस्त पुरुष के समान गति का सामर्थ्य  
 १३२ अणगार द्वारा रत्नहस्त पुरुष के समान गति का सामर्थ्य  
 १३३ अणगार द्वारा विस भंजिका गति का सामर्थ्य  
 १३४ अणगार द्वारा मृणाल भंजिका गति का सामर्थ्य  
 १६५ अणगार द्वारा वनखंड के रूप में गमन करने का सामर्थ्य  
 १३६ अणगार द्वारा पुष्करणी रूप में गमन करने का सामर्थ्य  
 १३७ अणगार द्वारा पुष्करणी रूप विकुर्वणा सामर्थ्य  
 १३८ माया सहित-अणगार की विकुर्वणा-यावत्-आराधना

दशम समुद्घात उद्देशक

२३९ छह द्वाचस्थिक समुद्घात

चौदहवाँ शतक

प्रथम चरम उद्देशक

- १ भावित आत्मा अणगार जिम लेश्या में मृत्यु को प्राप्त होता है उसी लेश्यावाले देवावास में उत्पन्न होता है
- २ भावित आत्मा अणगार की असुरकुमारावास-यावत्-वैमानिका-वासपर्यन्त प्रश्नांक एक के समान

विग्रहगति

- ३ क- नैरयिक-यावत्-वैमानिक की उत्कृष्ट तीन समय की विग्रहगति
- ख- एकेन्द्रियों की चार समय की विग्रह गति
- ग- तरुण पुरुष की मुष्टि का उदाहरण

आयुबंध

- ४ चौबीस दण्डक में अनन्तरोपपन्नक तथा परंपरोपपन्नक
- ५ अनन्तरोपपन्नक प्रथम नैरयिकों के आयु-बंध का निषेध
- ६ परंपरोपपन्नक नैरयिक के आयु-बंध



- ७ चौबीस दण्ड में अनन्तरोपन्नक और परम्परगेतपन्नक के आयु का वष
- ८ चौबीस दण्ड में अनन्तरनिर्गम और परम्परा निर्गम जीव
- ९-११ चौबीस दण्ड में अनन्तर निर्गम और परम्परा निर्गम जीवों का आयु-वष
- १२ क चौबीस दण्ड में परम्पर सेदोपन्नक और अनन्तर सेदोपन्नक  
ख- चौबीस दण्ड में अनन्तर सेदोपन्नक जीवों में आयुवष का नियम
- ग- चौबीस दण्ड में परम्पर सेदोपन्नक जीवों में आयुवष
- घ- चौबीस दण्ड में अनन्तर विग्रह गतिशाल्य सेदोपन्नक जीवों में आयु वष का नियम

### द्वितीय उन्माद उद्देशक

- १३ दो प्रकार का उन्माद
- १४ १५ चौबीस दण्ड में उन्माद  
पञ्चम विधा
- १६ इन्द्र द्वारा वृष्टि
- १७ वृष्टि का वायकम
- १८ अमुरा-याचन वैमानिकों द्वारा वृष्टि
- १९ वृष्टि के हेतु  
तमस्काय
- २० ईशानेन्द्र द्वारा तमस्काय की रचना
- २१ क अमुरा याचन वैमानिका द्वारा तमस्काय की रचना  
ख तमस्काय की रचना के हेतु

### तृतीय शरीर उद्देशक

#### मध्यमनि

- २२ क महाकाय देव का भाविन आत्मा अनन्तर के मध्य में होकर गर्भन

- ख- अनगार के मध्य में होकर गमन करने के हेतु
- २३ असुर-यावत्-वैमानिक देव का भावित आत्मा अनगार के मध्य में होकर गमन करना  
विनय विचार
- २४-२६ चौबीस दण्डकों में विनय  
मध्यगति
- २७ अल्पऋद्धिवाले देव का महर्घिक देव के मध्य में होकर गमन करना
- २८ समान ऋद्धिवाले देव का समान ऋद्धिवाले देव में होकर गमन करना
- २९-३० शस्त्र प्रहार करने के पूर्व या पश्चात् देवगति  
पुद्गल
- ३१ नैरयिकों का पुद्गलानुभव  
चतुर्थ पुद्गल उद्देशक
- ३२-३३ अतीत, अनागत और वर्तमान में पुद्गल परिणमन
- ३४ अतीत, अनागत और वर्तमान में पुद्गल स्कंध का परिणमन
- ३५ अतीत, अनागत और वर्तमान में जीव का परिणमन
- ३६ पुद्गल कथंचित् शास्त्रत-अशास्त्रत
- ३७ परमाणु कथंचित् चरम-अचरम
- ३८ दो प्रकार के परिणाम  
पंचम अग्नि उद्देशक
- ३९-४२ चौबीस दण्डक के जीव अग्नि के मध्य में होकर गमन करते हैं
- ४३-४६ चौबीस दण्डक के जीवों को दश प्रकार के अनुभव देव वैक्रेय
- ५०-५१ महर्घिक देव का पर्वतोत्लंघन

### षष्ठ आहार उद्देशक

- ५२ चौबीस दण्डक के जीवा का आहार, परिमाण योनि, स्थिति  
 ५३ चौबीस दण्डक के जीवों का वीचि और अवीचि द्रव्यों का  
 आहार  
 ५४ पाकद्र के रतिगृह का वणन  
 ५५ ईगाने-द्रके रतिगृह का वणन

### सप्तम गौतम आश्वामन उद्देशक

- ५६ केवल ज्ञान की प्राप्ति न होने से विन्न गौतम को भ० महावीर  
 का आश्वामन  
 ५७ भ० महावीर और गौतम के ज्ञान से अनुत्तर देवों के ज्ञान  
 की तुलना

### ५८ ६४ छद्म प्रकार के मुख्य

- ६५ भवन प्रत्यास्थानी अनगर की आहार में आसक्ति और मृत्यु  
 ६६ क लव सप्तम देव  
 ल धान्य काटने का उदाहरण  
 ६७ अनुत्तरोपपन्निक देव  
 ६८ अनुत्तरोपपन्निक देवों के गुभकम

### अष्टम अंतर उद्देशक

- ६९ सति नरका का अंतर  
 ७० सप्तम नरक से अचीक का अंतर  
 ७१ रत्नपभा से ज्योतिषिक देवों का अंतर  
 ७२ ज्योतिषिक देवों से अनुत्तर विमान पयत प्रत्येक देवलोक  
 का अंतर

### वृत्त

- ७३ शालग्राम की पूजा अर्चा महाविदेह में जन्म और निर्वाण  
 ७४ शालग्रामिका—शालग्राम के समान

- ७६ अम्बरयष्टिका — शालवृक्ष के समान  
परिव्राजक
- ८० अंबह परिब्राजक  
देव सामर्थ्य
- ८१ अव्यावाध देव का वैक्रिय सामर्थ्य
- ८२ इन्द्र की स्फूर्ति
- ८३ जृंभक देव-वर्णन
- ८४ जृंभक देवों के दशनाम
- ८५ जृंभक देवों का निवासस्थान
- ८६ जृंभक देव की स्थिति  
नवम अणगार उद्देशक
- ८७ भावित आत्मा अनगार का ज्ञान  
पुद्गल
- ८८ पुद्गल स्कंध का प्रकाश
- ८९ चन्द्र-सूर्य के विमानों के पुद्गल
- ९०-९२ चौबीस दण्डक के जीवों को सुख-दुःख देनेवाले पुद्गल
- ९३ क- चौबीस दण्डक के जीवों को इष्ट-अनिष्ट पुद्गल  
ख- इसी प्रकार कांत, प्रिय और मनीज पुद्गल  
देव सामर्थ्य
- ९४ मर्हद्विक देव का भापा सामर्थ्य  
भापा
- ९५ भापा की एकता  
ज्योतिषी देव
- ९६ सूर्य का भावार्थ
- ९७ सूर्य की प्रभा  
श्रमण और देव
- ९८ श्रमणों के सुख से देवताओं के सुख की तुलना

दशम केवली उद्देशक  
 ६६ १११ केवली क ज्ञान की व्यापकता

## पद्महर्षी शतक

### प्रथम उद्देशक

- १ क भावभती नगरा काष्ठक चै य आजाविक उपायिका ह्यालाहकी  
 फमकारी
- ख गोशालक के ममाप छद्म शिशाचरों का आगमन
- ग आठ प्रकार निमित्त नववा गात दशवा नृत्य
- घ छद्म प्रकार का फलांश
- २ क भ० महावीर का पर्णपण
- ख गोशालक का अपने आपको जिन कहना
- ग भ० महावार ने गौतम की जिज्ञासा पूर्ति के लिये गोशालक  
 का जीवन वृत्तांत सुनाया
- ३ क माता पिता के स्वगवाम क पदचाल भ० महावीर की दीर्घा
- ख प्रथम वर्षावाम अग्निग्राम म
- ग द्वितीय वर्षावाम राजगृह मे
- घ भ० महावीर का विजय गाथापति के घर पर प्रथम मासो  
 पवाम का पारणा
- ङ पांच प्रकार की दिव्य वर्षा
- च गोशालक का विजय गाथापति के घर आगमन
- छ आनन्द गाथापति के घर भ० महावीर के द्वितीय मासोपवाम  
 का पारणा
- ज सुनन्द गाथापति के घर भ० महावीर के तृतीय मासोपवाम  
 का पारणा
- झ बहुल माह्यण के घर भ० महावीर के चतुर्थ मासोपवाम का  
 पारणा

- क- भ० महावीर का गोशालक को शिष्यरूप में स्वीकार करना  
 ख- भ० महावीर और गोशालक का प्रणीत भूमि में छह वर्ष तक विचरण
- क- भ० महावीर और गोशालक का सिद्धार्थ ग्रामसे कूर्मग्राम की ओर विहार  
 ख- मार्ग में तिल के पीधे को लक्ष्य करके गोशालक का भ० महावीर से प्रश्न  
 ग- भ० महावीर के कथन को अस्वीकार करके गोशालक ने तिल के पीधे को उखाड़ फेंकना  
 घ- दिव्य उदक तृष्टि से तिल के पीधे का पुनः प्रत्यारोपण
- क- कूर्मग्राम के बाहर गोशालक का वैश्यायन वाल तपस्वी से विवाद  
 ख- वैश्यायन वाल तपस्वी द्वारा गोशालक पर तेजोलेश्या का प्रक्षेपण  
 ग- भ० महावीर द्वारा शीतलेश्या से गोशालक का रक्षण  
 घ- भ० महावीर का गोशालक को तेजोलेश्या की साधना का कथन
- क- भ० महावीर का गोशालक के साथ सिद्धार्थ ग्राम की ओर विहार  
 ख- भ० महावीर से अलग होकर गोशालक द्वारा तिल के पीधे का निरीक्षण, परीक्षण और परिवर्तवाद के सिद्धान्त का निरूपण  
 ग- गोशालक का भगवान ने पुनर्मिलन और भगवान् से अपने पूर्ववृत्त का परिश्रवण
- गोशालक को तेजोलेश्या की प्राप्ति
- क- छह दिशाचरों द्वारा गोशालक का शिष्यत्व स्वीकार  
 ख- शिष्य परिवार के साथ गोशालक का स्वतंत्र विचरण

- ग गोशाक्त के सम्बन्ध में भ० महावीर का स्पष्टीकरण
- १० क- गोशाक्त और आनन्द का मिलन  
ख- भगवान को तेजोवेश्या से भयम करने का गोशाक्त का दृष्ट  
निवृत्तम
- ग कणिक का दृष्टान्त
- ११ गोशाक्त के सामर्थ्य के सम्बन्ध में आनन्द की विज्ञप्ति
- १२ भ० महावीर का भोगम को गोशाक्त से विवाद करने का  
निषेधादेश
- १३ क भगवान के समीप गोशाक्त का स्वमत दर्शन  
ख- श्रीरक्षो लक्ष्य महाकल्प का प्रमाण
- ग ज्ञान दिव्य भवान्तरित ज्ञान मनुष्य भव  
घ- ज्ञान शरीरान्तर प्रवेश
- १४ भ० महावीर का गोशाक्त से आत्मगोपन का निषेध
- १५ भगवान् के प्रति गोशाक्त के आकाश वचन
- १६ क सर्वानुभूति अनगार का गोशाक्त को सत्य बचन  
ख गोशाक्त द्वारा सर्वानुभूति अनगार पर तेजोवेश्या का प्रहार
- १७ सुनक्षत्र अणगार पर भी तेजोवेश्या का प्रहार
- १८ गोशाक्त द्वारा भ० महावीर पर तेजोवेश्या का प्रभेषण
- १९ भ० महावीर का धमणा का आदेश
- २० गोशाक्त और भयमों के प्रश्नोत्तर
- २१ भिन्नतर गोशाक्त का शोध
- २२ गोशाक्त का राजाहला क वहा जाना
- २३ तेजोवेश्या का सामर्थ्य
- २४ चार प्रकार के वानक
- २५ चार प्रकार के अशक्त
- २६ स्थानवाणी
- २७ स्वभाषाणी

- २८ फलियों का पाणी
- २९ शुद्धपाणी'पूर्णभद्र और माणिभद्र देव की साधना
- ३०-३१ गोशालक और अयंपुलक आजीविकोपासक का मिलन
- ३२ मृत्यु महोत्सव करने के लिये गोशालक का स्थविरों को आदेश
- ३३ गोशालक को सम्यक्त्व की प्राप्ति
- ३४ अन्तिम संस्कार के सम्बन्ध में गोशालक का नया आदेश
- ३५ क- मेंडिक ग्राम. साणकोष्ठक चैत्य. मालुकावन  
ख- भ० महावीर को पित्तज्वर और रक्तातिसार की वेदना  
ग- सिंह अनगार की आशंका  
घ- सिंह अनगार को रेवती के घर से विजोरा पाक लाने के लिये  
भ० महावीर की आज्ञा
- ३६ सर्वानुभूति अनगार की सहस्रार कल्प में उत्पत्ति, महाविदेह में जन्म और मुक्ति
- ३७ सुनक्षत्र अनगार की अच्युत देवलोक में उत्पत्ति, महाविदेह में जन्म और मुक्ति
- ३८ गोशालक की अच्युत देवलोक में उत्पत्ति, गोशालक देव की स्थिति
- ३९- क- जम्बूद्वीप, भरत, विंध्याचल पर्वत, पुड्रदेश, शतद्वार नगर, संभूति राजा, भद्रा भार्या की कुक्षिसे गोशालक की आत्मा का जन्म  
ख- महापद्म, देवसेन और विमलवाहन से, तीन राजकुमार
- ४० महापद्म और देवसेन नाम देने का हेतु
- ४१ विमल वाहन नाम देने का हेतु
- ४२ विमल वाहन का श्रमणनिग्रंथों के साथ अनार्य व्यवहार
- ४३-४४ विमल वाहन के रथ से सुमंगल अनगार का अधः पतन
- ४५ सुमंगल अनगार के तपतेज से विमल वाहन का भष्म होना
- ४६ सुमंगल अनगार की सर्वार्थसिद्ध में उत्पत्ति तदनन्तर



महाविन्दु म जन्म और मुक्ति

- ४७ क विमल धान्न का भव धमण  
 ख जम्बूद्वीप भरत शिखाचल एतत्त वैभेल नाम मे ब्राह्मण कथा  
 के रूप म जन्म मरण क पन्चात अग्नि कुमार दव होना पुन  
 भव धमण
- ४८ ४९ महाविन्दु म जन्म और निर्वाण

## सोलहवाँ शतक

प्रथम अधिकरण उद्देशक

- १ क वायुशाय की उत्पत्ति और मरण  
 ख वायुशाय क जीव का शरीर सहित भवा नर
- २ क इगान कारिका (मगडी) म अग्निकाय की जवब उद्देश्य  
 स्थिति  
 ख इगान कारिका म वायुशायिक जीवो की उत्पत्ति  
 शिखा विचार
- ३ क तप्तलोहे का उचा नीचा करने म लगनेवाली शिखाए  
 ख तप्त लोहे मगता घन हथोडा एरण अगार आदि जिन  
 जीवा के शरीरो म बने है उन जीवा को लगनेवाली शिखाए
- ४ क तप्तसा\* का एरण पर रखने म लगनेवाली शिखाए  
 ख मोह सन्नास घन हथा । एरण एरणवाळ द्रोणी और  
 अधिकरण गावा आदि जिन जीवा क शरीरा म बने है उन  
 जीवा को लगनेवाली शिखाए
- ५ क अधिकरण हिमा  
 जीव अधिकरणी (हिमा का हेतु) और अधिकरण  
 ख अधिकरणी और अधिकरण कहने का हेतु
- ६ चौबीस दण्ड के जीव अधिकरणी और अधिकरण
- ७ क अविरति की अपेक्षा जीव साधिकरणी

- ख- चौबीस दण्डक के जीव साधिकरणी  
 न क- अविरति की अपेक्षा जीव आत्माधिकरणी पराधिकरणी  
 और तदुभयाधिकरणी  
 ख- चौबीस दण्डक के जीव आत्म पर और तदुभयाधिकरणी है  
 ६ क- अविरती की अपेक्षा जीवो का आत्म पर और तदुभय  
 प्रयोग से अधिकरण  
 ख- चौबीस दण्डक के जीवो का अविरती की अपेक्षा आत्म  
 पर और तदुभयप्रयोग से अधिकरण  
 १० शरीर  
 पाच प्रकार का शरीर  
 ११ इन्द्रियां, पाच इन्द्रिया  
 योग  
 १२ तीन प्रकार के योग  
 १३ औदारिक शरीर का वधक अधिकरण और अधिकरणी  
 १४ क- औदारिक शरीर के वधक दण्डक अधिकरणी और  
 अधिकरण  
 ख- वैक्रिय शरीर के वधक, दण्डक, अधिकरणी और अधिकरण  
 १५ क- आहारक शरीर के वधक अधिकरणी और अधिकरण प्रमाद  
 ख- तैजस शरीर के वधक-प्रदोत्तराक १३ के समान  
 ग- कामण शरीर के वधक-प्रदोत्तराक १३ के समान  
 १६ पञ्चेन्द्रिय के वधक प्रदोत्तराक १३ के समान  
 १७ क- तीन योग के वधक प्रदोत्तराक १३ के समान  
 ख- चौबीस दण्डक में तीन योग के वधक  
 ग- उन्तीस दण्डक में वधनयोग  
 द्वितीया जरा उद्देशक  
 १८-१९ क- जीवो को जरा और शोक  
 ख- चौबीस दण्डक में जरा और शोक

ग- असत्री जीवों में शोक का अभाव, शोक न होने का कारण

२० शक्रेन्द्र

भ० महावीर के समीप शक्रेन्द्र का आगमन

२१ २२ पाच प्रकार के अवग्रह

२३ शक्रेन्द्र मत्स्यवादी

२४ शक्रेन्द्र सत्य आदि चार भाषा का भाषक है

२५ शक्रेन्द्र सावध एवं निरवश भाषी है

२६ शक्रेन्द्र भवसिद्धिक आदि

२७ क चैतन्य कृत कर्म चैतन्य कृत होने के कारण

ख- चौबीस दण्डक में चैतन्यकृत कर्म

### तृतीय कर्म उद्देशक

२८ क आठ कर्म प्रकृतिया

ख चौबीस दण्डक में आठ कर्म प्रकृतिया

२९ ज्ञानावरण का वेदक, आठ कर्म प्रकृतिया का वेदक

३० क भ० महावीर का राजशुद्ध के गुणशील चैतन्य से विहार

ख उल्लुङ्गतीर नगर के एक जम्बूक चैतन्य में पधारे

त्रिया विचार

३१ कायोत्सव में स्थित मुनि के अश काटने वाले बँध को और

मुनि को लगनेवाली क्रियाएँ

### चतुर्थ जावतिय उद्देशक

३२ ३६ नैऋतिक भू त्रि यभोचा श्रमण की निर्जरा अधिक

३७ क अग्नि निर्जरा होने का हेतु

ख वृद्ध कठियार का उदाहरण

ग तरुण कठियार का उदाहरण

घ शाम के पूने का उदाहरण

ङ तप्त तब पर पानी के विन्दु का उदाहरण

### पंचम गंगदत्त उद्देशक

- ३८ क- उल्लुक तीर नगर-गुक जम्बूक चैत्य में भ० महावीर पवारे शक्रेन्द्र का आगमन  
 ख- बाह्यपुद्गल ग्रहण किये बिना देव का आगमन असम्भव  
 ग- १ गमन २ भाषण ३ उत्तरदान ४ पलक भ्रमकना ५ शरीर के अवयवों का संकोच-विकास ६ स्थान शय्या निपद्याभोग ७ विक्रिया ८ परिचरणा का न होना
- ३९ क- शक्र का उत्सुकतापूर्वक नमन  
 ख- महाशुक्रकल्प में सम्यग्दृष्टि गंगदत्तदेव की उत्पत्ति और उसका मिथ्यादृष्टि देव के साथ वाद  
 ग- वाद का विषय-परिणामप्राप्त पुद्गल परिणत या अपरिणत  
 घ- गंगदत्तदेव का भ० महावीर के समीप आगमन
- ४० गंगदत्त देव का भ० महावीर से प्रश्न
- ४१ क- गंगदत्त देव की जिज्ञासा में भवसिद्धिक हूँ या अभवसिद्धिक  
 ख- भ० महावीर के सम्मुख गंगदत्त देव का नाट्यप्रदर्शन  
 ग- गंगदत्त देव का स्वस्थान गमन
- ४२ गंगदत्त देव की दिव्य ऋद्धि के सम्बन्ध में कूटागार शाला का दृष्टान्त
- ४३ दिव्य ऋद्धि प्राप्त होने का कारण
- ४४ क- जम्बूद्वीप, भरत, हस्तिनापुर, सहस्रात्रवन  
 ख- गंगदत्त गृहपति  
 ग- भ० मुनिसुवत का पदार्पण  
 घ- गंगदत्त का दर्शनार्थ गमन
- ४५ गंगदत्त की प्रतिबोध
- ४६ गंगदत्त की दीक्षा और अन्तिम आराधना
- ४७ गंगदत्त देव की स्थिति
- ४८ गंगदत्त देव का च्यवन महाविदेह में जन्म और निर्वाण

## षष्ठ स्वप्न उद्देशक

- ४६ पाच प्रकार का स्वप्न  
 ५० स्वप्न देखने का समय  
 ५१ जीव मुप्त जागृत और मुप्त जागृत  
 ५२ ५३ चौबीस दण्डक के जीव मुप्त जागृत और मुप्त जागृत  
 ५४ सवृतादि का मत्स्यामत्य स्वप्न  
 ५५ जीव-मृत असृत और मृतोत्पन्न  
 ५६ चयालाम्य प्रकार के स्वप्न  
 ५७ तीस प्रकार के महास्वप्न  
 ५८ स्वप्न और महास्वप्न की संयुक्त संख्या  
 ५९ तीर्थंकर की माता के स्वप्न  
 ६० चक्रवर्ती की माता के स्वप्न  
 ६१ वामुद्वही माता के स्वप्न  
 ६२ बलद्व की माता के स्वप्न  
 ६३ मङ्गलिक की माता के स्वप्न  
 ६४ ६५ भ० महावीर की छत्रम्य अवस्था के स्वप्न और उनका फल  
 ६६ ८० मुक्त होने वालों के स्वप्न  
 ८१ कोष्टपुत्र-यावत केतकीपुत्र के पुद्गलों का वायु के साथ बहन  
 सप्तम उपयोग उद्देशक  
 ८२ दो प्रकार के उपयोग  
 अष्टम लोक उद्देशक  
 ८३ लोक की महानता-भावत परिधि  
 ८४ ८७ लोक क पूर्वान् आत्ति जीव नहीं किन्तु जीवदेग जीव  
 प्रणेग अजीव अजीवदेग और अजीवप्रदेग हैं  
 ८८ रत्नप्रभा के पूर्वान् आदि से-यावन् ईपरप्राग्भारा के पूर्वान्  
 आदि पयन्त  
 ८९ पुद्गल

एक समय में परमाणु की गति

६० क्रिया विचार

वर्षा की जानकारी के लिए हाथ पसारनेवाले को लगने वाली क्रियाएं

६१ क- देव का अलोक में हाथ पसारना सम्भव नहीं

ख- हाथ न पसारसकने का हेतु

नवम बलिन्द्र उद्देशक

६२ क- बलीन्द्र (वैरोचनेन्द्र) की सुधर्मा सभा

ख- बलिचंचा राजधानी का विष्कम्भ

ग- बलीन्द्र की स्थिति

दशम अवधिज्ञान उद्देशक

६३ दो प्रकार का अवधिज्ञान

एकादशम द्वीपकुमार उद्देशक

६४ द्वीपकुमारों का समान आहार, समान उच्छ्वास-निश्वास

६५ द्वीपकुमारों के चार लेश्या

६६ चार लेश्यावाले द्वीपकुमारों का अल्प-बहुत्व

६७ चार लेश्यावाले द्वीपकुमारों में अल्पऋद्धिक-मर्हधिक की अल्प-बहुत्व

द्वादशम उदधिकुमार उद्देशक

६८ उदधि कुमारों के सम्बन्ध में—एकादश उद्देशक के समान

त्रयोदशम दिक्कुमार उद्देशक

६९ दिक्कुमारों के संबन्ध में—एकादश उद्देशक के समान

सतरहवाँ शतक

प्रथम कुंजर उद्देशक

१ क- राजगृह, भ० महावीर और गौतम

ख- उदायी हस्ती का पूर्वभव

- २ उन्नीस हस्ता का परभव
- ३ उदाया हस्ता का नृशय भव महाविद्वत् में ज्ञान और निरालस
- ३ भूनामन्द हस्ता का पूर्वभव और परभव उन्नीस व समान क्रिया विचार
- ५ क ताड वृत्पर चङ्कर ताडकन गिराने वाले को लगने वाला क्रियायें  
 ख ताडकन और ताडकन जिन जीवा क दारीर न बना है उन जीवा को लगने वाला क्रियायें
- ६ गिरन हृण ताड फल म यदि बाव बध न हो—१ फल गिराने वाला पुष्प का ताड रूप क जीवों को ३ ताड फल क जीवा का ४ ताड फल क उपकारा जीवा को लगने वाली क्रियायें
- ७ क वृत्त-भूत्त त्रिवान धान को तथा गिरानेवाले का लगने वाला क्रियायें  
 ख वृत्त भूत्त तथा बाव आदि क उत्तर जिन जीवा स बन हुए हैं उन जीवा को लगने वाली क्रियायें
- ८ गिरन हृण वृत्त म यदि जीवबध हा तो १ वृत्त गिरने वाला पुष्प का २ भूत्त तथा बाव आदि क जीवा को ३ भूत्त आदि क उपकारों जीवा को लगने वाली क्रियायें
- ९ वृत्त का कन्द द्विवान धान पुष्प का प्रदत्तक ६ क समान
- १० गिरन हृण कन्द म यदि जीवबध हा तो प्रदत्तक ३ के समान
- ११ १० गभान त्रिद्वय और पाण
- १४ तग दण्डका मे औदारिक शरीर का बधक एक जीव को लगने वाली क्रियायें
- १५ क तग दण्डका म औदारिक शरीर के बधक वृत्त त जीवों को लगने वाली क्रियायें  
 ख तग तग क बधको को लगने वाली क्रियायें  
 म पाचा इद्रिया क बधका को लगने वाली क्रियायें

घ- एक वचन और बहु वचन की अपेक्षा से द्वाव्वीस विकल्प

- १६ छह प्रकार के भाव  
१७ दो प्रकार के औदयिक भाव

### द्वितीय संयत उद्देशक

१८ क- संयत-विरत धार्मिक, असंयत-अविरत अधार्मिक और संयता-संयत-धर्माधार्मिक

ख- धर्म में स्थित होने का हेतु

१९ जीव धर्म, अधर्म और धर्माधर्म में स्थित हैं  
अन्य तीर्थिक

२०-२१ चौबीस दण्डक के जीव धर्म, अधर्म और धर्माधर्म में स्थित हैं

२२ अन्य तीर्थिकों की मान्यता—एक जीव के वध की अविरति  
जिसके है वह बालपंडित है

२३ जीव बाल, पंडित और बालपंडित है

२४-२५ चौबीस दण्डक के जीव बाल, पंडित और बाल पंडित हैं  
अन्य तीर्थिक

२६ अन्य तीर्थिकों की मान्यता—जीव और जीवात्मा कथंचित्  
भिन्न है

भ० महावीर की मान्यता—जीव और जीवात्मा भिन्न हैं  
वैक्रेय शक्ति

२७ क- देवरूपी रूप की विकुर्वणा करने में समर्थ है,

ख- अरूपी रूप की विकुर्वणा नहीं कर सकता

२८ अरूपी रूप की विकुर्वणा न कर सकने का हेतु

### तृतीय शैलेषी उद्देशक

२९ शैलेषी अनगार का पर प्रयोग के बिना कंपन नहीं

३० पांच प्रकार की एजना-कम्पन

३१-३५ एजना और एजना के हेतु



- ३६-४३ तीन प्रकार की चलना चलना क हेतु  
पचन बोल
- ४४ मरण-यावन-मारणात्मिक अहिंसात्मिका का अन्तिम पत्र भाग  
अनुसंधान क्रिया उद्देशक
- ४५ क- धर्मग्रह  
ख प्राणानिधान क्रिया
- ४६ क सृष्टि क्रिया चौबीस दण्डक में सृष्टि क्रिया  
ख व्यापार और अघ्याघातक क्रिया का दिग्ग विचार
- ४७ ४८ श्रुतवादि अदस्तागत मंत्रुन और परिग्रह मन्त्रधी क्रिया
- ४९ चौबीस दण्डक में उत्पन्न क्रियाएँ
- ५० क्षेत्र में सृष्टि क्रिया प्राणानिधान-यावन परिग्रह से
- ५१ प्रदेश सृष्टि क्रिया प्राणानिधान यावन परिग्रह से  
दुःख
- ५२ क आत्महृत दुःख  
ख चौबीस दण्डक में आत्महृत दुःख
- ५३ क आत्महृत दुःख का वेदन  
ख चौबीस दण्डक में आत्महृत दुःख का वेदन
- ५४ क आत्महृत वेदना
- ५५ क आत्महृत वेदना का वेदन  
ख चौबीस दण्डक में आत्महृत वेदना का वेदन  
पञ्चम सुधर्मा सभा उद्देशक
- ५६ क ईशानेन्द्र की सुधर्मा सभा-वाक्य  
ख ईशानेन्द्र की स्थिति  
षष्ठ पृथ्वी कायिक उद्देशक
- ५७ क पृथ्वीकायिक जीव का उत्पन्न होने से पूब या पश्चात् आहार  
ग्रहण करना  
ख रत्नप्रभा पृथ्वी का जीव सौचम कल्प की पृथ्वी में उत्पन्न

जीव—रत्न प्रभा पृथ्वी से ईशानकल्प की पृथ्वी में उत्पन्न  
जीव-यावत्-ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी में उत्पन्न जीव

ग- आहार ग्रहण का हेतु

सप्तम पृथ्वी कायिक उद्देशक

५८ सौधर्म कल्प की पृथ्वी से रत्नप्रभा की पृथ्वी में उत्पन्न जीव-  
यावत्-तम प्रभाः पृथ्वी में उत्पन्न जीव

अष्टम अप्कायिक उद्देशक

५९ क- अप्कायिक जीवों का उत्पन्न होने के पूर्व या पश्चात् आहार  
ग्रहण करना

ख- आहार ग्रहण का हेतु

ग- रत्नप्रभा पृथ्वी में से अप्कायिक जीवका सौधर्मकल्प में अप्का-  
यिक रूप में उत्पन्न होना

नवम अप्कायिक उद्देशक

६० सौधर्म कल्प से अप्कायिक जीव का रत्नप्रभा में अप्कायिक  
रूप में उत्पन्न होना-यावत्-तमस्तमप्रभा में उत्पन्न होना

दशम वायुकायिक उद्देशक

६१ रत्नप्रभा से वायुकायिक जीवका सौधर्म कल्प में वायुकायिक  
रूप में उत्पन्न होना

एकादश वायुकायिक उद्देशक

६२ सौधर्म कल्प से वायुकायिक जीव का रत्नप्रभा में-यावत्-  
तमस्तमप्रभा में वायुकायिक जीव का उत्पन्न होना

द्वादश एकेन्द्रिय उद्देशक

६३ सर्वे एकेन्द्रियों का आहार, उच्छ्वास-यावत्-आयु उत्पत्ति  
सम्बन्धी वर्णन

६४ एकेन्द्रियों की लेश्या

६५ लेश्यावाले एकेन्द्रियों का अल्प-बहुत्व

- ६६ लेश्यावाल एकेन्द्रियों की श्रुति का अल्प-बहुत्व  
त्रयोदश नागकुमार उद्देशक
- ६७ नागकुमारा का आहार-यावत्-श्रुति का अल्प-बहुत्व  
चतुर्दश सुवर्णकुमार उद्देशक
- ६८ सुवर्णकुमारों का आहार-यावत्-श्रुति का अल्प-बहुत्व  
पञ्चदश-विद्युत्कुमार उद्देशक
- ६९ विद्युत्कुमारा का आहार-यावत्-श्रुति-अल्प-बहुत्व  
षोडश वायुकुमार उद्देशक
- ७० वायुकुमारों का आहार-यावत्-श्रुति-अल्प-बहुत्व  
सप्तदश अग्निकुमार उद्देशक
- ७१ अग्निकुमारा का आहार-यावत्-श्रुति-अल्प-बहुत्व

### अठाहरवीं शतक

#### प्रथम प्रथम उद्देशक

- १ क जीव जीवभाव से अप्रथम है  
ग चौबीस दण्डक क जीव जीवभाव से अप्रथम है
- २ मिद्ध मिद्धभाव से प्रथम है
- ३ क समस्त जीव जीवभाव से अप्रथम है  
ग चौबीस दण्डक के समस्त जीव जीवभाव से अप्रथम है
- ४ समस्त मिद्ध मिद्धभाव से अप्रथम है

५-१६ १ जीव २ आहारक, ३ भवमिद्धक ४ सज्ञी, ५ लेश्या, ६ दृष्टि,  
७ समस्त ८ कषाय ९ ज्ञान, १० योग, ११ उपयोग, १२ वेद  
१३ शरीर १४ पर्याप्त

उक्त द्वारा से एक वचन बहु वचन की अपेक्षा चौबीस दण्डको  
से प्रथमापथम भाव की विचारणा

२० ३५ १ जीव २ आहारक ३ भवमिद्धक ४ सज्ञी ५ लेश्या ६ दृष्टि  
७ समस्त ८ कषाय ९ ज्ञान १० योग ११ उपयोग १२ वेद

१३ शरीर १४ पर्याप्त

उक्त द्वारों में एक वचन बहु वचन की अपेक्षा चौबीस दण्डकों में चरमाचरम की विचारणा

### सूत्रांक द्वितीय विशाखा उद्देशक

१ विशाखा नगरी, बहुपुत्रिक चैत्य, भ० महावीर का पदार्पण, शकेन्द्र का आगमन नाट्य प्रदर्शन

२ क- भ० गीतम को शकेन्द्र की ऋद्धि तथा पूर्वभव की जिज्ञासा  
ख- भ० महावीर द्वारा समाधान

३ क- हस्तिनागपुर, सहस्राम्रवन, कार्तिक सेठ, एक हजार आठ व्यापारियों में प्रमुख

ख- भ० मुनि सुवत का पदार्पण

४ कार्तिक सेठ का धर्मश्रवण और वैराग्य

५-७ एक हजार आठ वणिकों के साथ कार्तिक सेठ का प्रव्रज्या ग्रहण चौदहपूर्व, का अध्ययन, तपश्चर्या, अन्तिम आराधना, शकेन्द्र रूप में उत्पन्न होना, पश्चात् महाविदेह में जन्म और निर्वाण  
तृतीय माकंदीपुत्र उद्देशक

८ क- राजगृह, गुणशील चैत्य, भ० महावीर से माकंदीपुत्र अनगार के प्रश्न

ख- कापोत लेश्या वाले पृथ्वीकायिक जीव का मनुष्यभव प्राप्त करके मुक्त होना

९-१० क- कापोत लेश्यावाले अप्कायिक और वनस्पतिकायिक जीव का मनुष्यभव प्राप्त करके मुक्त होना

ख- भ० महावीर के प्राप्त समाधान के सम्बन्ध में माकंदीपुत्र की स्थविरों से वार्ता

ग- भ० महावीर के समीप समाधान के लिये स्थविरों का आगमन

घ- माकंदीपुत्र से स्थविरों का धमा याचन

- ११ भाविन आरता अनपार के सर्वलोकध्यायी चरम निर्जरा पुद्गल
- १२ उपपागपुत्र छदस्थ का निर्जरा पुद्गलों को जानना
- १३-१५ क पुद्गलों का आहार करना
- ग चौबीस दण्डक के जीवा को निर्जरा पुद्गलों का ज्ञान तथा निर्जरा पुद्गलता का आहार करना
- १६ २० दो प्रकार का बध
- २१ चौबीस दण्डक के जीवों का भावबध
- २२-२३ चौबीस दण्डक में ज्ञानावरणीय-यावन-अन्नराज की मूल उत्तर प्रकृतियों का बध
- २४ अर्धन तथा भविष्य के कर्मों में भिन्नता धनुष बाण का उदाहरण
- २५ चौबीस दण्डक के अर्धन तथा भविष्य के कर्मों में भिन्नता
- २६ चौबीस दण्डक के जीवा द्वारा आहाररूप में गृहीत पुद्गलों की आहाररूप में परिणति तथा निर्जरा
- २७ अनिमूढम निवरिन पुद्गल चतुर्थ प्राणातिपात उद्देशक
- २८ क- राजगृह
- ख अठारह पाप वृष्णीकाय-यावन वनस्पतिकाय, धर्मास्त्रिकाय, -यावन-परमाणु पुद्गल शैलेयी अवस्थाप्राप्त अनपार और स्पून-शरीरधारी वेद्भिः आदि इनमें से कुछ जीव क परिभोग में आते हैं और कुछ परिभोग में नहीं आते हैं
- ग ऐमा कहन का हेतु
- २९ चार प्रकार का कषाय
- ३० कृतयुग्मादि चार रागि
- ३१ ३३ चौबीस दण्डक में कृतयुग्मादि चार रागि
- ३४ सभी दण्डकों में कृतयुग्मादि चार रागि
- ३५ अन्य और उन्मूढ मायुजाले अशक वद्विजीव

### पंचम असुर कुमार उद्देशक

३६ क- एक असुरकुमारावास में दो प्रकार के असुरकुमार

एक दर्शनीय और एक अदर्शनीय

ख- दर्शनीय और अदर्शनीय होने का हेतु

ग- त्रिभूषित और अत्रिभूषित मनुष्य का उद्धारहण

३७ नागकुमार आदि भवनवासी देव व्यन्तरदेव

३८ क- एक नरकावास में दो प्रकार के नैरयिक, एक महाकर्मा और एक अल्पकर्मा

ख- नैरयिकों के अल्पकर्मा और महाकर्मा होने का हेतु

३९ सोलह दण्डकों में अल्पकर्मा और महाकर्मा जीव

४०-४१ चौबीस दण्डक में मृत्यु से कुछ समय पूर्व दो प्रकार की आयु का बंध

४२-४३ देवताओं की इष्ट और अनिष्ट विकुर्वणा

### षष्ठ गुड़ वर्णादि उद्देशक

४४ निश्चय और व्यवहार नय से गुड़ के वर्ण आदि

४५ निश्चय और व्यवहार से भ्रमर के वर्णादि

४६ निश्चय और व्यवहार नयसे सुकपिच्छ के वर्णादि

ख- मंजिष्ठ, हल्दी, शंख, कुष्ठ, मृतकलेवर, निम्ब, सूँट, कपित्थ, इमली, खंड, यज्ञ, नवनीत, लोह, उल्लूकपत्र, हिम, अग्नि, तेल, आदि का निश्चय और व्यवहारनय से वर्ण, गंध, रस और स्पर्श

४७ निश्चय और व्यवहारनय से राख के वर्णादि

४८ परमाणु के वर्ण, गंध, रस, स्पर्श

४९-५० द्विप्रदेशिक स्कन्ध-यावत्-अनन्त प्रदेशिक स्कन्ध के वर्ण आदि सप्तम केवली उद्देशक

५१ क- राजगृह-भ० महावीर और गौतम गणधर

## ख अन्वयतीर्थिक

अन्वयतीर्थिक की मान्यता

यशाविष्ट केवली की रूपा एव मित्र भाषा

भ० महावीर की मान्यता

केवली यशाविष्ट नहीं हाना

केवली की तत्त्व और असत्वाख्या भाषा

५२ उपधि

तीन प्रकार की उपधि

५३ चौबीस दण्डक में तीन प्रकार की उपधि

५४ क- तीन प्रकार की उपधि

ख चौबीस दण्डक में तीन प्रकार की उपधि

परिग्रह

५५ तीन प्रकार का परिग्रह

५६ चौबीस दण्डक में तीन प्रकार का परिग्रह

५७ ६० क तीन प्रकार के प्रणिधान

ख चौबीस दण्डक में तीन प्रकार के प्रणिधान

६१ क तीन प्रकार के दुष्प्रणिधान

ख चौबीस दण्डक में तीन प्रकार के दुष्प्रणिधान

६२-६३ क तीन प्रकार का सुप्रणिधान

ख सोलह दण्डक में तीन प्रकार का सुप्रणिधान

६४ ६५ क राजगृह गुणशील चैत्य

ख अन्वयतीर्थिक —

मद्दुक अमणोरामक भ० महावीर का पदार्पण, मद्दुक का

भ० महावीर की वदना के लिये जाना, माग में मद्दुक में अन्व-

तीर्थिकों का अस्तिनाय के मरुष में प्रश्न

ग अ व तीर्थिकों में मद्दुक के प्रणिधान

६६ मद्दुक के यथार्थ उत्तर के प्रति भ० महावीर का साधुवाद

- ६७ मद्रुक की अन्तिम साधना और निर्वाण  
देवताओं का वैक्रेय सामर्थ्य
- ६८ विकुवितरूपों द्वारा देवता का युद्ध सामर्थ्य
- ६९ वैक्रेय शरीरों का एक जीव के साथ सम्बन्ध
- ७० वैक्रेय शरीरों के अन्तरो के एक जीव के साथ सम्बन्ध
- ७१ शरीरों के मध्य अन्तरो का शस्त्रादि से छेदन संभव नहीं  
देवासुर संग्राम
- ७२ देवामुर संग्राम की संभावना
- ७३ देवामुर संग्राम में शस्त्ररूप परिणत पदार्थ
- ७४ असुरों के विकुवित शस्त्र
- ७५-७६ देवताओं का गमन सामर्थ्य
- ७७-८० क- देवताओं के पुण्यकर्म का अर्थ  
ख- असुरकुमार-यावत्-अनुत्तर देवों के कर्मक्षय का भिन्न २ काल  
अष्टम अनगार क्रिया उद्देशक
- ८१ क- राजगृह, भ० गीतम  
ख- भावित आत्मा अनगार की ऐर्यापथिकी क्रिया
- ८२ अन्य तीर्थिकों ने भ० गीतम को एकान्त असंयत-यावत्-एकान्त-  
वाल कहा
- ८३ अन्य तीर्थिकों ने एकान्त असंयत तथा वाल कहने का कारण  
वताया
- ८४ भ० गीतम ने एकान्त असंयत-यावत्-एकान्त वाल कहने का  
कारण वताया
- ८५ अन्य तीर्थिकों को यथार्थ उत्तर देने पर भ० महावीर ने भ०  
गीतम को साधुवाद दिया
- ८७ छद्मस्थ का परमाणुज्ञान-दो विकल्प
- ८८ द्विप्रदेशिक स्कन्ध-यावत्-अनन्त प्रदेशिक स्कन्ध के सम्बन्ध में  
प्रदोत्तरांक ८७ के समान दो विकल्प



- ८६ अनन्त प्रदेगिक एकध के सम्बन्ध में चार विकल्प
- ९० अवधिज्ञानी का परमाणुज्ञान प्रश्नोत्तरांक ७ ८ ९ के समान विकल्प
- ९१ परमावधिज्ञानी तथा दान का भिन्न भिन्न समय
- ९२ केवमज्ञानी के ज्ञान तथा दान का भिन्न भिन्न समय
- नवम भव्य द्रव्य उद्देशक
- ९३ ९४ चौबीस दण्डक व भव्य द्रव्य जीव
- ९५ ९६ चौबीस दण्डक के भव्य द्रव्य जीवों की स्थिति
- दशम सोमिल उद्देशक
- वैक्रिय और पुद्गल
- भावित आत्मा अनन्त की वैक्रिय लब्धि का सामर्थ्य
- ९८ वायु और पुद्गल
- परमाणु यावत् अनन्त प्रदेगिक एकध से वायु का स्पष्ट
- ९९ घट्टिन (मशक) और वायुकाय
- १०० १०२ रत्नप्रभा यावत् ईषत्प्रभाभारी पृथ्वी के नीचे अच्योत्य सम्बद्ध द्रव्य
- १०३ क वाणिज्यश्राम कृतिपन्नाश चैत्य चार वेद आदि ब्राह्मण शास्त्रों में निपुण सामिल धारणा उम्क पाव सौ शिष्य भ० महावीर का पदासन
- ख गिष्य परिवार सहित सोमिल का भ० महावीर के समीप आगमन
- १०४ ११० यात्रा यापनाय अन्धाबाध और प्रामुक विहार के सम्बन्ध में भगवान् स प्रश्न
- १११ ११५ क मरुत्तव मास कलत्थ और एव अनेक के सम्बन्ध में भगवान् का स्पष्टीकरण
- क सोमिल को बोध की प्राप्ति
- ११६ सोमिल की अन्तिम साधना और निर्वाण

## उन्नीसवाँ शतक

प्रथम लेश्या उद्देशक

१ छ प्रकार की लेश्या

द्वितीय गर्भ उद्देशक

२ कृष्णलेश्यावाला कृष्णलेश्यावाले गर्भ को उत्पन्न करता है  
तृतीय पृथ्वी उद्देशक

३ क- राजगृह

ख- पृथ्वीकाय के जीवों के प्रत्येक शरीर का बंध

४-१८ पृथ्वीकायिक जीवों की निम्नांकित विषयों से विचारणा—  
लेश्या, दृष्टि, ज्ञान, उपयोग, आहार, स्पर्श, प्राणातिपात-  
यावत्-मिथ्यादर्शनशल्य, उत्पाद, स्थिति समुद्घात, उद्वर्तना

१९ क- अष्कायिक जीवों की पृथ्वीकायिकों के समान विचारणा

ख- स्थिति में भिन्नता

२० क- अग्निकायिकों की पृथ्वीकायिकों के समान विचारणा

ख- उपपात, स्थिति और उद्वर्तना में भिन्नता

ग- वायुकायिकों में समुद्घात की विशेषता, शेष अग्निकाय  
के समान२१ वनस्पतिकायिकों में शरीर, आहार, स्थिति में भिन्नता,  
शेष अग्निकाय के समान

२२ पृथ्वीकायिक आदि की अवगाहना का अल्प-बहुत्व

२३-२७ पृथ्वीकायिक आदि परस्पर सूक्ष्मता

२८-३१ पृथ्वीकायिक आदि की परस्पर स्थूलता

३२ पृथ्वीकाय के शरीर का प्रमाण

३३ क- पृथ्वीकाय के शरीर की सूक्ष्म अवगाहना

ख- चक्रवर्ती की द्रामी द्वारा पृथ्वीपिंड पीसने का उदाहरण

३४ पृथ्वीकाय की वेदना, वृद्धपर तरुण पुरुष के प्रहार का दृष्टान्त

- ३५ अनाय-यावन-वनस्पतिनाय की वेदना शृङ्खीनाय के समान  
चतुर्थ महाश्रय उद्देशक
- ३६ ५४ चौबीस दण्डक म—महा आश्रय, महाश्रिया, महा वेदना  
और महानिजरा का विचार  
पंचम चरम उद्देशक
- ५५ ५७ षोडश दण्डक म अल्पायु तथा उच्छृणु के साथ-साथ  
महाश्रम किया  
आश्रय और वेदना का विचार
- ५८ ५ दो प्रकार की वेदना  
स चौबीस दण्डक म दो प्रकार की वेदना  
षष्ठ द्वीप उद्देशक
- ५९ द्वीप समुद्रा के स्थान सरथान आदि का विचार  
सप्तम भवन उद्देशक
- ६० ६१ अमुरकुमारा के भवनावाप्तों की सरथा तथा सभिन्न  
भवनावाप्तों का परिचय
- ६२ ६३ अंतरवासा का सभिन्न परिचय
- ६४ ज्योतिष्भावामो का सभिन्न परिचय
- ६५ ६७ सोधम कल्प क विमानो की सरथा सब विमानावाप्तों का  
सभिन्न परिचय
- अष्टम निवृत्ति उद्देशक
- ६८ चौबीस दण्डक म एकेन्द्रिय-यावन पनेन्द्रिय निवृत्ति  
चौबीस दण्डक म कम निवृत्ति  
चौबीस दण्डक मे शरीर निवृत्ति  
चौबीस दण्डक म मर्षा द्वय निवृत्ति  
चौबीस दण्डक म भाषा निवृत्ति  
चौबीस दण्डक मे मन निवृत्ति

चौबीस दण्डक में कषाय निवृत्ति  
 चौबीस दण्डक में वर्ण निवृत्ति  
 चौबीस दण्डक में संस्थान निवृत्ति  
 चौबीस दण्डक में संज्ञा निवृत्ति  
 चौबीस दण्डक में लेश्या निवृत्ति  
 चौबीस दण्डक में दृष्टि निवृत्ति  
 चौबीस दण्डक में ज्ञान निवृत्ति  
 चौबीस दण्डक में अज्ञान निवृत्ति  
 चौबीस दण्डक में योग निवृत्ति  
 चौबीस दण्डक में उपयोग निवृत्ति  
 नवम करण उद्देशक

६६ पाच प्रकार का करण

७० चौबीस दण्डक में पांच प्रकार का करण

७१ चौबीस दण्डक में शरीर करण

७२ चौबीस दण्डक में इन्द्रिय करण

चौबीस दण्डक में भाषा करण

चौबीस दण्डक में कषाय करण

चौबीस दण्डक में समुद्घात करण

चौबीस दण्डक में संज्ञा करण

चौबीस दण्डक में लेश्या करण

चौबीस दण्डक में दृष्टि करण

चौबीस दण्डक में वेद करण

७३ चौबीस दण्डक में एकेन्द्रिय-यावत्-पचेन्द्रिय प्राणातिपात करण

७४ पाच प्रकार का पुद्गल करण

७५ पांच प्रकार का वर्ण करण

पाच प्रकार का स्पश करण

७६ पाच प्रकार का सस्यान करण

दशम व्यतर उद्देशक

७७ व्यतरों का आहार उच्छ्वाम-यावत महृषिक अल्पविक अल्प बहुत्व

## बीसवाँ शतक

प्रथम वेद्द्रिय उद्देशक

१ वेद्द्रियादि जीवों के शरीरबन्ध का क्रम

२ वेद्द्रियादि जीवों के दृष्टि ज्ञान योग, आहार में भिन्नता—  
षोडश अग्निकायवत्

३ वेद्द्रियादि जीवों की स्थिति में भिन्नता

४ सर्वाथसिद्ध पयन्म पचेद्रिय जीवों के शरीर बन्ध जेव्या दृष्टि  
ज्ञान अज्ञान योग में भिन्नता षोडश वेद्द्रिय के समान

५ पचेद्रियो में सज्ञा प्रज्ञा मन और वचन

६ पचेद्रियो में इष्ट-अनिष्ट रूप गंध, रस स्पश का अनुभव

७ पचेद्रिया में प्राणातिपाल यावत् मिथ्यादशनशल्प स्थिति  
समुद्घात और उद्घतना षोडश वेद्द्रियो के समान

द्वितीय आकाश उद्देशक

८ दो प्रकार का आकाश

९ क लोकाकाश जीव जीवदेशरूप है

ख धर्मास्तिकाय यावत पुद्गलास्तिकाय कितना बड़ा है

१० क अधालोक की महानता

ख ईष्यभ्राम्भारा पृथ्वी की महानता

११ १५ पचास्तिकाय के पर्यायवाची

तृतीय प्राणबन्ध उद्देशक

१६ क अठारह पाप

- ख- अठारह पाप विरति  
 ग- चार बुद्धि  
 घ- चार अवग्रहादि  
 ङ- पांच उत्थानादि  
 च- चौबीस नैरयिकत्व आदि  
 छ- आठ कर्म  
 ज- छह लेश्या  
 झ- तीन दृष्टि  
 ञ- चार दर्शन  
 ट- पांच ज्ञान  
 ठ- तीन अज्ञान  
 ड- चार संज्ञा  
 ढ- पांच शरीर  
 ण- तीन योग  
 त- दो उपयोग

इन सबका आत्मा के साथ परिणमन है

२७ गर्भ में उत्पन्न जीव के वर्णादि

चतुर्थ उपचय उद्देशक

१८ पांच प्रकार का इन्द्रियोपचय

पंचम परमाणु उद्देशक

१९ परमाणु के सोलह विकल्प

२० वर्णादि की अपेक्षा द्विप्रदेशिक स्कंध के बियालीस विकल्प

२१ वर्णादि की अपेक्षा त्रिप्रदेशिक स्कंध के एक सो बियालीस विकल्प

२२ वर्णादि की अपेक्षा चतुप्रदेशिक स्कंध के दो सो बार्दिस विकल्प

२३ वर्णादि की अपेक्षा पंच प्रदेशिक स्कंध के तीन सो चौबीस विकल्प

२४ वर्णादि की अपेक्षा षष्ठ प्रदेशिक स्कंध के चारसो चौदह विकल्प

- २५ वर्णादि की अपेक्षा सप्त प्रदेशिक स्वरुध के चारमो चौहत्तर विकल्प
- २६ वर्णादि की अपेक्षा अष्ट प्रादेशिक स्वरुध के पाचमो चार विकल्प
- २७ वर्णादि की अपेक्षा नव प्रदेशिक स्वरुध के पाचमो चौहत्तर विकल्प
- २८ वर्णादि की अपेक्षा दश प्रदेशिक स्वरुध के पांच सौ सोलह विकल्प
- २९ क मस्थान प्रदेशिक स्वरुध असस्थान प्रदेशिक स्वरुध अन्तर् प्रदेशिक स्वरुध के सोलह विकल्प  
 ख पाच स्थान के एक सौ अठ्ठाईस विकल्प  
 ग छठ स्थान के तीन सौ चौरासी विकल्प  
 घ सात स्थान के पाच सौ बारह विकल्प  
 ङ आठ स्थान के एक सहस्र दो सौ छियासवें विकल्प
- ३० ३४ चार प्रकार के परमाणु  
 षष्ठ अक्षर उद्देशक
- ३५ ४० रत्नप्रभा यावन ईषत्प्रभारा के अन्तरालो में पृथ्वीवायिक जीवो की उत्पत्ति और आहार का पौर्वापय
- ४१ ४२ रत्नप्रभा यावन ईषत् प्रभारा के अन्तराला में अर्धवायिक जीवो की उत्पत्ति और आहार का पौर्वापय
- ४३ रत्नप्रभा-यावन ईषत्प्रभारा के अन्तराला में वायुवायिक जीवो की उत्पत्ति और आहार का पौर्वापय  
 सप्तम अध उद्देशक
- ४४ तीन प्रकार का वध
- ४५ चौबीस स्थान में तीन प्रकार का वध
- ४६ ज्ञानावरणीय आदि आठ वर्गों का तीन प्रकार का वध
- ४७ चौबीस स्थान में अन्तराला-वायिक उत्पत्ति अन्तर् अर्थों का वध

- ४८ चौबीस दण्डक में ज्ञानावरणीय आदि आठ कर्मों का तीन प्रकार का बंध
- ४९ चौबीस दण्डक में तीन प्रकार के स्त्रीवेद का बंध
- ५० असुर-यावत्-वैमानिक पर्यन्त तीनों वेदों का तीन प्रकार का बंध
- ५१ क- चौबीस दण्डक में दर्शन और चारित्र्य मोहनीय का तीन प्रकार का बंध  
 ख- चौबीस दण्डक में पाँच शरीरों का तीन प्रकार का बंध  
 ग- चौबीस दण्डक में चार संज्ञाओं का तीन प्रकार का बंध  
 घ- चौबीस दण्डक में छह लेश्याओं का तीन प्रकार का बंध  
 ङ- चौबीस दण्डक में तीन दृष्टियों का तीन प्रकार का बंध  
 च- चौबीस दण्डक में पाँच ज्ञान, तीन अज्ञान का तीन प्रकार का बंध
- ५२ पाँच ज्ञान और तीन अज्ञान के विषयों का तीन प्रकार का बंध  
 अष्टम भूमि उद्देशक
- ५३ पंद्रह कर्मभूमि
- ५४ तीस अकर्मभूमि
- ५५ तीस अकर्मभूमियों में उत्सर्पिणी- अवसर्पिणी का निषेध
- ५६ क- भरत एरवत में उत्सर्पिणी काल का अस्तित्व  
 ख- महाविदेह में अवस्थित काल
- ५७ महाविदेह में चार महाव्रत का धर्मोपदेश तीर्थकर
- ५८ जम्बूद्वीप के भरत में इस अवसर्पिणी के चौबीस तीर्थकर
- ५९ चौबीस तीर्थकरों के अन्तर श्रुत
- ६० जिनांतरों में कालिक श्रुत का विच्छेद और अविच्छेद



- ६१-६४ पूर्वगत ध्रुव की स्थिति  
तीर्थ
- ६५ म० महावीर के तीर्थ की स्थिति
- ६६ भावी अन्तिम तीर्थंकर के तीर्थ की स्थिति
- ६७ तीर्थ और तीर्थंकर  
प्रवचन
- ६८ प्रवचन और प्रवचनी  
धर्म आराधना
- ६९ उग्र आदि कुला के शक्तियों की धर्म आराधना और निर्वाण
- ७० चार प्रकार के देवलोका  
नवम चारण उद्देशक
- ७१ दो प्रकार के धारणमुनि
- ७२ विद्या धारण कहने का हेतु
- ७३ विद्या धारण की शीघ्रगति
- ७४ विद्या धारण की निरद्वी गति
- ७५ क विद्याधारण की उच्चगति  
ख गमनागमन के प्रतिव्रमण से आराधकता
- ७६ जथा धारण कहने का हेतु
- ७७ जथा धारण की शीघ्र गति
- ७८ जथा धारण की तिरद्वी गति
- ७९ क जथा धारण की उच्च गति  
ख गमनागमन के प्रतिव्रमण से आराधकता
- ८० सोपक्रम और निरुपक्रम आयु
- ८१ चौबीस दण्डक के जीवों का सोपक्रम और निरुपक्रम आयु
- ८२ चौबीस दण्डक के जीवों का पूर्व भव में आयु का आत्मोपक्रम-  
परोपक्रम और निरुपक्रम
- ८३ आत्मोपक्रम और परोपक्रम यानी निरुपक्रम से चौबीस दण्डक

के जीवों का उद्भवत्तन और च्यवन

८४ चौबीस दण्डक के जीवों की आत्मशक्ति से उत्पत्ति

८५ चौबीस दण्डक के जीवों का आत्मशक्ति से उद्भवत्तन और च्यवन

८६ चौबीस दण्डक के जीवों की स्व स्व कर्मों से उत्पत्ति

८७ चौबीस दण्डक के जीवों का आत्मप्रयोग से उत्पन्न होना

८८-८९ क- चौबीस दण्डक के जीव संख्यात और असंख्यात

ख- संख्यात होने के हेतु

९० सिद्ध-सिद्ध क्षेत्र में प्रवेश होने की अपेक्षा एक या संख्यात

९१ चौबीस दण्डक में कति संचित आदि की अपेक्षा अल्प-बहुत्व

९२ कति संचित आदि की अपेक्षा सिद्धों की अल्प-बहुत्व

९३-९४ चौबीस दण्डक के जीव और सिद्ध पट्क समर्जितादि

९५-९६ पट्क समर्जित आदि की अपेक्षा चौबीस दण्डक के जीवों की और सिद्धों की अल्प-बहुत्व

९७-९८ द्वादश समर्जित की अपेक्षा चौबीस दण्डक के जीवों की और सिद्धों की अल्प-बहुत्व

९९-१०० चौबीस समर्जित की अपेक्षा चौबीस दण्डक के जीवों की तथा सिद्धों की अल्प-बहुत्व

## इक्कीसवाँ शतक

प्रथम वर्ग

प्रथम शाली उद्देशक

१ क- राजगृह, भ० महावीर, भ० गीतम

ख- शाल्यादि वर्ग में उत्पन्न होने वाले जीवों की गति का निर्णय

२ शाल्यादि वर्ग में उत्पन्न होने वाले जीवों का परिमाण

३ शाल्यादि वर्ग के जीवों की अवगाहना

- ४ शाल्यादि वग के बीजा के बव, उदय, उदीरणा
- ५ शाल्यादि वग के जावा की लेइया
- ६ शाल्यादि वग के मूल जीव की स्थिति
- ७ शाल्यादि वग के जीव पृथ्वी काय मे उत्पन्न होते रहने का अवयव उत्कृष्ट काल
- ८ प्राणीमात्र का शाल्यादि वग मे उत्पन्न होना

द्वितीय कद उद्देशक

तृतीय स्क्व उद्देशक

चतुर्थ त्वचा उद्देशक

पंचम साल उद्देशक

षष्ठ प्रवाल उद्देशक

सप्तम पत्र उद्देशक

अष्टम पुष्प उद्देशक

नवम फल उद्देशक

दशम बीज उद्देशक

प्राणीमात्र का शाल्यादि वग के कद त्वचा प्रवाल पत्र पुष्प फल और बीज रूप मे उत्पन्न होना

द्वितीय वग

मूल कद आदि दम उद्देशक

प्रथम वग के समान

तृतीय वग

अज्ञाना वग के दम उद्देशक

प्रथम वग के समान

चतुर्थ वग

वरा वग के दम उद्देशक

प्रथम वग के समान

पंचम वग

इष्ट वग के दम उद्देशक

प्रथम वग के समान

षष्ठ वग

सद्विष वग के दम उद्देशक

प्रथम वग के समान

सप्तम वग

अधरह वग के दम उद्देशक

प्रथम वग के समान

## अष्टम वर्ग

तुलसी वर्ग के दस उद्देशक

प्रथम वर्ग के समान

## बाईसवाँ शतक

## प्रथम ताड़ वर्ग

राजगृह

ताड़ वर्ग के दस उद्देशक उन्नीसवें शतक के प्रथम वर्ग के समान

प्रथम पाँच वर्गों में विशेषता

## द्वितीय निंब वर्ग

निंब वर्ग के समान दस उद्देशक

ताड़ वर्ग के समान

## तृतीय अगस्तिक वर्ग

अगस्तिक वर्ग के दस उद्देशक

प्रथम ताड़ वर्ग के समान

## चतुर्थ वेंगन वर्ग

वेंगन वर्ग के दस उद्देशक

प्रथम ताड़ वर्ग के समान

## पंचम सिरियक वर्ग

सिरियक वर्ग के दस उद्देशक

प्रथम ताड़ वर्ग के समान

## षष्ठ पूष फलिका वर्ग

पूष फलिका वर्ग के दस उद्देशक

## तेईसवाँ शतक

## प्रथम आलु वर्ग

आलु वर्ग के दस उद्देशक

ताड़ वर्ग के समान

## द्वितीय लोही वर्ग

लोही वर्ग के दस उद्देशक

ताड़ वर्ग के समान

## तृतीय आय वर्ग

आय वर्ग के दस उद्देशक

ताड़ वर्ग के समान

घनुर्धं पाठा वगं

पाग वगं क इग उद्देशक

ताड वगं के समान

## चौदीसवीं शतक

प्रथम नैरयिक उद्देशक

१ नियचा और मनुष्यों का नैरयिकों में उपपात

२ पचद्वि विरचा का नरकों में उपपात

३ ५ तथा अमज्ञी नियंच पचद्विओं का नरकों में उपपात

६ ६५ रत्नप्रभा में उत्पन्न होने वाले अमज्ञी नियंच पचद्विओं के मध्य म प्र० ७ म ६५ तक विरचों का चिन्तन

६६ रत्नप्रभा में उत्पन्न होने वाले मज्ञी नियंच पचद्विओं के मध्य म प्र० ६७ से ८६ तक के विरचों का चिन्तन

८७ ११० मज्ञी मनुष्या का सात नरकों में उपपात

द्वितीय परिमाण उद्देशक

धमुर कुमार

१ २५ क रामगृह

क धमुर कुमारों म नियंचों और मनुष्यों का उपपात विस्तृत वचन

तृतीय से इग्यारहवें पर्यन्त नाम कुमारादि उद्देशक

१ १७ क रामगृह

क नाम कुमार-वचन-स्तनित कुमार म नियंचों और मनुष्यों का उपपात विस्तृत वचन

चारहवां पृथ्वीकाय उद्देशक

१ ५६ पृथ्वीकायिकों म नियचा मनुष्या और देवों का उपपात विस्तृत वचन

तेरहवां अप्काय उद्देशक

अप्कायिकों में पृथ्वीकायिकों के समान उपपात

**चौदहवाँ तेजकाय उद्देशक**

तेजस् कायिकों में तिर्यचों और मनुष्यों का उपपात विस्तृत वर्णन

**पन्द्रहवाँ वायुकाय उद्देशक**

वायुकायिकों में तिर्यचों और मनुष्यों का उपपात

**सोलहवाँ वनस्पतिकाय उद्देशक**

वनस्पतिकायिकों में—तिर्यचों, मनुष्यों और देवों का उपपात

**सत्रहवाँ वेइन्द्रिय उद्देशक**

वेइन्द्रियों में तिर्यचों और मनुष्यों का उपपात

**अठारवाँ तेइन्द्रिय उद्देशक**

तेइन्द्रियों में वेइन्द्रियों के समान उपपात

**उन्नीसवाँ चतुरिन्द्रिय उद्देशक**

चतुरिन्द्रियों में तेइन्द्रियों के समान उपपात

**बीसवाँ तिर्यच पंचेन्द्रिय उद्देशक**

१-५४ तिर्यच पंचेन्द्रियों में नैरयिकों, तिर्यचों, मनुष्यों और देवों का (२४ दण्डकों का) उपपात

**इक्कीसवाँ मनुष्य उद्देशक**

१-१६ मनुष्यों में नैरयिकों, तिर्यचों, मनुष्यों और देवों का (२४ दण्डकों का) उपपात

**बाईसवाँ व्यन्तर उद्देशक**

१-५ व्यन्तरों में तिर्यचों और मनुष्यों का उपपात

**तेईसवाँ ज्योतिष्क उद्देशक**

१-१२ ज्योतिष्कों में तिर्यचों और मनुष्यों का उपपात

**चौबीसवाँ वैमानिक उद्देशक**

१३-२६ वैमानिकों में ज्योतिष्कों के समान उपपात

## पच्चीसवाँ शतक

### प्रथम लेश्या उद्देशक

- १ मोलह प्रकार की लेश्या
- २ चौदह प्रकार के मगारी जीव
- ३ मगारी जीवा क योगो का अल्प बहुत्व
- ४ चौबीस दण्डक में एक समय में उत्पन्न दो जीवों के योग का अल्प-बहुत्व
- ५ पन्द्रह प्रकार क योग
- ६ योगो का अल्प बहुत्व

### द्वितीय द्रव्य उद्देशक

- १ दो प्रकार क द्रव्य
- २ दो प्रकार के अजीव द्रव्य
- ३ क जीव द्रव्य की सख्या
- ख- जीव द्रव्य के अनंत होने के कारण
- ४ जीव द्वारा अजीव द्रव्या का परिभोग
- ५ चौबीस दण्डक में अजीव द्रव्यो का परिभोग
- ६ असम्प्र प्रदेशात्मक बोधावाग में असन्न द्रव्यो की स्थिति
- ७ क एक आकाश प्रदेश में पुद्गलो का चयापचय
- ८ भौतिक शरीर रूप में स्थित अस्थित द्रव्यों का ग्रहण
- १० द्रव्य क्षेत्र काल और भाव से द्रव्य का ग्रहण
- ११ वैश्विक शरीर रूप में स्थित अस्थित द्रव्यों का ग्रहण
- १२ सैजम शरीर रूप में स्थित अस्थित द्रव्यो का ग्रहण
- १३ द्रव्य क्षेत्र काल और भाव से द्रव्यो का ग्रहण
- १४ छ दिशाओ से पुद्गला का ग्रहण
- १५ चौबीस दण्डक में पाच इन्द्रियो के रूप में यथायोग्य द्रव्यों का ग्रहण
- १६ चौबीस दण्डक में द्वासोष्णवास के रूप में द्रव्यो का ग्रहण

## तृतीय संस्थान उद्देशक

- १ छ प्रकार के संस्थान
- २-३ परिमण्डल आदि संस्थानों के अनन्त द्रव्य
- ४ संस्थानों का अल्प-बहुत्व
- ५ पांच प्रकार के संस्थान
- ६-७ परिमण्डल-यावत्- आयत संस्थान के अनन्त द्रव्य
- ८-१२ रत्नप्रभा-यावत्—ईपप्राग्भारा में संस्थान के अनन्त द्रव्य
- १३-१४ यव मव्य क्षेत्र परिमण्डल-यावत्—आयत संस्थान के अनन्त द्रव्य
- १५-१७ पांच संस्थानों का परस्पर सम्बन्ध, रत्न-प्रभा-यावत्—ईपत्-प्राग्भारा में एक यवाकृति निष्पादक, संस्थान में अन्य संस्थानों के अनन्त द्रव्य
- १८ दो प्रकार का वृत्त संस्थान
- क- वृत्त संस्थान के कितने प्रदेशों का कितने आकाश प्रदेशों में अवगाहन
- १९ श्यम्भ संस्थान के कितने प्रदेशों का कितने आकाश प्रदेश में अवगाहन
- २० चतुरम्भ संस्थान के कितने प्रदेशों का कितने आकाश प्रदेशों में अवगाहन
- २१ आयत संस्थान के कितने प्रदेशों का कितने प्रदेशों में अवगाहन
- २२ परिमण्डल संस्थान के कितने प्रदेशों में कितने प्रदेशों का अवगाहन
- २३-२६ परिमण्डल आदि संस्थानों की कृतयुग्म रूपता
- २७-३८ परिमण्डल-यावत्—आयत संस्थानों के प्रदेश—कृतयुग्म प्रदेशावगाह-यावत्—कलयोज रूप हैं
- ३९-४२ आकाश-प्रदेश की अनन्त श्रेणियां
- ४३ अलोकाकाश की श्रेणियां



- ४४ आकाश की श्रेणियों के प्रदेश
- ४५ ४६ अनोकाकाश श्रेणिया की सूच्या
- ५० लोकाकाश की श्रेणिया और सादिमानवसित आदि भागि
- ५१ अनोकाकाश की श्रेणिया और सादिमानवसित आदि भागि
- ५२-५६ कृतयुग्मादि रूप आकाश की श्रेणिया
- ५७ सान प्रकार की श्रेणिया
- ५८ परमाणु की गति
- ५९ द्विप्रदेशिक स्वय-यावत्-अनन्त प्रदेशिक स्वय की गति
- ६० चौबीस दण्डक के जीवो की श्रेणी के अनुसार गति
- ६१ नरकावास-यावत् विमानावास
- ६२ गणिमिक्त
- ६३ आचारागादि भगों की प्ररूपणा
- ६४ क- पाच गति का अल्प-बहुत्व  
ख आठ गति का अल्प-बहुत्व
- ६५ सेन्द्रिय यावत्-अनेन्द्रिय जीवो का अल्प-बहुत्व
- ६६ जीव और पुद्गलो के सवपर्यायो का अल्प-बहुत्व
- ६७ आयु कम के वषक और अवषक जीवों का अल्प-बहुत्व  
चतुर्थ युग्म उद्देशक
- १ चार प्रकार के युग्म
- २ ३ चौबीस दण्डक म कृतयुग्मादि
- ४ ६ प्रकार के द्रव्य
- ५ ७ ६ प्रकार के द्रव्यो का कृतयुग्मादि रूप
- ८ (६ प्रकार के) द्रव्यो के प्रदेशो का कृतयुग्मादि रूप
- ९ ६ प्रकार के द्रव्यो का अल्प-बहुत्व
- १० १२ ६ प्रकार के द्रव्य अचगाद अनवगाद
- १३ रत्नप्रभा यावत्—ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी अचगाद अनवगाद
- १४ क जीव द्रव्य से कत्योज रूप हैं

ख- चौबीस दण्डक के जीव और सिद्ध (एक वचन की अपेक्षा) द्रव्य से कल्योज रूप हैं

१५ जीव (बहुवचन की अपेक्षा) द्रव्य से कल्योज रूप हैं

१६ चौबीस दण्डक के जीव तथा सिद्ध (बहुवचन की अपेक्षा) द्रव्य से कल्योज रूप हैं

१७ क- जीव के प्रदेश कृतयुग्मरूप हैं

ख- शरीर के प्रदेश कृतयुग्मादि (४) रूप हैं

१८ सिद्ध के प्रदेश कृतयुग्मरूप हैं

१९ जीवों तथा सिद्धों (बहुवचन की अपेक्षा) के प्रदेश कृतयुग्म हैं

२० एक या अनेक जीवों की अपेक्षा आकाश प्रदेश में कृतयुग्मादि

२१ चौबीस दण्डक तथा सिद्ध

२२-२५ एक या अनेक जीवों के स्थितिकाल में कृतयुग्मादि

२६ चौबीस दण्डक तथा सिद्ध

२७-२८ एक या अनेक जीवों के कृष्ण आदि वर्ण-पर्याय कृतयुग्मादि रूप हैं

पर्याय

२९-३० एक या अनेक जीवों के आभिनिवोधिक आदि ज्ञान के पर्याय

३१-३२ एक या अनेक जीवों के केवलज्ञान के पर्याय

३३ एक या अनेक जीवों के मतिअज्ञान-यावत्-केवलदर्शन के पर्याय

३४ पांच प्रकार के शरीर

३५-३७ क- सकम्प निष्कम्प जीव

ख- सकम्प और निष्कम्प होने का हेतु

ग- देश या सर्व से सकम्प

घ- चौबीस दण्डक के जीव सकम्प निष्कम्प

पुद्गल

३८ परमाणु-यावत्-अनन्त प्रदेशी स्कंधों का परिणाम

३९ एक आकाश प्रदेश में रहे पुद्गल

- ४० एक समय की स्थिति वाले पुद्गल
- ४१ एक गुण कृष्ण यावत् अनन्त गुण रक्ष पुद्गल
- ४२ ४६ परमाणु यवन अनन्त प्रदेशिक स्वधो का अप-बहुत्व
- ४७ ४८ परमाणु यावत् अनन्त प्रदेशिक स्वधो के प्रदेशों का अल्प बहुत्व
- ४९ प्रदेशावगात् पुद्गलो का द्रव्य रूप में अप बहुत्व
- ५० प्रदेशावगात् पुद्गलों का प्रेश रूप में अल्प बहुत्व
- ५१ एक समय की स्थितिवाले पुद्गलों का अप बहुत्व
- ५२ ५३ गुण रक्ष और स्पश विनिष्ट पुद्गलों का अप-बहुत्व
- ५४ परमाणु यावत् अनन्त प्रदेशिक स्वधो का द्रव्यावरूप में अप बहुत्व
- ५५ प्रदेशावगात् पुद्गलो का द्रव्यावरूप में अप बहुत्व
- ५६ एक समय की स्थितिवाले पुद्गलों का द्रव्यावरूप में अप बहुत्व
- ५७ ५८ वर्णादि विनिष्ट पुद्गलो का द्रव्य और प्रेशावरूप में अप-बहुत्व
- ५९ परमाणु यावत् अनन्त प्रदेशिक स्वधो की द्रव्यावरूप में कृतयुग्मादि राशि
- ६० परमाणु यावत् अनन्त प्रदेशिक स्वधो की सामान्य तथा विशेष विधो में कृतयुग्मादि राशि
- ६१ ७० परमाणु यवन अनन्त प्रदेशिक स्वधो के प्रदेशों की कृतयुग्मादि राशि
- ७१ ७२ परमाणु यावत् — अनन्त प्रदेशिक स्वधो का कृतयुग्म प्रेशावगात् आदि
- ७३ ८० परमाणु यावत् अनन्त प्रदेशिक स्वधो की कृतयुग्म समय आदि की स्थिति
- ८१-८३ परमाणु पुद्गल-यावत्-अनन्त प्रदेशिक स्वधो के वर्णों का

कृतयुगम आदि होना

- ८४ अनर्घ परमाणु पुद्गल
- ८५-८७ द्विप्रदेशिक स्कंध-यावत्-अनन्त प्रदेशिक स्कंध सार्ध-अनर्घ
- ८८ परमाणु-यावत्-अनन्त प्रदेशिक स्कंध सकम्प निष्कम्प
- ८९ बहुवचन की अपेक्षा-सकम्प निष्कम्प
- ९०-९३ परमाणु पुद्गलों का सकम्प-निष्कम्प काल
- ९४-९७ परमाणु-यावत्-अनन्त प्रदेशिक स्कन्धों के कम्पन का अन्तर
- ९८-१०० सकम्प-निष्कम्प परमाणु-यावत्-अनन्त प्रदेशिक स्कन्धों का अल्प-बहुत्व
- १०१-१०४ परमाणु-यावत्-अनन्त प्रदेशिक स्कन्धों का एक देशीय कम्पन अथवा सर्वदेशीय कम्पन
- १०५-११४ परमाणु-यावत्-अनन्त प्रदेशिक स्कन्धों के एक देशीय या सर्व-देशीय कम्पन का अथवा निष्कम्पन का काल
- ११५-१२४ परमाणु-यावत्-अनन्त प्रदेशिक स्कन्धों के एक देशीय सकम्प निष्कम्प का अन्तर
- १२५-१२७ एक देशीय या सर्वदेशीय सकम्प निष्कम्प परमाणु-यावत्-अनन्त प्रदेशिक स्कन्धों का अल्प-बहुत्व
- १२८ परमाणु-यावत्-अनन्त प्रदेशिक स्कन्धों का द्रव्य, प्रदेश की अपेक्षा अल्प-बहुत्व
- १२९-१३२ धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय और जीवास्तिकाय के मध्य-प्रदेश
- १३५ जीवास्तिकाय के मध्यप्रदेशों की अवगाहना
- पंचम पर्यव उद्देशक
- १ दो प्रकार के पर्यव कालद्रव्य
- २ एक आवलिका के समय
- ३ एक श्वासीच्छ्वास के समय

- ४ एक स्तोक यावत् उत्सर्गिणी के समय
- ५ एन पुद्गल परिवत्त के समय
- ६ आवनिशाआ के समय
- ७ श्वासोच्छ्वासा के समय
- ८ स्तोत्रों के समय
- ९ पुद्गल परिवर्तों के समय
- आवलिका
- १० क एक श्वासोच्छ्वास की आवलिकार्ये  
ख एक स्तोक-यावत् शीघ्र प्रहेलिका की आवलिकार्ये
- ११ क एक पत्थोपम की आवलिकार्ये  
ख एक सागरोपम यावत् एक उत्सर्गिणी की आवलिकार्ये
- १२ एक पुद्गल परिवत्त यावत्-सबकाल की आवलिकार्ये
- १३ अनेक श्वासोच्छ्वासों की यावत् अनेक शीघ्र प्रहेलिकार्ये की आवलिकार्ये
- १४ अनेक पत्थोपमों की यावत् अनेक उत्सर्गिणीयों की आवलिकार्ये
- १५ अनेक पुद्गल परिवर्तों की आवलिकार्ये श्वासोच्छ्वास
- १६ एक स्तोक यावत् एक शीघ्र प्रहेलिका के श्वासोच्छ्वास पत्थोपम
- १७ क एक सागरोपम के पत्थोपम  
ख एक अवसर्गिणी या उत्सर्गिणी के पत्थोपम
- १८ क एक पुद्गल परिवत्त के पत्थोपम  
ख सब काल के पत्थोपम यावत्-अनेक अवसर्गिणीयों के पत्थोपम
- १९ अनेक सागरोपमों के पत्थोपम
- २० अनेक पुद्गल परिवर्तों के पत्थोपम

## सागरोपम

- २१ एक अवसर्पिणी के सागरोपम  
उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी
- २२ एक पुद्गल परिवर्त की उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी
- २३ अनेक पुद्गल परिवर्तों की उत्सर्पिणीयाँ और अवसर्पिणीयाँ  
पुद्गल परिवर्त
- २४ अतीत अनागत और सर्वकाल के पुद्गल परिवर्त
- २५ अनागत और अतीत का अन्तर
- २६ अतीत और सर्वकाल का अन्तर
- २७ सर्वकाल और भविष्य काल का अन्तर
- २८ दो प्रकार के निगोद
- २९ दो प्रकार के निगोद
- ३० छ प्रकार का नाम (छ प्रकार के भेद)  
षष्ठ निर्ग्रन्थ उद्देशक  
प्रथम प्रज्ञापन द्वार

१ क- राजगृह, भ० महावीर और गौतम

ख- पांच प्रकार के निर्ग्रन्थ

२ पांच प्रकार के पुलाक

३ " " "

४ दो " "

५ पांच प्रकार के प्रतिसेवना कुशील

६ " " " कपाय कुशील

७ " " " निर्ग्रन्थ

८ " " " स्नातक

द्वितीय चेद्वार

९-१८ पांच निर्ग्रन्थ के वेद

- तृतीय राग द्वार
- १६ २१ पाच निग्रय-मराग वीन राग  
चतुर्थ कल्प द्वार
- २२ २६ पाच निग्रयो का कल्प  
पचम चारित्र्य द्वार
- २७ ३६ पाच निग्रयो के चारित्र्य  
षष्ठ प्रतिभयना द्वार
- ३० ३४ पाच निग्रयो मे प्रति सेवक अप्रति सेवक  
सप्तम ज्ञान द्वार
- ३५ ३७ पाच निग्रयो मे ज्ञान
- ३८ ४१ पाच निग्रयो का धर्म-अध्ययन  
अष्टम तार्क्य द्वार
- ४२ ४४ पाच निग्रयो शीघ्र-अतीघ्र  
नवम लिंग द्वार
- ४५ पाचम निग्रयो क लिंग  
दशम शरीर द्वार
- ४६ ४८ पाच निग्रयो के शरीर  
ग्यारहवा लक्षण द्वार
- ४९ ५० पाच निग्रयो के क्षेत्र  
बारहवा काळ द्वार
- ५१ ५८ पाच निग्रयो क काळ  
त्रहवा गति द्वार
- ५९ ६८ पाच निग्रयो की गति  
बीसहवा सधम द्वार
- ६९ ७२ पाच निग्रयो मे गयम  
पन्द्रहवा सनिकथ द्वार
- ७१-७४ पाच निग्रयो म सनिकथ

- ७५-८१ पंच निर्ग्रंथों के चारित्र्य पर्याय
- ८२ पंच निर्ग्रंथों के चारित्र्य-पर्यवों का अल्प-बहुत्व  
सोलहवां योग द्वार
- ८३-८४ पंच निर्ग्रंथों के योग  
सतरहवां उपयोग द्वार
- ८५ पांच निर्ग्रंथों में उपयोग  
अठारहवां कपाय द्वार
- ८६-८८ पांच निर्ग्रंथों में कपाय  
उन्नीसवां लेश्या द्वार
- ८९-९२ पांच निर्ग्रंथों में लेश्या  
बीसवां परिणाम द्वार
- ९३-१०१ पांच निर्ग्रंथों के परिणाम  
इक्कीसवां बन्ध द्वार
- १०२-१०५ पांच निर्ग्रंथों के कर्म प्रकृतियों का बन्ध  
चाईसवां वेद द्वार
- १०७-१०९ पांच निर्ग्रंथों द्वारा कर्म प्रकृतियों का वेदन  
तेईसवां उदीरणा द्वार
- ११०-११४ पांच निर्ग्रंथों द्वारा कर्म प्रकृतियों की उदीरणा  
चौबीसवां उपसंपद-हानि द्वार
- ११५-१२० पांच निर्ग्रंथों द्वारा निर्ग्रंथ जीवन का स्वीकार और त्याग  
पच्चीसवां संज्ञा द्वार
- १२१-१२२ पांच निर्ग्रंथों में संज्ञा  
छत्तीसवां आहार द्वार
- १२३-१२४ पांच निर्ग्रंथों में आहार  
सत्ताईसवां भव द्वार
- १२५-१२७ पांच निर्ग्रंथों के भव



अनामिका आर्य द्वारा

१२८ १३३ पाच निद्रया क आर्य

उत्तमायका आर्य द्वारा

१३६ १४१ पाच निद्रया का अर्थ

नामिका अर्य द्वारा

१४२ १४६ पाच निद्रया का अर्थ

उत्तमायका अर्य द्वारा

१४७ १५१ पाच निद्रया के अर्थ

अनामिका अर्य द्वारा

१५२ १५३ पाच निद्रया क अर्थ

उत्तमायका अर्य द्वारा

१५४ पाच निद्रया की अर्थ

अनामिका अर्य द्वारा

१५५ १५७ पाच निद्रया का अर्थ

अनामिका अर्य द्वारा

१५८ १६२ पाच निद्रया का अर्थ

उत्तमायका अर्य-अर्य द्वारा

१६३ पाच निद्रया का अर्थ-अर्य

सप्तम अर्ध उद्गाह

१ पाच प्रकार क आर्य

२ ११ प्रकार का सामाजिक आर्य

३ ११ प्रकार का अनामिका अर्य आर्य

४ ११ प्रकार का अनामिका अर्य आर्य

५ ११ प्रकार का अनामिका अर्य आर्य

६ क का प्रकार का अनामिका अर्य आर्य

७ ६ गाथाएँ पाच आर्य का अर्थ



अग्निसमा आकष्य द्वार

१२८ १३५ पाच निघण्टा क आकष्य

उत्तमायसा काल द्वार

१३६ १४१ पाच निघण्टा का वि यनि

नीमसा अन्तर द्वार

१४२ १४६ पाच निघण्टा का अन्तर द्वार

इकतीमसा समुद्धान द्वार

१४७ १५१ पाच निघण्टा म समुद्धान

बलामसा क्षत्र द्वार

१५२ १५३ पाच निघण्टो क क्षेत्र

तनीमसा स्पशना द्वार

१५४ पाच निघण्टा की स्पशना

चीनामसा भाव द्वार

१५५ १५७ पाच निघण्टा का भाव

पेनामसा परिमाण द्वार

१५८ १६० पाच निघण्टो का परिमाण

सुत्तामसा अक्षय-बहुत्र द्वार

१६३ पाच निघण्टा की अक्षय-बहुत्र

सप्तम सयत उद्गात्र

१ पाच प्रकार क चारित्र

२ दो प्रकार का सामाधिक चारित्र

३ सा प्रकार का द्वे १२म्यावनीय चारित्र

४ सा प्रकार का परिणारविगुद्ध चारित्र

५ दो प्रकार का सूत्रम सवगाय चारित्र

६ क सा प्रकार का यथास्थान चारित्र

७ ४ माशायें पाच चारित्रा का अर्थ

- वेद
- ७ पांच चारित्र्य वालों में वेद  
राग
- ८ पांच चारित्र्यों में-सराग वीतराग  
कल्प
- ९-१४ पांच चारित्र्यों में कल्प  
प्रतिसेवना
- १५-१६ पांच चारित्र्यवालों में प्रतिसेवना  
ज्ञान
- १७ पांच चारित्र्यवालों में ज्ञान  
श्रुत
- १८-२० पांच चारित्र्यवालों का श्रुतज्ञान  
तीर्थ
- २१ पांच चारित्र्य तीर्थ में या अतीर्थ में  
लिंग
- २२-२३ शरीर पांच चारित्र्यवालों के लिङ्ग  
शरीर
- २४ पांच चारित्र्यवालों के शरीर  
क्षेत्र
- २५ पांच चारित्र्य के क्षेत्र  
काल
- २६-२७ पांच चारित्र्यों के काल  
गति
- २८-३० पांच चारित्र्यवालों की गति  
स्थिति
- ३१-३२ पांच चारित्र्यवालों की स्थिति

## सयम स्थान

- ३३ ३५ पाच चारित्र के सयम स्थान
- ३६ सयम स्थानो का अल्प बहु व  
सन्निकर्ष
- ३७ ४२ पाच चारित्रो के पयव  
योग
- ४३ पाच चारित्रो मे योग  
अल्प बहुत्व
- ४४ पाच चारित्रो मे पयवो का अल्प बहुत्व  
उपयोग
- ४५ पाच चारित्रो मे उपयोग  
कदाथ
- ४६ ४८ पाच चारित्रो मे कदाथ  
लेश्या
- ४९ पाच चारित्रो मे लेश्या  
परिणाम
- ५० ५१ पाच चारित्रो मे परिणाम
- ५२ ५४ पाच चारित्रियो के परिणामो की स्थिति  
बन्ध
- ५५ ५६ पाच चारित्रवालो के कम प्रकृतियो का बन्ध  
वेदन
- ५७ ५८ पाच चारित्र वालो के कम प्रकृतियो का वेदन  
उद्दीरणा
- ५९ ६१ पाच चारित्रवालो के कम प्रकृतियो की उद्दीरणा  
उपयम्बद् हानि
- ६२ ६६ पाच चारित्रवालो को किस किस चारित्र का हानि लाभ

संज्ञा

- ६७ पांच चारित्र्यवालों में संज्ञा  
आहारक
- ६८ पांच चारित्र्यवालों में आहारक-अनाहारक  
भय
- ६९-७० पांच चारित्र्यवालों के भय  
आकर्ष
- ७१-७७ पांच चारित्र्यवालों के आकर्ष (चारित्र्यों की पुनः पुनः प्राप्ति)  
स्थिति
- ७८-८२ पांच चारित्र्यों की स्थिति  
अन्तर
- ८३-८६ पांच चारित्र्यों के अन्तर  
समुद्धान्त
- ८७ पांच चारित्र्यवालों में समुद्धान्त  
क्षेत्र
- ८८ पांच चारित्र्यवालों का क्षेत्र  
दर्शना
- ८९ पांच चारित्र्यवालों के द्वारा लोक का क्षेत्र स्वर्ण  
भाव
- ९०-९१ पांच चारित्र्यवालों के भाव  
परिमाण
- ९२-९४ पांच चारित्र्यवालों का परिमाण  
अल्प-बहुत्व
- ९५ पांच चारित्र्यों की अल्प-बहुत्व  
माथा
- ९६ माथा
- ९७ दश प्रकार की प्रतिसेवना
- ९८ आलोचना के दश दोष

- १६ आलोचक श्रमण के दश गुण  
 १०० आलोचना सुनने वाने के आठ गुण  
 १०१ दश प्रकार की समाचारी  
 १०२ दश प्रकार के प्रायश्चित्त  
 १०३ दो प्रकार का तप  
 १०४-१२३ छ प्रकार का ब्राह्मणतप  
 १२४-१५४ छ प्रकार का आश्विन-तप

### अष्टम ओष उद्देशक

- १ राजशूह भ० महावीर और गौतम  
 २ मण्डूकानुवृत्ति अव्यवसायो से नारको की उत्पत्ति  
 ३ नारको की विप्रहृ गति  
 ४ नारको क पर भव का आयु बधने का वारण  
 ५ नारको की गति  
 ६ ७ नारको की उत्पत्ति के कारण, दोष दण्डको से उत्पत्ति यावत्-  
 उत्पत्ति क कारणो का स्व पर प्रयोग

### नवम भव्य उद्देशक

- १ मण्डूकानुवृत्ति अव्यवसायो से भवसिद्धिक नैरयिको की उत्पत्ति-  
 तप अष्टम उद्देशक के समान

### दशम अभव्य उद्देशक

- १ मण्डूकानुवृत्ति अव्यवसायो से अभव सिद्धिक नैरयिको की  
 उत्पत्ति तप अष्टम उद्देशक के समान

### इग्यारहवा सम्यग्दृष्टि उद्देशक

- १ मण्डूकानुवृत्ति अव्यवसायो से सम्यग्दृष्टि नैरयिको की उत्पत्ति  
 तप अष्टम उद्देशक के समान

## दारहवां मिथ्यादृष्टि उद्देशक

मण्डूकानुवृत्ति अध्यवसायों से मिथ्यादृष्टि नैरयिकों की उत्पत्ति  
शेष अष्टम उद्देशक के समान

## छब्बीसवाँ शतक

### प्रथम जीव उद्देशक

- क- राजगृह. भ० महावीर और गौतम  
ख- जीव के पाप कर्म का बन्ध, चार भांगा  
लेश्या वाले जीवों के पापकर्मों का बन्ध, चार भांगा  
कृष्णलेश्या-यावत्-शुक्ललेश्यावाले जीवों के पापकर्मों का बन्ध  
लेश्या रहित जीवों के पाप कर्मों का बन्ध  
कृष्ण पाक्षिक जीवों के पाप कर्मों का बन्ध  
शुक्ल पाक्षिक जीवों के पाप कर्मों का बन्ध  
तीन दृष्टि वाले जीवों के पाप कर्मों का बन्ध  
पांच ज्ञान एव तीन अज्ञान वाले जीवों के पाप कर्मों का बन्ध  
चार संज्ञा वाले तथा नौ सज्ञावाले जीवों के पापकर्मों का बन्ध  
सवेदी और अवेदी जीवों की कर्म बन्ध विचारणा  
सकपाय तथा अकपाय जीवों की कर्म बन्ध विचारणा  
सयोगी, अयोगी तथा उपयोगी जीवों की कर्म बन्ध विचारणा  
चौबीस दण्डक में लेश्या-यावत्-उपयोग विवक्षा से पाप कर्मों  
का बन्ध  
चौबीस दण्डक में लेश्या-यावत्-उपयोग विवक्षा से आठ कर्मों  
का बन्ध

### द्वितीय उद्देशक

अनन्तरोपपन्नक चौबीस दण्डक में लेश्या-यावत्-उपयोग विवक्षा  
से पापकर्मों का तथा आठ कर्मों का बन्ध



## तृतीय उद्देशक

- १ परम्परोपपन्न चौबीस दण्डक के जीवों में पापकर्मों का तथा आठकर्मों का बंध

## चतुर्थ उद्देशक

- १ अनन्तरावगाह चौबीस दण्डक के जीवों में पाप कर्मों का तथा आठकर्मों का बंध

## पंचम उद्देशक

- १ परम्परावगाह चौबीस दण्डक के जीवों में पापकर्मों का तथा आठ कर्मों का बंध

## षष्ठ उद्देशक

- १ अनन्तराहारक चौबीस दण्डक के जीवों में पापकर्मों का तथा आठ कर्मों का बंध

## सप्तम उद्देशक

- १ परम्परागानारक चौबीस दण्डक के जीवों में पापकर्मों का बंध तथा आठ कर्मों का बंध

## अष्टम उद्देशक

- १ अनन्तर पर्याप्त चौबीस दण्डक के जीवों में पाप-कर्मों का बंध तथा आठ कर्मों का बंध

## नवम उद्देशक

- १ परम्पर पर्याप्त चौबीस दण्डक के जीवों में पाप कर्मों का बंध तथा आठ कर्मों का बंध

## दशम उद्देशक

- १ चौबीस दण्डक के चरम जीवों में पापकर्मों का तथा आठ कर्मों का बंध

## द्वादशहवां उद्देशक

- १ चौबीस दण्डक के अचरम जीवों में पाप कर्मों का बंध तथा आठ कर्मों का बंध

## सत्तावीसवाँ शतक

### इग्यारह उद्देशक

जीव का पाप कर्म करना तथा आठ कर्मों का बन्ध करना  
छब्बीसवें शतक के इग्यारह उद्देशकों के समान

## अठावीसवाँ शतक

### इग्यारह उद्देशक

- १ जीव ने किस गति में पापकर्मों का उपार्जन और किस गति में पपाकर्मों का आचरण किया (आठ विकल्प)
  - २ लेश्या-यावत्-उपयोग वाले जीवों द्वारा पापकर्मों का उपार्जन तथा पापकर्मों का आचरण
  - ३ चौबीस दण्डक के जीवों द्वारा पापकर्मों का उपार्जन, आचरण तथा आठकर्मों का उपार्जन व आचरण
- शेष दश उद्देशक छब्बीसवें शतक के उद्देशकों के समान

## उनत्तीसवाँ शतक

### इग्यारह उद्देशक

- १ पापकर्मों के वेदन का प्रारम्भ और अन्त (चार विकल्प)
  - २ प्रारम्भ और अन्त कहने का हेतु
  - ३ लेश्या-यावत्-उपयोगवाले जीवों के वेदना का प्रारम्भ और अन्त
  - ४ चौबीस दण्डक के जीवों में वेदना का प्रारम्भ और अन्त
- शेष दश उद्देशक-छब्बीसवें शतक के उद्देशकों के समान

## तीसवाँ शतक

### इग्यारह उद्देशक

#### प्रथम उद्देशक

- १ चार प्रकार के समवसरण-मत
- २ समस्त जीव चार समवसरण वाले हैं

- ३ ६ लम्बा-यावत्-उपयोगवाले जीव चार समवमरण वाले हैं  
 ७-६ धीरान्त दण्डक के जीव चार समवमरण वाले हैं  
 १० २६ चार समवमरणवाला के आधु का बंध  
 ३० ३४ चार समवमरण वाले भव्य या अभव्य  
 नेत्र दण्ड उद्देश्य प्रथम उद्देश्य के समान

## इकत्तीसवाँ शतक

### प्रथम उद्देशक

- १ क रात्रिशुभ्र भ० महर्षीग और गौतम  
 म चार प्रकार के क्षुद्र गुग्म  
 ग क्षुद्र गुग्म कहने का ह्यु  
 २ ६ चौबीस दण्डक म चार प्रकार के गुग्म जीवा का उपपान

### द्वितीय उद्देशक

#### धूमप्रभा- यावत् तमस्तम प्रभा

- १ ५ तरक म चार प्रकार के क्षुद्र गुग्म वृक्ष लेश्य वाले जीवा का उपपान

### तृतीय उद्देशक

#### बालुका प्रभा-यावत्-धूमप्रभा

तरक म चार प्रकार के क्षुद्र गुग्म मेष्या वाले जीवा का उपपान

### चतुर्थ उद्देशक

- १ २ रत्नप्रभा-यावत्-यावत् प्रभा में चार प्रकार के क्षुद्र गुग्म  
 काष्ठान्त लेश्यावाले जीवों का उपपान

### पंचम उद्देशक

- १ २ चार प्रकार के क्षुद्र गुग्म भव सिद्धिक जीवों का नैरविको में उपपान

### षष्ठ उद्देशक

कृष्णलेश्या वाले चार प्रकार के क्षुद्र युग्म भव सिद्धिक जीवोंका  
नैरयिकों में उपपात

सप्तम से अट्ठाईसवें उद्देशक तक

नील लेश्या वाले चार प्रकार के क्षुद्र युग्म भव सिद्धिक जीवोंका  
नैरयिकों में उपपात (सप्तम उद्देशक)

- २ कापोत लेश्या वाले चार प्रकार के क्षुद्र युग्म भवसिद्धिक जीवों  
का नैरयिकों में उपपात (अष्टम उद्देशक)
- ३ भवसिद्धिक के चार उद्देशक
- ४ सम्यग्दृष्टि के चार उद्देशक
- ५ मिथ्यादृष्टि के चार उद्देशक
- ६ कृष्ण पक्ष के चार उद्देशक
- ७ शुक्ल पक्ष के चार उद्देशक

### बत्तीसवाँ शतक

अट्ठाईस उद्देशक .

- १ चार प्रकार के क्षुद्र युग्म नैरयिकों का उद्वर्तन तथा उत्पत्ति
- २ एक समय में नैरयिकों के उद्वर्तनों की संख्या
- ३ मण्डूकप्लुति से उद्वर्तन (इक्कीसवें शतक के समान)
- ४ लेश्या-यावत्-शुक्ल पक्ष के उद्देशक

### तेतीसवाँ शतक

चारह एकेन्द्रिय शतक

प्रथम एकेन्द्रिय शतक

प्रथम उद्देशक

- १ पांच प्रकार के एकेन्द्रिय
- २ दो प्रकार के पृथ्वीकाय

- ३ दो प्रकार के सूक्ष्म पृथ्वीकाय
- ४ क दो प्रकार के वायु पृथ्वीकाय
- ख पृथ्वीकाय के समान आकाश वायु-वनस्पतिकाय के क्षेत्र
- ५ अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकाय की आठ कम प्रकृतियाँ
- ६ पर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकाय की आठ कम प्रकृतियाँ
- ७ क अपर्याप्त पर्याप्त पृथ्वीकाय वायु वनस्पतिकाय के आठ कम प्रकृतियों का वध
- ८ ११ पृथ्वीकाय वायु-वनस्पतिकाय के कम प्रकृतियों का वध
- १२ १३ पृथ्वीकाय-वायु-वनस्पतिकाय के कम प्रकृतियों का वध
- द्वितीय उद्भाग
- १४ १५ अनन्तरोपन्न एकत्रियों के क्षेत्र
- १६ १७ अनन्तरोपन्न एकत्रियाँ की कम प्रकृतियाँ
- १८ अनन्तरावपन्न एकत्रियाँ के कम प्रकृतियों का वध
- १९ अनन्तरोपन्न एकत्रियाँ के कम प्रकृतियों का क्षेत्र
- तृतीय उद्भाग
- २० परम्परावपन्न एकत्रियों के क्षेत्र
- २१ परम्परावपन्न एकत्रियाँ के कम प्रकृतियों का वध तथा क्षेत्र
- चतुर्थ उद्भाग
- २२ अनन्तरावपन्न पृथ्वीकाय-वायु-वनस्पतिकाय के सम्बन्ध में
- पंचम उद्भाग
- २३ परम्परावपन्न पृथ्वीकाय-वायु वनस्पतिकाय के सम्बन्ध में
- षष्ठ उद्भाग
- २४ अनन्तरावपन्न पृथ्वीकाय वायु-वनस्पतिकाय के सम्बन्ध में
- सप्तम उद्भाग
- २५ परम्परावपन्न पृथ्वीकाय-वायु-वनस्पतिकाय के सम्बन्ध में

## अष्टम उद्देशक

२६ अनन्तर पर्याप्त पृथ्वीकाय-यावत्-वनस्पतिकाय के सम्बन्ध में  
नवम उद्देशक

२७ परम्पर पर्याप्त पृथ्वीकाय-यावत्-वनस्पतिकाय के सम्बन्ध में  
दशम उद्देशक

२८ चरम पृथ्वीकाय-यावत्-वनस्पतिकाय के सम्बन्ध में  
इग्यारहवां उद्देशक

२९ अचरम पृथ्वीकाय-यावत्-वनस्पतिकाय के सम्बन्ध में  
द्वितीय एकेन्द्रिय शतक

१ कृष्ण लेश्यावाले एकेन्द्रियों के सम्बन्ध में इग्यारह उद्देशक—  
प्रथम एकेन्द्रिय शतक के समान,

तृतीय एकेन्द्रिय शतक

१ नील लेश्यावाले एकेन्द्रियों के सम्बन्ध में ग्यारह उद्देशक—  
प्रथम एकेन्द्रिय शतक के समान

चतुर्थ एकेन्द्रिय शतक

१ कापोत लेश्यावाले एकेन्द्रियों के सम्बन्ध में ग्यारह उद्देशक—  
प्रथम एकेन्द्रिय शतक के समान

पंचम एकेन्द्रिय शतक

१ भव सिद्धिक एकेन्द्रियों के सम्बन्ध में इग्यारह उद्देशक—  
प्रथम एकेन्द्रिय शतक के समान

षष्ठ एकेन्द्रिय शतक

१ कृष्ण लेश्यावाले भव सिद्धिक एकेन्द्रियों के सम्बन्ध में इग्यारह  
उद्देशक प्रथम एकेन्द्रिय शतक के समान

सप्तम एकेन्द्रिय शतक

१ नील लेश्या वाले भवसिद्धिक एकेन्द्रियों के सम्बन्ध में ग्यारह  
उद्देशक प्रथम एकेन्द्रिय शतक के समान

### अष्टम ऐकेन्द्रिय शतक

- १ कापाल मेरुवावाले भवनिद्रिक ऐकेन्द्रियों के सम्बन्ध में इत्यारह उद्देश्य प्रथम ऐकेन्द्रिय शतक के समान नवम ऐकेन्द्रिय शतक
- १ अभवनिद्रिक ऐकेन्द्रियों के सम्बन्ध में नव उद्देश्य
- १ कृष्ण मेरुवा वाले अभवनिद्रिक ऐकेन्द्रियों के सम्बन्ध में नव उद्देश्य

### एकादशम ऐकेन्द्रिय शतक

- १ नील मेरुवा वाले अभव निद्रिक ऐकेन्द्रिया के सम्बन्ध में नव उद्देश्य

### द्वादशम ऐकेन्द्रिय शतक

- १ शरीर मेरुवा वाले अभवनिद्रिक ऐकेन्द्रिया के सम्बन्ध में नव उद्देश्य

## चौतीसवाँ शतक

### अवान्तर द्वादश शतक

#### प्रथम ऐकेन्द्रिय शतक

#### प्रथम उद्देश्य

- १ क पांच प्रकार के ऐकेन्द्रिय
- ख ऐकेन्द्रियों के चार भेद
- २ अपर्याप्त मूत्रम पृष्ठी कायिक जीवों की विग्रह मति
- ३ क एक दो तीन समय की विग्रह मति होने का हेतु
- ख- मात्र प्रकार की खेणियां
- ४ अपर्याप्त मूत्रम पृष्ठीकाय की पर्याप्त मूत्रम पृष्ठीकाय के रूप में विग्रह मति

- ५ अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकाय की वादर तेजस्कायिक रूप में विग्रह गति
- ६ पर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों का उपपात
- ७-८ अपर्याप्त वादर तेजस्कायिक जीवों का उपपात
- ९ पर्याप्त वादर वनस्पतिकायिक जीवों का उपपात
- १० अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों का उपपात
- ११-१३ अपर्याप्त सूक्ष्म एकेन्द्रिय का पूर्वचरमान्त से पश्चिम चरमान्त में उपपात
- १४ क- अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों की विग्रह गति  
ख- तीन अथवा चार समय की विग्रह गति होने का कारण
- १५-१६ अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों के विग्रह गति के समय
- १७ अपर्याप्त वादर तेजस्काय की विग्रह गति
- १८ अपर्याप्त वादर तेजस्कायिक जीव पर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिक रूप में उत्पन्न हो तो विग्रह गति के समय
- १९ अपर्याप्त वादर तेजस्कायिक की विग्रह गति
- २०-२१ अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीव की उर्ध्व लोक से अधोलोक में विग्रह गति
- २२ क- लोक के पूर्व चरमान्त में पृथ्वीकायिक जीव की विग्रह गति.  
ख- विग्रह गति का कारण
- २३-२४ अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक का उपपात
- २५-२६ लोक के पूर्व चरमान्त से पश्चिम चरमान्त की विग्रह गति
- २७ वादर एकेन्द्रियों के स्थान
- २८ अपर्याप्त एकेन्द्रियों की कर्म प्रकृतियां
- २९ अपर्याप्त एकेन्द्रियों का कर्म बन्ध
- ३० एकेन्द्रियों के कर्म वेदन
- ३१ एकेन्द्रियों का उपपात
- ३२ एकेन्द्रियों के समुद्घात



- ३३ एकेन्द्रियो के कम बाध का व्यप बहुत्व  
द्वितीय उद्देशक
- १ ५ अनतरोपपन्नक एकेन्द्रियो का वणन प्रथम उद्देशक के प्र०  
२६ से ३४ तक के समान  
तृतीय उद्देशक
- १ ३ परम्परोपपन्न एकेन्द्रियो का वणन  
चतुर्थ से एकादश उद्देशक पर्यन्त
- १ अचरम पपन्न एकन्द्रियो का वणन  
द्वितीय एकेन्द्रिय शतक  
इग्यारह उद्देशक
- १ ३ कृष्ण लेश्यावाते एकेन्द्रिया का वणन  
तृतीय एकेन्द्रिय शतक  
इग्यारह उद्देशक
- १ नील लेश्यावाते एकेन्द्रियो का वणन  
चतुर्थ एकेन्द्रिय शतक  
इग्यारह उद्देशक
- १ काशोन लेश्यावाते एकन्द्रिया का वणन  
पचम एकेन्द्रिय शतक  
इग्यारह उद्देशक
- १ भवतिद्विक एकेन्द्रिया का वणन  
षष्ठ एकेन्द्रिय शतक  
इग्यारह उद्देशक
- १ ५ कृष्ण लेश्यावाते भवतिद्विक एकन्द्रियो का वणन

- इग्यारह उद्देशक
- १ नील लेश्या वाले भवसिद्धिक एकेन्द्रियों का वर्णन  
अष्टम एकेन्द्रिय शतक
- इग्यारह उद्देशक
- १ कापोत लेश्या वाले भवसिद्धिक एकेन्द्रियों का वर्णन  
नवम एकेन्द्रिय शतक  
नव उद्देशक
- १ अभवसिद्धिक एकेन्द्रियों का वर्णन  
दशम एकेन्द्रिय शतक  
नव उद्देशक
- १ कृष्णलेश्यावाले अभवसिद्धिक एकेन्द्रियों का वर्णन  
एकादश एकेन्द्रिय शतक  
नव उद्देशक
- १ नीललेश्यावाले अभवसिद्धिक एकेन्द्रियों का वर्णन  
द्वादशम एकेन्द्रिय शतक  
नव उद्देशक
- १ कापोतलेश्यावाले अभवसिद्धिक एकेन्द्रियों का वर्णन

### पैंतीसवाँ शतक

अवान्तर द्वादश शतक

प्रथम एकेन्द्रिय महायुगम शतक

प्रथम उद्देशक

- १ सोलह प्रकार के महायुगम
- २ सोलह कहने का हेतु
- ३ कृतयुगम कृतयुगम राशिरूप एकेन्द्रियों का उपपात

- ४ एक समय में उपपात
- ५ जीवों की संख्या
- ६ कृतयुग्म कृतयुग्म राशि रूप एकेन्द्रियों के आठ कर्मों का बन्ध
- ७ कृतयुग्म कृतयुग्म राशि रूप एकेन्द्रियों के आठ कर्मों का वेदन
- ८ कृतयुग्म कृतयुग्म राशि एकेन्द्रियों का साता अज्ञाना वेदन
- ९ कृतयुग्म कृतयुग्म राशि एकेन्द्रियों की लक्ष्य-साधन-उपयोग
- १० कृतयुग्म कृतयुग्म राशि एकेन्द्रियों के शरीर के वर्णादि
- ११ कृतयुग्म कृतयुग्म राशि एकेन्द्रियों का अनुबन्ध काल
- १२ सर्व जीवों का कृतयुग्म कृतयुग्म राशि एकेन्द्रियों में उत्पाद
- १३ कृतयुग्म श्योज राशि एकेन्द्रियों का उत्पाद
- १४ उत्पाद संख्या
- १५ कृतयुग्म द्वारा प्रमाण एकेन्द्रियों का उत्पाद
- १६ उपपात संख्या
- १७ कृतयुग्म कल्पोज रूप एकेन्द्रियों का उत्पाद
- १८ श्योज कृतयुग्म प्रमाण एकेन्द्रियों का उत्पाद
- १९ श्योज श्योज प्रमाण एकेन्द्रियों उत्पाद
- २० कल्पोज कल्पोज प्रमाण एकेन्द्रियों का उत्पाद

### द्वितीय उद्देशक

- १ प्रथम समयोत्पन्न कृतयुग्म कृतयुग्म एकेन्द्रियों का उत्पाद
- २ प्रथम समयोत्पन्न कृतयुग्म कृतयुग्म एकेन्द्रियों का अनुबन्ध

### तृतीय उद्देशक

- १ अप्रथम समयोत्पन्न कृतयुग्म कृतयुग्म प्रमाण एकेन्द्रियों का उत्पाद

### चतुर्थ उद्देशक

- १ चरम समय कृतयुग्म कृतयुग्म प्रमाण एकेन्द्रियों का उत्पाद

## पंचम उद्देशक

१ अचरम समय कृतयुग्म कृतयुग्म प्रमाण एकेन्द्रियों का उत्पाद

## षष्ठ उद्देशक

१ प्रथम समय कृतयुग्म कृतयुग्म प्रमाण एकेन्द्रियों का उत्पाद

## सप्तम उद्देशक

१ प्रथम अप्रथम समय कृतयुग्म प्रमाण एकेन्द्रियों का उत्पाद

## अष्टम उद्देशक

१ प्रथम चरम समय कृतयुग्म कृतयुग्म प्रमाण एकेन्द्रियों का उत्पाद

## नवम उद्देशक

१ प्रथम अचरम समय कृतयुग्म कृतयुग्म प्रमाण एकेन्द्रियों का उत्पाद

## दशम उद्देशक

१ चरम चरम समय कृतयुग्म कृतयुग्म प्रमाण एकेन्द्रियों का उत्पाद

## एकादशम उद्देशक

१ चरम अचरम समय कृतयुग्म कृतयुग्म प्रमाण एकेन्द्रियों का उत्पाद

द्वितीय एकेन्द्रिय महायुग्म शतक. इग्यारह उद्देशक

१ कृष्णलेश्य कृतयुग्म कृतयुग्म एकेन्द्रियों का वर्णन

तृतीय एकेन्द्रिय महायुग्म शतक. इग्यारह उद्देशक

१ नीललेश्य कृतयुग्म कृतयुग्म एकेन्द्रियों का वर्णन

चतुर्थ एकेन्द्रिय महायुग्म शतक. इग्यारह उद्देशक

१ कापीतलेश्य कृतयुग्म कृतयुग्म एकेन्द्रियों का वर्णन

- पचम एकेन्द्रिय महायुगम शतक इग्यारह उद्देशक  
 १ भवसिद्धिक कृतयुगम कृतयुगम एकेन्द्रियो का वषण  
 षष्ठ एकेन्द्रिय महायुगम शतक इग्यारह उद्देशक  
 १ कृष्णलेश्य भवसिद्धिक कृतयुगम कृतयुगम एकेन्द्रियो का वषण  
 सप्तम एकेन्द्रिय महायुगम शतक इग्यारह उद्देशक  
 १ नीललेश्य भवसिद्धिक कृतयुगम कृतयुगम प्रमाण एकेन्द्रियो  
 का वषण

- अष्टम एकेन्द्रिय महायुगम शतक इग्यारह उद्देशक  
 १ कापोतलेश्य भवसिद्धिक कृतयुगम कृतयुगम प्रमाण एकेन्द्रियो  
 का वषण

- नवम एकेन्द्रिय महायुगम शतक इग्यारह उद्देशक  
 १ अभवसिद्धिक कृतयुगम कृतयुगम प्रमाण एकेन्द्रियो का वषण  
 दशम एकेन्द्रिय महायुगम शतक इग्यारह उद्देशक  
 १ कृष्णलेश्य अभवसिद्धिक कृतयुगम कृतयुगम प्रमाण एकेन्द्रियो  
 का वषण

- एकादशम एकेन्द्रिय महायुगम शतक नव उद्देशक  
 १ नीललेश्य अभवसिद्धिक कृतयुगम कृतयुगम एकेन्द्रियो का  
 उत्पाद

- द्वादशम एकेन्द्रिय महायुगम शतक नव उद्देशक  
 १ कापोतलेश्य अभव सिद्धिक कृतयुगम कृतयुगम प्रमाण एके  
 द्रियो का उत्पाद

### छतीसवाँ शतक

अवान्तर द्वादश शतक

दो सो इकतीस उद्देशक

- प्रथम वेद्विद्रिय महायुगम शतक इग्यारह उद्देशक  
 १ कृतयुगम कृतयुगम वेद्विद्रियो का उत्पाद

- २ वेइन्द्रियों का अनुबन्ध
- ३ प्रथम समय कृतयुगम कृतयुगम वेइन्द्रियों का उत्पाद  
शेष—एकेन्द्रिय महायुगम उद्देशकों के समान
- द्वितीय वेइन्द्रिय महायुगम शतक इग्यारह उद्देशक
- १ कृष्णलेश्य कृतयुगम कृतयुगम वेइन्द्रियों का वर्णन
- तृतीय वेइन्द्रिय महायुगम शतक इग्यारह उद्देशक
- १ नीललेश्य कृतयुगम कृतयुगम वेइन्द्रियों का वर्णन
- चतुर्थ वेइन्द्रिय महायुगम शतक इग्यारह उद्देशक
- १ कापोतलेश्य कृतयुगम कृतयुगम वेइन्द्रियों का वर्णन
- पंचम वेइन्द्रिय महायुगम शतक इग्यारह उद्देशक
- १ भव सिद्धिक कृतयुगम कृतयुगम वेइन्द्रियों का वर्णन
- षष्ठ वेइन्द्रिय महायुगम शतक इग्यारह उद्देशक
- १ कृष्णलेश्य भवसिद्धिक कृतयुगम कृतयुगम वेइन्द्रियों का वर्णन
- सप्तम वेइन्द्रिय महायुगम शतक इग्यारह उद्देशक
- १ नीललेश्य भवसिद्धिक कृतयुगम कृतयुगम वेइन्द्रियों का वर्णन
- अष्टम वेइन्द्रिय महायुगम शतक इग्यारह उद्देशक
- १ कापोतलेश्य भवसिद्धिक कृतयुगम कृतयुगम वेइन्द्रियों का वर्णन
- नवम वेइन्द्रिय महायुगम शतक नव उद्देशक
- १ अभवसिद्धिक कृतयुगम २ वेइन्द्रियों का वर्णन
- दशम वेइन्द्रिय महायुगम शतक नव उद्देशक
- १ कृष्णलेश्य अभवसिद्धिक कृतयुगम २ वेइन्द्रियों का वर्णन
- एकादशम वेइन्द्रिय महायुगम शतक नव उद्देशक
- १ नीललेश्य अभवसिद्धिक कृतयुगम द्वीन्द्रियों का वर्णन



षष्ठ संज्ञी महायुगम शतक इग्यारह उद्देशक

१ पद्मलेश्य संज्ञीपंचेन्द्रिय महायुगमों का उत्पाद

सप्तम संज्ञी महायुगम शतक इग्यारह उद्देशक

१ शुक्ललेश्य संज्ञी पंचेन्द्रिय महायुगमों का उत्पाद

अष्टम संज्ञी महायुगम शतक इग्यारह उद्देशक

१ भवसिद्धिक कृतयुगम २ प्रमाण संज्ञीपंचेन्द्रिय महायुगमों का उत्पाद

नवम संज्ञी महायुगम शतक

चौदहवें संज्ञी महायुगम शतक पर्यन्त

प्रत्येक के इग्यारह उद्देशक

१ कृष्णलेश्य-यावत्-शुक्ललेश्य भवसिद्धिक कृतयुगम २ प्रमाण संज्ञी पंचेन्द्रिय महायुगम का उत्पाद

पंद्रहवें संज्ञी महायुगम शतक से

इक्कीसवें संज्ञी महायुगम शतक पर्यन्त

प्रत्येक के इग्यारह उद्देशक

१ कृतयुगम-२ प्रमाण कृष्णलेश्य-यावत्-शुक्ललेश्य अभवसिद्धिक संज्ञी पंचेन्द्रिय का उत्पाद

इगतालीसवाँ शतक. प्रथम उद्देशक

१ क- चार प्रकार का राशियुगम

ख- चार प्रकार का राशियुगम कहने का हेतु

२-३ कृतयुगम राशि प्रमाण चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात

४ सान्तर अथवा निरन्तर उपपात

५ कृतयुगम और त्र्योज राशि के सम्बन्ध का निषेध

६ कृतयुगम और द्वापर राशि के सम्बन्ध का निषेध

७ कृतयुगम और कल्योज राशि के सम्बन्ध का निषेध

८ जीवों के उपपात की पद्धति



द्वादश वैद्विन्द्रिय महायुगम शतक नव उद्देशक

- १ कापान लय अभवतिद्विक कृतयुगम वैद्विन्द्रियो का वणन  
सैंतीसवाँ शतक

अवान्तर द्वादश शतक

एक सो चौबीस उद्देशक

- १ कृतयुगम २ प्रमाण त्रीन्द्रियो के उत्पाद का वणन

अडतीसवाँ शतक

अवान्तर द्वादश शतक

एक सो चौबीस उद्देशक

- १ कृतयुगम २ प्रमाण चतुरिन्द्रियो के उत्पाद का वणन

उनचालीसवाँ शतक

अवांतर द्वादश शतक

एक सो चौबीस उद्देशक

- १ कृतयुगम २ प्रमाण असती पंचन्द्रियो के उत्पाद का वणन

चालीसवाँ शतक

अवान्तर इकवीस सती पचेन्द्रिय महायुगम शतक

प्रथम सती महायुगम शतक इग्यारह उद्देशक

- १ कृष्णनेश्य सती पचेन्द्रिय महायुगम का उत्पाद

तृतीय सती महायुगम शतक इग्यारह उद्देशक

- १ नीलनेश्य सती पचेन्द्रिय महायुगमो का उत्पाद

चतुर्थ सती महायुगम शतक इग्यारह उद्देशक

- १ कापोनेश्य सती पचेन्द्रिय महायुगमो का उत्पाद

पंचम सती महायुगम शतक उद्देशक इग्यारह

- १ तेजसनेश्य सती पचेन्द्रिय महायुगमो का उत्पाद

तेरहवें से सोलहवें उद्देशक पर्यंत

- १ कापोतलेश्यावाले चार राशि युग्म प्रमाण चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात

सतरहवें से बीसवें उद्देशक पर्यंत

- १ तेजोलेश्यावाले चार राशि युग्म प्रमाण चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात

इक्कीसवें से चौबीसवें उद्देशक पर्यंत

- १ पशुलेश्यावाले चार राशि युग्म प्रमाण चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात

पच्चीसवें से अट्ठावीसवें उद्देशक पर्यंत

- १ शुक्ललेश्यावाले चार राशि युग्म प्रमाण चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात

उनत्तीसवें से छप्पनवें उद्देशक पर्यंत

- १ चार राशि युग्म प्रमाण भव सिद्धिक, कृष्ण लेश्या-यावत्-शुक्ल लेश्या वाले चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात

सत्तावन से चौरासीवें उद्देशक पर्यंत

- १ चार राशि युग्म प्रमाण अभवसिद्धिक, कृष्ण लेश्या-यावत्-शुक्ल लेश्या वाले चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात

पच्चासी से एक सो बारहवें उद्देशक पर्यंत

- १ चार राशि युग्म प्रमाण सम्यग्दृष्टि भवसिद्धिक कृष्ण लेश्या वाले-यावत्-शुक्ल लेश्या वाले चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात

एक सो तेरहवें से एक सो चालीसवें उद्देशक पर्यंत

- १ चार राशि युग्म प्रमाण मिथ्यादृष्टि भवसिद्धिक कृष्णलेश्या वाले-यावत्-शुक्ललेश्यावाले चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात

-१० उपपात का हेतु आत्मा का असयम

१ सलेष्य आत्म असयमी

२ १७ सक्रिय आत्म असयमी

८ २३ श्रिया रहित की सिद्धि

### द्वितीय उद्देशक

१ ३ श्योज राशि प्रमाण चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात

### तृतीय उद्देशक

१ २ द्वार गुग्मराशि प्रमाण चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात

### चतुर्थ उद्देशक

१ कल्योज राशि प्रमाण चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात

### पचम उद्देशक

१ कृष्णनेश्यावाले कृतगुग्म प्रमाण चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात

### षष्ठ उद्देशक

१ कृष्णनेश्यावाले श्योज राशि प्रमाण चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात

### सप्तम उद्देशक

१ कृष्णनेश्यावाले द्वार गुग्म प्रमाण चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात

### अष्टम उद्देशक

१ कृष्णनेश्यावाले कल्योज प्रमाण चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात

### नवम से बारहवें उद्देशक पर्यंत

१ नीलनेश्यावाले चार राशि गुग्म प्रमाण चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात

षमो तवन्म

## धर्मकथानुयोगमय ज्ञाता-धर्मकथाङ्ग

श्रुतस्कंध	२
अध्ययन	२६
उद्देशक	३६
पद्य	५ लाघ ७६ हजार
उपलब्ध पाठ	२५०० श्लोक
गद्य सूत्र	१५६
पद्य सूत्र	६२

प्रथम ज्ञान श्रुतस्कंध	द्वितीय धर्म कथा श्रुतस्कंध
अध्ययन १६	वर्ग १०
उद्देशक १६	अध्ययन २०६
गद्य सूत्र १४७	गद्य सूत्र १२
पद्य सूत्र ५६	पद्य सूत्र ६

१ उषित्त-णाए, २ संघाड़े, ३ अंटे ४ कुम्मे य ५ सेतगे ।  
६ तुंबेय ७ रोहिणी ८ मल्ली, ९ मायंदी १० चंदिमाइ य ॥  
११ दावहवे १२ उदग-णाए, १३ मंडुक्के १४ तेयली वि य ।  
१५ नंदीफले १६ अवरफंका, १७ आइन्ने १८ सुसुमाइ य ॥  
अवरे य १९ पुंडरीए, णायए, एगुणवीसइमे ।

एक सौ इक्तालीस से एक सौ अड़सठवें उद्देशक पर्यंत  
१ चार राशि युग्म प्रमाण कृष्ण पक्षी चीवीस दण्डक के बीजा  
का उपपान

एक सौ उनसित्तर से एक सौ शिष्यानवें उद्देशक पर्यंत  
१ चार राशि युग्म प्रमाण शुक्ल पक्षी चीवीस दण्डक के बीजों  
का उपपान

उपसंहार वा गाथा

भगवता सूत्र-उद्देशक विधि

जिणवयणे अणुरत्ता, जिणवयणं जे करेति भावेणं ।  
अमला असकिलिद्धा, तेहुति परित्तससारि ॥  
बाल-मरणाणि बहुसो, अकाम-मरणाणि चेव य बहूणि ।  
मरिहति ते वराया, जिण-वयणं जे न जाणति ॥











- रा ध्वजिक का ध्यायाम शांता मे ध्यायाम करना  
 ग स्नानघर मे स्नान एव श्रुगार  
 घ , उपस्थानगाला मे आगमन  
 ङ स्वप्न पाठको को बुनाना स्वप्न कन पूच्छा  
 च चौदह महा स्वप्नो के नाम  
 छ स्वप्न कन ध्वज स्वप्न पाठको का सरवार  
 ज धारिणी देवी का गर्भ सुरगा मे लिये प्रयत्न  
 १३ धारिणी देवी का दोहद  
 १४ क दोहद पूण करने करने का प्रयत्न  
 ख अभयकुमार का अष्टम तप  
 ग सोलह प्रकार के श्वष्ठतम पुद्गल  
 १५ अभय कुमार के मित्र देव का आगमन और दोहद पूण करने  
 के लिये आश्वासन  
 १६ अभय कुमार द्वारा देव का विसर्जन  
 १७ धारिणी का गर्भ प्रतिपालन  
 १८ क मेष कुमार का ज म ज मोत्सव वदि विमोचन कर मुक्ति  
 दसोठन याचका को इच्छित दान प्राप्त कर जागरण  
 चंद्र मूष श्शन आदि सस्कार धीति भोज नामकरण  
 ख पाच धाय स्तोत्रे नाना देशो की दामियाँ  
 ग मेष कुमार का पाठ पठन बहुतर कलाओ का शिक्षण कला  
 चापों का सम्मान  
 १९ क मेष कुमार को अठारह देश भाषाओ का ज्ञान युद्ध कला मे  
 निपुणता  
 ख मेष कुमार के लिए आठ अठ पुर प्रासादो का निर्माण  
 २० क मेष कुमार का आठ राज कथाओ के साथ पाणिग्रहण  
 ख आठ हिरण्य कोटी और आठ सुवर्ण कोटी का दहेन दहेन मे  
 आठ दामियाँ

- ग- बाळ राज कन्याओं द्वारा बत्तीस प्रकार के नृत्यों का प्रदर्शन  
 २१ भ० महावीर का गुणशील चैत्य में समवसरण. धर्म परिषद में प्रवचन
- २२ क- भ० महावीर के दर्शनार्थ मेघ कुमार का जाना  
 ख- पाच प्रकार के अभिगम  
 ग- भ० महावीर की धर्म कथा
- २३ मेघ कुमार को वैराग्य. प्रव्रज्या के लिए माता-पिताओं से आज्ञा प्राप्त करना
- २४ क- मेघ कुमार को माता पिताओं का समझाना  
 ख- मनुष्य जीवन की नश्वरता  
 ग- काम भोगों का स्वरूप  
 घ- निर्ग्रन्थ प्रवचन की महत्ता  
 ङ- साधु जीवन का वर्णन  
 च- आहार एषणा की कठिनता  
 छ- मेघ कुमार का दृढ़ वैराग्य
- २५ क- मेघ कुमार का राज्याभिषेक  
 ख- रज्जोहरण, पात्र और काश्यप के लिए तीन लाख सुवर्ण मुद्राएँ देने का आदेश  
 ग- मेघ कुमार का दीक्षा महोत्सव
- २६ क- मेघ कुमार की प्रव्रज्या  
 ख- मेघ मुनि को रात्रि में शय्या परीषह  
 ग- मेघ मुनि का भ० महावीर की वंदना के लिए जाना
- २७ क- भ० महावीर द्वारा मेघ कुमार मुनि के पूर्वभवों का प्रतिपादन  
 ख- सुमेरुप्रभ हाथी का वर्णन  
 ग- वैताड्यगिरि की तलहटी का वर्णन  
 घ- तृपा पीडित सुमेरुप्रभ हाथी की मृत्यु, पुत्र: हाथी के रूप में जन्म

इ- एक यात्रन का मण्डन बनाना

ए- सगज की रंगा करना

ए- तीन तिन पदधान् मृतु मेघ कुमार के रूप में जन्म

२८ क- मेघ मुनि का पुत्र जन्मो की स्मृति

ख- शमन सध की सेवा क निय मेघ मुनि का दृढ़ प्रतिज्ञा

ग- मघ मुनि का पुन प्रश्रव्या ग्रहण

घ- इगारह अथा का अध्ययन विविध प्रकार के तप

ङ- म० महावीर का विहार

२९ मघमुनि की द्वाग्ग शमन प्रतिज्ञा आराधना

३० क- मेघ मुनि की विदुनगिरि पर अंतिम आराधना

३१ क- मेघ मुनि की विजय विमान में उपपत्ति

ख- तेनीस सागर की स्थिति स्वयं महाविष्णु म जन्म निर्वाण

## द्वितीय सघाटक अध्ययन

रत्नत्रय की आराधना के लिए आहार करना

३२ उस्थानिका—रात्रगृह गुणतीत चैत्य जीण उद्यान भन्नकूप  
मानुका कच्छ

३३ घन्ना सायबाह भद्रा भार्या

३४ पथक दास घन्ना सायबाह का व्यक्तित्व

३५ विजय चीर का क्रूर जीवन

३६ क- भद्रा की पुत्र प्राप्ति के लिये विन्ता

ख- भद्रा द्वारा अनेक देव देवियों की पूजा अचना कभ स्थिति

३७ भद्रा के दोहद की पूजा

ग- देवग्निक का जन्म जन्मोत्सव

३८ क- देवग्निक को श्रीदा के लिए पथक का ले जाना विजय चीर  
द्वारा देवग्निक का अपहरण

ख- देवदिन्न के आभूषण ले लेना और मार कर भग्नकूप में डाल देना

३६ देवदिन्न की शोध. बाल हत्यारे विजय चोर को कारागृह का कठोर दण्ड

४० क- कर चोरी के अपराध में धन्ना सार्थ को कारागृह का दण्ड धन्ना सार्थवाह और विजय चोर का एक वेड़ी से बन्धन

ख- धन्ना सार्थवाह के लिए पंथक का भोजन ले जाना

ग- धन्ना सार्थवाह का विजय चोर को भोजन देना

४१ क- विजय चोर को भोजन देने से भद्रा सार्थवाही का रुष्ट होना

ख- धन्ना सार्थवाही की कारागृह से मुक्ति

ग- विजय चोर को भोजन देने का कारण बताने से भद्रा की नाराजगी का मिटना

घ- विजय चोर की मृत्यु. नरक गति

ङ- भ० महावीर द्वारा निर्ग्रथ निर्ग्रथियों की शिक्षा

४२ क- धर्मघोष स्थविर का पदार्पण

ख- धन्ना सार्थवाह की प्रव्रज्या

ग- अन्तिम आराधना

घ- सौधर्म कल्प में देव होना. चार पत्य की स्थिति. च्यवन.

ङ- महाविदेह में जन्म और निर्वाण

४३ भ० महावीर द्वारा निर्ग्रथ निर्ग्रथियों की शिक्षा

## तृतीय अण्ड अध्ययन

### शंका न करना

४४ क- उत्थानिका—चंपा नगरी. सुभूमि भाग उद्यान. मालुका कच्छ मयूरी के दो अंडे. दो सार्थवाह पुत्र

४५ जिनदत्त और सागरदत्त की मैत्री

४६-४७

- ४८ दोनो मित्रो द्वारा मयूरी के दोनो अण्डो को उठाना  
 ४९ क मुर्गी के अण्डो के साथ वन मयूरी के अण्डो का पालन  
 ख सागरदत्त की अण्डे के सम्बन्ध में शका अण्ड का नष्ट होना  
 ५० क- जिनदत्त का अण्डे के सम्बन्ध में सदेह न करना  
 ख मयूरपालक द्वारा दूत्य तथा दूत श्रीहाशिसा  
 घ- निर्घ्नय निघ्नयिथो को भ० महावीर की [सम्यक्त्व के प्रथम  
 शका अतिचार की निवृत्ति के सम्बन्ध में] शिक्षा

### चतुर्थ कूर्म अध्ययन

#### इन्द्रिय जय

- ५१ क उत्थानिका वाराणसी नगरी  
 ख मालुका कच्छ में दो शृगाल  
 ग सभ्या के समय द्रुह से निकलकर दो कूर्मों का खाद्य खवेपना  
 के लिए मालुका कच्छ की ओर जाना  
 घ शृगालों का कूर्मों की घाल में बैठना  
 ङ चक्रवर्ति कूर्म का शृगालों द्वारा मारना जानना  
 च स्थिरचित्त कूर्म का बचना  
 छ निर्घ्नय निघ्नयिथो को भ० महावीर की [पांचो इन्द्रियों को  
 बल करने के सम्बन्ध में] शिक्षा

### पंचम ज्ञात अध्ययन

#### प्रमाद परिहार

- ५२ क द्वारका नगरी वषट्क रैवतक पवत नदनवन उद्यान वनत  
 मुरप्रिय यक्षायतन कृष्ण सामुदेव  
 दक्षिणाधभरण की रात्रघानी द्वारिका का वैभव—  
 समुद्र विजय प्रमुख दश दशर  
 बलदेव ' पांच महावीर

उद्यतेन	प्रमुग	सोत्तह हजार राजा
प्रद्युम्न	"	साढ़े तीन कोड़ कुमार
साव	"	साठ हजार पराक्रमी
वीरतेन	"	इकतीस हजार धीर
महातेन	"	एकान हजार बलवान
रामणी	"	बत्तीस हजार रागिनी
बनभू सेना	"	हजारों गणिकायें
अन्य अनेक	"	सार्धंवाह आदि

- ५३ क- धायच्चा गायापति. धायच्चापुत्र कुमार का अध्ययन  
 ग- बत्तीस श्रेष्ठी कन्याओं के साथ धायच्चा पुत्र का पाणिग्रहण  
 ग- भ० अरिष्टनेमी का समवसरण, दशधनुष की जेंचार्द्र, अठारह  
 हजार श्रमण, चात्तीस हजार श्रमणिनी  
 घ- गुणर्मा सभा, कौमुदी भैरी का वादन
- ५४ क- धायच्चा पुत्र का वैराग्य, दीक्षा महोत्सव के लिए श्रीकृष्ण  
 से धायच्चा भार्या का निवेदन  
 ग- श्री कृष्ण द्वारा धायच्चा पुत्र के वैराग्य की परीक्षा  
 ग- धायच्चा पुत्र की प्रव्रज्या  
 घ- भ० अरिष्टनेमी से आज्ञा प्राप्त करके एकहजार अणगार  
 के साथ धायच्चापुत्र का जनपद में विहार
- ५५ क- सेलकपुर, सुभूमिभाग उद्यान, सेलक राजा, पद्मावती रानी,  
 युवराज मण्डूककुमार, पंचक प्रमुग पाँच सौ मंत्रीगण  
 ख- धायच्चा पुत्र अणगार को सेलकपुर में पदार्पण, धर्मकथा,  
 राजा और मंत्रियों का द्वादश व्रत स्वीकार करना  
 ग- सीगंधिका नगरी वर्णन, नीलाशोक उद्यान  
 घ- सुदर्शन नगर देठ  
 ङ- शुक्रदेव, परिय्राजक-वस्ति, चार वेदों के नाम, पण्ठी तंत्र,

साह्य सिद्धान्त पाच यम पाच नियम दम प्रकार का परि  
व्राजक घम

च मुग्धान को शौचमूलक घम का उपदेश

छ- दो प्रकार का शौच द्रव्य शौच और भाव शौच की व्याख्या  
शौचघम से स्वर्ग की प्राप्ति मुद्धान का शौचघम स्वीकार  
करना

ज शुक परिव्राजक का जनपद में विहार

झ धी यावच्चापुत्र अणशार का आगमन परिपद म मुदशन की  
उपस्थिति दो प्रकार का विनयमूल घम अमार घम के बारह  
व्रत इग्यारह उपासक प्रतिमात्रो का आराधन अणशार घम  
में अठारह पाप विरति दम प्रत्यास्थान बारह भिक्षु प्रतिमा  
विनयमूल घम से मोक्ष

ञ मुदशन द्वारा शौचघम का प्रतिपान्न

ट यावच्चा द्वारा शौचघम का परिहार स्वतरजित वस्त्र का  
उत्पाहरण

ठ मुग्धान की विनयमूलक घम म श्रद्धा

ड पुन शुक परिव्राजक का सौमधिका म आना मुग्धान को पुन  
शौचमूल घम में प्रतिष्ठापित करने का प्रयत्न करना

ढ मुग्धान के साथ शुक परिव्राजक का यावच्चा पुत्र अणशार के  
समीप पहुचना

ण यावच्चापुत्र से शुक के कुछ प्रश्न

त शुक की अहत प्रश्नया चौदह पुत्र का अध्ययन  
यावच्चा पुत्र का विहार पुडरीक पक्ष पर अन्तिम आराधना  
सिद्धि

५६ क शुक अमण का गैलकपुर के सुभूमि भाग उद्यान म पदापण  
शेतक का घम श्वच मणूक को राध देकर गैलक राजा  
का पथक प्रमुख पापसो मन्त्रियों के साथ प्रव्रजित होना

- ग- मुक्त श्रमण की पुण्डरीक पर्यंत पर अन्तिम आराधना. निर्वाण
- ५७ देवक राजपि का अक्षरय होना, चिह्नित्वा के लिए मेनकपुर पहुँचना, स्वरय होने पर भी मेनकपुर न छोटना
- ५८ क- देवक राजपि की सेवा में अर्चने पथक मुनि का रहना, अन्य श्रमणों का विहार
- ५९ वातुर्नामिक प्रतिश्रमण के दिन देवक राजपि का प्रबुद्ध होना, विहार करना
- ६० निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थियों को भ० महावीर द्वारा प्रतिबोध
- ६१ क- देवक-राजपि की पुण्डरीक पर्यंत पर अन्तिम आराधना, सिद्ध पद की प्राप्ति
- ग- निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थियों को भ० महावीर की शिक्षा

## षष्ठ तुम्बक अध्ययन

### जीव का गुरुत्व लघुत्व

- ६२ क- उन्वानिका—राजगृह, भ० महावीर और इन्द्रभूति
- ग- जीव के गुरुत्व-लघुत्व का कारण, मृत्तिका लिप्त तुम्ब का उदाहरण

## सप्तम रोहिणी अध्ययन

### पाँच महाव्रतों की वृद्धि

- ६३ क- राजगृह नगर, मृभूमि भाग उद्यान, धन्ना सायंवाह द्वारा पाँच शालिकणों से चार पुत्रवधुओं की परीक्षा चारों को चार प्रकार के कार्य देना
- ग- भ० महावीर का रोहिणी के ममान निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थियों को पाँच महाव्रतों की वृद्धि का उपदेश



## अष्टम मल्ली अध्ययन

१ माया ज्ञत्य निवारण

२ दुर्गधमय वेह

- ६४ क उत्पानिका—जबुद्वीप, महाविदेह नियम वर्षधर पर्वत, सीमोदा महानदी, मुम्बाबह बग्यस्कार पवन, मवण समुद्र, सन्तिलावनि विजय बीनजोका राजधानी, इन्द्र कुम्भ उद्यान
- ख बनराजा, धारिणी राणी महाबल राजकुमार, पाँचसो राज-  
क-यात्री से पानियहण पाँच प्रामाद पाँचमो हिरण्य कोटी,  
पाँचमो मुचल कोटी का दहेज दहेज में पाँचमो दाहिनी
- ग स्वविरों का आगमन धर्म धरण, महाबल को राज्य देकर  
बनराजाका प्रप्रजिन होना, इग्यारह अगा का अध्ययन
- घ चाह पर्वत पर अनिम आराधना सतेगना शिवपद की प्राप्ति
- ङ बमलथी को मित्र का स्वप्न बज्रमद्र पुत्र की प्राप्ति
- च महाबल के बालमित्र द्य राजा
- छ स्वविरा का आगमन, महाबल के साथ द्यो राजाभा की  
प्रशम्भा
- ज महाबल और द्यो मुनियों द्वारा समानता करने का निरचय
- झ महाबल मुनि का मायावृक्ष लोहद्वि से स्त्रीनिग नाम कर्म  
का बधन महाबल द्वारा लीप करनाम कर्म का उपाजन
- ञ लीप करनाम कर्म की उपाजना क बीस कारण
- ट महाबल आदि माना मुनियों द्वारा भिक्षु प्रतिमात्रा की  
आराधना
- ठ लक्ष्मिद निरकोदिन और महामिह निष्कीर्ण लप की  
आराधना
- ड चाह पर्वत पर महाबल आदि मुनियों की अनिम आराधना  
दा भाग मनसना बीराली हजार वर्ष का क्षमण पर्वत,

चौरासी लाख पूर्व का पूर्णायु, सबका जयन्त विमान में देव होना

६५ क- वत्तीस सागर की स्थिति

ख- १. प्रतिबुद्धि	साकेताधिपति
२. चन्द्रच्छाय	अंगदेशाधिपति
३. शंख	काशिराज
४. स्वमी	कुणाल अधिपति
५. अदीन शत्रु	कुरराज
६. जितशत्रु	पचाल अधिपति

ग- जंबूद्वीप, भरत, मिथिला राजधानी, कुम्भराजा, प्रभावती देवी चौदह महास्वप्न, महाबल देव का प्रभावती की कुक्षि में अवतरण, पूर्ण दोहद, उन्नीसवें तीर्थंकर का मल्लीरूप में जन्म

६६ नन्दीश्वर द्वीप में जन्मोत्सव, नाम करण

६७ क- शतायु मल्ली की अवधिज्ञान द्वारा छहों राजाओं की जानकारी

ख- अशोकवाटिका में "मोहनघर" का निर्माण

ग- मोहनघर के मध्यभाग में स्वर्णमय मल्ली प्रतिमा की मल्ली द्वारा स्थापना

६८ क- कोशल जनपद, साकेत नगर, दिव्य नागघर

ख- प्रतिबुद्धि राजा, पद्मावती रानी, नागयज्ञ का आयोजन, श्री दामगंड की रचना

ग- प्रतिबुद्धि राजा की सुबुद्धि अमात्य द्वारा मल्ली विदेह राजकन्या का परिचय

घ- प्रतिबुद्धि महाराज का दूत प्रेषण, मल्ली विदेह राजकन्या की याचना

ङ- प्रतिबुद्धि का मिथिला गमन

६९. क- अंगदेश-चंपानगरी, चन्द्रच्छाय राजा

४ मल्ली विदेहराजक या का निष्क्रमण सकल्प

७६ क शक्रामन का कपन

ख मल्ली अहत का एक वय पयम्न श्रमण ब्रह्मणा को भोजनगान और इच्छित दान स्वणदान

७७ क निष्क्रमण महोत्सव का वणन

ख मल्ली अहत का स्वयमेव पचमुष्टि केश लुवन गक का केश ग्रहण

ग मल्ली अहत की दीक्षा तिथि मल्ली अहत का पूर्वाण्ह मे सामा यिक चारित्र ग्रहण करना

घ मन पयवतान की प्राप्ति

ङ छ सो त्रिपर्वा और आठ राजकुमारो का माय मे दीक्षित होना

च नदीश्वर द्वीप मे अष्टाह्लिका दीक्षा मूलोत्सव

छ मल्ली अहत को दीक्षा के दिन ही अपराह्न मे केवल ज्ञान होना

७८ क नगीश्वर द्वीप मे अष्टाह्लिका केवलज्ञान महोत्सव

ख कुम राजा का श्रमणोपासक होना मल्ली अहत का घर्मोपदेश जितशत्रु आदि छ राजाओ का दीक्षित होना० मल्ली अहत-का विहार

ग मल्ली अहत क गण

गणधर

श्रमण

श्रमणियाँ

श्रावक

श्राविकाय

चौन्ड पूव घारी मुनि

अवधिज्ञानी मुनि

केवल ज्ञानी

ईशियलन्धि सम्पन्न मनि

मल्ली अर्हत के मनः पर्यव ज्ञानी  
 ,, वादलद्वि सम्पन्न मुनि  
 ,, अनुरत्तरोपपातिक मुनि  
 दो प्रकार की अंतकृत् भूमियाँ

घ- मल्ली अर्हत की ऊँचाई

,, का वर्ण

,, का संस्थान

,, का सहनन

ङ- मल्ली अर्हत का विहार क्षेत्र

च- सम्मेत शैल शिखर पर भ० मल्ली अर्हत की अन्तिम आराधना

छ- मल्ली अर्हत का गृहवास

,, केवल पर्याय

,, पूर्णायु

,, के साथ निर्वाण होने वालों की संख्या

नंदीश्वर द्वीप में अष्टाङ्गिका निर्वाण महोत्सव

### नवम माकंदी अध्ययन

७६ क- उत्थानिका, चंपा नगरी, पूर्णभद्र चैत्य, माकंदी सार्थवाह, भद्रा

भार्या, सार्थवाह के दो पुत्र, जिन पालित और जिन रक्षित

ख- व्यापारार्थ जिनपालित और जिनरक्षित की चारहवीं वार लवण

समुद्र यात्रा

ग- यात्रा में विघ्न. पोत भंग

८० क- फलक के सहारे जिन पालित और जिन रक्षित का रत्नद्वीप के

तट पर पहुंचना

ख- रयणादेवी का दोनों भाईयों को अपने साथ ले जाना और

अपने प्रासाद में रखना

८१ क- लवण समुद्र की सफाई के लिये लवणाधिप सुस्थित देव का

रयणादेवी को आदेश देना

ख अरहन्नक, अमणोत्तमक की श्यामार के लिए तबल समुद्र की यात्रा

ग- जहाज में अरहन्नक की एक देव द्वारा परीक्षा तथा दंड अरहन्नक को दो दिव्य कुण्डल युगलों की भेंट

७० क- अरहन्नक का मिथिला गमन

ख- महाराजा कुम्भ को बहुमूल्य पदार्थों की तथा दिव्य कुण्डल युगल की भेंट

ग- अरहन्नक का धम्मा भद्रप्रागमन महाराज चन्द्रचूडाय की एक दिव्य कुण्डल की भेंट

घ- मन्त्री विदेहराजकन्या के सम्बन्ध में अरहन्नक का निवेदन इ मन्त्री विदेहराजकन्या की याचना के लिये महाराज चन्द्र-चूडाय का दूत सम्प्रेषण

७१ क कुणाल जनपद सावणी नगरी रुक्मी राजा धारिणी मुवाट्ट-नाम की राज कन्या

ख मुवाट्ट राज कन्या का धानुर्मासिक स्नान महोत्सव

ग वपधर द्वारा मन्त्री विदेहराज कन्या की महिमा

घ मन्त्री विदेहराजकन्या की याचना के लिये रुक्मी राजा का मिथिला को दूत भेजना

७२ क काशी जनपद वाराणसी नगरी शल्ल राजा

ख मन्त्री विदेहराजकन्या के दिव्य कुण्डल का सविभेद

ग कुण्डल की संधी को ठीक करने के लिए महाराजा कूर्म का स्वयंशरणा का आदेश

घ कुण्डल की भंग संधि को ठीक करने में अथमय सभी स्वर्णकारी को निर्वासित करना

ङ निर्वासित स्वर्णकारों का वाराणसी त्रिवाम

च मन्त्री विदेहराजकन्या के सम्बन्ध में काशी राज की जानकारी

छ मन्त्री विदेहराजकन्या की याचना के लिये काशी राज का

## मिथिला को दूत भेजना

- ७३ क- कुन्जजनपद, हस्तिनापुर नगर, अदीन शाह राजा  
 ख- मिथिला में महाराजा कुम्भ के मुपुत्र मल्लदिन्न कुमार द्वारा  
 चित्र नभा निर्माण करने का आदेश  
 ग- एक चित्रकार द्वारा मल्ली विदेहराजकन्या के चित्र का निर्माण  
 घ- मल्लदिन्न कुमार के आदेश से चित्रकार के अगुठे का छेदन  
 तथा दैनिकाले का दण्ड  
 ङ- निर्वाणित चित्रकार का हस्तिनापुर में आगमन  
 च- निष्कापित चित्रकार का अदीनशाह को मल्ली विदेहराजकन्या  
 के चित्रपट का दिखाना  
 छ- मल्ली विदेहराजकन्या की याचना के लिये अदीनशाह का  
 मिथिला को दूत भेजना
- ७४ क- पांचाल जनपद, कापिलपुर नगर, जितेश्वर राजा, धारिणी राणी  
 ख- चार बंदों की पारंगता योग्या नाम की परिभ्राजिका द्वारा  
 मल्ली विदेहराजकन्या के नग्भुग शीवधर्म का प्रतिपादन  
 ग- मल्ली विदेहराजकन्या द्वारा-रघुन रजित वस्त्र के उदाहरण से  
 शीवधर्म का परिहार  
 घ- अपमानित योग्या परिभ्राजिका का कपिलपुर में आगमन  
 ङ- जितेश्वर राजा को क्रोधपूर्णता का उदाहरण देकर योग्या ने  
 मल्ली विदेहराजकन्या का परिचय दिया  
 च- मल्ली की याचना के लिये—जितेश्वर ने मिथिला को दूत भेजा
- ७५ क- प्रतिबुद्धि आदि छहों राजाओं द्वारा मिथिला के चारों ओर  
 घेरा डालना  
 ख- छहों राजाओं का मोहनघर में प्रवेश. मल्ली कुमारी द्वारा  
 राजाओं की प्रतिबोध एवं पूर्वजन्म का वृत्तान्त कथन  
 ग- छहों राजाओं की जातिस्मरण (पूर्व जन्म की स्मृति)  
 घ- प्रतिविसर्जित छहों राजाओं का स्व स्व स्थान में गमन

इ मन्त्री विदेहराजकन्या का निष्क्रमण स्वरूप

७६ क गकामन का कथन

ख मन्त्री अहृत का एक वर्ष पयन्त अमण ब्रह्मणा को भोजनदान और इच्छित दान स्वगन्त

७७ क निष्क्रमण महोत्सव का कथन

ख मन्त्री अहृत का स्वयमव पथमुष्टि केश सूचन गुरु का केश ग्रहण

ग मन्त्री अहृत की दीक्षा निधि मन्त्री अहृत का पूर्वाणह मे सामा यिक चारित्र्य ग्रहण करना

घ मन पयवतान की प्राप्ति

ङ छ सो म्बियाँ और आठ राजकुमारों का साथ मे दीक्षित होना

च न लेश्वर द्वीप मे अष्टाङ्गिका दीक्षा महोत्सव

छ मन्त्री अन्त को दीक्षा के दिन ही अपराह्न मे कवन ज्ञान होगा

७८ क नलीश्वर द्वीप मे अष्टाङ्गिका केवलतान महोत्सव

ख कर्म राजा का अमणोपामक होना मन्त्री अहृत का धर्मोपदेश त्रितशत्रु आदि छ राजाओं का दीक्षित होना० मन्त्री अहृत का विचार

ग मन्त्री अन्त क गण

गणधर

अमण

अमणियाँ

श्रावक

श्राविकाय

चौदह पूव घारी मुनि

अवधिज्ञानी मुनि

केवल पानी

चत्रियलभिध सम्पन्न मुनि

मल्ली अर्हत के मनः पर्यव ज्ञानी  
 ,, वादलट्ठि सम्पन्न मुनि  
 ,, अनुरत्तारोपपातिक मुनि  
 दो प्रकार की अंतकृत् भूमियाँ

घ- मल्ली अर्हत की ऊँचाई

,, का वर्ण

,, का संस्थान

,, का संहतन

ङ- मल्ली अर्हत का विहार क्षेत्र

च- सम्मैत शैल शिखर पर भ० मल्ली अर्हत की अन्तिम आराधना

छ- मल्ली अर्हत का गृहवास

,, केवल पर्याय

,, पूर्णायु

,, के साथ निर्वाण होने वालों की संख्या

नंदीश्वर द्वीप में अष्टाह्लिका निर्वाण महोत्सव

### नवम माकंदी अध्ययन

७६ क- उत्थानिका, चंपा नगरी, पूर्णभद्र चैत्य, माकंदी सार्थवाह, भद्रा

भार्या, सार्थवाह के दो पुत्र, जिन पालित और जिन रक्षित

ख- व्यापारार्थ जिनपालित और जिनरक्षित की बारहवीं बार लवण

समुद्र यात्रा

ग- यात्रा में विघ्न. पोत भंग

८० क- फलक के सहारे जिन पालित और जिन रक्षित का रत्नद्वीप के

तट पर पहुंचना

ख- रयणादेवी का दोनों भाईयों को अपने साथ ले जाना और

अपने प्रासाद में रखना

८१ क- लवण समुद्र की सफाई के लिये लवणाधिप सुस्थित देव का

रयणादेवी को आदेश देना



- ख- दोनो भाइयो को दक्षिण दिशा के वन लण्ड म जाने का निषेध  
 ८२ दोनो भाईयो को पूर्वादि क्रम से दक्षिण दिशा के वन लण्ड  
 म जाना और शूनारोपित पुरुष से वास्तविक स्थिति का ज्ञान  
 प्राप्त होना  
 ८३ क- सेलक यज्ञ की उपासना  
 ख पण पर आरुह्य दोनो भाईयो का चपानगरी के नित्य प्रस्थान  
 ८४ चन्द्रचित्त जिनरभित पर रयणादेवी का अग्नि प्रहार  
 ८५ निर्घ्नय निर्घ्नियो को जिनरभित के समान चन्द्रचित्त न होने  
 का भ० महावीर का उपदेश  
 ८६ दहमना जिनपालित का स्वगृह गदन  
 ८७ क भ० महावीर का ममयसर्ण जिनपालित का घर्मध्वज करना  
 प्रव्रज्या लेना देवमव महाविदेह से मुक्ति  
 ख निर्घ्नय निर्घ्नियो को जिन पालित के समान ग्धिरचित्त रहने  
 का भ० महावीर का उपदेश । उपसहार

## दशम चन्द्र अध्ययन

### आत्मगुणो की वृद्धि

८६ क उत्थानिका—

ख कृष्ण एव शुक्ल पक्ष के चन्द्र की हानि वृद्धि के समान जीव  
 के निज गुणो की हानि वृद्धि । उपसहार

### एकादशम दावद्रव अध्ययन

#### जिन मार्ग की आराधना विराधना

९० क उत्थानिका—

- ख उपमा दावद्रव वृक्ष उपमेव-साधक धमणादि  
 ग उपमा समुद्र का वायु, उपमेव अग्यतिर्षी  
 घ उपमा द्वीप का वायु, उपमेव स्वतिर्षी

ड- देश आराधक, देश विराधक

सर्व आराधक, सर्व विराधक । उपसंहार

## द्वादशम परिखोदक अध्ययन.

### पुद्गल परिणति

६१ क- उत्थानिका, चंपानगरी, पूर्णभद्र चैत्य, जितशत्रु राजा, धारिणी राणी, युवराज जितशत्रु (अदीन शत्रु,) सुबुद्धि अमात्य, अति दुर्गंधित परिखोदक

६२ क- सुबुद्धि अमात्य का परिखोदक को परिष्कृत करवाना तथा राजा को सेवन कराना

ख- पुद्गल परिणति का ज्ञापन

ग- जितशत्रु राजा को प्रतिबोध. व्रतधारणा

घ- स्थविरों का आगमन, जितशत्रु राजा और सुबुद्धि अमात्य की प्रव्रज्या

ड- दोनों का ग्यारह अंग अध्ययन. अनेक वर्षों की श्रमण पर्याय एक मास की संलेखना. दोनों को शिवपद की प्राप्ति

## त्रयोदशम ददुँर अध्ययन

### सत्संग के अभाव में आत्मगुणों का अपकर्ष

६३ क- उत्थानिका-राजगृह. गुणशील चैत्य

ख- भ० महावीर का समवसरण-धर्मकथा

ग- ददुँरदेव द्वारा नाट्य प्रदर्शन

घ- भ० गौतम की जिज्ञासा. ददुँर देव का पूर्वभव

ड- महाराज श्रेणिक, नंद मणिकार का धर्म श्रवण. व्रतधारणा

च- भ० महावीर का विहार

छ- नंद मणिकार को मिथ्यात्व की प्राप्ति

ज- अप्रमभक्त तप में प्यास. व्याकुलता

- अ- वैभारगिरि की तलहटी में नदा पुष्करिणी तथा चार वन  
 १ पश्चिम दिशा के वनखण्ड में चित्रसभा का निर्माण  
 २ दक्षिण दिशा के वनखण्ड में भोजनशाला ,  
 ३ पूर्व दिशा के वनखण्ड में चिकित्साशाला ..  
 ४ उत्तर दिशा के वनखण्ड में अलवार सभा
- ६४ क- नद मणिवार के शरीर में मोनह रोगा की उत्पत्ति सोनह रोगी के नाम  
 ख नद की स्तम्भ नदा पुष्करिणी में ददुररूप में जन्म  
 ग नद की प्रशसा सुनने पर ददुर को पूज्यत्व की स्मृति धर्मा रावन तपश्चर्या
- ६५ क म० महावीर का समयमरण भगवानकी बदना के लिए जाते समय ददुर का अश्व के पैर से घायल होना  
 ख ददुर की अन्तिम आराधना सोधर्म कल्प में उपधान चारपत्थ की स्थिति महाविदेह में जन्म और निर्वाण  
**चतुर्दशम तैतलीपुत्र अध्ययन**
- ६६ क उत्पत्तिका तैतलीपुत्र प्रमदवन, कनकरथ राजा, पद्मावती देवी तैतली पुत्र अमात्य कनाद स्वणकार भद्रा भार्या पोट्टिला पुत्री  
 ख तैतली पुत्र का पोट्टिला से विवाह
- ६७ क कनकरथ राजा का पुत्रा को अगविरस करना  
 ख तैतली पुत्र द्वारा पोट्टिला और पद्मावती की सततियों में परिवर्तन
- ६८ तैतली पुत्र का पोट्टिला से स्तृ होता पोट्टिला की दानदेने में अभिरुची
- ६९ सुव्रता भार्या का आममन वशीकरण के लिए पोट्टिला की पृच्छा सुव्रता का उपदेश पोट्टिला का धर्मणोपासिका होना
- १०० क पोट्टिला की प्रव्रज्या ग्वारह अणु का अध्ययन अनेक वर्षों

का ध्रमण-जीवन. एक मान की संलक्षणना. देवनोक में  
उपपात

१०१ क- कनकरय राजा की मृत्यु

ख- कनकध्वज का राज्याभिषेक. तैत्तली पुत्र के सन्मान की वृद्धि

१०२ क- पोट्टिनदेव का तैत्तलीपुत्र को प्रतिबोध देना

ख- कनकध्वज राजा का तैत्तली पुत्र में विमुक्त होना

ग- तैत्तलीपुत्र के गृह में तैत्तली का अनादर

घ- विष, अग्नि, फांसी, पानी, अग्नि से आत्महत्या के लिये तैत्तली  
पुत्र के प्रयत्न

ङ- प्रव्रज्या के लिये पोट्टिल देव की प्रेरणा

१०३ क- तैत्तली पुत्र को जातिस्मरण

ख- पूर्वभय का वर्णन, जम्बूद्वीप, महाविदेह, पुष्पनावती विजय,  
पुण्डरीकणी राजधानी, महापद्म राजा, स्वविरों के पास  
प्रव्रज्या, चौदह पूर्व का ज्ञान, अन्तिम आराधना, महाशुक्रकल्प  
में उत्पन्न. च्यवन. तैत्तलीपुत्र रूप में उत्पन्न

ग- तैत्तली पुत्र की प्रव्रज्या. चौदह पूर्व का ज्ञान. केवल ज्ञान

१०४ क- केवलज्ञान का महोत्सव

ख- तैत्तलीपुत्र मुनि की वंदना के लिए कनक ध्वज राजा का  
जाना, धर्म श्रवण करना. व्रत धारणा

ग- तैत्तली का केवल ज्ञान सम्पन्न जीवन. सिद्धपद

## पंचदशम नंदीफल अध्ययन

अज्ञात फल के खाने का निषेध

१०५ क- उत्थानिका-चंपानगरी, पूर्णभद्र चैत्य, जितशत्रु राजा, धन्ता  
सायंबाह

ख- अहिच्छत्रा नगरी. कनक केतु राजा

ग- धन्ता सायंबाह का व्यापार के लिये अहिच्छत्रा जाने का संकल्प

- घ अहिन्द्रा के मार्ग में नदीकन खाने बाल साधिया की मृत्यु  
न लाने बाना का बचाव
- ङ- निग्रय निप्रथिया की भ० महावीर की गिना
- च अहिन्द्रा के महाराज कनक केतु की बहुभूय पत्नियों की मेट  
कर स मुक्ति
- छ चपानगरी मे घना सायवाह का आगमन
- ज स्वधिरा का आगमन घन्टा का घमघमन अण्ड पुत्र की गृह  
भार सौमना प्रवज्या ग्यारह अमा का अध्ययन अनेक वर्षों  
का धर्मण धीवन एक माम की मनेश्वना दबनोक मे उपपाप,  
व्यवन, महाविदेह म जम और निवाण । उपमहार

## षोडशम अपरकका अध्ययन

### फलेच्छा का निषेध

- १०६ क उर्यानिशा चपानगरी मुभूमिभाग उद्यान  
ख तीन श्राह्मण और उनकी तीन भार्याए  
ग नागथी ने निकत अनातु का गोक बनाया परीक्षा के  
पदचान एकांत म रख दिया
- घ मधुर अनातु का भीर शक बनाया
- १०७ क घमघम स्वधिर का आगमन  
ख घमघमि अणमार का भिक्षाय गमन  
ग नागथी की कटुक अनातु व्यञ्जन देना  
घ अनातु व्यञ्जन आचार्य को दिनाता व्यञ्जन परीक्षा खान  
का निषेध
- ङ- अनातु व्यञ्जन डालने के लिए घम रवि का समान भूमि म  
जाना
- च कीनिया की हिमा देव कर अनातु व्यञ्जन स्वय सा लना  
घमरची की मृत्यु

छ- धर्मरुची को शोध

झ- धर्मरुची का सर्वार्य सिद्ध में उपपात, च्यवन, महाविदेह में जन्म और निर्वाण

१०८ नागश्री की निन्दा. गृह से निष्कासन. सोलह रोगों की उत्पत्ति. मृत्यु. नरक गति. भव भ्रमण

१०९ चंपा नगरी. नागरदत्त सार्धंवाह. भद्राभार्या. नागश्री की आत्मा का मुकुमालिका के रूप में जन्म

११० क- चंपा नगरी. जिनदत्त सार्धंवाह. सागर पुत्र

ख- सागर पुत्र का मुकुमालिका से विवाह

१११ मुकुमालिका के अनिष्ट स्पर्श से सागर का स्वगृह गमन

११२ क- भिन्नारी की मुकुमालिका सौंपदेना

ख- अनिष्ट स्पर्श से भिन्नारी का पलायन

११३ क- मुकुमालिका की दान में अभिरुचि

ख- गोपालिका आर्या का आगमन. मुकुमालिका का धर्म श्रवण प्रयत्न. अध्ययन. ग्राम के बाहर आतापना लेना

ग- गोपालिका आर्या की आताप लेने के लिए निषेधाज्ञा—

मुकुमालिका का न मानना

११४ क- चम्पा नगरी में ललिता गोष्ठी, देवदत्ता गणिका के साथ गोष्ठी पुरुषों की भोग लीला, मुकुमालिका आर्या का निदान करना

११५ क- मुकुमालिका का शरीर-वकुषा होना

ख- उपाश्रय से निष्कासन. पादर्ववति उपाश्रय में निवास

ग- अनेक वर्षों का श्रामण्य पर्याय. पन्द्रह दिन की संलेखना. अकृत्य स्थान की आलोचना न करना

घ- मृत्यु. ईशान कल्प में देवगणिका होना. नव पत्य की स्थिति द्रौपदी कथा

११६ जम्बूद्वीप भरत. पांचाल जनपद. कंपिलपुर. द्रुपद राजा. चुलनी

राज्ञी सुवराज पृष्ठदुम्न कुमार मुकुमानिका की आम्ना का शीत  
क म्म म अम् स्वयंवर रचना

प्रमुग पुण्या का निमन्त्रण

११७

प्रथम दून का द्वारापति भवना

द्वितीय दून का हस्तिनापुर भवना

तृतीय दून का कम्पानगरी भवना

चतुर्थ दून हस्तिनादि नगरी भवना

पंचम दून हस्तिनादि नगर भवना

षष्ठ दून मय्या नगरी भवना

सप्तम दून राजपूट नगर भवना

अष्टम दून बौद्धिय नगर भवना

नवम दून विराट नगर भवना

दशम दून गेय नगरा म

११८ क गगा महानगा क मदीय स्वयंवर मण्डप की रचना

ख स्वयंवर मण्डप म सभी राजाओं का आगमन

११९ द्वीपती का स्वयंवर मण्डप म प्रवेश

१२० पाथ पाण्डवों का वरण आठ हिरण्य कानि आनि तथा आनि  
दासियों दहक म मितना

१२१ क पांडु राजा पाथ पाण्डव और द्वीपती आनि का हस्तिनापुर  
आना

ख वामदेव द्वारा नारद का सामान क विमर्जन

१२२ क कच्छुल नारद का हस्तिनापुर आगमन पाण्डुराजा आनि के  
द्वारा नारद श्री का आन्तर सामान

ख द्वीपती द्वारा नारद का अन्तर

१२३ क नारद का द्वीपती से बन्ना लेने का संकल्प

ख धानकीसण्ड द्वीप अमरकका राजधानी पञ्चनाम राजा सात  
सौ रातियों का अन्त पुर सुवराज मुनाम

- ग- नारद का पद्मनाभ के अंतःपुर में प्रवेश  
 घ- अपने अन्तःपुर के सम्बन्ध में पद्मनाभ की जिज्ञासा  
 छ- नारद ने पद्मनाभ की कृपमण्डूक की उपमा दी  
 च- द्रौपदी के रूप की महिमा. मित्रदेव द्वारा मुक्त गुधिष्ठिर के समीप ने द्रौपदी का साहरण  
 छ- राजकन्याओं के साथ द्रौपदी की तप-आराधना  
 १२४ क- जागृत गुधिष्ठिर द्वारा द्रौपदी की शोध  
 ए- द्रौपदी की शोध के लिये कुंती की श्री कृष्ण से प्रार्थना  
 ग- श्री कृष्ण का आश्रयमान  
 घ- कच्छुत्सव नारद का आगमन  
 श्री कृष्ण को द्रौपदी का पता देना  
 छ- पाण्डवों को ससैन्य पूर्व वैतानी समुद्रतट ध्राने का आदेश  
 च- श्री कृष्ण का ससैन्य पूर्व वैतानी पहुँचना  
 छ- श्री कृष्ण का अष्टमशत तप. मुस्थित देव का आगमन  
 ज- श्री कृष्ण और पाण्डवों के रथों का अमरकंका पहुँचना  
 छ- पद्मनाभ को सूचना देने के लिये शङ्क दूत को भेजना  
 झ- पद्मनाभ के साथ पाण्डवों का युद्ध  
 ट- श्री कृष्ण का संसनाद, धनुषटंकार. पद्मनाभ का आत्म समर्पण  
 ठ- पाण्डवों और द्रौपदी को साथ लेकर श्रीकृष्ण का भारत की और प्रयाण  
 १२५ क- घातकौश्लण्ड द्वीप का पूर्वार्ध. भरत क्षेत्र. चंपानगरी. पूर्ण भद्र चैत्य  
 ख- कपिल वामुदेव  
 ग- भ० मुनिसुव्रत का समवसरण. धर्म श्रवण करते समय शंख-नाद श्रवण से कपिल वामुदेव के मन में उत्पन्न जिज्ञासा का-भ० मुनिसुव्रत द्वारा समाधान  
 घ- एक क्षेत्र में एक साथ दो अरिहंत, चक्रवर्ती, बलदेव और



वामुदेव के होने का निषेध तथा मिलने का निषेध

- इ- श्री कृष्ण और कपिन वामुदेव का पाचत्रय्य शस्त्रनाद से मिलन
- घ- कपिन वामुदेव द्वारा पचनाभ का देश निष्कासन और पचनाभ के पुत्र का राज्याभिषेक
- १२६ क- पाण्डवा का नौका द्वारा गंगा नदी उत्तीर्ण होना वन परीक्षा के निम्ने श्री कृष्ण हेतु नौका न ल जाना
- ख- क्रुद्ध श्री कृष्ण द्वारा पाण्डवों क रथों का चुप कर देना देग निकाला दना और रथमदन बोग की स्थापना करना
- ग- श्री कृष्ण का मर्मन्य द्वारिका पहुँचना
- १२७ क- पाण्डवों का हस्तिनापुर से आगमन अमरकका की विजय पाण्डु राजा से यात्रा क हनान का निवेदन
- ख- पाण्डुराजा और कुन्तीदेवी का द्वारिका आगमन
- ग- श्री कृष्ण का पाण्डु-मथुरा बसाने का आदेश
- घ- दक्षिण समुद्र तट पर पाण्डु मथुरा बसाना और उत्तमे निवास करना
- १२८ क- द्रौपदी के आत्मज पाण्डुमेन का जन्म
- ख- अध्ययन विवाह युवराज पद
- ग- स्वविरा का आगमन पाण्डवाका धर्मध्वषण प्रव्रज्या लेने का सकल्प
- घ- पाण्डुमेन का राज्याभिषेक
- इ- पाण्डवों की प्रव्रज्या चौदह पूर्वों का अध्ययन तपश्चर्या
- १२९ द्रौपदी की सुव्रता आर्या के ममाप प्रव्रज्या ग्यारह अंगों का अध्ययन तपाराधना
- १३० क- स्वविरा का पाण्डु मथुरा के सहस्रास्रवन से विहार
- ख- भ० नेमनाथ इस समय सीराण्ण से है यह कवाद पाण्डव मुनिया को प्राप्त हुआ

- ग- भ० नेमनाथ की चंदना हेतु जाने के लिए स्वयिरो से आज्ञा प्राप्त करके विहार करना
- घ- पाण्डव मुनिषी का हस्तिनापुर नगर के सहस्राश्रयन में पहुँचना
- ङ- पाण्डव मुनिषी को भ० अरिष्ट नेमनाथ के (शैलशिखर पर) निर्वाण होने के समानार गिनना
- च- पाण्डव मुनिषी की शत्रुञ्जय पर्वत पर अंतिम आराधना दो मास की मंत्रिना. सिद्धपद की प्राप्ति
- २३१ क- द्रौपदी आर्या की अन्तिम आराधना, ब्रह्मलोक कल्प में द्वुपद देव होना, दस सागर की स्थिति, च्यवन, महाविदेह में जन्म और निर्वाण

### सप्तदशम अश्व अध्ययन

- २३२ क- उत्पानिका, हस्तिशीर्ष नगर, कनककेतु राजा
- ख- सांयात्रिक (नौका) व्यापारियों की लवणसमुद्र यात्रा
- ग- अकालवायु—निर्गमिक का दिग्भूट होना
- घ- इन्द्रादि की पूजा करना, दिशाघोष होने पर कालिक द्वीप पहुँचना
- ङ- कालिक द्वीप में हिरण्य स्वर्ण आदि की गान तथा अश्वरत्न देखना
- च- हिरण्य स्वर्ण आदि बहुमूल्य पदार्थ जहाजों में भरकर हस्ति-शीर्ष नगर पहुँचना
- छ- कनककेतु महाराजा को बहुमूल्य पदार्थों की भेंट
- २३३ क- कालिक द्वीप के अश्वरत्नों के सम्बन्ध में महाराजा से निवेदन
- ख- राजपुरुषों के साथ जाकर अश्वरत्न लाने का राजा का आदेश
- ग- शब्द गन्ध रस एवं स्पर्शजन्य आसक्ति की अभिवृद्धि करने वाले पदार्थ जहाज में भर कर सांयात्रिक व्यापारियों का कालिक-द्वीप पहुँचना

- घ उत्कृष्ट धर्म गद्य रस रचना के पुस्तकों से अरवा को आधीन करना
- ङ निग्रय निग्रथियों को भगवान् महावीर की शिक्षा
- १३४ क अश्वरथ लेकर हस्तिनापुर नगर पहुँचना
- ख अश्वगिणियों से अश्वों की शिक्षा लिलाना
- ग निग्रय निग्रथियों को म० महावीर की शिक्षा
- १३५ इ इत्यलोनुष और इन्द्रियविजयी के मुशावमुण । उपसंहार

### अष्टादशम सुसुमा अध्ययन

- १३६ क उद्यानिका राजगृह घना सायबाह भद्रा भार्या सायबाह घन्ना-केपाच पुत्र और एक पुत्री सुसुमा दास पुत्र चिन्ता
- ख चोरी की आज्ञा के कारण चिन्ता का घर से निकालना
- १३७ क मिहगुफा नाम की चोर पत्नी पाच सौ चोरी का अधिपति विजय चोर
- ख चिन्ता विजय का प्रियशिष्य बना विजय स उसने अनेक चोर विद्याएँ सीखी और विजय की श्रुति के परना उसका उत्तराधिकारी बना
- १३८ सायिया सहित चिन्ता ने घना सायबाह के घर चोरी की और सुसुमा का अपहरण किया
- १३९ क ग्राम रक्षक को साथ लेकर घना सायबाह और उसके पाच पुत्रा ने चिन्ता का पीछा किया
- ख चिन्ता सुसुमा का मरनेक काट कर ले भागा
- ग सूया प्यासा चिन्ता अश्वी में भर गया
- घ निग्रय निग्रथियों को म० महावीर की शिक्षा
- ङ शुषा पिपामा स पीडित घन्ना सायबाह और उसके पुत्रों के बहन सुसुमा के कलेवर को पना कर लाया
- च घना और उसके पाचों पुत्रों का राजगृह में आगमन

१४० क- भ० महावीर का समवसरण, घन्ना सार्थवाह का धर्मश्रवण, प्रव्रज्या ग्रहण, इग्यारह अंगों का अध्ययन, एक मास की संलेखना, सौधर्म देवलोक में देव होना, च्यवन, महाविदेह में जन्म और निर्वाण

ख- निर्ग्रंथ निर्ग्रंथियों को भ० महावीर की धर्मशिक्षा । उपसंहार

## एकोनविंशतितम पुण्डरीक अध्ययन

१४१ क- उत्थानिका-जम्बूद्वीप. पूर्व विदेह. पुष्कलावती विजय. पुण्डरि-किणी राजधानी. नलिनी वन उद्यान. महापद्म राजा. पद्मावती रानी. पुण्डरीक और कुण्डरीक दो राजकुमार

ख- पुण्डरीक युवराज

ग- स्थविरों का आगमन. धर्मश्रवण. पुण्डरीक को राज्यपद. कुण्डरीक को युवराजपद. महापद्म की प्रव्रज्या. चौदहपूर्व का अध्ययन-यावत्-सिद्धपद

१४२ स्थविरों का आगमन. धर्मश्रवण. पुण्डरीक का श्रमणोपासक बनना. कुण्डरीक की प्रव्रज्या. स्थविरों का विहार

१४३ क- पित्तदाह से पीडित कुण्डरीक मुनि का स्वास्थ्य लाभ के लिए पुण्डरीकणी में आगमन. चिकित्सा. स्वास्थ्य लाभ. मनोज्ञ पदार्थों में आसक्ति.

ख- पुण्डरीक का समझाना

ग- कुण्डरी का राज्याभिषेक

१४४ पुण्डरीक की प्रव्रज्या. चारयाम धर्म के आराधना की प्रतिज्ञा पुण्डरिकिणी से विहार. स्थविरों से मिलन

१४५ क- पुण्डरीक को पित्तज्वर. मृत्यु. सप्तम नरक में उत्पत्ति. उत्कृष्ट स्थिति

ख- निर्ग्रंथ निर्ग्रंथियों को भ० महावीर की शिक्षा

१४६ क- पुण्डरीक की पुनः चातुर्याम धर्म आराधना करने की प्रतिज्ञा

ख पुण्डरीक को पितृज्वर, सफल अन्तिम आराधना, सत्यु स्वार्थ सिद्ध म उपपात, ज्यवन, महाविदेह में जन्म और निर्वाण निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थियों को भ० महावीर की शिक्षा

१४७ उपसंहार । प्रथम धृतस्कन्ध का उपसंहार

### द्वितीय धर्मकथा श्रुतस्कन्ध

१४८ क धृतस्कन्ध उत्थानिका दम वगैरे के नाम

### प्रथम चमरेन्द्र अग्रमहिषी वग

#### प्रथम काली अध्ययन

ख उत्थानिका

ग राजगृह गुणशील चैत्य श्रेणिक राजा चेलणा रानी

घ भ० महावीर का समवसरण प्रवचन

ङ- चमर अग्र महिषी कात्री देवी का आगमन वदन, मृत्यु दशन गमन

च कालीदेवी की क्रुद्धि के सम्बन्ध में भ० गौतम की जिज्ञासा

छ भ० महावीर द्वारा समाधान कूटागार माला का दृष्टान्त पूर्व-भव का वणन

ज जवुड्डीप भरत आमलकपा नगरी अब शाल वन चैत्य जित शत्रु राजा

झ काल मायापति कालथीभार्या तथा काली पुत्री

ञ भ० पाशवनाथ का समवसरण (भ० पाशवनाथ की ऊँचाई, श्रमण सम्पत्ति श्रमणी सम्पदा)

ट काली का आगमन धमश्रवण पुष्पवृत्ता आर्षा के समीप प्रव्रज्या दर्शन इगारह अंगी का अध्ययन उपसर्गों की आराधना

ठ काली आर्षा का पुन पुन अवापार प्रभाव

ड पुष्पवृत्ता आर्षा की आज्ञा का उत्तरधन भिन्न उपाश्रय म निवास

ढ पाट्टु ग्नि की मरचना अनाचार का प्रायश्चित्त विधे बिना देह त्याग

ण- चमरचंदा राजधानी के कालावतसक भवन में उपपात. डार्ड पत्य की स्थिति. च्यवन. महाविदेह से शिवपद की प्राप्ति । उपसंहार

### द्वितीय राजी अध्ययन

१४६ क- उत्थानिका

- ख- राजगृह. गुणशील चैत्य. भ० महावीर का समवसरण प्रवचन  
 ग- चमर अग्रमहिषी राजी देवी का आगमन, वंदन, नृत्य दर्शन गमन  
 घ- भ० गीतम द्वारा पूर्वभव पृच्छा. धामलकणा नगरी. अंबाला वन चैत्य. जितशत्रु राजा  
 ङ- राजी गाथापति. राजश्री भार्या. राजी पुत्री  
 च- भ० पार्श्वनाथ का समवसरण. राजी की प्रयज्ञा-यावत्-शिव-पद की प्राप्ति । उपसंहार

### तृतीय रजनी अध्ययन

छ- उत्थानिका. शेष पूर्व अध्ययन के समान

### चतुर्थ विद्युत अध्ययन

ज- उत्थानिका—शेष पूर्व अध्ययन के समान

### पंचम मेघा अध्ययन

झ- उत्थानिका—शेष पूर्व अध्ययन के समान । उपसंहार

### द्वितीय बलेन्द्र अग्रमहिषी वर्ग

१५० क- उत्थानिका

### प्रथम शुंभा अध्ययन

ख- उत्थानिका—राजगृह गुणशील चैत्य भ० महावीर का समवसरण प्रवचन बलेन्द्र अग्रमहिषी शुंभादेवी का वंदन नृत्य दर्शन गमन

म म० गौतम द्वारा पूवभव वृष्णा श्रावणी नगण कोष्टक चैत्य  
 त्रिगुप्तु रात्रा र्गुमा पुत्री उप पूववन्  
 द्वितीय निगुभा अध्ययन तृतीय रभा अध्ययन  
 चतुर्थ निदभा अध्ययन पचम मदना अध्ययन

॥ उगमहार ॥

### तृतीय धरणादि अग्रमहिषी वर्ग

२५१ व उल्पादिवा

प्रथम दूता अध्ययन

म उल्पादिवा—रात्रगृह गुणज्ञान चैत्य म० महावीर का समय  
 मरण प्रवचन परम अग्रमहिषा इनाग्नी का आगमन वन्त  
 वृत्त प्रगतं समन

म पूवभव—वारोक्षमी नगरी काम महावन चत्त दून शायानि  
 दूनयो भार्या दूना पुत्रा म० पावनाप का समवमरण-वाक्य  
 गित वन् की शान्ति । उगमहार

द्वितीय कमा अध्ययन तृतीय सेनरा अध्ययन

चतुर्थ सोदामनी अध्ययन पचम इन्द्रा अध्ययन

षष्ठ घना अध्ययन

षण्णदेव अग्रमहिषीयो व ६ अध्ययन-यावत घोष अग्रमहिषीयो  
 व ६ अध्ययन । सबयोग चौपन अध्ययन

### चतुर्थ मृतानदादि अग्रमहिषी वर्ग

२५२ व उल्पादिवा—

प्रथम रुचा अध्ययन

म उल्पादिवा रात्रगृह, गुणज्ञान चैत्य म० महावीर का समय

सरण, प्रवचन, भूतानंद अग्रमहिषी, रुचादेवी का आगमन,  
वंदन, नृत्य दर्शन । पूर्व भव

ग- चंपा नगरी, पूर्णभद्र चैत्य, रुचक गाथापति, रुचक श्री भार्या,  
रुचा पुत्री भ० पार्श्वनाथ का समवसरण—यावत्—शिवपद  
की प्राप्ति

उपसंहार

द्वितीय सुरुचा अध्ययन तृतीय रुचांता अध्ययन

चतुर्थ रुचकावती अध्ययन पंचम रुचकांता अध्ययन

अग्रमहिषियों के ६ अध्ययन—यावत्—महाघोष की अग्रमहि-  
षियों के ६ अध्ययन

### पंचम पिशाचादि अग्रमहिषी वर्ग

१५३ क- उत्पानिका

#### प्रथम कमला अध्ययन

ख- उत्पानिका, राजगृह, भ० महावीर का समवसरण पिशाचेन्द्र  
की अग्र महीषी कमलादेवी का आगमन, वंदन, नृत्यदर्शन,  
पूर्वभव

ग- नागपुर, सहस्राश्रवन, कमल गाथापति, कमलश्री भार्या, कमला  
पुत्री, भ० पार्श्वनाथ का समवसरण—यावत्—शिव पद की प्राप्ति

द्वितीय कमल प्रभा अध्ययन तृतीय उत्पला अध्ययन

चतुर्थ सुदर्शना " पंचम रूपवती "

षष्ठ बहुरूपा " सप्तम सुरूपा "

अष्टम सुभगा " नवम पूर्णा "

दशम बहुपुत्रिका " एकादशम उत्तामा "

द्वादशम भार्या " त्रयोदशम पद्मा "

चतुर्दशम वसुमती " पंच दशम कनका "



षोडश वनकप्रभा	अध्ययन	सप्तदशम वत्तसा	अध्ययन
अष्टादशम केतुमती	„	एकोनदशम वज्रसेना	„
विंशतिम रतिप्रिया	„	एक विंशतितम रोहिणी	„
द्वाविंशतितम नमिता	„	त्रयोविंशतितम ह्री	„
चतुर्विंशतितम पुष्पवती	,	पञ्चविंशतितम भुजगा	„
षट्त्रिंशतितम भुजगवती	,	सप्तविंशतितम महाकच्छा	„
अष्टविंशतितम अपराजित	,	एकोनविंशतम सुघोषा	„
त्रिंशतम विमला	„	एकत्रिंशतम सुस्वरा	„
द्वात्रिंशतम सरस्वती	„		

### षष्ठ महाकालेन्द्रादि अग्रमहिषी वर्ग

१५४ पचम दश के समान ३२ अध्ययन । पूरभव—घारेत नगर, उत्तर कुह उद्यान

### सप्तम सूर्य अग्रमहिषी वर्ग

१५५ क उत्थानिका

प्रथम सूरप्रभा	अध्ययन	द्वितीय आतपा	अध्ययन
तृतीय अचिमाली	„	चतुर्थ प्रभकरा	„

पूरभव—अत्तपुरी नगरी

### अष्टम चन्द्र अग्रमहिषी वर्ग

१५६ उत्थानिका

प्रथम चन्द्रप्रभा	अध्ययन	द्वितीय ज्योत्स्नाभा	„
तृतीय अचिमाली	„	चतुर्थ प्रभकरा	„

पूरभव—मथुरानगरी भनीवनमक उद्यान

### नवम शक्र अग्रमहिषी वर्ग

१५७ क उत्थानिका

प्रथम पद्मा अध्ययन द्वितीय शिवा अध्ययन  
 तृतीय सती अध्ययन चतुर्थ अंजु अध्ययन  
 पंचम रोहिणी ॥ षष्ठ नवमिका ॥  
 सप्तम अचला ॥ अष्टम अक्षरा ॥  
 ग- पूर्वभय  
 प्रथम द्वितीय की श्रावस्ति नगरी  
 तृतीय चतुर्थ का हस्तिनापुर  
 पंचम षष्ठ का कपिलपुर  
 सप्तम अष्टम का सावेत नगर

### दशम ईशानेन्द्र अग्रमहिषी वर्ग

१५८ क- उद्वानिका

प्रथम कृष्णा अध्ययन द्वितीय कृष्णराजी अध्ययन  
 तृतीय रामा ॥ चतुर्थ रामरक्षिता ॥  
 पंचम वसु ॥ षष्ठ वसुगुप्ता ॥  
 सप्तम वसुमित्रा ॥ अष्टम वसुन्धरा ॥

ग- पूर्वभय

ग- प्रथम-द्वितीय की चाराणसी नगरी  
 तृतीय-चतुर्थ की राजगृह नगरी  
 पंचम-षष्ठ की श्रावस्ति नगरी  
 सप्तम अष्टम की कीनाम्बी नगरी

१५९ उपसंहार

+++++

जहा आसाविणि नाव जाइ अधो दुरुहिया ।  
इच्छई पारमागतु, अतरा य विसीयइ ॥  
एव तु समणा एगे, मिच्छदिट्ठी अणारिया ।  
सोय कसिणमावन्ना, आगतारो महब्भय ॥  
इम च धम्ममायाय, कासवेण पवेइय ।  
तरे सोय महाघोर, अत्तत्ताए परिव्वए ॥

सुवहृत्तज्ञ अ० २ अ० ११

+++++

प्राचीन इतिहास

## धर्मकथानुयोग प्रधान उपासकदशांग

श्रुतसंक्षेप	१
प्राचीनयज्ञ	१०
उद्देश्यशक	१०
पद	११ लाख ५२ हजार
उपलब्ध पाठ	८१२ मूलोक्त परिमाण
नथ सूत्र	२७२
पञ्च सूत्र	×

क्रमनाम	प्रयोगीयशक	भाषा	गोपना	पत्र	दशमसं	विमान
१ यागिज्वरान	प्राचीन	दियासना	२ मत्र	१२	मोक्ष	धर्म
२ चण्डीमठरी	कामदेव	भद्रा	६ मत्र	१८	मोक्ष देवता	प्राचीन
३ चण्डीमठरी	मुनीपिता	मामा	८ मत्र	२४	,,	धर्मप्रति
४ चण्डीमठरी	हरदेव	धर्म	६ मत्र	१८	,,	धर्मप्रति
५ चण्डीमठरी	मुनीपिता	मामा	८ मत्र	२४	,,	धर्मप्रति
६ चण्डीमठरी	मुनीपिता	मामा	८ मत्र	२४	,,	धर्मप्रति
७ चण्डीमठरी	मुनीपिता	मामा	८ मत्र	२४	,,	धर्मप्रति
८ चण्डीमठरी	मुनीपिता	मामा	८ मत्र	२४	,,	धर्मप्रति
९ चण्डीमठरी	मुनीपिता	मामा	८ मत्र	२४	,,	धर्मप्रति
१० चण्डीमठरी	मुनीपिता	मामा	८ मत्र	२४	,,	धर्मप्रति

## श्रमणीपासक पचाचार अतिचार तालिका

शानाचार क अतिचार	शानाचार क १३ अतिचार
सोप म क अनिचार	क दानाचारा का अनाचरण
विस्तार से १४ अनिचार	५ दानानिचारा का आचरण
चारित्राचार के १२५ अनिचार	तपाचार क १० अनिचार
६० हात्त व्रतानिचार	१५ बाह्य और अन्त्यन्तर तपा का अनाचरण
१५ कर्माग्नि	५ मनेत्रना के अनिचार
३२ सामायिक के दोष	२१ कायो मग के दोष
१८ पीपथ के दोष	३२ बन्दना के दोष

### वार्याचार के तान अनिचार

मन वचन कामा से सगक्त होते हुए  
ज्ञान दान चारित्र  
और तपाचार का आचरण न करना

---

अपासक इरा और आवश्यक-शुभ से अप्पु का अनिचारा का वर्णन है ।

# उपासकदशांग विषय-सूची

## प्रथम आनन्द अध्ययन

### प्रथम उद्देशक

- १ उत्थानिका-चम्पानगरी, पूर्णभद्र चैत्य
- २ क- आर्यसुधर्मा और जम्बू  
ख- दश अव्ययनों के नाम
- ३ वाणिज्यग्राम, दूतिपलाश चैत्य, आनन्द गाथापति
- ४ क- आनन्द की सम्पत्ति के तीन विभाग  
ख- चार व्रज
- ५ आनन्द का समाजिक जीवन
- ६ आनन्द की पत्नि शिवानन्दा
- ७ कोल्लाक सन्निवेश
- ८ आनन्द के स्वजन
- ९ क- भ० महावीर का समव्रशरण  
ख- राजा कौणिक (जितशत्रु) का धर्मश्रवणार्थं गमन
- १० भगवत् धर्मश्रवणार्थं आनन्द का जाना
- ११ भ० महावीर की धर्मकथा
- १२ आनन्द की व्रत ग्रहण करने की अभिलाषा
- १३ प्रथम अणुव्रत
- १४ द्वितीय अणुव्रत
- १५ तृतीय अणुव्रत
- १६ चतुर्थ अणुव्रत
- १७ पंचम अणुव्रत
- १८ चतुष्पद परिमाण

- १६ क्षेत्रवास्तु परिमाण
- २० शकट परिमाण
- २१ वाहन परिमाण
- २२ क सप्तम उपभोग परिमाण इत  
ख- उपवस्त्र (अगोछा) परिमाण
- २३ दन्तधावन के लिए दातुन का परिमाण
- २४ फलो का परिमाण
- २५ अम्यग (तैल आदि का मर्दन) परिमाण
- २६ उबटन का परिमाण
- २७ स्नान (माजन) का परिमाण
- २८ वस्त्र परिमाण
- २९ किलेपन परिमाण
- ३० पुष्प परिमाण
- ३१ आभरण परिमाण
- ३२ घृण परिमाण
- ३३ भोजन परिमाण
- ३४ भण्य परिमाण
- ३५ शोदन परिमाण
- ३६ सूप परिमाण
- ३७ घृत परिमाण
- ३८ शाक परिमाण
- ३९ मधुर पदार्थ परिमाण
- ४० व्यञ्जन (जेमन) परिमाण
- ४१ पानी परिमाण
- ४२ मुलवान परिमाण
- ४३ अन्नपदार्थ विभजन क्त
- ४४ मय्यवस्त्र के पाँच अतिचार

- ४५ प्रथम अणुव्रत के पांच अतिचार
- ४६ द्वितीय अणुव्रत के पांच अतिचार
- ४७ तृतीय अणुव्रत के पांच अतिचार
- ४८ चतुर्थ अणुव्रत के पांच अतिचार
- ४९ पंचम अणुव्रत के पांच अतिचार
- ५० षष्ठ दिग्व्रत के पांच अतिचार
- ५१ क- सप्तम उपभोग-परिभोग व्रत के पांच अतिचार  
ख- पन्द्रह कर्मादान
- ५२ अष्टम अनर्थदण्ड व्रत के पांच अतिचार
- ५३ नवम सामायिक व्रत के पांच अतिचार
- ५४ दशम देशावकासिक व्रत के पांच अतिचार
- ५५ एकादशम पोषघ्न व्रत के पांच अतिचार
- ५६ द्वादशम यथासंविभाग व्रत के पांच अतिचार
- ५७ संलेखना के पांच अतिचार
- ५८ क- आनन्द द्वारा द्वादश विध श्रावक धर्म की स्वीकृति  
ख- सम्यक्त्व ग्रहण  
ग- सम्यक्त्व की ६ आगार  
घ- आनन्द का स्वगृह गमन  
ङ- स्वभार्या शिवानन्दा को द्वादशविध गृहस्यधर्म स्वीकार का  
के लिये प्रेरणा
- ५९ भ० महावीर के दर्शनार्थ शिवानन्दा का जाना
- ६० भ० महावीर की धर्मकथा
- ६१ शिवानन्द का व्रत ग्रहण करना
- ६२ क- आनन्द के सम्बन्ध में गौतम स्वामी की जिज्ञासा और-  
भ० महावीर द्वारा समाधान  
ख- आनन्द का सौधर्मकल्प के अरुणाभ विमान में उत्पन्न होना  
घ- वहाँ आनन्द की चार पत्नी की स्थिति होगी



- ६३ म० महावीर का विहार
- ६४ आनन्द का गानाजन एवं गृहधर्म की आराधना
- ६५ क गृहस्थधर्म आराधना के चौदह वर्ष  
ख पदरहव वर्ष में ज्येष्ठ पुत्र को गृहभार सौंप कर कोल्हाक सन्निवस में ज्ञातकुल की पीपलशाला में निवृत्त समय जीवन बिताने का संकल्प करना
- ६६ ६७ ज्येष्ठपुत्र द्वारा आनन्द के आदेश की स्वीकृति
- ६८ आनन्द का कोल्हाक सन्निवस की पीपलशाला में जाकर आराधना करना
- ६९ ७० आनन्द का पंडिता आराधना
- ७१ ७२ आनन्द की संलेखना
- ७३ आनन्द को अवधिमान अवधिज्ञान की सीमा
- ७४ भगवान महावीर का पुनरागमन
- ७५ गौतमस्वामी का संक्षिप्त परिचय
- ७६ ७७ गौतमस्वामी का भिक्षाय जाना
- ७८ ८० गणधर गौतम का आनन्द के समीप पहुंचना
- ८१ आनन्द ने अपने अवधिज्ञान की सूचना गौतम स्वामी को दी
- ८२ ८३ गौतम का संदेह
- ८४ ८६ क आनन्द के अवधिज्ञान के सम्बंध में म० महावीर द्वारा गौतम के संदेह का समाधान  
ख आनन्द से समायाचना के लिए गौतम को म० महावीर का आदेश
- ८७ क आनन्द का बीस वर्ष का धर्मनोपामक जीवन  
ख दुग्धारह उपासक प्रतिमा की आराधना  
ग आनन्द की अन्तिम आराधना एक मास की संलेखना  
घ सौधम कल्प के अक्षय विमान में आनन्द का उपनिवृत्त होना
- ८८ क आनन्द की आत्मा के सम्बंध में गौतम स्वामी की शिक्षा

ख- महावीर द्वारा समाधान—आनन्द की आत्मा का देवलोक से च्यवन, महाविदेह में जन्म और निर्वाण

## द्वितीय कामदेव अध्ययन

### प्रथम उद्देशक

- ८६ उत्थानिका
- ९० क- चम्पा नगरी, पूर्णभद्र चैत्य. जितगनु राजा  
ख- कामदेव गायापति और भद्राभार्या  
ग- कामदेव की सम्पत्ति के तीन विभाग. ६ व्रज  
घ- भ० महावीर का समवसरण. आनन्द के समान कामदेव का व्रत ग्रहण  
ङ- ज्येष्ठ पुत्र को कुटुम्ब का भार सीप कर कामदेव का घर्म आराधन
- ९१ मिथ्यादृष्टि देव का उपसर्ग
- ९२-९३ क- देवता द्वारा पिशाचरूप की सृष्टि. पिशाचरूप के प्रत्येक अङ्ग का वर्णन.  
ख- पिशाचरूपदेव द्वारा कामदेव की प्रथम वार परीक्षा
- ९४ कामदेव की दृढता
- ९५ पिशाचरूप देव द्वारा कामदेव की दूसरी वार परीक्षा
- ९६-९७ कामदेव की दृढता
- ९८ देव द्वारा हस्तिरूप की सृष्टि. हस्तिरूप का वर्णन. हस्ति रूप देव द्वारा तिसरी वार कामदेव की परीक्षा
- ९९-१०१ कामदेव की दृढता
- १०२-१०७ क- देव द्वारा सर्प-रूप की सृष्टि. सर्परूप का वर्णन.  
ख- सर्परूप देव द्वारा कामदेव की चौथी वार परीक्षा
- १०८ कामदेव की दृढता से प्रसन्न देव का स्वरूप दर्शन
- १०९ देव द्वारा कामदेव की प्रशंसा और क्षमा प्रार्थना

- ११० कामदेव द्वारा निरुपसंग प्रतिमा की पूर्ति  
 १११ भ० महावीर व० समवसरण  
 ११२ कामदेव का दणनाथ जाना  
 ११३ ११५ भ० महावीर द्वारा घमकथा कामदेव की प्रशंसा निग्रय  
 निग्रदिया को उपमग के समय कामदेव के समान हृद रहने  
 के लिए प्ररणा  
 ११६ भ० महावीर से कामदेव के कुछ (अज्ञात) प्रश्न  
 ११७ भ० महावीर का विहार  
 ११८ कामदेव द्वारा इग्यारह उपसक प्रतिमाओं की आराधना  
 ११९ कामदेव का बीस वर्ष का क्षमणोपामक जीवन एक माम  
 की संश्लेषना अरुणाभ विमान में उपपात चार पत्न्योपम  
 की स्थिति  
 १२० १२१ क कामदेव के सम्बन्ध में गौतम स्वामी जिज्ञासा  
 ल भ० महावीर का समाधान

## तृतीय चुलिनी पिता अध्ययन

### प्रथम उद्भाग

- १२२ उथानिका—वाराणसी नगरी कोष्ठक घैत्य जिनघनु  
 राजा  
 १२३ क चुलिनी पिता इयामा भार्वा सम्पति के तीन विभाग  
 भाठ वज  
 ल भ० महावीर का समवसरण द्वादश व्रत ग्रहण कुटुम्ब से  
 न विरहित आराधना  
 १२४ देव का उपमग चुलिनी पिता की दृष्टता ज्येष्ठपुत्र को  
 मारने की धमकी  
 १२८ १३० ज्येष्ठपुत्र के वध का दृश्य चुलिनी पिता की दृष्टता  
 १३१ १३४ देव द्वारा माता के प्राणहरण की धमकी से चुलिनी

पिता का विचलित होना

१३५-१४४

माता द्वारा चुलिनी पिता को आश्वासन

१४५

चुलिनी पिता द्वारा प्रायश्चित्त ग्रहण

१४६

चुलिनी पिता द्वारा उपासक प्रतिमाओं की आराधना

१४५

चुलिनी पिता की अन्तिम आराधना. एक मास की संलेखना. अरुणप्रभ विमान में देव होना. चार पल्य की स्थिति, च्यवन, महाविदेह में जन्म और निर्वाण

## चतुर्थ सुरादेव अध्ययन

### प्रथम उद्देशक

१४८ क- उत्थानिका—वाराणसी नगरी, कोष्ठक चैत्य, जितशत्रु राजा

ख- सुरादेव गाथापति. सम्पति के तीन भाग, छ ब्रज, घन्ना भार्या

ग- भ० महावीर का समवसरण. द्वादश व्रत ग्रहण. कुटुम्ब से निवृत्ति धर्माराधन

१४९ देव द्वारा सुरादेव की परीक्षा. तीनों पुत्रों के वध का दृश्य. सुरादेव की दृढता

१५०-१५३ देव द्वारा सोलह रोग उत्पन्न करने को धमकी से सुरादेव का विचलित होना

१५३ घन्ना भार्या द्वारा सुरादेव को सान्त्वना

१५४ सुरादेव का प्रायश्चित्त. परिवार से निवृत्ति, प्रतिमाओं की आराधना. संलेखना. अरुणकान्त विमान में देव होना. चार पल्य की स्थिति. च्यवन. महाविदेह में जन्म और निर्वाण

## पंचम चुल्लरातक अध्ययन

### प्रथम उद्देशक

- १५५ क- उत्थानिका—आनभिका नगरी मक्षवन उद्यान त्रिव  
शत्रु राजा
- ख- चुल्लरातक गाथापति सम्पति के तीन विभाग छ वज  
बट्टना भार्या
- ग- भ० महावीर का समवगरण व्रतग्रहण
- १५६-१५७ देव द्वारा चुल्लरातक की परीक्षा ज्येष्ठ पुत्र के वध का  
दृश्य चुल्लरातक की दृशा
- १५८-१६० समस्त सम्पति को बाहर फेंक देने की धमकी में चुल्ल-  
रातक का विचलित होना
- १६१ भार्या द्वारा मानवना, प्राणश्चित्त, परिवार से पृथक्त्व  
उपासक प्रतिमाशो की आराधना
- १६२ मलेखना अरुणज्येष्ठ विमान में उत्पन्न होना चार पत्य  
की स्थिति चयन महाविदेह में जन्म और निर्वाण

## षष्ठ कुण्डकोलिक अध्ययन

### प्रथम उद्देशक

- १६३ क- उत्थानिका—काम्पिल्यपुर नगर सहस्राश्वन उद्यान  
त्रिवशत्रु राजा
- ख- कुण्डकोलिक गाथापति पूषा भार्या सम्पति के तीन  
विभाग छ वज
- ग- भ० महावीर का समवमरण व्रतग्रहण
- १६४ अशोक वाटिका में धर्माराधना
- १६५ देव द्वारा कुण्डकोलिक की परीक्षा गीशान्व के नियति-

- १६६-१८६ वाद की प्रशंसा. भ० महावीर के पुरुषार्थवाद की अवज्ञा  
कुण्डकोलिक द्वारा नियतिवाद का परिहार. पुरुषार्थ का  
प्रतिपादन
- १७० परास्त देव का गमन
- १७१-१७२ भ० महावीर का समवसरण. कुण्डकोलिक का धर्मश्रवण
- १७३-१७४ भ० महावीर द्वारा निर्ग्रन्थियों के सामने कुण्डकोलिक की  
प्रशंसा
- १७५ कुण्डकोलिक का स्वस्थान गमन. भगवान महावीर का  
विहार
- १७६ चौदह वर्ष का कुण्डकोलिक का श्रमणोपासक जीवन.  
पंद्रहवें वर्ष में पारिवारिक मोह का त्याग. उपासक प्रति-  
माओं की आराधना. संलेखना. अक्षयज विमान में देव.  
चार पल्य की स्थिति. च्यवन. महाविदेह में जन्म. निर्वाण.

## सप्तम सद्दाल पुत्र अध्ययन

### प्रथम उद्देशक

- १७७ उत्थानिका—पोलासपुर नगर. महत्ताच्यवन. जितगन्धु  
राजा.
- १७८ आजीविकोपासक सद्दालपुत्र कुम्भकार.
- १७९ सम्पत्ति के तीन विभाग. एक व्रज.
- १८० अग्नि भार्या
- १८१ मिट्टी के वर्तनों को ५०० टुकानें
- १८२ सद्दालपुत्र द्वारा अशोक बाटिका में आजीविक धर्म की  
आराधना
- १८३-१८४ महामाहण की पर्युपासना के लिये एक देव की ओर से  
सद्दालपुत्र को प्रेरणा

- १८१ १८६ महापुत्र क मा म गोगानक क आने का संस्था पैदा  
हुआ किन्तु दूसरे दिन भ० महावीर पधार धर्म कथा
- १८७ भ० महावीर की बदना के निय महापुत्र का अपनी  
अगाध बाटिका म ममन
- १८८ महापुत्र की धमका मुनाना
- १८९ १९० म० महावीर द्वारा महापुत्र की पूर्वदिन क देवागमन का  
हृत्पान्ति मुनाना
- १९१ भ० महावीर म कृष्णकाराण में बुद्ध दिन के लिये  
गृहण की महापुत्र की बिनती
- १९२ १९७ क प्रथम उदाहरण से भगवान महावीर द्वारा नियतिवाद  
का मन्त्रन
- ख महापुत्र का बाध
- १९८-२०७ महापुत्र और अम्मिमिवा भार्या द्वारा दास्य बन रहण  
२०८ भ० महावीर का महापुत्राभवन से बिहार
- २०९ २१४ महापुत्र की पुन आजीविकोपायन बनाने के लिये  
गोगानक का प्रयत्न
- गोगानक क प्रति महापुत्र का मध्यवहार
- २१५ २१७ क भ० महावीर म विवाद करने के लिये महापुत्र की  
गोगानक की प्रणय
- ख भ० महावीर के सामर्थ्य और अपने अगामर्थ्य का गोगा  
नक दास्य मोदाहरण प्रतिपादन
- २१८ गोगानक का ममन
- २१९ क महापुत्र का चौदह वष का अमथोपायक जीवन  
ख प रहने वष से परिवार स विरक्ति
- २२० महापुत्र की एक देवद्वारा परीक्षा
- २२१ २२२ मय पुत्रो के वष का हृदय महापुत्र की दृढता

२२३-२२६ क- अग्निमित्रा के वध की धमकी से सद्दालपुत्र का विचलित होना

ख- अग्निमित्रा द्वारा सद्दालपुत्र को सान्त्वना

ग- सद्दालपुत्र की परिवार से विरक्ति. उपासक प्रतिमाओं की आराधना, संलेखना, अरुणभूत विमान में देव. चार पत्य की स्थिति. च्यवन, महाविदेह में जन्म और निर्वाण

## अष्टम महाशतक अध्ययन

### प्रथम उद्देशक

- २२७ उत्थानिका—राजगृह नगर, गुणशील चैत्य, श्रेणिक राजा
- २२८ महाशतक गाथापति, सम्पत्तिके तीन विभाग, आठ व्रज
- २२९ महाशतक के रेवती प्रमुख तेरह भार्यायें
- २३० क- आठ कोटी सुवर्णमुद्रा रेवती को पितृकुल से प्राप्त धन और आठ व्रज
- ख- शेष वारह भार्याओं में से प्रत्येक के पास पितृकुल से प्राप्त एक एक कोटी सुवर्ण मुद्रा और एक एक व्रज
- २३१-२३३ भ० महावीर का समवसरण, महाशतक का व्रत ग्रहण करना
- २३४-२३५ रेवती द्वारा छ सपत्नियों की शस्त्रप्रयोग और छ सपत्नियों की विपप्रयोग से हत्या
- २३६ रेवती की मद्य मांस आहार में आसक्ति
- २३७ राजगृह में अमारि [हिंसा निषेध] का डिण्डिम नाद
- २३८-२४० रेवती का पीहर से गायों के बछड़े मंगवाना तथा उनका मांस पकाकर खाना
- २४१ महाशतक का चौदह वर्ष का श्रमणोपासक जीवन, ज्येष्ठ पुत्र को गृहभार सौंपना, पोषकशाला में धर्म आराधना



- २४२-२४५ कामुकी रेवती का महागणक के प्रति कुम्भिन स्मरण  
महागणक की हत्या
- २४६-२४८ क- उपायक प्रतिमात्रा की आगपना  
ख महागणक को अथपि ज्ञान, मलमना
- २४९ २५१ क मद्रमन्त रेवती का पुन महागणक के मधीन पोषणाना  
पहुँचना तथा धर्म आगपना से बाधा पहुँचना
- ग कुड महागणक ने कहा—रेवती ! तूरी अलमरोग मे  
मृत्तु होगी तथा तू प्रथम नरक मे जायेगी
- २५२ अमभीन रेवती का प्रत्यामन
- २५३ रेवती का नरक ममन
- २५४ अ० महावीर का समवमरण
- २५५ २६० अ० महावीर ने महागणक क विद गौतम के माथ सदेश  
केवा कि रेवती को बह गये अद्रिय सत्य का प्रायश्चित्त  
करो
- २६१ महागणक का प्रायश्चित्त करना
- २६२ गौतम स्वामी का अ० महावीर के मधीन पहुँचना
- २६३ अ० महावीर का विहार
- २६४ क महागणक का बीस वर्ष का अमणोपासक जीवन  
ख महागणक का अरुणावनसक विमान म देव होना, चार  
पन्थ की स्थिति महाविदेह मे जन्म और निवारण

## नवम नदिनी पिता अध्ययन

### एक उद्देशक

- २६५ क उत्पानिका-धावस्ती नगरी शोष्ठक चैत्य, वित्तसु रात्रा  
ख नदिनीपिता गृहस्थ, सम्पत्ति के तीन विभाग, चार द्वय  
अश्विनी भार्या
- २६६ २६७ क अ० महावीर का समवमरण

रा- नंदिनीपिता का व्रतग्रहण

ग- भ० महावीर का विहार

२६८ क- पंद्रहवें वर्ष में ज्येष्ठ पुत्र को गृहभार सौंपना

स- उपासक प्रतिमाओं की आराधना

ग- बीस वर्ष का श्रमणोपासक जीवन

घ- अरुणगव विमान में उपपात, महाविदेह में जन्म और निर्वाण

## दशम सालिही पिता अध्ययन

### एक उद्देशक

२६९ क- उत्थानिका-श्रावस्तीनगरी, कोष्ठक चैत्य, जितशत्रु राजा  
ख- सालिही पिता गृहस्थ, सम्पत्ति के तीन विभाग, चार  
व्रज, फाल्गुनी भार्या

२७० क- भ० महावीर का समवसरण  
ख- सालिही पिता का द्वादश व्रत ग्रहण करना  
ग- पंद्रहवें वर्ष में ज्येष्ठपुत्र को गृहभार सौंपना  
घ- उपासक प्रतिमाओं की आराधना, संलेखना  
ङ- अरुणकील विमान में देव होना, चार पत्य की स्थिति,  
च्यवन, महाविदेह में जन्म और निर्वाण

२७१ क- दसों श्रावकों को पंद्रहवें वर्ष में विशिष्ट धर्म आरा-  
धना का संकल्प

ख- दसों श्रावकों का बीस वर्ष का श्रमणोपासक जीवन  
उपसंहार

२७२

२७३

क- एक ध्रुतस्कंध, दस अध्ययन, दस दिन में पठन

ख- दो दिन में इस अंग का पूर्ण स्वाध्याय

## अन्तकृद्दशाह्न में वर्णित तप

### मुचतावली-तप

१ से १५ तक तपश्चर्या मध्य म एक-एक उपवास

एक उपवास १६ की तपश्चर्या, एक उपवास

१५ से एक तक तपश्चर्या

प्रत्येक क मध्य म एक एक उपवास

एक परिपानी ११ मास १५ दिन

तपश्चर्या क ६ मास १६ दिन । पारणा क ५६ दिन

चार परिपानी ३ वष १० मास

तपश्चर्या के ३ मास २ मास ५ दिन । पारणा के २३६ दिन

### रत्नावली-तप

१ २ ३ उपवास ८ वेल १ से १६ तपश्चर्या ३४ वेल

८ वेल १ से १६ तपश्चर्या उपवास ३ २ १ ।

एक परिपानी ४७२ दिन । तपश्चर्या ३८४ दिन, पारणा ८८ दिन

चार परिपानी ५ वष दो मास २८ दिन

तपश्चर्या ४ मास ३ मास ६ दिन पारणा ३१२ दिन

### कनकावली-तप

१ २ ३ उपवास ८ तप १ म १६ तक तपश्चर्या

प्रत्येक के मध्य म एक-एक उपवास

३४ तप १६ म एक एक तपश्चर्या

प्रत्येक के मध्य म एक एक उपवास

८ तप ३ २ १ उपवास

एक परिपानी १ वष ५ मास ६२ दिन

तपश्चर्या १ वष २ मास १४ दिन पारणा के ८८ दिन

चार परिपानी ५ वष ६ मास २६ दिन, पारणा क ३१२ दिन

## धर्मकथानुयोगमय अन्तकृद्दशास्र

धुतास्रं	१
पशु	८
शशयज	१०
पशु	२३ तास्य २८ तास्य
उपलक्ष्य मृत पाठ	१०० अक्षुद्रुप् श्लोक प्रमाण
नश मृत	६१
गाना	११

### सप्त तप्तगिदा-तप

प्रथम सप्ताह में एक-एक दात-यावत्-सप्तम सप्ताह में सात-सात दात । तपश्चर्या के दिन ४६, दात मर्या १२६

### अष्ट अष्टमिका-तप

प्रथम अष्टाह में एक-एक दात-यावत्-अष्टम अष्टाह में ८-८ दात तपश्चर्या के ६४ दिन, दात मर्या २८८.

### नवम-नवमिका-तप

प्रथम नवाह में एक-एक दात आहार-यावत्-नवम नवाह में नौ-नौ दात आहार

तपश्चर्या के ८१ दिन, दात मर्या ४०५

### दशम-दशमिका-तप

प्रथम दशाह में एक एक दात आहार-यावत्-दशम दशाह में दस-दस दात आहार, तपश्चर्या १०० दिन, दात मर्या ५५०

### लघुसिंह निष्कीर्णित-तप

एक से ६ तक तपश्चर्या प्रायश्व म ८, ६ से एक तक तपश्चर्या एव परिपाटी—६ मास ७ दिन, तपश्चर्या ५ मास ४ दिन पारणे ३३ दिन चार परिपाटी दो वय २८ दिन तपश्चर्या १ मास ८ मास १६ दिन पारणे क १३० न्ति

### महार्णव निष्कीर्णित-तप

एक से १६ तक तपश्चर्या प्रायश्व म मध्य म पूव तप को पुनरा-  
हृति । १६ म एक तक तपश्चर्या, प्रायश्व क मध्य म पूव तप का  
पुनराहृति

एक परिपाटी १ वय ६ मास १७ दिन

तपश्चर्या १ वय ४ मास १७ न्ति पारणे क ६१ न्ति

चार परिपाटी ६ वय २ मास १२ न्ति

तपश्चर्या ४ वय, ६ मास ८ न्ति पारणे के २४४ दिन

### लघु सर्वतोभद्र तप

एक परिपाटी १०० न्ति । तपश्चर्या क ७५ दिन, पारणे के २५ न्ति

चारपाटी ४०० दिन । तपश्चर्या क ३०० दिन पारणे क १०० दिन

### महा सर्वतोभद्र तप

एक परिपाटी २४५ न्ति । तपश्चर्या १६६ न्ति पारणे क ४६ दिन

चार परिपाटी २ वय ८ मास २० दिन । तपश्चर्या २ साल ४ दिन

पारणे क १६६ दिन

### भद्रोत्तर तप

एक परिपाटी २०० दिन । तपश्चर्या १७५ दिन पारणे के २५ न्ति

चार परिपाटी २ वय २ मास २० न्ति । तपश्चर्या १ साल २१ मास

१० दिन पारणे के १०० दिन

### आयम्बित्त वर्धमान तप

१ से १०० तक आयम्बित्त, मध्य म एक एक उपवास

तपश्चर्या वान १४ वय, ३ मास, २० दिन

# अन्तकृद्दशाङ्ग विषय-सूची

एक श्रुतस्कंध

२ क- उत्थानिका

## प्रथम वर्ग

ग- दम अध्ययनों के नाम

### प्रथम गौतम अध्ययन

ग- उत्थानिका—द्वारिका वर्णन. रचतक पर्वत. नन्दनवन उद्यान.

सुरप्रिय यथायतन. अशोक वृक्ष

घ- कृष्ण वामुदेव वर्णन. द्वारिका वैभव

ङ- अंधकवृष्णी राजा. धारिणी रानी. गौतमकुमार का आठ कन्याओं के साथ पाणिग्रहण. दहेज.

च- भ० अरिपूनेमी का समवसरण. प्रवचन. गौतमकुमार को वैराग्य. दीक्षा. इग्यारह अंगों का अध्ययन. तपाराधन, भ० अरिपूनेमी का विहार

गौतमकुमार का पड़िमा आराधन

गुणरत्न तप का आराधन. अन्तिम साधना

अश्रुञ्जय पर्वत पर एक महिने की संलेखना

चारह वर्ष का श्रमण जीवन. निर्वाण.

२ क- वृष्णी पिता. धारिणी माता.

द्वितीय	समुद्र	अध्ययन
तृतीय	सागर	"
चतुर्थ	गंभीर	"
पंचम	स्तिमित	"

षष्ठ	अचल	अध्ययन
सप्तम	कपिल	"
अष्टम	अक्षोभ	"
नवम	प्रसेनजित्	"
दशम	विष्णु	"

### द्वितीय वर्ग

१ क- उत्थानिका वृष्णी पिता धारिणी माता

प्रथम	अक्षोभ	अध्ययन
द्वितीय	सगर	"
तृतीय	समुद्र	"
चतुर्थ	हिमवत	"
पंचम	अचल	"
षष्ठ	धरण	"
सप्तम	सूर्य	"
अष्टम	अभिचन्द्र	"

ख गुणरत्न तप सोलह वर्ष का धमण जीवन अंतिम आराधना  
शत्रुञ्जय पर्वत पर एक शास की सनेखना सिद्धपद की प्राप्ति

### तृतीय वर्ग

४ क उत्थानिका तेरह अध्ययनो के नाम

प्रथम अनोपश अध्ययन

ख उत्थानिका महिलापुर नगर श्रीवन्द उद्यान नाम मायापति  
सुलभा भार्या अनियश कुमार अध्ययन बत्तीस कथाओं से  
पाणिग्रहण दहेज





- इ देवकी महारानी का आनन्द्यान श्रीकृष्ण का आश्रयमान  
 च श्री कृष्ण का अष्टमभक्त तप हरिणगवधी देव का आराधन  
 ए हरिणगवधी का आश्रयमान  
 ज गजसुकुमार का जन्म नामकरण  
 झ चार देवता का पारगन सोमिल ब्राह्मण मोमथी ब्राह्मणी मोमा  
 पुत्री  
 ञ मोमा की कन्दुक शीडा  
 ट भ० अरिष्टनेमी का समवसरण प्रवचन  
 ठ श्रीकृष्ण के साथ गजसुकुमार का गमन  
 ण गजसुकुमार का वराण्य श्रीकृष्ण द्वारा गजसुकुमार का राधा  
 भिक्षेक  
 त गजसुकुमार की प्रव्रज्या एक रात्रि की महापत्निमा का आरा  
 धन सोमिलद्वारा उपसंग निर्वाण देवताओं द्वारा देहसंस्कार  
 केवलनाम तथा निर्वाण का महोत्सव  
 थ भगवत्पदना के लिये श्रीकृष्ण का नियमन मांग में एक हृद  
 पुष्प पर अनुकम्पा करना एवं सहयोग देना  
 द गजसुकुमार के लिए भगवान में प्रन्न भगवान का सपाथ  
 वचन भातुघालक की जिनासा भगवान द्वारा सकेत  
 ध विधोय व्याधित श्री कृष्ण का रथ्याओं में होकर स्वस्थान गमन  
 करते हुए सोमिल की देवता सोमिल की मृत्यु भूमि का परि  
 माजन

### नवम सुमुख अध्यायन

- ७ क उद्यानिका द्वारिका नगरी चलदेव राजा धारिणी रानी सुमुख  
 कुमार पचास कथाओं के साथ पाणिग्रहण रहेन  
 ख भ० अरिष्टनेमी का समवसरण प्रवचन सुमुख कुमार को  
 वराण्य प्रव्रज्या बीस वर्ष का साधुजीवन शत्रुञ्जय पर्वत पर  
 अंतिम साधना सिद्धपद की प्राप्ति

## दशम दुमुख अध्ययन

ग- एकादशम कूपदारक अध्ययन

द्वादशम दारुक अध्ययन

घ- वामुदेव राजा. धारिणी रानी

## त्रयोदशम अनावृष्टी अध्ययन

ङ- वामुदेव राजा. धारिणी रानी.

च- उपसंहार

## चतुर्थ वर्ग

= क- उत्थानिका-दस अध्ययनों के नाम

## प्रथम जालि अध्ययन

ख- उत्थानिका-द्वारिका नगरी. वामुदेव राजा. धारणी रानी. जाली कुमार. पचास कन्याओं के साथ विवाह. दहेज

ग- भगवान् अरिष्टनेमी का समवसरण. प्रवचन. जाली कुमार की वैराग्य. प्रव्रज्या. द्वादशाङ्गों का अध्ययन. सोलह वर्ष का साधु जीवन. शत्रुञ्जय पर्वत पर समाधिभरण. निर्वाण की प्राप्ति.

घ- द्वितीय मयाली अध्ययन

तृतीय उपयाली ”

चतुर्थ पुरिससेन ”

पंचम वारिसेन ”

षष्ठ प्रद्युम्न ”

ङ- श्री कृष्ण पिता. रुक्मिणी माता.

## सप्तम शाम्ब अध्ययन

च- श्रीकृष्ण पिता. जांबवती माता

- ॐ देवकी महारानी का आनन्द्यान श्रीकृष्ण का आभामन  
 व श्री कृष्ण का अष्टमभक्त तप हरिणगक्षेपी देव का आराधन  
 ६ हरिणगक्षेपी का अविनाशन  
 ७ गजमुकुमार का जन्म नामकरण  
 ८ चार वेदों का पारंगत सामिल ब्राह्मण मोक्षशी ब्राह्मणी मोक्षा  
 पुत्री  
 ९ मोक्षा की कन्दुक शीला  
 १० अरिष्टनेमी का समवमरण प्रवचन  
 ११ श्रीकृष्ण के साथ गजमुकुमार का गमन  
 १२ गजमुकुमार का वैराग्य श्रीकृष्ण द्वारा गजमुकुमार का रात्र्या  
 भिक्षेक  
 १३ गज मुकुमार की प्रव्रज्या एक रात्रि की महापद्धिमा का आरा  
 धन मोक्षिद्वारा उपमग निर्वाण देवताओं द्वारा देहमस्कार  
 कवलज्ञान तथा निर्वाण का महात्मव  
 १४ भगवत्त्वदना के निमित्त श्रीकृष्ण का निवेदन माग से एक वृद्ध  
 पुरुष पर अनुकम्पा करना एवं सहयोग देना  
 १५ गजमुकुमार के लिए भगवान् से प्रार्थना भगवान् का यथाय  
 कथन भानुघातक की जिज्ञासा भगवान् द्वारा सकेत  
 १६ नियोग व्यवहिन श्री कृष्ण का रथ्यात्री म होकर स्वस्थान गमन  
 करते हुए मोक्षिल की देखना मोक्षिल की पूज्य भूमि का परि  
 मोजन

### नवमं सूमुखं अध्ययनं

- ७ क उषानिका द्वारिका नगरी बलदेव राजा धारिणी रानी सुमुख  
 कुमार पद्माक्ष कायात्री के माथ पाणिग्रहण दहेज  
 ८ १० अरिष्टनेमी का समवमरण भवचन सुमुख कुमार की  
 वैराग्य प्रव्रज्या बीस वर्ष का साधुजीवन गजुञ्जय पर्वत पर  
 अनिम साधना सिद्धपद की प्राप्ति

दशम दुमुल्ल अध्ययन

ग- एकादशम कूपदारक अध्ययन

द्वादशम दारुक अध्ययन

घ- वासुदेव राजा. धारिणी रानी

त्रयोदशम अनाघृष्टी अध्ययन

ङ- वसुदेव राजा. धारिणी रानी.

च- उपसंहार

चतुर्थ वर्ग

८ क- उत्थानिका-दस अध्ययनों के नाम

प्रथम जालि अध्ययन

ख- उत्थानिका-द्वारिका नगरी. वसुदेव राजा. धारणी रानी. जानी कुमार. पचास कन्याओं के साथ विवाह. दहेज

ग- भगवान अरिष्टनेमी का समवसरण. प्रवचन. जाली कुमार को वैराग्य. प्रव्रज्या. द्वादशाङ्गों का अध्ययन. सोलह वर्ष का साधु जीवन. शत्रुञ्जय पर्वत पर समाधिमरण. निर्वाण की प्राप्ति.

घ- द्वितीय मयाली अध्ययन

तृतीय उपयाली ”

चतुर्थ पुरिससेन ”

पंचम वारिसेन ”

षष्ठ प्रद्युम्न ”

ङ- श्री कृष्ण पिता. रुक्मिणी माता.

सप्तम शाम्ब अध्ययन

च- श्रीकृष्ण पिता. जांबवती माता

## अष्टम अतिरुद्ध अध्ययन

छ प्रद्युम्न पिता वैदर्भी माता

नवम सत्यनेमी अध्ययन

दशम इडनमी ,

ज समुद्र विजय पिता सिवा माता

भ- उपसंहार

## पचम वर्ग

६ क उत्थानिका-द्वारिका नगरी

## प्रथम पद्यावती अध्ययन

ख उत्थानिका-द्वारिका नगरी श्री कृष्ण वामुदेव पद्यावती रानी

ग भ० अरिष्टनेमी का समवसरण श्री कृष्ण का सपरिकर दशनायक  
गमन प्रवचन

घ भ० अरिष्टनेमी से द्वारिका के विनाश के सम्बन्ध में श्री कृष्ण  
का प्रश्न

ङ- भगवान का उत्तर

च श्रीकृष्ण की चिन्ता प्रब्रज्याभिलाषा

छ भ० अरिष्टनेमी द्वारा प्रब्रज्या निषेध का कारण बचन

ज भ० अरिष्टनेमी से श्रीकृष्ण का स्वयं के सम्बन्ध में प्रश्न

झ भ० अरिष्टनेमी का उत्तर श्रीकृष्ण की चिन्ता

ञ भ० अरिष्टनेमी की भविष्यवाणी से श्री कृष्ण की प्रमानता  
(जम्बूद्वीप भरत आशामी उन्मथिनी पुण्ड्र जनपद गनद्वारा  
नगरी अमम अगिहन्त)

ट श्रीकृष्ण का द्वारिका के विनाश के सम्बन्ध में तथा प्रजाजनो को  
प्रब्रजित होने क विषे प्रस्था देने प्रब्रजित होने वाला के परि  
वारो को सुरक्षण देने और दीनाभिलाषिया का दीना महो  
स्वयं करने के सम्बन्ध में घोषणा करने का आदेश

ठ- पद्मावती देवी की यक्षिणी आर्या के समीप प्रव्रज्या. इग्यारह अंगो का अध्ययन. तपश्चर्या का आराधन. बीस वर्ष का श्रमणी जीवन-एक महिने की सलेखना. शिवपद की प्राप्ति

द्वितीय गोरी अध्ययन

तृतीय गंधारी ”

चतुर्थ लक्षणा ”

पंचम सुसोमा ”

षष्ठ जांबवती ”

सप्तम सत्यभामा ”

अष्टम रुक्मिणी ”

नवम मूलश्री अध्ययन

११ क- उत्थानिका, द्वारिका नगरी, रैवतक पर्वत, नन्दनवन, कृष्ण वासुदेव, जांबवती देवी, शम्भु कुमार, मूलश्री भार्या, भ०वरिष्ठ नेमी का समवसरण-यावत्-सिद्धगति

ख- दशम मूलदत्ता अध्ययन

१२ षष्ठ वर्ग

क- उत्थानिका, मोलह अध्ययनो के नाम

ख- प्रथम मकार्दे अध्ययन

उत्थानिका, राजगृह, गुणशील चैत्य, श्रेणिक राजा, मकार्दे गाथापति

ग- भ० महावीर का समवसरण. प्रवचन. मकार्दे गाथापति को वैराग्य. ज्येष्ठ पुत्र को गृहभार नांप कर दीक्षित होना, इग्यारह अंगों का अध्ययन. गुणरत्न तप की आराधना. सोलह वर्ष का साधु जीवन, विपुल गिरिपर समाधि मरण, शिवपद

## द्वितीय किकिम अध्ययन

## तृतीय मोगर पाणी अध्ययन

- १३ क उद्यानिका राजगृह गुणगीन चैत्य शणिक राजा चेलना देवी  
 ल अजु न मानी वधुमती भार्या पुष्पायाम मोगरपाणि यक्ष का  
 यशायनन सहम पल का मुग्गर  
 ग ललिता गोष्ठी  
 घ अजु न का वधुमती के साथ पुष्पचयन क लिये जाना  
 ङ ललिता गोष्ठी का अजुभ सकल्प  
 च वधुमति भार्या सहित अजु नमानी द्वारा यक्ष पूजा  
 छ ललिता गोष्ठी का अजु न और वधुमती के साथ दुष्यवहार  
 ज यक्ष से अजु न की प्रायना व धन मे मुक्ति  
 ञ यक्षाविष्ट अजु न द्वारा ललिता गोष्ठी और वधुमती के प्राणा  
 का सार  
 ट अजु न के उपसग से बचने के लिये राजगृह की सुरक्षा व्यवस्था  
 ड अजु न द्वारा ६ माम पयत ६ पुत्रपो और एक स्त्री का प्रति  
 णिन महार  
 ठ भ० महावीर का समवसरण  
 ड भगवान की वदना के लिये श्रमणोपासक मुदशन के जाने का  
 दृष्ट मकल्प  
 ङ म ग मे अजु न का उपसग उपसग निवृत्ति पयन्त मुदशन का  
 कायोत्सग उपसग निवृत्ति  
 ण मुदशन और अजु न का स थ साथ भगवद वदना क लिये जाना  
 धम प्रवण  
 त अजु न का वरग्य प्रत्रयाग्रहण यावज्जीवन छट्टु छट्टु करने का  
 अभिग्रह  
 थ अजु न मुनि की भिन्नाचर्या आश्लेष परीपह राजगृह मे  
 भ० महावीर का विहार

द- अर्जुन मुनि की ६ मास की श्रमण पर्याय, पन्द्रह दिन की संले-  
पना, सिद्धपद की प्राप्ति

चतुर्थ काश्यप अध्ययन

१४ क- सोलह वर्ष की श्रमण पर्याय, विपुलगिरि पर समाधिमरण

पंचम क्षेमक अध्ययन

ग- काकंदी नगरी, विपुलगिरि पर समाधिमरण

ग- षष्ठ धृतिधर अध्ययन

सप्तम कैलाश अध्ययन

घ- साकेत नगर, वारह वर्ष का श्रमण पर्याय, विपुलगिरि पर समाधि-  
मरण, शिव पद

ङ- अष्टम हरिचंदन अध्ययन

च- नवम वारत्तक अध्ययन

राजगृह, वारह वर्ष का श्रमण पर्याय, विपुलगिरि पर समाधि-  
मरण, सिद्धपद

दशम सुदर्शन अध्ययन

छ- वाणिज्य ग्राम, द्वादशलाश चैत्य, पांच वर्ष का निर्ग्रथ जीवन  
विपुलगिरि पर समाधिमरण

ज- एकादशम पूर्णभद्र अध्ययन

झ- द्वादशम सुमनभद्र अध्ययन

ञ- त्रयोदशम सुप्रतिष्ठ अध्ययन

थावस्ति नगरी, सत्तावीस वर्ष का श्रमण-जीवन, विपुलगिरि  
पर निर्वाण

ट- चतुर्दशम मेघ अध्ययन

राजगृह-यावत्-विपुलगिरि पर निर्वाण



### ८ पंचदशम अतिमुक्त अध्ययन

पातागपुरनगर धीवन उद्यान विजय राजा श्रीन्दी अतिमुक्त कुमार भ० महावीर का समवसरण गाणम गणधर का भिगा क निण जाना इन् स्थान में अतिमुक्त कुमार का बच्चा के साथ स्नेहना गौतम गणधर का देखना भिगा के विषय अन्त गुरु भ ब्रह्मना श्रीन्दी का भिगा अना गौतम गणधर के साथ अतिमुक्त का भ० महावीर व समीप जाना यम श्रवण करना प्रह्वित हान क निय आना गन्ध करना बराग्य की परीक्षा अतिमुक्त का गन्धाभिवेक अतिमुक्तका दीक्षा मनोभव इत्यारह अर्थों का अध्ययन गुणगहन तप की आराधना विपुल गिरि पर निवास

### ९ षोडश अलक्ष अध्ययन

वाराणसी नगरी काम मनावन च य अलक्ष राजा भ० महावीर का समवसरण प्रवचन अलक्ष राजा को बराग्य गेष्पवृष व गन्ध दत्त दीक्षा अना इत्यारह अर्थों का अध्ययन यावन विपुलगिरि पर निवास

## सप्तम वर्ग

### प्रथम न १ अध्ययन

१ क उत्थ निहा र जगु गुणगोल च य अणिक राजा नगरानी भ० महावीर का समवसरण प्रवचन ननादेवी को बराग्य प्रवचन इत्यारह अर्थों का अध्ययन भीम वध का समीप जीवन सिद्ध गति

ख	द्वितीय	नन्मती	अध्ययन
	तृतीय	नदीतरा	
	चतुर्थ	नादधणिका	

पंचम	महका	अध्ययन
षष्ठ	सुमरता	”
सप्तम	महामरता	”
अष्टम	मरुदेवा	”
नवम	भद्रा	”
दशम	शुभद्रा	”
एकादशम	सुजाता	”
द्वादशम	सुमना	”
त्रयोदशम	भूतदिन्ना	”

### अष्टम वर्ग

१६ क- उत्थानिका—दश अध्ययनों के नाम

#### प्रथम काली अध्ययन

ख- उत्थानिका, चंपा नगरी पूर्णभद्र चैत्य, कोणिक राजा, काली देवी माता. भ० महावीर का समवसरण. प्रवचन. काली देवी को वैराग्य. प्रव्रज्या. इत्यागह अंगों का अध्ययन, आर्या चन्दन वाला से आज्ञा प्राप्त करके रत्नावली तप की आराधना करना. आठ वर्ष का श्रमणी जीवन. एक महिने की सलेखना, सिद्ध पद की प्राप्ति

#### द्वितीय तुकाली अध्ययन

१७ कनकावली तप की आराधना

#### तृतीय महाकाली अध्ययन

१८ क्षुद्रसिंह निष्क्रीडित तप की आराधना

#### चतुर्थ कृष्णा अध्ययन

१९ महासिंह निष्क्रीडित तप की आराधना

पंचम सृष्टृष्णा अध्ययन

- २० गण गणमिका भिषु प्रतिमा की आराधना  
 अष्ट अष्टमिका भिषु प्रतिमा की आराधना  
 नव नवमिका भिषु प्रतिमा की आराधना  
 दश दशमिका भिषु प्रतिमा की आराधना

षष्ठ महाकृष्णा अध्ययन

- २१ लुप्त गरुडोभङ्ग प्रतिमा की आराधना

सप्तम धीरकृष्णा अध्ययन

- २२ महा मवनोभङ्ग प्रतिमा की आराधना

अष्टम रामकृष्णा अध्ययन

- २३ अज्ञानर प्रतिमा की आराधना

नवम पितृमेनकृष्णा अध्ययन

- २४ मुक्तावली नद की आराधना

दशम महागेनकृष्णा अध्ययन

- २५ आनविन बधमान नद की आराधना मन्त्र वर्ण का धमना  
 अक्षय एक मास की मन्त्रना मिष्टपद

- २६ उपमन्त्र एक धुन एकध आठ वर्ण आठ दिनों में पठन  
 आठ वर्णों का उद्देशन

णमो तित्थयराणं

## धर्मकथानुयोगमय अन्तुत्तरोपपातिकदशाङ्ग

श्रुतस्कन्ध	१
वर्ग	३
अध्ययन	३३
उद्देशक	१०
पद	४६ लाख ८ हजार
उपलब्ध पाठ	१६२अनुष्टुप् श्लोक प्रमाण
गद्य सूत्र	६
पद्य	२

किं सक्का काउं जे, जं णेच्छह ओसहं मुहा पाउं ।  
जिणवयणं गुणमहुरं, विरेयणं सव्वदुक्खाणं ॥  
पंचेव य उज्झिऊणं, पंचेव य रक्खिऊण भावेण ।  
कम्मरयविप्पमुक्का, सिद्धिवरमणुत्तरं जंति ॥

---

तएण से सेणिय राया समणस्स भगवो महावीरस्स भतिए  
धम्म सोच्चा नित्तम्म समण भगव महावीर वदइ नमसइ  
वदित्ता नमस्सिता एव वयासी—

प्रश्न-इमासि ण भने । इदभूइ पामोक्खाण चोइसण्ह समण  
साहस्सीण कयरे अणगारे महादुक्करकारए सेव ?

उत्तर-एव खनु सणिवा । इमासि इदभूइ-पामोक्खाण चोइसण्ह  
समणसाहस्सीण धम्मो अणगारे महादुक्करकारए सेव  
महा विज्जरयराए सेव ।

---

# अनुत्तरोपपातिक दशाङ्ग विषय-सूची

## एक श्रुतस्कंध प्रथम वर्ग

३ क- उत्थानिका-दश अध्ययनों के नाम

### प्रथम जालि अध्ययन

स- उत्थानिका-राजगृह, गुणशील चैत्य, श्रेणिक राजा, धारिणी रानी, जाली कुमार, आठ कन्याओं के साथ पाणी ग्रहण, दहेज.

ग- भ० महावीर का समवत्तरण, प्रवचन, जानिकुमार को वैराग्य, प्रव्रज्या- इग्यारह अंगों का अध्ययन, गुणरत्न तप की आराधना, सोलह वर्ष का श्रमण जीवन, विपुल गिरि पर समाधि-मरण, विजय विमान में उत्पत्ति, निर्वाण कायोत्सर्ग, आचार भांडों का लाना.

घ- जालि की उत्पत्ति के सम्बन्ध में भ० गौतम की जिज्ञासा

ङ- भ० महावीर का उत्तर, वत्तीस सागर की स्थिति, व्यवन, महा-विदेह में जन्म और सिद्धपद की प्राप्ति.

### द्वितीय मयालि अध्ययन

च- १६ वर्ष का श्रमण जीवन, वैजयन्त विमान में उत्पत्ति

### तृतीय उवयालि अध्ययन

१६ वर्ष का श्रमण जीवन, जयन्त विमान में उत्पत्ति

### चतुर्थ पुरिससेण अध्ययन

१६ वर्ष का श्रमण जीवन, अपराजित विमान में उत्पत्ति

### पचम धारिसेण अध्ययन

१६ वर्ष का श्रमण जीवन सवार्यमिद्ध विमान मे उत्पत्ति

### षष्ठ दीर्घदत्त अध्ययन

छ- बारह वर्ष का श्रमण पर्याय सवार्यमिद्ध विमान मे उत्पत्ति

### सप्तम लष्टव्रत अध्ययन

बारह वर्ष का श्रमण पर्याय अपराजित विमान मे उत्पत्ति

### अष्टम वेहल्ल अध्ययन

चेलना माता बारह वर्ष का श्रमण पर्याय अश्वत् विमान मे उत्पत्ति

### नवम वेहास अध्ययन

चेलना माता, पाच वर्ष का श्रमण पर्याय वेजयत्त विमान मे उत्पत्ति

### दशम अभय अध्ययन

नदा माता पाच वर्ष का श्रमण जीवन विजय विमान मे उत्पत्ति

## द्वितीय वर्ग

२ क उत्थानिका-तेरह अध्ययना के नाम

### प्रथम दीर्घसेन अध्ययन

### द्वितीय महासेन अध्ययन

उत्थानिका राजशूद्र गुणशीलर्चत्य श्रेणिक राजा धारिणी देवी दीर्घसेन कुमार भ० महावीर का समवसरण प्रबचन दीर्घसेन कुमार की वैराग्य प्रवृत्त्या मोलह वर्ष की श्रमण पर्याय एक मास की सलेचना दावन् विजय विमान मे उत्पत्ति

### तृतीय सष्टदत्त अध्ययन

### चतुर्थ गूढदत्त "

विजय विमान मे उत्पत्ति

पंचम शृद्धदंत अध्ययन  
 षष्ठ हल्ल अध्ययन  
 जयंत विमान में उत्पत्ति  
 सप्तम द्रुम अध्ययन  
 अष्टम द्रुमसेन अध्ययन  
 अपराजित विमान में उत्पत्ति  
 नवम महाद्रुमसेन अध्ययन  
 दशम सिंह अध्ययन  
 एकादशम सिंहसेन अध्ययन  
 द्वादशम महासिद्धसेन अध्ययन  
 त्रयोदशम पुण्यसेन अध्ययन  
 सर्वार्थसिद्ध विमान में उत्पत्ति  
 तृतीय वर्ग

३ क- दस अध्ययनों के नाम

प्रथम धन्य अध्ययन

ख- उत्थानिका. काकंदी नगरी. सहस्राश्रवन उद्यान. जितशत्रु राजा. भद्रा सार्थवाही. धन्यपुत्र. वत्तीस कन्याओं से पाणिग्रहण. दहेज.

ग- भगवान् महावीर का समवसरण. धन्य कुमार को वैराग्य-दीक्षा महोत्सव, यावज्जीवन छद्म तप. पारणे में सर्वथा नीरस अन्न लेने की प्रतिज्ञा

घ- काकंदी से विहार. ग्यारह अंगों का अध्ययन

ङ- धन्य अणगार के तपोमय देह का (पैर से लेकर मस्तक तक) वर्णन.

च- राजगृह. गुणशील चैत्य. भगवान् महावीर का समवसरण. श्रेणिक राजा का आगमन. प्रवचन.



- ख श्रेणिक की चौदह हजार श्रमणा मे अति उत्कृष्ट तपश्चर्चा करने वाले श्रमण के जानने की जिज्ञासा भ० महावीर द्वारा घन्य अणगार का नाम निर्देश घन्य अणगार को श्रेणिक का वदन
- ग श्रणिक का स्वस्थान गमन
- ५ क स्वविरा व साथ घन्य अणगार की विपुल गिरि पर अन्तिम आराधना एक मास की मनेषना समाधिमरण नव मास का श्रमण जीवन सर्वाभिद्ध विमान मे उत्पत्ति
- ख- स्वविरा द्वारा घन्य अणगार के आचार भाड का लाना
- ग च्यवन महा विदेह मे जन्म सिद्ध पद की प्राप्ति उपसहार
- द्वितीय सुनक्षत्र अध्ययन**
- ६ क काशी श्रमण पर्याय बहुत वर्षों का
- ख- तृतीय ऋषिदास अध्ययन**
- चतुर्थ पेल्लक अध्ययन**
- राजगृह बहुत वर्षों का श्रमण पर्याय
- ग पंचम रामपुत्र अध्ययन**
- षष्ठ चन्द्र अध्ययन**
- साकेल बहुत वर्षों का श्रमण पर्याय
- ख- सप्तम पृष्ठिम अध्ययन**
- अष्टम पैटालपुत्र अध्ययन**
- वणिज्य ग्राम श्रमण पर्याय बहुत वर्षों का
- ड नवम पोद्विल अध्ययन**
- हस्तिनापुर श्रमण पर्याय बहुत वर्षों का
- च- दशम वेहल्ल अध्ययन**
- राजगृह पिना द्वारा दीया महोत्सव ६ मास की श्रमण पर्याय
- ख उपसहार

पगो जिणाणं

## चरणानुयोगमय प्रश्नव्याकरणांग

श्रुतम्कंध	२
अध्ययन	१०
उद्देशक	१०
पद	६२ त्वाय १६ हजार
उपलब्ध पाठ	२३०० लोक परिमाण
गद्य सूत्र	३०
पद्य सूत्र	६

---

आध्वर श्रुतम्कंध	संवर श्रुतम्कंध
अध्ययन ५	अध्ययन ५
उद्देशक ५	अध्ययन ५
सूत्र २०	सूत्र १०
गाथा ३	गाथा ६

---

---

एसा भगवती अहिंसा  
जा सा मीयाण विव सरण  
पक्खीण विव गमण  
तिसियाण विव सलिलं  
खुहियाण विव असण  
समुद्धमज्जे व पोतवहण  
चउप्पयाण व आसमपय  
दुहटिठ्याण च ओसहिवल  
अडवीमज्जे विसत्थगमण  
एत्तो विसिट्ठतरिका  
अहिंसा सब्बभूयखेमकरी—

---

# प्रश्नव्याकरणांग विषय-सूची

## प्रथम आश्रव श्रुतस्कंध

### प्रथम प्राणातिपात अध्ययन एक उद्देशक

- १ क- उत्पत्तिकालिका
- ख- नमस्कार मन्त्र
- ग- आश्रव और मवर का वर्णन करने की प्रतिज्ञा
- घ- पाच प्रकार का आश्रव
- ङ- प्राणातिपात के पाच विभाग
- च- प्राणातिपात के स्वरूप पञ्चायक वाचीस पर्यायवाची
- २ प्राणातिपात के तीस नाम
- ३ क- जिन जीवों की हिंसा की जाति है
- ख- जनचर जीव
- ग- स्थलचर जीव
- घ- उरपुर जीव
- ङ- भुजपुर जीव
- च- खेचर जीव
- छ- द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय
- ज- हिंसा के प्रयोजन
- झ- स्थावर जीवों की हिंसा
- ञ- पृथ्वीकाय की हिंसा के प्रयोजन
- ट- अपकायकी हिंसा के प्रयोजन
- ठ- तेजस्काय की " " "
- ड- वायुकाय की " " "

- ङ वनस्पतिकाय की हिंसा के प्रयोजन  
 ञ हिंसक की मानसिक स्थिति  
 त हिंसा के कुछ और प्रयोजन  
 ५ क हिंसक बच जानिया  
 ख म्लच्छ जातिथा  
 ग हिंसा का फल  
 घ हिंसको की नरक गति  
 ङ नरक का वचन  
 च विविध प्रकार की नरक वेदना  
 छ नरक के पश्चात हिंसको की तिस्र गति  
 ज त्रिच गति मे विविध प्रकार की वेदना  
 झ नरक मे निकलने के पश्चात हिंसको को मनुष्य गति  
 ञ मनुष्य गति मे विविध प्रकार की वेदना  
 ट प्रथम अधम द्वार का उपसहार

### द्वितीय मूषावाद अध्ययन एक उद्देशक

- ५ मूषावादा का स्वरूप  
 ६ मूषावादा का तीस नाम  
 ७ क विविध प्रकार के व्यापारो के लिए मूषावादा  
 ख कुदस्तो की मिट्टी के लिये मूषावाद  
 ग दुर्गचारो के सेवन क लिये  
 घ चार प्रकार के प्रमुख मूषावादा  
 ङ प्रणया क लिए मूषावादा  
 च नष्ट विजय के लिये मूषावादा  
 छ हिंसा के लिये मूषावाद  
 ज विविध शौचिक संस्कारो के लिये मूषावाद  
 झ भावद भाषा का प्रयोग ही मूषावाद है

- ब- स्वार्थसिद्धि के लिये मृपावाद  
 ब क- मृपावाद का इह लौकिक फल  
 ख- मृपावादी की दुर्गतियां  
 ग- मृपावाद का परिचय  
 घ- द्वितीय अघर्मद्वार का उपसंहार

### तृतीय अदत्तादान अध्ययन एक उद्देशक

- ६ अदत्तादान का परिचय  
 १० अदत्तादान के तीस नाम  
 ११ क- चोरी करने वाले राजा आदि  
 ख- संसार समुद्र का रूपक  
 १२ क- चोरी का फल, विविध प्रकार के इह लौकिक दण्ड  
 ख- नरक तिर्यच और मनुष्य भव में अनेक भयंकर वेदनायें  
 ग- तृतीय अघर्म द्वार का उपसंहार

### चतुर्थ अन्नह्यचर्य अध्ययन एक उद्देशक

- १३ अन्नह्यचर्य का स्वरूप  
 १४ अन्नह्यचर्य के तीन नाम  
 १५ क- अत्यधिक मैथुनसेवियों का वर्णन  
 ख- देवताओं का वर्णन  
 ग- चक्रवर्ती का वर्णन—उत्तम पुरुषों के लक्षण  
 घ- बलदेव वामुदेव का वर्णन  
 ङ- माण्डनिक राजाओं का वर्णन  
 च- देवकुरु-उत्तरकुरु के मनुष्यों का वर्णन  
 १६ क- मैथुन का फल  
 ख- चतुर्थ अघर्म द्वार का उपसंहार

### पचम परिग्रह अध्ययन एक उद्देशक

- १७ परिग्रह का स्वरूप  
 १८ परिग्रह के तीस नाम  
 १९ परिग्रह सषड् दृष्टिवाते  
 २० क परिग्रह का फल  
 ख पचम अयम द्वार का उपमहार

### द्वितीय सवर श्रुतस्कंध

#### प्रथम अहिंसा अध्ययन एक उद्देशक

- २१ क पाच सवर कथन प्रतिज्ञा  
 ख पाच सवर के नाम  
 ग सव प्रथम अहिंसा के सम्बन्ध म कथन  
 घ पाच सवरो का सन्निपत्त परिचय  
 ङ अहिंसा के ६० नाम  
 २२ क अहिंसा की कुछ उपमाय  
 ख अहिंसा के आराधक  
 ग अहिंसा के उपासको के कुछ क्तव्य  
 घ अहिंसा का स्वरूप  
 २३ क अहिंसा महावन की पाच भावनाय  
 ख अहिंसा के साधक का अप्रमत्त जीवन  
 ग प्रथम सवर द्वार का उपसहार

#### द्वितीय सत्य अध्ययन एक उद्देशक

- २४ क सत्य का स्वरूप  
 ख सत्य का प्रभाव  
 ग दस प्रकार का सत्य  
 घ सत्य की कुछ उपमायें

छ- अवगमनव्य गत्य

च- प्रशस्त गत्य

वारह प्रकार की भाषा, मोलह प्रकार के वचन,

२५ क- गत्य महाव्रत की पांच भावना

अगत्य बोलने के पांच कारण

ख- द्वितीय सवर का उपसहार

### तृतीय श्रस्तेय अध्ययन एक उद्देशक

२६ क- दत्त अनुज्ञात का स्वरूप

ख- दत्त अनुज्ञात व्रत का विरोधक

ग- दत्त अनुज्ञात व्रत के आरोधक

घ- इन महाव्रत की पांच भावना

छ- तृतीय सवर का उपसहार

### चतुर्थ ब्रह्मचर्य अध्ययन एक उद्देशक

२७ क- ब्रह्मचर्य का स्वरूप

ख- ब्रह्मचर्य की कुछ उपमायें

ग- ब्रह्मचर्य का प्रभाव

घ- ब्रह्मचारी के अकर्तव्य, अकृत्य

छ- ब्रह्मचारी के कर्तव्य, कृत्य

च- ब्रह्मचारी महाव्रत की पांच भावना

छ- चतुर्थ संवर द्वार का उपसहार

### पंचम अपरिग्रह अध्ययन एक उद्देशक

२८ क- परिग्रह का स्वरूप

ख- एक से लेकर तीस बोल का संकलन

२९ क- संवरवृक्ष का रूपक

ख- परिग्रह विरत के अकल्प्य कार्य



- ग- परिग्रह विरत के कल्प्य कार्य  
 घ शुद्ध निर्दोष भिक्षा लेने का विधान  
 ङ- औषधादि के संग्रह का तथा समीप में रखने का नियम  
 च- धर्म साधना में उपयोगी उपकरण रखने का विधान  
 छ पाँच समिति तीन गुप्ति के नाम  
 झ- अपरिग्रह की कुछ उपमाय  
 ञ अपरिग्रही के जीवन की महिमा  
 ट अपरिग्रह महाव्रत की ५ भावना  
 ठ पंचम सवर द्वार का उपसंहार  
 ड पांच सवरो की प्रशस्ति  
 २० क प्रश्नव्याकरण अथ का सम्बन्ध परिचय  
 ख प्रश्नव्याकरण अथ की पठनविधि

---

सच्च लोगम्मि सारमूय

---

णमो वायणारिमाणं

## धर्मकथानुयोगमय विपाकश्रुताङ्ग

श्रुतस्कंध	२
अध्ययन	२०
उद्देशक	२०
पद	१ करोड़ ८४ लाख ३२ हजार
उपलब्ध पाठ	१२१६ अनुपुष्प श्लोक प्रमाण
गद्य सूत्र	३४
पद्य	+

दुग्ध विपाक श्रुतस्कंध	सुग्ध विपाक श्रुतस्कंध
अध्ययन १०	अध्ययन १०
उद्देशक १०	उद्देशक १०
गद्य ३२	गद्य २
पद्य —	पद्य —

से वेमि

जे य अतीना जे य पडुपन्ना, जे य आगमिस्मा  
भगवता तं मध्ये वि वि एवमाइक्खनि, एव भासति, एव  
पणवति एव परवेति

सध्ये पाणा, मध्ये भूया, मध्ये जीवा, सध्ये मत्ता  
न हनव्वा, न अज्जावेयव्वा, न परितगव्वा, न परता-  
वेयव्वा, न उद्देयव्वा एम धम्मे सुद्धे णिए मासए  
समेच्च लाय खेयन्नेहि पवेइए ।

चिट्ठ कुरेहि कम्मेहि चिट्ठ परिविचिट्ठइ ।

अचिट्ठ कुरेहि कम्मेहि णो चिट्ठ परिविचिट्ठइ ।

दुचिण्णा कम्मा दुचिण्णा फला भवति ।

सुचिण्णा कम्मा सुचिण्णा फला भवति ।

अप्पा कत्ता विक्ता य दुहाण य भुहाण य ।

अप्पा मित्तममित्त च, दुप्पट्ठि य सुप्पट्ठि य ॥

आरभज दुक्खमिणति णच्चा माइ पमाई पुणरेइ गम्भ ।

उवेहमाण मह रुवेमु अबू माराभिसकी भरणा पमुच्चइ ॥

दाने पुण णिहे काममणुन्न असमित्तदुक्खे दुक्खी दुक्खा-  
णभव अणुपगियट्ठ ति तिदमि ।

## विपाकश्रुतांग विषय-सूची

१ जंबूस्वामी का प्रश्न

### प्रथम दुख-विपाक श्रुतस्कंध

२ क- उत्थानिका. श्रुतस्कंधों के नाम. दस अध्ययनों के नाम

#### प्रथम मृगापुत्र अध्ययन

[क्रूर शासन का फल]

ख- उत्थानिका. मृगग्राम नगर. चन्दन पादप उद्यान. सुधर्मयक्ष का यक्षायतन. विजय राजा. मृगादेवी. मृगापुत्र

ग- सर्वाङ्गोपाङ्ग विकल मृगापुत्र को तलघर में रखना

३ क- एक जन्मांध भिखारी और उसका सचमुच-साथी

ख- भ० महावीर का समवसरण. प्रवचन. विजय राजा का दर्शनार्थ जाना

ग- अपने साथी सहित जन्मान्ध भिक्षुक का धर्म परिपद में जाना

४ क- जन्मान्ध के सम्बन्ध में भ० गौतम की जिज्ञासा

ख- भ० महावीर ने सर्वाङ्गोपाङ्गविकल मृगापुत्र का परिचय दिया

ग- मृगापुत्र को देखने के लिये भ० गौतम गणधर का जाना

घ- मृगापुत्र को तथा उसके आहार परिणमन को देखना

ङ- कर्मफल का चिन्तन. भ० महावीर के समक्ष मृगापुत्र का वर्णन

५ क- मृगापुत्र के पूर्वभव का वर्णन, जंबूद्वीप, भरत, शतद्वार नगर घनपती राजा

ख- विजय वर्द्धमान खेड़ [एक धूलकोट-जागीरदार का राज्य]

ग- इकाई राष्ट्रकूट [एक जागीरदार] का क्रूर शासन

- घ इकाई के शरीर में सोयह रोगों की उत्पत्ति चिकित्सा के विवेक से गये प्रयत्नों की असफलता सृष्टि नरक में उत्पत्ति
- ङ- नरकायु जोग के पश्चात् सृष्टि देवी की कुम्भी में उत्पन्न होना
- च सृष्टि देवी का अपमानित होना और गम गिराने का प्रयत्न करना
- ६ क गम में भस्मक रोग का होना
- ख जन्म के पश्चात् गिणु की उकरडी पर डालने के लिए दासी को कहना
- ग दासी की सृष्टिदेवी के आशु के सम्बन्ध में विद्रव राजा से निवेदन
- घ सृष्टिदेवी की भूमिधर में रहने की व्यवस्था
- ७ क सृष्टिदेवी का पुणायु भाग के पश्चात् सिद्ध होना
- ख सृष्टिदेवी का भवधमन
- ग सुप्रतिष्ठ नगर में एक मन्त्रदूर के घर जन्म लेना तथा गया ल की मिट्टी के नीचे दब कर मरना
- घ पुनः सुप्रतिष्ठ नगर में एक सेठ के घर जन्म लेना
- ङ सुवाक्य में स्वदिरो में समस्यवण धराय्य प्रवृत्ति धमन पर्याय समाधि-मरण सौम्य कल्प में उत्पत्ति
- च ध्वजन महाविष्णु में मुक्ति

### द्वितीय उच्चतमक अध्ययन

[गोपाम धमन मन्त्रान और वश्यागमन का कल्प]

- ८ क उत्पत्तिका वाणिज्य धमन दुर्निभाम उद्योग सुधम वश का धनामन विद्रव विष राजा सीधेवी
- ख कामध्वजा गणिका [७२ कला ६४ गणिका कला २६ विद्येयता २६ रजिहता ३२ बनीकरव ६ अंग १५ देगी भाषा विनातर]
- ९ क विद्रवविष सौम्यवाह सुमन भाषा उच्चतमक वच

- ख- भ० महावीर का समवसरण. प्रवचन  
 ग- गौतम गणधर का भिक्षाचर्या के लिये जाना, राजमार्ग में उज्जिन्तक के वध का दृश्य देखना
- १० क- भ० महावीर से उज्जिन्तक के वध का वृत्तान्त कहना  
 ख- पूर्वभव जिज्ञासा. जंबूद्वीप. भरत. हस्तिनापुर. मुनंद राजा. नगर में एक गौशाला  
 ग- भीम कूटग्राह-गुप्तचर. उत्पला भार्या का गोमांस भक्षण का दोहद. भीम द्वारा दोहद की पूर्ति
- ११ क- पुत्र जन्म. शिशु रोदन से गोवर्ग का प्रसित होना. गोत्रास नाम देना  
 ख- भीम की मृत्यु. मुनंद राजा द्वारा भीम के स्थान पर गोत्रास की नियुक्ति  
 ग- गोत्रास का जीवन पर्यन्त गोमांस भक्षण. मृत्यु. नरक गमन
- १२ क- मृतवत्सा सुभद्रा के कुक्षि में गोत्रास की उत्पत्ति. जन्म. उकरड़ी पर डालना. पुनः ग्रहण करना. उज्जिन्तक नाम देना. कतिपय संस्कारों के नाम, पांच धार्यों से पालन  
 ख- विजय मित्र सार्यंवाह की व्यापार के निमित्त लवण समुद्र की यात्रा [चार प्रकार के विक्रय योग्य पदार्थ] पीत भंग. विजय मित्र सार्यंवाह की मृत्यु. सुभद्रा सार्यंवाही का विलाप. सुभद्रा की मृत्यु
- १३ क- उज्जिन्तक का सर्वस्वहरण. गृह से निष्कासन  
 ख- सप्त व्यसन सेवन, कामध्वजा से काम क्रीड़ा  
 ग- श्रीदेवी के योनिमूल की वेदना. राजा द्वारा काम ध्वजा की उपपत्ति के रूप में नियुक्ति  
 घ- कामध्वजा के घर में उज्जिन्तक का गुप्तरूप से प्रवेश  
 ङ- उज्जिन्तक को कामध्वजा के साथ देखकर राजा द्वारा मृत्यु

१४ क उन्मिलक की पुर्वायु मृत्यु के पश्चात् भयभ्रमण मणिका कुम्भ में उत्पत्ति नष्टक बनाना, पुर्वायु भोग के पश्चात् नरक गति अनक भव

ख चपा मे सेठ क घर जम सुवावय मे स्थविरो से धनधरय वैराग्य दीया धमण-जीवन सधाधिमरण मोक्षम कल्प म उत्पत्ति च्यवन महाविष्णु म मुक्ति

### तृतीय अध्याय अध्ययन

[ घरडा क व्यापार का तथा मत्तपान पत्र ]

१५ क उत्पानिका पुरिमनाथ नगर अमोय दशन उद्यान अमोय दानपक्ष का मन्थायनन महाबल राजा

ख साला अन्वी पाच सौ चोर का अधिपति विजय' स्कन्द की भार्या

१६ क विजय घोर क अह्वय

ख म० महावीर का समवमरण गौतम गणधर का भिन्ना घर्षा के निधे जाना राजमान अडारट चौराहा पर अभ्यसन का वध दमना

१७ क अभ्यसेन पूर्वमेव की शिवासा जवूडीप भरत पुरिमनाथ नगर उन्मोदिन राजा अण्डा का व्यापारी निन्नक

ख अनेक प्रकार के अण्डा का व्यापार

ग अण्डे और मद्य का उपभोता निन्नक की मृत्यु नरक मे उत्पत्ति

१८ क निन्नक की आरमा का स्कन्द की कुणि मे आगमन

ख स्कन्दकी का मोहद पुत्र जम अभ्यसन नाम रखना बाल्यकाल

१९ क आठ कमाया से पाणि ग्रहण भोगमय जीवन

ख विजय की मृत्यु अभ्यसेन का अभियेक

ग अभ्यसेन के उपद्रवों से बन्त जनता की महारणराजा से पुकार

- घ- अभग्नसेन को वन्दि बनाने का आदेश  
 छ- अभग्नसेन के अपने गुप्तचरों से राजाज्ञा की जानकारी  
 च- अटवी की सीमा पर अभग्नसेन की राजपुरुषों से मुठभेड़  
 छ- परास्त राजपुरुषों द्वारा राजा के सामने अभग्नसेन की  
 अजेयता का वर्णन

- २० क- महबल राजा द्वारा कूटागारशाला का निर्माण  
 ख- अभग्नसेन को छल से वन्दि बनाना. तथा सूली का आदेश  
 देना. अभग्नसेन की पुर्णायु. मृत्यु. नरकगति  
 ग- अभग्नसेन का भवभ्रमण  
 घ- वाराणसी में सेठ के घर जन्म. स्थविरो से धर्मश्रवण. वैराग्य.  
 दीक्षा. संयमाराधन. समधिमरण. महाविदेह से मुक्ति

### चतुर्थ शकट अध्यायन

[मांसविक्रय और व्यभिचार का फल]

- २१ क- उत्थानिका. साहजनी नगरी. देवरमण उद्यान. अमोघयक्ष का  
 यक्षायतन. महचंद्र राजा. सुसेण अमात्य. सुदर्शणा गणिका.  
 सुभद्र सार्थवाह. भद्रा भार्या. शंकर पुत्र  
 ख- भ० महावीर का समवसरण. धर्म कथा  
 ग- गौतम गणधर का गौचरी जाना. राजमार्ग के मध्य में नरवध  
 का दृश्य देखना  
 घ- भ० महावीर से वध्यपुरुष का पूर्वभव पूछना  
 छ- पूर्वभव. अंबुद्वीप. भरत. छगलपुर. सीहगिरि राजा. छणिक  
 नाम का छागलिक कसाई. [बहुत बड़ा मांस विक्रेता]  
 च- मद्य मांस के आहारी क्षणिक की पूर्णायु. मृत्यु. नरक गति  
 छ- क्षणिक की आत्मा का भवभ्रमण  
 २२ क- छणिक की आत्मा का मृतवत्सा भद्रा की कुक्षि से जन्म, शिशु  
 को शकट के नीचे रखना और शकट नाम रखना  
 ख- सुभद्रसार्थवाह की लवणसमुद्र यात्रा, जहाज का टूटना, सुभद्र  
 का मरना, भद्रा का भी मरना



- ग गकट का मदस्व छीन लेना और घर से निहाल देना  
 घ गकट का सुगना से स्नेह  
 ङ मुनेश का सुगना के साथ गकट को देखना  
 च मन्वन् राजा की सम्मति में गकट का प्रत्यक्ष स्थापति क माय  
 आनिपन का दण्ड देना पूर्णाङ्ग सृष्टु नरक गति  
 ३ क गकट की आत्मा का भव भ्रमण  
 ख गकट और सुगना की आत्मा का राजपू के मातृग कुल में  
 बहून भाई हाना दोना का पति-पत्नी के रूप में जीवन बिगाना  
 ग गकट का दुष्पचर बनना सृष्टु के पञ्चान भव भ्रमण  
 घ वाराणसी में सेठ के घर जन्म-व्यावृ-महाविष्णु से मोक्ष प्राप्ति  
 करना उपमहार

### पंचम बहस्पति अध्यायन

[यज्ञ द्विधा तथा परस्त्री गमन का फल]

- ४ क उष्यान्विका कोणाम्बो नगरी चणोत्तरण उद्यान देवेन भद्र धन  
 गनानीक राजा स्यावती देवी उष्यायन कुमार पद्यावती देवी  
 [उष्यायन की पत्नी] चार वेद में प्रवीण क्षोभन्त पुरोहित  
 समुत्ता भार्या वृहस्पतिन्त पृथ  
 ख भगवान् मन्वीर का समवसरण गोपम गणधर का मिषाचरी  
 के लिये जाना राजमान में प्राण दण्ड का हरण देखना  
 ग पूर्वभव वृष्ट्या जम्बूद्वीप भरत सवतोमन् नगर त्रिनगु राजा  
 महेश्वर दत्त पुरोहित [चार वेद का ज्ञाता]  
 घ त्रिनगु राजा की समृद्धि के लिये गान्धि होम करना  
 क महेश्वर दत्त की पूर्णाङ्ग सृष्टु नरक गति  
 ख मन्वन् दत्त की आत्मा का वृहस्पति दत्त के रूप में जन्म  
 ग उष्यायन राजकुमार के साथ वृहस्पतिन्त की मन्त्री  
 घ गनानीक की सृष्टु उष्यायन का राज्याभिषेक

ङ- वृहस्पतिदत्त का पद्मावती के साथ अनुचित सम्बन्ध. प्राणदण्ड

च- वृहस्पतिदत्त की आत्मा का भवभ्रमण

छ- हस्तिनापुर में सेठ के घर जन्म-यावत्-महाविदेह से निर्वाण

पण्ड नन्दिवर्धन अध्ययन

[कठोर दण्ड और पितृवध संकल्प का फल]

२६ क- उत्पानिका. मयुरानगरी. भण्डीर उद्यान. मुद्रशान यक्ष. श्री दाम  
राजा. वन्धु श्री भार्या. नन्दीवर्धन कुमार. मुवन्धु अमात्य.  
वह्मिन्न पुत्र. चित्र अलंकारिक [नापित]

ख- भ० महावीर का समवसरण. धर्म प्रवचन. गीतम गणघर की  
भिक्षाचर्या. राजमार्ग में देह दाह दण्ड का दृश्य

ग- पूर्वभव पृच्छा. जम्बूद्वीप. भरत. सीहपुर. सीहरथ राजा. दुर्योधन  
प्रमुख कारागृहाधीक्षक

घ- वन्दियों को दिये जाने वाले विविध प्रकार के कठोर दण्ड

ङ- पुर्णायु. मृत्यु नरक गमन

२७ क- दुर्योधन की आत्मा का नन्दिसेन के रूप में जन्म

ख- युवा नन्दिसेन की राज्यलिप्सा

ग- चित्र अलंकारिक ने राजा को नन्दिसेन के पङ्क्यत्र की जान-  
कारी दी

ङ- नन्दिसेन वध की राजाज्ञा. पूर्णायु. मृत्यु. पश्चात् नरक गमन

च- नन्दिसेन की आत्मा का भवभ्रमण

छ- हस्तिनापुर में सेठ के घर जन्म. बोधि की प्राप्ति. आगार धर्म  
की आराधना. समाधि मरण. सौधर्म कल्प में उत्पत्ति. महा  
विदेह से निर्वाण पद की प्राप्ति

सप्तम उम्बरदत्त अध्ययन

[ग्राम चिन्मिया का फल]

- षिदार्थ राजा भाग्यरत्ना मार्धवाहू मगदत्ता भार्या उभरदत्ता  
 स पुत्र म० महावीर का ममयमरण, गौतम गणधर का भिक्षाचर्या  
 के लिये नगर के पूज्य द्वार से प्रवेश  
 ग एक कोठी पुरुष की देवना  
 घ पश्चिम दक्षिण और उत्तर द्वार से यमना प्रवेश करने पर उत्ती  
 कोठी पुरुष की देवना  
 छ पूर्वमवृच्छा अम्बुद्वीप, भरत, विजयपुर नगर कनकरथ  
 राजा धनवन्तरी देव  
 च अष्टांग आयुर्वेद के नाम  
 द चिकित्सा के लिये अनेक प्रकार के मांस का प्रयोग  
 ज स्वयं धनवन्तरी द्वारा मद्य माद्य आहार का आश्रित पूर्वक  
 प्रयोग पूर्वसिद्ध सृष्ट्यु नरक गमन  
 झ सदान प्राप्ति के लिये सृष्टयत्ना भगदत्ता मार्धवाहिनी द्वारा  
 यम पूजा तथा वडावा करने का सकल्प  
 ञ माधवाहू की आज्ञा से विविध यम पूजा करना  
 ट धनवन्तरी की आत्मा का मार्धवाही की कुणि में आगमन  
 ट- माधवाही का दोहड़ और उसकी पुनि  
 ड पुत्र जन्म यम के चडावा यम कुणा से प्राप्त पुत्र का यम के  
 अनुसार नाम  
 ड माग्यरत्ता और गगदत्ता की सृष्ट्यु उम्बरदत्ता की घर से निहान  
 देना उम्बरदत्ता के शरीर में सोनहू रोगों की उत्पत्ति सोनहू  
 रोगों के नाम  
 न उम्बरदत्ता की पुनायु सृष्ट्यु भवभयणी  
 त हस्तिनापुर में मरु के घर जन्म सम्पत्त्व की प्राप्ति धारक  
 यम की अराधना मोक्षमें से उत्पत्ति, ध्यवन महाविदेह से  
 शक्ति उपपहार ।

## अष्टम नन्दिवर्धन अध्ययन

[मच्छीमार के व्यवसाय का फल]

- २६ क- उत्थानिका, मूर्यपुर, मूर्यावंतमक उद्यान. मूर्यदत्त राजा  
न-मच्छीमारो का मोहल्ला, समुद्रदत्त मच्छीमार, नमुद्रदत्त भार्या  
मूर्यदत्त पुत्र
- ग- भ० महावीर का समवसरण. गौतम गणधर का भिक्षाचर्या से  
लौटते समय मच्छीमारों के मोहल्ले के समीप एक रग्ग मच्छी-  
मार को रक्त वमन करते हुए देखना
- घ- पूर्वभव पृच्छा. जम्बूद्वीप. भरत. नन्दिपुर मित्रराजा. महाराजा  
का सिरिया रसोईया
- ङ- राजा व राजपरिवार के लिये विविध प्रकार के मांस पकाना  
स्वयं सिरिया रसोईये की मांसाहार में आसक्ति
- च- पूर्णायु, मृत्यु, नरक गमन
- छ- मृतवत्मा समुद्रदत्त का संतान प्राप्ति के लिये यक्ष पूजा का  
संकल्प-यावत्-मूर्यदत्त नाम रखना
- ज- समुद्रदत्त की मृत्यु. मूर्यदत्त का मच्छीमारों का प्रभुत्व बनना  
यमुना नदी आदि में मच्छीयाँ पकड़ना
- झ- मच्छीयाँ पकड़ने के अनेक साधनों का उल्लेख
- ञ- मच्छीयाँ मुझाना, मच्छीयाँ के बने हुए विविध भोज्य पदार्थ
- ट- मूर्यदत्त के गले में मत्स्य कंटक लगना. चिकित्सा के लिये अनेक  
प्रयत्न
- ठ- वेदना व्यथित मूर्यदत्त की पूर्णायु, मृत्यु, नरक गति. भवभ्रमण
- ड- हस्तिनापुर में सेठ के घर में जन्म. बोधि की प्राप्ति. देश विरती  
की आराधना. सौधर्म कल्प में उत्पत्ति. च्यवन. महाविदेह से  
मोक्ष. उपसंहार

## नवम बृहस्पतिदत्त अध्ययन

[ईर्ष्या द्वेष का फल]

- ३० क उत्पानिका रोहीडक नगर पृथ्वी अवनसक उद्यान. घरण यक्ष  
 वैश्रमण दत्त राजा श्रीदेवी पुष्यनदी कुमार दत्त भाषापति  
 कृष्ण श्री भार्या देवदत्ता पुत्री
- ख म० महावीर का समवसरण गौतम गणघर को भिन्ना चर्चा  
 राजमाग मे एक स्त्री के मूलो दण्ड का दृश्य देखना
- ग पूर्व भव पृच्छा जम्बूद्वीप भरत सुप्रतिष्ठ नगर महसेन राजा  
 अत पुर मे धारिणी आति एक हजार रात्रितो सीहमेन राज  
 कुमार पति सौ राज्य कथाओ स पाविषहण दहेज
- घ महमन राजा की मृत्यु
- ङ सिहसेन की एक श्यामा रानि मे अत्यामक्ति अय से विरक्ति-  
 च श्यामादेवी के प्रति अय रानिको का दुर्भाव
- छ प्राणरक्षा के लिये श्यामा का सिहसेन से निवदन सिहसेन का  
 आदवासन
- ज कूटागार शान्ता का निर्माण ४६६ रात्रियो को कूटागार गाला  
 म बन्द करके जला देना
- झ सिहसेन की पूर्णायु मयु नरक गति
- झ कृष्ण श्री की कुक्षि मे सिहसेन की आत्मा का आगमन पुत्रि  
 रूप मे जन्म देवदत्ता नाम रखना
- ट पुष्यनदी राजकुमार के लिये वैश्रमपादत्त राजा द्वारा देवदत्ता  
 की शाधना देवदत्ता से पुष्यनदी का विवाह
- ठ वैश्रमण राजा की मृत्यु पुष्यनदी की मातृभक्ति
- ड देवदत्ता द्वारा श्री देवी क प्राणो का सहार पुष्यनदी का देव  
 दत्ता के लिये मूनी भेदन का अ देश पूर्णायु मरण भव भ्रमण
- ड गगपुर मे देवदत्ता की आत्मा का धरती के शू मे ज म श्रमणो

पासक धर्म की आराधना, समाधिमरण, मोक्षमं कल्प में उत्पत्ति महाविदेह से मुक्ति । उपसंहार

दशम उम्बरदत्त अध्ययन

[वैश्या वृत्ति का फल]

- ३२ क- उत्थानिका—वट्टमानपुर, विजय वर्धमान उद्यान, माणिभद्र यक्ष विजयमित्र राजा
- ख- धनदेव सार्धवाह, प्रियंगु भार्या, अजूपुत्री
- ग- भ० महावीर का समोसरण. भ० गौतम की भिक्षाक्षर्या, अशोक वाटिका में एक अतिरुग्ण स्त्री का करुण क्रंदन करते हुए देखना
- घ- पूर्वभव की जिज्ञासा. जम्बूद्वीप. भरत. इन्द्रपुर. इन्द्रदत्त राजा पृथ्वी श्री गणिका
- ङ- पृथ्वी श्री गणिका की पूर्णायु. मृत्यु. भवभ्रमण
- च- पृथ्वी श्री की आत्मा का अंजूश्री के रूप में जन्म
- छ- वैश्रमण राजा का अंजूश्री से विवाह. अंजूश्री के योनीमूल के वेदना. चिकित्सा की असफलता. अशोक वाटिका में अंजूश्री का रोदन
- ज- अंजूश्री का भवभ्रमण. सर्वतोभद्र नगर में सेठ के घर जन्म सम्यक्त्व की प्राप्ति. प्रयज्या. सौधर्म में उत्पत्ति. च्यवन. महा-विदेह से मुक्ति । प्रथम दुःख विपाक श्रुत स्कंध का उपसंहार

द्वितीय सुखविपाक श्रुतस्कंध

३३ क- उत्थानिका. दस अध्ययनों के नाम

प्रथम सुवाहु अध्ययन

- ख- उत्थानिका. हस्तिशीर्ष नगर. पुष्प करण्ड उद्यान. कृतवन माल प्रिय यक्ष का यज्ञायतन. अदीन शत्रुराजा. अन्तःपुर में धारिणी देवी आदि एक हजार रानियां
- ग- धारिणी कासिह स्वप्न. सुवाहु कुमार का जन्म. संवर्धन. अध्ययन

- घ पांच सौ ब्याओ से पाणिग्रहण
- ङ भ० महावीर का समवसरण सुबाहु कुमार का धर्मया ध्वज गृहस्थधर्म आराधन की प्रतिज्ञा
- च सुबाहु के पूर्वभव की विज्ञाता जम्बूद्वीप भरत हस्तिनापुर मुमुक्षु गाथापनी सहस्राश्विन पाचसो मुनियो के साथ स्थविरो का आगमन
- छ महा तपस्वी मुत्त अचगार को शुद्ध आहार दान पाच त्रिशा की वर्षा
- ज भ० महावीर का समवसरण
- झ सुबाहु कुमार का अष्टमतप पीपल प्रत्रया लेने का सकल
- ञ भ० महावीर के समीप प्रत्रया ग्रहण भ० महावीर का बिहार ८ दोरह अगो का जल्पना तपश्चर्या धमण जीवन एक मान की संवेचना सोचम में उत्पत्ति
- ट प्रत्येक दव भव क पश्चान् प्र वैक मनुष्य भव में प्रत्रया ग्रहण करना
- ठ कर्म मर्वायमिद्ध म उत्पत्ति ध्ययम महाविदेह में निव साधना उपमत्तर ।

### द्वितीय भद्रतदि अध्ययन

- ३४ क उत्पत्तिना ज्ञानमपुर स्तूपकरणकर उद्यान पांच वर्ष घनावह राजा मरकतना श्री मदनजी कुमार सेव सुबाहु क समान उपमत्तर विनाय पूर्वभक्त महाविह पुण्डरिकाक्षी नगरी युगचान् नाथकर का दान देना

### तृतीय मुजाल अध्ययन

- ३५ क उत्पत्तिना वीरपुर मनोरम उद्यान वीर वृष्ण मित्र राजा श्री देवी मुजाल कुमार का श्री प्रमुख पांच सौ ब्याओ से पाणि ग्रहण

ख- पूर्वभव—इपुकार नगर, ऋषभदत्त गाथापति, पुष्पदत्त अणगार को दान शेष सुवाहु के समान

### चतुर्थ सुवासव अध्ययन

३६ क- उत्थानिका, विजयपुर, नन्दन वन, अशोक यक्ष, वासव दत्त राजा कृष्णा देवी, सुवासव कुमार, भद्रा प्रमुख पाँच सौ कन्याओं से पाणि ग्रहण

ख- पूर्व भव-कौशाम्बी नगरी, धनपाल राजा, वैश्रमण भद्र अणगार को दान, शेष सुवाहु के समान

### पचम जिनदास अध्ययन

३७ क- उत्थानिका, सौगधिका नगरी, नीलाशोक उद्यान, सुकाल यक्ष अप्रतिहत राजा, सुकन्या देवी, महचन्द कुमार, अरहदत्ता भार्या जिनदाम पुत्र

ख- पूर्वभव, मध्यमिका नगरी, मेघरथ राजा, सुधर्म अणगार को दान, शेष सुवाहु के समान

### षष्ठ वैश्रमण अध्ययन.

३८ क- उत्थानिका, कनकपुर, श्वेताशोक उद्यान, वीर भद्र यक्ष, प्रिय चन्द्र राजा, सुभद्रादेवी, वैश्रमण कुमार, श्रीदेवी प्रमुख पाँचसौ कन्याओं के साथ पाणि ग्रहण, धनपति पुत्र

ख- पूर्वभव—मणिवत्ता नगरी, मित्र राजा, संभूतविजय अणगार को दान, शेष-सुवाहु के समान

### सप्तम महब्वल अध्ययन

३९ क- उत्थानिका, महापुर, रक्ताशोक उद्यान, रक्तपात यक्ष, वल राजा, सुभद्रा देवी, महावल कुमार, रक्तवती प्रमुख ५००



ख पूर्वभव— मणिपुर नागदत्त गाथापति इन्द्रपुर अजगार का दान  
नेप मुबाहु के समान

### अष्टम भद्रनदी अध्ययन

४० क उत्थानिका सुघोष नगर देवरमण उद्यान थीरसेन यक्ष अजुन  
राजा सप्तवती देवी भद्रनदी कुमार श्रीदेवी प्रमुख पाँच सौ  
कन्याओं से विवाह

ख पूर्वभव महाघोष नगर घमघोष गाथापती घमसिंह अजगार  
को दान नेप मुबाहु के समान

### नवम महचद अध्ययन

४१ क उत्थानिका चपानगरी पूणभद्र उद्यान पूणभद्र यक्ष दत्तराजा  
रक्तवती देवी महचद कुमार श्रीकाता प्रमुख पाँचसौ कन्याओं  
के साथ पानी घृण

ख पूर्वभव— तिमिन्धी नगरी जितसत्रु राजा घमवीर अजगार  
का दान नेप-मुबाहु के समान

### दशम वरदत्त अध्ययन

४२ क उत्थानिका साजेन नगर उत्तरकुह दशान पाममिक यक्ष  
मित्रनदी राजा श्रीकाता देवी वरदत्त कुमार वरसेना प्रमुख  
पाँच सौ कन्याओं से विवाह

ख पूर्वभव गतद्वार नगर विमलदाहन राजा घमरुचि अजगार  
को दान नेप मुबाहु के समान । उपसहार

## कथानुयोग प्रधान औपपातिक उपास

सपयम	१
टहं मय	१
टयवस्थ पाठ	११६७ श्मोक प्रसाद
सद्य मूय	४३
पद्य मूय	१२

### मोहविजय पंचक

जहा मयप मूयण, हताण हम्मह गते ।  
एव कम्मणि हम्मंति, मोहणित्ते मयं मण् ॥  
मेणापतिमि निहते, जहा मेणा पणम्मयति ।  
एवं कम्मणि नम्मंति, मोहणित्ते मयं मण् ॥  
भूमहोणी जहाअग्गी, मीयति मे निरिधणे ।  
एवं कम्मणि मीयति, मोहणित्ते मयं मण् ॥  
मुक्क-भूले जहा सुवणे, विवमाणे न रोहति ।  
एवं कम्मण रोहति, मोहणित्ते मयं मण् ॥  
जहा द्दुदामं धीजार्णं, न जायंति पुणंनूरा ।  
कम्मधीणसु द्दुदामेसु, न जायंति भयंकुरा ॥

## उपपात-सूची

- १ हिमक का उपपात-नरक मे ।
- २ असयत का उपपात-व्यतर देवो मे
- ३ मुक्ति की कामना से आत्मघात करनेवालो का उपपात-  
व्यतर देवो मे ।
- ४ भद्र प्रकृतिवासे मनुष्यो का उपापन-व्यतर देवो मे ।
- ५ विधवा या विरहिणी स्त्रियो का उपपात-व्यतर देवो मे ।
- ६ मिताहार करने वालो का उपपात-व्यतर देवो मे ।
- ७ धानप्रस्थ तापसो का उपपात-उत्कृष्ट ज्योतिषो देवो मे ।
- ८ वार्षिक श्रमणो का उपपात-उत्कृष्ट सौधर्मकल्प मे ।
- ९ परिव्राजको का उपपात-उत्कृष्ट ब्रह्मकल्प मे ।
- १० प्रयनीना (अविनयी जनो) का उपपात-किल्बिषिक  
देवो मे ।
- ११ देशविरत सती पचेन्द्रिय तिर्यचो का उपपात-उत्कृष्ट  
सहस्रात्मकल्प मे ।
- १२ भाषीविक मतानुयायियो का उपपात-उत्कृष्ट अच्युत-  
कल्प मे ।
- १३ अभिमानी (आत्मोत्तरेण) श्रमणो का उपपात-उत्कृष्ट  
अच्युतकल्प मे ।
- १४ तिन्हो का उपपात-उत्कृष्ट प्रवेयक देवो मे ।
- १५ अल्पारभी गृहस्था का उपपात-उत्कृष्ट अच्युत कल्प मे ।
- १६ अतारभी श्रमण का उन्नत-नवार्थनिष्ठविमान या सिद्ध  
गति ।
- १७ सर्वकाम विरत श्रमण का उपपात-सिद्ध गति ।

# औपपातिक उपांग विषय सूची

## चम्पा नगरी वर्णन

- |  |                          |
|--|--------------------------|
| १ क- कृषि भूमि                         | नागरिक पशु-पक्षी         |
| ग- मुर्गे और गांठ                      | माद्य पदार्थ             |
| ग- टैप. जी. चायन                       | पालतू पशु                |
| घ- गायें. भंमे. भेड़ें                 | सार्वजनिक स्थान          |
| ङ- गुन्दर चैत्य, वैश्यालय.             | अपराधी वृत्तिवाले        |
| च- उल्लोचिक (रिश्कत लेने वाले)         |                          |
| छ- नट आदि १३ कमाजीचि                   | सार्वजनिक मंरगाह         |
| ज- आनाम उद्यान                         | सार्वजनिक जलाशय          |
| झ- भगड़ आदि ४                          | नागरिक सुरक्षा के साधन   |
| ञ- परिषदा. चक्रआदि से द्न्दकीन पर्यन्त | क्रय विक्रय के स्थान     |
| ट- विपणि आदि                           | राजमार्ग में विशेष स्थान |
| ठ- शृगाटक आदि                          | यातायात के साधन          |
| ड- तुरग आदि                            |                          |
| पूर्णभद्र चैत्य वर्णन                  |                          |

- २ क- काला गुरु आदि  
ग- नट आदि

## वनखण्ड वर्णन

- ३ क- मूल, कंद आदि  
ग- नित्य कुमुमिका आदि  
ग- शुक. बर्हि आदि  
घ- गुच्छ आदि  
ङ- वापी आदि  
च- रथ आदि

मुगन्धित धूप  
काला जीवि

वृक्ष के अंगोपांग  
वारहमामी वनस्पतिया.  
वन्य पक्षी  
विविध वनस्पतियां  
सार्वजनिक जलाशय  
यातायात के साधन

अंगीक वक्ष वणन

५	क	निा आदि	विद्विषे धनस्वतिया
	ख	तोष आदि	मुष्पिषन वृक्ष
	ग	फनम दाडम आदि	फल्बाले वृक्ष
	घ	शिविका	घान
	ङ	पयलता आदि	विद्विष तता वग

गिलापट्ट वणन

५	क	अवन आदि	विद्विष रग
	ख	मरवत आदि	कसु मे नगाये ज्ञानेशान
	ग	ईहा सृग आदि	भित्तिवित्र

६ कोणिक राजा का वणन

७ भभसार पुत्र काणिक की धानी धारिणी का वणन एक सवाण दाता का वणन

८ भ० महावीर क कायकमो की सुचना देनेवाले का वणन

९ कोणिक का उपस्थानगाना मे आगमन गणनायक दण्डनायक आदि राय का अधिकारी वष

१० क भ० महावीर का चम्पानगरी की ओर विचार

ख भ० महावीर की ऊचाई

ग भयवान के प्रत्येक अंगोपाङ्ग का वणन

घ चौतीस बट्ट वधनानिगम

ङ पत्नीम स्थि वधनानिगम

च चक्र आदि प्र नि १२

छ श्वमण-श्वमणी परिवार की सट्टा

ज भ० महावीर का चम्पानगरी क बाहर पूर्णमन् चक्र के समीप आगमन प्रवृत्तिवाहुक द्वारा कोणिक को चम्पानगरी क उप नगर मे भ० महावीर क पत्नारण की सुचना देना

१२ क- भ० महावीर को स्व-स्थान से वंदना करते का कोणिक का उपक्रम

ख- पाच राज्यचिह्नों के नाम

ग- भगवान की स्तुति

घ- प्रवृत्तिवादक का सत्कार

ङ- पूर्णभद्र चैत्य में भगवान के पधारने पर सूचना देने का आदेश

१३ भगवान महावीर का पूर्णभद्र चैत्य में पदार्पण

### भ० महावीर के अन्तेवासी

१४ क- अन्तेवासियों का पूर्व-परिचय

ख- अन्तेवासियों का दीक्षा काल

१५ क- अन्तेवासियों की ज्ञान-सपदा

ख- " " इच्छा शक्ति

ग- " " विशिष्ट तपश्चर्या

घ- " " विविध तपश्चर्या

विशिष्ट तपों के नाम, पट्टिसाध्यों के नाम

### अन्तेवासी स्थविरों का वर्णन

१६ क- स्थविरों का पूर्व-परिचय

ख- " की शरीर सम्पदा. व्यवित्तत्व

ग- " का सयमी जीवन

घ- " का बौद्धिक परिचय

ङ- " की आनुगामिता

च- " का बहुश्रुत ज्ञान

छ- " का वाद सामर्थ्य

ज- " का स्व सिद्धान्त ज्ञान

झ- " की स्मरण शक्ति का परिचय

### भगवान महावीर के अनेवासी

- १७ क अनेवासियों की सवम आराधना  
 ख ना विरक्त जीवन  
 ग के जीवन की २१ उपमाय  
 घ का निरुत्तिमय जीवन  
 ङ चार प्रकार क प्रतिबध  
 च अनेवासियों की आध्यात्मिक स्थिति

### अनेवासियों की तपश्चर्या

- १८ क आत्म-तरतर छ प्रकार का  
 ग साहजन छ प्रकार का

### साहजन के भेद

- १९ क अनगत के भेद  
 ग दृष्टिक अनगत के भेद  
 ग पापदृष्टिक अनगत के भेद  
 घ पापगत के भेद  
 ङ भक्त प्रत्याप्त के भेद  
 च अक्षमोक्षिक के भेद  
 छ दृष्ट अक्षमोक्षिक के भेद  
 ज उक्तरेण दृष्ट अक्षमोक्षिक के भेद  
 ख भक्त दान दृष्ट अक्षमोक्षिक के भेद  
 घ भक्त अक्षमोक्षिक के भेद  
 ङ भि साक्षिक के भेद  
 च भक्त प्रतिगत के भेद  
 छ कायवेद्य के भेद  
 ज प्रतिमपीयता के चार भेद  
 ख दृष्टिय प्रतिमपीयता के पांच भेद

- त- कषाय प्रतिसंलीनता के चार भेद  
 थ- योग प्रतिसंलीनता के तीन भेद  
 द- मनोयोग प्रतिसंलीनता के दो भेद  
 ध- वचनयोग " " "  
 न- काययोग " " "  
 प- विविक्त दाय्या-आसन-मेवन की व्याख्या

### आभ्यन्तरतप के छ भेद

- २० क- प्रायश्चित्त के दस भेद  
 ख- विनय के नात भेद  
 ग- ज्ञानविनय के पांच भेद  
 घ- दर्शनविनय के दो भेद  
 ङ- शुश्रुपाविनय के भेद  
 च- अनत्यागातना विनय के पैंतालीस भे  
 छ- चारित्र्यविनय के पांच भेद  
 ज- मनविनय के ढो भेद  
 झ- वचन विनय के दो भेद  
 ञ- कायविनय के दो भेद  
 ट- अप्रशस्त कायविनय के सान भेद  
 ठ- प्रशस्त कायविनय के सात भेद  
 ड- लोकोपचार विनय के सात भेद  
 ढ- वैयावृत्य के दस भेद  
 ण- स्वाध्याय के पांच भेद  
 त- ध्यान के चार भेद  
 थ- आर्तध्यान के चार भेद  
 द- " " " लक्षण  
 ध- रौद्रध्यान के चार भेद



१. ... ..  
 २. ... ..  
 ३. ... ..  
 ४. ... ..  
 ५. ... ..  
 ६. ... ..  
 ७. ... ..  
 ८. ... ..  
 ९. ... ..  
 १०. ... ..  
 ११. ... ..  
 १२. ... ..  
 १३. ... ..  
 १४. ... ..  
 १५. ... ..

### ३० महावीर के अन्तोजानी

३१. ... ..  
 ३२. ... ..  
 ३३. ... ..  
 ३४. ... ..  
 ३५. ... ..  
 ३६. ... ..  
 ३७. ... ..  
 ३८. ... ..  
 ३९. ... ..  
 ४०. ... ..

- ग- असुरकुमारों के चिन्ह  
 घ- " के वस्त्राभूषण  
 ङ- " के विलेपन  
 च- " की दिव्य उपलब्धियाँ

छ- भगवान को वन्दना

२३ क- भ० महावीर की प्रवचन परिपद् में नाग आदि नव प्रकार के भवनवासी देवों का आगमन

ख- भवनवासी देवों के क्रमशः मुकुट चिन्ह

२४ क- भ० महावीर की प्रवचन परिपद् में व्यन्तर देवों का आगमन

ख- सोलह व्यन्तर देवों के नाम

ग- व्यन्तर देवों का विनोदी जीवन

घ- " के वस्त्राभूषण

ङ- " के मुकुट चिन्ह

भ० महावीर की धर्मकथा में ज्योतिषी देवों का आगमन

२५ क- नव ग्रहों के नाम

ख- अष्टावीस नक्षत्र

ग- ज्योतिषी देवों के मुकुट चिन्ह

भ० महावीर की धर्मकथा में वैमानिक देवों का आगमन

२६ क- वारह देव लोकों के नाम

ख- वैमानिक देवों के विमानों के नाम

ग- वैमानिक देवों के मुकुट चिन्ह

घ- " के शरीर का वर्ण

ङ- " के वस्त्राभूषण

भगवान को वन्दना

२७ क- भ० महावीर के पधारने की नगरी में चर्चा

ख- धर्म परिपद् होना

- २८ क प्रहृतिवाहुक ने भगवान के पूर्णभद्र चैत्य में पधारने की सूचना कोणिक को दी
- ख कोणिक ने साठे बारह लाख स्वण मुद्रा का प्रोनिदान प्रहृति वाहुक को दिया
- २९ कोणिक का सेनापती को पट्टहस्ती लाने का, सेना सुसज्जित करने का सुमद्रा देवी प्रमुख को तैयार होकर आने का और नगर को राजाने का आदेश देना
- ३० आदेशानुसार कार्य होने पर कोणिक को सेनापती का निवेदन
- ३१ क- कोणिक का सुसज्जित होना  
[व्यायाम, तेलमर्दन, स्नान, वस्त्र और आभूषणों का वर्णन]
- ख पट्टहस्ति पर बैठना
- ग अष्ट भागलिक के नाम
- घ राज्य चिन्हों के नाम
- ङ- सब के यथाक्रम से व्यवस्थित हाकर चलने का वचन
- च- अश्व सेना, गज सेना रथ सेना और पैदल सेना का वचन
- छ विविध वाद्यों का वचन
- ज चम्पा नगरी के राजमार्ग में सपरिकर कोणिक का जाना
- ३२ क- स्तुतिपाठको का वर्णन
- ख समवसरण के मगधी जाने पर पांच राज्य चिह्न छोड़ना
- ग पाच अभिगम विधि के पश्चात् भगवान को बदना करना
- ३३ क सुमद्रा देवी आदि रानियों के सुसज्जित होने का वचन
- ख अनेक देशों को राजियों के साथ पूणभद्रचैत्य में पहुँचना
- ग पाच अभिगम विधि के पश्चात् भगवान को बदना करना
- ३४ क भ० महावीर का धमपरिषद् में मोजन पर्यन्त सुनाई देने वाले स्वर से अधमागधी भाषा में धर्मोपदेश
- ख धमपरिषद् में आर्यों और अनार्यों की उपस्थिति

ग- अर्धमागधी भाषा का नभी आर्य अनाय भाषाओं में अनुवादित होकर मुनार्द देना

घ- धर्मोपदेश के प्रमुख विषय

लोकालोक, जीवादि जगत्स्य, उत्तम पुरुष, चार पति, माना, पिता व गुरुजनों की भक्ति, निर्वाण माधवा, जगत् की बढारह पाप प्रवृत्तियों का परिचय, गतमन् पापमय प्रवृत्तियों में निवृत्ति बन्धि नास्तिवाद, शुभाशुभ कर्मफल

निर्ग्रथ-प्रवचन की महिमा

नवधा कर्मक्षय में मुक्ति, शुभकर्म अक्षय्य रत्नेषु न्ययं नरकगति के चार कारण

निर्यत्नगति के चार कारण

मनुष्यगति के चार कारण

देयगति के चार कारण

कर्मबन्ध फल कारण राग

दो प्रकार का धर्म

पंच महाव्रत और रात्रि भोजन विरति रूप-अणगार धर्म, अणगार धर्म के आराधक

चारह प्रकार का आगार धर्म

[पांच श्रणव्रत, तीन गुणव्रत, चार शिक्षाव्रत, वंशेखना]

आगार धर्म के आराधक

३५ क- धर्म कथा की समाप्ति. कई व्यक्तियों द्वारा आगार धर्म की प्रतिज्ञा करना

ख- निर्ग्रथ प्रवचन की महिमा करना

ग- धर्म, उपशम, विवेक और विरति का क्रम

३६ कोणिक का स्वस्थान गमन

३७ शुभद्रा प्रमुख रात्रियों का स्वस्थान गमन

समवसरण वर्णन समाप्त

३८ क श्रीमद्भागवत का काविक व आध्यात्मिक परिचय  
 ल श्रीमद्भागवत की विभिन्न विनय भक्तिपूवक प्रश्न  
 य प्रश्नोत्तर

- (१) असयन-यावन एका त मुष्ण के पाप कर्मों का  
 यागमन [आश्रय] का
- (२) असयन-यावन एतन्त मुष्ण के मोहकर्म का
- (३) मोहकर्म के साथ वेना कर्म का
- (४) असयन-यावन प्राणघाती की नरक गति का
- (५) असयन की देवगती का  
 असयन व व्यन्तर देव होने के कारण
- (६) व्यन्तर देवों की स्थिति
- (७) व्यन्तर देवों की शक्ति आदि
- (८) व्यन्तर देवों का आराधन होना
- (९) नष्टार दण्ड सहने वाले अपराधियों तथा आमघातकों  
 की व्यन्तर देवों में उत्पत्ति
- (१०) व्यन्तर देवों की स्थिति
- (११) व्यन्तर देवों की शक्ति आदि
- (१२) व्यन्तर देवों का अनाराधक होना
- (१३) प्रकृति भद्र यावन अप आरम्भ सारम्भ जीवि मनुष्यों  
 की व्यन्तर देवों में उत्पत्ति
- (१४) व्यन्तर देवों की स्थिति [अनाराधक]
- (१५) गनपतिना-यावन अनिच्छा से ब्रह्मण्य पालन करने  
 वाली स्थितियों की व्यन्तर देवों में उत्पत्ति
- (१६) व्यन्तर देवों की स्थिति [अनाराधक]
- (१७) द्वन्द्वभोजी यावन केवल संपन्नभोजी मनुष्यों की  
 व्यन्तर देवों में उत्पत्ति

- (१८) व्यन्तर देवों की स्थिति [अनाराधक]  
 (१९) अग्निहोत्री-यावत्-कण्डू-त्यागियों की ज्योतिषी देवों में उत्पत्ति [विविध तापम सम्प्रदायों के नाम]  
 (२०) ज्योतिषी देवों की स्थिति  
 (२१) ज्योतिषी देवों का अनाराधक होना  
 (२२) कान्दपिक-यावत्-नृत्यरुचि श्रमणों की वैमानिकों में उत्पत्ति  
 (२३) वैमानिक देवों की स्थिति (अनाराधक)  
 परिव्राजकों की ब्रह्मलोक में उत्पत्ति  
 (२४) क- आठ ब्राह्मण परिव्राजकों के नाम  
 ख- आठ परिव्राजकों के नाम  
 ग- षट् शास्त्रों के नाम  
 घ- सांख्य शास्त्र तथा अन्य ग्रन्थ  
 ङ- परिव्राजकों की संक्षिप्त आचार मंहिता  
 (२५) परिव्राजकों की स्थिति [अनाराधक]

### अंबड परिव्राजक की चर्या

- ३६ क- अंबड के सात सो गिप्य  
 ख- कपिलपुर से पुरिमताल नगर जाना  
 ग- अटवी में भटक जाना  
 घ- सभी परिव्राजकों की पिपासा—पानी पाने की इच्छा—  
 पानीदाता की शोध  
 ङ- अदत्तादान की प्रतिज्ञा  
 च- गंगा नदी की संतप्त बालुरेत पर संलेखना. पादपोगमन.  
 समाधिमरण  
 छ- सभी परिव्राजकों की ब्रह्मलोक में उत्पत्ति. स्थिति. परलोक

४० क अम्बड परिव्राजक की स्थापना

ख अम्बड द्वारा कवित्तपुर म वैश्वि सन्धि का प्रस्ताव

ग अम्बड परिव्राजक का अधिपान

घ अम्बड की आगार घम आराधना

ङ अम्बड की दृढ़ सम्यक्त्व

च अम्बड का समाधिभरण ब्रह्मलोक म उत्पत्ति च्यवन

छ महाविष्णु के मण्डलकुन्द म ज म लौकिक महार इह प्रणिप  
नामकरण कलाचाय क समीप अध्ययन बहुतर कलाओ के  
नाम अटारह देगी भाषाभा का ज्ञान कलाचाय को प्रीति  
दान काम भोगा म विरक्ति विरक्ति क विदे कमल की  
उपमा

स्थविरो मे सम्यक्त्व की प्राप्ति अजगार घम की दीक्षा रत्न  
त्रय की आराधना केवल ज्ञान

[श्रमण साधना का संक्षिप्त बखान]

अम्बड की आत्मा की निर्वाण पद की प्राप्ति

४१ क आचाय प्रत्यनीक आनि श्रमणो किल्विपी देवो मे उत्पत्ति

ख किल्विपी देवो की स्थिति

ग परलोक मे अनाराधक होना

घ जानिस्मरण मे देवविरक्त मत्री पचेन्द्रिय तिमला की सत्कार  
कल्प पय त उत्पत्ति

ङ स्थिति परलोक मे आराधक होना

च आजीविक श्रमणो की अच्युत कल्प पय त उत्पत्ति

छ अच्युत कल्प मे देवा की स्थिति परलोक म आराधक न होना

ज आ मोक्षक—अपनी बड़ाई करने वाले यावत कौतुक करने  
वाले श्रमणो की अच्युतकल्प पय त उत्पत्ति

झ अच्युत कल्प मे इन देवा की स्थिति परलोक मे अनाराधक

- ब- प्रवचन निन्हवों की ग्रंथेयक देव पर्यन्त उत्पत्ति.
- ट- इन ग्रंथेयक देवों की स्थिति. परलोक में अनाराधक
- ठ- अन्तारम्भी-यावत्-देशविरत श्रमणोपासकों की अच्युत कल्प पर्यन्त उत्पत्ति
- ड- इन देवों की स्थिति. परलोक में आराधक
- ड- अनारम्भी-यावत्-नग्नभाय वाले निर्ग्रन्थों की मुक्ति
- ण- अवशेष शुभकर्मा निर्ग्रन्थों की गर्वाथं सिद्ध में उत्पत्ति.
- त- इनकी स्थिति. परलोक में आराधक
- थ- गर्व कामविरत-यावत्-शीण लोभ निर्ग्रन्थों की मुक्ति
- ४२ क- केवल समुद्घात के समय आत्मा का पूर्णलोक से स्पर्श.
- ख- " " " " निर्जरा पुद्गलों का पूर्णलोक से स्पर्श
- ग- छद्मस्थ के अदृष्ट निर्जरा पुद्गल.
- घ- निर्जरा पुद्गलों को अतिमूढम सिद्ध करने के निमित्त गन्ध पुद्गलों का उदाहरण  
[जम्बूद्वीप का आयाम-विष्कम्भ. परिधि. देवताको दिव्य गति. गन्ध पुद्गलों का पूर्णलोक से स्पर्श. छद्मस्थ के अदृष्ट गन्ध पुद्गल]
- ङ- केवली समुद्घात करने का कारण.
- च- सभी केवलियों का केवली समुद्घात न करना
- छ- केवली समुद्घात के आठ समय
- ज- केवली समुद्घात के समय. मन, वचनयोग के प्रयोग का निषेध
- झ- काययोग के प्रयोग का निश्चित क्रम
- ञ- केवली समुद्घात के आठ समयों में मुक्त होने का निषेध
- ट- केवली समुद्घात के पश्चात् मन, वचन, काय का प्रयोग
- ४३ क- सयोगी की मुक्ति का निषेध



- म योग निरोध का ज्ञान और क्रम
- ग मुक्त आत्मा की अविषद गति
- घ मुक्त होने समय एक साधारणयोग
- ङ मिद्धा की सान्ने अथवा अन्ति स्थिति का घोरक दग्ध बीज का उपाहरण
- च सिद्ध होने वाले जीव का सत्त्वण
- छ " के सत्त्वण
- ज की अथवा उद्धृष्ट अवस्था<sup>१</sup>
- झ की अथवा उद्धृष्ट आत्मा
- ञ सिद्धा का निवास स्थान
- ट सर्वाथ सिद्ध विमान के ऊपरी भाग से ईषन प्राग्भारा पृथ्वी तक अन्तर
- ठ ईषन प्राग्भारा पृथ्वी का आशय विष्कम्भ की परिधि  
क मध्य भाग की भाटाई  
के वारह नाम  
का वय  
का सत्त्वण  
की औपपातिक रचना  
का स्थान  
की अनुपम सुन्दरता
- ण ईषन प्राग्भारा के ऊपरीतल से लाकान का अन्तर
- त गाउ बोग क दृढे भाग म मिद्धा की अवस्थिति  
बाबीस गाथाआ के विषय
- १२ मिद्ध अन्तक के नीचे ओर ओक ७ ऊपर शरीर स्थान विरह  
ओक म ओर मिद्ध मिद्धनोक में

१ यह कथन निश्चरों का अर्थ है —टाका

- ३ सिद्धात्माओं का संस्थान  
 ४-८ सिद्धों की जघन्य, मध्यम और उत्कृष्ट अत्रगाहनी  
 ९-१० एक में अनेक सिद्धात्मा. सिद्धात्माओं का लोकान्त से स्पर्श.  
 सिद्ध-आत्माओं का परस्पर स्पर्श.  
 ११ सिद्धों का लक्षण  
 १२ सिद्धों का ज्ञान. सिद्धों की दृष्टि  
 १३-२२ सिद्धों का सोदाहरण मुख स्वरूप

कंदप्पमाभिओगं च, किव्विसियं मोहमासुरत्तं च  
 एयाओ दुग्गईओ, मरणंमि विराहिया होंति ॥  
 कंदप्प-कुक्कुयाइं, तह सील-सहाव-हास-विगहाइं ।  
 विम्हावेंतो य परं, कंदप्पं भावणं कुणई ॥  
 मंता जोगं काउँ, भूर्इकम्मं च जे पउंजंति ।  
 साय-रस-इड्ढिहेउं, अभियोगं भावणं कुणई ॥  
 नाणस्स केवलीणं, धम्मायरियस्स संघ-साहूणं ।  
 माई अवण्णवाई, किव्विसियं भावणं कुणई ॥  
 अणुबद्ध रोस-पसरो, तह य निमित्तम्मिहोइ पडिसेवी ।  
 एएहिं कारणेहिं, आसुरियं भावणं कुणई ॥  
 सत्थगहणं विसभक्खणं, जलणं जलपवेसो य ।  
 अणायार-भंडसेवी, जम्म-मरणाणि बंधंति ॥

सुहसायगस्स समणस्स, सायाडलगस्स निगामसाइस्स ।  
 उच्छ्रोवणा पहायस्स, दुल्लहा सुगइ तारिसगस्स ॥  
 तवो गुण पहाणम्स, उज्जुमइ खति सजम रयस्स ।  
 परीसह जिणतस्स, सुलहा सुगइ तारिसगस्स ॥

णमो णिग्गंथाणं

## द्रव्यानुयोग-प्रधान राजप्रश्नीय-उपांग

अध्ययन	१
उद्देशक	१
उपलब्ध मूल पाठ	२१००श्लोक प्रमाण
गद्य सूत्र	६५
पद्य-गाथा	×

वणे मूढे जहा जंतु, मूढे णेयाणुगामिए ।  
दो वि एक अकोविद्या, तिब्बं सोयं नियच्छइ ॥  
अंधो अंधं पहं नेतो, दूरमद्धाणुगच्छइ ।  
आवज्जे उप्पहं जंतू, अदुवा पंथाणुगामिए ॥  
एवमेगे णियायट्ठी, धम्ममाराहगा वयं ।  
अदुवा अहम्ममावज्जे, न ते सव्वजुयं वए ॥

## देहात्मवाद के तर्क

से जहानामए-केइ पुरिसे कोमीओ अमि अभिनिव्वट्टिता ण उवदसेज्जा । अयमाउसो ! असी अय कोमी, एवमेव नत्थि केइ पुरिसे अभिनिव्वट्टिता ण उवदसेत्तारो अयमाउसो ! आया इय सरीर ।

से जहानामए केइ पुरिसे मुजाओ इसिय अभिनिव्वट्टिता ण उवदसेज्जा । अयमाउसो ! मुजे इय इसिय एवमेव नत्थि केइ पुरिसे उवदसेत्तारो अयमाउसो ! आया इय सरीर ।

से जहानामए केइ पुरिसे ममाओ अट्टि अभिनिव्वट्टिता ण उवदसेज्जा । जयमाउसो ! करयत्ते अय आमलए, एवमेव नत्थि केइ पुरिसे उवदसेत्तारो अयमाउसो ! आया इय सरीर ।

से जहानामए केइ पुरिसे दहीओ नवणीय अभिनिव्वट्टिता ण उवदसेज्जा । अयमाउसो ! नवणीय अय तु दही, एवमेव नत्थि केइ पुरिसे उवदसेत्तारो अयमाउसो ! आया इय सरीर ।

से जहानामए केइ पुरिसे तिलेहितो तेल्ल अभिनिव्वट्टिता ण उवदसेज्जा । अयमाउसो ! तेल्ल अय पिण्णाए नत्थि केइ पुरिसे उवदसेत्तारो अयमाउसो ! आया इय सरीर ।

से जहानामए केइ पुरिसे इयधूओ सोयरस अभिनिव्वट्टिता ण उवदसेज्जा । अयमाउसो सोयरसे अय छोए एवमेव नत्थि केइ पुरिसे उवदसेत्तारो अयमाउसो ! आया इय सरीर ।

से जहानामए-केइ पुरिसे अरणीओ अग्गि अभिनिव्वट्टिता ण उवदसेज्जा । अयमाउसो ! अरणी अय अग्गी एवमेव नत्थि केइ पुरिसे उवदसेत्तारो अयमाउसो ! आया इय सरीर ।

एव अमते अत्तविज्जमाणं तं सुयक्खाय भवइ, तज्जहा

अन्नो जीवो अन्नं सरीरं तम्हा तं मिच्छा

## राजप्रश्नीय-उपांग विषय-सूची

- १ आमलकल्पा नगरी वर्णन
- २ क- आम्रशाल वन वर्णन  
ख- आम्रशाल वन चैत्य वर्णन
- ३ क- अशोक वृक्ष वर्णन  
ख- शिलापट्ट वर्णन (ओषपातिक के समान)
- ४ क- श्वेत राजा. धारिणी देवी  
ख- भ० महावीर का समवमरण. धर्म परिपद्. धर्मकथा. राजा की पर्युपासना
- ५ क- सूर्याभ देव. सौधर्म कल्प. सूर्याभ विमान. सुधर्मा सभा.  
ख- चार हजार सामानिक देव. चार अग्रमहीपियाँ. तीन परिपद सात सेना. सात सेनापती. सोलह हजार आत्मरक्षक देव.  
ग- सूर्याभ का अवधिज्ञान से सम्पूर्ण जम्बूद्वीप को देखना.  
घ- भ० महावीर को आमलकल्पा के आम्रशाल वन चैत्य में देखना.  
ङ- सूर्याभदेव का स्वस्थान से भगवद् वंदन
- ६ भगवद् दर्शन के लिये आने का संकल्प.
- ७ भगवान् के आसपास का एक योजन प्रदेश साफ करके पुनः सूचित करने का आभियोगिक देव को आदेश.
- ८ क- आभयोगिक देव का (वैक्रेय समुद्घात. सोलह प्रकार के रत्नों के नाम) सुमज्जित होकर आम्रकल्पा आना  
ख- आम्रशाल वन चैत्य में विराजमान भगवान् को वंदना करना
- ९ अभियोगिक देव को देवताओं के कर्तव्य का निर्देश

- १० आभियोगिक देव का वैजय समुन्घात करना सफाई करने के लिये तैयार होना
- ११ क सबसेक वायु की विकृवणा रचना एक तरुण कुशल ध्यात्त क समान सबसेक वायु द्वारा कचरे की सफाई होना  
ख अन्न भेष की रचना एक योजन प्रणैण का सिचन  
ग पुष्य वादन की रचना एक योजन म पुम्भवर्षा  
घ एक योजन क क्षत्र की विविध प्रकार के धूपो मे सुवासिन करना  
ङ भगवान् को व न्ना करके आभियोगिक देव का स्वस्थान जाना और सूर्याभ देव को सविनय सफाईवाय से अवगत करना
- १२ क सूर्याभ देव का पैल सनाध्यक्ष को बुनाना  
ख आमलकल्पना बनने के लिये सभी देवो को शीघ्र उपस्थित होने की सुघोषा घटा द्वारा सूचना दिनबाना
- १३ क पैदल सेनाध्यक्ष का सुघोषा घटा आदन  
ख सभी देव देवियो को भगवद् व दना के लिये आह्लाहन
- १४ सुसज्जित देव देवियो का सूर्याभ के सामने उपस्थित होना
- १५ आभियोगिक देव को लिख्य यानोवमान की रचना का आदेश
- १६ क दिव्य यानविमान की रचना का विस्तृत बणन (गित्य बणन)  
ख आठ मगनो के नाम  
ग विविध चर्मों के स्पश से विमान के स्पश की तुलना  
घ भित्तिचित्रो का परिचय  
ङ कृष्ण वण के विविध पत्थों से कृष्ण मणियो की तुलना  
च नील वण के अनेक पत्थों से नील मणियो की तुलना  
छ स्वतवण के नानाविध द्रव्या से शोहित मणियो की तुलना  
ज पीत वण के प्रशस्त पदाथों से हारित मणियो की तुलना  
झ सुवन्द वण के स्वच्छ द्रव्यो से दवेन मणियो की तुलना  
ञ सुगन्धित द्रव्यो से मणियो के गन्ध की तुलना

- ४- अति शूद्र वर्णवासे पदार्थों में मणियों के वर्ण की समानता.
- ५- विमान के मध्य में प्रेक्षापर मण्डप की रचना  
[विमान वायुमंडल का अक्षर]
- ६- प्रेक्षापर मंडप के मध्य में अग्नि का निर्माण
- ७- चार मोजन की मणिपीठिका का निर्माण
- ८- मिहामन की रचना [मिहामन]
- ९- विजय वस्त्र का विन्यास
- १०- वज्रमय अक्षर और मुक्तामाला की रचना
- ११- उत्तर-पूर्व में [दिशान कोण] में मानानिक देवों के मिहामन  
पूर्व में अथमहीपियों के भद्रामन  
दक्षिण-पूर्व में त्रान्मन्तर परिषद के आठ हजार भद्रामन.  
दक्षिण में मध्यम परिषद के दस हजार भद्रामन  
दक्षिण-पश्चिम में वायु परिषद के चारह हजार भद्रामन  
पश्चिम में सात सेनापतियों के सात भद्रामन  
चारों दिशाओं में आत्मरक्षक देवों के सोलह हजार भद्रामन  
[प्रत्येक दिशा में चार-चार हजार भद्रामन]
- १२- विमान के वर्ण गन्ध की उपमा.
- १३- आभियोगिक देव द्वारा विमान की तैयारी की सूर्याभिदेव को  
सूचना
- १४ क- गंधर्व और नर्तकों के साथ सूर्याभि का विमान में प्रवेश.  
ख- देव परिवार का यथास्थान बैठना  
ग- विमान के आगे अष्ट मंगल, दण्ड, महेन्द्र, ध्वज, पांच सेनापतियों  
के विमानों और आभियोगिक देवियों के विमान का चलना
- १५ क- सौधर्मकल्प के उत्तर के निर्याण मार्ग से सूर्याभि का प्रस्थान  
ख- विमान की उत्कृष्ट गति  
ग- नंदीश्वर द्वीप के रतिकर पर्वत पर दिव्य ऋद्धि को संक्षिप्त  
करना



घ आमदरूपा के आभजन जानवन भरत म सूर्याभ का पढ़वना

ङ यान विमान मे सूर्याभ का मपरिवार बाहर आना

च भ० महावीर को सविधि अन्न करना

छ भ० महावीर को अपना परिचय देना

१९ भ० महावीर का सूर्याभ को देव वृषों का निरोग

२० सूर्याभ का मजिनय भगवान् के सम्मुख उपस्थित करना

२१ भ० महावीर का सूर्याभ परिषद म धम प्रवचन

२२ भ० महावीर म सूर्याभ देवने अपने सम्बन्ध मे कतिपय प्रश्न

क मे भवमिद्विक मन्दकदष्टि परित्तमसारी गुनभयाधि आराधक और चरित हू या इसम विपरीत?

ख भ० महावीर द्वारा स्पष्टीकरण

२३ क भगवान् क पात की महिमा करना

ख गौतमा धमण निग्रथो को क इस प्रकार का शिष्य श्रुय दिखाने क लिये भ० महावीर से आज्ञा प्राप्त करने का प्रयत्न करना

२४ क महावीर का हाँ नाँ न करना मौन रहना

ख श्रुय दिखाने न लिये आज्ञा प्राप्ति का पुन प्रयत्न भ० महावीर का पूकवत मौन रहना

ग सूर्याभ का सविधि अन्न

घ सूर्याभ का वक्रय ममुखात्

ङ श्रुय के लिये भूभाग का ममीकरण

च नाट्यशाला प्रशासन मन्त्र की रचना

छ भ० के सम्मुख अपने सिंहासन पर बठने की मयवान से आज्ञा प्राप्ति करना

ज सूर्याभ का दक्षिण भुजा प्रसारण श्रुय के लिये सज्जित १०८ देव कुमारी का प्रकट होना

- क- सूर्याभ का याम भूजा प्रगारण. नृत्य के लिये सशृंगार. १०५  
 देव कन्याओं का प्रकट होना.
- ख- देव कुमार और देव कुमारियों को भगवद् चन्दना. गीतमादि  
 के सम्मुख नृत्य प्रदर्श के लिये उपस्थित होना
- ट- सत्तावन प्रकार के वाण और उनके वादकों का एक सौ आठ  
 आठ की संख्या में उपस्थित होना.
- ठ- द्रष्ट मांगलिक नृत्य
- ड- भित्तिचित्र नृत्य
- ण- नक्षत्राल नृत्य
- त- चन्द्रावली-यावत्-रत्नावली नृत्य
- थ- सूर्योदय नृत्य
- द- चन्द्रसूर्यागमन नृत्य
- ध- चन्द्रसूर्यावरण नृत्य
- न- चन्द्रसूर्य मण्डलादि नृत्य
- प- श्रुतभ ललित-यावत्- द्रुत विलम्बित नृत्य
- फ- नागर विभक्ति-यावत्-नन्दा नम्पा विभक्ति नृत्य
- ब- मत्स्यण्डादि नृत्य
- भ- पञ्चाक्षर वर्ण नृत्य
- म- अशोक पल्लवादि नृत्य
- य- पद्मलतादि नृत्य
- र- द्रुतादि गति नृत्य
- ल- अंगचेष्टा नृत्य.
- व- भ० महावीर के पूर्वभवों का नृत्य द्वारा प्रदर्शन
- श- भ० महावीर के कल्याणकों का नृत्य.
- स- चार प्रकार के वीरों का वादन

- प चार प्रकार के गर्वा का गायन  
 दा ' नृत्या का प्रदर्शन  
 न अभितयो का प्रदर्शन  
 झ देवकुमार और कुमारियों का भगवान को बदना करके सूर्याभ के समीप पहुचना  
 २५ क सूर्याभ द्वारा दिव्य ऋद्धि का सहार  
 ख भगवद् बदना सौधम कल्प गमन  
 २६ क सूर्याभ प्रदर्शित दिव्य ऋद्धि विनय हेतु विशामा  
 ख कुठागार शाला के हेतु से समाधान  
 २७ क सूर्याभ विमान का स्थान  
 ख सूर्याभ विमान विस्तार निशायें  
 ग का मस्थान  
 घ सौधम कल्प क ३२ साक्ष विमान  
 ङ पाञ्च अवतसक विमानों के नाम  
 च सौधमवित्तमक विमान से पूर्व में सूर्याभ विमान  
 छ सूर्याभ विमान का आयाम विष्कम्भ  
 ज सूर्याभ विमान की परिधि  
 २८ क सूर्याभ विमान के प्रकार की ऊँचाई  
 प्रकार के मूल का विष्कम्भ  
 प्रकार के मध्य का विष्कम्भ  
 ख स्वर्णमय प्रकार पञ्च वष मणिमय कधि शीपक कागुरे  
 कपिशीपकी का आयाम विष्कम्भ कपिशीपकी की ऊँचाई  
 ग सूर्याभ विमान के एक पाद के द्वार द्वारों की ऊँचाई  
 द्वारों का विष्कम्भ द्वारों के शिखर, द्वारों के भित्तिविष  
 घ द्वार कपाट गणन  
 ङ द्वारों के दोनों और चन्दन कलशा की पक्षितयो  
 नाम इतो (सूटियाँ) की पक्षियाँ

- घ- नामदंतों के उपर नामदंतों की पंक्तियाँ  
 छ- नामदंतों पर लटकने वाले मुगन्धित धूप के श्रृंखे  
 ज- द्वारों के दोनों ओर सोलह २ सालभंजिकाएँ  
 झ- द्वारों के दोनों ओर सोलह २ जानियाँ

“ घटियाँ

घटियों का मधुर स्वर

- ज- द्वारों के दोनों ओर सोलह २ वनमानाएँ  
 ट- द्वारों के दोनों ओर दो, दो पगंठक—चबूतरे  
 पगंठकों का आगाम-विष्कम्भ और बाह्य  
 प्रत्येक पगंठक पर एक एक प्रानाद  
 प्रानादों की ऊंचाई, विष्कम्भ  
 ठ- द्वारों के दोनों ओर सोलह २ तोरण  
 प्रत्येक तोरण पर दो दो सालभंजिकाएँ  
 प्रत्येक तोरण के आगे ह्य-यावत्-वृषभ के समुदाय  
 प्रत्येक तोरण के आगे पद्मलता-यावत्-श्यामलताएँ  
 प्रत्येक तोरण के आगे दो प्रशस्त स्वस्तिक  
 “ नन्दन कुलश  
 “ भृंगार  
 “ आदर्श कौच  
 “ थाल  
 “ पानी पात्र  
 “ पीठिकाएँ  
 “ रत्नकरण्डक  
 “ ह्य-यावत्-वृषभरत्न  
 “ पुष्प चंगेरियाँ  
 “ सिंहासन  
 “ छत्र

प्रत्येक तारण क आगे दो प्रगल्भ चमर  
 ,  
 तेन पाव

ई सूर्याभ विमान के प्रत्येक द्वार पर विविध प्रकार की १०८  
 १०८ खजाए

ण सूर्याभ विमान म ६५ ६५ तलघर  
 तलघरों के द्वारों पर सोनहू मोल्हू रान  
 ,  
 अष्ट अष्ट मंग

त सूर्याभ विमान क चार गिनावा क चार हजार द्वार

थ सूर्याभ विमान के चार गिनावा म चार वनखण्ड  
 प्रत्येक वनखण्ड का आयाम-विष्कम्भ

२६ वनखण्ड की तुल्यमणियों के स्वर का वर्णन

३० क वनखण्ड की वापिया का वर्णन

ख वनखण्ड के उत्थान पत्रता का वर्णन

ग वनखण्डवर्ती मणवा का वर्णन

घ भूला का वर्णन

ङ गिनापट्टा का वर्णन

क वनखण्ड के प्रामाण्य की ऊचाई आयाम विष्कम्भ

ख प्रत्येक प्रासाद म एक एक देवता उन देवताओं की स्थिति

ग प्रत्येक वनखण्डवर्ती उपकारिकालयन का आयाम विष्कम्भ  
 परिधि बाहू म मोटाई

३२ क पञ्चवरेणिका की ट-बाई विष्कम्भ परिधि

ख पञ्चवरेणिका का वर्णन

ग पञ्चवरेणिका कथचिन् नित्य और कथचिन् अनित्य—अर्थात्  
 —गणत्व

घ वनखण्ड का चक्रवाल विष्कम्भ

ङ उपकारिकालयन का वर्णन

३३ क- उपकारिकालयनं मध्यवर्ती मुख्य प्रासाद की ऊँचाई, विष्कम्भ आदि

ख- मुख्य प्रासाद के पार्श्ववर्ती प्रासादों की ऊँचाई-विष्कम्भ आदि

३४ क- मुख्य प्रासाद के उत्तर-पूर्व में सुधर्मा मभा

ख- सुधर्मा सभा का आयाम-विष्कम्भ ऊँचाई, आदि

ग- सुधर्मा सभा के तीन दिशाओं में तीन द्वार

प्रत्येक द्वार की ऊँचाई और विष्कम्भ

प्रत्येक द्वार के अग्रभाग में एक-एक मुख्यमण्डप

मुख-मण्डपों का आयाम-विष्कम्भ और ऊँचाई

मुख-मण्डपों का आयाम-विष्कम्भ और ऊँचाई

मुख-मण्डपों के तीन तिन दिशाओं में तीन द्वार,

द्वारों की ऊँचाई और विष्कम्भ

प्रत्येक द्वार के अग्रभाग में एक-एक प्रेक्षाघर मंडप

प्रत्येक प्रेक्षाघर मण्डप के मध्य भाग में एक-एक अखाड़ा

प्रत्येक अखाड़े के मध्य भाग में एक-एक मणिपीठिका

मणिपीठिकाओं का आयाम-विष्कम्भ और ऊँचाई

प्रत्येक मणिपीठिका पर एक-एक सिंहासन

प्रत्येक प्रेक्षाघर मण्डप के अग्रभाग में एक-एक मणिपीठिका

प्रत्येक मणिपीठिका का आयाम-विष्कम्भ और वाहल्य

प्रत्येक मणिपीठिका पर एक स्तूप

प्रत्येक स्तूप का आयाम—विष्कम्भ और ऊँचाई

प्रत्येक स्तूप के चारों दिशाओं में एक-एक मणिपीठिका

प्रत्येक मणिपीठिका पर चारों दिशाओं में स्तूपाभिमूर्त्त चार

चार जिन प्रतिमाएँ

प्रत्येक स्तूप के सामने एक-एक मणिपीठिका

प्रत्येक मणिपीठिका का आयाम-विष्कम्भ और वाहल्य

प्रत्येक मणिपीठिका पर एक एक चैत्य वृक्ष

प्रत्येक चैत्य स्तूप की ऊँचाई और उद्भ्रम  
 स्तूप गोलाई आदि का परिमाण  
 प्रत्येक चैत्य स्तूप के सामने एक मणिपीठिका  
 प्रत्येक मणिपीठिका का आयाम—विष्णुम्भ और बाह्य  
 प्रत्येक महेन्द्र ध्वज की ऊँचाई उद्भ्रम और विष्णुम्भ  
 प्रत्येक महेन्द्र ध्वज के सामने एक एक पुष्करिणी  
 प्रत्येक पुष्करिणी का आयाम विष्णुम्भ और उद्भ्रम  
 पंचवर बन्धिका धनखण्ड आदि का वजन  
 मुषर्मा सभा में मनोनुक्तिवाए नागदण्ड छोके आदि  
 मुषर्मा सभा में एक महामणिपीठिका  
 मणिपीठिका पर एक मानवक चैत्य स्तम्भ  
 चैत्य स्तम्भ की ऊँचाई उद्भ्रम विष्णुम्भ आदि  
 चैत्य स्तम्भ के मध्य भाग में नागस्तंभ नागदण्डों के छोके पर  
 द्विवे द्विवे में त्रिन अस्थियाँ  
 अस्थियाँ की अर्वा चैत्यस्तम्भपर अष्ट २ मणल

- ३५ क मानवक स्तम्भ के पूर्व में एक महापीठिका  
 महापीठिका का आयाम विष्णुम्भ और बाह्य  
 ल पश्चिम में महा मणिपीठिका उसका आयाम विष्णुम्भ और  
 बाह्य  
 ग मणिपीठिकापर एक देश गयनीय और उसका वजन  
 ३६ क देवगयनीय के उत्तर-पूर्व में एक महामणिपीठिका उसका  
 विष्णुम्भ और बाह्य  
 ल महामणिपीठिका पर एक महेन्द्र ध्वज उसकी ऊँचाई और  
 विष्णुम्भ महेन्द्र ध्वज के पश्चिम में सूर्याम देव का एक सत्वागार  
 मुषर्मा सभा आदि  
 ३७ क मुषर्मा सभा के उत्तर पूर्व में एक महाविद्यालयन

- ए- सिद्धायतन का आयाम-विष्कम्भ और ऊँचाई  
 ग- सिद्धायतन के मध्य भाग में एक मणिपीठिका, उसका आयाम-  
 विष्कम्भ और बाहृत्य  
 घ- मणिपीठिकापर एक देवछंद्रक, उसका आयाम-विष्कम्भ और  
 उसकी ऊँचाई  
 ङ- देवछंद्रकपर १०८ जिनप्रतिमाएँ, जिनप्रतिमाओं का वर्णन  
 जिन प्रतिमाओं के पृष्ठभाग में द्यवधारी प्रतिमाएँ  
 दोनों पार्श्व में चमरधारी प्रतिमाएँ  
 अग्रभाग में दो-दो नाग भूत यक्ष आदि की प्रतिमाएँ  
 जिन प्रतिमाओं के सामने १०८ घंट, कलश-यावत्-धूपकट्टछूवें  
 च- सिद्धायतन के ऊपर अष्ट मंगल आदि  
 ३८ क- सिद्धायतन के उत्तर-पूर्व में एक उपपात सभा [मुधर्मा सभा  
 के समान वर्णन]  
 ए- उपपात सभा के उत्तर-पूर्व में एक महाहृद  
 महाहृद का आयाम-विष्कम्भ और उद्वेध  
 ग- हृद के उत्तर-पूर्व में एक अभिषेक सभा [मुधर्मा सभा के समान  
 वर्णन]  
 घ- अभिषेक सभा के उत्तर-पूर्व में एक अलंकारिक सभा [मुधर्मा  
 के समान वर्णन]  
 ङ- अलंकार सभा के उत्तर-पूर्व में एक व्यवसाय सभा [उपपात  
 सभा के समान वर्णन]  
 च- व्यवसाय सभा में एक धर्मशास्त्रों का महापुस्तक रत्न.  
 पुस्तक रत्न का वर्णन.  
 व्यवसाय सभा पर अष्ट मंगल  
 छ- व्यवसाय सभा के उत्तर-पूर्व में एक नन्दा पुष्करिणी,  
 ज- नन्दा पुष्करिणी से उत्तर-पूर्व में एक पाद पीठ सिंहासन



- ३६ क सूर्याभ का सफल  
 ख सामानिक देवा द्वारा सूर्याभ के कृतव्य का निर्देश
- ४० क सूर्याभ का स्नान और अभिषेक का विस्तृत बणन  
 ख- सूर्याभ विमान की सजावट  
 ग देवनाओं का [चार प्रकार का] वाद्य वादन गायन नृत्य अभि  
 नय आदि  
 घ सामानिक देवों द्वारा सूर्याभ देव की शुभ कामना  
 छ अलंकार सभा में सूर्याभ का शृंगार करना
- ४१ छवनाय मभा में सूर्याभ का पुस्तक वाचन
- ४२ क सिद्धान्त म जिन प्रतिमात्रा की अचना स्तुति पाठ चटना  
 ख सिद्धान्त अर्थात् आदि का प्रमाञ्जन  
 ग चैत्यम्नूप की अचना  
 घ जिन प्रतिमात्रा की चैत्य कृता की और महेन्द्र स्वयं की अचना  
 ङ चैत्य स्तम्भ का प्रमाञ्जन जिन अस्थिया की अचना  
 च बनी विमञ्जन  
 छ सामानिक देवा का विमान क अय सब अचनीय स्थानों की  
 अचना का आंग
- ज सूर्याभ का सुधर्मा मभा में सिद्धान्तामीन होता
- ४३ क सूर्याभ के परिवार का यथा स्थान उपवसन  
 ख आमरणका का कृतव्य पानन
- ४४ क सूर्याभ की स्थिति  
 ख सामानिक देवा की स्थिति
- ४५ क सूर्याभ के सप्त च म गौतम की जिज्ञासाए, दिव्य कृद्धि की  
 प्राप्ति का कारण ?  
 ख पूवभव क नाम गोत्र व स्थान  
 ग पूवुभन क स कृत्य ?

४६ क- भ० मन्त्रीर द्वारा मूर्धाभ के पूर्वभ्रम का वर्णन  
 नृनयन उपहार, प्रदेशी राजा

[गजा वा जंगल-परिषद]

४७ नृमंथान्ना देवी

४८ सुवराज मूर्धाभन कुमार

४९ प्रदेशी राजा के क० भाई निज मन्त्री वा राजनीतिक जीवन

५० क- कुमार जगद, श्रावस्ती नगरी, कौण्डक वैश्य, जितनद्रु राजा.  
 ग- प्रदेशी राजा वा निज मन्त्री के साथ जित नद्रु राजा को  
 महर्ष्य उपहार भेजना.

ग- महर्ष्य उपहार लेकर श्वेताम्बिका पहुँचना और जितनद्रु राजा  
 को भेंट करना.

५१ क- कौण्डक वैश्य में पाश्चात्त्य केनी कुमारश्रमण का पधारना.

ग- धर्मपरिषद् में निज वा जाना और चानुर्धाम धर्म एवं द्वाशन-  
 विष मुहीधर्म का श्रवण करना.

ग- पद्मामुद्रन, मन्त्र निष्कासित एवं द्वाशनविष मुहीधर्म पारण  
 करना.

५२ निजमन्त्री वा धर्मणोपामक बनना

५३ क- जितनद्रु राजा वा निज के साथ प्रदेशी राजा को भेंट देने के  
 विषे बहुमूल्य उपहार भेजना.

ग- केनीकुमार श्रमण को श्रावस्ती पधारने का आग्रह करना.

ग- श्वेताम्बिका को नौपमर्षे वनग्रन्थ की उपमा देकर अनिच्छा  
 प्रगट करना.

घ- श्वेताम्बिका में अनेक धर्मणोपामकों के होने में किसी प्रकार  
 का कष्ट न होने का आश्वासन दिलाना.

ङ- निज की विनती स्वीकार करना

५४ निज वा मृगधन के उद्यानपालक को केनी कुमार श्रमण की  
 भक्ति करने का तथा धाने पर मूचना देने का कहना.

- १५ त्रिगात्र का भेजा हुआ उद्धार प्रेमी राजा को भ्रम करना
- १६ क केगी कुमार धमण का मृगवन उद्यान में पधारना  
ख उद्यान पालक का वित्त को सूचना देना  
ग वित्त का धमकवा श्रवण करना
- १७ क राजा प्रेमी को धर्मोपदेश देने के लिए वित्त की प्रार्थना
- १८ क केशी कुमार धमण द्वारा केवली प्रत्यक्ष धर्म श्रवण न कर सकने  
क चार कारण तथा केवली प्रत्यक्ष धर्म श्रवण कर सकने के  
चार कारणों का कथन  
ख वित्त की आरसे प्रेमी राजा को लाने का आश्वासन
- १९ क राजा प्रेमी को कम्बोज देश के अश्वों की मूर्ति लियाने का  
बहाने बन में ल जाना  
ख विश्व त्रि के लिये मृगवन उद्यान में ले जाना  
ग केगी कुमार धमण के सम्बन्ध में प्रेमी की विज्ञप्ति
- २० क वित्त की साथ सहर प्रेमी का केगी कुमार धमण के समीप  
पहुँचना और प्रार्थन करना  
ख नर की चींटी करने वाला वनिक के समान अविनय में प्रवेश  
न प्रार्थन के लिये केगी कुमार धमण का कथन तथा राजा के  
मनोगत श्रवण का कथन
- २१ क मनोगत श्रवण को जानने वाला ज्ञान के सम्बन्ध में राजा प्रेमी  
की त्रिगता  
ख केगी कुमार धमण द्वारा पाँच ज्ञानों का सङ्क्षिप्त परिचय और  
स्वयं के चार ज्ञान होने का कथन
- २२ क देह और आत्मा का भिन्न होने का हेतु जानने के लिये प्रेमी  
का प्रार्थन  
ख अधर्मों विनामह का नरक में और धर्मात्मा विनामही का स्वर्ग

से आकर पाप-पुष्प का फल कथन. देह और आत्मा की भिन्नता का हेतु स्वीकार करना

- ६३- केसी कुमार श्रमण द्वारा नरक में जाने में बाधक चार कारणों का सहेतुक कथन
- ६४ क- देह और आत्मा की अभिन्नता के सम्बन्ध में राजा प्रदेशी द्वारा दिया गया लोह कुंभी में बन्द चोर की मृत्यु का उदाहरण
- ख- देह और आत्मा की भिन्नता सिद्ध करने के लिये केसी कुमार श्रमण द्वारा दिया गया-कूटागार शाला से जाने वाली बाघध्वनि का उदाहरण.
- ग- देह और आत्मा की अभिन्नता के सम्बन्ध में राजा प्रदेशी द्वारा दिया गया लोह कुंभी में बन्द चोर के मृत शरीर में कृमियों की उत्पत्ति का उदाहरण
- घ- देह और आत्मा की भिन्न सिद्ध करने के लिये केसी कुमार श्रमण द्वारा दिया गया संतप्त लोह गोलक में अग्नि प्रवेश का उदाहरण.
- ६५ क- देह और आत्मा की अभिन्नता के सम्बन्ध में राजा प्रदेशी का दिया हुआ तरुण और बालक द्वारा लक्ष्यवेधन की असमानता का उदाहरण
- ख- देहात्मा की भिन्नता के सम्बन्ध में केसीकुमार श्रमण का दिया हुआ-नवीन और प्राचीन धनुष का उदाहरण.
- ६६ क- राजा प्रदेशी की ओर से दिया गया वृद्ध और युवा के असमान लोह भारवहन का उदाहरण.
- ख- केसीकुमार श्रमण की ओर से दिया गया नवीन और प्राचीन कावड़ से भार वहन का उदाहरण
- ६७ क- राजा प्रदेशी की ओर से जीवित और मृत चोर को तोलने का उदाहरण

ख- केशी कुमार श्रमण की ओर से स्वामी और हवा से भरी हुई मशक के तोलने का उदाहरण

६८ क- राजा प्रदेशी की ओर से चोर के छोटे-छोटे टुकड़े करके जीव को देखने के लिये किए गये प्रयत्न का उदाहरण

ख- केशी कुमारश्रमण की ओर से भरणी काष्ठ को खण्ड-खण्ड करके अग्नि देखने के लिये प्रयत्न करने वाले कठियाने का उदाहरण

६९ क- केशी कुमार श्रमण द्वारा कहे गये कठोर वचनों की युक्तता के सम्बन्ध में प्रदेशी का प्रश्न

ख- केशी कुमार श्रमण द्वारा चार परिपदाया और उनके अपराधियों के दण्ड विधान का ज्ञापन

ग- चार प्रकार के व्यवहारियों का प्ररूपण राजा प्रदेशी की व्यवहारिकता

७० क- जीव को कर ककणवत् प्रत्यक्ष दिखाने के लिये प्रदेशी की केशी कुमारश्रमण से प्रार्थना

ख- राजा प्रदेशी से वायु को हस्तामशकवन् दिखाने के लिये केशी कुमारश्रमण का कथन

ग- सवर्ष के लिये दस स्थानों की पूर्ण जानकारी की शक्यता और असर्वज्ञ के लिये अशक्यता का कथन

७१ क- हाथी और कुशुवे का जीव समान होने के सवध में प्रदेशी का प्रश्न

ख- आवरणानुसार दीपक के प्रकाश का सकोच विनाश होने के समान हाथी और कुशुवे के जीव की समानता का केशी श्रमण द्वारा प्रतिपादन

७२ क- प्रदेशी का परम्परागत मायता से मोह

ख- केशी कुमारश्रमण द्वारा प्रतिपादित लोह धानिये के रूपक से मोह का निवारण

- ७३ केशी कुमारश्रमण से धर्म श्रवण, व्रत धारणा, स्व स्थान गमन के लिए उद्यत होना.
- ७४ क- केशी कुमारश्रमण द्वारा तीन प्रकार के आचार्यों का तथा उनके साथ किये जाने वाले विनयों का प्रतिपादन  
 स- अविनय के लिये क्षमायाचना तथा प्रदेशी का स्वस्थान गमन
- ७५ क- अंतःपुर व परिवार के साथ राजा प्रदेशी का आना  
 ख- केशी कुमारश्रमण द्वारा वन खण्ड, नृत्य शाला, इक्षुवाड़ा और खलिहान के रूपक से सदा रमणीय रहने का उपदेश देना
- ७६ सात हजार ग्रामों से प्राप्त होने वाले राज्यधन के चार विभाग करना.
- ७७ क- प्रदेशी को मारने के लिये सूर्यकान्ता का सूर्यकान्त कुमार से आग्रह  
 ख- सूर्यकान्त कुमार का मौन विरोध  
 ग- सूर्यकान्ता द्वारा विष प्रयोग, प्रदेशी राजा के शरीर में उपवेदना
- ७८ क- पौषध शाला में राजा प्रदेशी का समाधि मरण  
 ख- सौधर्म कल्प के सूर्याभ विमान में उत्पत्ति
- ७९ सूर्याभ देव की स्थिति, च्यवन के पश्चात् महाविदेह में उत्पत्ति होगी.
- ८० पाच धार्यों से पालन, नाना देशों की दासियों से संवर्धन शुभ मुहूर्त में कलाचार्य के समीप गमन. वहत्तर कलाओं का अव्ययन करेगा.
- ८१ माता पिता की और से द्विवाह की तैयारियां होगी, दृढ प्रतिज्ञ का अलिप्त जीवन, स्थविरों के समीप प्रव्रज्या ग्रहण करके द्वादशांग का अव्ययन करेगा. अनुत्तर धर्म धाराघना से अनुत्तर केवल ज्ञान दर्शन की प्राप्ति करके सिद्धपद की प्राप्ति करेगा.
- ८२ उपसंहार—जिन भगवान् को, श्रुत देवता को, प्रजप्ति भगवति को और भ० पादवनाथ को नमस्कार

ते णावि सधि णच्चा ण, न ते धम्मविओ जणा ।  
 जे ते उ वाइणो एव, न ते ओहतरा हिया ॥  
 ते णावि सधि णच्चा ण, न ते धम्मविओ जणा ।  
 जे ते उ वाइणो एव, न त ससारपारगा ॥  
 ते णावि सधि णच्चा ण, न ते धम्मविओ जणा ।  
 जे ते उ वाइणो एव, न ते गग्गम्म पारगा ॥  
 ते णावि सधि णच्चा ण, न ते धम्मविओ जणा ।  
 जे ते उ वाइणो एव, न त जम्मस्स पारगा ॥  
 ते णावि सधि णच्चा ण, न ते धम्मविओ जणा ।  
 जे ते उ वाइणो एव, न ते दुक्खस्स पारगा ॥  
 ते णावि सधि णच्चा ण, न ते धम्मविओ जणा ।  
 जे ते उ वाइणो एव, न ते मारस्स पारगा ॥

षमो माहणाणं  
द्रव्यानुयोगमय जीवाभिगम उपाङ्ग

प्रतिपत्ति	६
अध्ययन	१
उद्देशक	१८
उपलब्ध पाठ	४७५० श्लोक प्रमाण
गद्य सूत्र	२७२
पद्य गायी	८१

जीवाभिगम की उपादेयता

तुमंसि नाम तं चेव, जं हंतव्वं ति मन्नसि ।

तुमंसि नाम तं चेव, जं अज्जावेयव्वं ति मन्नसि ।

तुमंसि नाम तं चेव, जं परितावेयव्वं ति मन्नसि ।

तुमंसि नाम तं चेव, जं परिचेतव्वं ति मन्नसि ।

तुमंसि नाम तं चेव, जं उद्देयव्वं ति मन्नसि ।

अंजू! चे य पडिबुद्धजी वि ! तम्हा न हंता, न विघायए ।

अणुसंवेयणमप्पाणेणं, जं हंतव्वं नाभियत्थए ।



जो जीवे वि न याणेइ, अजीवे वि न याणइ ।  
जोषाजीवे अयाणतो, कए गो नाइहि मज्जम ॥  
जो जीवे वि वियाणेइ, अजीवे वि वियाणेइ ।  
जोषाजीवे वियाणतो, गो हु नाइहि मज्जम ॥  
जयाजीवमजीवे च, दो वि एए वियाणइ ।  
तया गइ बहुविह, मय्य जीषाण जाणइ ॥  
जया गइ बहुविह, मय्य जीषाण जाणइ ।  
तया पुन्न च पाव च, वप मुक्क च जाणइ ॥  
जया पुन्न च पाव च, वप मुक्क च जाणइ ॥  
तया निच्चिदिण भोए, जे दिव्जे जे य माणुमे ।  
जया निच्चिदिण भोए, जे दिव्जे जे य माणुमे ॥  
तया चयइ मज्जोग, मच्चित्त-वाटि ।  
जया चयइ सज्जोग, मच्चित्त-वाटि ॥  
तया मंडे भवित्ताण, पच्चइए अणगारिय ।  
जया मंडे भवित्ताण, पच्चइए अणगारिय ॥  
तया सवरमुक्किट्ट, धम्मं फामे अणुत्तर ।  
जया सवरमुक्किट्ट, धम्मं फामे अणुत्तर ॥  
तया धुणइ कम्मरय, अबोहि वलुम कइ ।  
जया धुणइ कम्मरय, अबोहि वलुम कइ ॥  
तया सच्चनग नाण, दमण चाभिगच्छइ ।  
जया सच्चनग नाण, दमण चाभिगच्छइ ॥  
तया लोममल्लोण च, जिणो जाणइ केवली ।  
जया लोममल्लोण च, जिणो जाणइ केवली ॥  
तया जोणे निरुभित्ता, सेलेसि पडवज्जइ ।  
जया जोणे निरुभित्ता, सेलेसि पडवज्जइ ॥  
तया कम्म सवित्ताण, सिद्धि गच्छइ नीरओ ।  
जया कम्म सवित्ताण, सिद्धि गच्छइ नीरओ ॥  
तया लोममत्थयत्थो, सिद्धो हवइ साप्पओ ।

## जीवाभिगम उपांग विषय-सूची

### प्रथम द्विविध जीव प्रतिपत्ति

- १ जीवाभिगम कथन प्रतिज्ञा सूत्र
- २ जीवाभिगम दो प्रकार का
- ३ अजीवाभिगम दो प्रकार का
- ४ अरूपी अजीवाभिगम दस प्रकार का
- ५ क- रूपी अजीवाभिगम चार प्रकार का  
ख- " " पाँच प्रकार का
- ६ जीवाभिगम दो प्रकार का
- ७ क- मोक्ष प्राप्त जीव दो प्रकार के  
ख- अनन्तर मोक्षप्राप्त जीव पन्द्रह प्रकार के  
ग- परम्पर मोक्षप्राप्त जीव अनेक प्रकार के
- ८ क- संसार स्थित जीवों की नौ प्रतिपत्तियाँ  
ख- संसार स्थित जीव दो प्रकार के-यावत्-दस प्रकार के
- ९ संसार स्थित जीव दो प्रकार के
- १० स्थावर जीव तीन प्रकार के
- ११ पृथ्वी कायिक जीव दो प्रकार के

### पृथ्वीकायिक जीव

- १२ सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीव दो प्रकार के  
सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों के तेजीय द्वारा
- १३ १- सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों के शरीर  
२- " " की अवगाहना  
३- " " के संहनन

- ४- सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों के महत्त्वान
- ५- " " के कषाय
- ६- " " के सहा
- ७- " " के लेशवा
- ८- " " की इन्द्रिया
- ९- " " के समुद्घात
- १०- सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीव अमजी
- ११- सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों के वेद
- १२- सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों की पर्याप्तियाँ
- १३- " " दृष्टि
- १४- सूक्ष्म पृथ्वीकायिक के दर्शन
- १५- " के अज्ञान
- १६- " का योग
- १७- " उपयोग
- १८- " आहार
- क सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों का द्रव्य से आहार
- ख- " " क्षेत्र से आहार
- ग- " " काल से आहार
- घ- " " भाव से आहार
- ङ सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों की अपेक्षा से वर्णवान्ते पुद्गला का आहार
- च " विघान की अपेक्षा से वर्णवान्ते " "
- छ- " " मप रग और स्वप्न की दो विवक्षा
- ज सूक्ष्म पृथ्वी कायिकों द्वारा सृष्ट पुद्गला का आहार
- झ- " " अवगाह पुद्गला का आहार
- झ " " अणु और स्थूल पुद्गला का आहार

ट-	सूक्ष्म पृथ्वीकायिकों द्वारा ऊँचे-नीचे, तिरछे स्थित पुद्गलोंका आहार
ठ-	" " आदि मध्य अन्त में स्थित पुद्गलोंका आहार
ड-	" " स्व विषय स्थित पुद्गलों का आहार
ढ-	" " क्रम से स्थित " "
ण-	" " व्याघात न होने पर ६ दिशाओं से आहार
	" " व्याघात होने पर ३, ४, ५ दिशाओं में आहार
त-	" " कारण से "
थ-	" " विपरिणमन-परिवर्तन करके पुन आहार

१६-	सूक्ष्म पृथ्वीकायिक	जीवों में उत्पत्ति
२०-	" "	जीवों की स्थिति
२१-	" "	जीवों का मरण
२२-	" "	जीवों का उद्वर्तन
२३-	" "	जीवों की गति आगति
२४-	" "	जीव प्रत्येक शरीरी
२५-	" "	जीव असंख्याता

१४ वादर पृथ्वीकायिक जीव दो प्रकार के

१५ क- २ श्लक्ष्ण-पृथ्वीकायिक जीव सात प्रकार के

ख- " " संक्षेप में दो प्रकार के

२ श्लक्ष्ण पृथ्वीकायिक जीवों के तेवीस द्वार

### अपकायिक जीव

१६ क- अपकायिक जीव दो प्रकार के

ख- सूक्ष्म अपकायिक जीव दो प्रकार के

ग- सूक्ष्म अपकायिक जीव संक्षेप में दो प्रकार के

सूक्ष्म अपकायिक जीवों के तेवीस द्वार

१७ क- वादर अपकायिक जीव अनेक प्रकार के

ख- वादर अपकायिक जीव अनेक प्रकार के

वाटर अणुकायिक जीवों के तरीम द्वार  
वनस्पतिकायिक जीव

- १८ क वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकार के  
ख सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकार के  
सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीवों के तरीम द्वार
- १९ वाटर वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकार के
- २० क प्रथक वाटर वनस्पतिकायिक जीव चारह प्रकार के  
ख दृग दो प्रकार के  
ग एकात्मिक दृग अनेक प्रकार के  
घ बहुबीज दृग
- २१ क साधारण शरीर वाटर वनस्पतिकायिक जीव अनेक प्रकार के  
ख जीव समेष में दो प्रकार के  
साधारण शरीर वनस्पति कायिक जीवों के तरीम द्वार
- २२ वम जीव तीन प्रकार के

तेजस्कायिक जीव

- २३ तेजस्कायिक जीव दो प्रकार के
- २४ सूक्ष्म तेजस्कायिक जीवों के तरीम द्वार
- २५ क वाटर तेजस्कायिक जीव अनेक प्रकार के  
समेष में दो प्रकार के  
वाटर तेजस्कायिक जीवों के तरीम द्वार

वायुकायिक जीव

- २६ क वायुकायिक जीव दो प्रकार के  
ख सूक्ष्म वायुकायिक जीवों के तरीम द्वार  
ग वाटर वायु कायिक जीव अनेक प्रकार के  
घ समेष में दो प्रकार के  
ह वाटर वायुकायिक जीवों के तरीम द्वार

२७ औदारिक वनजीव चार प्रकार के हैं

### द्वीन्द्रिय जीव

- २८ क- द्वीन्द्रिय जीव अनेक प्रकार के  
 ख- " " संक्षेप में दो प्रकार के  
 ग- द्वीन्द्रिय जीवों के तेषीस द्वार हैं

### त्रीन्द्रिय जीव

- २९ क- त्रीन्द्रिय जीव अनेक प्रकार के हैं  
 ख- " " संक्षेप में दो प्रकार के हैं  
 ग- त्रीन्द्रिय जीवों के तेषीस द्वार

### चतुरिन्द्रिय जीव

- ३० क- चतुरिन्द्रिय जीव अनेक प्रकार के हैं  
 ख- " " संक्षेप में दो प्रकार के हैं  
 ग- चतुरिन्द्रिय जीवों के तेषीस द्वार

### पंचेन्द्रिय जीव

- ३१ पंचेन्द्रिय जीव चार प्रकार के हैं  
 ३२ क- नैरयिक जीव सात प्रकार के हैं  
 ख- " " संक्षेप में दो प्रकार के हैं  
 ग- नैरयिक जीवों के तेषीस द्वार  
 ३३ पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिक जीव दो प्रकार के हैं  
 ३४ समूद्धिम पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिक जीव तीन प्रकार के हैं  
 ३५ क- समूद्धिम जलचर पांच प्रकार के हैं  
 ख- समूद्धिम मच्छ अनेक प्रकार के हैं  
 ग- " " संक्षेप में दो प्रकार के हैं  
 घ- समूद्धिम जलचर मच्छों के तेषीस द्वार  
 ३६ क- समूद्धिम स्थलचर दो प्रकार के हैं

- ल समृद्धिम चतुष्पद स्थलचर दो प्रकार के हैं  
 म समृद्धिम चतुष्पद स्थलचरों के तन्नाम द्वार  
 घ समृद्धिम स्थलचर परिमाण दो प्रकार के है  
 ङ समृद्धिम उरग स्थलचर परिमाण चार प्रकार के हैं  
 च सप अनेक प्रकार के हैं  
 छ दर्वी (पण) कर सप अनेक प्रकार के हैं  
 झ मकुलीकर सप अनेक प्रकार के है  
 झ समृद्धिम अजगर अनेक प्रकार के हैं  
 झ आसालिक  
 ट महोरग अनेक प्रकार के हैं  
 सक्षेप मे दो प्रकार के हैं  
 ठ भुजग परिमाण अनेक प्रकार के हैं  
 सक्षेप मे दो प्रकार के  
 ण भ्रुवर चार प्रकार के हैं  
 चमपक्षी अनेक प्रकार के है  
 रोमपक्षी  
 ममुदगपक्षी  
 विस्तृतपक्षी  
 सक्षेप मे दो प्रकार के हैं

- त सम्मूर्द्धिम स्थलचर परिमाण के तीस द्वार  
 ३७ गभज विषय पचे द्वय तीन प्रकार के हैं  
 ३८ क गभज जलचर पाच प्रकार के हैं  
 ल सक्षेप मे दो प्रकार के हैं  
 ग गभज जलचरों के तीस द्वार  
 ३९ क गभज स्थलचर दो प्रकार के हैं  
 ल चतुष्पद चार प्रकार के हैं

- ग- गर्भज चतुष्पद संक्षेप में दो प्रकार के हैं  
 घ- गर्भज चतुष्पदों के तेवीस द्वार हैं  
 ङ- गर्भज परिसर्प दो प्रकार के हैं  
     " उरपरिसर्प दो प्रकार के हैं  
 च- गर्भज उरपरिसर्पों के तेवीस द्वार  
 छ- गर्भज भुजपरिसर्प दो प्रकार के हैं  
 ज- " भुजपरिसर्पों के तेवीस द्वार
- ४० क- गर्भज खेचर चार प्रकार के हैं  
 ख- गर्भज खेचरों के तेवीस द्वार
- ४१ क- मनुष्य दो प्रकार के हैं  
 स- समूर्द्धिम मनुष्यों की मनुष्यक्षेत्र में उत्पत्ति  
 ग- संमूर्द्धिम मनुष्यों के तेवीस द्वार  
 घ- गर्भज मनुष्य तीन प्रकार के हैं  
 ङ- गर्भज मनुष्य संक्षेप में दो प्रकार के हैं  
 च- गर्भज मनुष्यों के तेवीस द्वार
- ४२ क- देवता चार प्रकार के हैं  
 ख- भवनवासी देव दस प्रकार के हैं  
 ग- वाणव्यन्तर देव सीलह प्रकार के हैं  
 घ- " " संक्षेप में दो प्रकार के हैं
- ४३ क- स्थावर जीवों की स्थिति  
 ख- त्रस जीवों की स्थिति  
 ग- स्थावर सस्थिति का जघन्य उत्कृष्ट काल  
 घ- त्रस सस्थिति का जघन्य उत्कृष्ट काल  
 ङ- स्थावर पर्याय से पुनः स्थावर पर्याय प्राप्त होने का अन्तर काल  
 च- त्रस पर्याय से पुनः त्रस पर्याय प्राप्त होने का अन्तर काल



## द्वितीया त्रिविध जीव प्रतिपत्ति

- ४४ समार स्थित जीव तीन प्रकार के हैं  
स्त्रियां
- ४५ क स्त्रिया तीन प्रकार की  
ख निर्गन्ध स्त्रिया  
ग जलचर स्त्रिया पाच प्रकार की  
घ स्थलचर स्त्रिया दो प्रकार की  
ङ चतुष्पद स्त्रिया चार प्रकार की  
च परिसप स्त्रिया चार प्रकार की  
छ उरग परिसप स्त्रिया तीन प्रकार की  
ज भुज परिसप स्त्रिया अनेक प्रकार की  
झ सूचर स्त्रिया चार प्रकार की  
ञ मानव स्त्रिया तीन प्रकार की  
ट अतर्द्धोपवातिनी स्त्रिया अष्टावीस प्रकार की  
ठ अकमभूमिवातिनी स्त्रिया तीस प्रकार की  
ड कमभूमिवातिनी स्त्रिया पन्द्रह प्रकार की  
इ देविया चार प्रकार की  
ण भवनवातिनी देविया दस प्रकार की  
त अन्तर देविया आठ प्रकार की  
थ ज्योतिष्क देविया पाच प्रकार की  
द विमानवातिनी देविया दो प्रकार की
- ४६ क त्रिविध जाति स्त्री पर्याय की सस्थिति का उच्यते उरुष्ट कान्  
ख मानव जाति स्त्री पर्याय की सस्थिति का  
ग देव जाति स्त्री पर्याय की सस्थिति का

- ४७ क- तिर्येन योनिक स्थियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति  
 ग- जलचर निर्मन योनिक स्थियों की " "
- ग- चतुष्पद स्थलचर तिर्येन योनिक स्थियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति  
 घ- उरग परिमपं स्थलचर " " "  
 ङ- भुजपरिसपं " " "  
 च- गिचर तिर्येन योनिक स्थियों की " "  
 छ- मानव स्थियों की " "  
 ज- धर्मानरण करनेवाली (मानव) स्थियों की " "  
 झ- कर्मभूमिनिवासिनी (मानव) " " " "  
 ञ- धर्मानरण की अपेक्षा कर्मभूमिनिवासिनी स्थियों की " "  
 ञ- भरत-पेरवत वासिनी (मानव) स्थियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति  
 धर्मानरण की अपेक्षा भरत पेरवत वासिनी  
 स्थियों की " "  
 ट- पूर्वविदेह-अपरविदेह कर्मभूमिनिवासिनी स्थियों की उत्कृष्ट  
 स्थिति  
 धर्मानरण की अपेक्षा " " "  
 ड- अकर्मभूमिनिवासिनी (मानव) स्थियों की " "  
 मंहरण की अपेक्षा " "  
 ढ- हैमवत-हैरण्यवत क्षेत्र वासिनी (मानव) स्थियोंकी " "  
 संहरण की अपेक्षा " " " "  
 ढ- हरिवपं-रभ्यक्वपं क्षेत्र वासिनी मानव स्थियों की " "  
 संहरण की अपेक्षा " " " "  
 ण- देवकुरु-उत्तरकुरुवासिनी स्थियों की " "  
 मंहरण की अपेक्षा " " "  
 त- अंतर्द्वीपवासिनी स्थियों की " "  
 देवियों की " "

य-	भवनवाग्निनी देविया की	जघन्य उत्कृष्ट स्थिति
द	व्यन्दर देवियो की	" "
म-	ज्योतिष्क देवियो की	" "
न-	च द्र विमानवासिनी देवियो की	" "
	सूर्य विमानवासिनी देवियो की	" "
	ग्रह " "	" "
	नक्षत्र " "	" "
	तारा " "	" "
प	विमानवासिनी देवियो की	" "
	सौधर्म " "	" "
	ईशान " "	" "

- ४८ क स्त्री सस्थिति काल की पाच विवधा  
 ख त्रिर्वचयोनिक् स्थिती वा सस्थिति काल  
 ग मनुष्ययोनिक् स्थिती वा सस्थिति काल  
 घ देविता वा सस्थिति काल
- ४९ क स्त्री पर्याय से पुन स्त्री पर्याय के प्राप्त होने का जघन्योत्कृष्ट अतर काल  
 ख त्रिर्वच स्त्री से पुन त्रिर्वच स्त्री होने का जघन्योत्कृष्ट अनर काल  
 ग मनुष्य स्त्री से पुन मनुष्य स्त्री होने का " "  
 घ- देव स्त्री से पुन देव स्त्री होने का " "
- ५० त्रिर्वच मनुष्य और देव स्थिती का अल्प बहुत्व
- ५१ न स्त्री वेदनीय कर्म की जघन्योत्कृष्ट वन्व स्थिति  
 ख स्त्री वेदनीय कर्म का अवाधा काल  
 ग स्त्री वेदनीय कर्म का

**पुरुष**

- ५२ क- पुरुष तीन प्रकार के  
 ख त्रिर्वच योनिक् पुरुष "

- ग- मनुष्य योनिक पुरुष " "
- घ- देव पुरुष चार प्रकार के " "
- ५३ क- पुरुष की जघन्योत्कृष्ट स्थिति
- ख- तिर्यचयोनिक पुरुष की जघन्योत्कृष्ट स्थिति
- ग- मनुष्य " " "
- घ- देव " " "
- ५४ क- पुरुष का जघन्योत्कृष्ट स्थितिकाल
- ख- तिर्यच योनिक पुरुषों का " "
- ग- मनुष्य " " "
- घ- देव " " "
- ५५ क- पुरुष पर्याय से पुनः पुरुष पर्याय के प्राप्त होने का जघन्योत्कृष्ट अन्तर काल
- ख- तिर्यच योनिक पुरुष पर्याय से पुनः मनुष्य योनिक पुरुष पर्याय प्राप्त होने का जघन्योत्कृष्ट काल
- ग- मनुष्य योनिक पुरुष पर्याय से पुनः मनुष्य योनिक पुरुष पर्याय प्राप्त होने का जघन्योत्कृष्ट अन्तरकाल
- घ- देव योनिक पुरुष पर्याय से पुनः देव योनिक पुरुष पर्याय प्राप्त होने का जघन्योत्कृष्ट अन्तरकाल
- ५६ क- देव पुरुषों का अल्प-ब्रह्मत्व
- ख- तिर्यच योनिक मनुष्य योनिक और देव योनिक पुरुषों का परस्पर अल्प-ब्रह्मत्व
- ५७ क- पुरुष वेदनीय कर्म की जघन्योत्कृष्ट बंध स्थिति
- ख- " " का अबाधा काल
- ग- " " का स्वभाव
- नपुंसक
- ५८ क- नपुंसक तीन प्रकार के
- ख- नैरयिक नपुंसक सात प्रकार के

- ग त्रिपञ्च यानिक नपुंसक पाच प्रकार के  
 घ मनुष्य यानिक नपुंसक तीन प्रकार के  
 ५६ क नपुंसका की जघन्योत्कृष्ट स्थिति  
 ख नैरयिक नपुंसकों की  
 ग त्रिपञ्च योनिक नपुंसका की  
 घ मनुष्य योनिक नपुंसकों की  
 ज नपुंसकों का सस्थिति काल  
 झ नैरयिक नपुंसकों का सस्थिति काल  
 ष त्रिपञ्च योनिक नपुंसकों का  
 ५७ छ मनुष्य यानिक  
 नपुंसकों का जघन्योत्कृष्ट स्थिति काल  
 ज नपुंसक से पुन नपुंसक होने का जघन्योत्कृष्ट अन्तर काल  
 झ नैरयिक नपुंसक से पुन नैरयिक नपुंसक होने का जघन्योत्कृष्ट  
 अन्तर काल  
 ज त्रिपञ्च योनिक नपुंसक से पुन त्रिपञ्च योनिक नपुंसक होने का  
 जघन्योत्कृष्ट अन्तर काल  
 ट मनुष्य योनिक नपुंसक से पुन मनुष्य योनिक नपुंसक होने का  
 जघन्योत्कृष्ट अन्तर काल  
 ६० नैरयिक त्रिपञ्च और मनुष्य योनिक नपुंसका का अन्तर्बहुत्व  
 ६१ क नपुंसक धर्मोपक्रम की जघन्य स्थिति  
 ख का अन्तर्बहुत्व  
 ग का स्वभाव  
 ६२ स्त्री पुरुष और नपुंसका का अन्तर्बहुत्व का दो सूत्र  
 ६३ क स्त्रीत्व पुरुषत्व और नपुंसकत्व पर्याय का जघन्योत्कृष्ट सम्बन्धि  
 काल  
 ग स्त्री पुरुष और नपुंसकत्व पर्याय का जघन्योत्कृष्ट अन्तर काल

- ६४ क तिर्यञ्च योनिक स्त्री, पुरुषों का अल्प-बहुत्व  
 ख मनुष्य योनिक " "  
 ग देव योनिक " "

### तृतीया चतुर्विध जीव प्रतिपत्ति

- ६५ संसार स्थित जीव चार प्रकार के  
 नैरयिक जीव  
 प्रथम उद्देशक
- ६६ नैरयिक सात प्रकार के
- ६७ सात नैरयिकों के नाम गोत्र  
 नरक वर्णन
- ६८ सात नरकों का बाह्यत्व
- ६९ क रत्नप्रभा पृथ्वी के तीन काण्ड  
 ख खर काण्ड सोनह प्रकार के  
 ग शर्कराप्रभा-यावत्-तमस्वमा एक एक प्रकार का
- ७० सात नरकों के नरकावाम
- ७१ सात नरकों के नीचे धनोदधि, धनवात, तनुवात और अन्नका-  
 यान्तर
- ७२ क रत्नप्रभा के नरकाण्ड का बाह्यत्व
- |   |   |   |
|---|---|---|
| ख | , | रत्नकाण्ड का-यावत्-रिष्टकाण्ड का बाह्यत्व       |
| ग | " | पद्मदहलकाण्ड का "                               |
| घ | " | अश्वहूतकाण्ड का "                               |
| ङ | " | धनोदधि का "                                     |
| च | " | धनवात का "                                      |
| छ | " | तनुवात का "                                     |
| ज |   | शर्कराप्रभा-यावत्-तमस्वमा के धनोदधि का बाह्यत्व |
| झ | " | धनवात का "                                      |

- ब , तनुवान का "
- ट " अत्रकाशान्तर का ,
- ७३ सात नरकों और उनके अत्रकाशान्तरों में पुद्गल द्रव्यों की व्यापक स्थिति
- ७४ क सात नरकों से चारों दिशाओं में लोकांत का अंतर
- ७५ क सात नरकों का संस्थान
- ल सातों नरकों के चारों दिशाओं में चरमान्त तीन तीन प्रकार के
- ७६ क सात नरकों के घनोदधिबलय का बाह्य
- ल " घनवानबलय का ,
- ग , तनुवानबलय का ,
- प सात नरकों के घनोदधिबलयों पुद्गल द्रव्यों की व्यापक स्थिति
- छ सात नरकों के घनवानबलयों में पुद्गल द्रव्यों की व्यापक स्थिति
- ष , तनुवान बलयों में " "
- छ " घनोदधि बलयों का संस्थान
- झ घनवान बलयों का
- झ , तनुवान बलयों का
- झ , का आयाग विघ्नश्च
- ट , का सदैव समान बाह्य
- ७७ क सात नरकों में सब जीवों के उत्पन्न होने का प्रसंग
- ल से निकलने का
- ग में सब पुद्गलों के प्रविष्ट होने का
- घ से निकलने का
- ७८ क सात नरकों की साम्य अशाम्यन सिद्धि का हेतु
- छ सात नरकों की निर्ययता
- ७९ क प्रत्येक नरक के ऊपर के चरमान्त से नीचे के चरमान्त का अंतर

- ख- प्रत्येक नरक काण्ड के चरमन्ताओं का अन्तर  
 ग- प्रत्येक नरक के घनोदधि के " "
- घ- " घनवात के " "  
 ङ- " तनवात के " "  
 च- " अवकाशान्तर का अन्तर "
- छ- प्रत्येक नरक के ऊपर के चरमान्त से अवकाशान्तर के नीचे के चरमान्त का अन्तर
- ८० सात नरकों के अपेक्षाकृत बाह्य की अल्प-बहुत्व  
 द्वितीय नैरयिक उद्देशक
- ८१ क- सात पृथ्वीयों (नरकों) के नाम  
 ख- सात पृथ्वीयों के नरकावासों के विभाग की सीमा  
 ग- सात नरकों के अन्दर बाहर का आकार  
 घ- सात नरकों में वेदना-यावत्-तमप्रभा
- ८२ क- रत्नप्रभा के नरकावासों का संस्थान दो प्रकार का  
 ग- आवलिका प्रविष्ट नरकावासों का संस्थान तीन प्रकार का  
 ग- आवलिका बाह्य नरकावासों के संस्थान अनेक प्रकार के  
 घ- तमस्तमाप्रभा के नरकावासों का संस्थान दो प्रकार का  
 ङ- सात नरकों के नरकावासों का बाह्य  
 च- सात नरकों के नरकावासों का आयाम-त्रिष्कम्भ और परिधि दो प्रकार की
- ८३ क- सात नरकों का वर्ण  
 ख- " " गंध  
 ग- " " स्पर्श
- ८४ क- सात नरकों की महानता  
 ख- देवता की दिव्यगति से नरकों की महानता का माप
- ८५ क- सात नरकों की पौद्गलिक रचना  
 ख- सात नरक शास्वत-अशास्वत ?



- ८१ क सात नरको मे चार गति की अपेक्षा से गति जागति  
 ख- सात नरको मे एक समय मे जीवो की उत्पत्ति  
 ग सात नरको का जीवो मे सर्वथा रिक्त न होना  
 घ सात नरको मे नैरयिको की अवगाहना दो प्रकार की  
 ८३ क- सात नरको के नैरयिको मे सहननों का अभाव पुद्गलो की  
 अशुभ परिणति  
 ख सात नरको के नैरयिको का सस्थान दो प्रकार का  
 ग सात नरको मे नैरयिको के शरीरो का वर्ण  
 घ- , , , की गंध  
 , , , का स्पर्श  
 ८८ क सात नरको मे नैरयिको के द्वासीच्छ्वान के पुद्गल  
 ख , , के आहार के पुद्गल  
 ग , , की लेखाए  
 घ , , के ज्ञान  
 ८- , , के अज्ञान  
 ९- सात नरको मे नैरयिको के योग  
 ज " " उपयोग  
 झ- , अवधिज्ञान का प्रमाण  
 झ " " समुद्घात  
 ८९ क सात नरका मे शुभा विपाशा की वेदना  
 ख- , नैरयिको की विकृत्तता  
 ग शीतोष्ण वेदना  
 घ नारकीय जीवन का चयन  
 ९ तमस्तमा के पांच नरकावासो के नाम  
 च तमस्तमा मे पांच महापुरुषों की उत्पत्ति  
 छ नैरयिको का वर्ण  
 ९ नैरयिको की वेदना

भ- नारकीय उष्ण वेदना का वर्णन

व- ,, तृपा वेदना का वर्णन

र- मानवलोक की उष्णता से नारकीय उष्णता की तुलना

ठ- नारकीय शीतवेदना का वर्णन

ण- मानवलोक की शीत से नारकीय शीत की तुलना

६० सात नरकों में नैरयिकों की स्थिति

६१ सातों नरकों से नैरयिकों का उद्भवतः न व अन्यत्र उत्पत्ति

६२ क- सात नरकों में पृथ्वी का स्पर्श

ख- ,, पानी ,,

ग- सात नरक एक दूसरे से महान्

६३ सात नरकों के पृथ्वीकाय-यावत्-वनस्पतिकायों में सर्व जीवों

की उत्पत्ति

६४ पृथ्वीकाय-यावत्-वनस्पतिकाय में उत्पन्न जीवों की वेदना.

### तृतीय नैरयिक उद्देशक

६५ क- नैरयिकों का अनिष्ट पुद्गल परिणमन

ख- ग्यारह गाथाओं में नैरयिकों का संक्षिप्त वर्णन

### प्रथम तिर्यच योनिक जीव उद्देशक

६६ क- तिर्यच योनिक जीव पांच प्रकार के

ख- एकेन्द्रिय तिर्यच योनिक जीव पांच प्रकार के

ग- पृथ्वीकाय एकेन्द्रिय तिर्यच योनिक जीव दो प्रकार के

घ- सूक्ष्म पृथ्वीकाय एकेन्द्रिय तिर्यच योनिक जीव दो प्रकार के

ङ- वादर पृथ्वीकाय एकेन्द्रिय तिर्यच योनिक जीव-यावत्-चतुर-

न्द्रिय तिर्यच योनिक जीव दो प्रकार के

च- पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिक जीव तीन प्रकार के

छ- जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिक जीव दो प्रकार के

ज- समूर्द्धिम जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिक जीव दो प्रकार के

- म- गर्भज जलचर पंचेन्द्रिय योनिक जीव दो प्रकार के  
 न- स्थलचर पंचेन्द्रिय त्रिवेच योनिक जीव दो प्रकार के  
 ट- चतुष्पद स्थलचर पंचेन्द्रिय त्रिवेच योनिक जीव दो प्रकार के  
 ठ- परिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय त्रिवेच योनिक जीव दो प्रकार के  
 ड- उरग परिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय त्रिवेच योनिक जीव दो प्रकार के  
 ढ- भुजग परिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय त्रिवेच योनिक जीव दो प्रकार के  
 ण- श्लेचर पंचेन्द्रिय त्रिवेच योनिक जीव दो प्रकार के  
 त- समूर्द्धिम श्लेचर पंचेन्द्रिय त्रिवेच योनिक जीव दो प्रकार के  
 थ- गर्भज श्लेचर " " "  
 द- श्लेचर पंचेन्द्रिय त्रिवेचों की तीन प्रकार की योनिया  
 ध- अपहृज तीन प्रकार के  
 न- पोतज "  
 प- समूर्द्धिम एक प्रकार का  
 ६७ क- श्लेचर पंचेन्द्रिय त्रिवेचों के इग्यारह द्वार—लेश्या १, दृष्टि २,  
 ज्ञानी-अज्ञानी ३, योग ४, उपयोग ५, उत्पत्ति ६, स्थिति ७,  
 समुद्घात ८, मरण ९, उद्घर्तन १०, कुल कोटी ११  
 ख- भुजग परिसर्प की तीन योनियां लेश्या आदि इग्यारह द्वार  
 ग- उरग परिसर्प की तीन योनियां, लेश्या आदि इग्यारह द्वार  
 घ- चतुष्पद स्थल चर तीन प्रकार के  
 ङ- जरायुज स्थलचर तीन प्रकार के इनके लेश्या आदि इग्यारह  
 द्वार  
 च- जलचरा के भेद और लेश्या आदि इग्यारह द्वार  
 छ- चतुरिन्द्रियो की कुल कोटी  
 श्लेचर पंचेन्द्रियो की " "  
 द्वेन्द्रियो की " "  
 ६८ क- श्लेचर सात प्रकार का  
 ल- पुष्पो की कुल कोटी

- ग- वल्लरियां चार प्रकार की
- घ- लतायें आठ प्रकार की
- ङ- हरितकाय तीन प्रकार की
- च- त्रस-स्थावर जीवों की कुल कोटियां
- ६६ क- स्वस्तिकादि विमानों की महानता
- ख- अर्ची आदि विमानों की     "
- ग- विजयादि विमानों की     "

### द्वितीय तिर्यच योनिक जीव उद्देशक

- १०० क- संसार स्थित जीव ६ प्रकार के
- ख- पृथ्वीकायिक-यावत्-वनस्पतिकायिक जीव दो दो प्रकार के
- ग- त्रसकायिक जीव चार प्रकार के
- १०१ क- पृथ्वीयां ६ प्रकार की
- ख- श्लक्ष्ण पृथ्वीयों की जघन्योत्कृष्ट स्थिति
- ग- शुद्ध             "             "
- घ- बालुका         "             "
- ङ- मनः शिला     "             "
- छ- शर्करा           "             "
- च- खर               "             "
- ज- नैरयिक-यावत्-सर्वार्थसिद्ध देवों की स्थिति
- झ- जीव का संस्थितिकाल
- ञ- पृथ्वीकाय-यावत्-त्रसकाय का संस्थितिकाल
- १०२ क- प्रत्युत्पन्न पृथ्वीकायिक-यावत्-प्रत्युत्पन्न त्रसकायिक जीवों  
को जघन्योत्कृष्ट निर्लेप काल
- ख- जघन्य उत्कृष्ट निर्लेप का अन्तर
- १०३ क- कृष्णलेश्या आदि तीन लेश्यावाले अनगार का देव-देवियों को  
देख सकना (छ विकल्प)

स तेजो लेश्या आदि तीन लेश्यावासे अनगार का देव देवियो को देख सकना (छ विकल्प)

अन्यतीर्थिक विषय एक समय में एक क्रिया

१०४ क स्वमिद्वान प्रतिपादन एक समय में एक क्रिया

प्रथम मनुष्य योनिक जीव उद्देशक

१०५ मनुष्य दो प्रकार के

१०६ समूहिय मनुष्य का उत्पत्ति स्थान

१०७ गभज मनुष्य तीन प्रकार के

१०८ अन्तर्द्वीप के मनुष्य अठावीस प्रकार के

प्रथम एकोरुकद्वीप वर्णन उद्देशक

१०९ क एकोरुक द्वीप का स्थान

स एकोरुक द्वीप का आर्याय विष्कम्भ और परिधि

य पञ्चर वेदिका वनखण्ड

ष पञ्चर वेदिका की ऊचाई और विष्कम्भ

ज पञ्चर वेदिका वर्णन

११० क वनखण्ड का चतुर्वाय विष्कम्भ

स वनखण्ड वर्णन

१११ क एकोरुक द्वीप के भूमितन्त्र का वर्णन

स-ग म अनेक प्रकार के द्वीप

घ म अनेक प्रकार की लताएँ

ङ मे अनेक प्रकार के गुल्म

च म वृक्ष समूह

छ (१) एकोरुक द्वीप में उत्तम द्वीप

(२) म भिगाण द्वीप

(३) म बुन्तिग द्वीप

(४) मे दीप पिन्वा द्वीप

- (५) एकोरक द्वीप में ज्योतिषिणा द्रुम  
 (६) " में मित्रांग द्रुम  
 (७) " में विश्वरत्न द्रुम  
 (८) " में मणिकांग द्रुम  
 (९) " में गृहाकार द्रुम  
 (१०) " में खलन्त द्रुम

एकोरक द्वीप के मनुष्यों का सर्वांगीन वर्णन

- " " की ऊँचाई  
 " " की परतियाँ  
 " " की आहाररेच्छा का काल

एकोरक द्वीप की स्त्रियों का सर्वांगीन वर्णन

- " " की ऊँचाई  
 " " की आहाररेच्छा का काल

ब- एकोरक द्वीपवासी मनुष्यों के भोज्य पदार्थ

ट- एकोरक द्वीप की पृथ्वी का आस्वाद

ठ- " के कलों का "

ड- " के मनुष्यों का निवास स्थान

ढ- " के वृक्षों का संरक्षण

ण- " में गृह ग्राम, नगर आदि का अभाव

" में असि आदि कर्मों का अभाव

" में हिरण्य मुवर्ण आदि धातुओं का अभाव

" के मनुष्यों में अल्प ममत्व

" में राजा आदि-सामाजिक व्यवस्था का अभाव

" में दास्यकर्मों का अभाव

" में स्वजनों से अल्पप्रेम

" में वैरभाव का अभाव

" में मित्रादिका अभाव

एकादशद्वीप	मे नगानि व नृप्यो का अभाव म मान साधना का अभाव मे अन्वानि का सम्भाव म गिहानि का सद्भाव म धान्या का अभाव मे गन आनि का अभाव म स्थानु आनि का अभाव म इमि मन्धुर आनि का अभाव म सर्पानिवा सम्भाव म गृह्णन् आनि का अभाव मे युद्ध का अभाव मे रोगा का अभाव म मे अनिरुष्टि आनि का अभाव म लोहे आनि की खानो का अभाव मे अन्वाध्य महाध्य का अभाव मे त्रय विनय का अभाव
त	के मनुष्यो की स्थिति
व	के मनुष्यो की गति
द	दक्षिण के आभासिक द्वीप का स्थान आदि
ध	दक्षिण के मगोलिक द्वीप का स्थान आदि
न	दक्षिण के बंगालिक द्वीप का स्थान आनि
११२ क	दक्षिण के हयकण द्वीप का स्थान आनि
ख	दक्षिण के गजकण द्वीप का स्थान आनि
ग	गोकण द्वीप का स्थान आदि
घ	शङ्कुनीकण द्वीप का स्थान आनि
ङ	अ दगमुख द्वीप का स्थान आदि
च	अरवमुख द्वीप का स्थान आनि

- छ- " अश्वकर्ण द्वीप का स्थान आदि  
 ज- " उल्कामुख " "  
 झ- " घनदंत " "  
 ञ- आदर्श मुख आदि द्वीपों का अवग्रह, विष्कम्भ, परिधि आदि  
 ट- उत्तर के एकोरक द्वीप आदि द्वीपों का वर्णन  
 ११३ क- अकर्मभूमि मनुष्य तीस प्रकार के हैं  
 ख- कर्मभूमि मनुष्य पन्द्रह प्रकार के हैं

### देवयोनिक जीव

- ११४ चार प्रकार के देव  
 ११५ भवनवासी-यावत्-अनुत्तरविमानवासी देवों के भेद  
 ११६ भवनवासी देवों के भवनों का स्थान  
 ११७ दक्षिण के असुरकुमारों के भवनों का वर्णन  
 ११८ क- असुरेन्द्र की तीन परिपद  
 ख-घ- तीन परिपदों के देवों की संख्या  
 ङ-च- तीन परिपदों की देवियों की संख्या  
 ज-ड- तीन परिपद के देव-देवियों की स्थिति  
 ढ-ण- तीन परिपद की भिन्नता का हेतु  
 ११९ क- उत्तर के असुरकुमारों का वर्णन  
 ख- वैरोचनेन्द्र की तीन परिपद  
 ग- तीन परिपद के देव-देवियों की संख्या  
 घ- वैरोचनेन्द्र की और तीन परिपद के देव-देवियों की स्थिति  
 १२० क- दक्षिण उत्तर के नाग कुमारेन्द्र व उनकी तीन परिपद के देव-देवियों का वर्णन  
 ख- शेष दक्षिण-उत्तर के भवनेन्द्रों व उनकी तीन परिपद के देव-देवियों का वर्णन  
 १२१ व्यन्तर देवों के भवन, इन्द्र और परिपदों का वर्णन



१२२ क ज्योतिष्क देवों के विमानों का स्थान

ख सस्थान

ग सूत्र चन्द्र-ज्योतिषी देवों के इन्द्रों की तीन-तीन परिष्कारों

का वणन

१२३ क द्वीप-समुद्रों का स्थान

ख द्वीप-समुद्रों की सस्था

ग का सस्थान

घ का वणन

### जम्बूद्वीप-वणन

१२४ क जम्बूद्वीप के दूताचार की उपमाएँ

ख के सस्थान की

ग का आयाम विष्कम्भ

घ की परिधि

ङ की जगति की ऊँचाई

च की जगति के मूल मध्य और ऊपर का विष्कम्भ

छ का सस्थान

ज जगति की जाली की ऊँचाई विष्कम्भ

१२५ क पञ्चवर वेदिका की ऊँचाई विष्कम्भ

ख पञ्चवर वेदिका का वणन

ग की जातिव्यय

घ के ऋषि आदि के भित्तिव्यय

ङ पञ्चवरा आदि लताएँ

च म अणव्य स्वस्तिव्यय

छ वे विविध प्रकार के कमल

ज का गान्धर्व या अणव्यव्यय होता

झ की नियता

- १२६ क- वनखण्ड का चक्रवाल विष्कम्भ  
 ख- वनखण्ड का विस्तृत वर्णन  
 [शब्दोपमा वर्णन-अष्टरस, पट्दोष, एकादस अलंकार,  
 अपृगुण]
- १२७ क- वनखण्ड में विविध वापिकायें  
 ख- वापिकाओं के सोपान, तोरण  
 ग- वापिकाओं के समीप पर्वत  
 घ- पर्वतों पर विविध आसन शिलापट  
 ङ- वनखण्ड में अनेक प्रकार के लतागृह  
 च- लतागृहों में आसन, शिलापट  
 छ- वनखण्ड में विविध प्रकार के मण्डप  
 ज- वनखण्ड में विविध प्रकार के शिलापट  
 झ- शिलापटों पर देव-देवियों की क्रीड़ा  
 ञ- पद्मवर वेदिका पर बने वनखण्ड का विष्कम्भ  
 ट- वनखण्ड में देव-देवियों की क्रीड़ा
- १२८ जंबूद्वीप के चार द्वार
- १२९ क- जम्बूद्वीप के विजयद्वार का स्थान  
 ख- " " की ऊँचाई  
 ग- " " का विष्कम्भ  
 घ- " " के कपाट रचना  
 १३०-१३१ " " का विस्तृत वर्णन
- १३२ विजय देव के सामानिक देवों के भद्रासन  
 " की अग्रमहोपियों के भद्रासन  
 " की तीन परिपदों के "  
 " की सात सेनापतियों के "  
 " की आत्मरक्षक देवों के "

१२२ क ज्योतिष्क देवा के विमानों का स्थान  
 ख सस्थान  
 ग मूल चन्द्र ज्यानिपी देवों क दृष्टों की तीन-तीन परिपन्था  
 का वणन

१२३ क द्वीप समुदा का स्थान  
 ख द्वीप-समुदा की सस्था  
 ग का सम्पान  
 घ का वणन

### जम्बूद्वीप वणन

१२४ क जम्बूद्वीप के रत्ताकार की उपमाए  
 ख क सम्पान की  
 ग का आयाम विष्कम्भ  
 घ की परिधि  
 ङ की जगति की ऊचाई  
 च की जगति के मूल मध्य और ऊपर का विष्कम्भ  
 छ का सस्थान  
 ज जगति की आनी का ऊचाई विष्कम्भ

१२५ क पञ्चवर वेष्टि का ऊचाई विष्कम्भ  
 ख पञ्चवर वेष्टि का वणन  
 ग की जालिकाएँ  
 घ क हय आदि क भित्तिचित्र  
 ङ म पञ्चवना आनि लनाए  
 च म अणय स्वस्तिक  
 छ मे विविध प्रकार के कमल  
 ज का आस्वन या अणस्वन होना  
 झ- का नियता

१२६ ग- वनगण्ड का चक्रान्त विष्कम्भ

ग- वनगण्ड का विष्कम्भ वर्णन

[सन्ध्यायमा वर्णन-अष्टरस, षट्द्वीप, एकादश अक्षरकार,  
धृष्टगुण]

१२७ क- वनगण्ड में विविध यापिकायें

ग- यापिकाओं के गोपान, तोरण

ग- यापिकाओं के समीप पर्वत

घ- पर्वतों पर विविध आसन निन्नापट

ङ- वनगण्ड में अनेक प्रकार के ततागृह

च- ततागृहों में आसन, निन्नापट

छ- वनगण्ड में विविध प्रकार के गण्डप

ज- वनगण्ड में विविध प्रकार के निन्नापट

झ- निन्नापटों पर देव-देवियों की श्रींटा

ञ- पद्मवर वेदिका पर बने वनगण्ड का विष्कम्भ

ट- वनगण्ड में देव-देवियों की श्रींटा

१२८ जंबूद्वीप के चार द्वार

१२९ क- जम्बूद्वीप के विजयद्वार का स्थान

ग- " " की लेंचाई

ग- " " का विष्कम्भ

घ- " " के कपाट रचना

१३०-१३१ " " का विस्तृत वर्णन

१३२ विजय देव के सामानिक देवों के भद्रासन

" की अग्रमहीपियों के भद्रासन

" की तीन परिपटों के "

" की सात सेनापतियों के "

" की आत्मरक्षक देवों के "

१३३ विजयद्वार के उपरिभाग का वर्णन

- १३४ क- विजयद्वार नाम का हेतु  
 ल- विजय देव का परिवार  
 ग- विजय द्वार का साम्बन्ध नाम

द्वितीय मनुष्ययोनिज उद्देशक

- १३५ क- विजया राजधानी का स्थान  
 ' ' का आश्रम विष्णुम्भ  
 " का परिधि  
 ल- " के प्राकार की ऊँचाई  
 प्राकार क मूल मध्य और उपरिभाग विष्णुम्भ  
 विजया राजधानी के प्राकार का स्थान  
 ग- प्राकार क कनिशोदर का अश्रम विष्णुम्भ और ऊँचाई  
 घ- विजया राजधानी क द्वार की ऊँचाई और विष्णुम्भ  
 छ- विजया राजधानी के द्वार का बन्धन
- १३६ क- विजया राजधानी क चार दिशाओं में चार वनखण्ड  
 ल- वनखण्डों का आश्रम विष्णुम्भ  
 ग- वनखण्डों में दिव्य प्रामाद  
 घ- प्रामादों में चार महर्षिक देव  
 ङ- विजया राजधानी क मध्यभाग में उपकारिकालयन  
 च- उपकारिकालयन का आश्रम विष्णुम्भ  
 छ- की परिधि  
 ज- पक्षवत् वेदिका वनखण्ड भोजन होरण  
 झ- मूल प्रामादवनसक मण्डिरीटिका मिह्रासन परिवार,  
 झ- समीपवर्ती प्रामादों की ऊँचाई आश्रम, विष्णुम्भ आदि  
 ट- अन्य पासवर्ती प्रामादों की ऊँचाई " "
- १३७ क- विजय देव की सुधर्मा सभा  
 ल- सुधर्मा सभा की ऊँचाई आश्रम विष्णुम्भ

- ग- सुधर्मा सभा के तीन द्वारों की ऊँचाई और विष्कम्भ  
घ- मुलमण्डपों का आयाम-विष्कम्भ और ऊँचाई  
ङ- प्रेक्षाघर मण्डपों का आयाम-विष्कम्भ और ऊँचाई  
च- मणिपीठिकाओं का आयाम-विष्कम्भ और बाह्य  
छ- चैत्य स्तूपों का आयाम-विष्कम्भ बाह्य  
ज- मणिपीठिकाओं का आयाम-विष्कम्भ और बाह्य  
झ- चार जिन प्रतिमाओं की ऊँचाई  
ञ- चैत्य वृक्षों की ऊँचाई, उद्वेध, स्कंधों का विष्कम्भ, मध्य  
भाग, आयाम-विष्कम्भ, उपरिभाग का परिमाण, चैत्यवृक्षों  
का वर्णन  
ट- मणिपीठिकाओं का आयाम-विष्कम्भ और बाह्य  
ठ- महेन्द्र स्वजाओं की ऊँचाई, उद्वेध और विष्कम्भ  
ड- नन्दा पुष्करणियों का आयाम-विष्कम्भ और उद्वेध  
ढ- मनोगुलिकाओं की संख्या  
ण- गोमानसिकाओं की संख्या  
त- मणिपीठिकाओं का आयाम-विष्कम्भ और बाह्य  
थ- माणवक चैत्य स्तम्भों की ऊँचाई उद्वेध और विष्कम्भ  
द- जिन शकियों का स्थान  
ध- महा मणिपीठिकाओं का आयाम-विष्कम्भ और बाह्य  
न- सिंहासन वर्णन  
प- देवशयनीय वर्णन  
फ- मणिपीठिकाओं का आयाम विष्कम्भ और बाह्य  
ब- महेन्द्रध्वज की ऊँचाई, उद्वेध, विष्कम्भ  
भ- विजय देव का शस्त्रागार  
म- शस्त्रों का वर्णन  
य- सुधर्मा सभा, अष्ट मंगल  
१३८ क- सिद्धायतन का आयाम, विष्कम्भ और ऊँचाई

- स मणिपीठिका का आयाम विष्कम्भ और बाह्य  
 ग देवटंक का आयाम विष्कम्भ और उमकी ऊचाई  
 घ त्रिन प्रतिमाओं की सख्या और ऊचाई  
 ङ त्रिन प्रतिमाओं का वणन  
 च नाग यक्ष भूत आदि की प्रतिमाओं की सख्या  
 छ घटा चदनकल्प शृङ्गारक आदि की सख्या  
 ज अष्टमङ्गल सोलह रत्नभय  
 १३६ क उपपान सभा का वणन  
 ख मणिपीठिका का आयाम विष्कम्भ और बाह्य  
 ग देवगयनीय का वणन  
 घ हूँ का आयाम विष्कम्भ और उन्वेध  
 ङ अभिषेक सभा का वणन  
 च मणिपीठिका का आयाम विष्कम्भ और बाह्य  
 छ मिट्टायन वणन  
 ज अलकारिक सभा वणन  
 झ व्यवसाय सभा वणन  
 ञ पुस्तक रत्न वणन  
 ट मणिपीठिका का आयाम विष्कम्भ और बाह्य  
 १४० क विजयदेव की उत्पत्ति व पर्याप्ति  
 ख विजयदेव का मानसिक मकल्प  
 ग सामानिक देवा का आगमन  
 घ त्रिन प्रतिमाओं और मन्त्रिया की अर्चा क कस्तूर्य का निदण  
 ङ विजयदेव के अभिषेक का विस्तृत वणन  
 १४१ क विजयदेव की शृङ्गार वणन  
 ख विजय देव का पुस्तक-व्याख्याय  
 ग विजय देव का सिद्धायनन से आगमन त्रिन प्रतिमाओं की अर्चा का वणन

- घ- चैत्य स्तूप का प्रमाजंन  
 ङ- जिनप्रतिमा व जिन सक्थियों की अर्चापूजा  
 च- विजयदेव का मुघर्मा सभा में आगमन, सिंहासन पर पूर्वा-  
 भिमुख आसीन होना,  
 १४२ क- विजयदेव के समस्त परिवार का यथाक्रम से बैठना  
 ख- विजयदेव की स्थिति  
 ग- विजय देव के सामानिक देवों की स्थिति.  
 १४३ क- जंबूद्वीप के विजयंत द्वार का वर्णन  
 ख- " जयंत द्वार का वर्णन  
 ग- " अपराजित द्वार का वर्णन  
 १४४ जंबूद्वीप के एक द्वार से दूसरे द्वार का अन्तर  
 १४५ क- जंबूद्वीप से लवण समुद्र का और लवण समुद्र से जंबूद्वीप का  
 स्पर्श  
 ख- जंबूद्वीप के जीवों की लवण समुद्र में और लवण समुद्र के  
 जीवों की जंबूद्वीप में उत्पत्ति.

### उत्तरकुरुक्षेत्र वर्णन

- १४६ क- जंबूद्वीप में उत्तर कुरुक्षेत्र का स्थान  
 ख- उत्तर कुरुक्षेत्र का संस्थान और विष्कम्भ  
 ग- जीवा और वक्षस्कार पर्वत का स्पर्श  
 घ- धनुष्य की परिधि  
 ङ- उत्तरकुरुक्षेत्र के मनुष्यों की ऊँचाई, पसलियाँ, आहारेच्छा  
 काल, स्थिति और शिशुपालन काल.  
 च- उत्तरकुरुक्षेत्र में छ प्रकार के मनुष्य  
 १४७ उत्तरकुरु में दो यमक पर्वत  
 १४८ क- यमक पर्वतों का स्थान, ऊँचाई, उद्वेग, मूल, मध्य और  
 उपरिभाग का आयाम, विष्कम्भ, परिधि.



ख यमक पर्वता पर प्रासाद और प्रामादो की ऊँचाई  
ग यमक नाम होने का हेतु दा यमक देव, उनकी स्थिति, उनका  
देव परिधाय

घ- यमक पर्वतो की नित्यता सिद्धि

ङ- यमका राजधानियाँ का स्थान

१४६ क उत्तरकुण्ड में नीलवतद्रह का स्थान, आयाम विष्कम्भ और  
उद्देश

ख- पशु का आयाम, विष्कम्भ, परिधि, बाह्य, ऊँचाई और  
सर्वोपरिभाग

ग पञ्चकणिका का आयाम विष्कम्भ परिधि और बाह्य

घ भवन का आयाम विष्कम्भ और ऊँचाई

ङ भवन के द्वारों की ऊँचाई और विष्कम्भ

च मणिपीठिका का आयाम विष्कम्भ और बाह्य

छ देवशयनीय वयन

ज एक सौ आठ कमलों की ऊँचाई आदि

झ मणिकालो का आयाम विष्कम्भ

ञ पशु का परिवार सर्व पदुमों की मस्या

ट नीलवतद्रह नाम होने का हेतु

१५० क कचनग पर्वतो का स्थान

ग की ऊँचाई, उद्देश, मूल, मध्य और सर्वोपरि  
भाग का विष्कम्भ

ग प्रामादो की ऊँचाई विष्कम्भ

घ कचनग पर्वत नाम होने का हेतु

ङ- कचनग देव कचनगा राजधानी

च उत्तरकुण्ड का स्थान आदि

छ चन्द्र इह, एरावत इह, मान्यव न इह

१५१ क- जम्बूपीठ का स्थान

ख- जम्बूपीठ का आयाम, विष्कम्भ, परिधि, मध्यभाग का और अन्तिम भाग का वाहल्य

ग- मणिपीठिका का आयाम-विष्कम्भ और वाहल्य

घ- जंबू-सुदर्शन वृक्ष की ऊँचाई उद्वेध, स्कंध का विष्कम्भ. मध्यभाग का और सर्वोपरि भाग का विष्कम्भ. जंबू-दर्शन वृक्ष का वर्णन

१५२ क- जम्बू-सुदर्शन की चार शाखायें

ख- शाखाओ पर भवन, उनका आयाम, विष्कम्भ और ऊँचाई आदि

ग- भवन द्वारों की ऊँचाई विष्कम्भ आदि

घ- जम्बू-सुदर्शन के उपरिभाग मे सिद्धायतन. सिद्धायतन का आयाम-विष्कम्भ, ऊँचाई, सिद्धायतन के द्वारो की ऊँचाई, विष्कम्भ आदि देव छदक, जिनप्रतिमा आदि.

ङ- पार्श्ववर्ती अन्य जम्बू-सुदर्शनों की ऊँचाई आदि

च- अनाधृत देव और उसका परिवार

छ- जम्बू-सुदर्शन वृक्ष के चारों ओर तीन वनखण्ड

ज- प्रत्येक वनखण्ड में भवन

झ- चार नन्दा पुष्करिणियाँ, उनका आयाम-विष्कम्भ आदि

ञ- नन्दा पुष्करिणी के मध्य प्रासाद की ऊँचाई आदि.

ट- सर्व पुष्करिणियों के नाम

ठ- एक महान कूट

कूटों की ऊँचाई विष्कम्भ आदि

कूटों पर सिद्धायतन का वर्णन

ड- जम्बू-सुदर्शन वृक्ष पर अष्टमंगल

ढ- जम्बू-सुदर्शन वृक्ष के द्वारह नाम

ण- जम्बू-सुदर्शन नाम का हेतु

त- अनाधृत देव की स्थिति

घ अनाधुना राजधानी का स्थान आदि

द जम्बूद्वीप नाम की नित्यता

१५३ क जम्बूद्वीप में चार मध्या

ख ' मध्य "

ग " नक्षत्र "

क " महाघट्ट "

ङ- ' तारागण "

### सवणसमुद्र वर्णन

१५४ क सवण समुद्र का संस्थान

ख ' का चक्रवात विष्कम्भ

ग " की परिधि

घ ' की श्रमवर वेदिना की ऊँचाई और वनस्पति

ङ " के द्वार द्वारा का जनन

च सवण समुद्र और घानकीखण्ड का परस्पर स्पर्श

छ सवण समुद्र के जीवा की घानकीखण्ड में और घानकीखण्ड के जीवा की सवण समुद्र में उत्पत्ति

ज सवण समुद्र नाम होने का हेतु

झ सवणाधिपति मुस्थिन देव की स्थिति

ञ सवण समुद्र की नित्यता

१५५ क सवण समुद्र में चार मध्या

ख " मध्य "

ग " नक्षत्र "

घ " महाघट्ट "

ङ " तारा "

१५६ क अष्टमी आदि निधिया में सवण समुद्र की वेला रुद्धि

ख सवण समुद्र में चार पाताल कलश पाताल कलशों के मूल, मध्य और उपरिभाग का विष्कम्भ

ग- पातालकलशों में जीवों और पुद्गलों का चयापचय.

घ- पातालकलशों के तीन भाग

ङ- प्रत्येक भाग में वायु और पानी

च- अनेक क्षुद्र पातालकलशों के मूल, मध्य और उपरिभाग का परिमाण

छ- क्षुद्र पातालकलशों में जीवों और पुद्गलों का चयापचय

ज- प्रत्येक पातालकलश में एक देव, देव की स्थिति

झ- प्रत्येक पातालकलश के तीनों भाग में वायु, पानी का अस्तित्व

ञ- सर्व पातालकलशों की संख्या

ट- पातालकलशों में वायु-पानी का घटन, स्पंदन, वेलावृद्धि का कारण

१५७ तीसमूहूर्त में लवण समुद्र की वेला-वृद्धि व वेला-हानि

१५८ क- लवण शिखा की वृद्धि-हानि का परिमाण

ख- लवणसमुद्र की बाह्याभ्यन्तर वेला वृद्धि को रोकने वाले नागदेवों की संख्या

१५९ क- चार वेलंघर नागराज

ख- नागराजों के आवास पर्वत

ग- गोस्तुभ वेलघर नागराज का गोस्तुभ आवास का पर्वत का स्थान, मूल, मध्य और उपरिभाग का परिमाण, पद्मवर वेदिका, वनखण्ड

घ- प्रासादावतंसक का परिमाण

ङ- गोस्तुभ नाम का हेतु, गोस्तुभ देव, स्थिति, देवपरिवार, गोस्तुभा राजधानी का परिमाण

च- शिवक वेलघर नागराज के दक्षभास आवास पर्वत की ऊँचाई आदि

झ- शंखदेव, शंखा राजधानी

ज राम बलधर नागराज का दशमीय आवास पवत का स्थान  
ऊर्चाई आदि

झ गल्लेव गला राजधानी

ञ मनोमील बलधर नागराज का ३ दशमीय आवास पवत का  
ऊर्चाई आदि

ट मनोमील देव मनोमीला राजधानी

१६० क धार अनुबेलधर नागराज

ख इनके चार आवास पवत

ग कर्कोटक अनुबेलधर नागराज का कर्कोटक आवास पवत का  
स्थान परिमाण कर्कोटक नाम का हेतु कर्कोटक देव  
कर्कोटका राजधानी

घ कदम अनुबेलधर नागराज का कदम आवास पवत का स्थान  
परिमाण आदि कदम देव कदमा राजधानी

ड केलाग पवन गोस्तुभ के समान

च अरुणप्रभ

लवणाधिप सुस्थित देव के गीतमद्वीप का वणन

१६१ क गीतम द्वीप का स्थान आवास विष्कम्भ परिधि पञ्चवर  
वेनिका वनस्तम्भ

ख कीर्णवास की ऊर्चाई विष्कम्भ

ग मणिपीठिका का आवास विष्कम्भ और दाह्य देवगयनीय  
का वणन

घ गीतम द्वीप नाम का हेतु

ङ मुन्धिन देव सुस्थिता राजधानी

जम्बूद्वीप के सद्द्वीपों का वणन

१६२ क चन्द्रद्वीप का स्थान

ख की ऊर्चाई

- ग- चन्द्रद्वीप का आयाम-विष्णुम्भ  
 घ- ज्योतिषी देवों का प्रीड़ा म्यन  
 छ- प्रागादायतंगक का आयाम-विष्णुम्भ  
 च- मणिपीठिका का परिमाण

छ- चन्द्रद्वीप नाम का हेतु, चन्द्रदेव, चन्द्रा राजधानी

जम्बूद्वीप के सूर्य और उनके सूर्यद्वीपों का वर्णन

क- सूर्य द्वीप का स्थान

ख- " का आयाम-विष्णुम्भ, और परिधि

ग- पद्मवर वेदिका, वनमण्ड, प्रागादायतंगक, मणिपीठिका

घ- सूर्यद्वीप नाम का हेतु, सूर्य उत्पन्न, सूर्यदेव, सूर्या राजधानी

लवण समुद्र के आश्रयन्तः चन्द्र, सूर्य और उनके चन्द्रसूर्य द्वीपों का वर्णन

\*१६३ क- चन्द्र द्वीपों के स्थान आदि [जम्बू के चन्द्रद्वीप के समान वर्णन]

ख- सूर्य द्वीपों के स्थान आदि [जम्बू के सूर्यद्वीप के समान वर्णन]

ग- लवण समुद्र के बाह्य चन्द्र, सूर्य और उनके चन्द्रसूर्य द्वीप

घातकीखण्ड के चन्द्र सूर्य और उनके चन्द्रसूर्य द्वीप

\*१६४ क- चन्द्रद्वीपों के स्थान आदि

ख- सूर्य द्वीपों के स्थान आदि

ग- चन्द्रद्वीपों के स्थान आदि

घ- सूर्यद्वीपों के स्थान आदि

\*१६५ कालोद समुद्र के चन्द्रसूर्य और उनके चन्द्रसूर्य द्वीप

क- चन्द्र द्वीपों के स्थान आदि

ख- सूर्य द्वीप स्थान आदि

पुष्कर वर द्वीप के चन्द्र सूर्य और उनके चन्द्रसूर्यद्वीप

ग- चन्द्रद्वीपों के स्थान आदि

घ- सूर्य द्वीपों के स्थान आदि

- १६६ द्वीप समुद्रों के नाम
- १६७ क दश द्वीप के चन्द्र मूय और उनके चन्द्रमूय द्वीप चन्द्रमूय द्वीप के स्थान आदि  
ख मूयद्वीप के स्थान आदि दश समुद्र के चन्द्र मूय और उनके चन्द्र मूय द्वीप  
ग चन्द्र द्वीप के स्थान आदि  
घ मूय द्वीप के स्थान आदि  
ङ नाग यक्ष भूत द्वीप और समुद्र चन्द्र मूय द्वीप  
च स्वयम्भूरमण द्वीप में चन्द्र मूय द्वीप  
छ स्वयम्भूरमण समुद्र में चन्द्र मूय द्वीप
- १६८ क लवणसमुद्र के बेलघर मच्छ बच्छ  
ग बाह्य समुद्रों में बेलघरों का अभाव
- १६९ क लवणसमुद्र में अच्छिन्नत्व है  
ख बाह्य समुद्रों में प्रसन्नत्व है ।  
ग लवण समुद्र में मेष आदि का सम्भाव  
घ बाह्य समुद्रों में मेष आदि का अभाव  
ङ मेष आदि का अभाव का हेतु
- १७० क लवण समुद्र का उदवेध का परिमाण  
ख उदवेध का परिमाण
- १७१ क लवण समुद्र का गोतीथ का परिमाण  
ख गोतीथ विरहित क्षेत्र का परिमाण  
ग लवण समुद्र का उत्पन्नत्व का परिमाण
- १७२ क लवण समुद्र का मस्थान  
ख चक्रवान विष्णु  
ग की परिधि  
घ का उत्पन्न  
ङ का उत्पन्न  
च का सर्वप्र भाग

१७३ लवण समुद्र के पानी को जम्बूद्वीप में फैलने से रोकने वाले  
निमित्त कारण-हेतु

### घातकीखण्ड का वर्णन

- १७४ क- घातकीखण्ड का संस्थान  
ख- " का चक्रवाल-विष्कम्भ  
ग- " का चक्रवाल-परिधि  
घ- " की पद्मवर वेदिका और वनखण्ड  
ङ- घातकीखण्ड के चार द्वार  
च- प्रत्येक द्वार का अन्तर  
छ- घातकीखण्ड और कालोद समुद्र का परस्पर स्पर्श  
ज- घातकीखण्ड और कालोद समुद्र के जीवों की घातकीखण्ड  
और कालोद समुद्र में उत्पत्ति,  
झ- घातकीखण्ड नाम होने का हेतु  
ञ- घातकी महाघात की वृक्ष. इन पर रहने वाले देव. देवों की  
स्थिति  
ट- घातकीखण्ड की नित्यता  
ठ- घातकीखण्ड के चन्द्र  
" सूर्य  
" महाग्रह  
" नक्षत्र  
" तारा

### कालोद समुद्र का वर्णन

- १७५ क- कालोद समुद्र का संस्थान  
ख- " का चक्रवाल-विष्कम्भ  
ग- " का चक्रवाल-परिधि  
घ- " की पद्मवर वेदिका, वन खण्ड.  
ङ- " के चार द्वार  
च- " के प्रत्येक द्वार का अन्तर



मनुष्यलोक	मे प्रत्येक पिटक मे ग्रह
"	म चन्द्र सूर्य की पक्तियाँ
"	मे प्रत्येक पक्ति मे चन्द्र सूर्य
"	म नक्षत्रों की पक्तियाँ
"	म प्रत्येक पक्ति मे नक्षत्र
"	मे ग्रहों की पक्तियाँ
"	मे प्रत्येक पक्ति मे ग्रह
"	मे चन्द्र सूर्य ग्रह के चरमण्डल
"	मे नक्षत्र और तारा के अवस्थित मण्डल
"	मे चन्द्र सूर्य का मण्डल मन्वमण
"	मे मनुष्यों के सुख का निमित्त चन्द्र सूर्य

नक्षत्र और ग्रहा की गति

ताम क्षेत्र की हानि वृद्धि

" का संस्थान

चन्द्र की हानि वृद्धि का कारण

मनुष्य क्षेत्र मे चर चन्द्रादि

स बाहर स्थिर चन्द्रादि

अर्थाई द्वीप मे चन्द्र सूर्य

मनुष्य क्षेत्र मे चन्द्र सूर्य का अन्तर

सूर्य से सूर्य का अन्तर

के बाहर चन्द्र सूर्य

एक चन्द्र का परिवार

मनुष्य क्षेत्र क बाहर स्थिर चन्द्र सूर्य

" चन्द्र क साथी ग्रह

सूर्य क साथी ग्रह



- १७८ क- मानुषोत्तर पर्वत की ऊंचाई  
 ग- " की उद्वेध  
 ग- " के मूल का विष्कम्भ  
 घ- " के मध्य का "  
 ङ- " के उपर का "  
 च- " के अन्दर की परिधि  
 छ- " के बाहर की परिधि  
 ज- " के मध्य की "  
 झ- " के उपर की "  
 ञ- " की पञ्चवर वेदिका, वन मण्ड  
 ट- मानुषोत्तर पर्वत नान होने का हेतु,  
 लोक सीमा का श्रंखन  
 ठ- लोक सीमा के अनेक विकल्प
- १७९ क- मनुष्य क्षेत्र में चन्द्रादि ज्योतिषी देवों की मण्डलाकार गति  
 ग- इन्द्र के अभाव में सामानिक देवों द्वारा शासन  
 ग- इन्द्र का जघन्य उत्कृष्ट विरहकाल  
 घ- मनुष्य क्षेत्र बाहर के चन्द्रादि ज्योतिषी देवों की एक स्थान स्थिति  
 ङ- इन्द्र के अभाव में सामानिक देवों द्वारा शासन  
 च- इन्द्र का जघन्य उत्कृष्ट विरहकाल
- १८० क- पुष्करोद समुद्र का संस्थान  
 ख- " का चक्रवाल विष्कम्भ  
 ग- " की चक्रवाल परिधि  
 घ- " के चार द्वार  
 ङ- प्रत्येक द्वार का अन्तर  
 च- पुष्कर वर द्वीप ओर पुष्करवर समुद्र का परस्पर स्पर्श  
 छ- दोनों के जीवों की एक-दूसरे में उत्पत्ति

मनुष्यलोक      म प्रत्येक पिटक म ग्रह  
 म चन्द्र सूर्य की पत्तियाँ  
 में प्रत्येक पक्ति मे चन्द्र सूर्य  
 म नक्षत्रों की पत्तियाँ  
 म प्रत्येक पक्ति मे नक्षत्र  
 म ग्रहों की पत्तियाँ  
 मे प्रत्येक पक्ति मे ग्रह  
 में चन्द्र सूर्य ग्रह के चरमण्डल  
 मे नक्षत्र और तारों के अवस्थित मण्डल  
 मे चन्द्र सूर्य का मण्डल सशमण  
 मे मनुष्यों के मुख का निमित्त चन्द्र सूर्य

नक्षत्र और ग्रहों की गति  
 ताप क्षेत्र की हानि वृद्धि  
 का मस्थान

चन्द्र की हानि वृद्धि का कारण  
 मनुष्य क्षेत्र मे अर च आदि  
 से बाहर स्थिर च आदि  
 अन्तर्द्वीप मे चन्द्र सूर्य  
 मनुष्य क्षेत्र म चन्द्र सूर्य का अन्तर  
 सूर्य से सूर्य का अन्तर  
 क बाहर चन्द्र सूर्य

एक चन्द्र का परिवार

मनुष्य क्षेत्र क बाहर स्थिर चन्द्र सूर्य  
 चन्द्र के साथी ग्रह  
 मण्डल के साथी ग्रह

- १७८ क- मानुषोत्तर पर्वत की ऊंचाई  
 ख- " की उन्वेध  
 ग- " के मूल का विष्कम्भ  
 घ- " के मध्य का "  
 ङ- " के उपर का "  
 च- " के अन्दर की परिधि  
 छ- " के बाहर की परिधि  
 ज- " के मध्य की "  
 झ- " के उपर की "  
 ञ- की पशवर वेदिका, वन खण्ड
- द- मानुषोत्तर पर्वत नाम होने का हेतु,  
 लोक सीमा का श्रंखन  
 ठ- लोक सीमा के अनेक विकल्प
- १७९ क- मनुष्य क्षेत्र में चन्द्रादि ज्योतिषी देवों की मण्डलाकार गति  
 ख- इन्द्र के अभाव में सामानिक देवों द्वारा शासन  
 ग- इन्द्र का जघन्य उत्कृष्ट विरहकाल  
 घ- मनुष्य क्षेत्र बाहर के चन्द्रादि ज्योतिषी देवों की एक स्थान स्थिति  
 ङ- इन्द्र के अभाव में सामानिक देवों द्वारा शासन  
 च- इन्द्र का जघन्य उत्कृष्ट विरहकाल
- १८० क- पुष्करोद समुद्र का सस्थान  
 ख- ,, का चक्रवाल विष्कम्भ  
 ग- ,, की चक्रवाल परिधि  
 घ- ,, के चार द्वार  
 ङ- प्रत्येक द्वार का अन्तर  
 च- पुष्कर वर द्वीप ओर पुष्करवर समुद्र का परस्पर स्पर्श  
 छ- दोनों के जीवों की एक-दूसरे में उत्पत्ति

- छ कालोद समुद्र और पुष्करवर द्वीप का परस्पर स्पर्श  
 ज कालोद समुद्र और पुष्करवर द्वीप के जीवों की एक दूमरे में  
 उत्पत्ति  
 झ कालोद समुद्र नाम होने का हेतु  
 ञ काल महाकाल देव स्थिति  
 ट कालोद समुद्र की निर्यता  
 ठ कालोद समुद्र में चन्द्र  
 सूय  
 महाग्रह  
 मक्षत्र  
 तारा

### पुष्करवर द्वीप का वर्णन

- १७६ क पुष्करवर द्वीप का स्थान  
 ख का चतुर्मुख विष्णुम्ह  
 ग की परिधि  
 घ की पद्म वेदिका वनलण्ड  
 ङ के चार द्वार  
 च के प्रवेश द्वार का अन्त  
 छ कालोद समुद्र और पुष्करवर द्वीप के प्रदेशों का परस्पर  
 स्पर्श  
 ज कालोद समुद्र और पुष्करवर द्वीप के जीवों की एक दूमरे में  
 उत्पत्ति  
 झ- पुष्करवर द्वीप नाम होने का हेतु  
 ञ पश्च और महाग्रह वृश्चि और पुडरीक देवों की स्थिति  
 पुष्करवर द्वीप की निर्यता

- ट- पुष्करवर द्वीप में चन्द्र  
 " सूर्य  
 " महाग्रह  
 " नक्षत्र  
 " तारा

ठ- मानुषोत्तर पर्वत से पुष्करवर द्वीप के दो विभाग

ड- अन्यन्तर पुष्करार्ध की चक्रवाल परिधि

ढ- अन्यन्तर पुष्करार्ध नाम होने का हेतु

- ण- अन्यन्तर पुष्करार्ध में चन्द्र  
 " सूर्य  
 " महाग्रह  
 " नक्षत्र  
 " तारा

१७७ क- समय क्षेत्र का आयाम-दिक्मन्

ख- " की परिधि

ग- मनुष्य क्षेत्र नाम होने का हेतु

घ- मनुष्य क्षेत्र में चन्द्र

- " सूर्य  
 " महाग्रह  
 " नक्षत्र  
 " तारा

ट- मनुष्यलोक के अन्दर और बाहर के तारा. ताराओं की गति.

च- मनुष्य लोक में चन्द्र सूर्य के पिटक

- " में प्रत्येक पिटक में चन्द्र सूर्य  
 " में नक्षत्रों के पिटक  
 " में प्रत्येक पिटक में नक्षत्र  
 " में महाग्रहों के पिटक

मनुष्यकोक म प्रयेक पिष्क म ग्रह  
 म चन्द्र मूय की पत्तियाँ  
 म प्रत्येक पक्ति मे चन्द्र मूय  
 म नक्षत्रो की पत्तियाँ  
 म प्रत्येक पक्ति म नक्षत्र  
 मे ग्रहो की पत्तियाँ  
 म प्रयेक पक्ति मे ग्रह  
 मे चन्द्र मूय ग्रह के चरमण्डल  
 मे नक्षत्र और तारो के अवस्थित मण्डल  
 मे चन्द्र मूय का मण्डल सत्रमण  
 मे मनुष्यो क मुस का निमित्त चन्द्र मूय

नक्षत्र और ग्रहो की मनि

ताप क्षेत्र की हानि वृद्धि

का सस्थान

चन्द्र की हानि वृद्धि का कारण

मनुष्य क्षेत्र म चर च दानि

मे बाहर स्थिर चन्द्रादि

अगई द्वीप मे चन्द्र मूय

मनुष्य क्षेत्र म चन्द्र मूय का अन्तर

मूय मे मूय का अन्तर

के बाहर चन्द्र मूय

एक चन्द्र का परिवार

मनुष्य क्षेत्र के बाहर स्थिर च = मूय

चन्द्र के साथी ग्रह

मूय के साथी ग्रह

- १७८ क- मानुषोत्तर पर्वत की ऊंचाई  
 ख- " की उद्वेघ  
 ग- " के मूल का विष्कम्भ  
 घ- " के मध्य का "  
 ङ- " के उपर का "  
 च- " के अन्दर की परिधि  
 छ- " के बाहर की परिधि  
 ज- " के मध्य की "  
 झ- " के उपर की "  
 ञ- " की पद्मवर वेदिका, वन खण्ड  
 ट- मानुषोत्तर पर्वत नाम होने का हेतु,  
 लोक सीमा का अर्थकन  
 ठ- लोक सीमा के अनेक विकल्प
- १७९ क- मनुष्य क्षेत्र में चन्द्रादि ज्योतिषी देवों की मण्डलाकार गति  
 ख- इन्द्र के अभाव में सामानिक देवों द्वारा शासन  
 ग- इन्द्र का जघन्य उत्कृष्ट विरहकाल  
 घ- मनुष्य क्षेत्र बाहर के चन्द्रादि ज्योतिषी देवों की एक स्थान  
 स्थिति  
 ङ- इन्द्र के अभाव में सामानिक देवों द्वारा शासन  
 च- इन्द्र का जघन्य उत्कृष्ट विरहकाल
- १८० क- पुष्करोद समुद्र का सस्यान  
 ख- " का चक्रवाल विष्कम्भ  
 ग- " की चक्रवाल परिधि  
 घ- " के चार द्वार  
 ङ- प्रत्येक द्वार का अन्तर  
 च- पुष्कर वर द्वीप और पुष्करवर समुद्र का परस्पर स्पर्श



- र- मूरवरावभाम द्वीप का    "    "  
 स-           "    समुद्र का    "    "  
 व- देवद्वीप का                   "    "  
 श- देवोद समुद्र का               "    "  
 स- स्वयभूरमण द्वीप का         "    "  
 हं-           "    समुद्र का       "    "

3

१८६ एक नाम के द्वीप समुद्रों का सख्या परिमाण

१८७ क- लवण समुद्र के पानी का आस्वाद

- ख- कालोद           "           "  
 ग- पुष्करोद         "           "  
 घ- वरुणोद           "           "  
 ङ- क्षीरोद           "           "  
 च- घृतोद             "           "  
 छ- क्षीरोद           "           "  
 ज- शय समुद्र के                 "

झ- प्रत्येक रसवाले<sup>१</sup> चार समुद्र

ञ- उदक रसवाले तीन समुद्र

१८८ क बहुल मच्छ कच्छ वाले तीन समुद्र

ख अल्प मच्छ कच्छ वाले दोष समुद्र

ग लवण समुद्र में मत्स्यो की कुलकोटी

घ- कालोद           "           "

ङ- स्वयभूरमण       "           "

च- लवण समुद्र में मत्स्यो की जषम्य उरुहृष्ट अवगाहना

छ- कालोद           "           "

ज- स्वयभूरमण समुद्र में

१ नामानुसार पदार्थ के रसवाले

- १८६ क- द्वीप-समुद्रों के उद्धार समय  
 ख- द्वीप-समुद्रों के उद्धार समय  
 १८७ क- द्वीप-समुद्रों का पृथ्वी परिणमन-यावत्-पुद्गल परिणमन  
 ख- सर्वद्वीप समुद्रों में सर्वजीवों की उत्पत्ति

### इन्द्रियों के विषय

- १८१ क- पाँच इन्द्रियों के विषय  
 ख- श्रोत्रेन्द्रिय के दो विषय-यावत्-स्पर्शेन्द्रिय के दो विषय  
 ग- सुशब्द का दुःशब्द रूप में परिणमन-यावत्-सुस्पर्श का दुःस्पर्श रूप में परिणमन

### ज्योतिष्क उद्देशक

#### देवता की गति

- १८२ क- देवता की दिव्य गति  
 देवता की वैक्रेय शक्ति  
 ख- बाह्य पुद्गलों के ग्रहण से ही विकुर्वणा का कर सकना  
 ग- भूक्ष्म देव वैक्रेय को छद्मस्थ द्वारा न देख सकना  
 घ- बालक का छेदन-भेदन क्रिये बिना बालक का ह्रस्व-दीर्घकरण का सामर्थ्य

- १८३ क- चन्द्रसूर्यों के नीचे समान और ऊपर छोटे बड़े ताराओं का अस्तित्व  
 ख- ऐसा होने का कारण

१८४ एक एक चन्द्र-सूर्य का परिवार परिमाण

- १८५ क- जम्बूद्वीप के मेरु से ज्योतिषी देवों के गतिक्षेत्र का अन्तर  
 ख- लोकान्त से ज्योतिषी देवों के गतिक्षेत्र का अन्तर  
 ग- रत्नप्रभा के उपरिभाग से ताराओं का अन्तर  
 घ- रत्नप्रभा के उपरिभाग से सूर्य विमान का अन्तर

- २११ सौधम यावत् अनुत्तर विमानो की भिन्न भिन्न सस्यान
- २१२ सौधम यावत् अनुत्तर विमानो के भिन्न भिन्न ऊँचाई
- २१३ क सौधम यावत् अनुत्तर विमानो वा भिन्न भिन्न आशाम विष्कम्भ  
और परिधि  
ख सौधम-यावत् अनुत्तर विमानो के भिन्न भिन्न वण प्रभा,  
गन्ध और स्पश  
ग सब विमानो की पौद्गलिष रचना  
घ सब विमाना म जीवों और पुद्गलो का शयोपचय  
ङ सब विमानो की निरयता  
च सब विमानो मे जीवो की उत्पत्ति का भिन्न भिन्न क्रम  
छ सब विमानो का जीवों मे सवधा रिचन न होना  
ज सौधम यावत् अनुत्तर देवो की भिन्न २ अवगाहना शरीरमान  
झ यवेयक और अनुत्तर देवो का वैक्य न करना
- २१४ क सौधम-यावत्-अनुत्तर देवो के सधयण का अभाव पुद्गलो वा  
शुभ परिणमन  
ख सौधम यावत् अनुत्तर देवों का सस्यान<sup>१</sup>
- २१५ क सौधम यावत् अनुत्तर देवों के शरीरों का भिन्न २ वण,  
गन्ध स्पश  
ख वैमानिक देवो के श्वासो-च्छ्वास के पुद्गल  
ग आहार के पुद्गल  
घ वैमानिक देवो के लेश्या यावत् उपयोग द्वार
- २१६ वैमानिक देवों के अकविज्ञान की भिन्न भिन्न अवधि
- २१७ क वैमानिक देवों के भिन्न २ समुदधान  
ख वैमानिक देवो मे क्षुधा पिपासा की वेग्न का अभाव  
ग वैमानिक-देवो की भिन्न २ प्रकार की वैक्य शक्ति  
घ वैमानिक देवो का साता वेदन  
ङ वैमानिक देवो की छसरोत्तर महर्षी

- २१८ वैमानिक देवों की वेपभूषा  
 २१९ वैमानिक देवों के काम भोग  
 २२० क- वैमानिक देवों की भिन्न २ स्थिति  
 ख- " " गति  
 २२१ सर्व विमानों में पट्टकाय रूप में सर्वजीवों की उत्पत्ति  
 २२२ क- सर्व नैरयिकों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति  
 ख- सर्व तिर्यंचों की " "  
 ग- सर्व मनुष्यों की " "  
 घ- सर्व देवों की " "  
 ङ- नैरयिकों का जघन्य उत्कृष्ट संस्थिति काल  
 च- तिर्यंचों का " "  
 छ- मनुष्यों का " "  
 ज- देवों का " "  
 झ- नैरयिक, मनुष्य और देवों का जघन्य उत्कृष्ट अन्तर काल  
 ञ- तिर्यंचों का जघन्य उत्कृष्ट अन्तर काल  
 २२३ नैरयिक, तिर्यंच, मनुष्य और देवों का अल्प-बहुत्व

### चतुर्थ पंचविध जीव प्रतिपत्ति

- २२४ क- संसार स्थित जीव पाँच प्रकार के  
 ख- एकेन्द्रिय-यावत्-पंचेन्द्रिय दो-दो प्रकार के  
 ग- एकेन्द्रिय-यावत्-पंचेन्द्रियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति -  
 घ- एकेन्द्रिय-यावत्-पंचेन्द्रियों का भिन्न २ जघन्य उत्कृष्ट-संस्थिति काल  
 ङ- एकेन्द्रिय-यावत्-पंचेन्द्रियों का भिन्न २ जघन्य उत्कृष्ट अन्तर काल  
 २२५ एकेन्द्रिय-यावत्-पंचेन्द्रियों का अल्प-बहुत्व  
 २२६ क- संसार स्थित जीव ६ प्रकार के

- २११ सौधम-यावत-अनुत्तर विमानों की भिन्न भिन्न सस्यान
- २१२ सौधम-यावत अनुत्तर विमानों के भिन्न भिन्न ऊर्ध्व
- २१३ क सौधम यावत-अनुत्तर विमानों का भिन्न भिन्न आधम विद्यमान और परिधि
- ख सौधम-यावत अनुत्तर विमानों के भिन्न भिन्न वण प्रमा गण और स्पष्ट
- ग सब विमानों की पौन्यगतिक रचना
- घ सब विमानों में जीवों और पुन्यगतों का अयोपचय
- ङ सब विमानों की निश्चयता
- च सब विमानों में जीवों की उत्पत्ति का भिन्न भिन्न क्रम
- छ सब विमानों में जीवों से सबका रिक्त न होना
- ज सौधम यावत-अनुत्तर देवों की भिन्न २ अवगाहना परीक्षण
- झ प्रवेयक और अनुत्तर देवों का वक्रय न करना
- २१४ क सौधम यावत अनुत्तर देवों के सधयन का अभाव-पुन्यगतों का शुभ परिचयन
- ख सौधम-यावत अनुत्तर देवों का सस्यान<sup>१</sup>
- २१५ क सौधम यावत अनुत्तर देवों के परीक्षण का भिन्न २ वण गण स्पष्ट
- ख धर्मानिक देवों के ध्यासोच्छ्वास के पुन्यगत
- ग आहार के पुन्यगत
- घ धर्मानिक देवों के लेश्या यावत उपयोग द्वार
- २१६ धर्मानिक देवों के अविज्ञान की भिन्न भिन्न अवधि
- २१७ क धर्मानिक देवों के भिन्न २ समुदाय
- ख धर्मानिक देवों में शुभा पिशाचा की वेदन का अभाव
- ग धर्मानिक-देवों की भिन्न २ प्रकार की वक्रिय शक्ति
- घ धर्मानिक देवों का साया वेदन
- ङ धर्मानिक देवों की अन्तरीतर महर्षी

- छ- निगोद जीव क-से-च तक के समान  
 ज- द्रव्य की अपेक्षा से निगोद-क-से-च तक के समान  
 झ- द्रव्य की अपेक्षा से निगोद जीव क-से-च तक के समान  
 ञ- प्रदेशों की अपेक्षा से निगोद क-से-च तक के समान  
 ट- प्रदेशों की अपेक्षा से निगोद जीव क-से-च तक के समान  
 ठ- निगोद की अल्प-बहुत्व  
 ड- निगोद जीवों की अल्प-बहुत्व

### षष्ठा सप्तविध जीव-प्रतिपत्ति

- २४० क- संसार स्थित जीव सात प्रकार के  
 ख- सात प्रकार के संसारी जीवों की स्थिति  
 ग- सात प्रकार के संसारी जीवों का संस्थिति काल  
 घ- " " " अन्तर काल  
 ङ- " " " अल्प-बहुत्व

### सप्तमा अष्टविध जीव-प्रतिपत्ति

- २४१ क- संसार स्थित जीव आठ प्रकार के  
 ख- आठ प्रकार के संसारी जीवों की स्थिति  
 ग- " " " का संस्थिति काल  
 घ- " " " का अन्तर काल  
 ङ- " " " का अल्प-बहुत्व

### अष्टमा नवविध जीव-प्रतिपत्ति

- २४२ क- संसार स्थित जीव नौ प्रकार के  
 ख- नौ प्रकार के संसारी जीवों की स्थिति  
 ग- " " " का संस्थिति  
 घ- " " " का अन्तर काल  
 ङ- " " " का अल्प बहुत्व

- ख पृथ्वीकाय-भावत प्रसकाय के प्रत्येक के दो दो भेद  
 २२७ पृथ्वीकायिक-भावन प्रसकायिक जीवों की भिन्न २ स्थिति  
 २२८ क पटकायिक जीवों का भिन्न २ सस्थिति काल  
 ख पटकायिक जीवों का भिन्न २ अन्तर काल  
 २२९ पटकायिक जीवों का अल्प बहुत्व  
 २३० सूक्ष्म पटकायिक जीवों की स्थिति  
 २३१ सूक्ष्म पटकायिक जीवों का सस्थिति काल  
 २३२ अन्तर काल  
 २३३ अल्प-बहुत्व  
 २३४ वायु पटकायिक जीवों की स्थिति  
 २३५ का सस्थिति काल  
 २३६ का अन्तर काल  
 २३७ का अल्प-बहुत्व
- निगोत्र वर्णन
- २३८ क निगोत्र दो प्रकार के  
 ख निगोत्राशय  
 ग सूक्ष्म निगोत्राशय  
 घ वायु निगोत्राशय  
 ङ निगोत्र जीव  
 च सूक्ष्म निगोत्र जीव  
 छ वायु निगोत्र जीव
- २३९ क अनन्त निगोत्र  
 ख पर्याप्त अपर्याप्त निगोत्र  
 ग अनन्त सूक्ष्म निगोत्र  
 घ पर्याप्त-अपर्याप्त सूक्ष्म निगोत्र  
 ङ अनन्त वायु निगोत्र  
 च पर्याप्त अपर्याप्त वायु निगोत्र

- छ- निगोद जीव क-से-च तक के समान  
 ज- द्रव्य की अपेक्षा से निगोद-क-से-च तक के समान  
 झ- द्रव्य की अपेक्षा से निगोद जीव क-से-च तक के समान  
 ञ- प्रदेशों की अपेक्षा से निगोद क-से-च तक के समान  
 ट- प्रदेशों का अपेक्षा से निगोद जीव क-से-च तक के समान  
 ठ- निगोद की अल्प-बहुत्व  
 ड- निगोद जीवों की अल्प-बहुत्व

### षष्ठा सप्तविध जीव-प्रतिपत्ति

- ४० क- संसार स्थित जीव सात प्रकार के  
 ख- सात प्रकार के संसारी जीवों की स्थिति  
 ग- सात प्रकार के संसारी जीवों का संस्थिति काल  
 घ- " " अन्तर काल  
 ङ- " " अल्प-बहुत्व

### सप्तमा अष्टविध जीव-प्रतिपत्ति

- ४१ क- संसार स्थित जीव आठ प्रकार के  
 ख- आठ प्रकार के संसारी जीवों की स्थिति  
 ग- " " का संस्थिति काल  
 घ- " " का अन्तर काल  
 ङ- " " का अल्प-बहुत्व

### अष्टमा नवविध जीव-प्रतिपत्ति

- ४२ क- संसार स्थित जीव नौ प्रकार के  
 ख- नौ प्रकार के संसारी जीवों की स्थिति  
 ग- " " का संस्थिति  
 घ- " " का अन्तर काल  
 ङ- " " का अल्प बहुत्व



## नवमा दसविध जीव-प्रतिपत्ति

- २४३ क- गतार स्थित जीव दसप्रकार के  
 ख- दस प्रकार के गतारो जीवा की स्थिति  
 ग " " का सस्थिति काल  
 घ- " " का अन्तर काल  
 ङ- " " का अल्प बहुत्व

## द्विविध सर्वजीव

- २४४ क द्विविध सर्व जीवो का सस्थिति काल  
 ख- असिद्ध जीव दो प्रकार के  
 ग द्विविध सर्व जीवा का अन्तर काल  
 घ- " का अल्प बहुत्व
- २४५ क- द्विविध सर्वजीव  
 ख- " सर्वजीवो का सस्थिति काल  
 ग- " " का अन्तर काल  
 घ " का अल्प बहुत्व  
 ङ द्विविध सर्वजीव ख से घ तक के समान  
 ज- द्विविध सर्वजीव  
 झ सवेदक तीन प्रकार के  
 ट- सवेदको का सस्थिति काल  
 ठ अवेदक दो प्रकार के  
 ड- सवेदको का अन्तर काल  
 ढ अवेदको का " "  
 ण सवेदक अवेदको की अल्प-बहुत्व  
 त- द्विविध सर्वजीव अ से ण तक के समान  
 थ " " "  
 २४६ क द्विविध सर्वजीव





## द्रव्यानुयोगमय प्रज्ञापना उपाङ्ग

अध्ययन	१
पद	३६
उद्देशक	४४
उपलब्ध मूल पाठ	७७८७ अनुष्टुप् श्लोक प्रमाण
राद्य सूत्र	६१४
पद्य सूत्र	१६५

धनुर्विध सवजीव

- २५७ धनुर्विध सर्वजीव सूत्र २५७ के समान  
 २५८  
 २५९  
 २६०

पचविध सवजीव

- २६१ पचविध सर्वजीव सूत्र २५७ के समान  
 २६२

षडविध सवजीव

- २६३ ष षडविध सवजीवसूत्र २५७ के समान  
 स  
 २६४

सप्तविध सवजीव

- २६५ सप्तविध सवजीव सूत्र २५७ के समान  
 २६६

अष्टविध सवजीव

- २६७ अष्टविध सर्वजीव सूत्र २५७ के समान  
 २६८

नवविध सवजीव

- २६९ नवविध सवजीव सूत्र २५७ के समान  
 २७०

दशविध सवजीव

- २७१ दशविध सवजीव सूत्र २५७ के समान  
 २७२

## जीवामिगम उपाङ्ग सूत्र संख्या विवरण

योग	प्रथमा द्विविध जीव	प्रतिपत्ति	सूत्र	१- ४३
२१	द्वितीया त्रिविध जीव	"	सूत्र	४४- ६४
४६	तृतीया चतुर्विध जीव	"	सूत्र	६५-११३
२	चतुर्था पञ्चविध जीव	"	सूत्र	११४-११५
२४	पञ्चमा षड्विध जीव	"	सूत्र	११६-१३६
	षष्ठा सप्तविध जीव	"	सूत्र	१४०- १
	सप्तमा अष्टविध जीव	"	सूत्र	१४१- १
	अष्टमा नवविध जीव	"	सूत्र	११२- १
	नवमा दशविध जीव	"	सूत्र	१४३- १
योग				
६	द्विविध सर्वजीव		सूत्र	१४४-१४६
७	त्रिविध "		सूत्र	१५०-१५६
४	चतुर्विध "		सूत्र	१५७-१६०
१	पञ्चविध "		सूत्र	१६१-१६२
१	षड्विध "		सूत्र	१६३-१६४
१	सप्तविध "		सूत्र	१६५-१६६
१	अष्टविध "		सूत्र	१६७-१६८
१	नवविध "		सूत्र	१६९-१७०
१	दशविध "		सूत्र	१७१-१७२



## द्रव्यानुयोगमय प्रज्ञापना उपाङ्ग

अध्ययन	१
पद	३६
उद्देशक	४४
उपलब्ध मूल पाठ	७७८७ अनुष्टुप् श्लोक प्रमाण
गद्य सूत्र	६१४
पद्य सूत्र	१६६



## प्रज्ञापना पद सूत्र सख्या विवरण

	पदनाम	सूत्र	पदनाम	सूत्र
१	प्रज्ञापना	७८	१९ सम्प्रदाय	१
२	स्थान	१८	२० अन्तर्विद्या	१३
३	बहुवचनव्य	८१	२१ अवगाहना सस्थान	१३
४	स्थिति	१८	२१ विद्या	१६
५	विशेष	३५	२३ कम	३६
६	व्युत्पत्ति	४६	२४ कमवचक	१
७	उच्छ्वास	८	२५ कमवचक	१
८	सना	६	२६ वेदवचक	१
९	यानि	१०	२७ वेदवचक	१
१०	चरम	१६	२८ आहार	१८
११	भाषा	२४	२९ उपयोग	१
११	गरी	८	३० प दना	३
१३	परिणाम	५	३१ सज्ञा	१
१४	कषाय	६	३३ समय	१
१५	द्वितीय	५७	३३ अवधि	८
१६	प्रयोग	१४	३४ प्रविचारणा	८
१७	लक्षणा	५७	३५ वे ना	४
१८	काष्मवस्थिति	२	३६ ममुडात	१६

## प्रज्ञापना उपाङ्ग विषय-सूची

१	वीर वन्दना	२	जिन प्रज्ञप्त प्रज्ञापना
३	प्रज्ञापना कथन प्रतिज्ञा	४-७	पदों के नाम

### प्रथम प्रज्ञापना पद

१	प्रज्ञापना के	दो भेद
२	अजीव प्रज्ञापना के	दो भेद
३	अरूपी अजीव प्रज्ञापना के	दस भेद
४	क- रूपी	चार भेद
	ख- " "	संक्षेप में पाँच भेद
५	क- वर्ण परिणत पुद्गलों के	पाँच भेद
	ख- गद्य परिणत	दो भेद
	ग- रस परिणत	पाँच भेद
	घ- स्पर्श परिणत	आठ भेद
	ङ- संस्थान परिणत	पाँच भेद
६	क- वर्ण परिणत पुद्गलों का परस्पर सम्बन्ध	
	ख- गद्य परिणत	" "
	ग- रस परिणत	" "
	घ- स्पर्श परिणत	" "
	ङ- संस्थान परिणत	" "
७	जीव प्रज्ञापना के	दो भेद
८	मोक्षप्राप्त जीवों के	" "
९	वर्तमान समय में मोक्ष प्राप्त जीवों के	पन्द्रह भेद
१०	द्वितीयादि समय में	" अनेक भेद

११	ससार स्थित	जीवो के पाँच भेद
१२	एनेन्द्रिय	" "
१३	पृथ्वीकायिक जीवो के	" दो भेद
१४	सूक्ष्म पृथ्वीकायिक	"
१५	बादर	" "
१६	इन्द्रण पृथ्वीकायिक	जीवो के सात भेद
१७	क सर	" अनेक भेद
ख	"	" सक्षेप से दो भेद
ग	वण यावत् स्पश प्राप्त	पृथ्वीकायिक जीवो के हजारों भेद
घ	इन जीवो की योनियाँ,	इन जीवो क आश्रित अनेक जीवो की उत्पत्ति
ङ	एक जीव के साथ	अनेक जीवों का अस्तित्व
१८	अपकायिक जीवो क	दो दो भेद
१९	सूक्ष्म अपकायिक जीवो के	दो भेद
२०	क बादर	अनेक भेद
ख	"	सक्षेप से दो भेद
ग	वण यावत् स्पश प्राप्त	अपकायिक जीवों क हजारों भेद
घ	इन जीवो की योनियाँ	
ङ	इन जीवो के आश्रित	अनेक जीवो की उत्पत्ति
च	एक जीव के साथ	अनेक जीवो का अस्तित्व
२१	तत्रम कायिक जीवो क	दो भेद
२२	क सूक्ष्म तत्रम कायिक जीवो के	दो भेद
ख	बादर	अनेक भेद
ग		सक्षेप से दो भेद
	उप सूच २० के ग से च तक क	समान

- २४ वायुकायिक जीवों के दो भेद  
 २५ सूक्ष्म वायुकायिक जीवों के दो भेद  
 २६ वादर ,, अनेक भेद  
 शेष सूत्र २० के ग-से-च तक के समान  
 २७ वनस्पति कायिक जीवों के दो भेद  
 २८ सूक्ष्म वनस्पति कायिक जीवों के दो भेद  
 २९ वादर ,, ,,  
 ३० प्रत्येक वादर वनस्पति कायिक जीवों के वारह भेद  
 ३१ वृक्ष के दो भेद  
 ३२ एकास्थि वृक्ष के अनेक भेद  
 ३३ बहु वीजवाले वृक्ष के अनेक भेद  
 ३४ गुच्छ के "  
 ३५ गुल्म के "  
 ३६ लता के "  
 ३७ वल्लियों के "  
 ३८ पर्ववाली वनस्पतियों के "  
 ३९ तृण " "  
 ४० बलय वनस्पति के "  
 ४१ हरित " "  
 ४२ औषधियों के अनेक भेद  
 ४३ जलरूह के "  
 ४४ कृहण के "  
 ४५ साधारण वादर वनस्पतिकायिक जीवों के अनेक भेद  
 शेष सूत्र २० ग-से-च तक के समान  
 ४६ क- द्वीन्द्रिय जीवों के अनेक भेद  
 ख- ' संक्षेप में दो भेद  
 शेष सूत्र २० के ग-से-च तक के समान



च-	श्वापदों के	"
	इसके सक्षेप में	दो भेद
छ-	गर्भजों के	तीन भेद
ज-	स्थलचरों की कुलकोटी	
५४ क-	परिसर्पों के	दो भेद
ख-	उरगों के	चार भेद
ग-	बही के	दो भेद
घ-	दर्वीकरों के	अनेक भेद
ट-	मुकनियों के	"
च-	अजगरो का	एक भेद
छ-	आसालिक का	उत्पत्ति स्थान <sup>१</sup>
	"	के शरीर का जघन्य उत्कृष्ट प्रमाण
	"	का वायु
	"	में दृष्टि
	"	में अज्ञान
		असंज्ञी
५५ क-	महोरगों के	अनेक भेद
ख-	"	शरीर का प्रमाण
ग-	"	सक्षेप में दो भेद
घ-	"	गर्भजों के तीन भेद
ङ-	उरपरिसर्पों की कुलकोटी	
५६ क-	भुजपरिसर्पों के	अनेक भेद
ख-	"	सक्षेप में दो भेद
ग-	गर्भजों के तीन भेद	
घ-	भुजपरिसर्पों की कुलकोटी	
५७ क-	वेचरों के	चार भेद
ख-	चर्म पक्षियों के	अनेक भेद

१. यह आसालिक असंज्ञीतिर्यच पंचेन्द्रिय है ।

- ग साम पितृयो व  
 घ मनुष्याः पितृयो का लव भूः  
 ङ विनत पतिषा का लव भूः  
 च इनक सरोप मे दो भूः  
 छ गभजा के तीन भेद  
 ज मेधरा की कुलकोटी  
 झ कुलकोटी सप्तहृ गायत्रा
- ५८ मनुष्यों के दो भेद  
 ५९ क समूच्छिम मनुष्यों के उत्पत्ति स्थान  
 ख समूच्छिम मनुष्य वसन्ती  
 ग मिथ्या दृष्टि  
 घ अज्ञानी  
 ङ अर्थात्  
 च समूच्छिम मनुष्यों का आयु
- ६० गभज मनुष्यों के तीन भेद  
 ६१ अ तर द्वीप निवासी मनुष्या के अट्ठावीस भेद  
 ६२ अकमभूमि निवासी मनुष्यों के तीन भेद  
 उनक सरोप मे दो भेद  
 ६४ म्लेच्छों के अनेक भेद  
 ६५ व आयों के दो भेद  
 ख ऋद्धि प्राप्त आयों के ६ भेद  
 ग अर्द्धि प्राप्त आयों के दो भेद  
 घ शेषायों के सरोप मे पञ्चीस भेद
- ६६ जा पायों के ६ भेद  
 ६७ कुपायों के

६८	कर्मियों के	अनेक भेद
६९	सिल्पार्यों के	"
७०	क- भाषा आर्यों का	एक भेद
	ख- ब्राह्मी लिपि के	अठारह भेद
७१	ज्ञानार्यों के	पांच भेद
७२	दर्शनार्यों के	दो भेद
७३	सराग दर्शनार्यों के	दस भेद <sup>१</sup>
७४	क- वीतराग दर्शनार्यों के	दो भेद
	ख- उपशान्त कषाय वीतराग दर्शनार्यों के	दो भेद
	ग-	" " "
	घ- क्षीण कषाय वीतराग दर्शनार्यों के	दो भेद
	ङ- क्षयस्थ क्षीण कषाय वीतराग दर्शनार्यों के	दो भेद
	च- स्वयं बुद्ध छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग दर्शनार्यों के	दो भेद
	छ- प्रथम समय स्वयं बुद्ध छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग दर्शनार्यों के	दो भेद
	ज-	" " "
	झ- बुद्ध बोधित छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग दर्शनार्यों के	दो भेद
	ञ-	" " "
	ट- केवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शनार्यों के	दो भेद
	ठ- सजोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शनार्यों के	दो भेद
	ड-	" " "
	ढ- अजोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शनार्यों के	दो भेद
	ण-	" " "
७५	क- चारित्रार्यों के	दो भेद
	ख- सराग चारित्रार्यों के	"
	ग- सूक्ष्म संपराय सराग चारित्रार्यों के	"
	घ-	" " "



इ	सू०म सपराय सराग चारित्र्यायों के	दो भे०
ख	बादर सपराय सराग चारित्र्यायों के	
छ		
ज		
७६ क	बीतराग चारित्र्यायों के	
ख	उपगत कषाय बीतराग चारित्र्यायों के	
ग		
घ	क्षीण कषाय बीतराग चारित्र्यायों के	
ङ	दुःस्थ क्षीण कषाय बीतराग चारित्र्यायों के	
च	स्वय बुद्ध दुःस्थ क्षीण कषाय बीतराग चारित्र्यायों के दो भे०	
छ		
ज	बुद्ध बोधित दुःस्थ क्षीण क वी चारित्र्यायों के	
झ		
ञ	केवली क्षीण कषाय बीतराग चारित्र्यायों के	
ट	मज्जोमी केवली क्षीण कषाय बीतराग चारित्र्यायों के दो भे०	
ठ		
ड	मज्जोमी केवली क्षीण क०वी० चारित्र्यायों के	
ढ		
ण	चारित्र्यायों के	पाँच भे०
त	सामयिक चारित्र्यायों के	दो भे०
थ	द्वैतपस्थापनीय चारित्र्यायों के	
द	परिहारविशुद्धि चारित्र्यायों के	
घ	गूढसंशय चारित्र्यायों के	
न	यथास्थान चारित्र्यायों के	

## देव

क- देवताओं के	चार भेद
ख- भवनवानी देवों के इनके संक्षेप में	दस भेद दो भेद
ग- व्यन्तर देवों के इनके संक्षेप में	आठ भेद दो भेद
घ- ज्योतिषिक देवों के इनके संक्षेप में	पाँच भेद दो भेद
ङ- वैमानिक देवों के	दो भेद
च- कल्पोपन्न वैमानिक देवों के इनके संक्षेप में	वारह भेद दो भेद
छ- कल्पातीत वैमानिक भेद	दो भेद
ज- ग्रैवेयक देवों के इनके संक्षेप में	नौ भेद दो भेद
झ- अनुत्तरोपपातिक देवों के इनके संक्षेप में	पाँच भेद दो भेद

## द्वितीय स्थानपद

### तिर्यचों के स्थान

- १ क- पर्याप्त पृथ्वी कायकों के स्थान आठ पृथ्वीयों में  
 ख- अधोलोक में—पर्याप्त वादर पृथ्वी कायिकों के स्थान  
 ग- उर्ध्वलोक में—पर्याप्त वादर पृथ्वीकायिकों के स्थान  
 घ- तिर्यगलोक में—  
 ङ- उत्पत्ति की अपेक्षा  
 च- समुद्घात की अपेक्षा  
 छ- स्वस्थान की अपेक्षा

- २ क- अर्वाण्य बादर पृथ्वी वायुविही के स्थान  
 ल उत्पत्ति की अपेक्षा—अर्वाण्य बादर वायुविही के स्थान  
 म समुद्रधान की अपेक्षा " "  
 घ स्वस्थान की अपेक्षा " "
- ३ क पर्वान्य अर्वाण्य सूक्ष्म पृथ्वीवायुविही के स्थान  
 ल उत्पत्ति की अपेक्षा " "
- ४ क पर्वान्य बादर अर्वाण्यविही के स्थान  
 ल अर्वाण्य म बादर अर्वाण्यविही के स्थान  
 म उद्वेगन म " "  
 घ निवर्णान म " "  
 इ उत्पत्ति की अपेक्षा " "  
 घ समुद्रधान की अपेक्षा " "  
 छ स्वस्थान की अपेक्षा " "
- अ अर्वाण्य बादर अर्वाण्यविही क स्थान  
 भ उत्पत्ति की अपेक्षा अर्वाण्य बादर अर्वाण्यविही क स्थान  
 छ समुद्रधान की अपेक्षा " "  
 न स्वस्थान की अपेक्षा " "
- ठ पर्वान्य अर्वाण्य सूक्ष्म अ वायुविही क स्थान
- ५ क पर्वान्य बादर तेजस्वायुविही क स्थान  
 ल निवर्णान की अपेक्षा पर्वान्य बादर तेजस्वायुविही क स्थान  
 म अर्वाण्य की अपेक्षा " "  
 घ उत्पत्ति की अपेक्षा " "  
 इ समुद्रधान की अपेक्षा " "  
 च स्वस्थान की अपेक्षा " "
- ६ क अर्वाण्य बादर तेजस्वायुविही क स्थान  
 ल उत्पत्ति की अपेक्षा अर्वाण्य बादर तेजस्वायुविही के स्थान  
 म समुद्रधान की अपेक्षा " "



- न उत्पत्ति की अथवा पर्वणि अथवात्त द्वीत्वा के स्थान  
 य समुत्पत्त की अपेक्षा  
 य स्वस्थान की अपेक्षा  
 १५ नील मोक्ष मे पर्वणि अथवात्त द्वीत्वा के स्थान  
 गैय सूत्र १४ के समान  
 १६ नील मोक्ष मे पर्वणि अथवात्त चतुरिन्ध्या के स्थान  
 गैय सूत्र १४ के समान  
 १७ नील लोक मे पर्वणि-अथवात्त पत्तेन्ध्या के स्थान  
 गैय सूत्र १८ के समान

### नरविको के स्थान

- १८ क म न पृथिव्या मे पय न अथवात्त नरविको के स्थान  
 ख नरविको के नरकावाग  
 य नरकावागो की रचना  
 य उत्पत्ति की अवस्था पर्वणि अथवात्त नरविको के स्थान  
 ञ समुत्पत्त की अपेक्षा अथवात्त नरविका के स्थान  
 च स्वस्थान की अपेक्षा  
 छ नरविका का अर्थ  
 १९ क रत्नप्रभा मे पर्वणि अथवात्त नरविका के स्थान  
 ख म नरकावाग । गैय सूत्र १८ के समान  
 २० क गङ्गाप्रभा मे पर्वणि अथवात्त नरविका के स्थान  
 ख म नरकावाग । गैय सूत्र १८ के समान  
 २१ क ब लूका प्रभा वा प्रभा मे पर्वणि अथवात्त नरविको के स्थान  
 ख म नरकावाग । गैय सूत्र १८ के समान  
 २२ क पक्षप्रभा मे पर्वणि अथवात्त नरविको के स्थान  
 ख म नरकावाग । शौट सूत्र १८ के समान  
 २३ क घनप्रभा मे पर्वणि नरविका के स्थान

- ख- धूमप्रभा में नरकावास । शेष सूत्र १८ के समान  
 २४ क- तमःप्रभा में पर्याप्त-अपर्याप्त नैरयिकों के समान  
 ख- " में नरकावास । शेष सूत्र १८ के समान  
 २५ क- तमस्तम. प्रभा में पर्याप्त-अपर्याप्त नैरयिकों के स्थान  
 ख- " में नरकावास । शेष सूत्र १८ के समान  
 ग- नरकावासी की सूचक चार गाथा  
 २३ क- पर्याप्त-अपर्याप्त तिर्यक्ष पंचेन्द्रियो के स्थान  
 शेष सूत्र १४ के समान<sup>१</sup>

### मनुष्यों के स्थान

- २७ क- पर्याप्त-अपर्याप्त मनुष्यों के स्थान  
 ख- उत्पत्ति की अपेक्षा पर्याप्त-अपर्याप्त मनुष्यों के स्थान  
 ग- समुद्घात की अपेक्षा "  
 घ- स्वस्वान की अरेक्षा "

### देवों के स्थान आदि का वर्णन

#### भवनवासी देवों का वर्णन

- २८ क- पर्याप्त-अपर्याप्त भवनवासी देवों के स्थान  
 ख- भवनवासी देवों के सर्वभवन  
 ग- भवनों की रचना एव महिमा  
 घ- दस भवनपतियों के नाम  
 ङ- " के परिचय चिन्ह  
 च- " का वैभव  
 २६ क- पर्याप्त-अपर्याप्त अमुरकुमारों के स्थान

१. यह सूत्र रचनाक्रम के अनुसार सत्रहवें सूत्र के स्थान में होता तो अधिक संगत होता किन्तु सत्रहवें सूत्र की रचना का क्या हेतु है यह विचारणीय है ।

- ग अगुस्तुमांग के भवन
- घ भवनों की रखना और संहिता
- च अगुस्तुमांग का वर्णन
- द-                      का वर्णन और संहिता
- ध अयोध और बन ३ का वर्णन

३० क- इतिहास के वर्णन वर्गीकृत अगुस्तुमांग के भवन

- ग इतिहास के अगुस्तुमांग के भवन
- घ भवनों की रखना और संहिता
- च अयोध ३ का वर्णन
- द भवनों की रखना
- ध नाम दिए देवों की रखना
- द आभारदा देवों की

३१ क उत्तर के वर्गीकृत अगुस्तुमांग अगुस्तुमांग के भवन

- ग उत्तर के अगुस्तुमांग के भवन
- घ भवनों की रखना और संहिता
- च बन ३ का वर्णन
- द भवनों की रखना
- ध सामाजिक देवों की
- द अद्यतनदेवियों की
- द आभारदा देवों की रखना

३२ इ०क नामगुप्तार नामक अनिन्दुमांग के भवन आदि का वर्णन

- ग नामा ३ में अगुस्तुमांग, नामगुप्तार सुवर्णकुमार और कुमारी के भवनों की रखना

१ प्राक्कालिक से अद्यतन परिवर्तन बना और सामाजिकों की रखना समस्त अद्यतनों की रखना है ।

- ज- गाथा २,३-४ में द्वीपकुमार, दिशाकुमार, उदधिकुमार  
स्तनितकुमार और अग्निकुमारों के भवनों की संख्या  
घ- गाथा ५ में सामानिक देवों और आत्मरक्षक देवों की संख्या  
ङ- गाथा ६ में दक्षिण के दस इन्द्रों के नाम  
च- गाथा ७ में उत्तर के ”  
छ- गाथा ८,९,१०,११ में भवनवासियों और उनके वस्त्रों के वर्ण  
व्यन्तरदेवों का वर्णन

३६-४१क- पर्याप्त-अपर्याप्त व्यन्तरदेवों के नगरों का वर्णन

- ख- सोलह व्यन्तरदेवों के नाम और उनके वैभव का वर्णन  
ग- व्यन्तरदेवों के दक्षिण-उत्तर के बत्तीस इन्द्रों के नाम  
ज्योतिष्ठी देवों का वर्णन

४२ क- पर्याप्त-अपर्याप्त ज्योतिष्क देवों के स्थान

- ख- इनके विमानों का वर्णन  
ग- नवग्रहों के नाम  
घ- अट्ठावीस नक्षत्र  
ङ- चन्द्र-सूर्य इन्द्र, और इनका वैभव  
वैमानिक देवों का वर्णन

४३ क- पर्याप्त-अपर्याप्त देवों का वर्णन

- ख- बारह देवलोकों के नाम  
ग- इनके सर्वविमानों की संख्या  
घ- इनके मुकुट चिन्हों के नाम

४४-५३ क- सौधर्म-यावत्-अच्युतकल्प के विमानों का वर्णन

- ख- प्रत्येक कल्पों में पाँच प्रमुख विमान  
ग- सौधर्मन्द्र के कुछ नाम  
घ- सौधर्मन्द्र दक्षिणार्धलोक का अधिपति  
ङ- सौधर्मन्द्र का वाहन  
च- सौधर्मन्द्र के अधिपति नाम





४	चार दिशाओं में नैरयिकों का	अल्प-बहुत्व
५	" पंचेन्द्रिय-तिर्यचों का	"
६	" मनुष्यों का	"
७	" चार प्रकार के देवों का	"
८	" सिद्धों का	"

२ गति द्वार

९	नरक-यावत्-सिद्ध इन पांच गतियों की	अल्प-बहुत्व
१०	नैरयिक-यावत्-सिद्ध इन आठ गतियों का	अल्प-बहुत्व

३ इन्द्रिय द्वार

११	सइन्द्रिय-यावत्-अनिन्द्रियों का	अल्प-बहुत्व
१२	" " के अपर्याप्तों का	अल्प-बहुत्व
१३	" " के पर्याप्तों का	"
१४	" " के प्रत्येक के पर्याप्तों का	अल्प-बहुत्व
१५	" " के पर्याप्तों का संयुक्त	अल्प-बहुत्व

४ काय-द्वार

१६	सकाय-यावत्-अकाय जीवों का	अल्प बहुत्व
१७	" " के पर्याप्तों का	अल्प-बहुत्व
१८	" " के अपर्याप्तों का	"
१९	" " के प्रत्येक के पर्याप्तों अपर्याप्तों का	"
२०	" " के पर्याप्तों अपर्याप्तों का संयुक्त	"
२१	सूक्ष्म पृथ्वीकायिकों-यावत्-सूक्ष्म निगोदों का	अल्प-बहुत्व
२२	इनके अपर्याप्तों का	अल्प-बहुत्व
२३	इनके पर्याप्तों का	अल्प-बहुत्व
२४	इनके प्रत्येक के पर्याप्तों-अपर्याप्तों का	अल्प-बहुत्व
२५	इनके पर्याप्तों का संयुक्त-अल्प-बहुत्व	
२६	वादर पृथ्वीकायिकों-यावत्-वादर असकायिकों का	अल्प-बहुत्व

- २७ इनके अपर्याप्तों का अल्प-बहुत्व
- २८ इनके पर्याप्तों का अल्प-बहुत्व
- २९ [इन प्रत्येक के पर्याप्तो-अपर्याप्तो का अल्प-बहुत्व
- ३० इनके पर्याप्तो अपर्याप्तो का संयुक्त अल्प-बहुत्व
- ३१ सूक्ष्म पृथ्वीकादिक यावत्-सूक्ष्म निगोर्धों तथा बादर पृथ्वी  
कायिको यावत् बादर नमकायिको का अल्प बहुत्व
- ३२ इनके अपर्याप्तो का अल्प-बहुत्व
- ३३ इनके पर्याप्तो का            "
- ३४ इन प्रत्येक के पर्याप्तो-अपर्याप्तो का संयुक्त अल्प-बहुत्व
- ३५ इनके पर्याप्तो-अपर्याप्तो का संयुक्त अल्प-बहुत्व  
५ योग द्वार
- ३६ सयोगी यावत्-अयोगी जीवों का अल्प बहुत्व  
६ वेद द्वार
- ३७ सवेदी-यावत् अवदिया का अल्प-बहुत्व  
७ कषाय द्वार
- ३८ सकषायी यावत् अकषायी जीवों का अल्प बहुत्व  
८ क्षेप्य द्वार
- ३९ सलेख्य-यावत्-अलेख्य जीवों का अल्प बहुत्व  
९ दृष्टि द्वार
- ४० सम्पद्दृष्टि यावत्-मिअदृष्टि जीवों का अल्प बहुत्व  
१० ज्ञान द्वार
- ४१ आभिनिवोधिक ज्ञानि यावत् केवल ज्ञानियों का अल्प बहुत्व  
११ अज्ञान द्वार
- ४२ मनि अजानी-यावत् विभग ज्ञानी जीवों का अल्प-बहुत्व
- ४३ ज्ञानियो अज्ञानियो का संयुक्त अल्प-बहुत्व  
१२ दर्शन द्वार
- ४४ चक्षुदक्षनी यावत् केवल दर्शनी जीवों का अल्प बहुत्व

- १३ संयत द्वार
- ४५ संयत-यावत्-नो संयतासंयत जीवों का अल्प-बहुत्व  
१४ उपयोग द्वार
- ४६ साकारोपयोगी और अनोपयोगी जीवों का अल्प-बहुत्व  
१५ आहारक द्वार
- ४७ आहारक और अनाहारक जीवों का अल्प-बहुत्व  
१६ भापक द्वार
- ४८ भापक और अभापक जीवों का अल्प-बहुत्व  
१७ परित्त द्वार
- ४९ परीत्त-यावत्-नो परीत्तापरीत्त जीवों का अल्प-बहुत्व  
१८ पर्याप्त द्वार
- ५० पर्याप्त-यावत्-नो पर्याप्त-नो अपर्याप्त जीवों का अल्प-बहुत्व  
१९ सूक्ष्म द्वार
- ५१ सूक्ष्म-यावत्-नो सूक्ष्म-नो वादर जीवों का अल्प-बहुत्व  
२० संज्ञी द्वार
- ५२ संज्ञी-यावत्-नो संज्ञी-नो असंज्ञी जीवों का अल्प-बहुत्व  
२१ भव सिद्धिक द्वार
- ५३ भवसिद्धिक-यावत्-नो भवसिद्धिक-नो अभावसिद्धिक जीवों  
का अल्प-बहुत्व  
२२ अत्रिकाय द्वार
- ५४ द्रव्य अपेक्षा से घर्मास्तिकाय-यावत्-अद्धा समय का अल्प-बहुत्व
- ५५ प्रदेशों की अपेक्षा से इनका अल्प-बहुत्व
- ५६ द्रव्य और प्रदेश की अपेक्षा से इन प्रत्येक का अल्प-बहुत्व
- ५७ द्रव्य और प्रदेश की अपेक्षा से इनका संयुक्त अल्प-बहुत्व  
२३ चरम द्वार
- ५८ चरम और अचरम जीवों का अल्प-बहुत्व

- २४ जान द्वार
- ५६ जीव यावत् पर्याप्तो का अल्प बहुत्व  
२२ क्षेत्र द्वार
- ६० अधोलोक यावत् त्रिलोक्य मे जीवा का अल्प बहुत्व
- ६१ ७४ अधोलोक यावत् त्रिलोक्य मे गति, इन्द्रिय और काय द्वारा का कथन  
२६ बन्ध द्वार
- ७५ आयु क्रम क बन्धक यावत् अनाहारोपशोधयुक्त जीवा का अल्प बहुत्व  
२७ पुद्गल द्वार
- ७६ क क्षेत्र की अपेक्षा से अधोलोक म-यावत् त्रिलोक्य म पुद्गला का अल्प-बहुत्व  
ख शिवाजी की अपेक्षा से पुद्गल द्रव्यो का अल्प बहुत्व
- ७७ सख्यात असख्यात और अनत प्रदेशी पुद्गल स्वरूपा का द्रव्य प्रदेश और द्रव्य प्रदेशो की अपेक्षा से समुक्त अल्प बहुत्व
- ७८ सख्यात प्रदेशावगाढ यावत् असख्यात प्रदेशावगाढ पुद्गलों का द्रव्य प्रदेशो की अपेक्षा से समुक्त अल्प बहुत्व
- ७९ एक समय यावत् असख्यात समय की स्थितिवाले पुद्गल का द्रव्य प्रक और द्रव्य प्रदेश की समुक्त अपेक्षा से अल्प बहुत्व  
२८ महाद्रव्यक द्वार
- ८१ चौबीस दण्डों का अल्प बहुत्व

### चतुर्थ स्थितिपद

- १ क नैरयिको की स्थिति  
ख अपर्याप्त नैरयिको की  
ग पर्याप्त नैरयिको की
- २ क सात नरक के अपर्याप्त पर्याप्त नैरयिको की स्थिति

३	अपर्याप्त-पर्याप्त देव-देवियों की स्थिति
४-७	" भवनवासी देव देवियों की स्थिति
८-१६	" पृथ्वीकाय-यावत्-तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रियों की स्थिति
२०	" मनुष्यों की स्थिति
२१	" व्यन्तर देवों की स्थिति
२२	" ज्योतिर्षा देवों की स्थिति
२३-२८	" वैमानिक देवों की स्थिति

### पंचम विशेष पद

- १ पर्याय के दो भेद
- २ जीव पर्यायों के अनन्त होने का हेतु
- ३-११ चौबीस दण्डकों में अनन्त पर्याय होने का कारण
- १२-२० क- जघन्य उत्कृष्ट अवगाहना वाले चौबीस दण्डकों में अनन्त पर्याय होने का कारण
- ख- जघन्य उत्कृष्ट स्थिति वाले चौबीस दण्डकों में अनन्त पर्याय होने का कारण
- ग- जघन्य उत्कृष्ट वर्ण गन्ध रस स्पर्श परिणत चौबीस दण्डक के जीवों के अनन्त पर्याय होने का कारण
- घ- ज्ञान, अज्ञान और दर्शन सम्पन्न चौबीस दण्डक के जीवों के अनन्त पर्याय होने का कारण
- २१ अजीव पर्यायों के दो भेद
- २२ अरूपी अजीव पर्यायों के दस भेद
- २३ क- रूपी अजीव पर्यायों के चार भेद
- ख- " के अनन्त होने का कारण
- २४ जघन्य उत्कृष्ट अवगाहना, स्थिति और वर्ण-गन्ध-रस-स्पर्श परिणत पुद्गल-पर्यायों के अनन्त होने का हेतु

- २५ एक प्रदेशावगाह यावत्-अमन्य प्रदेशावगाह पुद्गल-पर्यायो क अनन्त होने का हेतु
- २६ एक समय की स्थिति वाले यावत् अमन्य समय की स्थिति वाले पुद्गल पर्यायो के अनन्त होने का हेतु
- २७ एक गुण-यावन-अनन्तगुण वर्ण गद्य रस स्पर्श परिणत पुद्गल पर्यायो क अनन्त होने का हेतु
- २८ ३० विप्रदेशिक-यावत् अनन्त प्रदेशिक स्वन्धो की अनन्त पर्याय होने का हेतु
- २९ जघन्य उत्कृष्ट प्रदेशी स्वन्धो की अनन्त पर्याय होने का हेतु
- ३० जघन्य उत्कृष्ट अवगाहना वाले पुद्गलों स्वन्धो की अनन्त पर्याय होने का हेतु
- ३१ जघन्य, उत्कृष्ट स्थिति वाले पुद्गलों स्वन्धो की अनन्त पर्याय होने का हेतु
- ३२ जघन्य, उत्कृष्ट वर्ण गद्य रस-स्पर्श परिणत पुद्गल स्वन्धो की अनन्त पर्याय होने का हेतु

## षष्ठ व्युत्क्रान्ति पद

आठ द्वारों के नाम

प्रथम गति चवेष्टा उपरान उद्घर्षेण विरहकाल द्वार

१ क चार गति का उपरान<sup>१</sup> विरहकाल

ल विड गति का " "

२ चार गति का उद्घर्षेण<sup>१</sup> विरहकाल

द्वितीय दृष्टकालेण उपरान उद्घर्षेण विरहकाल द्वार

३-१० क चौथी दृष्टकालेण उपरान विरहकाल

ल विडों का " "





## सप्तम श्वासोच्छ्वास पद

१ क चौबीस दण्डक के जीवों कात्रणय उत्पद्यु श्वासोच्छ्वास नाम

### अष्टम संज्ञा पद

१ दस सजाओ के नाम

२ चौबीस दण्डक के जीवों में दस सजायें

१-६ क चौबीस दण्डकों में बाह्य आन्तर्य चार कारणों की अपेक्षा चार सजायें

ख चार सजाओ वाला चौबीस दण्डक के जीवों का अल्प बहुत्व

### नवम योनी पद

१ तीन प्रकार की योनियाँ

२ चौबीस दण्डक के जीवों की योनियाँ

३ , , की योनियों का अल्प-बहुत्व

४ तीन प्रकार की योनियाँ

५ चौबीस दण्डक के जीवों की योनियाँ

६ , , की योनियों का अल्प बहुत्व

७ तीन प्रकार की योनियाँ

८ चौबीस दण्डक के जीवों की योनियाँ

९ , , की योनियों का अल्प-बहुत्व

१० क तीन प्रकार का योनियाँ

ख तीन प्रकार की योनियों में उत्पन्न होने वाला पुरुष

### दसम चरमाचरम पद

१ आठ पृथ्वीयों के नाम

२ रत्नप्रभादि सात पृथ्विर्वा सोषर्भ-यावत् अनुत्तर विमान, ईषरप्राग्भारा, लोक और अलोक्त के सप्तम के अन्तर्गत ६ :

विकल्प

- ३ द्रव्य और प्रदेशों की अपेक्षा से रत्नप्रभादि सात पृथ्वियाँ  
सौधर्म-यावत्-अनुत्तर विमान, ईपत्-प्राग्भरा और लोक के  
चरमादि ६ विकल्पों का अल्प-बहुत्व
- ४ द्रव्य और प्रदेशों की अपेक्षा से अलोक के चरमादि ६ विकल्पों  
का अल्प-बहुत्व
- ५ द्रव्य और प्रदेशों की अपेक्षा से लोकालोक के चरमादि ६  
विकल्पों का अल्पबहुत्व
- ६ परमाणु पुद्गल के चरमादि तीन विकल्पों के द्वाव्वीस भांगे  
७-१३ क- द्विप्रदेशिक स्कन्धों-यावत्-अनन्त प्रदेशिक स्कन्धों के चरमादि  
तीन विकल्पों के भागे  
ख- भंग संख्या सूचक ६ गथा
- १४ पाँच संस्थानों के नाम
- १५ क- परिमण्डलादि पाँच संस्थान अनन्त  
ख- परिमण्डलादि पाँच संस्थानों के सत्यात प्रदेश-यावत्-अनन्त  
प्रदेश  
ग- " पाँच संस्थान सत्यात प्रदेशावगाह-यावत्-  
अनन्त प्रदेशावगाह
- १६-१८ द्रव्य और प्रदेशों की अपेक्षा संख्यात प्रदेशावगाह-यावत्-  
अनन्त प्रदेशावगाह पाँच संस्थानों के चरमाचरम का अल्प-बहुत्व  
जीव चरमाचरम<sup>१</sup>
- १९ क- चौबीस दण्डक के जीव<sup>२</sup> या जीवों<sup>३</sup> का गति की अपेक्षा चरमाचरम  
ख- " " का स्थिति की अपेक्षा चरमाचरम

१. चरम—जिसका अन्त है । अचरम—जिसका अन्त नहीं है

२. एक वचन ३. बहुवचन

ग	चीवीम दणक के जीव या जीवो का भव की अपेक्षा चरमा	चरम
घ	का भाषा की अपेक्षा चरमा	चरम
ङ	का श्वासोच्छ्वास की अपेक्षा	चरमा चरम
च	का आहार की अपेक्षा चरमा	चरम
छ	का भाव की अपेक्षा चरमा	चरम
ज	का चण गण रस स्पर्श की	अपेक्षा चरमा चरम
झ	गति आदि इत्यारह द्वारो की सूचक भाषा	

### एकादशम भाषा पद

- १ अवधारिणी भाषा का स्वरूप
- २ क के चार भेद
- ३ ल के चार भेद होने का हेतु  
संख्य भाषा
- ४ क प्रजापनी भाषा
- ५ म पशु पत्नी वाचक प्रजापनी भाषा
- ६ स्त्री आदि लिङ्गवाचक प्रजापनी भाषा
- ७ स्त्री आज्ञापनी आदि
- ८ स्त्री प्रजापनी आदि
- ९ स्त्री जाति आदि
- १० स्त्री आति आदि आज्ञापनी
- ११ स्त्री ज ति आदि प्रजापनी

- १०-११ संज्ञी जीवों की भाषा  
 १२ एक वचन, बहु वचन  
 १३ स्त्री, पुरुष और नपुंसक वाची  
 १४ लिङ्गवाची भाषा बोलने वाला ध्रमण  
 १५ क- भाषा का मूल कारण, भाषा का उत्पत्ति स्थान  
     भाषा का संस्थान, भाषा का अन्त  
     ख- भाषा का उत्पत्ति स्थान, भाषा के समय  
     भाषा के भेद योग्य भाषा  
 १६ क- भाषा के दो भेद  
     ख- पर्याप्त भाषा के दो भेद  
 १७                   "                   दस भेद  
 १८ मृषा भाषा के " .  
 १९ क- अपर्याप्त भाषा के दो भेद  
     ख- सत्यामृषा भाषा के दस भेद  
 २० असत्या मृषाभाषा के बारह भेद  
 २१ क- भासक-अभासक जीव  
     ख- जीव के भाषक-अभाषक होने का हेतु  
 २२ चौबीस दण्डक के जीव भाषक-अभाषक  
 २३ क- भाषा के चार भेद  
     ख- चौबीस दण्डक के जीवों की चार प्रकार की भाषा  
 २४-५२ ग्रहण करने योग्य और अयोग्य भाषा द्रव्य  
 २६ भाषा द्रव्यों का सान्तर निरन्तर ग्रहण  
 २७ भिन्न, अभिन्न भाषा द्रव्यों का निकलना  
 २८ भाषा के पांच भेद  
 २९ पांच भेदों का अल्प-बहुत्व  
 ३० चौबीस दण्डक के जीवों द्वारा भाषा द्रव्यों का ग्रहण

- ३२ मोलद वचन  
 ३३ भाषा क चार भेद  
 आराधक विराधक की भाषा  
 ३४ चार प्रकार की भाषा के भाषकों और अभाषकों का अर्थ  
 बहुत्व

### द्वादसम शरीर पद

- १ क पाच शरीरों क नाम  
 ख चौबीस दण्डक म जीवों के शरीर  
 २ प्रत्येक शरीर के दो दो भेद  
 ३ क चौबीस दण्डक में प्रत्येक शरीर के बड़ मुक्त का अन्त-बहुत्व

### त्रयोदशम परिणाम पद

- |   |                         |         |
|---|-------------------------|---------|
| १ | क परिणामा के            | दो भेद  |
|   | ख जीव परिणाम के         | दस भेद  |
| २ | क गति परिणाम क          | चार भेद |
|   | ख ई द्रव्य              | पाच भेद |
|   | ग कथाय                  | चार भेद |
|   | घ वेदवा                 | छ भेद   |
|   | ङ योग                   | तीन भेद |
|   | च उपयोग                 | दो भेद  |
|   | छ ज्ञान                 | पाच भेद |
|   | ज अज्ञान परिणाम के      | तीन भेद |
|   | झ दान                   | तान भेद |
|   | ञ चारित्र्य             | पाच भेद |
|   | ट वेद                   | तीन भेद |
| ३ | चौबीस दण्डक म दस परिणाम |         |

४	अजीव परिणाम के	दस भेद
५	क- वध            "	दो भेद
	रक्षबंध और स्निग्ध बंध की व्याख्या	
ख-	(१) गति परिणाम के	दो भेद
	(२)                    "	"
ग-	सस्थान परिणाम के	पांच भेद
घ-	भेद                    "	पांच भेद
ङ-	वर्ण                    "	पांच भेद
च-	गघ                    "	दो भेद
छ-	रस                    "	पांच भेद
ज-	स्पर्श                "	आठ भेद
झ-	अगुरु लघु        "	एक भेद
ञ-	शब्द                 "	दो भेद

### चतुर्दशम-कषाय पद

१	क- कषाय के	चार भेद
	ख- चौबीस दण्डक में	चार कषाय
२	क- क्रोध के	चारस्थान
	ख- चौबीस दण्डक में क्रोध के	"
३	क- क्रोध की उत्पत्तिके	चार निमित्त
	ख- चौबीस दण्डक में क्रोध की उत्पत्तिके	चार निमित्त
४	क- क्रोध के	चार भेद
	ख- चौबीस दण्डक में क्रोध के	चार भेद
५	क- क्रोध के	चार भेद
	ख- चौबीस दण्डक में क्रोध के	"
	ग- इसी प्रकार माना, माया और लोभ का कथन	

- ६ चौबीस दण्डक में तीन जान की अपेक्षा से अपूर्ण प्रकृतिपों का उपचय, वच, वेदना और निजरा का विन्तार

## पंचदसम इन्द्रिय पद

प्रथम उद्देशक

पचीस द्वारों के नाम

१ पाँच इन्द्रियों के नाम

२ पाँच इन्द्रियों के स्थान

३ क- " का वाह्यत्व

ख , का विन्तार

४ " के प्रदेश

५ " के प्रदेशावगाह का परिमाण

६ , की अवगाहना और प्रदेशों की अपेक्षा से अल्प बहुत्व

७ " के कर्कष और गुरु गुण का परिमाण

८ " के ककष और गुरु गुण का अल्प बहुत्व

९ १२ चौबीस दण्डक में पाँच इन्द्रियों के आठ द्वारों का कथन

१३ पाँच इन्द्रियों में प्राप्यकारी और अप्राप्यकारी का कथन

१४ पाँच इन्द्रियों का विषय शेष

निर्जरा पुद्गल

१५ क मारणान्तिक समुद्धान वाले जनगार के निर्जरा पुद्गल की मृदमता और व्यापकता

ख अक्षय्य को निर्जरा पुद्गल की भिन्नता आदि का अज्ञान, अज्ञान का हेतु

१६ १८ चौबीस दण्डक के जीवा द्वारा निर्जरा पुद्गलों का जानना, देखना और आहार करना

प्रतिविम्ब दर्शन

- १९ कांच आदि में प्रतिविम्ब का दर्शन  
आकाश से स्पर्श
- २० क- संकुचित और विस्तृत वस्त्र का आकाश प्रदेशों से स्पर्श  
ख- खड़े या पड़े स्तंभ का आकाश प्रदेशों से स्पर्श
- २१ क- धर्मास्तिकाय आदि से लोक का स्पर्श  
ख- धर्मास्तिकाय आदि से जम्बूद्वीप-यावत्-स्वयंभूरमण समुद्र का स्पर्श
- २२ क- लोक का धर्मास्तिकाय आदि से स्पर्श  
ख- लोक का स्वरूप

द्वितीय उद्देशक

वारह अधिकारों के नाम

- १-३५ चौबीस दण्डक में वारह अधिकारों का कथन

षड् दसम प्रयोग प्रद

- १ प्रयोग के पन्द्रह भेद
- २ चौबीस दण्डक में पन्द्रह प्रयोग
- ३-५ चौबीस दण्डक में पन्द्रह प्रयोगों के विभिन्न अंग गति प्रवाद
- ६ क- गति प्रवाद के पांच भेद  
ख- प्रयोग गति के पन्द्रह भेद  
ग- चौबीस दण्डक में प्रयोग गति के पन्द्रह भेदों का कथन
- ७ ततगति की व्याख्या
- ८ बंधन छेदन गति की व्याख्या
- ९-१३ उपपात गति के भेद प्रभेद
- १४ विहायो गति के सत्तरह भेद  
प्रत्येक भेद की व्याख्या और भेद-प्रभेद



## सप्तदशम लेश्या पद

### प्रथम उद्देशक

सात अधिकारों के नाम

१ ११ चौबीस दण्डक में सात अधिकारों का कथन<sup>१</sup>

### द्वितीय उद्देशक

१२ ६ लेश्याओं के नाम

१३ चौबीस दण्डक में ६ लेश्याओं का कथन<sup>१</sup>

१४ २२ ६ लेश्याओं की अपेक्षा चौबीस दण्डक के जीवों का अलग बहुरूप

२३ २५ चौबीस दण्डक में ६ लेश्याओं की अपेक्षा में अलग महद्विक और महद्विकों का अलग-बहुरूप

### तृतीय उद्देशक

२६ क चौबीस दण्डक में उत्पत्ति

ख उत्पत्तन

२७ २८ ६ लेश्याओं की अपेक्षा में चौबीस दण्डक में उत्पत्ति और उत्पत्तन

२९ लेश्याओं की अपेक्षा में उदाहरणपूर्वक नैरयिकों के अवधि नाम का क्षेत्र

३० ६ लेश्या वाले जीवों में पाव ज्ञान का कथन

### चतुर्थ उद्देशक

षट्त्रिंशत् अधिकारों के नाम

३१ ३३ क ६ लेश्याओं के नाम

१ मान अधिकारों में न केवल एक लेश्या अधिकार का ही पद से संबंध है शेष-साधारण प्रकार उच्छ्रवाण कर्म, वर्ण बदला किया और श्राव्य अन्य पदों में कथन किया जाता ता संगत प्रजात हाना

स- ६ लेश्याओं के रूप, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श का एक दूसरों में परिणमन

३४-४० ६ लेश्याओं के वर्ण

४१-४६ ६ लेश्याओं का आस्वाद

४७ क- " के गंध

स- शेष ६ अधिकारों का कथन

४८ ६ लेश्याओं के परिणाम

४९ " के प्रदेश

५० " के स्थान

५१-५३ द्रव्य और प्रदेशों की अपेक्षा से ६ लेश्या स्थानों का अल्प-वहुत्व

### पंचम उद्देशक

५४ क- ६ लेश्याओं के नाम

स- ६ लेश्याओं के रूप, वर्ण, गंध, रस और स्पर्श का परिणमन-दृष्टान्त

५५ ६ लेश्याओं के परिणमन के हेतु

### षष्ठ उद्देशक

५६ क- ६ लेश्याओं के नाम, अट्टाई द्वीप के [कर्मभूमि, अकर्म भूमि और अन्तर्द्वीपों के] मनुष्यों में ६ लेश्या

५७ ६ लेश्या की अपेक्षा से अट्टाई द्वीप के मनुष्यों में गर्भ स्थिति के भाग

### अष्टादसम कायस्थिति पद

बायीस अधिकारों के नाम

१ और की और रूप में संस्थिति

२ क- नैर्यिक की नैर्यिक रूप में संस्थिति

विशेष ही विशेष रूप में ..

- मनुष्य का मनुष्य रूप में संस्थिति  
 देव की देव रूप में  
 सिद्ध की सिद्ध रूप में
- स अनुभूति प्राप्त जीवों की अपर्याप्त एवं पर्याप्त रूप में संस्थिति  
 ग इंद्रिय—वाचन—अइन्द्रिय की इंद्रिय—वाचन—  
 अइन्द्रिय रूप में संस्थिति
- घ सुव इंद्रिय अपर्याप्त का अपर्याप्त रूप में और नव इंद्रिय  
 पर्याप्त की पर्याप्त रूप में संस्थिति
- ङ सहाय की सहाय रूप में और अहाय की अहाय रूप में  
 संस्थिति
- च सूक्ष्म की सूक्ष्म रूप में और बाह्य की बाह्य रूप में संस्थिति  
 छ-सयोगी की असयोगी रूप में और असयोगी की असयोगी  
 रूप में संस्थिति
- ज सवेदी की सवेदी रूप में और अवेदी की अवेदी रूप में संस्थिति
- झ सवपायी की सवपायी रूप में और अकपायी की अकपायी  
 रूप में संस्थिति
- ञ सलेगी की सलेगी रूप में और अलेगी की अलेगी रूप में  
 संस्थिति
- ट दृष्टि ज्ञान दान सवत साकारानाकारोपगुण आहारक  
 अनाहारक मोक्षक अभामक परित अपरित पर्याप्त अपर्याप्त  
 गूढम ३ सजी ३ भवमिदिक ३ घर्मास्त्रिकाम—वाचन—  
 अरुण समय धरुण अचरुण अधिकारों की संस्थिति

### एकोनविंशतितम सम्यक्त्व पद

- क चीनीय दण्डक में तीन दृष्टि  
 ख मिट्टी में एक दृष्टि

## विंशतितम अन्तक्रिया-पद

अधिकारों के नाम

- १ क- जीव अन्तक्रिया करता है, नहीं भी करता है  
ख- चौबीस दण्डकों में अन्तक्रिया का कथन  
ग- प्रत्येक दण्डक की प्रत्येक दण्डक में अन्तक्रिया
- २ चौबीस दण्डक में अनन्तरागत या परम्परागत की अन्तक्रिया
- ३ चौबीस दण्डक में अनन्तरागतों की एक समय में जघन्य उत्कृष्ट अन्तक्रिया ।

४-११ क चौबीस दण्डक में उद्वर्तन, अनन्तर, उत्पत्ति

ख- केवलि प्रज्ञप्त धर्म का श्रवण

ग- बोधि, श्रद्धा, प्रतीति, रुचि

घ- मतिज्ञानादि की प्राप्ति

ङ- शीलव्रत, गुणव्रत, विरमण व्रत की आराधना

च- अवधि ज्ञान की प्राप्ति,

छ- मुण्डित होना

ज- चक्रवर्ति, बलदेव, वासुदेव, माण्डलिक, चक्ररत्नादि में उत्पत्ति

झ- तीर्थंकर पद की प्राप्ति का कथन

१२ क- असंयत भग्य द्रव्य देव

ख- अविराधित संयम वाले

ग- विराधित संयमवाले,

घ- अविराधित-देश विरतिवाले

ङ- विराधित-देश विरतिवाले

च- असंजी

छ- तापस

ज- कांदपिक

झ- चरकादिक परिव्राजक

य- कित्तिविद्व

अ- तिर्यंच

ट आत्रोविक

ड- आभियोगिर

द दान भ्रष्ट स्वनिङ्गी

इतक जषय, उत्कृष्ट त्रपपात्र का कथन

१३ क चार प्रकार का असजी आयुष्य<sup>१</sup>

ख असजी आयुष्य का प्रमाण

ग असजी आयुष्यवानों का अल्प-बहुत्व

## एक विंशतितम शरीर पद

६ अधिकारों के नाम

१ क पाच प्रकार के शरीर

ख औदारिक शरीर के भेद प्रभेद

२ औदारिक शरीर के सम्भान

३ औदारिक शरीर की जषय उत्कृष्ट अवगाहना

४ वैश्विय शरीर के भेद प्रभेद

५ वैश्विय शरीर के सम्भान

६ वैश्विय शरीर की अवगाहना

७ क आहारक शरीर के भेद प्रभेद

ख आहारक शरीर के सम्भान

ग आहारक शरीर की अवगाहना

८ क तंत्रम शरीर के भेद

ख तंत्रम शरीर के सम्भान

१ असजी आयुष्य असजासवस्था में बधनेवाला नरक, तिर्यंच, मनुष्य और द्रव का आयुष्य

- ६ क- तैसज शरीर की अवगाहना  
 १० पांच शरीरों के पुद्गलों के जाने की दिशाओं का कथन  
 ११ पांच शरीरों का परस्पर सम्बन्ध  
 १२ द्रव्य और प्रदेशों की अपेक्षा पांच शरीरों का अल्प-बहुत्व  
 १३ पांच शरीर की जघन्य उत्कृष्ट अवगाहना का अल्प-बहुत्व

## द्वाविंशतितम-क्रिया-पद

आश्रय

- १ क- पांच क्रियाओं के नाम  
 ख- पांच क्रियाओं की व्याख्या  
 ग- पांच क्रियाओं के भेद  
 १ जीव के सक्रिय या अक्रिय होने के कारण  
 २ चौबीस दण्डक में प्राणातिपात-यावत्-मित्यादर्शनशल्य के विषयों का कथन  
 ४ चौबीस दण्डक में [एक वचन और बहुवचन की अपेक्षा] प्राणातिपात-यावत्-मित्यादर्शनशल्य से कितनी कितनी कर्म प्रकृतियों का बन्धन  
 ५ चौबीस दण्डक में एक वचन और बहु वचन की अपेक्षा से एक कर्म प्रकृति के बन्धन के समय संभावित क्रियाओं की संख्या  
 ६ चौबीस दण्डक में जीव से संबन्धित क्रियाओं की संख्या  
 ७ चौबीस दण्डक में पांच क्रियाओं का परस्पर सम्बन्ध  
 ८ चौबीस दण्डक में एक क्रिया के समय अन्य क्रियाओं की संभावित संख्या  
 ९ चौबीस दण्डक में आयोजित क्रियाओं की संख्या  
 १० चौबीस दण्डक में एक समय एक क्रिया से दूसरी क्रिया का परस्पर स्पर्श  
 ११ क- आरंभिका आदि पांच क्रियाओं के कर्ता

- ख आरम्भिका आदि पाच क्रियाओं के कर्ता
- १२ क चौबीस दण्डक में आरम्भिकादि क्रियाएँ
- ख चौबीस दण्डक में आरम्भिकादि पाँच क्रियाओं का परम्पर सवय
- ग- चौबीस दण्डक में एक समय में आरम्भिकादि पाँच क्रियाओं की सम्भावित सक्षया
- घ चौबीस दण्डक में आरम्भिकादि पाँच क्रियाओं में से एक क्रिया के समय अन्य क्रियाओं की नियमित सम्भावना
- सबद
- १३ प्राणानिपान विरति यावत् मिथ्यादर्शनशक्य भी विरति क के विषयो का कथन
- १४ प्राणानिपान विरत यावत् मिथ्यादर्शनशक्य विरत के कितनी कितनी कम प्रकृतिया का वधन
- १५ प्राणानिपानविरत-यावत् मिथ्यादर्शनशक्य विरत के आरम्भिकादि पाँच क्रियाएँ
- १६ आरम्भिकादि पाँच क्रियाओं का अल्प बहु व

## तयोर्विशतितम कर्म प्रकृति पद

### प्रथम उद्देशक

- १ क अष्ट कर्म प्रकृतियों के नाम
- ख चौबीस दण्डक में अष्ट कर्म प्रकृतियाँ
- २ क चौबीस दण्डक में अष्ट कर्म प्रकृतियों क वधन हेतुओं का क्रम
- ३ क- अष्ट कर्म वध के चार कारण
- ख- चौबीस दण्डक में अष्ट कर्म व ध के चार कारण
- ४ चौबीस दण्डक में अष्ट कर्म प्रकृतियों का वधन
- ५ ज्ञानावरणीय के दम अनुभाव
- ६ दशनावरणीय के तव अनुभाव
- ७ क ज्ञानावेदनीय के आठ अनुभाव

- ख- अशातावेदनीय के आठ अनुभाव  
 ८ मोहनीय के पांच अनुभाव  
 ९ आयु कर्म के चार अनुभाव  
 १० क- शुभ नाम कर्म के चौदह अनुभाव  
 ख- अशुभ नाम कर्म के चौदह अनुभाव  
 ११ क- उच्चगोत्र के आठ अनुभाव  
 ख- नीचगोत्र के आठ अनुभाव  
 १२ अंतराय कर्म की प्रकृतियों के नाम

### द्वितीय उद्देशक

- १३ क- अष्ट कर्म प्रकृतियों के नाम  
 ख- ज्ञानावरणीय के पांच भेद  
 १४ क- दर्शनावरणीय के दो भेद  
 ख- निद्रा पंचक के पांच भेद  
 ग- दर्शन चतुष्क के चार भेद  
 १५ क- वेदनीय के दो भेद  
 ख- शातावेदनीय के आठ भेद  
 ग- अशातावेदनी के आठ भेद  
 १६ क- मोहनीय के दो भेद  
 ख- दर्शन मोहनीय के तीन भेद  
 ग- चारित्र्य मोहनीय के दो भेद  
 घ- कपाय वेदनीय के सोलह भेद  
 ड- नौ कपाय वेदनीय के नव भेद  
 १७ आयुकर्म के चार भेद  
 १८ क- नाम कर्म के विद्यालीस भेद  
 ख- विद्यालीस भेदों के भेद  
 १९ क- गोत्र कर्म के दो भेद



ख- उच्चगोत्र के आठ भेद

ग- नीच गोत्र के "

२० अनराध कम पाँच भेद

२१ २८क अष्ट कर्मों की जपन्य उत्कृष्ट स्थिति

ख ' का अवाधाकाल<sup>१</sup>

२६ ३४ एकैन्द्रियो यावत् पचेन्द्रियो के अष्ट कम की जपन्य उत्कृष्ट व-य स्थिति

३५ उपशमादि भावों की अपेक्षा अष्ट कम की जपन्य उत्कृष्ट स्थिति बाधने वाला ना कथन

३६ चार गणियों में अष्टकम की उत्कृष्ट स्थिति बाधनेवालों का कथन

## चतुर्विंशतितम कर्म बंध पद

१ ३ क अष्ट कम प्रकृतियों के नाम

ख चौबीस दण्डक में अष्टकम प्रकृतियाँ

ग चौबीस दण्डक में (एक जीव या अनेक जीवों द्वारा) एक कम प्रकृति के बंधकाल में अथ प्रकृतियों के बंध की सम्भावित संख्या

## पंचविंशतितम कर्म वेद पद

१ क अष्ट कम प्रकृतियों के नाम

ख चौबीस दण्डक में अष्टकम प्रकृतियाँ

ग चौबीस दण्डक में (एक जीव द्वारा या अनेक जीवों द्वारा) एक कम प्रकृति के बंधकाल में अथ कर्म प्रकृतियों के वेदन की सम्भावित संख्या

## षड्विंशतितम कर्म वेद बंध पद

- १ क- अष्ट कर्म प्रकृतियों के नाम  
 ख- चौबीस दण्डक में अष्ट कर्म प्रकृतियाँ  
 ग- चौबीस दण्डक में (जीव-द्वारा) एक कर्म प्रकृति के वेदनकाल में अन्य प्रकृतियों के बंधन की संभावित संख्या

## सप्तविंशतितम कर्म वेद पद

- १ क- अष्ट कर्म प्रकृतियों के नाम  
 ख- चौबीस दण्डक में अष्ट कर्म प्रकृतियाँ  
 ग- चौबीस दण्डक में (एक जीव द्वारा या अनेक जीवों द्वारा) एक कर्म प्रकृति के वेदन काल में अन्य कर्म प्रकृतियों के वेदना की संभावित संख्या

## अष्टाविंशतितम आहार पद

### प्रथम उद्देशक

ग्यारह अधिकारों के नाम

- १ क- चौबीस दण्डक में तीन प्रकार के आहार का कथन  
 ख- चौबीस दण्डक के जीव आहारार्थी  
 ग- चौबीस दण्डक के जीवों का आहारेच्छाकाल  
 २ क- चौबीस दण्डक में द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अपेक्षा आहार का कथन  
 ख- विधान मार्गणा की अपेक्षा आहार का कथन  
 ग- चौबीस दण्डक में स्पृष्ट पुद्गलों का आहार  
 घ- एक दिशा-यावत्-६ दिशा से आहार का ग्रहण  
 ङ- पुराने पुद्गलों को छोड़कर नये पुद्गलों का ग्रहण  
 च- आत्म प्रदेशावगाढ़—समीपवर्ती आहार का ग्रहण  
 छ- चौबीस दण्डक में आहार का परिणमन और श्वासोच्छ्वास

- ३ ७ चौबीस दण्डक में आहार में गृहिन पुत्रगतो का आम्वाप्न और परिष्मन  
 ८ क चौबीस दण्डक में ऐके द्वय शरीरा का-यावन पचा द्वय गरीरों का आहार  
 ख चौबीस दण्डक में रोम आहार और श्रेय आहार  
 ९ चौबीस दण्डक में मात्र आहार और मन के अनुकूल आहार

### द्वितीय उद्देश्य

हेरह अधिकारी के नाम

- १० क चौबीस दण्डक में आहारक अनाहारक  
 ख सिद्ध अनाहारक  
 क चौबीस दण्डक में भवमिद्धिक आहारक-अनाहारक  
 ख नभवमिद्धिक  
 ग नोभवमिद्धिक नो अभवमिद्धिक  
 क चौबीस दण्डक में मनी जीव [एक जीव या अनेक जीव] आहारक या अनाहारक  
 ख चौबीस दण्डको असनी जीव  
 ग नो मनी नो असनी जीव आहारक अनाहारक  
 घ सिद्ध अनाहारक  
 ११ क चौबीस दण्डक में सन्धेय-यावन अन्वश्य जीव आहारक अनाहारक  
 ख सिद्ध अनाहारक  
 १२ चौबीस दण्डक में सम्पग दृष्टि मिथ्या दृष्टि और मिथ्य दृष्टि आहारक अनाहारक  
 १३ क चौबीस दण्डक में खयन असयन सयत्रासयन जीव आहारक  
 ख सिद्ध अनाहारक  
 १४ चौबीस दण्डक में सक्षयामी यावत् अक्षयामी जीव आहारक अनाहारक

- १५ चौबीस दण्डक में ज्ञानी और अज्ञानी जीव आहारक-  
अनाहारक
- १६ क- चौबीस दण्डक में सयोगी-यावत्-अयोगी जीव आहारक-  
अनाहारक  
ख- चौबीस दण्डक में साकारोपयुक्त अनाकारोपयुक्त जीव  
आहारक-अनाहारक  
ग- चौबीस दण्डक में सवेदी-यावत्-नपुसंकवेदी जीव आहारक-  
अनाहारक  
घ- अवेदी सिद्ध अनाहारक
- १७ क- चौबीस दण्डक में सशरीरी जीव-यावत्-कर्मण शरीरी आहारक  
ख- अशरीरी जीव सिद्ध अनाहारक

### एकोनत्रिंशत्तम उपयोग पद<sup>१</sup>

- १ क- उपयोग के दो भेद  
ख- साकारोपयोग के आठ भेद  
ग- अनाकारोपयोग के चार भेद
- २ चौबीस दण्डक में साकारोपयोग और अनाकारोपयोग का  
कथन

### त्रिंशत्तम पश्यता <sup>२</sup>पद

- १ क- पश्यता के दो भेद  
ख- साकार पश्यता के ६ भेद  
ग- अनाकार पश्यता के तीन भेद

१. वर्तमान काल विषयक और त्रिकाल विषयक स्पष्ट-अस्पष्ट-  
ज्ञान दर्शन

२. त्रिकाल विषयक स्पष्ट-ज्ञान-दर्शन

- घ चौबीस दण्डक में साकार अनाकार पश्यता  
 २ चौबीस दण्डक में साकार अनाकार दर्शा  
 ३ क केवली का एक समय में एक उपयोग  
 ल ईपतप्राग्भारा यावन रत्नप्रभा के जानने और देखने का  
 भि न भि न समय  
 ग परमाणु पुण्यन यावन अनन प्रदेशी स्फुट के जानने और  
 देखने का भि न भि न समय

### एकत्रिंशत्तम सज्ञी पद

- १ क चौबीस दण्डक में मनी अमज्ञी  
 ल मिद्ध नो सज्ञी नो अमज्ञी

### द्वात्रिंशत्तम सयत पद

- १ क सामान्य जीव सयत यावत नो सयत नो अमयत नो सयता  
 सयत  
 ल चौबीस दण्डक में सयत अमयत सयतामयत

### तयस्त्रिंशत्तम-अवधिपद

दस अधिहारों के नाम

- १ क अवधिज्ञान  
 ल दो को भवप्र वधिक  
 ग दो को सायोपशमित  
 २ ४ नारको यावन तेषो क अवधिज्ञान का दोष  
 ५ नारको यावन् देवो क अवधिज्ञान का महयान  
 ६ नारक-यावन देव अवधि मध्यवर्ती स्पष्टतावधि और विधि  
 नावधि की विचारणा  
 ७ नारक यावत देवो का नावधि और सर्वावधि

- ८ नारक-यावत् देवों का आनुगामिक-यावत्-नो अनवस्थित  
अवधिज्ञान

## चतुस्त्रिंशत्तम परिचारणा पद

सात अधिकारों के नाम

- १ चौबीस दण्डक में अनन्तराहार-यावत्-विकुर्वणा  
२ क- चौबीस दण्डक में—इच्छापूर्वक और अनिच्छापूर्वक आहार  
ख- चौबीस दण्डक में आहार रूप में गृहीत पुद्गलों का जानना  
एवं देखना  
ग- जानने देखने और न जानने न देखने का हेतु  
३ क- चौबीस दण्डक में जीवों के अध्यवसाय  
ख- चौबीस दण्डक के जीव सम्यक्त्वो-यावत्-सम्यग्मिध्यात्वो  
४ देवों की परिचारणा के भाग ?  
५ परिचारणा के पांच भेद  
पाच प्रकार की परिचारणा के हेतु  
६ देवताओं के शुक्र का परिणमन  
७ स्पर्श परिचारक देवों के मनका विकल्प  
८ देवों में पांच प्रकार की परिचारणा का अल्प-बहुत्व

## पंचत्रिंशत्तम वेदना पद

- १ क- तीन प्रकार की वेदना  
चौबीस दण्डक में तीन प्रकार की वेदना  
२ ख- चार प्रकार की वेदना  
चौबीस दण्डक में चार प्रकार की वेदना  
ग- तीन प्रकार की वेदना

- चौबीस दण्डक में तीन प्रकार की वेदना  
 घ तीन प्रकार की वेदना  
 चौबीस दण्डक में तीन प्रकार की वेदना  
 छ तीन प्रकार की वेदना  
 चौबीस दण्डक में तीन प्रकार की वेदना  
 ३ दो प्रकार की वेदना  
 चौबीस दण्डक में दो प्रकार की वेदना  
 ४ दो प्रकार की वेदना  
 चौबीस दण्डक में दो प्रकार की वेदना

## षट्त्रिंशत्तम समुद्घात पद

सात अधिहार

- १ क सात प्रकार का समुद्घात  
 म- सात समुद्घातों का काल  
 ग चौबीस दण्डक में समुद्घातों का कथन  
 २ चौबीस दण्डक में एक जीव के अतीत और भविष्यत के समुद्घात  
 ३ चौबीस दण्डक में अनेक जीवों के अतीत और भविष्यत के समुद्घात  
 ४ चौबीस दण्डक में एक जीव के एक भाव में समुद्घातों की संख्या  
 ५ ८ चौबीस दण्डक में एक जीव के एक भाव में अतीत और भविष्यत के समुद्घात  
 ६ ११ चौबीस दण्डक में अनेक जीवों के एक भाव में अतीत और भविष्यत के समुद्घात  
 १२ १५ जीवों के सात समुद्घातों का अल्प वृद्धि  
 १६ क ६ प्रकार का आन्तरिक समुद्घात

ख- चौथीम दण्डको में ६ छात्रस्थिक समुद्घात

- १७-२२ क- समुद्घात के समय पुद्गलो मे व्याप्त और स्पृष्ट क्षेत्र  
 ग- पुद्गलो मे व्याप्त और स्पृष्ट होने का काल  
 ग- पुद्गलो के निकालते समय होनेवाली क्रियायें
- २३ केवली समुद्घात से निर्जरित पुद्गलो की सूक्ष्मता और लोक व्यापकता
- २४ क- छद्मस्थ द्वारा निर्जरित पुद्गलो का न देख सकना  
 ग- न देख सकने का कारण
- २५ क- गव पुद्गलो का उदाहरण  
 ख- केवली समुद्घात के बिना भी निर्वाण
- २६ क- आयोजीकरण के समय<sup>१</sup>  
 ख- केवली समुद्घात के समय  
 ग- प्रत्येक समय में की जानेवाली क्रिया का वर्णन
- २७ केवली समुद्घात के समय योगो का व्यापार
- २८ केवली समुद्घात के पश्चात् योग व्यापार का निषेध  
 केवली समुद्घात के पश्चात् सिद्ध पद
- २९ क- अयोगी को सिद्ध पद की प्राप्ति नहीं  
 ख- योग निरोध का क्रम, सेलेशी अवस्था का काल परिमाण  
 ग- अयोगी को सिद्धपद की प्राप्ति  
 घ- सिद्धो के शरीरादि न होने का कारण  
 ङ- अग्नि दग्ध बीज का उदाहरण

१. आत्मा को मोक्षामिसुख करने के लिये शुभ योग-व्यापार





णमो संजयाणं

## गणितानुयोग प्रधान जम्बूद्वीप-प्रज्ञप्ति उपाङ्ग

अध्ययन १

वज्रस्कार ७

उपलब्ध मूलपाठ ४१४६ अनुष्टुप श्लोक प्रमाण

गद्यसूत्र १७८

पद्यसूत्र ५२



णमो सिद्धाणं

## जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति विषय-सूची

### प्रथम भरतक्षेत्र वक्षस्कार

- २ क- परमेष्ठी वंदना  
ख- मिथिला नगरी, मणिभद्र चैत्य, जितशत्रु राजा, धारणी देवी  
ग- भ० महावीर का पदार्पण, परिपद्, धर्मकथा
- ३ गीतम गणधर की जिज्ञासा
- ३ क- जंबूद्वीप का प्रमाण, आयाम-विष्कम्भ, परिधि  
ख- " का संस्थान  
ग- " का स्वरूप वर्णन
- ४ क- जम्बूद्वीप की जगति के मूल का विष्कम्भ  
ख- " के मध्य का "  
ग- " के ऊपर का "  
घ- गवाक्ष कटक-गोखड़ों की ऊँचाई  
" " का विष्कम्भ  
ङ- पद्मवर वेदिका की ऊँचाई  
" का विष्कम्भ
- ५ वनखण्ड का विष्कम्भ और परिधि वर्णन
- ६ वनखण्ड में देवताओं की क्रीड़ा
- ७ जम्बूद्वीप के चार द्वार और राजधानियों का वर्णन
- ८ क- जम्बूद्वीप के विजय द्वार का स्थान  
ख- " की ऊँचाई, विष्कम्भ  
ग- विजया राजधानी का वर्णन
- ९ एक द्वार से दूसरे द्वार का अन्तर

- १० क भरत क्षेत्र का स्थान विगा विषय अथवा विष्कम्भ  
 ख भरत क्षेत्र का आयताकार और विस्तार  
 ग भरत के उत्तर-दक्षिण का सम्बन्ध  
 घ भरत के ३ विभाग  
 ङ भरत के प्रधान दो विभाग
- ११ क दक्षिण भरत का स्थान विगा विषय आयताकार और  
 विस्तार सम्बन्ध  
 ख दक्षिण भरत के तीन विभाग और विष्कम्भ  
 ग दक्षिण भरत की जीवा का आयाम  
 घ के धनुष्य की परिधि  
 ङ का स्वरूप  
 च के धनुष्यो का लक्षण सम्बन्ध परात की  
 ऊर्ध्व आयु और गति
- १२ क बलाङ्ग पर्वत का स्थान विगा विषय आयत विस्तार  
 ख बलाङ्ग पर्वत की ऊर्ध्व उद्देश और विष्कम्भ  
 ग की जीवा का आयाम  
 घ की जीवा का आयाम  
 ङ के धनुष्य की परिधि  
 च की पश्चिम वैशिका का विष्कम्भ  
 छ के वलङ्ग का विष्कम्भ  
 ज के पून पश्चिम में दो गुफा  
 झ गुफाओं का आयत विस्तार आयाम विष्कम्भ  
 ञ के कण्ट की ऊर्ध्व  
 ट के नाम दो देव देवा की स्थिति  
 ठ बलाङ्ग पर्वत के दोनों पार्श्व में दो विशापर धनिया  
 ड विशापर धनियों का स्थान आयत विस्तार विष्कम्भ

ढ- विद्याघर श्रेणियों के दोनों पार्श्व में दो पद्मवर वेदिका, दो वनखण्ड

ण- पद्मवर वेदिकाओं की ऊँचाई, विष्कम्भ.

त- वनखण्डों का आयाम-विष्कम्भ

थ- दक्षिण में विद्याघरों के नगर

द- उत्तर में "

ध- विद्याघर राजाओं का वर्णन

न- विद्याघर श्रेणियों का वर्णन

प- आभियोगिक श्रेणियों का वर्णन

फ- व्यन्तर देवों का ऋडास्थल

व- शक्रेन्द्र के आभियोगिक देवों के भवन

भ- भवनों का वर्णन

म- आभियोगिक देवों का वर्णन

य- " की स्थिति

र- आभियोगिक श्रेणियों से शिखर की दूरी.

ल- शिखर का आयतन-विस्तार. विष्कम्भ आयाम.

व- " की पद्मवर वेदिका और वनखण्ड

श- शिखर तल का वर्णन. व्यन्तर देवों का ऋडास्थल

ष- वैताड्य पर्वत पर लो कूट.

१३ क- सिद्धायतन कूट का स्थान

ख- " की ऊँचाई

ग- " के मूल, मध्य और ऊपर की परिधि

घ- " के मूल, मध्य और ऊपर की परिधि

ङ- पद्मवर वेदिका-वनखण्ड वर्णन

च- सिद्धायतन का आयाम-विष्कम्भ और ऊँचाई

छ- " के तीन द्वारों की ऊँचाई और विष्कम्भ

ज- देवछदक का आयाम-विष्कम्भ और ऊँचाई

- ऋ एक मो आठ जिन प्रतिमाओं की ऊँचाई  
 १४ क दक्षिणार्ध भरतकूट का स्थान प्रमाण  
 ख प्रासाद की ऊँचाई और विष्कम्भ  
 ग मणिपीठिका का आयाम विष्कम्भ और ऊँचाई  
 घ सिंहासन वणन  
 ङ दक्षिणार्ध भरत देव और उसकी स्थिति  
 च सामानिक देव अथमहीवी परिषत् सेना सेनापति आत्म  
 रक्षक देव  
 छ दक्षिणार्ध राजधानी का स्थान  
 ज शेषकूटो का समान वणन  
 झ तीन कूट स्वयमय ६ कूट रत्नमय  
 ञ दो कूट के देवों के नाम दोष ६ कूर्मों के नामों के अनुसार  
 देवों के नाम देवों की स्थिति  
 ट देवों की राजधानियों का स्थान  
 १५ क वैताद्वय पर्वत नाम होने का हेतु  
 ख वैताद्वय गिरि कुमार देव और उसकी स्थिति  
 ग वैताद्वय नाम गस्वत  
 १६ क उत्तार्ध भरत का स्थान  
 ख के तीन विभाग  
 ग का आयाम  
 घ की बाह्य का आयाम  
 ङ की जीवा का आयाम  
 च के अनुपृष्ठकी परिधि  
 छ का वणन दावत मनुष्यों की गति  
 १७ क अथमकूट पर्वत का स्थान  
 ख की ऊँचाई और उद्वेग  
 ग के मूल मध्य और ऊपर का विष्कम्भ

- घ- मूल मध्य और ऊपर की परिधि<sup>१</sup>  
 छ- पञ्चवर वेदिका का-वनमण्ड वर्णन-यावत्  
 च- प्रसाद की ऊँचाई विष्णुम्भ आदि  
 छ- देव वर्णन. राजधानी वर्णन

## द्वितीय काल वक्षस्कार

- १८ क- काल के दो भेद  
 ख- अवसपिणी काल के ६ भेद  
 ग- उत्सपिणी काल के ६ भेद  
 घ- एक मुहूर्त के द्वासीच्छ्वास  
 छ- स्तोक, लव, मुहूर्त अहोरात्र, पक्ष, मास, ऋतु, अयन, संवत्सर, युग, शतवर्ष, सहस्रवर्ष, लक्षवर्ष, पूर्वांग, पूर्व, यावत् शीर्षं प्रहेलिका प्रमाण  
 च- औपमिक काल
- १९ क- औपमिक काल के दो भेद  
 ख- पत्योपम प्रमाण  
 ग- परमाणु-यावत्-पत्यप्रमाण  
 घ- सागरोपम प्रमाण  
 (१) सुपम-सुपमा काल का प्रमाण  
 (२) सुपमा " "  
 (१) सुपम-दुपमा " "  
 (४) दूपम-मुपमा " "  
 (५) दुपमा " "  
 (६) दुपम-दुपमा " "
- च- उत्सपिणी काल प्रमाण

१. परिधि प्रमाण का पाठान्तर.



- ६ उग्रविणी-अवतारिणी नाम प्रमाण  
 ७ अवतारिणी के गुणगुणमा कान का विस्तृत वर्णन  
 २० दस कल्पकृत वर्णन  
 २१ गुणम गुणमा के मनुष्या और सिव्यों का वर्णन बत्तीस तन्त्रों के नाम  
 २२ क गुणम-गुणमा के मनुष्या की आहारेच्छा का वर्णन  
 ख में मनुष्यों का आहार  
 ग म गुण्यी का आस्वा  
 घ में पुण्य पुण्य का आस्वा  
 २३ क म मनुष्या का निवास स्थान  
 ख में कृपा का आहार  
 २४ क गुणम गुणमा में गृह प्राप्ति का अभाव  
 ख में दयेच्छाविषा करने वाले मनुष्य  
 ग म अग्नि मग्नि कृषिकर्मों का अभाव  
 घ में सामाजिक व्यवस्थान का अभाव  
 ङ में म ता आग्नि में राग का अभाव  
 च में घर का अभाव  
 छ में मित्राग्नि का अभाव  
 ज में तीव्र राग का अभाव  
 झ में विवाहाग्नि का अभाव  
 ञ में इन्द्रमहोत्सव अग्नि का अभाव  
 ट में नटाग्नि का अभाव  
 ठ में मानों का अभाव  
 ड में गाय आग्नि की उपयोगिता का अभाव  
 ढ अश्व आग्नि की उपयोगिता का अभाव  
 ण में सिंहादि स्वापदों की चूरता का अभाव  
 त में घावों का अनुपयोग

- य- सुपम-सुपमा में विपम भूमि का अभाव  
 द- " में स्थाणु कंटकादि का अभाव  
 घ- " में दंसमशकादि का अभाव  
 न- " में व्याधिकों का अभाव  
 प- " में युद्धादि का अभाव  
 फ- " में पैतृकरोगों का अभाव  
 व- " में महारोगों का अभाव  
 भ- " में भूतवाघा का अभाव  
 २५ क- सुपम-सुपमा में मनुष्यों की स्थिति  
 ख- " " की अवगाहना  
 ग- " " का संहनन  
 घ- " " का सस्थान  
 ङ- " " के पसलियां  
 च- " में प्रसवकाल  
 छ- " में शिशु पालन काल  
 ज- " में मनुष्यों की मरणोत्तर गति  
 झ- " में मनुष्यों की छःजातियां  
 २६ सुपमा काल का वर्णन  
 २७ क- सुपम-दुपमा काल का वर्णन  
 ख- " के तीन विभाग  
 ग " के प्रथम-मध्यम भाग का वर्णन  
 घ- " के अन्तिम भाग का वर्णन  
 २८ सुपम-दुपमा काल के अन्तिम भाग में पन्द्रह कुलकर  
 २९ क- (१) पांच कुलकरों की दण्डनीति  
 ख- (२) " " "  
 ग- (३) " " "  
 ३० क- भ० ऋषभ देव की उत्पत्ति

ग	म० श्वभक्षेव का कुमार काण
ग	राज्याण काण
घ	बहत्तर बलाभा का उपादेण
ङ	चीनठ कसाधों का उपादेण
च	म० श्वभक्षेव द्वारा पुत्र का राध्याभिषेक
छ	म० श्वभक्षेव का मनहार प्रह्वग्या प्रह्वण
ज	का बेजसाध
झ	का दीना-नाम का तर
ञ	के माय दीनिन हीनेबायो की सख्या
ट	का तब देवदूष्य
३१	क म० श्वभक्षेव का यय यय ल देव दूष्य धारण
ग	के उपमग
ग	के समयी जीवन का वणन
घ	के समयी जीवन की उपमाय
ङ	के चार प्रतिवर्धों का अभाव
च	के केवल ज्ञान का कान
छ	के केवल ज्ञान का स्थान

पुरिमलाल मगर शकट मुख उद्यान श्वप्राध पाण्य के नीचे  
 पावपुन हुंथा प्कासी-पूर्वावह काल

ज	म० श्वभक्षेव द्वारा पांच मह वन और षट् जीवनिकाय का उपदेश
झ	म० श्वभक्षेव देव के गण मणपर
ञ	के उत्कृष्ट श्रमण प्रमुख श्वभक्षेव
ट	के उत्कृष्ट श्रमणिया प्रमुख साझी सुन्दी
ड	के उत्कृष्ट श्रमणोपासक प्रमुख श्रमण
ड	के उत्कृष्ट श्रमणोपासिका प्रमुख सुमदा
ण	के उत्कृष्ट श्रमण पूर्वी मुनि

- त- भ० के ऋषभ देव उत्कृष्ट अवधिज्ञानी मुनि  
 थ- " के उत्कृष्ट केवलज्ञानी मुनि  
 द- " के उत्कृष्ट वैक्रियलब्धिवाले मुनि.  
 ध- " के उत्कृष्ट मनः पर्यवज्ञानी मुनि  
 न- " के उत्कृष्ट वादलब्धिवाले मुनि  
 प- " के उत्कृष्ट अनुत्तरीपपातिक मुनि  
 फ- " के उत्कृष्ट सिद्धपद प्राप्त करने वाले मुनि  
 ब- " के उत्कृष्ट सिद्धपद प्राप्त आर्याएं  
 भ- " के उत्कृष्ट सिद्धपद प्राप्त शिष्य-शिष्याओं की संयुक्त  
 सह्या  
 म- " की दो प्रकार की अन्तकृत भूमि<sup>१</sup>  
 ३२ क- भ० ऋषभ देव के पांच प्रधान जीवनप्रसंग उत्तरापाढ़ा में  
 ख- " का निर्वाण अभिजित् में  
 ३३ क भ० ऋषभदेव का संहनन  
 ख- " का संस्थान  
 ग- " की ऊँचाई  
 घ- " का कुमार काल  
 ङ- " का राज्य काल  
 च- " का अनगर प्रव्रज्या काल  
 छ- " का छद्मस्थ जीवन  
 ज- " का केवली जीवन  
 झ- " का निर्वाण का  
 ञ- " का निर्वाण दिन माघकृष्णा त्रयोदशी  
 ट- " का पूर्णायु  
 ठ- " का निर्वाण स्थान श्रष्टा पद पर्वत

१. अन्तकृतभूमि-मुक्त होनेवाले शिष्य प्रशिष्य

- उ म० ऋषभदेव के माय निर्वाण होने वाले मुनि  
 के निर्वाण काल का उप  
 ङ का निर्वाण बाल का आसन  
 ण का निर्वाणोत्सव  
 त म० ऋषभदेव व अन्य धामधो की भस्मि का क्षीरोद समुद्र में  
 प्रक्षेप  
 थ देवेन्द्रो द्वारा जिन अस्त्रियों का ग्रहण  
 द देवेन्द्रो द्वारा तीन चैत्यस्तूपों के निर्माण का आवेक  
 घ नदीश्वर द्वीप में अष्टाहिका निर्वाण महोत्सव  
 न शक द्व द्वारा पूव अज्जनक पर्वतपर अष्टाहिका महोत्सव  
 प लोकपालों द्वारा चार दधिमुख पर्वता पर  
 फ ईशाने द्व द्वारा उत्तर के अज्जनक पर्वत पर  
 ब लोकपालों द्वारा चार दधिमुख पर्वता पर  
 भ चमर द्व द्वारा दक्षिण के अज्जनक पर्वत पर  
 म लोकपालों द्वारा चार दधिमुख पर्वतों पर  
 य बलेन्द्र द्वारा पश्चिम के अज्जनक पर्वत पर  
 र लोकपालों द्वारा चार दधिमुख पर्वतों पर  
 ल देवेन्द्रो द्वारा सुषर्मा सभा के भाणवक वैन व शतम्भों में  
 जिन अस्त्रियों की स्थापना और अर्चना  
 ३४ क दुषमा सुषर्मा वान का वणन  
 ख में तीन वर्गों की उत्पत्ति  
 ग में तेवीस तीर्थकर  
 घ में इन्दारह चक्रवर्ती  
 ङ में नव बलदेव नव वासुदेव  
 ३५ क दुषमा काल का वणन  
 ख के तीन विभाग  
 ग के अर्ध तम भाग में धर्म विच्छेद

- ३६ दुपमा-दुपमा काल का विस्तृत वर्णन
- ३७ क- उत्सर्पिणी काल  
 ख- दुपम-दुपमा काल का वर्णन  
 ग- दुपमा का काल वर्णन
- ३८ क- उत्सर्पिणी के दुपम काल में—पंच मेघ वर्षा  
 १. पुष्कर संवर्तक मेघ वर्षा वर्णन  
 २. क्षीर मेघ ”  
 ३. घृत मेघ ”  
 ४. अमृत मेघ ”  
 ५. रस मेघ ”
- ३९ क- मांसाहार का सर्वथा निषेध  
 ख- मांसाहारियों की छाया के स्पर्श का निषेध
- ४० क- उत्सर्पिणी के दुपम-दुपमा काल का वर्णन  
 ख- उत्सर्पिणी के सुपमा काल का वर्णन  
 ग- ” सुपम-सुपमा काल का वर्णन

### तृतीय भरत चक्रवर्ती वक्षस्कार

- ४१ क- भरत नाम होने का हेतु  
 विनीता नगरी वर्णन  
 ख- विनीता राजधानी के स्थान का निर्णय  
 ग- ” का आयात विस्तार दिशा  
 घ- ” का आयात-विष्कम्भ
- ४२ क- भरत चक्रवर्ती वर्णन  
 ख- ” देह वर्णन  
 ग- वत्तीस प्रशस्त लक्षण  
 घ- भरत चक्रवर्ती की कुछ उपमाएं

- ४६ क आनुवंशिकता में अकारण की उत्पत्ति  
 ग आनुवंशिकता के अध्ययन द्वारा अकारण की उत्पत्ति  
 ग " " का धरन से निवेदन  
 घ धरन का अकारण की उत्पत्ति  
 ङ आनुवंशिकता के अध्ययन की प्रीतिमान  
 च विनोबा नगरी को बनाने का आदेश  
 छ धरन अकारणों का समान अनुपात  
 ज धरन का अकारण के समीप जाना  
 झ धरन के साथ राधा महाराजा आदि का तथा वीरे पुत्र  
 म सामग्री लेकर आणविकी का जाना  
 न धरन द्वारा अकारण की उत्पत्ति  
 ट अकारण भौतिक की रचना  
 ठ अकारण धरन प्रथमियों का अकारण आदि का आदेश
- ४७ क अकारण का मातृधर्म की ओर प्रयाण  
 ग अविशेष हस्ति और सेना का सन्तुष्ट होने का आदेश  
 ग धरन का मातृधर्म के समीप पहुँचना  
 घ बड़ी रत्न भण्ड को स्थापना (दावनी) निर्माण का आदेश  
 ङ धरन का पौत्रधर्म आदि म अष्टम भवन तथा  
 च चौथे दिन प्रातः धरन का अकारण पर आदेश होकर आगे  
 चटना
- ४८ क अकारण समुह के विनाश में मातृधर्म तीर्थाधिपति देव के भवन में  
 चाल का प्रयोग  
 ग मातृधर्म तीर्थाधिपति देव द्वारा धरन का अकारण बहुमूल्य रत्न  
 धरन और मातृधर्म तीर्थों का समर्थन  
 ग धरन द्वारा मातृधर्म तीर्थाधिपति देव का अकारण  
 घ धरन का स्थापना म लौटकर आना  
 ङ अष्टम भवन तथा का कारण

च- मागधतीर्थ देव का अष्टान्हिका महोत्सव

छ- सुदर्शन चक्र का चरदामतीर्थ की और बढ़ाना

४६-४६ चरदाम और प्रभासतीर्थ का वर्णन मागधतीर्थ के समान

५० क- चक्ररत्न का सिन्धुदेवी भवन की और बढ़ना

ख- स्कंधावार और पीपघशाला का निर्माण, अष्टम भवततप

ग- सिन्धुदेवी द्वारा भरत का सत्कारसन्मान

घ- पारणा, सिन्धुदेवी का अष्टान्हिका महोत्सव

५१ क- चक्ररत्न का वैताढ्य पर्वत की ओर बढ़ना, स्कंधावार पीपघ शाला, अष्टम भवत, वैताढ्य गिरिकुमार देवद्वारा भरत का सत्कार

ख- भरत द्वारा वैताढ्य देव का अष्टान्हिका महोत्सव

ग- चक्ररत्न का तमिस्रा गुफा की ओर बढ़ना भरत का अष्टम भवत तप

कृतमाल देव का आराधन

घ- कृतमाल देव द्वारा भरत का सत्कार, सन्मान स्त्रीरत्न के लिये चौदह प्रकार के आभूषणों का समर्पण

ङ- भरत द्वारा कृतमाल देव का अष्टान्हिका महोत्सव

५२ क- सुसेण सेनापति को सिन्धु नदी, समुद्र और वैताढ्य पर्यन्त के सभी राज्यों को आधीन करने का भरत का आदेश

ख- सुसेण का विजय प्रयाण, चर्मरत्न द्वारा सिन्धुनदी को पार करना

ग- सिंहल, बर्बर, श्रङ्गलोक, वलात्रलोक, यवनद्वीप, अरब, रोम अलसण्ड, पिकबुर, कालसुख, जोनक आदि म्लेच्छदेश और कच्छ देश आदि जनपदों को जीत कर सुसेण का ससैन्य वापिस लौटना. भरत को सब उपहार भेंट करना पश्चात् स्वयं के पटमण्डप में जाकर विश्राम करना



- ५३ क भरत का सुमन की तमिस्रा गुफा के द्वार सोनने का आग्ने  
 ख मुनेष द्वारा कृदमाल देव की आराधनाय अष्टम भवन तप  
 ग चौथ दिन मुनेष द्वारा तमिस्र गुफा के द्वार की पूजा  
 घ गुफा के द्वार पर दण्डरतन का प्रहार  
 ङ भरत की द्वार सुनने की सूचना देना
- ५४ क काकशी रत्न के आनोक से गजरत्नारुड होकर मणिरत्न और  
 भरत का तमिस्र गुफा में प्रवेश  
 ख मणि रत्न और काकशी रत्न का प्रमाण मणिरत्न और काकशी  
 रत्न के अचिरत्य प्रभाव
- ५५  
 ग उममजला निममजला नाम देने का हेतु  
 घ भरत द्वारा उममजला और निममजला के मुख सवमणाय  
 पुत्र बांधने का आग्ने  
 ङ तमिस्रा गुफा के उत्तर द्वार का स्वयं सुचना
- ५६ क उत्तराघ भरत में आपानचिनातों के प्रयोगों में उत्पाता के  
 होना  
 ख चिनात सेना का भरत सेना से युद्ध भरत सेना की पराजय
- ५७ क अमिरत्न और दण्डरतन लेकर सुमन सेनापती का चिनात  
 सेना को परास्त करना  
 ख अमिरत्न और दण्डरतन का प्रमाण
- ५८ क बल्लु चिनाता द्वारा स्व कुलभेद मेघमुख नाथ कुमार की आरा  
 घना  
 ख नाथ कुमार द्वारा भरत सेना पर घूमनाशर वर्षा
- ५९ क सनन वर्षा में बल्लु भरत सेना की नीवारूप चमरत्न और  
 द्वावरत्न में रक्षा  
 ख चम रत्न और द्वावरत्न का प्रमाण
- ६० क मणिरत्न से प्रकाश गाथापति रतन सेना की भोजन व्यवस्था

ख- सात रात्रि की सतत वर्षा से भरत सेना की सुरक्षा

ग- विविध धान्यों के नाम

६१ क- चिन्तित भरत के सहयोग के लिये सोलह हजार देवों का आना और मेघमुख नाग कुमार को वर्षा करने से रोकना

ख- चिलातों द्वारा आत्म समर्पण और भरत से क्षमा याचना

ग- भरत की आज्ञा से सुसेण सेनापति का सिन्धु नदी के पश्चिम तटवर्ती प्रदेशों को आज्ञाधीन करना

६२ क- चुल्ल हिमवत गिरि की और चक्ररत्न का बढना

ख- चुल्ल हिमवत देव की आराधना के लिये भरत का अप्सुम तप करना

ग- चौथे दिन प्रातः चुल्ल हिमवत देव की सीमा में शर फेंकना

घ- बहत्तर योजन पर्यन्त शर का जाना

ङ- चुल्ल हिमवत देव द्वारा भरत का सत्कार सम्मान और उत्तरी सीमा की सुरक्षा का आश्वासन

६३ क- भरत का ऋषभकूट पर्वत के समीप पहुँचना और अग्रशिला पर काकणी रत्न से नामांकन करना

ख- चुल्ल हिमवत देव का अप्सुमिका महोत्सव

ग- दक्षिण में वैताद्वय पर्वत की और चक्ररत्न का बढना

६४ क- वैताद्वय पर्वत के समीप भरत का अप्सुम तप

ख- विद्याधर राज नमि-विनमि द्वारा भरत का उचित आतिथ्य, स्त्री रत्न का समर्पण

ग- भरत द्वारा विद्याधर राज नमि-विनमि का मान संवर्धन

६५ क- खण्ड प्रपात गुफा के दक्षिण द्वार का उद्घाटन

ख- नृत्यमाल देव की आराधना

ग- भरत की आज्ञा से गंगातट वर्ती प्रदेशों को आज्ञाधीन करने के लिये सुसेण का सफल प्रयाण

घ- उमग्न-निमग्नजला नदियों को पार करना

- ६६ ङ लण्ड प्रपात गुफा के उत्तर द्वार का उन्मूलन  
गुफा के पश्चिमी विनारे पर भारत के आने में स्कंधावार का निर्माण
- ख भारत का नवनिर्दिष्ट आराधनाय अष्टम तप  
ग नवनिर्दिष्टा की प्राप्ति अष्टाहिका महोत्सव  
घ भारत का विनीता के लिए प्रस्थान
- ६७ क भारत के समुद्र का पवन  
ख विनीता के समीप भारत का अष्टम तप  
ग भारत का विनीता प्रवेश  
घ सेनापति आदि राज्याधिकारियों तथा धनी प्रभुओं का योग्य महत्कार सम्मान  
७ भारत चक्रवर्ती की विजय-यात्रा समाप्त
- ६८ १ क भारत का राज्याभिषेक  
ख अभिषेक मण्डप और अभिषेक पीठ का निर्माण  
ग अष्टम तप  
घ सेनापति यावन-युरोहित आदि सभी नगर प्रमुखों द्वारा भारत का अभिषिषण  
ङ सोलह हजार देवियों द्वारा मुकुट और माना पहनाना  
च बारह वर्ष पश्चात् विजय महात्म्य भवान् रहने की घोषणा  
छ अभिषेक के पश्चात् तप का पारणा  
ज भारत चक्रवर्ती द्वारा सर्वका यथाचित आदर-सत्कार
- ६८ २ क चक्रादि चार रत्नों का उत्पत्ति स्थान आनुषंगाला  
ख छत्रादि तीन रत्नों का स्थान  
ग सेनापति आदि चार रत्नों का विनीता  
घ अश्व मंत्र आदि का वृत्तादय पवन  
ङ मुमुग्धा स्त्री रत्न का उत्पत्ति स्थान उत्तर विद्यापर धनी भारत चक्रवर्ती का वैभव

६६ क-	रत्न	संख्या
ख-	निधि	"
ग-	देव	"
घ-	आज्ञाधीन राजा	"
ङ-	ऋतु कल्याणक	"
च-	जनपद कल्याणक	"
छ-	नाटक के स्थान	"
ज-	सूपकार-रसोईया	"
झ-	श्रेणी-प्रश्रेणी	"
ञ-	अश्व सेना	"
ट-	गज सेना	"
ठ-	रथ सेना	"
ड-	पैदल सेना	"
ढ-	पुरवर-श्रेष्ठ नगर	"
ण-	जनपद देश	"
त-	ग्राम	"
थ-	द्रोणमुख	"
द-	पट्टण	"
ध-	कवट	"
न-	मंडप	"
प-	आकर	"
फ-	खेड़ा	"
ब-	संवाह	"
भ-	अन्तरोदक-द्वीप	"
म-	कुराज्य भिल्लादि का राज्य	"
य-	विनीता राजधानी के अधीन राज्य सीमा	"
७० क-	भरत का आदर्श घर में आत्म दर्शन	

- ए बचन ज्ञान दान की उत्पत्ति  
 ग आभरनाम्बिका स्थाप  
 घ पथ मुष्टिक मुचन  
 ङ साय दीरिन हाने बात  
 च अष्टादश पवन पर अन्तिम सापना  
 छ भग्न का कुमार जीवन  
 मञ्जरी राज जीवन  
 चतुर्वर्ती  
 गृध्राम जीवन  
 केवली  
 धमण  
 मर्दानु  
 शलेशना कान  
 मणव

भरत का निर्वाण मरण समय

७१ भरत का सादवन नाम

### चतुर्थ चुल्ल हिमवत वत्सस्कार

- ७२ क चुल्ल हिमवत वदधर पवन के स्थान का निगम  
 ख की ऊचाई उद्देश और विषयम्भ  
 ग की बहा का आयाम  
 घ की शीवा का आयाम  
 ङ के धनुष्य की परिधि  
 च का मर्याद  
 छ की पृथ्वर वेत्तिका और वन्दन  
 ज का वचन  
 झ- व्यतरो का शीटा स्थल

## पद्मद्रह वर्णन

- क- पद्मद्रह का आयत-विस्तार  
ख- ,, आयाम-विष्कम्भ  
ग- ,, उद्वेघ  
घ- ,, की पद्मवर वेदिका-वनखण्ड

## पद्मवर्णन

- ङ- पद्म का आयाम-विष्कम्भ  
च- ,, का उद्वेघ-ऊँचाई और अग्रभाग का परिमाण  
छ- पद्म की कर्णिका का आयाम विष्कम्भ  
ज- भवन का आयाम विष्कम्भ और ऊँचाई  
भवन के तीन द्वार  
द्वारों की ऊँचाई विष्कम्भ  
झ- मणि पीठिका का आयाम-विष्कम्भ और बाहुल्य  
ञ- गयनीय वर्णन  
ट- पद्म को घेरनेवाले पद्म  
पद्मों का आयाम-विष्कम्भ, बाहुल्य, उद्वेघ और ऊँचाई  
ठ- पद्मों की कर्णिका का आयाम-बाहुल्य  
ड- श्रीदेवी के सामानिक देवियों के पद्म  
ढ- श्रीदेवी की महत्तरिकाओं के पद्म  
ण- श्रीदेवी की तीन परिपद् के पद्म  
त- सर्व पद्मों की संख्या  
थ- पद्मद्रह नाम होने का हेतु  
द- श्रीदेवी-श्रीदेवी की स्थिति  
घ- पद्मद्रह शाश्वत नाम  
गंगा नदी वर्णन  
७४ क- गंगा नदी का उद्गम स्थान  
ख- पद्मद्रह गंगावर्त कुण्ड पर्यन्त गंगा प्रवाह का परिमाण

- ग त्रिदिक्का का परिमाण
- घ गगावन कुण्ड स गगा प्रपात कुण्ड पर्यन्त गगा प्रवाह का परिमाण
- ङ गगा प्रपात कुण्ड का आयाम विष्कम्भ परिधि उद्देश
- च पद्मवेदिका और वनमण्ड का वणन
- छ मोन म्पोरानों का वर्णन
- ज मारखों का वर्णन
- झ अष्ट रुमला का वणन  
गगाद्वीप का वर्णन
- ञ गगाद्वीप का आयाम विष्कम्भ और परिधि
- ट गगादेवी के भवन का आयाम विष्कम्भ और ऊँचाई
- ठ मणिपीठिका का वणन
- ड गगाद्वीप का गण्डवन नाम
- ढ उत्तराध भारत मे सान हजार नदियों का गगा मे मिलना
- ण दक्षिणाध भारत मे सान हजार नदिया क और मिनर स चौदह हजार नदियों का गगा मे सगम
- त गगा का लक्षण समुद्र म मिलना
- थ गगा नदी के उत्पन्न स्थान मे प्रवाह का विष्कम्भ और उद्देश
- द समुद्र सगम म गगानदी के प्रवाह का विष्कम्भ और उद्देश
- ध सिंधु नदी वर्णन  
सिंधु नदी म चौदह हजार नदियों का सगम
- न सिंधु आवर्त कुण्ड वर्णन
- प सिंधु प्रपात "
- फ सिंधु द्वीप "
- ब राहितागा नदी  
राहितागा नदी म अटठावीस हजार नदियों का सगम

भ- रोहितांशा प्रपात कुण्ड में नदियों का संगम

म- रोहितांशा द्वीप

७५ क- चुल्ल हिमवन्त पर ग्यारह कूट

ख- सिद्धायतन कूट का स्थान

ग- " के मूल, मध्य और ऊपर का विष्कम्भ

घ- " के मूल, मध्य और ऊपर की परिधि

पद्मवर वेदिका और वन खण्ड का वर्णन

ङ- सिद्धायतन का आयाम-विष्कम्भ और ऊँचाई

च- जिन प्रतिमाओं का वर्णन

छ- चुल्ल हिमवन्त कूट का स्थान, आयाम-विष्कम्भ

ज- प्रासादावतसक की ऊँचाई और विष्कम्भ

झ- सिंहासन, परिवार

ञ- चुल्ल हिमवन्त देव और उसकी स्थिति

ट- चुल्ल हिमवन्ता राजधानी का स्थान

ड- शेष कूटों का चुल्लहिमवन्त कूट के समान वर्णन

ड- चार कूटों पर देवता. शेष कूटों पर देवियां

ढ- चुल्ल हिमवन्त नाम का हेतु

ण- चुल्ल हिमवन्त देव और उसकी स्थिति

त- चुल्ल हिमवन्त देव और उसकी स्थिति

७६ क- हेमवन्त क्षेत्र का स्थान

ख- हेमवन्त क्षेत्र का आयत, विस्तार दिशा.

ग- " का सस्थान

घ- " का विष्कम्भ

ङ- " की वाहा का आयाम

च- " की जीवा का "

छ- " के धनुष्य की परिधि

ज- " में सुपम-दुपमा काल के समान सर्वदा स्थिति



- ग निन्दिका का परिमाण  
 घ गगावत्त कुण्ड मे गगा प्रपात कुण्ड पर्यन्त गगा प्रवाह का परिमाण  
 ङ- गगा प्रपात कुण्ड का आयाम विष्कम्भ, परिधि उद्वेध  
 च पञ्चवेदिका और वनखण्ड का वन  
 छ तीन श्लोपानो का वर्णन  
 ज तारणो का वर्णन  
 झ अष्ट भगलो का वर्णन  
 गगाद्वीप का वर्णन  
 ञ गगाद्वीप का आयाम विष्कम्भ और परिधि  
 ट गगादेवी क भवन का आयाम विष्कम्भ और ऊँचाई  
 ठ मणिपीठिका का वन  
 ड गगाद्वीप का शासन नाम  
 ढ उत्तराय भरत म सात हजार नदियो का गगा मे मिलना  
 ण दक्षिणाय भरत मे मान हजार नदियो क और मिनन स चौदह हजार नदियो का गगा मे सगम  
 त गगा का लक्षण समुद्र मे मिलना  
 थ गगा नदी के उदगम स्थान म प्रवाह का विष्कम्भ और उद्वेध  
 द समुद्र सगम म गगानदी के प्रवाह का विष्कम्भ और उद्वेध  
 ध सिंधु नदी वर्णन  
 सिंधु नदी म चौदह हजार नदियो का सगम  
 न सिंधु आवर्त कुण्ड वर्णन  
 प सिंधु प्रपात ' ''  
 फ सिंधु द्वीप ''  
 ब शोडिनागा नदी ''  
 राष्ट्रिनागा नदी म अष्टावीस हजार नदियो का सगम

ज- रोहिता प्रताप कुण्ड का आयाम-विष्कम्भ परिधि और उद्देश

झ- रोहित द्वीप का स्थान आयाम विष्कम्भ परिधि और ऊँचाई

ञ- पद्मवर वेदिका और वनखण्ड का वर्णन

ट- भवन का आयाम-विष्कम्भ

ठ- अट्ठावीस हजार नदियों का रोहिता नदी में संगम

शेष वर्णन रोहितांशा नदी के समान

हरिकान्ता नदी का वर्णन

ड- हरिकान्ता नदी का स्थान

ढ- जिह्विका का परिमाण

ण- हरिकान्ता प्रपात कुण्ड का आयाम विष्कम्भ और परिधि

त- हरिकान्ता द्वीप का आयाम विष्कम्भ परिधि और ऊँचाई

शेष वर्णन सिन्धु द्वीप के समान

हरिकान्ता नदी में छप्पन हजार नदियों का संगम

८१ क- महा हिमवन्त वर्षधर पर्वत के आठ कूट

ख- कूटों का आयाम-विष्कम्भ

ग- महाहिमवन्त देव और उसकी स्थिति

८२ क- हरि वर्ष क्षेत्र का स्थान

ख- " का विष्कम्भ

ग- " की वाहा का आयाम

घ- " की जीवा का "

ङ- " के धनुषपृष्ठ की परिधि

च- " में सुपमाकाल के समान सदा स्थिति

छ- विकटापाती वृत्त वैताड्य पर्वत का स्थान

ज- अरुण देव और उसकी स्थिति

झ- विकटापाती राजधानी का स्थान

- ७७ क शब्दाशाली वृत्त वैतादृश पर्वत का स्थान  
 ल ' ' की ऊँचाई, उद्देश्य मत्वात  
 आषाम विश्वम्भ और परिधि  
 ग पद्मवर वेदिका और वनखण्ड वणन  
 घ प्रानादावतमज की उचाई आषाम विश्वम्भ और मिहामन  
 परिवार  
 ङ शब्दाशाली वृत्त वैतादृश नाम होने का हेतु  
 च शब्दाशाली देव देव की स्थिति और देव परिवार  
 छ शब्दाशाली राजधानी का स्थान
- ७८ क हैमवन नाम होने का हेतु  
 ल हैमवन देव और उनकी स्थिति
- ७९ क महा हिमवन्त शर्षधर पर्वत का स्थान  
 ल के भायत विस्तार की दिशा  
 ग की ऊँचाई उद्देश्य, विश्वम्भ  
 घ की बाहा का आषाम  
 ङ की जीवा का ,  
 च के अनुच्छेद की परिधि  
 छ पद्मवर वेदिका और वनखण्ड वणन  
 ज श्वन्तर देवा का स्थान स्थल
- ८० क महापद्मद्वय का स्थान  
 ल का आषाम विश्वम्भ  
 ग पद्म का प्रमाण  
 घ ह्री देवी और उनकी स्थिति  
 ङ महापद्म द्वय का शास्त्र नाम  
 रोहिता नदी वर्णन  
 च उद्गम स्थान में प्रवाह का परिमाण  
 छ त्रिद्विजा का परिमाण

ठ- प्रत्येक चक्रवर्ती विजय<sup>१</sup> से अट्ठावीस हजार नदियों का सीतोदा में संगम

ड- सीतोदा में पचपन लाख बत्तीस हजार नदियों का मिलना

ढ- उद्गम स्थान में सीतोदा नदी का विष्कम्भ और उद्घेघ

ण- समुद्र में मिलने के स्थान में सीतोदा नदी का विष्कम्भ और उद्घेघ

त- पद्मवर वेदिका और वन खण्डवर्णन

थ- निपद्य पर्वत पर नो कूट

द- प्रत्येक कूट का परिमाण बुल्ल हिमवन्त कूट के समान

व- निपद्य राजधानी का स्थान

न- निपद्य पर्वत नाम होने का हेतु

प- निपद्य देव और उसकी स्थिति

८५ क- महाविदेह चोत्र का स्थान

ख- " के आयत और विस्तार की दिशा

ग- महाविदेह का विष्कम्भ

घ- महाविदेह की वाहा का आयाम

ङ- " की जीवा का "

च- " के घनपृष्ठ की परिधि

छ- महाविदेह के चार विभाग

ज- " में मनुष्यों के संहारन, संस्थान, अवगाहना, और गति

झ- महाविदेह नाम होने का हेतु

ञ- महाविदेह देव और उसकी स्थिति

ट- महाविदेह का शास्वत नाम

१. इक्ष्वाकु तट के आठ विजय और उत्तर तट के आठ विजय इस्

ट- हरिवर्ष देव और उमकी स्थिति

८३ क- निषध वर्षाधार पर्वत का स्थान

ख निषध व० प० के भायन और विस्तार की दिशा

ग निषध व० प० की ऊँचाई उद्देश और विष्कम्भ

घ निषध व० प० की बाह्य का आयाम

ङ की जीवा का आयाम

च व धनुष्युच्छ की परिधि

छ का मस्थान

ज पद्मवर वेदिका और वनस्युच्छ का वर्णन

झ- निगिच्छ द्रह का स्थान

ञ " के भायन और विस्तार की दिशा

ट- निगिच्छ द्रह का आयाम विष्कम्भ

ठ श्रुति देवी और उमकी स्थिति

८४ क हरि नदी का स्थान

ख हरि प्रपातकुण्ड वर्णन

ग हरि द्वीप भवन वर्णन

घ- द्दपन हजार नदियों का हरि नदी में सगम

दोष वर्णन हरिकान्ता नदी के समान

ङ- सीतोदा महानदा का स्थान

उद्गम स्थान से कुण्ड पयन् प्रवाह का परिमाण

च सीतादा प्रपात कुण्ड का आयाम विष्कम्भ और परिधि

छ सीतोदा द्वीप का आयाम विष्कम्भ परिधि और ऊँचाई

ज- विज विचित्र कूट वर्णन

झ निषध, दवकुण्ड, मूर सुलस, विद्युत्प्रभद्रह

ञ- मिनोदा म पीरासी हजार नदियों का सगम

ट विद्युत् प्रभ वनस्कारपर्वत

ठ- प्रत्येक चक्रवर्ती विजय<sup>१</sup> से अट्ठावीस हजार नदियों का सीतोदा में संगम

ड- सीतोदा में पचपन लाख वत्तीस हजार नदियों का मिलना

ढ- उद्गम स्थान में सीतोदा नदी का विष्कम्भ और उद्बेध

ण- समुद्र में मिलने के स्थान में सीतोदा नदी का विष्कम्भ और उद्बेध

त- पञ्चवर वेदिका और वन खण्डवर्णन

थ- निषध पर्वत पर नो कूट

द- प्रत्येक कूट का परिमाण चुल्ल हिमवन्त कूट के समान

ध- निषध राजधानी का स्थान

न- निषध पर्वत नाम होने का हेतु

प- निषध देव और उसकी स्थिति

८५ क- महाविदेह क्षेत्र का स्थान

ख- " के आयत और विस्तार की दिशा

ग- महाविदेह का विष्कम्भ

घ- महाविदेह की वाहा का आयाम

ड- " की जीवा का "

च- " के घनुपृष्ठ की परिधि

छ- महाविदेह के चार विभाग

ज- " में मनुष्यों के संहनन, संस्थान, अवगाहना, और गति

झ- महाविदेह नाम होने का हेतु

ञ- महाविदेह देव और उसकी स्थिति

ट- महाविदेह का शास्वत नाम

१. दक्षिण तट के घ्राठ विजय और उत्तर तट के घ्राठ विजय इस प्रकार सोलह विजय

- ८६ क गन्धमान्न वनस्कार पर्वत का स्थान  
 ख गन्धमान्न व प के आसन और विस्तार की दिशा  
 ग गन्धमान्न व प का आश्रम  
 घ भीमवन्त वर्षाधर पवन के समान गन्धमान्न की ऊँचाई और  
 विष्णुम्भ  
 ङ मरु पवन के समान गन्धमान्न की ऊँचाई और विष्णुम्भ  
 च गन्धमान्न वनस्कार पवन का संस्थान  
 छ दो पक्षतर श्रेणिका और वनचण्ड का वणन  
 ज श्वन्तर देवी का शीला स्थान  
 झ गन्धमान्न पवन पर स्थान कूट  
 ञ चुन्न हिमवन्त पवन व मिडायनन कूट के समान कूर्गे का  
 परिणाम  
 ट कूर्गे शी शिवा  
 ठ प्रत्येक कूट पर देवियों का निवास  
 ड श्रामान्यवहसक और राजधानिया का वणन  
 ढ गन्धमान्न नाम होने का हनु  
 ण गन्धमान्न देव और उसकी स्थिति  
 त गन्धमान्न पास्कन नाम
- ८७ क उत्तरकुर पात्र का स्थान  
 ख के आसन और विस्तार की दिशा  
 ग उत्तरकुर क्षेत्र का संस्थान  
 घ शी जीवा का आश्रम  
 ङ के अनुग्रह की परिधि  
 च म सुप्रम सुप्रमा काच के समान सत्ता स्थिति
- ८८ क शमक पवनों का स्थान  
 ख की ऊँचाई और उद्भव

- ग- यमक पर्वतों के मूल, मध्य और ऊपर का विष्कम्भ  
घ- " के मूल, और ऊपर की परिधि  
ङ- " का संस्थान  
च- पद्मवर वेदिका और वन खण्डों का वर्णन  
छ- प्रासादावतंसकों की ऊँचाई, विष्कम्भ और सिंहासन परिवार  
ज- यमक देवों के आत्म रक्षक देव  
झ- यमक नाम होने का हेतु  
ञ- यमक देव और उनके सामानिक देव  
ट- यमक पर्वत शास्वत नाम  
ठ- यमका राजधानियों का स्थान  
ड- " का आयाम-विष्कम्भ  
ढ- " की परिधि  
ण- " के प्राकारों की ऊँचाई  
त- " के प्राकारों का मूल, मध्य, और ऊपर का विष्कम्भ  
थ- कपिशीर्षकों की ऊँचाई और वाहल्य  
द- यमिका राजधानियों के द्वार  
ध- द्वारों की ऊँचाई और विष्कम्भ  
न- चार वनखण्डों का वर्णन  
प- प्रासादावतंसकों का वर्णन  
फ- उपकारिकालयनों का आयाम, विष्कम्भ, परिधि और वाहल्य  
व- प्रत्येक के पद्मवर वेदिका और वनखण्ड का वर्णन  
भ- प्रासादावतंसकों का परिमाण  
म- सिंहासन परिवार  
य- प्रासाद पंक्तियाँ  
र- सुधर्मासभा, मुखमण्डप, प्रेक्षाघर, मण्डप, मणिपीठिका, स्तूप, जिन प्रतिमा, चैत्यदृष्ट, मणिपीठिका. महेन्द्र ध्वज, मनो-



- गुडिका गोमानिका घूणघटिका मणिपीठिका चत्वराम्ब  
 जिन अभियोग गयनीय सु-महेन्द्र ध्वज गङ्गावार सिद्धाय  
 तन मणिपीठिका देव-क जिनप्रतिमा आदि का वणन
- न उपवास सभा गयनीय, हु-वणन  
 व अभिषेक सभा वणन  
 ग अन्कारिक सभा वणन  
 घ अक्षय्याय सभा वणन  
 ग नया पुष्करिणियों और बनिपीठों का वणन
- ८६ क शालवन्त इह का स्थान  
 म क आयत और विस्तार की निगा  
 ग दो पक्षर बेन्का और दो वनछानों का वणन  
 घ नीलवन्त नाग कुमार नेत्र  
 इ नीलवन्त इह के दोना पक्षर में नीम वास्त काचनम पर्वत  
 च काचनम पर्वत का परिमाण समक पर्वतों के समान  
 छ पाच हूणों के नाम  
 ज प्रत्येक से एक एक देश और उनकी स्थिति  
 ऋ समका राजधानियों के समान इनकी राजधानियों का वणन
- ८७ क जम्बूद्वीप का स्थान  
 म की परिधि  
 ग का अन्दर बाहर का बाह्य  
 घ पक्षर बन्का वनछान त्रिमोचन और तोरणों का वणन  
 ञ मणिपीठिका की ऊँचाई और बाह्य  
 च जम्बू सुशुभन की ऊँचाई और उद्भव  
 छ के स्थानों का बाह्य  
 ज की गणनाओं का वाचन विष्कम्भ और अक्षभाग  
 झ के चार निगाओं में चार शालाय

- ब- चार शालाओं के मध्य भाग में एक सिद्धायतन  
 ट- सिद्धायतन का आयाम-विष्कम्भ और ऊँचाई  
 ठ- " के द्वार, द्वारों की ऊँचाई-विष्कम्भ  
 ड- मणिपीठिका का आयाम-विष्कम्भ और बाह्यल्य  
 ढ- छंदक का परिमाण  
 ण- जिनप्रतिमाओं का वर्णन  
 त- पूर्व दिशा की शाला में एक भवन  
 थ- शेष शालाओं में प्रासादावतंसक सिंहासनादि  
 द- पद्मवर वेदिका वर्णन  
 ध- एक सौ आठ जम्बू वृक्षों की ऊँचाई आदि  
 न- छः पद्मवर वेदिकाओं का वर्णन  
 प- अनाधृत देव के सामानिक देव  
 फ- प्रत्येक सामानिक देव के जम्बू वृक्ष  
 ब्र- अनाधृत देव की अग्रमहीपियाँ  
 भ- अग्रमहीपियों के जम्बू वृक्षों का परिणाम  
 म- सात सेनापतियों के सात जम्बू वृक्षों का परिमाण  
 य- आत्म रक्षक देवों के जम्बू वृक्षों परिमाण  
 र- जम्बू वृक्ष के वनखण्डों का वर्णन  
 ल- प्रथम वन खण्ड के भवन और शयनीय का वर्णन  
 व- शेष वनखण्डों के भवनों का वर्णन  
 श- चार पुष्करिणियों के मध्य स्थित प्रासादों का वर्णन  
 ष- पुष्करिणियों के मध्य स्थित प्रासादों का वर्णन  
 स- प्रासाद कूटों का वर्णन  
 ह- जम्बू सुदर्शन वृक्ष के वारह नाम  
 क्ष- जम्बू सुदर्शन नाम होने का हेतु  
 ञ- जम्बू सुदर्शन शास्वत नाम  
 ङ- अनाधृता राजधानी का वर्णन घण्टिका राजधानी के समान

- ११ क उत्तर कक्ष नाम होने का हेतु  
 ख उत्तर कुक्षेत्र और उसकी स्थिति  
 ग उत्तरकुक्षेत्र शास्त्र नाम है  
 घ मात्स्य त्रय चत्वार पर्वत का स्थान  
 ङ मात्स्यवन्त व० प० के आयत और विस्तार की निशा  
 च गेय वणन यद्यमादन पवन के समान  
 छ मात्स्यवन्त पर्वत का कूट  
 ज मागर कूट पर सुभोगा देवी सुभागा राजधानी  
 झ रजनकूट पर भोगमालिनी देवी और उसकी राजधानी  
 ञ गेय कूटों के सदृश नाम वाले देव  
 ट देवा की राजधानियाँ  
 ठ गेय वणन धु ल हिमवत के समान
- १२ क हरिस्मह कूट का परिमाण  
 ख हरिस्मह राजधानी का वणन चमर चचा राजधानी के समान  
 ग मात्स्यवन्त नाम होने का हेतु  
 घ मात्स्यवन्त देव और उसका स्थिति  
 च मात्स्यवन्त शास्त्र नाम है
- १३ क कर्कश विजय का स्थान  
 ख कर्कश आयत और विस्तार की निशा  
 ग कर्कश विभागा  
 घ कर्कश का विष्णु  
 ङ वैताल्य पर्वत<sup>१</sup> का कर्कश विजय के द्वा भाग  
 च दक्षिणाध के कर्कश विजय का स्थान  
 छ कर्कश का आराम विष्णु

१ भरत सेश क वैताल्य पर्वत से यह वैताल्य पर्वत भिन्ना है

- ज- दक्षिणार्ध के कच्छविजय का संस्थान  
 झ- " " के मनुष्यों का वर्णन  
 ञ- वैताढ्य पर्वत का स्थान  
 ट- वैताढ्य पर्वत के आयत और विस्तार की दिशा  
 ठ- वैताढ्य पर्वत की बाहा, और धनुषपृष्ठ का परिमाण  
 ड- विद्याधर श्रेणियों का वर्णन  
 ढ- विद्याधरों के नगर  
 त- उत्तरार्ध कच्छविजय का वर्णन-दक्षिणार्ध कच्छविजय के समान  
 थ- सिन्धु कुण्ड का स्थान  
 भरत क्षेत्र के सिन्धु कुण्ड के समान  
 द- सिन्धु नदी चौदह हजार नदियों का में संगम  
 घ- सिन्धु नदी का सीता नदी में संगम  
 न- अपभकृत पर्वत का स्थान आदि  
 प- गंगा कुण्ड का वर्णन सिन्धु कुण्ड के समान  
 फ- कच्छ विजय नाम होने का हेतु  
 व- क्षेमा राजधानी का वर्णन विनीता राजधानी के समान  
 भ- कच्छ राजा का वर्णन भरत चक्रवर्ती के समान  
 म- कच्छ देव और उसकी स्थिति  
 य- कच्छ विजय का शास्वत नाम होना  
 ६४ क- चित्रकूट वक्षस्कार पर्वत का स्थान,  
 ख- चित्रकूट वक्षस्कार पर्वत की आयत और विस्तार की दिशा.  
 ग- नीलवन्त वर्षधर पर्वत के समीप चित्रकूट पर्वत का आयाम-  
 विष्कम्भ.  
 घ- सीतानदी के समीप चित्रकूट पर्वत का आयाम-विष्कम्भ.  
 ङ- चित्रकूट पर्वत का संस्थान  
 च- चित्रकूट पर्वत के दोनों पार्श्व में दो पक्षधर वेदिकार्यों और दो  
 वनखण्ड

- छ- चित्रकूट पर्वत के चार कूट  
 ज- चित्रकूट देव और इसकी स्थिति  
 झ- चित्रकूटा राजधानी का स्थान  
 ६५ क- सुकच्छ विजय का स्थान  
 ख- सेनपुरा राजधानी  
 ग सुकच्छ राजा  
 घ- शेष वर्णन कच्छ विजय के समान  
 ङ- गाथापति कुण्ड का रोहिताश कुण्ड के समान वर्णन  
 च- गाथापति द्वीप भवन का वर्णन  
 छ- गाथापति नदी  
 ज अठ्ठाबोस हजार नदियों का गाथापति नदी में मिलना और  
 गाथापति नदी का सीतानदी में मिलना  
 झ- गाथापति नदी का उद्देश और प्रवाह का विष्कम्भ  
 ज्ञ- गाथापति नदी के दोनों पार्श्व में दो पशवर वेदिका और दो  
 बलसखंड का वर्णन  
 ट महा कच्छविजय का स्थान  
 पञ्चकूट बलसखंड पर्वत का स्थान  
 पञ्चकूट बलसखंड पर्वत के शायत और विस्तार की दिशाएँ  
 पञ्चकूट व प के चार कूट  
 पञ्चकूट देव और उसकी स्थिति  
 शेष वर्णन चित्रकूट पर्वत के समान  
 ठ कच्छगावती विजय का स्थान  
 कच्छगावती विजय के भाग्य और विस्तार की दिशा  
 कच्छगावती देव-शेष वर्णन कच्छ विजय के समान  
 दहावती कुण्ड का स्थान  
 दहावती नदी का सीता नदी में मिलना.  
 शेष वर्णन गाथावती नदी के समान

ड- आवर्त विजय का स्थान

शेष वर्णन-कच्छ विजय के समान

नलिनकूट वक्षस्कार पर्वत का स्थान

नलिनकूट व० प० की आयत और विस्तार की दिशा.

शेष वर्णन-चित्रकूट पर्वत के समान

नलिनकूट पर्वत के चार कूट

ढ- मंगलावर्त विजय का स्थान

मंगलावर्त देव

शेष वर्णन कच्छ विजय के समान.

ण- पुष्करावर्त विजय का स्थान

पुष्करावर्त देव और उसकी स्थिति

शेष वर्णन. कच्छ विजय के समान

एक शैल वक्षस्कार पर्वत का स्थान

एक शैल व० प० के चारकूट

एक शैल देव और उसकी स्थिति

त- पुष्कलावर्त विजय का स्थान

पुष्कलावर्त विजय के आयत और विस्तार की दिशा.

पुष्कलावर्ती देव और उसकी स्थिति.

शेष वर्णन-कच्छ विजय के समान.

थ- सीतामुख वन का स्थान

सीतामुख वन के आयत और विस्तार की दिशा

सीता नदी के समीप सीतामुख वन का विष्कम्भ

नीलवन्त वर्षधर पर्वत के समीप सीतामुख वन का विष्कम्भ

पद्मवर वेदिका और वनखण्ड का वर्णन

द- आठ राजधानियों के नाम

ध- आठ राजा

- प अभिवागिक श्रेणियाँ  
 फ- सालिह वल्ग्वकार पवन  
 ब बारह नन्धियाँ  
 ६९ क सीतामुनि वन (उत्तर) का स्थान  
 ख उत्तर के आठ विजय  
 ग उत्तर की आठ राजधानियाँ  
 घ उत्तर के बार वल्ग्वकार पवन  
 ङ- उत्तर की तीन नन्धियाँ  
 ७० क सोमनस वल्ग्वकार पवन का स्थान  
 ख सोमनस व० प० के आपन और विद्वानों की शिष्य  
 ग निषध वल्ग्वकार पवन के समीप सोमनस पर्वत का विष्कम्भ  
 घ अक्षर देवों का क्रीडा स्थल  
 ङ सोमनस देव और उनकी शिष्यि  
 च सोमनस नाम शिव  
 छ सोमनस वल्ग्वकार पवन पर सातकूट  
 ज दो कूटों पर देविमा गेय कूटों पर देवता  
 झ प्रत्येक देश की राजधानियाँ  
 ष दक्कुरु का स्थान  
 गेय वल्ग्वकार उत्तरकूट के समान  
 ७१ क विचित्रकूट और विचित्रकूट पवन का स्थान  
 ख राजधानियाँ मेरु से दक्षिण में  
 ग शेष वल्ग्वकार वल्ग्वकार पवन का समान  
 ७२ क निषधद्व का स्थान  
 ख दक्कुरु द्व का स्थान  
 ग सूर्यद्व का स्थान  
 घ सुवल्ग्वकार द्व का स्थान  
 ङ- विचित्रकूट द्व का स्थान

- च- इन द्रहों के देवों की राजधानियां मेरु से दक्षिण में
- १०० क- कृत्शालमलि पीठ का स्थान  
 ख- देवकुरु देव और उसकी स्थिति  
 ग- शेष वर्णन—जम्बूसुदर्शन पीठ के समान  
 गरुड़ देव वर्णन पर्यन्त
- १०१ क- विद्युत्प्रभ वक्षस्कार पर्वत का स्थान  
 ख- विद्युत्प्रभ देव और उसकी स्थिति  
 ग- शेष वर्णन—मात्यवन्त पर्वत के समान  
 घ- विद्युत्प्रभ वक्षस्कार पर्वत पर नौ कूट  
 ङ- दो कूटों पर देवियां, शेष कूटों पर देवता  
 च- इनकी राजधानियां मेरु से दक्षिण में  
 छ- विद्युत्प्रभ नाम होने का हेतु  
 ज- विद्युत्प्रभ देव और उसकी स्थिति  
 क- विद्युत्प्रभ नाम शाश्वत नाम
- १०२ क- दक्षिण-उत्तर के आठ विजय  
 ख- " आठ राजधानियां  
 ग- " वक्षस्कार पर्वत  
 घ- " अन्तर नदियां  
 ङ- " कूटाकूट देव
- १०३ क- मेरु पर्वत का स्थान  
 ख- " की ऊंचाई  
 ग- " के मूल का उद्देश और विष्कम्भ  
 घ- " के धरणितल का और ऊपर का विष्कम्भ  
 ङ- " के मूल धरणितल और ऊपर की परिधि  
 च- " की पद्मवर वेदिका और वनखण्ड  
 छ- " के ऊपर चार वन,



१ भद्रशाल वन का स्थान

के आसन और वित्सार की शिवा

के आठ विभाग

का आयात विष्कम्भ

की पञ्चवर वेनिका और वनगण्ड

के देवलाभा का क्रीडा स्थल

सिद्धायतन का आयात विष्कम्भ और ऊचाई

चार शिवाओ मे चार सिद्धायतन

सिद्धायतनों के द्वार द्वारो की ऊचाई और विष्कम्भ

मणिपीठिका का आयात विष्कम्भ और बाह्यत्व

देवद्वारक वनन विनप्रतिमा वणन

चार शिवाओ वी नग पुष्करिणियों का वणन

१०४ क नन्दन वन का स्थान

ख का चक्रवाल विष्कम्भ

ग क अन्दर बाहूर का विष्कम्भ

घ नन्दन वन म मधुकूटी वणन

ङ गेय वणन भणश ल वन के समान

१०५ क सौमनस वन का स्थान

ख का चक्रवाल विष्कम्भ

ग का अन्दर-बाहूर का विष्कम्भ

घ इस वन म घूट नहीं है

ङ शय वणन नदन वन के समान

१०६ क पटक वन का स्थान

ख का चक्रवाल विष्कम्भ

ग की परिधि

घ मेरु बुलिका का मध्य भाग

ङ- मेरु चूलिका की ऊँचाई

च- " के मूल का और ऊपर का विष्कम्भ

छ- " के मूल की और ऊपर की परिधि

ज- मेरु चूलिका के मध्य भाग में सिद्धायतन का वर्णन

झ- चार दिशाओं में चार भवन का वर्णन

ञ- शक्रेन्द्र और ईशानेन्द्र के प्राशादावतंसकों का वर्णन

१०७ क- परङ्क वन में चार अभिषेक शिला

ख- परङ्कुशिला का आयाम-विष्कम्भ और वाहल्य

ग- " पर दो सिंहासन

घ- " के उत्तर के सिंहासन पर कच्छादि विजयों के तीर्थंकरों का अभिषेक

ङ- पण्डुशिला के दक्षिण के सिंहासन पर कच्छादि विजयों के तीर्थंकरों का अभिषेक

च- परङ्कुम्बल शिला का स्थान, आयाम-विष्कम्भ और वाहल्य

छ- " का एक सिंहासन पर भरत क्षेत्र के तीर्थंकरों का अभिषेक

ज- रक्तशिला का स्थान आयाम-विष्कम्भ और वाहल्य

झ- " पर दो सिंहासन

ञ- " के दक्षिण सिंहासन पर पक्ष्मादि विजयों के तीर्थंकरों का अभिषेक

ट- रक्तशिला के उत्तर के सिंहासन पर वक्षादि विजयों के तीर्थंकरों का अभिषेक

ठ- रङ्गकम्बलशिला का स्थान, आयाम-विष्कम्भ और वाहल्य

ड- " के एक सिंहासन पर ऐरावत क्षेत्र के तीर्थंकरों का अभिषेक

१०८ क- मेरु पर्वत के तीन काण्ड

५१

ख- प्रथम काण्ड चार प्रकार का

ग मध्यम काण्ड चार प्रकार का  
 घ उपरिम काण्ड एक प्रकार का  
 ङ तीनों काण्डों का बाहुल्य  
 च मेरु का परिमाण

१०६ क मेरु पर्वत के सोलह नाम

ख मेरु नाम का हेतु

ग मेरुदेव और उसकी स्थिति

११० क नीलवन्त वर्षाधर पर्वत का स्थान

ख नीलवन्त व प क व्याप्त और विस्तार की दिशा

ग गेय वणन निषध पर्वत के समान

घ नारिकाम्ता नदी का वर्णन

ङ नीलवन्त व प के ना कूट और क्यारी दृढ़ का वर्णन

च नीलवन्त नाम होने का हेतु

छ नीलवन्त शाश्वत नाम है

१११ क रुम्यकवर्ष का स्थान

ख रोग वणन हरिषध के समान

ग राधावन्ति वृत्त वैताद्वय पर्वत का स्थान

घ गेय वणन विकटापाति क समान

ङ रुक्मी वर्षाधर पर्वत का स्थान, महापुण्डरीक दृढ़ नरकान्ता  
 नदी रूप्यकूला मन्त्री

च रुक्मी वर्षाधर पर्वत पर छाठ कूट

छ रुक्मी व प नाम होने का हेतु

गेय वणन महाहिमवन्त पर्वत के समान

ज हेमवन्त वर्ष का स्थान

हेमवन्त व प क समान वणन

झ शाश्वतवन्त वृत्त वैताद्वय पर्वत का स्थान

ञ शालापाती वृत्त वैताद्वय पर्वत के समान वणन

- ट- हैरण्य वर्ष नाम होने का हेतु  
 हैरण्यवत देव और उसकी स्थिति
- ठ- शिखरी वर्षधर पर्वत का स्थान
- ड- पुण्डरीक द्रह और सुवर्णकूला नदी
- ढ- शिखरी वर्षधर पर्वत के ग्यारह कूट
- ण- शिखरी देव और उसकी स्थिति
- त- शेष चुल्लीहमवन्त पर्वत के समान वर्णन
- थ- एरावत वर्ष का स्थान

एरावत में चक्रवर्ती. एरावती देव, भरत के समान वर्णन

### पंचम जिन जन्माभिषेक वक्षस्कार

- ११२ जिन जन्माभिषेक के समय अधोलोक वासी आठ दिक्कुमारियों का आगमन
- ११३ जिन जन्माभिषेक के समय उध्वलोक वासी आठ दिक्कुमारियों का आगमन
- ११४ क- पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर के रुचक पर्वतों पर रहने वाली आठ आठ दिक्कुमारियों का आगमन
- ख- चार विदिशाओं के रुचक पर्वतों पर रहनेवाली चार दिक्कुमारियों का आगमन
- ग- मध्य रुचक पर्वत पर रहने वाली चार दिक्कुमारियों का आगमन  
 दिशा कुमारियों के कर्त्तव्य
- घ- नाल कर्तन, तेलमर्दन, मुग्धित उवटन
- ङ- गवोदक, पुष्पोदक और शुद्धोदक में स्नान
- च- अग्निहोम, रक्षापोटली, पापाण गोलकों का ताड़न और आशीर्वाचन, गीत गायन
- ११५-११७ क- जिन भगवान के जन्म समय में शक्रेन्द्र का आगमन

ख यान विमान का वणन

ग तीर्थंकर की यात्रा को अवस्वापिनी निद्रा देना

घ पाव शक्रेन्द्र ऋषी का विक्रवण

ङ पङ्क वन में अभियेक शिलापर अभियेक करना

११८ क ईगानेन्द्र आदि सभी इंद्रा का मरु पर्वत पर आगमन

ख यान विमान बनाने वाले इन देव

ग सुधीषा षष्ठा महाषोषा षष्ठा,

११९ चमरेन्द्रा और ज्योतिष्केन्द्रा का मेरु पर्वत पर आगमन

१२० तीर्थोदर आदि से अभियेक

१२१ वाद्य गीत नृत्य आदि करके अ मौरमव मनाना

१२२ अष्टमगल भगवद वन्ता इंद्र परिवार द्वारा अभियेक चार

रूपभा की विक्रवणा रूपम शृंगी से जन्मधारण का पातन

और कुण्डल युगल का तीक्ष्णकर माता के समीप रहना

१२३ च अभियेक के पश्चात् तीक्ष्णकरी मेरु से अम भवन में लाना

सोम युगल और कुण्डल युगल का तीक्ष्णकर माता के समीप

रहना

ख तीक्ष्णकर के भवन में हिरण्य सुवर्ण खोटी म भण्डार भरने

के लिये शक्रेन्द्र का वैश्रमण को आदेश

ग तीक्ष्णकर और तीर्थंकर माता का अनिष्ट न करने के लिये

धोषणा देवी द्वारा अपृच्छि का महोत्सव

### षष्ठ जम्बूद्वीपगत पदार्थ समग्र वर्णन वक्षस्कार

१२४ क जम्बूद्वीप के प्रदेशों का लवण समुद्र से स्पश

ख लवण समुद्र के प्रदेशों में जम्बूद्वीप का स्पश

ग जम्बूद्वीप के जीवों का लवण समुद्र में जम

घ लवण समुद्र के जीवों का जम्बूद्वीप में जम

१२५ क जम्बूद्वीप भण्डवर्ती दान पदार्थ

ख-	जम्बूद्वीप के भरत प्रमाण खण्ड
ग-	जम्बूद्वीप के वर्ग योजन
घ-	में वर्ष क्षेत्र
ङ-	में वर्षघर पर्वत
च-	में मेरु पर्वत
छ-	में चित्रकूट
ज-	में विचित्रकूट
झ-	में यमक पर्वत
ञ-	में कंचन पर्वत
ट-	में वक्षस्कार पर्वत
ठ-	में दीर्घ वैताह्य पर्वत
ड-	में वैताह्य पर्वत
ण-	में वर्षघर कूट
त-	में वक्षस्कार कूट
थ-	में वैताह्य कूट
द-	में मंदर कूट
ध-	में तीर्थ
न-	में विद्याघर श्रेणियाँ
प-	में अभियोग देव श्रेणियाँ
फ-	में चक्रवर्ती विजय
ब-	में राजधानियाँ
भ-	में तमिस्रा गुफा
म-	में खण्ड प्रपात गुफा
य-	में कृतमाल देव
र-	में नृत्यमाल देव
ल-	में ऋषभकूट

- ग मे क्षेत्रवाही महानदिया  
 प म कुण्डवाही महानदिया  
 स मे नन्दियो की समुन्नत सरया  
 (१) जम्बूद्वीप के भरत एरवत मे चार महानदिया  
 (२) चार महानदियों का परिवार  
 (३) जम्बूद्वीप के मवत हरण्यवत मे चार महानदिया  
 (४) चार महानदियों का परिवार  
 (५) जम्बूद्वीप के हरिवप रम्पक वप में चार महानदिया  
 (६) चार महानदियों का परिवार  
 (७) जम्बूद्वीप के महाविदेह म वा महानदिया  
 (८) दोनो महानदियों का परिवार  
 (९) जम्बूद्वीप मे मेरु से दक्षिण मे बहनेवाली नन्दिया  
 (१०) उत्तर  
 (११) जम्बूद्वीप में पूर्वाभिमुख बहने वाली नदिया  
 (१२) पश्चिमाभिमुख  
 (१३) म बहनेवाली नन्दिया की समुन्नत सरया

### सप्तम ज्योतिष्क वर्णन वक्षस्कार

- १२६ क जम्बू द्वीप मे चंद्र  
 ल सूर्य  
 ग नक्षत्र  
 घ तारा

### सूर्य वर्णन पञ्चदश अधिकार

- १२७ क जम्बूद्वीप में सूर्यमण्डल  
 ल सूर्य मण्डल की दूरी  
 ग नक्षत्र समुद्र म  
 १२८ सब आन्ध्रतर मण्डल म सब बाह्यमण्डल की दूरी

- १२६ प्रत्येक सूर्य मण्डल की दूरी
- १३० प्रत्येक सूर्य मण्डल का आयाम-विष्कम्भ, परिधि और बाह्य
- १३१ क- मेरु से प्रथम मण्डल की दूरी  
 ख- ,, द्वितीय मण्डल की दूरी  
 ग- मेरु से प्रत्येक सूर्य मण्डल की दूरी  
 घ- " अन्तिम सूर्यमण्डल की दूरी  
 ङ- " अन्तिम सूर्यमण्डल से दूसरे सूर्य मण्डल की दूरी  
 च- " " तीसरे " "  
 छ- अन्तिम सूर्य मण्डल से प्रत्येक सूर्य मण्डल की दूरी
- १३२ क- जम्बूद्वीप में प्रथम सूर्यमण्डल का आयाम-विष्कम्भ और परिधि  
 ख- ,, द्वितीय " "  
 ग- ,, तृतीय " "  
 घ- ,, अन्तिम " "  
 ङ- जम्बूद्वीप के अन्तिम से द्वितीय मण्डल की दूरी  
 च- ,, अन्तिम से तृतीय " "  
 छ- प्रत्येक सूर्यमण्डल का आयाम-विष्कम्भ-परिधि
- १३३ क- प्रथम सूर्यमण्डल में एक मुहूर्त में सूर्य की गति और सूर्यदर्शन की दूरी का परिमाण  
 ख- द्वितीय " "  
 ग- तृतीय " "  
 घ- अन्तिम सूर्यमण्डल में एक मुहूर्त में सूर्य की गति और सूर्यदर्शन की दूरी का परिमाण  
 ङ- अन्तिम से द्वितीय में " "  
 च- अन्तिम सूर्यमण्डल से तृतीय सूर्य मण्डल में एक मुहूर्त में सूर्य की गति और सूर्य दर्शन का प्रमाण  
 छ- प्रत्येक अयन, मण्डल में एक मुहूर्त में सूर्य की गति और सूर्य दर्शन की दूरी का प्रमाण



- १३४ क प्रथम सूर्य मण्डल मे दिन रात्रि का अर्धय उत्कृष्ट परिमाण  
 ख द्वितीय सूर्य मण्डल मे दिन रात्रि का अर्धय उत्कृष्ट परिमाण  
 ग इस प्रकार प्रत्येक सूर्यमण्डल मे दिन रात्रि का अर्धय उत्कृष्ट  
 दूरी का परिमाण  
 अंतिम सूर्य मण्डल मे दिन रात्रि का अर्धय उत्कृष्ट परिमाण  
 विपरीत क्रम मे
- १३५ च प्रथम सूर्य मण्डल मे सूर्य के ताप क्षेत्र का सत्यान और अर्ध  
 कार क्षेत्र का सत्यान  
 ख अंतिम सूर्य मण्डल के ताप क्षेत्र का सत्यान और अर्धकार  
 क्षेत्र का सत्यान
- १३६ क जम्बूद्वीप मे प्रातः मध्याह्न और सायंकाल में सूर्यग्रहण की  
 प्रमाण
- १३७ क जम्बूद्वीप मे सूर्य वर्तमान क्षेत्र में गति करता है  
 ख जम्बूद्वीप मे सूर्य वर्तमान क्षेत्र का स्पर्श करता है  
 ग आहारानि अधिकारों का कथन
- १३८ जम्बूद्वीप मे सूर्य वर्तमान क्षेत्र मे क्रिया करता है—मानव वर्तमान  
 क्षेत्र का स्पर्श करता है ।
- १३९ जम्बूद्वीप मे सूर्य का उच्च अर्धो और नियत ताप क्षेत्र
- १४० क मानुषोत्तर पवन पयत्त ज्योतिषी देवी का उत्पाति स्थान  
 ख मानुषोत्तर पवन पयत्त ज्योतिषी देवी की मेरु प्रदक्षिण
- १४१ क ज्योतिषी देवी के अयत्त मरण के पश्चान् सामानिक देवी द्वारा  
 व्यवस्था  
 ख इन्द्र का अर्धय उत्कृष्ट उपपन्न विरहनाम  
 ग मानुषोत्तर पवन क पश्चान् ज्योतिषी देवी का उत्पाति स्थान  
 ताप क्षेत्र गति अभाव  
 घ इन्द्र के अभाव मे सामानिक देवी द्वारा व्यवस्था  
 ङ इन्द्र का अर्धय उत्कृष्ट उपपन्न विरहनाम

चन्द्र वर्णन मत्त अधिकार

१४२ क- सर्व चन्द्रमण्डल

ख- जम्बूद्वीप में चन्द्रमण्डल

ग- लवण समुद्र में चन्द्रमण्डल

१४३ प्रथम चन्द्रमण्डल से अन्तिम चन्द्रमण्डल का अन्तर

१४४ प्रत्येक चन्द्रमण्डल का अन्तर

१४५ चन्द्रमण्डल का आयाम-विष्कम्भ और परिधि

१४६ क- मेरु से प्रथम चन्द्र मण्डल का अन्तर

ख- " द्वितीय "

ग- " तृतीय "

घ- " अन्तिम "

ङ- " अन्तिम से द्वितीय मण्डल का अन्तर

च- " अन्तिम से तृतीय

छ- प्रत्येक चन्द्रमण्डल का अन्तर

१४७ क- प्रथम चन्द्र मण्डल का आयाम विष्कम्भ और परिधि

ख- द्वितीय चन्द्रमण्डल का आयाम विष्कम्भ और परिधि

ग- तृतीय चन्द्रमण्डल का आयाम-विष्कम्भ और परिधि

घ- अन्तिम चन्द्रमण्डल का आयाम-विष्कम्भ और परिधि

ङ- अन्तिम से द्वितीय चन्द्रमण्डल का आयाम-विष्कम्भ और परिधि

च- अन्तिम से तृतीय चन्द्रमण्डल का आयाम-विष्कम्भ और परिधि

छ- इस प्रकार प्रत्येक चन्द्रमण्डल का आयाम-विष्कम्भ और परिधि

१४८ क- प्रथम चन्द्रमण्डल में एक मुहूर्त में चन्द्र की गति

ख- द्वितीय चन्द्रमण्डल में एक मुहूर्त में चन्द्रगति

ग- तृतीय चन्द्रमण्डल में एक मुहूर्त में चन्द्र की गति वृद्धि

ङ- अन्तिम चन्द्रमण्डल में एक मुहूर्त में चन्द्र की गति

च- अन्तिम से द्वितीय चन्द्रमण्डल में एक मुहूर्त में चन्द्र की गति

छ- अन्तिम से तृतीय से चन्द्रमण्डल में एक मुहूर्त में चन्द्र की गति

ज इस प्रकार प्रयेक मण्डल में एक मुहूर्त में चन्द्र की हीनवर्ति  
नक्षत्र वर्णन मन्त्र अधिकार

- ४६ क मय नक्षत्र मण्डल  
ख जम्बू द्वीप में नक्षत्रमन्त्र  
ग लक्षण मन्त्र ऐ म नक्षत्र मण्डल  
घ प्रथम और अन्तिम नक्षत्र मण्डल का अन्तर  
ङ प्रयेक म नक्षत्र मण्डल का अन्तर  
च नक्षत्र मण्डल का आशाम विष्कम्भ और परिधि  
छ भेद पवन से प्रथम नक्षत्र मण्डल का अन्तर  
ज भेद पवन से अन्तिम नक्षत्र मण्डल का अन्तर  
झ प्रथम नक्षत्र मण्डल का आशाम विष्कम्भ और परिधि  
ञ अन्तिम नक्षत्र मण्डल का आशाम विष्कम्भ और परिधि  
ट प्रथम मण्डल में एक मुहूर्त में नक्षत्र की गति  
ठ अन्तिम मण्डल में एक मुहूर्त में नक्षत्र गति  
ड च मण्डलों के माय नक्षत्र मण्डलों का योग  
ढ एक मुहूर्त में मण्डल का अवगाहन  
ण एक मुहूर्त में सूर्य द्वारा मण्डल का अवगाहन  
त एक मुहूर्त में नक्षत्रों द्वारा मण्डल का अवगाहन
- ११० क जम्बू द्वीप में दो सूर्यों की उत्पत्ति काय  
ख दो चन्द्रों की  
ग दोप वणन भगवती ष० ५ उद्देशक २ के समान  
घ जम्बूद्वीप के चन्द्र सूर्यों का कथन समस्त  
सर्वसर के भेद प्रमेद

- १११ क सर्वसर के भेद  
(१) नक्षत्र सर्व सर के बाहर भेद  
(२) युग सर्व सर के पाच भेद

- (२-१) चन्द्र संवत्सर के चौबीस पर्व  
 (२-२) " " "  
 (२-३) " " " छव्वीस पर्व  
 (२-४) " " " चौबीस "  
 (२-४) " " " छव्वीस "  
 (३) प्रमाण संवत्सर के पांच भेद  
 (४) लक्षण " पांच भेद  
 (५) शनैश्चर संवत्सर के अष्टावीस भेद  
 मास

१५२ क- प्रत्येक संवत्सर के बारह मास

ख- लौकिक मासों के नाम

ग- लोकोत्तर मासों के नाम

पक्ष

घ- मास के दो पक्ष

ङ- एक पक्ष के पन्द्रह दिन

च- पन्द्रह दिनों के नाम

छ- पन्द्रह तिथियों के नाम

ज- एक पक्ष की पन्द्रह रात्रियाँ

झ- पन्द्रह रात्रियों के नाम

ञ- पन्द्रह रात्रियों की तिथियों के नाम

अहोरात्र

ट- एक अहोरात्र के तीस मुहूर्त

ठ- तीस मुहूर्तों के नाम

करण

१५३ क- करण ग्यारह

ख- चर, स्थिर करण

ग- शुक्ल पक्ष के करण

	घ	वृष्ण पत्र के करण		
१५४	क	आदि सप्तमर	ख	आदि अयन
	ग	आदि ऋतु	घ	आदि मास
	ङ	आदि पक्ष	च	आदि अहोरात्र
	छ	आदि मुहूर्त	ज	आदि करण
	झ	असद नक्षत्र		
	ञ	पाच सप्त मर के युग		
	ट	के अयन		
	ठ	के ऋतु		
	ड	के मास		
	ड	के पक्ष		
	ण	के अहोरात्र		
	त	के मुहूर्त		

योग

१५५	क	दश योग नक्षत्र		
	ख	अष्टादश नक्षत्र		
१५६	क	चंद्र के साथ दक्षिण से योग करने वाले ६ नक्षत्र		
	ख	चंद्र के साथ उत्तर से योग करने वाले बारह नक्षत्र		
	ग	चंद्र के साथ दक्षिण और उत्तर से प्रमद योग करने वाले सात नक्षत्र		
	घ	चंद्र के साथ दक्षिण न प्रमद योग करने वाले दो नक्षत्र		
	ङ	चंद्र के साथ मदा प्रमद योग करने वाले एक नक्षत्र		
१५७		नक्षत्रों के देवता		
१५८		अष्टादश नक्षत्रों के तारे		
१५९	क	अष्टादश नक्षत्रों के गोत्र		
	ख	अष्टादश नक्षत्रों के सस्थान		

- २६० क- चन्द्र के साथ अठावीस नक्षत्रों का योग काल  
 ख- सूर्य के साथ अठावीस नक्षत्रों का योग काल
- २६१ क- नक्षत्रों के वारह कुल  
 ख- नक्षत्रों के वारह उपकुल  
 ग- नक्षत्रों के चार कुलोपकुल  
 घ- वारह पूर्णिमायें  
 ङ- वारह अमावस्याएँ  
 च- वारह पूर्णिमाओं में नक्षत्रों का योग  
 छ- " कुलों का योग  
 ज- " उपकुलों का योग  
 झ- " कुलोपकुलों का योग  
 ञ- " वारह अमावस्याओं में नक्षत्रों का योग  
 ट- " " कुलों का योग  
 ठ- " " उपकुलों का योग  
 ड- " " कुलोपकुलों का योग  
 ढ- ६ पूर्णिमा और ६ अमावस्या के नक्षत्र पौरुषी प्रमाण
- २६२ क- वर्षा ऋतु के प्रथम मास को पूर्ण करने वाले चार नक्षत्र-प्रत्येक नक्षत्र के दिन तथा पौरुषी प्रमाण  
 ख- वर्षा ऋतु का द्वितीय मास पूर्ण करने वाले चार नक्षत्र-प्रत्येक नक्षत्र के दिन तथा पौरुषी प्रमाण  
 ग- वर्षा ऋतु का तृतीय मास पूर्ण करने वाले तीन नक्षत्र-प्रत्येक नक्षत्र के दिन तथा पौरुषी प्रमाण  
 घ- वर्षा ऋतु का चतुर्थमास पूर्ण करने वाले तीन नक्षत्र-प्रत्येक नक्षत्र के दिन तथा पौरुषी प्रमाण  
 ङ- हेमन्त ऋतु का प्रथम मास पूर्ण करने वाले तीन नक्षत्र-प्रत्येक नक्षत्र के दिन तथा पौरुषी प्रमाण

- च हेमन्त ऋतु का द्वितीय मास पूज करने वाले चार नक्षत्र प्रत्येक नक्षत्र के तिन तथा वीर्यो प्रमाण
- छ हेमन्त ऋतु का तृतीय मास पूज करनेवाले तीन नक्षत्र प्रत्येक नक्षत्र के तिन तथा वीर्यो प्रमाण
- ज हेमन्त ऋतु का चतुर्थ मास पूज करने वाले तीन नक्षत्र प्रत्येक नक्षत्र के तिन तथा वीर्यो प्रमाण
- झ व्रीष्य ऋतु का प्रथम मास पूज करने वाले तीन नक्षत्र प्रत्येक नक्षत्र के तिन तथा वीर्यो प्रमाण
- झ व्रीष्य ऋतु का द्वितीय मास पूज करने वाले तीन नक्षत्र प्रत्येक नक्षत्र के तिन तथा वीर्यो प्रमाण
- ट व्रीष्य ऋतु का तृतीय मास पूज करने वाले चार नक्षत्र प्रत्येक नक्षत्र के तिन तथा वीर्यो प्रमाण
- ड व्रीष्य ऋतु का चतुर्थमास पूज करने वाले तीन नक्षत्र प्रत्येक नक्षत्र के तिन तथा वीर्यो प्रमाण

सोवहृ चण्डिकार

क चण्ड-मूर्ध के नीचे तारासङ्ग

ख समय

ण ऊपर

त नाच सम और ऊपर होने का कारण

१६३ एक चण्ड का परिवार

१६४ क मेक पवन से ज्योतिषचक्र का अन्तर

ख लोकान्तमे ज्योतिषचक्र का अन्तर

ग धरणीतल से तारासङ्ग का अन्तर

घ धरणीतल से मूय का अन्तर

ङ चण्ड का

च सर्वोपरि ताराका

छ मूय विमान से चण्ड विमान का अन्तर

ज- सूर्य विमान से सर्वोपरि तारे का अन्तर  
 झ- चन्द्र विमान से सर्वोपरि तारे का अन्तर

- १६५ क- मण्डल में गति करनेवाले नक्षत्र  
 ख- मण्डल से बाहर गति करने वाले नक्षत्र  
 ग- मण्डल से नीचे " नक्षत्र  
 घ- मण्डल से ऊपर " नक्षत्र  
 ङ- चन्द्र विमान का आयाम-विष्कम्भ  
 च- सूर्य विमान का "  
 छ- ग्रह विमान का "  
 ज- नक्षत्र विमान का "  
 झ- तारा विमान का "

- १६६ क- पूर्व दक्षिण पश्चिम और उत्तर दिशा में चन्द्र विमान का  
 वहन करने वाले देव  
 ख- सूर्य विमान का वहन करनेवाले देव  
 ग- ग्रह विमान का वहन करनेवाले देव  
 घ- नक्षत्र विमान का वहन करनेवाले देव  
 ङ- तारा विमान का वहन करनेवाले देव

- १६७ ज्योतिषी देवों की शीघ्र गति  
 १६८ ज्योतिषी देवों में अल्प ऋद्धि वाले और महान् ऋद्धि वाले  
 १६९ जम्बूद्वीप में एक तारे से दूसरे तार का जघन्य-उत्कृष्ट अन्तर  
 १७० क- चन्द्र की चार अग्रमहीपियाँ  
 ख- प्रत्येक अग्रमहीपी का परिवार  
 ग- प्रत्येक अग्रमहीपी की वैक्य शक्ति  
 घ- चन्द्र का चन्द्र विमान में मैथुन सेवन ज करने का कारण  
 ङ- प्रत्येक ग्रह की चार-चार अग्रमहीपियाँ  
 च- प्रत्येक अग्रमहीपी का परिवार





दशो विगतभाजं

गणितानुयोगमय चन्द्रप्रज्ञप्ति सूर्यप्रज्ञप्ति

अध्ययन	१११
प्राप्त	२०१२०
प्राप्त प्राप्त	३११३१
उपलब्ध मूल पाठ	२२०० दलोक परिमाण
उपलब्ध मूल पाठ	२२०० दलोक परिमाण
गद्य-सूत्र	१०८१०८
पद्य-गाथा	१०३११०३

**बीसवाँ प्राभूत प्राभूत**

- ५४ पाँच प्रकार के सवत्सर
- ५५ नक्षत्र सवत्सर के मास
- ५६ क पाँच प्रकार का युग सवत्सर  
ख चन्द्रादि पाँच सवत्सर के पत्र
- ५७ पाँच प्रकार का प्रमाण सवत्सर
- ५८ क पाँच प्रकार का लक्षण सवत्सर  
ख पाँच प्रकार का नक्षत्र सवत्सर  
ग अठावीस प्रकार का गर्भेश्वर सवत्सर

**इकवीसवाँ प्राभूत प्राभूत**

- ५९ क नक्षत्रों के द्वार, अथ पाँच प्रतिपत्तिर्षा  
ख स्वमत निरूपण

**बाबीसवाँ प्राभूत प्राभूत**

- ६० क दो चन्द्र और दो सूर्य के क्षाय योग करनेवाले नक्षत्रों का मूल परिमाण
- ६१ नक्षत्रों का सीमा विष्कम्भ
- ६२ प्राग क्षाय और उभयकाल में चन्द्र के साथ योग करने वाले नक्षत्र
- ६३ पाँच सवत्सर के एक युग की वामठ पूणिमा और वामठ अमावस्या तथा चन्द्र-सूर्य का भण्डन विभागों में सङ्गम
- ६४ पाँच सवत्सर की पूणिमा तथा अमावस्या के सूर्य का भण्डन विभागों में सङ्गम
- ६५ पाँच सवत्सर की अमावस्या तथा चन्द्र का भण्डन विभागों में सङ्गम
- ६६ पाँच सवत्सर का अमावस्या तथा सूर्य का भण्डन विभागों में सङ्गम
- ६७ पाँच सवत्सर की पूणिमा तथा चन्द्र सूर्य के साथ नक्षत्रों के

- ६८ पाँच संवत्सर की अमावस्याओं चन्द्र-सूर्य के साथ नक्षत्रों का योग
- ६९ जिस क्षेत्र में चंद्र-सूर्य के साथ नक्षत्रों का योग हो उसी क्षेत्र में पुनः चंद्र-सूर्य के साथ नक्षत्रों का योग हो तो उस काल का परिमाण
- ७० क- दोनों चंद्र समान नक्षत्र के साथ योग करते हैं  
ख- दोनों सूर्य समान नक्षत्र के साथ योग करते हैं  
ग- इसी प्रकार ग्रहादि का योग

### इग्यारहवाँ प्राभृत

- ७१ पाँच संवत्सरों का आदि अन्त और नक्षत्रों का योग

### बारहवाँ प्राभृत

- ७२ पाँच संवत्सरों के मुहूर्त
- ७३ पाँच संवत्सरों के दिन-रात
- ७४ पाँच संवत्सरों का आदि और अन्त
- ७५ क- छ ऋतुओं का प्रमाण  
ख- छ क्षय तिथियाँ  
ग- छ अधिक तिथियाँ
- ७६ क- एक युग में सूर्य और चन्द्र की आवृत्तियाँ  
ख- प्रत्येक आवृत्ति का परिमाण
- ७७ पाँच संवत्सरों में सूर्य और चन्द्र की आवृत्ति के समय नक्षत्रों का योग-तथा योग काल
- ७८ क- पाँच प्रकार के योग  
ख- पाँच योगों का क्षेत्र निर्देश

### तेरहवाँ प्राभृत

- ७९ कृष्ण और शुक्ल पक्ष में चन्द्र की होनि-वृद्धि

जघन्य उत्कृष्ट मूहर्तु अहोरात्र के मूहर्तु की हानि वृद्धि का हेतु

**तृतीय प्राभृत-प्राभृत**

१४ क- भरत और ऐरवत क्षेत्र के सूर्य का उद्योग क्षेत्र.

**चतुर्थ प्राभृत प्राभृत**

- १५ क आदित्य सवत्सर के दोनो अयना मे प्रथम से अन्तिम और अन्तिम से प्रथम पर्यन्त एक सूर्य की गति का अन्तर
- ख अन्तर के सम्बन्ध मे ६ अन्य प्रतिपत्तियाँ मान्यताएँ
- ग स्व मान्यता का महेतुक समयन

**पंचम प्राभृत-प्राभृत**

- १६ १७ क प्रथम से अन्तिम और अन्तिम से प्रथम मण्डल पर्यन्त मूय द्वारा द्वीप समुद्री के अवगाहन के सम्बन्ध मे पांच अन्य प्रतिपत्तियाँ
- ख स्व मान्यता का कथन

**षष्ठ प्राभृत-प्राभृत**

- १८ क आदित्य सवत्सर के दिन मे—एक अहोरात्र मे (प्रत्येक मण्डल मे) मूय द्वारा स्पर्शित क्षेत्र के सम्बन्ध मे अन्य भात प्रतिपत्तियाँ
- ख स्वमत समयन

**सप्तम प्राभृत-प्राभृत**

- १९ क- मूय मण्डलों के सम्बन्ध के सम्बन्ध मे अन्य आठ प्रतिपत्तियाँ स्व मान्यता का निरूपण

**अष्टम प्राभृत-प्राभृत**

- २० क सूर्यमण्डलों के आषाढ विक्रम और बाह्य के सम्बन्ध मे अन्य तीन प्रतिपत्तियाँ

ख- आदित्य संवत्सर के प्रत्येक अयन में प्रत्येक मण्डल के आयाम विष्कम्भ और वाहल्य की भिन्नता से अहोरात्र के मुहूर्तों की हानि वृद्धि.

## द्वितीय-प्राभृत

### प्रथम प्राभृत प्राभृत

२ क- सूर्य की तिरछी गति के सम्बन्ध में अन्य आठ प्रतिपत्तियाँ स्वमत का स्पष्टीकरण

### द्वितीय-प्रभृत-प्राभृत

२: सूर्य का एक मण्डल से दूसरे मण्डल में संक्रमण इस सम्बन्ध में सम्बन्ध में अन्य दो प्रतिपत्तियाँ

### तृतीय-प्राभृत-प्राभृत

३ क- एक मुहूर्त में सूर्य की गति का परिमाण इस सम्बन्ध में अन्य चार प्रतिपत्तियाँ

ख- स्व मान्यता का विशद समर्थन

## तृतीय प्राभृत

२४ क- सूर्य का ताप क्षेत्र और चन्द्र का उद्योत क्षेत्र इस विषय में अन्य बारह प्रतिपत्तियाँ

ख- स्वमत निरूपण

## चतुर्थ प्राभृत

२५ क- चन्द्र और सूर्य का संस्थान दो प्रकार का

ख- विमान-संस्थान और प्रकाशित क्षेत्र का संस्थान

ग- दोनों प्रकार के संस्थानों के सम्बन्ध में अन्य सोलह प्रतिपत्तियाँ

घ- स्वमत से प्रत्येक मण्डल में उद्योत और ताप-क्षेत्र का संस्थान तथा अन्धकार क्षेत्र के संस्थान का निरूपण

८ सूर्य के उत्तर व अधो एव नियंक ताप क्षेत्र का परिमाण

### पंचम प्राभृत

२६ क- सूर्य की महया-ताप का प्रतिघातक इस विषय में अन्य बीस प्रतिप्रतियाँ

ख- स्वमत का प्रतिपादन

### षष्ठ प्राभृत

२७ क सूर्य की ओज क्षणिति-सङ्घ म अन्य पन्चीस प्रतिप्रतियाँ

ख अवगाहित मण्डल की अपेक्षा अवन्धित और अनवगाहित मण्डल की अपेक्षा अनवस्थित ओज क्षणिति इस प्रकार स्वमत साधेन कथन

### सप्तम प्राभृत

२८ क- सूर्य में प्रकाशित स्थूल और सूक्ष्म पदार्थ

इस विषय में अन्य बीस प्रतिप्रतियाँ

ख स्व मत प्रतिपादन

### अष्टम प्राभृत

२९ क सूर्य की उदयदिशा के सम्बन्ध में अन्य तीन प्रतिप्रतियाँ

ख स्वमत में—भिन्न भिन्न क्षेत्रों की अपेक्षा सूर्योदय की भिन्न-भिन्न दिशाओं का कथन

ग दक्षिणवर्त और उत्तरार्ध में सूर्य की उदय दिशा तथा वर्षा-उत्कृष्ट अक्षराय का परिमाण

ख अम्बुदीप के दक्षिणार्ध और उत्तरार्ध में ज्वालु अथवा आदि का कथन

ङ अम्बुदीप व मेघवर्त में पूर्व-पश्चिम में जिन समय दिन है उन समय दक्षिण उत्तर में राति है

- च- लवण समुद्र के दक्षिण उत्तर में जिस समय दिन है उस समय पूर्व-पश्चिम में रात्रि है
- छ- भिन्न भिन्न क्षेत्रों की अपेक्षा उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल का कथन
- ज- वातकी खण्ड में दिन-रात्रि तथा उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी
- झ- कालोद में लवणोद के समान
- व- पुष्करार्ध में दिन रात्रि तथा उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी

नवम पौरुषी छायाप्रमाण प्राभृत



**द्वितीयी प्राभूत प्राभूत**

- ५४ पाँच प्रकार के मन्त्र
- ५५ नवम मन्त्र के माय
- ५६ क पाँच प्रकार का युग मन्त्र  
ग चण्डि पाँच मन्त्र के पत्र
- ५७ पाँच प्रकार का प्रमाण मन्त्र
- ५८ क पाँच प्रकार का मन्त्र मन्त्र  
ग पाँच प्रकार का नवम मन्त्र  
ग अन्तर्गत प्रकार का मन्त्र मन्त्र

**द्वितीयी प्राभूत प्राभूत**

- ५९ क नक्षत्रों के द्वार अथवा पाँच प्रतिपत्तियों  
ग स्वयं निरूपण

**द्वितीयी प्राभूत प्राभूत**

- ६० क दो चण्ड और दो सूत्र के साथ माय करनेवाले नक्षत्रों का मन्त्र परिमाण
- ६१ नक्षत्रों का भीमा विरहम्भ
- ६२ प्राण माय और उभयहात में चण्डक साथ योग करने वाले नक्षत्र
- ६३ पाँच मन्त्रों के एक युग की चण्ड पूणिमा और चण्ड अमावस्याओं में चण्ड-सूत्र का मन्त्र विभागों में सन्तुष्ट
- ६४ पाँच मन्त्रों की पूणिमाओं के सूत्र का मन्त्र विभागों में सन्तुष्ट
- ६५ पाँच मन्त्रों की अमावस्याओं में चण्ड का मन्त्र विभागों में सन्तुष्ट
- ६६ पाँच मन्त्रों की अमावस्याओं के सूत्र का मन्त्र विभागों में सन्तुष्ट
- ६७ पाँच मन्त्रों की पूणिमाओं के चण्ड सूत्र के साथ नक्षत्रों का योग

- ६८ पाँच संवत्सर की अमावस्याओं चन्द्र-सूर्य के साथ नक्षत्रों का योग
- ६९ जिन क्षेत्र में चन्द्र-सूर्य के साथ नक्षत्रों का योग हो उसी क्षेत्र में पुनः चन्द्र-सूर्य के साथ नक्षत्रों का योग हो तो उस काल का परिमाण
- ७० क- दोनों चंद्र समान नक्षत्र के साथ योग करते हैं  
 ग- दोनों सूर्य समान नक्षत्र के साथ योग करते हैं  
 ग- इसी प्रकार वशादि का योग

### इग्यारहवाँ प्राभृत

- ७१ पाँच संवत्सरों का आदि अन्त और नक्षत्रों का योग

### बारहवाँ प्राभृत

- ७२ पाँच संवत्सरों के मुहूर्त
- ७३ पाँच संवत्सरों के दिन-रात
- ७४ पाँच संवत्सरों का आदि और अन्त
- ७५ क- छ प्रहनुओं का प्रमाण  
 ग- छ क्षय तिथियाँ  
 ग- छ अधिक तिथियाँ
- ७६ क- एक युग में सूर्य और चन्द्र की आवृत्तियाँ  
 ग- प्रत्येक आवृत्ति का परिमाण
- ७७ पाँच संवत्सरों में सूर्य और चन्द्र की आवृत्ति के समय नक्षत्रों का योग-तथा योग काल
- ७८ क- पाँच प्रकार के योग  
 ग- पाँच योगों का क्षेत्र निर्देश

### तेरहवाँ प्राभृत

- ७९ कृष्ण और शुक्ल पक्ष में चन्द्र की हानि-वृद्धि

८० वासठ पूर्णिमा और वासठ अमावस्याओं में चन्द्र सूर्यो के साथ राहु का योग

८१ प्रत्येक अयन में चन्द्र की मण्डल गति

### चौदहवाँ प्राभृत

८२ कृष्ण और शुक्ल पक्ष में चन्द्रिका और अक्षरकार का प्रमाण

### पन्द्रहवाँ प्राभृत

८३ चन्द्राणि ज्योतिषी देवा की गति

८४ चन्द्राणि ज्योतिषी देवा की एक मूहृत में गति

८५ क नक्षत्रमाम में चन्द्र सूर्य ग्रहाणि की मण्डल गति

ख चन्द्रमास में चन्द्र सूर्य ग्रहाणि की मण्डल गति

ग ऋतु माम में

घ आन्तिय माम में

ङ अभिवृत्तमाम में

८६ क चन्द्र सूर्य ग्रहाणि की एक अहोरात्र में मण्डल गति

ख चन्द्र सूर्य ग्रहाणि की एक युग में मण्डल गति

### सोलहवाँ प्राभृत

८७ क चन्द्रिका के पर्याय

ख आनय के

ग अक्षरकार के

### सत्तरहवाँ प्राभृत

८८ क चन्द्र सूर्य का अयन मरण

ख का उदयान अयन

इन विषय में अन्य पच्चीस प्रतियत्तियाँ

ग स्वमत का प्रतिपादन

## अठारहवाँ प्राभृत

- ८६ क- भूमि से चन्द्र सूर्यादि की ऊँचाई का परिमाण  
इस सम्बन्ध में अन्य पच्चीस प्रतिपत्तियाँ
- ख- स्वमत का यथार्थ प्रतिपादन
- ग- ज्योतिषी देवों की एक-दूसरे से दूरी का अन्तर
- ८७ क- चन्द्र सूर्य के विमान के नीचे ऊपर और सम विभाग में ताराओं के विमान
- ख- नीचे, ऊपर और समविभाग में ताराविमानों के होने का हेतु
- ८८ एक चन्द्र का ग्रह, नक्षत्र और ताराओं का परिवार
- ८९ क- मेरु पर्वत से ज्योतिषचक्र का अन्तर
- ख- लोकान्त से ज्योतिषचक्र का अन्तर
- ९० जम्बूद्वीप में सर्वाभ्यन्तर, सर्वबाह्य, सर्वोपरि और सबसे नीचे चलने वाले नक्षत्र
- ९१ क- चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और ताराओं के विमानों के संस्थान
- ख- चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और ताराओं के विमानों का आयाम-विष्कम्भ और बाह्यत्व
- ग- चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और तारा विमानों का वहन करनेवाले देवों की संख्या और उनका दिशाक्रम से रूप
- घ- पाँच ज्योतिष्क देवों में शीघ्र या मन्द गति
- ङ- पाँच ज्योतिष्क देवों का गति की अपेक्षा से अल्प-बहुत्व
- ९२ जम्बूद्वीप में एक तारा विमान से दूसरे तारा विमान का जघन्य उत्कृष्ट अन्तर
- ९३ क- चन्द्र की अग्रमहीपियाँ, प्रत्येक अग्रमहीपी का परिवार प्रत्येक अग्रमहीपी की विकुर्वणा शक्ति, चन्द्रावर्तसक विमान की सुधर्मा सभा में जिन अस्थियों का सम्मान
- ख- सूर्य की अग्रमहीपियाँ आदि चन्द्र वर्णन के समान
- ९४ क- ज्योतिषी देव-देवियों की जघन्य- उत्कृष्ट स्थिति

- अ चंद्र विमान के देव-देवियों की जघन्य उद्भृष्ट स्थिति
- ग सूर्य विमान के देव-देवियों की जघन्य उद्भृष्ट स्थिति
- घ ग्रह विमान के देव-देवियों की जघन्य उद्भृष्ट स्थिति
- च तारा विमान के देव-देवियों की जघन्य उद्भृष्ट स्थिति
- ६८ पाँच ज्योतिषी देवों का श्रेण्य-व्युत्पन्न

### उन्नीसवाँ प्राभूत

- ६९ क चंद्र मूत्र गारे लोक को प्रकाशित करने हैं या लोक के विभाग को इस सम्बन्ध में ज्ञान वारह प्रतिप्रतिष्ठा
- ख स्वमन्त्र का सम्बन्ध विष्णु
- ग लक्षण समुद्र का सम्बन्ध आषाढ विष्णु और परिधि
- घ लक्षण समुद्र में चंद्र मूत्रे ग्रह नक्षत्र और तारे
- ङ धानकी लक्षण का सम्बन्ध आषाढ विष्णु और परिधि
- च धानकी लक्षण में चंद्र मूत्रे ग्रह नक्षत्र और तारे
- छ काना का सम्बन्ध आषाढ विष्णु और परिधि
- ज काना में चंद्र मूत्रे ग्रह नक्षत्र और तारे
- झ पुष्कर द्वीप का सम्बन्ध आषाढ विष्णु और परिधि
- झ पुष्कर द्वीप में चंद्र मूत्रे ग्रह नक्षत्र और तारे
- ट पुष्कराज का सम्बन्ध आषाढ विष्णु और परिधि
- ठ पुष्कराज में चंद्र मूत्रे ग्रह नक्षत्र और तारे
- ड मनुष्य क्षेत्र के चंद्र आदि की उत्पत्ति और गति
- ६ इन्द्र के अमान में व्यवस्था इन्द्र का जघन्य उद्भृष्ट विरह वाप
- ण मनुष्य क्षेत्र के चंद्र चंद्र आदि की उत्पत्ति और गति
- त इन्द्र के अमान

- १०० १०३ पुष्कराज का सम्बन्ध आषाढ विष्णु और परिधि
- ख पुष्कराज में चंद्र आदि
- ग स्वयम्भूरमण पद्मल द्वीप समुद्रों का आषाढ विष्णु और परिधि

षमो सव्वोसहिपत्ताणं  
धर्मकथानुयोगमय निरयावलिकादि

पाँच उपाँग

श्रुत स्कंध	१
अध्ययन	५२
वर्ग	५
मूल पाठ	११०० श्लोक प्रमाण



# निरयावलिकादि पाँच उपांग-विषय सूची

## प्रथम निरयावलिका वर्ग

### प्रथम काल अध्ययन

- १ क- उत्पानिका-राजगृह-गुणगीत चैत्य-अज्ञोक वृक्ष
- ख- लार्थ मुषर्मा का समवसरण, धर्मकथा
- ग- भ० जन्म की जिज्ञासा  
उपाङ्गों के सम्बन्ध में भ० महावीर का कथन
- घ- उपाङ्गों के पाँच वर्ग
- ङ- प्रथम वर्ग के दस अध्ययन
- च- प्रथम अध्ययन का वर्णन
- छ- चम्पा नगरी, पूर्ण भद्र चैत्य, श्रेणिक, चेलगा  
शूणिक राजा, पद्ममावती देवी.
- ज- कान्हीदेवी का पुत्र काल कुमार
- झ- काल कुमार का रथ-मुगल संग्राम में बुधार्थ गमन
- ञ- काल कुमार के सम्बन्ध में काली देवी के संकल्प
- ट- भ० महावीर का समवसरण, धर्मदेशना
- ड- कान्हीदेवी की काल कुमार के सम्बन्ध में जिज्ञासा
- ढ- भ० महावीर का समाधान
- ण- चैत्र राजा के वाण प्रहार से काल कुमार की मृत्यु
- त- शोक विह्वल कालीदेवी का स्व-म्यान गमन
- थ- भ० गौतम की जिज्ञासा  
कालकुमार की मृत्यु के पश्चात् गति ?
- द- भ० महावीर द्वारा समाधान





## द्वितीय सुकाल अध्ययन

काल के समान सुकाल का वर्णन

तृतीय से दशम अध्ययन पर्यन्त

शेष आठ राजकुमारों का कालकुमार के समान वर्णन

## द्वितीय कल्पावतंसिका वर्ग

प्रथम पद्य अध्ययन

- १ क- उत्थानिका दस अध्ययनों के नाम
- ख- प्रथम अध्ययन का वर्णन
- ग- काल कुमार की रानी पद्मावती के सुपुत्र पद्म कुमार की भ० महावीर के ममीप अणगार प्रब्रज्या
- घ- रत्नत्रय की साधना
- ङ- सौधर्म के चंद्रिम विमान में उत्पत्ति
- च- देवलोक से च्यवन, महाविदेह में जन्म, वीराग्य साधना, शिवपद

द्वितीय से दशम अध्ययन पर्यन्त

- क- शेष नो का पद्म के समान वर्णन
- ख- शेष नो की दीक्षा पर्याय
- ग- क्रम से उपर के देवलोकों में उतरति
- घ- मन्वका महाविदेह में जन्म और निर्वाण

## तृतीय पुष्पिका वर्ग

प्रथम चन्द्र अध्ययन

- १ क- उत्थानिका—दस अध्ययनों के नाम
- ख- प्रथम अध्ययन-राजगृह-गुणशील चैत्य-श्रेणिक राजा
- ग- भ० महावीर का पदार्पण, धर्म परिपद, प्रवचन
- घ- ज्योतिष्केन्द्र चन्द्र का जम्बूद्वीप अवलोकन
- ङ- भ० महावीर के दर्शनार्थ आगमन, नृत्य, दर्शन, स्वस्थान गमन

- द काग कुमार का चौथी नरक में गमन  
 ध गमन का हेतु ?  
 न चेलणा का दोहद  
 प अश्वमेध द्वारा दाह की पूर्ति  
 फ चेलणा का गमन के लिए प्रयत्न  
 ब पुत्र जन्म उकरडी पर शिशु को डलवाना शिशु की उगली पर  
 मुग की चौच का प्रहार अश्वमेध द्वारा शिशु को उकरडी से  
 भगवाना शिशु को अगुला का पकना अगुली की विक्रिया  
 भ कूणिक नाम देना पालन पोषण शिक्षा विवाह  
 म कूणिक का अश्वमेध को ब दी बनाने का तथा अपने राज्या  
 भिक्षेक का सम्पन्न  
 य काल आदि दस भानाओं को राज्य विभाग देने का प्रसोभन  
 र अश्वमेध को ब दी बनाना—कूणिक का राज्याभिक्षेक  
 ल चेलणा का कूणिक को पुत्र वृत्ता उ मुनाना  
 व अश्वमेध को ब धन मुक्त करने के लिये जाना  
 श अश्वमेध का तानपुट विष में आत्मघात  
 य अश्वमेध सहित बन्तकुमार और सेवनक गध हस्ती की जल  
 थोडा से पचावती थी ईर्ष्या  
 न पचावती की प्ररणा से हार हाथी लौटाने की बहल से कूणिक  
 की मांग  
 ह बहल का विन्हेह जनपद की बशाही राजधानी में राजा सेटक  
 में सत्पण आहना  
 सेटक और कूणिक का युद्ध  
 काल आदि का कूणिक को सहयोग  
 काय कुमार की दृश्य अनुप नरक में उत्पत्ति  
 नरक से उद्वतन के पश्चात् महाविन्हेह में जन्म करण  
 प्रपन्था साधना और निवर्ण

- ज- जातिभोज, ज्येष्ठ पुत्र को कुटुम्ब भार सौंपना, चान प्रस्थ-  
तापस बनना
- झ- अनेक प्रकार के चानप्रस्थ तापस
- ञ- सोमिल का दिशा प्रोक्षिका प्रव्रज्या स्वीकार करना
- ट- सोमिल का अभिग्रह
- ठ- सोमिल का काष्ठमुद्रा से मुग वाधना
- ड- सोमिल के समीप एक देव का आगमन—दुष्प्रव्रज्या कथन,
- ढ- दुष्प्रव्रज्या के सम्बन्ध में देव से प्रश्न
- ण- देव द्वारा समाधान
- त- सोमिल का पुनः श्रावक धर्म आराधन
- थ- युक्रावतंसक विमान में उपपात
- द- देवलोक से च्यवन, महाविदेह में जन्म और निर्वाण

### चतुर्थ बहुपुत्रिका अध्यायन

- १ क- उत्पानिका—राजगृह—गुणशीलचैत्य, श्रेणिक राजा, महावीर  
का समवसरण, धर्म-देशना
- ख- बहुपुत्रिका देव का आगमन
- ग- भ० गीतम की जिज्ञासा
- घ- भ० महावीर द्वारा पूर्वभव वर्णन—वाराणसी नगरी,—आम्र-  
शालवन, भद्र साधेवाह, सुभद्रा भार्या
- ङ- सुभद्रा का आर्तध्यान, वंछ्यापन से व्याकुलता
- च- सुव्रता आर्या का पदार्पण
- छ- एक साधवी संघ का गिदार्थ जाना, सुभद्रा की निर्ग्रथ  
प्रवचन में सचि उत्पन्न होना
- ज- गृहस्थ धर्म की स्वीकृति
- झ- अनगार प्रव्रज्या लेने का संकल्प
- ञ- सुभद्रा की अनगार प्रव्रज्या, संयम साधना
- ट- सुभद्रा की शिशु पालन पोषण में अभिरुचि



ज- सौधर्मकल्प के पूर्णभद्र विमान में उपपात

झ- पूर्णभद्र देव की स्थिति

देवलोक से च्यवन, महाविदेह में जन्म और निर्वाण

षष्ठ अध्ययन से दशम अध्ययन पर्यन्त

क- पांच अध्ययनों का वर्णन-पूर्णभद्र अध्ययन के समान

ख- मणिभद्र गाथापति—मणिवति नगरी

ग- दत्त गाथापति—चदना नगरी

घ- शिव गाथापति—मिथला नगरी

ङ- बल गाथापति—हस्तिनापुर

च- अनाधृत गाथापति—काकदी नगरी

## चतुर्थ पुष्पचूला वर्ग

### प्रथम भूता अध्ययन

१- क उत्पानिका-दश अध्ययनों के नाम

ख- प्रथम अध्ययन राजगृह, गुणशील चैत्य, भ० महावीर का सम  
वसरण-धर्मदेशना

ग- सौधर्म कल्प मे श्री देवी का भागमन, नाट्य दर्शन

घ- भ० गोतम द्वारा पूर्वभव पृच्छा

ङ- महावीर द्वारा पूर्व भव का वर्णन

च- राजगृह, जितशत्रु कूणिक-राजा

छ- सुदर्शन गाथापति, प्रिया भार्या, भूता-पुत्री

ज- भूता का अविवाहित रहना

झ- भ० पार्श्वनाथ का समवसरण-धर्म कथा, भूता का धर्म श्रवण,  
वैराग्य, अनगार प्रव्रज्या

ञ- भूता की शरीर सुश्रूपा

ट- भूता का अलग उपाश्रय में निवास, स्वच्छन्द जीवन, श्रामण्य  
विराघना

- ट मुभद्रा का भिन्न उपाश्रय से निराश स्वच्छ जीवन धामपद  
विराघना सौधमकप म उपपात
- ड बहुपुत्रिका देवी का नाम प्रशान
- ढ बहुपुत्रिका देवी की स्थिति
- ण देवलोक से ध्ववन
- त जम्बूद्वीप भरत विध्यगिरि, विभन सनिवेग शाह्यण कुल मे  
जाम सोमा नाम देना दुबा होने पर राष्ट्रकू से विवाह
- थ सोमा का वसीम पुत्रो से पानन पोषण म ध्वयिन होना
- द सोमा का अनगार प्रव्या लेने का सक
- ध सुवना आर्या का पदापण
- न सोमा का धम श्वय जमयोनामिका वना
- प सुवना आर्या का विहार
- फ सुवना का पुन पनापण
- ब सोमा की अनगार प्रव्या—सयम साधना
- भ शक के सामनिक देवरुप म उपपात
- म देवलोक से ध्ववन महाविदेह मे ज म और निर्वाण

### पचम पूणभद्र अध्ययन

- १ क उथानिका राजगृह गुणगीत चय भ० महावीर का समव  
सरण धमदेशना—
- ख पूणभद्र देव का आगमन नाटय प्रशान
- ग भ० गोगम की विज्ञाना
- घ भ० महावीर द्वारा पुनभव वणन
- च जम्बूद्वीप भरत मणिवनिक नगरी चोत्तारण म प
- छ पूणभद्र साधपति
- ज बहुधन स्वविरो का आगमन धम ध्वयण वराग्य अनगार  
प्रव्या सयम साधना

त- निपट का सर्वार्थ सिद्ध मे उपपात, स्थिति, च्यवन

थ- महाविदेह में जन्म और निर्वाण

द- उपसंहार—शेष इग्यारह अध्ययनो का वर्णन—निपट अध्ययन के समान

ध- एक श्रुतस्कध-पांच वर्ग

चार वर्गों में दश-दश उद्देशक व पांचवें वर्ग में वारह उद्देशक





णमो समणार्णं

चरणानुयोगमय दशवैकालिक

अध्ययन	१०
चूलिका	२
उद्देशक	१४
उपलब्ध मूल पाठ	७०० श्लोक प्रमाण
पद्य-सूत्र	५१४
गद्य-सूत्र	३१

अध्ययन	गाथा
१ द्रुमपुष्पिका	५
२ श्रामण्य पूर्वक	११
३ क्षुल्लकाचार	१५
४ धर्मप्रज्ञप्ति या षट् जीवनिका	२८ सूत्र २३
५ पिरडैपणा	१५०
६ महाचार	६८
७ वान्य शुद्धि	५७
८ आचार-प्रणिधि	६३
९ विनय-समाधि	६२ सूत्र ७
१० सभिन्नु	२६
१ प्रथमा चूलिका रति वाक्या	१८ सूत्र १
२ द्वितीया चूलिका विविक्त चर्या	१६



# चरणानुयोगमय दशवैकालिक

## विषय-सूची

प्रथम द्रुमपुष्पिका अध्यायन

(धर्म प्रशंसा और माधुकरी वृत्ति)

- १ धर्म का स्वरूप और लक्षण तथा धार्मिक पुरुष का महत्व.  
१-५ माधुकरी वृत्ति.

द्वितीय श्रामण्यपूर्वक अध्ययन

(संयममें धृति और उसकी साधना)

- १ श्रामण्य और मदन काम.  
२-३ त्यागी कौन.  
४-५ कामराग निवारण या मनोनिग्रह के साधन.  
६६ मनोनिग्रह का चिन्तन सूत्र, अगन्धनकुल के सर्प का उदाहरण  
१० रथनेमि का समय में पुनः स्थिरी करण.  
११ संबुद्ध का कर्तव्य

तृतीय क्षुल्लकाचार-कथा अध्ययन

(आचार और अनाचार का विवेक)

- १-१० निर्ग्रन्थ के अनाचारों का निरूपण.  
११ निर्ग्रन्थ का स्वरूप.  
१२ निर्ग्रन्थ की ऋतुचर्या.  
१३ महर्षि के प्रक्रम का उद्देश्य.  
१४-१५ संयम साधना का गौण व मुख्यफल.

चतुर्थे पट्टे जीवनिका अध्ययन  
(जीव-सयम और आत्म-सयम)

- सूत्र
- १ नीवाजीवाभिगम
- २ ३ पट्टजीविकाय का उपक्रम, पट्टजीविकाय नाम निर्देश
- ४ ७ पृथ्वी पानी अग्नि और वायु की चेतना का निरूपण
- ८ वनस्पति की चेतना और उसके प्रकारों का निरूपण
- ९ जन्मजीवो के प्रकार लगण
- १० जीववध न करने का उपदेश  
२ चारित्र्य धर्म
- ११ प्राणातिपात विरमण—अहिंसा महाव्रत का निरूपण और स्वीकार पद्धति
- १२ मृषावाद विरमण—सत्य महाव्रत का निरूपण और स्वीकार पद्धति
- १३ अदत्तादान-विरमण—अचोप महाव्रत का निरूपण और स्वीकार पद्धति
- १४ अग्रह्याचय विरमण—ब्रह्मचर्य महाव्रत का निरूपण और स्वीकार पद्धति
- १५ परिग्रह विरमण—अपरिग्रह महाव्रत का निरूपण और स्वीकार पद्धति
- १६ रात्रिभोजन विरमण—व्रत का निरूपण और स्वीकार पद्धति
- १७ पाच महाव्रत और रात्रि भोजन विरमण व्रत के स्वीकार का हेतु  
३ यत्न
- १८ पृथ्वीकाय की हिंसा के विविध साधनों से बचने का उपदेश
- १९ अरकाय " " " "

- २० तेजस्काय को हिमा के विविध साधनों से बचने का उपदेश  
 २१ वायुकाय " " "  
 २२ वनरूपतिकाय " " "  
 २३ अग्निकाय को हिमा में बचने का उपदेश.

४ उद्देश

गाथा

- १ अयतनापूर्वक चलने में हिमा, बंधन और परिणाम.  
 २ अयतनापूर्वक गड़े रहने में हिमा बंधन और परिणाम.  
 ३ " बैठने में " "  
 ४ " सोने में " "  
 ५ अयतनापूर्वक भोजन करने में हिमा, बन्धन और परिणाम.  
 ६ " बोलने में हिमा " "  
 ७ प्रवृत्ति में अहिमा की जिज्ञासा.  
 ८ " " का निरूपण.  
 ९ आत्मीय-बुद्धि सम्पन्न व्यक्ति और अबंध.  
 १० ज्ञान और दया (संयम) का पौर्याण्य और अज्ञानी की भर्त्सना.  
 ११ श्रुति का माहात्म्य और श्रेयम् के आचरण का उपदेश.  
 १२-२५ धर्म-फल  
 २२-२५ कर्ममे-मुक्ति की प्रक्रिया-आत्म-बुद्धि का आरोह क्रम.  
 संयम के ज्ञान का अधिकारी.  
 गति-विज्ञान.  
 बंधन और मोक्ष का ज्ञान.  
 आसक्ति व वस्तु-उपभोग का त्याग.  
 संयोग का त्याग.  
 मुनिपद का स्वीकरण.  
 चारित्रिक भावों की वृद्धि.

पूजनचित्त कमरज का निव्वरण  
केवलज्ञान और केवल दान की समाप्ति  
लोक-अनोक का प्रत्यक्षीकरण  
योग निरोध

गलेसी अवस्था की प्राप्ति  
कर्मों का सम्पूर्ण क्षय  
सास्वन सिद्धि की प्राप्ति

- २६ सुगति की दुलभता  
२७ सुगति की सुलभता  
२८ यत्नना का उपदेश और उपनहार

पचम पिण्डेयणा अध्ययन  
प्रथम उद्देशक

( एषणा गवेयणा, ग्रहणेयणा और भोगेयणा की शुद्धि )

( १ ) गवैयणा

- १ ३ भोजन पानी की गवेयणा के निये कब बर्ही और कबे जाय ?  
४ विषम माग से जाने का निषेध  
५ विषम माग से जाने से होनेवाले दोष  
६ सामान के अभाव से विषम माग से जाने की विधि  
७ अगार आदि के अतिक्रमण का निषेध  
८ बर्षा आदि से भिगा के निये जाने का निषेध  
९ ११ वेदया के पाडे से भिगाग्न करने का निषेध और बर्ही होनेवाले दाया का निरूपण  
१२ आराम विराधना के स्थनों से जाने का निषेध  
१३ गमन की विधि  
१४ अविधि-गमन का निषेध  
१५ दाया स्थन के अवनोहन का निषेध

- १६ मंत्रणागृह के समीप जाने का निषेध  
 १७ प्रतिक्रुष्ट आदि कुलो से भिक्षा लेने का निषेध  
 १८ साणी (चिक) आदि को खोलने का विधि-निषेध.  
 १९ मल-मूत्र की बाधा को रोकने का निषेध.  
 २० अधकारमय स्थान में भिक्षा लेने का निषेध.  
 २१ पुष्प, चीज आदि विग्वरे हुए और अधुनोपलिप्त भागण में जाने का निषेध-एषणा के नवें दोष—“लिप्त” का वर्जन.

२२ भेष, वत्स आदि को लाघकर जाने का निषेध

२३-२६ गृह-प्रवेश के बाद अवलोकन, गमन और स्थान का विवेक

### (२) ग्रहणैषणा

#### भक्तदान लेने की विधि

- २७ आहार-ग्रहण का विधि-निषेध  
 २८ एषणा के दसवें दोष “द्विदित” का वर्जन.  
 २९ जीव-विराघना करते हुए दाता से भिक्षा लेने का निषेध  
 ३०-३१ एषणा के पाँचवें (सहृत् नामक) और छठे (दायक नामक) दोष का वर्जन  
 ३२ पुर कर्म दोष का वर्जन  
 ३३-३५ असमृष्ट और समृष्ट का निरूपण पश्चात् कर्म का वर्जन  
 ३६ समृष्ट हस्त आदि से आहार लेने का निषेध  
 ३७ उद्गम के पन्द्रहवें दोष “अनिमृष्ट” का वर्जन  
 ३८ निसृष्ट-भोजन लेने की विधि  
 ३९ गर्भवती के लिए बनाया हुआ भोजन लेने का विधि निषेध—  
 एषणा के छठे दोष “दायक” का वर्जन  
 ४०-४१ गर्भवती के हाथ से लेने का निषेध  
 ४२-४३ स्तन्य-दान कराती हुई स्त्री के हाथ से भिक्षा लेने का निषेध  
 ४४ एषणा के पहले दोष “शक्ति” का वर्जन



- ४५ ४६ उदगम के बारहव दोष उदभिन का वजन  
 ४७ ४८ दानाय किया हुआ आहार लेने का निषेध  
 ४९ ५० पुण्याय किया हुआ आहार लेने का निषेध  
 ५१ ५२ वनीपक के लिए किया हुआ आहार लेने का निषेध  
 ५३ ५४ श्रमण के लिए किया हुआ आहार लेने का निषेध  
 ५५ औदक्षिक आदि दोष युक्त आहार लेने का निषेध  
 ५६ भोजन के उदगम की परीक्षा विधि और शुद्ध भोजन लेने का विधान  
 ५७ ५८ एषणा के सातव दोष उभिन का वजन  
 ५८ ६० एषणा के तीसरे दोष निक्षिप्त का वजन ( )  
 ६१ ६४ दायक दोष युक्त भिक्षा का निषेध  
 ६५ ६६ अस्थिर शिभा काष्ठ आदि पर पौर रखकर जाने का निषेध और उसका कारण  
 ६७ ६८ उदगम के बारहव दोष मालापहून का वजन और उसका कारण  
 ६९ ७० सचित्त का मूत्र आदि लेने का निषेध  
 ७१ ७२ सचित्त राज मनुष्य आहार आदि लेने का निषेध  
 ७३ ७४ जिनने खाने का थोड़ा भाग हो और फकना अधिक पडे ऐसी वस्तुएं लेने का निषेध  
 ७५ तृकाय घोवन लेने का निषेध एषणा के आठव दोष अपरिणत का वजन  
 ७६ परिणत घोवन लेने का विधान  
 ७७ ७८ घोवन की उपयोगिता में सदेह होने पर चणकर लेने का विधान  
 ७९ प्यास शमन के लिए अनुपयोगी जल लेने का निषेध  
 ८० अस्वास्ती से उत्पन्न अनुपयोगी जल लेने का निषेध  
 ८१ अनुपयोगी जल के परठने की विधि

## (३) भोगैपणा

## भोजन करने की आपवादिक विधि:—

- ५२-५३ भिक्षा-काल में भोजन करने की विधि,  
 ५४-५६ आहार में पड़े हुए तिनके आदि की परठने की विधि  
 ५७ उपाश्रय में भोजन करने की विधि  
 स्थान—प्रतिलेखन पूर्वक भिक्षा के विशोधन का संकेत  
 ५८ उपाश्रय में प्रवेश करने की विधि, इर्यापथिकी पूर्वक कायो-  
 त्सर्ग करने का विधान  
 ५९-६० गोचरी में लगने वाले अतिचारों की यथाक्रम स्मृति  
 और उनकी आलोचना करने की विधि  
 ६१ सम्यग् आलोचना न होने पर पुनः पुनः प्रतिक्रमण का विधान  
 ६२ कायोत्सर्ग काल का चिन्तन  
 ६३ कायोत्सर्ग पूरा करने की और उसकी उत्तरकालीन विधि  
 ६४-६५ विश्राम-कालीन चिन्तन, साधुओं का भोजन लिए निमंत्रण,  
 सह भोजन  
 ६६ एकाकी भोजन, भोजनपात्र और खाने की विधि  
 ६७-६९ मनोज्ञ या अमोनज्ञ भोजन में समभाव रखने का उपदेश  
 १०० मुधादायी और मुधाजीवी की दुर्लभता और उनकी गति  
 पिण्डैवणा (दूसरा उद्देशक)  
 १ जूठन न छोड़ने का आदेश  
 २-३ भिक्षा में पर्याप्त आहार न आने पर आहार-गवेपणा विधान  
 ४ यथा समय कार्य करने का निर्देश  
 ५ अकाल भिक्षाचारी श्रमण को उपालम्भ  
 ६ भिक्षा के लाभ और अलाभ में समता का उपदेश  
 ७ भिक्षा की गमन विधि, भक्तार्थ एकत्रित पशुपक्षियों को लांघ-  
 कर जाने का निषेध

८ शीघ्रराश कर्मे और कथा आदि कहने का निषेध

९ अचना आदि को उत्तमपर भिगा के लिए घर में जाने का निषेध

१० ११ मिथारी आदि को माधकर भिगा के लिए घर में जाने का निषेध और उसके दोषों का निरूपण उनके

१२ १३ लौट जाने पर प्रवेग का विधान

१४ १७ अरियाली को कुचकर देने वाले से भिगा लेने का निषेध

१८ १६ अपरव मजीव फल आदि लेने का उपदेश

२० एक बार भुने हुए गमी घान्ध को लेने का निषेध

२१ २४ अपरव मजीव फल आदि लेने का उपदेश

२५ सामुदायिक भिगा का विधान

२६ अतीत भाव में भिगा लेने का उपदेश

२७ २८ अनाया के प्रति कोप न करने का उपदेश

२९ ३० अशुद्धि पूर्वक याचना करने व न देनेपर कठोर वचन कहने का निषेध

उत्सर्ग के ग्यारह दोष पूर्व सन्धव का निषेध

३१ ३२ रम पानुपना और सञ्जनित दुष्टपरिधाम

३३ ३४ विजन में सरम आहार और मण्डनी में विरम आहार करने वाले की मनोभावना का चित्रण

३५ पूजाधिना और मञ्जनित दोष

३६ मद्यपान करने का निषेध

३७-४१ स्वयं प्रति स मद्यपान करने वाले मुनि के दोषों का प्रतीति

४ ४४ गुणानुपनी की मकर याचना और अ राचना का निरूपण

४५ प्रतीतिन्म और मद्यपानधर्मी तपस्वी के कहवाण का उपदेश

४६ ४९ तप आदि में सम्बन्धित माया द्वारा होने वाली दुर्गति का निरूपण और उनके वन्दन का उपदेश

५० विन्दुपर्णा का ऐतसहार समाचारी के मध्यम वन्दन का उपदेश

## षष्ठ महाचार कथा अध्ययन

- १-२ निर्ग्रन्थ के आचार-गोचर की पृच्छा
- ३-६ निर्ग्रन्थों के आचार की शुद्धरता और सर्वसामान्य वाचरणी-  
यता का प्रतिपादन
- ७ आचार के अठारह स्थानों का निर्देश  
पहला स्थान:— अहिंसा
- ८-१० अहिंसा की परिभाषा, जीव-वध न करने का उपदेश, अहिंसा के  
विचार का व्यावहारिक आधार  
दूसरा स्थान:— मरथ
- ११-१२ मृपावाद के कारण और मृपा न बोलने का उपदेश मृपावाद  
वर्जन के कारणों का निरूपण  
तीसरा स्थान:— अर्चय
- १३-१४ अदत्त ग्रहण का निषेध  
चौथा स्थान:— ब्रह्मचर्य
- १५-१६ अन्नह्राचर्य सेवन का निषेध  
पांचवां स्थान:— अपरिग्रह
- १७-१८ सन्निधि का निषेध, सन्निधि चाहने वाले श्रमण की गृहस्थ से  
तुलना
- १९ धर्मोपकरण रखने के कारणों का विधान
- २० परिग्रह की परिभाषा
- २१ निर्ग्रन्थों के अममत्व का निरूपण  
छठा स्थान—रात्रि-भोजन का त्याग
- २२ एक भवत भोजन का निर्देशन
- २३-२५ रात्रि-भोजन का निषेध और उसके कारण  
सातवां स्थान—पृथ्वीकाय की यतना

दोष-दर्शनपूर्वक पृथ्वीकाय की हिंसा का निषेध और उसका परिणाम

आठवों स्थान—अपकाय की यत्ना

२६ ३१ अमण अपकाय की हिंसा नहीं करते

दोष-दर्शनपूर्वक अपकाय की हिंसा का निषेध और उसका परिणाम

नवों स्थान—जैषम्काय की यत्ना

३२ अमण अग्नि की हिंसा नहीं करते

३३-३५ तेजस्काय की भयानकता का निरूपण

दोष—दर्शनपूर्वक तेजस्काय की हिंसा का निषेध और उसका निरूपण

दसवों स्थान—वायुकाय की यत्ना

३६ अमण वायु का समारम्भ नहीं करते

३७ ३८ विभिन्न माधनो से वायु उत्पन्न करने का निषेध

दोष-दर्शनपूर्वक वायुकाय की हिंसा का निषेध और उसका परिणाम

ग्यारहवों स्थान—वनस्पतिकाय की यत्ना

४०-४२ अमण वनस्पतिकाय की हिंसा नहीं करते

दोष-दर्शनपूर्वक वनस्पतिकाय की हिंसा का निषेध और उसका परिणाम

बारहवों स्थान—जलकाय की यत्ना

४३ ४५ अमण जलकाय की हिंसा नहीं करते

दोष-दर्शनपूर्वक जलकाय की हिंसा का निषेध और उसका परिणाम

तेरहवों स्थान—अकल्प्य

४६-४७ अकल्पनीय वस्तु सने का निषेध

४८-४९ निषाद आदि लेने से उत्पन्न होनेवाले दोष और उसका निषेध

## चौदहवाँ स्थान—गृहि भाजन

५०-५२ गृहस्थ के भाजन में भोजन करने से उत्पन्न होनेवाले दोष और उसका निषेध

## पन्द्रहवाँ स्थान—पर्यक

५३ आसन्दी, पर्यक आदि पर बैठने, मोने का निषेध

५४ आसन्दी आदि विषयक निषेध और अपवाद

५५ आसन्दी और पर्यक के उपयोग के निषेध का कारण

## सोलहवाँ स्थान—निषद्या

५६-५९ गृहस्थ के घर में बैठने से होनेवाले दोष, उसका निषेध और अपवाद

## सत्रहवाँ स्थान—स्नान

६०-६२ स्नान से उत्पन्न दोष और उसका निषेध

६३ गात्रोद्वर्तन का निषेध

## अठारहवाँ स्थान—विभूषावर्जन

६४-६६ विभूषा का निषेध और उसके कारण

६७-६८ उपसंहार

आचारनिष्ठ धर्मण की गति

## सप्तम वाक्य शुद्धि अध्ययन (भाषा-विवेक)

१ भाषा के चार प्रकार, दो के प्रयोग का विधान और दो के प्रयोग का निषेध

२ अव्यक्तव्य सत्य, मत्यासत्य, मृषा और अनाचीर्ण व्यवहार भाषा बोलने का निषेध

३ अनवद्य आदि विशेषणयुक्त व्यवहार और सत्य भाषा बोलने का विधान

४ सन्देह में डालने, वाली भाषा या भ्रामक भाषा के प्रयोग का निषेध

५ सत्यामृषाभाषा को मत्य कहने का निषेध

- ६७ निम्नलिखित होना सन्धि ही उभयक विषय निश्चयात्मक भाषा में बोलने का निषेध
- ८ अज्ञान विषय को निश्चयात्मक भाषा में बोलने का निषेध
- ९ दक्षिण भाषा का प्रतिषेध
- १० निश्चित भाषा बोलने का विधान
- ११ १२ परस्पर और हिमात्मक सत्यभाषा का निषेध
- १४ सुन्दर और अपमानजनक सम्बोधन का निषेध
- १५ पारिवारिक सम्बन्ध—सूचक शब्दों में स्त्रियों को सम्बोधित करने का निषेध
- १६ गौरव वाचक या चाटुना—सूचक शब्दों से स्त्रियों को सम्बोधित करने का निषेध
- १७ नाम और गोत्र द्वारा स्त्रियों को सम्बोधित करने का विधान
- १८ पारिवारिक सम्बन्ध—सूचक शब्दों से पुरुषों का सम्बोधित करने का निषेध
- १९ गौरव-वाचक या चाटुना—सूचक शब्दों से पुरुषों को सम्बोधित करने का निषेध
- २० नाम और गोत्र द्वारा पुरुषों को सम्बोधित करने का विधान
- २१ स्त्री या पुरुष का सम्बन्ध जानकर तन्वय-विन जातिवाचक शब्दों द्वारा निर्देश करने का विधान
- २२ अधीनकार और उदात्तकर वचन द्वारा सम्बोधित करने का निषेध
- २३ पारिवारिक अवस्थाओं के निर्देशन के लक्षणवाचक शब्दों का प्रयोग का विधान
- २४ २५ गांधी और बौद्ध के बारे में बोलने का विवेक
- २६ २७ दण्ड और दण्डाभ्यासों के बारे में बोलने का विवेक
- २४ ३५ अधीन (अनाथ) के बारे में बोलने का विवेक
- २६ ३६ मन्त्रि (जीमन्तवार) के बारे में बोलने का विवेक

- ४०-४२ सावद्य प्रवृत्ति-के सम्बन्ध में बोलने का विवेक
- ४३ विषय आदि के सम्बन्ध में वस्तुओं के उत्कर्ष सूचक शब्दों के प्रयोग का निषेध
- ४४ चिन्तनपूर्वक भाषा बोलने का उपदेश
- ४५-४६ लेने देने की परामर्शदात्री भाषा के प्रयोग का निषेध
- ४७ अमंयति को गमनागमन आदि प्रवृत्तियों का आदेश देने वाली भाषा के प्रयोग का निषेध
- ४८ अमाद्यु को साधु कहने का निषेध
- ४९ गुण सम्पन्न संयति को ही साधु कहने का विधान
- ५० किसी की जय-पराजय के बारे में अभिलाषात्मक भाषा बोलने का निषेध
- ५१ पवन आदि होने या न होने के बारे में अभिलाषात्मक भाषा बोलने का निषेध
- ५२-५३ मेघ, आकाश और राजा के बारे में बोलने का विवेक
- ५४ सावधानुमोदनी आदि विशेषणयुक्त भाषा बोलने का निषेध
- ५५-५६ भाषा विषयक विधि निषेध
- ५७ परीक्ष्यभाषी और उससे प्राप्त होनेवाले फल का निरूपण
- अष्टम् आचार-प्रणिधि अध्ययन**  
(आचार का प्रणिधान)
- १ आचार-प्रणिधि के प्ररूपण की प्रतिज्ञा.
- २ जीव के भेदों का निरूपण
- ३-१२ पञ्जीवनिकाय की यतना-विधि का निरूपण.
- १३-१६ आठ सूक्ष्म-स्थानों का निरूपण और उनकी 'यतना का उपदेश
- १७-१८ प्रतिलेखन और प्रतिष्ठापन का विवेक.
- १९ गृहस्थ के घर में प्रविष्ट होने के बाद के कर्तव्य का उपदेश.



- २० २१ दृष्ट और श्रुत के प्रयोग का विवेक और गृह्ययोग—गृह्य की धरेलु प्रवृत्तियों में भाग लेने का निषेध
- २२ गृह्य की भिन्ना की सरसता नीरमता तथा प्राप्ति और अप्राप्ति के निर्देश करने का निषेध
- २३ भोजनगृही और अप्राप्त भोजन का निषेध
- २४ स्नान-पान के साग्रह का निषेध
- २५ रुद्रवृत्ति आदि विनोपणयुक्त मुनि के लिये क्रोध न करने का उपदेश
- २६ प्रिय शब्दों में राग न करने और कर्कश शब्दों में सन्ने का उपदेश
- २७ शारीरिक कष्ट सहने का उपदेश और उसका परिणाम दर्शन
- २८ रात्रि भोजन परिहार का उपदेश
- २९ अल्प काम में शांत रहने का उपदेश
- ३० पर तिरस्कार और आत्मोत्क्रय न करने का उपदेश
- ३१ वतमान पापके मन्त्रण और उमकी पुनरावृत्ति न करने का उपदेश
- ३२ अनाचार को न छिपाने का उपदेश
- ३३ आचार्य वचन के प्रति शिष्य का कृतव्य
- ३४ जीवन की क्षणभङ्गता और भोग निवृत्ति का उपदेश
- ३५ धर्माचरण की सत्पत्ता शक्ति और स्वास्थ्य मध्य न दशा में धर्माचरण का उपदेश
- कथाय
- ३६ कथाय के प्रकार और उनके त्याग का उपदेश
- ३७ कथाय का अर्थ
- ३८ कथाय विजय के उपाय
- ४० विनय, आचार और इन्द्रिय सयम में प्रवृत्त रहने का उपदेश

- ४१ निद्रा आदि दोषों को वर्जने और स्वाध्याय में रत रहने का उपदेश.
- ४२ अनुत्तर अर्थ की उपलब्धि का मार्ग.
- ४३ बहुश्रुत की पर्युपासना का उपदेश.
- ४४-४५ गुरु के समीप बैठने की विधि.
- ४६-४८ वाणी का विवेक.
- ४९ वाणी की स्खलना होने पर उपहास करने का निषेध.
- ५० गृहस्थ को नक्षत्र आदि का फल बताने का निषेध.
- ५१ उपाश्रय की उपयुक्तता का निरूपण,  
ब्रह्मचर्य को साधना और उसके साधन.
- ५२ एकान्त स्थान का विधान, स्त्री-कथा और गृहस्थ के साथ परिचय का निषेध, साधु के साथ परिचय का उपदेश.
- ५३ ब्रह्मचारी के लिये स्त्री की भयोत्पादकता.
- ५४ दृष्टि-संयम का उपदेश.
- ५५ स्त्री मात्र से वचने का उपदेश.
- ५६ आत्म-गवेपित और उसके घातक तत्त्व.
- ५७ कामगगवर्धक अंगोपांग देखने का निषेध.
- ५८-५९ पुद्गल-परिणाम की अनित्यता दर्शनपूर्वक उसमें आसक्त न होने का उपदेश.
- ६० निष्कमण-कालीन श्रद्धा के निर्वाह का उपदेश.
- ६१ तपस्वी, संयमी, और स्वाध्यायी के सामर्थ्य का निरूपण
- ६२ पुराकृत-मल के विशोध का उपाय.
- ६३ आचार-प्रणिधि के फल का प्रदर्शन और उपसंहार.
- नवम विनय-समाधि अध्ययन  
(प्रथम उद्देशक) :  
(विनय से होनेवाला मानसिक स्वास्थ्य.)
- १ आचार-शिक्षा के बाधक तत्त्व और-उनसे ग्रस्त श्रमण की दशा का निरूपण.

- २४ अल्प प्रज्ञ वयस्क या अल्पधुन की अवहेलना का फल  
 ५ १० आचार्य की प्रेम नता और अवहेलना का फल उनकी अवहेलना की भयङ्करता का उपमापूर्वक निरूपण और उनको प्रसन्न रखने का उपदेश  
 ११ अन्त ज्ञानी का भी आचार्य की उपासना करने का उपदेश  
 १२ धर्मपद शिक्षक गुरु के प्रति विनय कर्म का उपदेश  
 १३ विशोधि क स्थान और अनुशासन के प्रति पूजा का भाव  
 १४ १५ आचार्य का गरिमा और भिक्षु परिषद में आचार्य का स्थान  
 १६ आचार्य की आराधना का उपदेश  
 १७ आचार्य की आराधना का फल

### नवम समाधि अध्ययन

(द्वितीय उद्देशक)

(अविनीत सुविनीत की आपदा सम्पदा)

- १ २ गुरु के उन्माहरण पूर्वक धर्म के मूल और परम का निर्धारण  
 ३ अविनीत आमा का सप्तार भ्रमण  
 ४ अनुशासन के प्रति कोप और सज्जनित अहित  
 ५ ११ अविनीत और सुविनीत की अपत्ता और सम्पत्ता का तुलनात्मक निरूपण  
 १२ शिक्षा प्रवृद्धि का हेतु आज्ञानुवर्तिता  
 १३ गृहस्थ के शिल्पकला सम्बन्धी अध्ययन और नियम का उदाहरण  
 १४ गिल्पाचार्य कृत वाचना का महत्त्व  
 १५ मातंग के उपरान्त भी गुरु का सत्कार आदि की प्रवृत्ति का निरूपण  
 १६ धर्माचार्य के प्रति आज्ञानुवर्तिता की महत्त्वता का निरूपण  
 १७ गुरु के प्रति नम्र व्यवहार की विधि  
 १८ अविधिपूर्वक स्पर्ण होने पर क्षमा वाचना की विधि,

- १६ अविनीत शिष्य की मनोवृत्ति का निरूपण.
- २० विनीत की मूक्षम-दृष्टि और विनय पद्धति का निरूपण.
- २१ शिक्षा का अधिकारी.
- २२ अविनीत के लिये मोक्ष की असंभवता का निरूपण.
- २३ विनय-कोविद के लिये मोक्ष की सुलभता का प्रतिपादन.

### नवम विनय-समाधि अध्ययन

(तृतीय उद्देशक) : पूज्य कौन ? पूज्य के लक्षण और उसकी अर्हता का उपदेश.

- १ आचार्य की भेदा के प्रति जागरूकता और अभिप्राय की आराधना.
- २ आचार के लिए विनय का प्रयोग, आदेश का पालन और आशातना का वर्जन.
- ३ रात्रिकों के प्रति विनय का प्रयोग, गुणाधिक्य के प्रति नम्रता, वन्दनशीलता और आज्ञानुवर्तिता.
- ४ भिक्षा-विशुद्धि और लाभ-अलाभ में समभाव.
- ५ सतोष-रमण.
- ६ वचनरूपी कांटों को सहने की क्षमता.
- ७ वचनरूपी कांटों की सुदुस्सहता का प्रतिपादन.
- ८ दौर्मनस्य का हेतु मिलने पर भी सौमनस्य को बनाए रखना.
- ९ सदोष भाषा का परित्याग.
- १० लोलुपता आदि का परित्याग.
- ११ आत्म निरीक्षण, मध्यस्थता.
- १२ स्तब्धता और क्रोध परित्याग.
- १३ पूज्य-पूजन, जितेन्द्रियता और सत्य-रतता.
- १४ आचार-निष्णातता
- १५ गुरु की परिचर्या और उसका फल.

विनय-समाधि अध्ययन

चतुर्थ उद्देशक

- १ ३ समाधि के प्रकार
- ४ विनय समाधि के चार प्रकार
- ५ ध्यान—
- ६ तप—
- ७ आचार

पाषा

६ ७ समाधि चतुष्टय की आराधना और उसका फल

सभिक्षु (भिक्षु कौन ? भिक्षु के लक्षण और उसकी अहता का उपदेश)

- १ चित्त समाधि स्त्री मुक्तता और वात भोग का अनासेवन
- २ ४ जीव हिंसा सचित्त व औद्गुणिक आहार और पचन-पाचन का परित्याग
- ५ अहंता आत्मोपम्यवृद्धि महाग्रन-स्पृश और आश्रय का सदरण
- ६ कषाय त्याग ध्रुव-योगिता अविचलता और गृह्णियोग का परिव्रजन
- ७ सम्यग दृष्टि अमूर्च्छता तपस्विता और प्रवृत्ति गोथन
- ८ मनिधि व्रजन
- ९ साधनिक निमग्नपुत्रक भोजन और भाजनोत्तर स्वाध्याय रतता
- १० कन्दहृ कारक कषा का व्रजन प्रशान्त भाव आदि
- ११ सुख दुःख में समभाव
- १२ प्रतिमा स्वीकार उपमगकाल में निभयना और शरीर की अनाशक्ति
- १३ देह विस्रजन सहिष्णुता और अनिदानता
- १४ परीपह विजय और धामन्य रतता

- १५ संयम, अध्यात्म-रतता और मूत्रार्थ-विज्ञान
- १६ अमूर्च्छा, अज्ञान-भिधा, त्रय-विषय वर्जन और निःसंगता
- १७ वाणी का संयम और आत्मोत्कर्ष का त्याग
- १८ अलोन्मत्ता, उच्छ्वारिता और ऋद्धि आदि का त्याग
- १९ मद-वर्जन
- २० नैर्घोष की घोषणा और कुशीललिग का वर्जन
- २१ भिक्षु की गति का निरूपण

### प्रथमा रतिवाक्या चूलिका

(संयम में अस्थिर होने पर पुनः स्थिरीकरण का उपदेश)

- १ संयम में पुनः स्थिरीकरण के १८ स्थानों के अवलोकन का उपदेश और उनका निरूपण
  - २-८ भोग के लिये संयम की छोड़नेवाले की भविष्य की अनभिज्ञता और पश्चात्तापपूर्ण मनोवृत्ति का उपमापूर्वक निरूपण
  - ९ श्रमण-पर्याय की स्वर्गीयता और नारकीयता का सकारण निरूपण
  - १० व्यक्ति-भेद से श्रमण-पर्याय में सुख-दुःख का निरूपण और श्रमण-पर्याय में रमण करने का उपदेश
  - ११-१२ संयम-भ्रष्ट श्रमण के होनेवाले ऐहिक और पारलौकिक दोषों का निरूपण
  - १३ संयम-भ्रष्ट की भोगासक्ति और उसके फल का निरूपण
  - १४-१५ संयम में मन की स्थिर करने का चिन्तन-सूत्र
  - १६ इन्द्रिय द्वारा अपराजेय मानसिक संकल्प का निरूपण
  - १७-१८ विषय का उपसंहार
- द्वितीया विविक्त चर्या चूलिका  
(विविक्त चर्या का उपदेश)
- १ चूलिका के प्रवचन की प्रतिज्ञा और उसका उद्देश्य

- २ अनुशोत गमन को बहुमताभिमत दिशावर मुमुग्ध के लिये प्रति-  
स्नात गमन का उपदेश
- ३ अनुशोत और प्रतिस्नात क अग्रिकारी, सप्तर और मुक्ति की  
परिभाषा
- ४ साधु के लिये चर्या, गुण और निवृत्ता की आवश्यकता का  
निरूपण
- ५ अनिकतवाम आदि चर्या का निरूपण
- ६ आक्षीण और अपमान सलडि वजन आदि भिक्षा विगुडि के  
अर्गों का निरूपण व उपदेश
- ७ प्रमण के लिये आहार विगुडि और कायोत्सर्ग आदि का उपदेश
- ८ स्वान आदि के प्रतिवध व गर्व आदि म ममत्व न करने का  
उपदेश
- ९ गुरुत्व की वैशाब्दत्व आदि करने का निषेध और अनभिन्नपृ  
मुनिगण के साथ रहने का विधान
- १० विशिष्ट सहनन पुक्त और धूल-मम्पन्न मुनि के निग एकाकी  
विहार का विधान
- ११ चानुर्मास और भागवल्प के बाद पुन चानुर्माण और भागवल्प  
करने का व्यवधान काल, सूत्र और उसके धर्म व अनुसार चर्या  
करने का विधान
- १२ १३ आरम निरीक्षण का समय चिन्तन सूत्र और परिमाण
- १४ दुःप्रवृत्ति होने ही सम्हृत जाने का उपदेश
- १५ प्रतिमुद जीवी जागरूक भाव से जीनेवाले की परिभाषा
- १६ आत्म रक्षा का उपदेश और अरक्षित तथा मुरक्षित आत्मा की  
गति का निरूपण

श्री जैन २३० तेरापन्नी महात्मना कलकला द्वारा प्रकाशित  
दशवैकालिक द्वितीय भाग से यह सूची साभार उद्धृत की है

णमो लोमुतुतडणं

## सर्वनुडुडुगडडुतुतराधुडुडुन सुतुतुर

---

अधुडुडुन	३६
उडुडुलवुध डुतुल डुडुठ	२१०० शुलुकु डुडुडुण
डुडु सुतुतुर	१६५६
गधु सुतुतुर	८६

---



१	विनयधनु	४८	२	परीपद	४९ सूत्र ५
३	आनुरागीय	२०	४	अमस्कृत	१३
५	अकाम मरण	३२	६	पुस्तक निर्प्रथीय	१० सूत्र १
७	शौरभीय	३०	८	कापिलिक	२०
९	नमि प्रमथ्या	१२	१०	द्रुम पत्रक	३७
११	बहुधुत पूज्य	३२	१२	हरिकरीय	४०
१३	चित्तमभूनीय	३५	१४	इयुकारीय	५३
१५	म भिक्षु	१५	१६	महासूर्य ममाधि	१० सूत्र १०
१७	पापधर्मणाय	२१	१८	मदतीय	५४
१९	मृगापुत्रीय	६३	२०	महा निप्रथीय	६०
२१	समुद्रपार्लीय	२४	२२	रहनेमीय	५१
२३	केशी गौतमीय	८६	२४	ममिति	२७
२५	यज्ञीय	४५	२६	समाचारी	५३
२७	म्वलु कीय	१७	२८	मोक्षमार्ग गति	३६
२९	सम्यक्त्व पराक्रम १ सूत्र ७४		३०	नद मार्ग	३७
३१	चरण विधि	२१	३२	प्रमाद स्थान	१११
३३	कर्म प्रकृति	२५	३४	शेरथा वर्णन	६१
३५	अणुगार	२१	३६	आवाचीचविभवित	२३६

## उत्तराध्ययन विषय-सूची

### प्रथम विनय अध्ययन

- १ विनय उस्थानिका
- २ विनीत के लक्षण
- ३ अविनीत के लक्षण
- ४ क- दूःशील को कृमीकर्णी कुतिया की उपमा  
ख- बहुभाषी का सर्वत्र अनादर
- ५ दूःशील को ग्राम दूकर की उपमा
- ६ क- आत्महित के लिए विनय आवश्यक है  
ख- विनय से शील की प्राप्ति
- ७ बुद्ध पुत्र का सर्वत्र आदर
- ८ क- सार्थक अध्ययन के लिये प्रेरणा  
ख- निरर्थक अध्ययन का निषेध
- ९ क- कठोर अनुशासन के समय क्षमा रमना  
ख- बाल दुश्चरित्र की संगनिका निषेध
- १० क- क्रोध और बहुभाषन का निषेध  
ख- यथा समय स्वाध्याय तथा ध्यान करने का विधान
- ११ दोष छिपाने का निषेध, गुरुजनों के समक्ष प्रगट करने का विधान
- १२ क- अविनयी को अड़ियल टट्टू की उपमा  
ख- विनयी को अश्व की उपमा  
ग- गुरुजनों के अभिप्रायानुसार आचरण करने का आवेश
- १३ क- अविनयी मृदु स्वभाव वाले गुरुजनों को कठोर बना देता है  
ख- विनयी कठोर स्वभाव वाले गुरुजनों को मृदु बना लेता है
- १४ क- अकारण बोलने का और मिथ्या बोलने का निषेध

- ग गान करने का तथा नि ग मृति में समाप्त रहने का विधान  
 १७ आत्म दमन निषेह का उपदेश  
 १६ दमन की परिभाषा  
 १७ प्रतिकूल आचरण का निषेध  
 १८ १९ गुरुजनों के समीप बठने के विधि  
 २० २२ गुरुजनों के बुलाने पर गीघ्र उपस्थित होने का विधान  
 २० क विनयी का सूत्रार्थ की प्राप्ति  
 ग गुरुजनों के पूछने पर यथाथ कहने का विधान  
 २० २१ न पा विवेक  
 २६ अकस्मी स्वा के समीप बठने का तथा उनके साथ आलाप  
 सलाप का निषेध  
 २७ २९ गुरुजनों के कठोर अनुशासन से स्वहित  
 ३० बठने का विवेक  
 ३१ ३६ श्लेषणा घृणयणा और आसयणा मन्त्र की विवेक  
 २७ क विनया को अन्ते अक्ष की और अविनयी को अङ्घ्रियन दृष्टि  
 की उपमा  
 ग गुरुजनों की विनयी से सुग अविनयी से कु म  
 ३८ ४० गुरुजनों के कठोर अनुशासन से स्वहित  
 ४१ उपदेश—विनयी की सप्रथ प्रणसा  
 ४६ विनयी का मातृ पुत्र का नाम  
 ४७ ४८ विनयी की उभयनाक भ सुग

### द्वितीय परिषद् अष्टम्ययन

- १ ३ क भ० महावीर द्वारा परिषद् का उपदेश  
 ग चावीम परिषद् के नाम  
 १ परिषद् का वषण मुग्धने के विधि प्ररणा  
 २ ३ (१) सुधा परिषद् का वषण  
 ४ ५ (२) विद्या परिषद् का

६-७	(३) शीत	परिपह	का	वर्णन
८-९	(४) उष्ण	"	"	"
१०-११	(५) दश मशक	"	"	"
१२-१३	(६) अचैन	"	"	"
१४-१५	(७) अरति	"	"	"
१६-१७	(८) स्त्री	"	"	"
१८-१९	(९) चर्या	"	"	"
२०-२१ (१०)	निपद्या	"	"	"
२२-२३ (११)	शय्या	"	"	"
२४-२५ (१२)	आत्रोज	"	"	"
२६-२७ (१३)	वध	"	"	"
२८-२९ (१४)	याचना	"	"	"
३०-३१ (१५)	अताभ	"	"	"
३२-३३ (१६)	रोग	"	"	"
३४-३५ (१७)	तृण स्पर्श	"	"	"
३६-३७ (१८)	जल्ल-मल	"	"	"
३८-३९ (१९)	सत्कार	"	"	"
४०-४१ (२०)	प्रज्ञा	"	"	"
४२-४३ (२१)	अज्ञान	"	"	"
४४-४५ (२२)	दर्शन	"	"	"

उपसंहार—परिपह सहने के लिये प्रेरण

### तृतीय चातुरङ्गीय अध्ययन

- १ चार अंगों की दुर्लभता
- २-७ (१) मनुष्य भव की दुर्लभता
- ८ (२) श्रुति—धर्म श्रवण की दुर्लभता
- ९ (३) श्रद्धा की दुर्लभता

- १० (४) चौर्य आवरण की दुनभत्ता  
 ११ चार अंगों की प्राप्ति का पार लौकिक पद  
 १२ क " इह लौकिक ,  
 ख घृण मित्र अग्नि का उदाहरण  
 १३ कम बंध क कारणों को जानने का पद  
 १४ १५ चार अंगों की प्राप्ति का वैकल्पिक पद-देव गति  
 १६ १६ " मानव भव  
 २० उपसंहार—चार अंगों की प्राप्ति से निरूप पद

### चतुर्थ प्रमादाप्रमाद अध्ययन<sup>१</sup>

- १ अप्रमाद का उपदेश  
 २ ५ क घनाशन म पाप कर्मों का बंध  
 ख चार का उदाहरण  
 ग दीरक का उदाहरण  
 ६ ७ क अप्रमाद का उपदेश  
 ख भारद्वाज पन्था का उदाहरण  
 ८ क स्वच्छन्ता का निषेध  
 ख अप्रमत्त का गिभिन एव कवचवारी अश्व की उपमा  
 ९ प्रमत्त का अन्तिम समय म दुःखी होता  
 १० अप्रमाद का उपदेश  
 ११ १३ राम द्वेष एव कथार की निवृत्ति के लिये उपदेश  
 समभाव की साधना के लिये उपदेश  
 पंचम अकाम-भरण अध्ययन  
 १ भरण विषयक श्रवण  
 २ भरण के दो भेद

१ इस अध्ययन की दूसरी नाम अक्षररुक्म अध्ययन है

- ३ क- देहधारियों का बालमरण अनेक वार  
ख- " उत्कृष्ट पण्डित मरण एक वार
- ४ बाल-व्यक्ति क्रूर कर्म करनेवाला होता है
- ५-६ बाल-व्यक्ति का पुनर्जन्म में अविश्वास
- ७ बाल-व्यक्ति की काम-भोगों में आसक्ति
- ८ बाल-व्यक्ति द्वारा त्रस-स्यावर जीवों की अर्थ-अनर्थ हिंसा
- ९ क- बाल-व्यक्ति के लक्षण  
ख- बाल-व्यक्ति मद्यमास के आहार को श्रेष्ठ मानता है
- १० क- बाल-व्यक्ति की आसक्ति  
ख- शिशुनाग—अलसिया का उदाहरण
- ११ बाल-व्यक्ति की तरुण अवस्था में परलोक गति
- १२ बाल-व्यक्ति की नरक गति
- १३ बाल-व्यक्ति को अन्तिम समय में पश्चात्ताप
- १४-१५ विषम पथगामी शाकटिक का उदाहरण
- १६ क- बाल-व्यक्ति की अकाम-मृत्यु  
ख- धूतकार का उदाहरण
- १७ क- बाल-व्यक्तियों के अकाम-मरण का वर्णन समाप्त  
ख- पण्डितों के सकाम-मरण का वर्णन प्रारम्भ
- १८ सयत व्यक्तियों का पण्डित मरण
- १९ सभी भिक्षुओं का और सभी गृहस्थों का पण्डित मरण नहीं होता
- २० भिक्षु और गृहस्थ के संयमी जीवन की तुलना
- २१ भिक्षुओं की भी दुर्गति
- २२ सुव्रत गृहस्थ की सुगति-देवगति
- २३-२४ गृहस्थ का ज्ञान पण्डित मरण और सुगति
- २५ संवृत भिक्षु की दो गति
- २६-२७ दिव्य जीवन का वर्णन
- २८ भिक्षु और गृहस्थ की देवगति

- २६ शीलवान बहुधुन अतिम समय में उद्विग्न नहीं होते
- ३० ३२ पण्डितों का तीन सकाम मरणों में से एक सकाम मरण  
घट्ट क्षुल्लक निग्रन्थ अध्ययन<sup>१</sup>
- १ अज्ञानियों का दुःखमय जीवन
- २ मैत्री भावना का उपदेश
- ३-४ अशरण भावना का उपदेश
- ५ त्याग का फल [वैकल्पिक फल]
- ६ अशरण भावना
- ७ हिंसा निषेध
- ८ अदत्तादान का निषेध
- ९ १० अविद्यावाद से मुक्ति की भ्रातृ मायता
- ११ केवल भाषा ज्ञान या मात्रविद्या से मुक्ति नहीं
- १२ आसक्ति से दुःख
- १३ दीक्षा ग्रहण करने के लिए उपदेश
- १४ १५ केवल व्रतमय के लिये निर्दोष आहारादि से देह धारण करें
- १६ क अत्यन्त सग्रह का भी निषेध
- १७ कभी का उदाहरण
- १७ गवेषणा का उपदेश
- १८ उपसंहार—ज्ञान पुत्र वैशालीक भ० महावीर का यह उपदेश  
सप्तम औरभ्रीय अध्ययन
- १ ३ महामाता के निमित्त पात्र जागे चाये मेघ(मेघे)का उदाहरण
- ४ ६ मेघे के समान बाल व्यक्ति की मृत्यु
- १० क कार्द्विणी का उदाहरण
- १० ग चात्र का उदाहरण
- ११-१३ देवनाग्रा और मनुष्यों के नाम भोगों की तुलना

१ दस अध्ययन का दूसरा नाम "पुरण विद्या" है

- १४-१५ तीन गणियों का उदाहरण
- १६ चार गणियों की लान-दानि ने तुलना
- १७-१८ दान व्यक्ति की दो गति
- १९ दान और पण्डित की तुलना का उपदेश
- २० सुप्रत ली—मनुष्य गति
- २१-२२ भिक्षु और धर्म का तीन दण्डों के उदाहरण का चित्रण करने के निम्ने-उपदेश
- २३ क- मनुष्य का उदाहरण  
ख- देव और मानव भोगों की तुलना
- २४ योग धर्म स्थिति का निम्नन
- २५-२७ काम भोगों ने अनिष्ट और निष्ट की गति
- २८-३० उपसंहार-क- दान और पण्डित, धर्म और अधर्म की तुलना  
ख- दान और पण्डित की गति
- अष्टम कापिलीय अध्ययन
- १ दुर्गति-निषेध के उपाय की विज्ञाना
- २ भिक्षु का लक्षण
- ३ समाधान के निम्ने मुनि का कथन
- ४ भिक्षु का लक्षण
- ५ क- दान व्यक्ति की धानवित  
ख- नदिका का उदाहरण
- ६ क- काम-भोगों का त्याग अति कठिन  
ख- सुप्रत गृहस्थ और माधु का भवनागर-त्तरण  
ग- सांघात्रिक का उदाहरण
- ७ दान-व्यक्ति की दुर्गति
- ८-१० क- प्राणवय निषेध  
ख- पानी के प्रवाह का उदाहरण
- ११ एषया समिति



- १२ घटर्षण
- १३ घुर्षण [लवन सामुद्रिक, स्वप्न और अथ विद्या के प्रयोग का निषेध]
- १४ १५ क विद्या प्रयोग करने वाला की अमुरी में उत्पत्ति  
ख भव भ्रमण  
ग बोधी की दुःखता
- १६ १७ रोमी की दगा
- १८ १९ स्त्री की आगविन का निषेध
- २० उपमहर्षि-कपिल का आश्रयन धर्म आराधना की उभय लोका आराधना  
नवम नमि प्रद्वज्या अध्ययन
- १ नमि राजा का जातिस्मरण
- २ पुत्र को राज्य भार देकर नमि राजा का अभिनिष्क्रमण
- ५ मिथिला में कोनाह्व
- ३ ४ नमि राजा का गृहत्याग
- ६ ७ मिथिला की गंगा पर ध्यान देने के लिये ब्राह्मण रूप में शकट की प्राथना
- ८ १० नमि राजा का उत्तर
- ११ १२ विरहान्त से दग्ग अन्न पुर की ओर ध्यान देने के लिये इन्द्र का निवेदन
- १३ १७ नमि राजा का उत्तर
- १८ २० क नगर की सुरक्षा के लिये प्राथना  
ख नमि राजा का उत्तर
- ३१ राजाओं के दमन के लिये इन्द्र की प्राथना
- ३२ ३६ नमि राजा का उत्तर
- ३७ ३८ यज्ञ और ब्रह्म भोज करने के लिये इन्द्र की प्राथना
- ३९ नमि राजा का उत्तर

- ४० गृहस्थाश्रम में गृहस्थधर्म की आराधना करते रहने के लिये प्रार्थना
- ४१ नमि राजा का उत्तर
- ४२-४३ गृहस्थ जीवन में ही धर्म आराधना करने के लिए प्रार्थना
- ४४-४५ नमि राजा का उत्तर
- ४६-४७ कौश की श्रद्धि के लिये प्रार्थना
- ४८-५० नमि राजा का उत्तर
- ५१ प्राप्त भोगों का परित्याग न करने के लिये प्रार्थना
- ५२-५४ श्रोत्रादि कपायवालों की दुर्गति
- ५५-६१ ब्राह्मण रूप त्याग कर इन्द्र ने नमि राजा से क्षमा याचना तथा प्रमत्ता, नमि राजा की प्रमत्तया
- ६२ उपसंहार-नमि राजा के समान युद्ध पुरुषों की भोगों से निवृत्ति
- दशम द्रुम-पत्रक अध्ययन
- १ मनुष्य जीवन को द्रुम-पत्र की उपमा
- २ " को कुशाग्र चिन्दु की उपमा
- ३ पुराकृत कर्मरज को दूर करने के लिये उपदेश
- ४ मनुष्य भव की दुर्लभता
- ५-१४ पृथ्वीकाय-यावत्-नरक पर्यंत भव ग्रहण
- १५ शुभाशुभ कर्मों से भवभ्रमण
- १६ आर्य जीवन दुर्लभ
- १७ परिपूर्ण इन्द्रियां दुर्लभ
- १८ धर्म श्रवण दुर्लभ
- १९ श्रद्धा दुर्लभ
- २० आचरण दुर्लभ
- २१-२६ श्रोत्रेन्द्रियादि सर्व बलों की हानि
- २७

२८	क-	मोह विजय का उपदेश	
	ख	गारदीय कमल का उदाहरण	
२९ ३०		त्वत्त भोगो को गुन न ग्रहण करने का उपदेश	
३१		अशमाद का उपदेश	
३२		मार्ग का उदाहरण	
३३		भार वाहक का उदाहरण	
३४		समुद्र तट का उदाहरण	
३५		मिद्धपद की प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील रहने का उपदेश	
३६		सदुपदेश देन का विधान	
३७		उपसंहार राग-देव का क्षय करने के लिये उपदेश	
		ग्यारह वाँ बहृभुत पूज्य अध्यायन	
१		अणवार आचार-कथन प्रतिज्ञा	
२		अविनीत के लक्षण	
३		जिज्ञासु के पाँच अवगुण	
४ ५		जिज्ञासु के आठ गुण	
६ ८		अविनीत के लक्षण	
१० १३		सुविनीत के लक्षण	
१४		योग्य जिज्ञासु के लक्षण	
१५		बहृभुत की दश पय की	उपमा
१६		" श्रेष्ठ अक्ष की	"
१७		" अस्वागोही वीर की	"
१८		" गजराज की	"
१९		" शृषभराज की	"
२०		" सिंह की	"
२१		" बाणुदेव की	"
२२		" चक्रवर्ती की	"

२३	बहुश्रुत को इन्द्र की उपमा
२४	" दिवाकर की "
२५	" चन्द्र की "
२६	" कोण्डागार की "
२७	" मुद्रशान जंबू की "
२८	" शीता नदी की "
२९	" मेरु की "
३०	" स्वयम्भूरमण-भमुद्र की "

३१	क- बहुश्रुत को समुद्र की उपमा
	ख- बहुश्रुत को उत्तम गति प्राप्ति
३२	उपसंहार—श्रुत के अध्ययन ने शिवपद

### वारह वाँ हरिकेशी अध्ययन

१	श्वपाक कुलोत्पन्न हरिकेशी श्रमण
२-३	हरिकेशी का भिक्षार्थ ब्रह्म-यज्ञ में गमन
४-८	ब्राह्मणों द्वारा हरिकेशी, का उपहाम और अनादर
१०	श्रमणचर्या के सम्बन्ध में तिन्दुक यक्ष का कथन
११	ब्राह्मणों का भिक्षा न देने का निश्चय
१२-१३	तिन्दुक यक्ष द्वारा पुण्यक्षेत्र का प्रतिपादन
१४-१५	तिन्दुक यक्ष द्वारा पापक्षेत्र का प्रतिपादन
१६	ब्राह्मणों द्वारा भिक्षा न देने के निश्चय का दुहराना
१७	भिक्षा न देने पर यज्ञ की अमफलता के सम्बन्ध में तिन्दुक यक्ष का उद्धोष
१८-१९	ब्रह्म-कुमारों द्वारा मुनिपर प्रहार
२०-२३	क्रुद्ध ब्रह्म कुमारों को कौशल राज कन्या भद्रा का निवेदन
२४-२५	तिन्दुक यक्ष द्वारा ब्रह्म कुमारों की दुर्दशा
२६-२८	भद्रा राजकन्या द्वारा मुनि की तेजोलविष का परिचय

- २६-३१ यज्ञ प्रमुख की क्षमा याचना  
 ३२ मुनि द्वारा तिम्रुक यज्ञ का परिवचय  
 ३३ यज्ञ प्रमुख द्वारा पुन क्षमा याचना  
 ३४-३५ यज्ञ प्रमुख का हरिकेशी श्रमण को भिक्षादान  
 ३६ दान के समय देवी द्वारा दिव्य वर्षा  
 ३७ दिव्य वर्षा से शाहजनों को आश्चर्य  
 ३८-३९ भाव शुद्धि के बिना ब्राह्मण शुद्धि की विफलता के सम्बन्ध में हरिकेशी श्रमण के विचार  
 ४० आत्म शुद्धि एवं श्रेष्ठ यज्ञ के सम्बन्ध में यज्ञ प्रमुख की जिज्ञासा  
 ४१-४७ हरिकेशी द्वारा अघ्यात्म स्नान एवं अघ्यात्म यज्ञ का प्रतिपादन

### तेरह वाँ चित्तसभूति अध्ययन

सम्भूत ने हरिद्वारापुर में निदान किया, नलिनी शुद्ध विमान में उत्पन्न हुआ ब्रह्मा से स्वयं-भर कर कम्पितपुर में चुलिनी की कुट्टी से ब्रह्मदत्त की उत्पत्ति

- १ कम्पितपुर में ब्रह्मदत्त की उत्पत्ता  
 २ क पुरिमन्तानपुर में चित्त की उत्पत्ति  
 ख चित्त का दीक्षित होना  
 ३ चित्त और ब्रह्मदत्त [सभूत] का कम्पितपुर में मिलना  
 ४-६ चित्त मुनि द्वारा पूर्व जन्म के वृत्तान्तों का वर्णन  
 ६-१४ ब्रह्मदत्त की चित्तमुनि से याचना  
 १५-२६ क चित्त मुनि का ब्रह्मदत्त को उपदेश  
 ख- शत्रु को सिंह की उपमा  
 ग अशरण भावना का उपदेश  
 २७ ३० क- ब्रह्मदत्त की भोगों में आनक्ति

ग- स्वयं को दीवट में फेंके हुए गज की उपमा देना

२१-२२ क- ब्रह्मदत्त को पुनः श्रायं कर्मों के विने प्रेरित करना

ग- विल मुनि का जाना

२४ ब्रह्मदत्त की तरफ में उन्नति

२५ विल की मृत्ति

### चौदहवां इयुकारोय अध्ययन

१-२ क- पुरोहित पुत्रों का पृथग्भव

ग- श्मशान राजा, कम्पलावती रानी, भृगु पुरोहित, जमा भार्या और दो पुत्र इन ६ का जिनोपान नामानुसरण

४-७ क- पुरोहित पुत्रों को जाति स्मरण

ग- मनार में विरश्चि

ग- माना-पिताओं में प्रब्रज्या के विने अनुमति मांगना

८-११ गृह्य के आवश्यक कृत्य पूर्ण करके प्रब्रज्या लेने का पिता का सुभाव

१२-१५ पुरोहित पुत्रों का अधिवन्ध प्रब्रज्या ग्रहण करने का दृढ नकल्प

१६ पुरोहित का पुनः पुत्रों को समझाना

१७ पौद्गलिकः मुन्य की प्राप्ति प्रब्रज्या का उद्देश्य नहीं अर्थात् आध्यात्मिक मुन्य की प्राप्ति प्रब्रज्या का उद्देश्य है

१८ पिता द्वारा आत्मा के अभाव का प्रतिपादन

१९ पुत्रों द्वारा आत्मा के अस्तित्व की निश्चि

२० अज्ञान अवस्था में की हुई भूल की पुनरावृत्ति न करने का नकल्प

२१-२५ पुत्रों द्वारा जीवन को सफल करने का निश्चय

२६ दृढ होने पर नृदीक्षा का पिता का प्रस्ताव

२७-२८ भविष्य को अनिश्चित समझकर अविलम्ब प्रव्रजित होने का निश्चय

- २६ ३० भृगु पुरोहित का जमा भाषा की समझना
- ३१ हडाबस्था में दीक्षित होने के लिये जमा भाषा का निवेदन
- ३२ दीक्षा का उद्देश्य मुक्ति है
- ३३ जमा द्वारा भिक्षुचर्या की कठिनाईया का वर्णन
- ३४ ३५ क भृगु पुरोहित का दृढ़ निश्चय  
ख भोगों को मर्न कचुक और मत्स्य आदि की उपमा
- ३६ जमा का भी दीक्षित होने का निश्चय
- ३७ ४० राम नावनी रानी का राजा को उत्प्रेषण
- ४१ ४८ क आत्मा को पत्नी की और भोगों का पित्रे की उपमा  
ख अरुण से दग्ध पृथिवी का देखकर अर्द्ध पृथिवी क प्रमुदित होने क रूपक से गग इष का स्वरूप समझना  
ग भाषा की आशिय की उपमा  
घ स्वयं को उरण की और मृत्यु को पण्ड की उपमा  
ङ वचन मुक्त गजराज के समान स्वस्थान निवास को प्राप्त करने का प्रस्ताव
- ४६ ५४ राजा आदि छद्म का दीक्षित होना  
पन्द्रह वां सभिन्नु अध्ययन  
भिन्नु के लक्षण
- १ क निदान न करना  
ख प्रशंसा न चाहना  
ग- काम भोगों की चाहना न करना  
घ अज्ञान कुन से आहारादि की दयणा करना
- २ क निरसन होकर विनचना  
ख आसक्ति न करना
- ३ आजीव और वच परीषह सहन करना
- ४ क अल्पस्य उपकरण रखना

- स- शीत-उष्ण और दंस मजाक परीपह सहना  
 ५ पूजा-प्रतीष्ठा न चाहना  
 ६ क- मोह जीतना  
 ख- स्त्री से विरजत रहना  
 ग- हँसी मजाक न करना  
 ७ आहार के लिये विद्या प्रयोग न करना  
 ८ " मन्त्रादि का प्रयोग न करना  
 ९ क्षत्रिय आदि की प्रशंसा न करना  
 १० लौकिक कामनाओं के लिये किसी का परिचय न करना  
 ११ शयनासनादि के न देने वाले पर द्वेष न करना  
 १२ ग्लान-बाल और वृद्ध श्रमण की शुद्ध आहारादि से परिचर्या  
 करना  
 १३ शीत और नीरस आहार लेना  
 १४ मधुर-सगीत और भयावह शब्दों में राग-द्वेष न करना  
 १५ विविध वादों-विचारों-से विचलित न होना  
 १६ अशिल्प जीवी आदि प्रशस्त गुणों का धारक होना

### सोलह वाँ ब्रह्मचर्य समाधि अध्ययन

- १ क- भ० महावीर द्वारा दस ब्रह्मचर्य समाधिस्थानों का प्ररूपण  
 ख- स्त्री-पशु पण्डक रहित शयनासन का सेवन करना, सेवन न करने  
 में होने वाली हानियाँ  
 २ स्त्री कथा न करना, करने से होने वाली हानियाँ  
 ३ स्त्री के साथ एक आसन पर न बैठना  
 ४ स्त्री के अगोपागो की ओर दृष्टि न डालना  
 ५ स्त्री के हास्य विलासादि का भित्ति के पीछे से भी न सुनना  
 ६ भुक्त भोगों का स्मरण न करना  
 ७ उत्तेजक पदार्थों का आहार न करना



- ८ अतिमात्रा में आहारदि का न करना  
 ९ शृंगार न करना  
 १० मनोज्ञ गन्धादि का सेवन न करना  
 ११० उक्त दम स्थाना की दम माषार्ण  
 ११ १) ब्रह्मचारी के लिये दम स्थाना का सेवन तान्त्रिक विधि के समान है  
 १४ ब्रह्मचारी के लिये सभी गका स्थाना का निषेध  
 १५ १६ ब्रह्मचर्य की महिमा  
 १७ उपमहार—ब्रह्मचर्य में विषय की प्राप्ति

### सत्तारह वा पाप श्रमण अध्ययन

- १ निर्दोष धर्म की जानकारी के भी स्वच्छ इ धूमने वाला  
 २ शयनासन में प्रसन्न, अध्ययन में विभुक्त  
 ३ अस्थि आहार और अस्थि निद्रा-न्यते वाला  
 ४ जिनसे ज्ञान प्राप्त किया उसी ही निद्रा करने वाला  
 ५ अविनयी और अभिमानी  
 ६ प्राणियों का उलीकन बीजादि वनस्पतियों का संहारक  
 ७ अपमात्रित सत्तारह आदि का उपभोगना  
 ८ अविवेक में चलने वाला  
 ९ अविधि से प्रतिवेगन करने वाला  
 १० गुरुजनो का निरस्कार करने वाला  
 ११ मायावी बहुभाषी अभिमानी लोभी विषयी लोभुष, द्वेषी  
 १२ कन्ध प्रिय  
 १३ अस्थिर चंचल  
 १४ प्रमाजन न करने वाला और अविवेक में ह्रास फैलाने वाला  
 १५ विकार बद्धक आहार करने वाला और तपश्चर्या न करने वाला  
 १६ अनियमित भोजी

- १७ स्यच्छन्द, पर दर्शन प्रशंसक, बार-बार गण बदलने वाला,  
दुराचारी
- १८ गृहस्थों के कृत्य करनेवाला, विद्योपजीवी
- १९ गर्वदा स्यजाति के गृहस्थों से भिक्षा लेने वाला और गृहस्थ के  
घर में बैठने वाला
- २० उपमंहार—पंचाश्रव नेवी श्रमणवेपी उभयलोक भ्रष्ट होता है
- २१ गर्वदोष वर्जित मुन्नत श्रमण उभयलोक का आराधक होता है
- शठारह वां संयती अध्ययन

- १-५ क- कम्पिलपुर के मंगम राजा का शिकार के निम्ने केसर उद्यान  
में आना
- ग- बाण विद्ध एक मृग का ध्यानस्य तपोधन अनगार गद्भाली  
के समीप जाकर पडना
- ६ मृग के पीछे-पीछे राजा का आना
- ७-१० क- राजा का पश्चात्ताप करना
- ग- मुनि से क्षमा याचना
- ११-१८ राजा को मुनि का उपदेश
- १९ गद्भाली के समीप राजा संजय का दीक्षित होना
- २० संजय मुनि से किमी श्रमण विशेष के कुद्ध प्रश्न
- २१ सर्व प्रथम संजय का पूर्व परिचय व अन्य प्रश्नों का उत्तर देना
- २२ त्रियावाद आदि चार वादों का सर्वथ प्रचार व प्रसार है
- २३ यह भ० महावीर ने कहा है
- २४ पापी और धर्मी की गति
- २५ मृपावादी क्रियावादियों से मैं सावधान हूँ
- २६ सर्ववादों का विवेक है और आत्मबोध है
- २७-२८ पूर्वजन्म का ज्ञान है
- २९ सम्यक् ज्ञानोपासना करता हूँ

- ३० प्रदत्त विद्या एवं गृहस्थ गोप्यी से निवृत्त हूँ
- ३१ अथ प्रदनों का उत्तर देने की क्षमता
- ३२ नियावाद की उपासना
- ३३ ५० भरत सगर, मयव सनकुमार गान्धि कुशु अर महापद्य  
हरिषेण जय दशागभन् नमि करकभू दुमु स्र नगई उपायन  
स्वेन, विजय महवत्त आदि अनेक राजाओं का पूवकाल मे  
प्रव्रजित होना
- ५१ धीर पुण्या का अप्रमत्ता विहार
- ५२ जिनवाणी के श्रवण से तीन काल मे निरना
- ५३ उपमहार—मवथा परिग्रह मुक्त की मुक्ति  
उन्नीस वाँ मृगापुत्र अध्ययन
- १ ८ क सुधीन नगर बलभद्र राजा मृगा रानी  
स मृगापुत्र को मुनि दान से पूव ज म की स्मृति
- ६ १० मृगापुत्र का माता पिताओं से प्रव्रज्या के लिये अनुमति प्राप्त  
करना
- ११ २३ मृगापुत्र द्वारा भुवन भोगों का मषाथ वणन
- २४ ४३ माता पिता द्वारा श्रमण जीवन की कठिनाइया का प्रतिपादन
- ४४ ७४ मृगापुत्र द्वारा पूव वेदित नरक वेदना का वणन
- ७५ माता पिता द्वारा श्रमण जीवन की अनुविधाओं का वणन
- ७६ ८३ मृगापुत्र द्वारा मृगचर्या का वणन
- ८४ ८७ क अनुमति प्राप्त मृगापुत्र का गृहत्याग  
स गृह का नाग कशुक की उपमा  
ग परिग्रह को पद रन (वस्त्र क लगी हुई) की उपमा
- ८८ ९५ क मृगापुत्र के सामर्थ्य जीवन का वणन  
स एक माग की मलमना और निवृत्त
- ९६ ९८ उपमहार—

क- शृगापुत्र के नगान पठित जनों की भोगों से निवृत्ति

ख- शृगापुत्र का वर्णन मुनिकर जीवन को प्रशम्न बनाना

### बीस वाँ महानिर्ग्रथीय अध्ययन

१ क- सिद्धों और समतों की नमस्कार

ख- सत्य धर्मकथा मुनने के लिये प्रेरणा

२-८ क- मगधाधिप श्रेणिक का मण्डिकुथ चैत्य में घूमने के लिये जाना

ख- चैत्य में मुनिदर्शन का होना

ग- मुनि ने श्रेणिक के कुट्ट प्रश्न

६ मुनि का अपने आपको अनाथ कहना

१०-११ मुनि के कथन ने श्रेणिक को आश्चर्य, नाथ होने के लिये निवेदन

१२-१५ क- मुनि ने श्रेणिक को अनाथ कहा

ख- अनाथ कहने से श्रेणिक को आश्चर्य, श्रेणिक ने अपना परिचय दिया

१६-३५ क- मुनि द्वारा स्वयं की अनाथता का दिग्दर्शन

ख- गृहस्थ जीवन में हुई चक्षुशूल की वेदना का वर्णन

ग- उपचारों की अमफलता

घ- अनगार प्रयत्न लेने के सकल्प से वेदना की उपशान्ति

ङ- अनगार बनने पर सनाथ होना

३६-३७ सुप्त दुःग का कर्ता भोक्ता आत्मा

अनाथता के अनेक प्रकार

३८-५० क- श्रमण जीवन में शिथिलाचार

ख- श्रमण होने पर भी भोगासक्ति

ग- पाँच ममिक्तियों का मध्यक् पालन न करना

घ- व्रतभंग, अनियमित जीवन

ङ- द्रव्यलिङ्ग—केवल साधुवेश

च- अमद्यत जीवन

छ विवदासकि

ज विद्योपनीवी होना

झ मरीच आहार का सेवन अथवा सर्वभक्षी होना

ञ- अन्तिम समय में पश्चात्ताप और दुःख

५१ कुशील को छोड़कर महानिर्घंशों के पक्षपर चलने का उपदेश

५२ मयम साधना से शिवपद

५३ उपसहार—महानिर्घंश के जीवन का विस्तृत वर्णन

५४ ५६ अनाथी निर्घंश से श्रेणिक की समा याचना, स्वस्थान गमन

६० मुनि जीवन की विहंग पक्षी जीवन से तुलना

इकवीस वां समुद्रपालीय अध्ययन

१ धम्पा निवासी पाणिन आश्रम भ० महावीर का शिष्य

२ पाणिन का पिण्डनगर जाना

३ पालित का विवाह गमवती स्त्री का साथ लेकर स्वदेश के लिये प्रस्थान करना

४ समुद्र में प्रसन्न, समुद्रपाल नाम

५ ७ अथा में समुद्रपाल का सर्वधर्म अध्ययन और विवाह

८ १० वध्य भूमि की ओर ले जाने हुए खोर को देखकर समुद्रपाल को वैराग्य प्रव्रज्या ग्रहण

११ २२ समुद्रपाल की मयम साधना

२३ समुद्रपाल को केवल ज्ञान

२४ समुद्रपाल का छनार समुद्र में पार होना

बाबीस वा रहनमीय अध्ययन

१ शोरीपुर में समुद्रदेव राजा

२ समुद्रदेव के दो भार्या और दो पुत्र

३ शोरीपुर में समुद्र विजय राजा

४ शिवा के पुत्र अरिष्टनेमि

- ५ अरिष्टनेमि के लिये केशव द्वारा राजिमती की याचना  
 ६-१४ विद्याह-मण्डप के ममीप अरिष्टनेमि ने वध के लिये एकत्रित  
 पशु-पक्षियों का बाड़ा देना  
 १५-१६ अरिष्टनेमि का सारथी से प्रश्न  
 १७ नारथी का उत्तर  
 १८-२० अरिष्टनेमि का आत्महित चिन्तन, मारथि को पारितोषिक  
 २१-२७ अरिष्टनेमि का दीक्षा महोत्सव और रैवतक पर्वत पर  
 तप-साधना  
 २८-३२ राजिमती की प्रव्रज्या  
 ३३-४० क- राजिमती का रैवतक पर्वत पर स्थित भ० अरिष्टनेमि के  
 दर्शन लिये जाना  
 ग- मार्ग में वर्षा होना  
 ग- आर्द्र वस्त्रों को नुत्वाने के लिये गुफा में जाना  
 घ- गुफा में स्थित रथनेमि का मंथन से विचलित होना  
 ४१-४६ राजिमती का रथनेमि को उपदेश  
 ४७-४९ रथनेमि का समय में स्थिर होना  
 ५० राजिमती और रथनेमि को केवल ज्ञान और निर्वाण प्राप्ति  
 ५१ उपसंहार—इन प्रकार भोगों में निवृत्त पण्डित पुरुषोत्तम  
 होता है

### तेवीसवाँ केशी-गौतम अध्ययन

- १-४ सावत्यी के तिनदुक उद्यान में भ० पार्श्वनाथ के शिष्य  
 केशी श्रमण का आगमन  
 ५-८ भ० वर्धमान महावीर के शिष्य गौतम का सावत्यी के  
 कोष्ठक चैत्य में ठहरना  
 ९-१३ दोनों के शिष्यों में अचेल-सचेल और चार याम, पाँच याम  
 के सम्बन्ध में जिज्ञासा

- १४ २० केशी श्रमण और भ० गौतम का मिलन तथा चर्चा
- २१ २८ क केशी श्रमण का प्रथम प्रश्न—चार धाम और पाँच धाम धम की भिन्नता का मुख्य हेतु क्या है ?  
 स भ० गौतम द्वारा समाधान
- २६ ३३ क केशी श्रमण का द्वितीय प्रश्न—भ० पाश्वताय और भ० महावीर के अनुयायी श्रमणों की विभिन्न वेगभूषा क्या ?  
 स भ० गौतम द्वारा समाधान
- ३४ ३८ क केशी श्रमण का तृतीय प्रश्न—शत्रुओं पर विजय प्राप्ति का श्रम कौनसा है ?  
 स भ० गौतम द्वारा समाधान
- ३६ ४३ क केशी श्रमण का चतुर्थ प्रश्न—स्नेह बंधन से मुक्ति किस प्रकार होती है ?  
 स भ० गौतम द्वारा समाधान
- ४४ ४८ क केशी श्रमण का पंचम प्रश्न—गृष्णा का छेदन किस प्रकार ?  
 स भ० गौतम द्वारा समाधान
- ४६ ५३ क केशी श्रमण का षष्ठ प्रश्न—कषाय अग्नि का क्षमन किस प्रकार ?  
 स भ० गौतम द्वारा समाधान
- ५४ ५८ क केशी श्रमण का सप्तम प्रश्न—मन का दमन किस प्रकार ?  
 स भ० गौतम द्वारा समाधान
- ५६ ६३ क केशी श्रमण का अष्टम प्रश्न—स माद गमन किस प्रकार ?  
 स भ० गौतम द्वारा समाधान
- ६४ ६८ क केशी श्रमण का नवम प्रश्न—जन्म जरा मरण से मुक्ति किस प्रकार ?  
 स भ० गौतम द्वारा समाधान
- ६६ ७३ क केशी श्रमण का दशम प्रश्न—सगार समुद्र से पार करने वाली नौका व नाविक कौन ?

ख- भ० गौतम द्वारा समाधान

७४-७८ क- केशी कुमार श्रमण का एकादशम प्रश्न—सम्पूर्ण लोक का प्रकाशक कौन ?

ख- भ० गौतम द्वारा समाधान

७९-८४ क- केशीकुमार श्रमण का द्वादशम प्रश्न—गाश्वत स्थान कौन सा ?

ग- भ० गौतम द्वारा समाधान

८५-८७ केशी श्रमण का पञ्च महाव्रत धारण

८८ उपसंहार—केशी गौतम के समागम से श्रुत और शील का उत्कर्ष

८९ जन नाधारण में श्रद्धा की अभिवृद्धि

**चौबीसवाँ समिति अध्ययन**

१-३ अष्ट प्रवचन माता-पाँच समिति, तीन गुप्ति

४-८ क- इयाँ समिति के चार भेद

ख- यतनः के चार भेद

९-१० क- भाषा समिति के आठ दोष

ख- ,, के दो विशेषण

११-१२ एषणा समिति के तीन भेद

१३-१४ आदान समिति के दो भेद

१५-१६ परिष्ठापनिका समिति के चार भेद

२०-२१ मन गुप्ति के चार भेद

२२-२३ वचन गुप्ति के चार भेद

२४-२५ काय गुप्ति के पाँच भेद

२६-२७ उपसंहार—समिति गुप्ति की परिभाषा, अष्ट प्रवचन माता की सम्यक् आराधना से मुक्ति

**पच्चीसवाँ यज्ञ अध्ययन**

१-३ जय घोष मुनि का वाराणसी के बाहर उद्यान में ठहरना



- ४ उमी वाराणसी में विजयघोष का यज्ञ करना
- ५ मामोपवास के पारंगे के लिये जयघोष का विजयघोष के यज्ञ में जाना
- ६ विजय घोष का भिक्षा न देना
- ७-८ यज्ञान्न के अधिकारियों का वर्णन
- ९-१२ क- जयघोष का समभाव  
ख- विजयघोष क कनिष्य प्रश्न
- १३-१५ समाधान के लिये विजयघोष की प्रार्थना
- १६ जयघोष द्वारा समाधान
- १७ भ० काश्यप, भ० ऋषभदेव की महिमा
- १८ यज्ञवादी ब्राह्मणों की रक्षा
- १९-२९ वास्तविक ब्राह्मण का वर्णन
- ३० यद विहित यज्ञ का वर्णन
- ३१ ३२ धर्मण, ब्राह्मण, मुनि और तापस की व्याख्या
- ३३ वर्णाश्रम व्यवस्था का मूल आधार कम
- ३४ कर्ममूलक व्यवस्था का प्रतिपादक ही सच्चा ब्राह्मण
- ३५ गुणी ब्राह्मण से ही स्व पर का कल्याण
- ३६ ४० क विजय घोष को जयघोष से भिन्ना ५ लिये प्रार्थना  
ख जयघोष का विजयघोष को विरति का उपदेश
- ४१ भोगी और भोग मुक्त की गति
- ४२ ४३ भागी और भोग मुक्त को दो गोलों की उपमा
- ४४ ४५ उपसंहार—विजयघोष की धर्मण प्रशंसा, जयघोष-विजयघोष की सिद्धि

### द्वितीय सर्वा समाचारी अध्यायन

- १ धर्मण समाचारी का कथन
- २ ४ समाचारी के दस भेद

- ५-७ दम ममाचारियों के कर्तव्य  
 ८-१० द्विधम-ममाचारी  
 ११ दिन के चार भाग  
 १२ चार भागों में श्रमण के कृत्य  
 १३-१६ पौरुषी प्रमाण  
 १७ रात्रि-ममाचारी, रात्रि के चार भाग  
 १८ चार भागों में श्रमण के कर्तव्य  
 २१-२२ द्विस-ममाचारी-प्रथम भाग में करने में  
 २३-२५ प्रति लेगना की विधि  
 २६ प्रतिनेगना के ६ दोष  
 २७ प्रति लेगना के अन्य दोष  
 २८ प्रति लेगना के तीन पदों के आठ भाग  
 २९ प्रति लेगना के ममय निषिद्ध कृत्य  
 ३० प्रमत्त प्रतिलेखक विराधक  
 ३१ अप्रमत्त प्रतिलेखक आराधक  
 ३२ तृतीय पौरुषी में भिक्षा  
 ३३-३४ आहार लेने के ६ कारण  
 ३५ आहार त्याग के ६ कारण  
 ३६ भिक्षा-क्षेत्र का उत्कृष्ट प्रमाण  
 ३७ चतुर्थ पौरुषी के कर्तव्य  
 ३८ शय्या की प्रतिलेगना का समय  
 ३९ मलमूत्र विसर्जनार्थं भूमि का अवलोकन  
 ४० दैवसिद्ध अतिचारों-दोषों का चिन्तन  
 ४१ " " की आलोचना  
 ४२ कायोत्सर्ग  
 ४३ स्तुति मंगल पाठ-काल विवेक  
 ४४ रात्रि-समाचारी—चार भाग के कर्तव्य

- ४५ चतुर्थ विभाग के विशेष हृष्य
- ४६ ज्ञान विवेक
- ४७ ज्ञानात्मक
- ४८ राजि-अनिचारा—दोषों—का चिन्तन
- ४९ राजि अनिचारोंकी आलोचना
- ५०-५१ पायोत्सर्ग-तय चिन्तना जिन स्तुति
- ५२ सिद्ध-स्तुति
- ५३ उपसहार—गमाचारी की आराधना से शिवपद की प्राप्ति  
सत्तावीसवाँ खलुंकीय अध्ययन
- १ गर्गाचार्य का आध्यात्मिक परिचय
- २ बाह्य और योग समय-बह्य की तुलना
- ३-८ दुष्ट हृष्य और दुष्ट शिष्य की तुलना
- ९ १३ दुष्ट शिष्यों के लक्षण
- १४ गर्गाचार्य की चिन्ता
- १५ गर्गाचार्य की सारथि से तुलना
- १६ क दुष्ट शिष्यों को गर्भ की उपमा  
ख गर्गाचार्य द्वारा दुष्ट शिष्या का परित्याग
- १७ गर्गाचार्य का एकाकि विहार  
अठारवीसवाँ मोक्षमार्ग गति अध्ययन
- १ ३ मोक्षमार्ग के चार कारण  
ज्ञान
- ४ ज्ञान के पाँच भेद
- ५ ज्ञान की परिभाषा
- ६ द्रव्य और पर्याय का लक्षण
- ७ पद् द्रव्यात्मक लोक

८ क- धर्म, अधर्म और आकाश एक द्रव्यात्मक  
ख- काल, जीव और पुद्गल अनेक द्रव्यात्मक

९-१२ पङ् द्रव्य के लक्षण

१३ पर्याय के लक्षण  
दर्शन

१४ नव तत्त्व के नाम

१५ सम्यक्त्व की व्याख्या

१६-२७ सम्यक्त्व के दस भेद

२८ सम्यक्त्वी के तीन प्रमुख कर्तव्य

२९-३० ज्ञानादि चार का परस्पर अनुबन्ध

३१ सम्यक्त्वी के अष्ट कृत्य,  
चारित्र्य

३२ चारित्र्य के पाँच भेद

३३ चारित्र्य की व्याख्या  
तप

३४ तप के दो भेद, प्रत्येक के ६-६ भेद

३५ ज्ञानादि चार का फल

३६ उपसंहार- तप संयम से कर्मक्षय

### उनत्तीसवाँ सम्यक्त्व-पराक्रम अध्ययन

१ क- भ० महावीर द्वारा सम्यक्त्व पराक्रम अध्ययन का प्रतिपादन  
ख- अराधना से सिद्धि

२ अध्ययन के विषय

३ संवेग का फल

४ निर्वेद का फल

५ धर्म श्रद्धा का फल

६ गुरु और स्वधर्मी सुश्रुपा का फल

- ७ आनोचना का फल  
 ८ आत्मनिन्दा का फल  
 ९ गर्हा का फल  
 १० सामायिक का फल  
 ११ चतुर्विज्ञानिग्तव का फल  
 १२ बन्धना का फल  
 १३ प्रतिक्रमण का फल  
 १४ कायोत्सर्ग का फल  
 १५ प्रत्याख्यान का फल  
 १६ स्तव स्तुति मंगल का फल  
 १७ बाल प्रतिलेखना समयज्ञ होने का फल  
 १८ प्रायश्चित्त का फल  
 १९ क्षमापना का फल  
 २० स्वाध्याय का फल  
 २१ वाचना का फल  
 २२ शृच्छना का फल  
 २३ परिवर्तना-आवृत्ति का फल  
 २४ अनुप्रेक्षा का फल  
 २५ धर्म कथा का फल  
 २६ श्रुत की आराधना का फल  
 २७ मन को एकाग्र करने का फल  
 २८ समय का फल  
 २९ तप का फल  
 ३० व्यवदान कर्मज्ञान-का फल  
 ३१ सुख शांति का फल  
 ३२ अप्रतिबद्धता का फल  
 ३३ विधिवत् शय्यासन सेवन का फल

- ३४ विनिवर्तना का फल  
 ३५ मंगोम-व्यवहार-त्याग का फल  
 ३६ उपधि त्याग का फल  
 ३७ आहार त्याग का फल  
 ३८ वषाय त्याग का फल  
 ३९ योगश्रय के त्याग का फल  
 ४० शरीर त्याग का फल  
 ४१ महायज्ञ के त्याग का फल  
 ४२ आहार त्याग का फल  
 ४३ सद्भाव-प्रवृत्ति-के त्याग का फल  
 ४४ प्रतिष्पता-श्रमण वेपथूपा का फल  
 ४५ वैयावृत्य मेवा का फल  
 ४६ सर्वगुण संपन्नता का फल  
 ४७ वीतरागता का फल  
 ४८ क्षमा का फल  
 ४९ मुक्ति-निर्लोभता का फल  
 ५० ऋजुता का फल  
 ५१ श्रुता का फल  
 ५२ मत्य विचारो का फल  
 ५३ मत्य-यथार्थ-प्रिया का फल  
 ५४ सत्य योगो का फल  
 ५५ मन के निग्रह का फल  
 ५६ वचन के निग्रह का फल  
 ५७ काया के निग्रह का फल  
 ५८ मन के शान्त करने का फल  
 ५९ विवेक पूर्वक बोलने का फल  
 ६० विवेक पूर्वक की गई कार्यात्मक क्रियाओं का फल

- ६१ मान युक्त होने का फल  
 ६२ बद्धा युक्त होने का फल  
 ६३ चारित्र्य युक्त होने का फल  
 ६४ श्रोत्रेन्द्रिय निग्रह का फल  
 ६५ जगुर्दृष्टि निग्रह का फल  
 ६६ घ्राणन्द्रिय निग्रह का फल  
 ६७ जिह्वा दृष्टि निग्रह का फल  
 ६८ स्पर्शन्द्रिय निग्रह का फल  
 ६९ क्रोध विजय का फल  
 ७० मान विजय का फल  
 ७१ माया विजय का फल  
 ७२ लोभ विजय का फल  
 ७३ मिथ्या दान गत्य विजय का फल  
 ७४ शार्ङ्गों के सबंधा निरोध का फल—बम क्षय का फल  
 ७५ उपमहार—सम्यक्त्व पराक्रम अध्ययन का भ० महावीर द्वारा  
 प्ररूपण

### तीसवा तप मार्ग अध्ययन

- १ तप से कम तप  
 २ आश्रय गुभागुम कम निरोध के लिए ६ वना का आचरण  
 ३ आश्रय निरोध के लिय आवश्यक कृत्य  
 ४ आवश्यक कृत्या से कमभय  
 ५ ६ जनागत का उपाहरण  
 ७ तप के दो भेद प्रत्येक के ६ ६ भेद  
 ८ बाह्य तप के ६ भेद  
 ९ अन्तर्गत के दो भेद  
 १० ११ इत्वरिक अल्पकानिक-अनशन के ६ भेद

- १२ यावज्जीवन-अनशन के दो भेद  
 १३ प्रकारान्तर से दो-दो भेद  
 १४ ऊनोदर तप के पाँच भेद  
 १५ द्रव्य ऊनोदर तप  
 १६-१९ क्षेत्र ऊनोदर तप  
 २०-२१ काल ऊनोदर तप  
 २२-२३ भाव ऊनोदर तप  
 २४ पर्यन्त ऊनोदर तप  
 २५ भिक्षाचर्या के सात भेद  
 २६ रस-परित्याग तप  
 २७ कायवलेष तप  
 २८ प्रति संलीनता तप  
 २९ क- याद्य तप का वर्णन समाप्त  
 ख- आभ्यन्तर तप वर्णन प्रारम्भ  
 ३० आभ्यन्तर तप के ६ भेद  
 ३१ प्रायश्चित्त के दस भेद  
 ३२ विनय तप  
 ३३ वैयावृत्य-परिचर्या-तप के दस भेद  
 ३४ स्वाध्याय के पाँच भेद  
 ३५ विधि-निषेध से ध्यान के चार भेद  
 ३६ कायोत्सर्ग तप  
 ३७ उपसंहार—तप से निर्वाण

### इकतीसवाँ चरण-विधि अध्ययन

- १ चारित्र्य से भव-मुक्ति  
 २ निवृत्ति-प्रवृत्ति की व्याख्या  
 ३ राग-द्वेष से निवृत्ति



- ४ दण्ड, गर्व और शान्य से निवृत्ति
- ५ उपमर्ग सङ्ग
- ६ विकषा, वषाय, सज्ञा और दुर्घ्यानि द्वय से निवृत्ति
- ७ क वनो और ममिनिया मे प्रवृत्ति  
ख इन्द्रियों क विषया मे और क्रियाओ से निवृत्ति
- ८ क तेरया और आहार के ६ कारणो से निवृत्ति  
ख ६ वाय के आरम्भ से निवृत्ति
- ९ क पिण्ड अवग्रह प्रतिमाओ मे प्रवृत्ति  
ख भय स्थानो से निवृत्ति
- १० क मद स्थानो से निवृत्ति  
ख ब्रह्मचय गुणितयो और भिक्षु धर्मो मे प्रवृत्ति
- ११ उपासक और भिक्षु प्रतिमाओ मे प्रवृत्ति
- १२ शिवास्थान भूतधाम और परमाध्यात्मिका से निवृत्ति
- १३ क गाथा पोटशक मे प्रवृत्ति  
ख अमयमो से निवृत्ति
- १४ क ब्रह्मचय और ज्ञाना अध्ययनों मे निवृत्ति  
ख असमाधि स्थानो से निवृत्ति
- १५ सवन दोषों से और परिपटो से निवृत्ति
- १६ क सूत्रवृत्ताङ्ग के अध्ययनो के स्वाध्याय मे प्रवृत्ति  
ख देव विषयक निवृत्ति
- १७ क भावनाओ मे प्रवृत्ति  
ख दण्ड कल्प और व्यवहार के अध्ययनों मे प्रवृत्ति निवृत्ति
- १८ क- अनकार गुणा मे प्रवृत्ति  
ख आचार प्रवृत्त के अध्ययना मे प्रवृत्ति निवृत्ति
- १९ पापधुन और माहृ स्थानो से निवृत्ति
- २० क निदानिगया मे प्रवृत्ति  
ख आगाननाओ मे निवृत्ति

- २१ उपसंहार—चरणविधि की अराधना से भाव-मुक्ति  
वत्तीसवाँ प्रमाद स्थान अध्ययन
- १ दुःख से मुक्त होने की विधि का श्रवण  
२-५ समाधिमरण के साधन  
६-७ दुःख के कारण  
८ दुःख का समूलनाश  
९ मोह से मुक्त होने के उपायों का कथन  
१० रस सेवन का निषेध, रस और काम का सम्बन्ध  
रस को फल की और काम को पक्षी की उपमा  
११ इन्द्रियो की विषयाभिलाषा को दावाग्नि की उपमा  
राग शत्रु को जीतने के उपाय, राग को व्याधि की उपमा  
एकान्त शयन आदि को औपधि की उपमा  
१३ ब्रह्मचारी के लिये निषिद्ध स्थान, ब्रह्मचारी को मूषक की  
उपमा और स्त्री को बिडाल की उपमा  
१४ स्त्री को विकृत दृष्टि से देखने का निषेध  
१५ ब्रह्मचारी के हितकारी  
१६ ब्रह्मचारी के लिये एकान्तवास प्रशस्त है  
१७ मनोहर स्त्रियों का त्याग दुष्कर है  
१८ स्त्री-त्याग को समुद्र की उपमा  
शेष वस्तुओं के त्याग को नदी की उपमा  
१९ दुःख का मूल काम और उसके विजेता-वीतराग  
२० काम को किपाकफल की उपमा  
२१ विषयों से विरक्त होने का उपदेश  
२२-३४ चाक्षुष विषयों से विरक्त, पद्म-पत्र के समान अलिप्त रहने का  
उपदेश  
३५-४७ श्रोत्रेन्द्रिय के विषयों से विरक्त

- ४८ ६० आलोच्य के विषयों में विरक्ति  
 ६१ ७१ त्रिगुण इन्द्रिय के विषयों में विरक्ति  
 ७४ ८६ स्वप्न इन्द्रिय के विषयों में विरक्ति  
 ८७ ९९ भाव विरक्ति

१०० उपमहार—दुःख के हेतु इन्द्रिया के विषय दुःख से मुक्त वीतराग

१०१ दुःख का मूल विषय नहीं भविष्य राग इष्य है

१०२ १०३मानसिक विचार

१०४ १०५साक्ष्यान साधक के कर्तव्य

१०६ विरक्त पर अच्छे बुरे पदार्थों का प्रभाव नहीं होता

१०७ सत्य विजय से तृणा विजय

१०८ वीतराग के लक्षणा कमल

१०९ जीवन्मुक्त की मूर्ति

११० मुक्त आत्मा का शास्त्रन मूल

१११ दुःख मूर्ति के उपाय का ज्ञान

### तत्त्वोपनिषद् के प्रकृति अध्ययन

- १ अष्ट कर्मों के कथन का सार  
 २ अष्टकर्मों के नाम  
 ४ (१) ज्ञानावरणीय कर्म की उत्तर प्रकृतियाँ  
 ५ ६ (२) ज्ञानावरणीय कर्म की उत्तर प्रकृतियाँ  
 ७ (३) वेदनीय कर्म की उत्तर प्रकृतियाँ  
 ८ ११ (४) मोहनीय कर्म की उत्तर प्रकृतियाँ  
 १२ (५) आयु कर्म की उत्तर प्रकृतियाँ  
 १३ (६) नामकर्म की उत्तर प्रकृतियाँ  
 १४ (७) गोत्रकर्म की उत्तर प्रकृतियाँ  
 १५ (८) अन्तराय कर्म की उत्तर प्रकृतियाँ  
 १६ अष्ट कर्मों के प्रदेश क्षेत्र काल और भाव के कथन का सार

१७ अष्ट कर्मों के प्रदेश

१८ अष्ट कर्मप्रदेशों का क्षेत्र  
अष्ट कर्मों की स्थिति

१९-२० ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय और अन्तराय कर्म की  
जघन्य उत्कृष्ट स्थिति

२१ मोहनीय कर्म की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति

२२ आयुकर्म की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति

२३ नाम और गोत्र कर्म की जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति

२४ अष्ट कर्मों का अनुभाग-रस

२५ उपसंहार—कर्मविपाक ज्ञाता

### चोतीसवाँ लेश्या अध्ययन

१ कर्म-लेश्याओं के कथन का संकल्प

२ लेश्या सम्बन्धि इग्यारह अधिकार

३ लेश्याओं के नाम

लेश्याओं के वर्ण

४ कृष्ण लेश्या का वर्ण

५ नील लेश्या का वर्ण

६ कापोत लेश्या का वर्ण

७ तेजो लेश्या का वर्ण

८ पद्म लेश्या का वर्ण

९ शुक्ल लेश्याका वर्ण

लेश्याओं के रस

१० कृष्ण लेश्या का रस

११ नील लेश्या का रस

१२ कापोत लेश्या का रस

- १४ पद्म नैश्या का रस  
 १५ गुवन नैश्या का रस  
 लेश्याओं की गन्ध  
 १६ तीन अग्रस्त लेश्याओं की गन्ध  
 १७ तीन प्रगस्त लेश्याओं की गन्ध  
 लेश्याओं का स्पर्श  
 १८ तीन अग्रस्त लेश्याओं का स्पर्श  
 १९ तीन प्रगस्त लेश्याओं का स्पर्श  
 लेश्याओं के परिष्काम  
 २० लेश्याओं के परिष्कारों की संख्या  
 लेश्याओं के लक्षण  
 २१ २२ कृष्ण नैश्या का लक्षण  
 २३ २४ नील लेश्या का लक्षण  
 २५ २६ कापीत लेश्या का लक्षण  
 २७ २८ तैजो लेश्या का लक्षण  
 २९ ३० पद्म नैश्या का लक्षण  
 ३१ ३२ गुवन नैश्या का लक्षण  
 लेश्याओं के स्थान  
 ३३ छः लेश्याओं के स्थान  
 लेश्याओं की स्थिति  
 ३४ कृष्ण लेश्या की जघन्य उ कृष्ट स्थिति  
 ३५ नील लेश्या की जघन्य उ कृष्ट स्थिति  
 ३६ कापीत लेश्या की जघन्य उ कृष्ट स्थिति  
 ३७ तैजो लेश्या की जघन्य उ कृष्ट स्थिति  
 ३८ पद्म नैश्या की जघन्य उ कृष्ट स्थिति  
 ३९ गुवन नैश्या की जघन्य उ कृष्ट स्थिति

चार गतियों में लेश्याओं की स्थिति

- ४० चार गतियों में लेश्या-स्थिति कहने का संकल्प  
नरक गति में लेश्याओं की स्थिति
- ४१ नरक गति में कापोत लेश्या की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति
- ४२ ,, नील लेश्या की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति
- ४३ ,, कृष्ण लेश्या की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति
- ४४ त्रिच और मनुष्य गति में लेश्याओं की स्थिति
- ४५ कृष्ण में पद्म पर्यन्त लेश्याओं को जघन्य उत्कृष्ट स्थिति
- ४६ शुक्ल लेश्या की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति
- ४७ देवगति में लेश्याओं की स्थिति
- ४८ देवगति में कृष्ण लेश्या की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति
- ४९ ,, नील लेश्या की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति
- ५० ,, कापोत लेश्या की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति
- ५१-५३ ,, तेजो लेश्या की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति
- ५४ ,, पद्म लेश्या की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति
- ५५ ,, शुक्ल लेश्या की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति

लेश्याओं की गति

- ५६ तीन अधर्म लेश्याओं की गति
- ५७ तीन धर्म लेश्याओं की गति
- ५८-६० लेश्याओं की परिणति में परलोक गमन
- ६१ उपसंहार—लेश्याओं के अनुभाव का ज्ञान

पैतृसर्वा अनगार अध्ययन

- १ बुद्ध कथित मार्ग कहने का संकल्प
- २-३ संयत के संगों—बन्धनों का ज्ञान
- ४ साधु निवास के अयोग्य स्थान
- ५ अयोग्य स्थान में न ठहरने का कारण

- ६७ साधु के निवास योग्य स्थान  
 ८६ अथ कृत्त स्थान में ठहरने का कारण  
 १० १२ क भोजन बनाने का नियेष  
 ल नियेष का हेतु  
 १३ १५ त्रय विक्रय का नियेष  
 १६ भिक्षावृत्ति का विधान  
 १७ व्याहार भक्षण विधि  
 १८ सम्मान कामना का नियेष  
 १९ साधना विधि  
 २० अन्तिम साधना  
 २१ उपसंहार निर्वाण पथ का पथिक

### ह्युत्तीसवाँ जीवाजीवविभक्ति अध्ययन

- १ जीवाजीव विभक्ति के ज्ञान से समय साधना  
 २ लोक अलोक का स्वरूप

### अजीव विभाग

- ३ जीव-अजीव की द्रव्य क्षेत्र काल और भाव प्ररूपणा  
 ४ क अजीव के दो भेद  
 ल अरूपी अजीव के दस भेद  
 ग रूपी अजीव के चार भेद  
 ५ ६ अरूपी अजीव के दस भेद  
 ७ घन अधम आकाश और काल का क्षेत्र  
 ८ घन अधम और आकाश अनादि अनन्त  
 ९ क काल—सतति अपेक्षा अनादि अनन्त  
 ल आदेश अपेक्षा सति सान्त  
 १० रूपी अजीव के चार भेद  
 ११ १२ क स्कन्ध और परमाणु का लक्षण

ग- स्कन्ध और परमाणु का क्षेत्र

ग- " की अपेक्षाकृत स्थिति

१३ स्पी अजीव द्रव्य की स्थिति

१४ स्पी अजीव द्रव्य का अन्तरकाल

१५-४६ स्पी अजीव द्रव्य के पाँच परिणाम

### जीव विभाग

४७ जीव विभाग का कथन

४८ जीव के दो भेद

४९ सिद्धों के अनेक भेद

५० सिद्धों की अवगाहना

५१ एक समय में सिद्ध होने वालों की संख्या

५२ " लिङ्ग की अपेक्षा से सिद्ध होने वालों की संख्या

५३ " अवगाहना की अपेक्षा से सिद्ध होने वालों की संख्या

५४ " क्षेत्र की अपेक्षा से सिद्ध होने वालों की संख्या

५५-५६ सिद्धों का वर्णन

५७-५९ ईपत् प्राग्भारा पृथ्वी-सिद्धस्थान का आयत विस्तार और

६० सिद्ध स्थान की रचना

६१ लोकान्त का परिमाण

६२-६६ क- संसार की स्थिति, जीव के दो भेद

ख- स्यावर जीवों के तीन-भेद

७०-७७ पृथ्वीकाय के भेद

७८ पृथ्वीकाय की व्यापकता

७९ द्रव्य और पर्याय की अपेक्षा पृथ्वीकाय की स्थिति

८० पृथ्वीकाय के जीवों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति

८१ पृथ्वीकायिक जीवों की कायस्थिति



- ८२ ६१ अण्वाय और अपकायिक जीवों का वर्णन  
 ६२ १०६ वनस्पतिकार्य और वनस्पति कार्यात्मक जीवों का वर्णन  
 १०७ वस जीवों के तीन भेद  
 १०८ ११६ तेजस्काय और तेजस्वायिक जीवों का वर्णन  
 ११७ १२५ वायुकाय और वायुकायिक जीवों का वर्णन  
 १२६ उदार वस जीवों के चार भेद  
 १२७ १३५ द्वीर् द्वय जीवों का वर्णन  
 १३६ १४४ त्रीर् द्वय जीवों का वर्णन  
 १४५ १५४ चतुरिर्द्वय जीवों का वर्णन  
 १५५ क पचेर्द्वय जीवों का वर्णन  
 ल पचेर्द्वय जीवों के चार भेद  
 १५६ १६६ नरयिक जीवों का वर्णन  
 १७० १६३ पचेर्द्वय त्रियचो का वर्णन  
 १६४ २०२ मनुष्यों का वर्णन  
 २०३ २४८ चार प्रकार के देवों का वर्णन  
 २४६ देवप्रद्वार  
 २५० नमो की अपेक्षा से जीव अर्थात् का ज्ञान  
 २५१ सत्त्वना का विधान  
 २५२ सत्त्वना के तीन भेद  
 २५३ २५६ उत्कृष्ट सत्त्वना का वर्णन  
 २५७ अशुभ भावनाओं से दुर्गति और विराचना  
 २५८ दुर्लभ बोधि जीव  
 २५९ सुलभ बोधि जीव  
 २६० दुर्लभ बोधि जीवन  
 २६१ जिन वचनों पर श्रद्धा करने का फल  
 २६२ जिन वचनों पर अश्रद्धा करने का फल  
 २६३ आलोचना सुनने के योग्य अधिकारी

- २६४ कंदर्प भावना वर्णन  
 २६५ अभियोग भावना वर्णन  
 २६६ किल्बिष भावना वर्णन  
 २६७ आसुरी भावना वर्णन  
 २६८ मोह भावना वर्णन  
 २६९ उपसंहार—छत्तीस उत्तराध्ययनों के कथन के पश्चात् भ० .  
 महावीर को निर्वाण की प्राप्ति



एमो बुद्धाणं

द्रव्यानुयोगमय नन्दीसूत्र

अध्ययन	१
मूल पाठ	७०० श्लोक परिमाण
गद्य सूत्र	५७
पद्य गाथा	६७



## नन्दीसूत्र विषय-सूची

गाथा १-३ वीर स्तुति

४-१६ मंघ स्तुति

४ क- सघ को नगर की उपमा

५ ग- मंघ को चक्र की उपमा

६ ग- सघ को रथ की उपमा

७-८ घ- सघ को कमल की उपमा

९ ट- सघ को चन्द्र की उपमा

१० च- सघ को सूर्य की उपमा

११ छ- सघ को समुद्र की उपमा

१२-१८ ज- सघ को मेरु की उपमा

१९ झ- उपसंहार

२०-२१ चतुर्विंशति जिन वदना

२३ इग्यारह गणधर वदना

२४ जिन शासन स्तुति

२५-२० स्थविरावली

५१ श्रोता की चौदह उपमा

२२-५४ तीन प्रकार की परिपद

सूत्र १ ज्ञान के पाँच भेद

२ ज्ञान के दो भेद

३ प्रत्यक्ष ज्ञान के दो भेद

४ इन्द्रिय प्रत्यक्ष के पाँच भेद



ग- देश अवधिज्ञान वाले

सूत्र १७ मनःपर्यव ज्ञान वाले

१८ मनःपर्यव ज्ञान के दो भेद

गाथा ६५ ख- मनःपर्यव ज्ञान का विषय

ग- मनःपर्यव ज्ञान का क्षेत्र

घ- मनःपर्यव ज्ञान होने का हेतु

सूत्र १९ क- केवल ज्ञान के दो भेद

ख- भवस्थ केवल ज्ञान के दो भेद

ग- सयोगी भवस्थ केवल ज्ञान के दो भेद

घ- सयोगी भवस्थ केवल ज्ञान के वैकल्पिक दो भेद

ङ- अयोगी भवस्थ केवल ज्ञान के दो भेद

च- अयोगी भवस्थ केवल ज्ञान के वैकल्पिक दो भेद

सूत्र २० छ- सिद्ध केवल ज्ञान के दो भेद

सूत्र २१ ज- अनन्तर सिद्ध केवल ज्ञान के पन्द्रह भेद

झ- परम्पर सिद्ध केवल ज्ञान के अनेक भेद

ञ- परम्पर सिद्ध केवल ज्ञान के संक्षेप में चार भेद

सूत्र २२

गाथा ६६ केवल ज्ञान का विषय

केवल ज्ञान की नित्यता

सूत्र २३

गाथा ६७ केवल ज्ञान का कथन योग्य अंश

केवल ज्ञान का अकथन योग्य अंश

सूत्र २४ क- परोक्ष ज्ञान के दो भेद

ख- मति-श्रुत का साहचर्य

ग- मति-श्रुत की पूर्वापरता

२५ क- मति-ज्ञान और मति अज्ञान के पात्र

ख- श्रुत-ज्ञान और श्रुत अज्ञान के पात्र



- ५ सो इन्द्रिय प्रत्यक्ष के तीन भेद  
 ६ अवधि ज्ञान के दो भेद  
 ७ भव प्रत्यक्षिक अवधिज्ञान वाले दो  
 ८ सायोपशमिक अवधिज्ञान वाले दो  
 ९ सायोपशमिक अवधिज्ञान के छह भेद  
 १० क आनुगामिक अवधिज्ञान के दो भेद  
 ख अतगत अवधिज्ञान के तीन भेद  
 ग प्रत्येक भेद की व्याख्या  
 घ मध्यगत अवधिज्ञान की व्याख्या  
 ङ अतगत और मध्यगत की विशेषता  
 ११ अनानुगामिक अवधिज्ञान की व्याख्या  
 १२ वधमान अवधिज्ञान की व्याख्या  
 गाथा ५५ क अवधिज्ञान का जघन्य क्षेत्र  
 ५६ ख अवधिज्ञान का उत्कृष्ट क्षेत्र  
 ५७ ग अवधिज्ञान का मध्यम क्षेत्र  
 ५८ ६० घ क्षेत्र और काल की अपेक्षा अवधि ज्ञान का विस्तार  
 ६१ ङ- क्षेत्र और काल की रुद्धि का नियम  
 ६२ च काल और क्षेत्र की मूल्यता  
 मूत्र १३ होयमान अवधिज्ञान की व्याख्या  
 १४ प्रतिपानि अवधिज्ञान की व्याख्या  
 १५ अप्रतिपानि अवधिज्ञान की व्याख्या  
 १६ अप्रतिपानि अवधिज्ञान के चार भेद  
 गाथा ६३ अवधिज्ञान के अनेक भेद  
 ६४ क नियमित अवधिज्ञान वाले  
 ख पूर्ण अवधिज्ञान वाले

ग- देश अवधिज्ञान वाले

सूत्र १७ मनःपर्यव ज्ञान वाले

१८ मनःपर्यव ज्ञान के दो भेद

गाथा ६५ ख- मनःपर्यव ज्ञान का विषय

ग- मनःपर्यव ज्ञान का क्षेत्र

घ- मनःपर्यव ज्ञान होने का हेतु

सूत्र १९ क- केवल ज्ञान के दो भेद

ख- भवस्य केवल ज्ञान के दो भेद

ग- सयोगी भवस्य केवल ज्ञान के दो भेद

घ- सयोगी भवस्य केवल ज्ञान के वैकल्पिक दो भेद

ङ- अयोगी भवस्य केवल ज्ञान के दो भेद

च- अयोगी भवस्य केवल ज्ञान के वैकल्पिक दो भेद

सूत्र २० छ- सिद्ध केवल ज्ञान के दो भेद

सूत्र २१ ज- अनन्तर सिद्ध केवल ज्ञान के पन्द्रह भेद

झ- परस्पर सिद्ध केवल ज्ञान के अनेक भेद

ञ- परस्पर सिद्ध केवल ज्ञान के संक्षेप में चार भेद

सूत्र २२

गाथा ६६ केवल ज्ञान का विषय

केवल ज्ञान की नित्यता

सूत्र २३

गाथा ६७ केवल ज्ञान का कथन योग्य अंश

केवल ज्ञान का अकथन योग्य अंश

सूत्र २४ क- परोक्ष ज्ञान के दो भेद

ख- मति-श्रुत वा साहचर्य

ग- मति-श्रुत की पूर्वापरता

२५ क- मति-ज्ञान और मति अज्ञान के पात्र

ख- श्रुत-ज्ञान और श्रुत अज्ञान के पात्र

- ५ नो इन्द्रिय प्रत्यक्ष के तीन भेद  
 ६ अवधि ज्ञान के दो भेद  
 ७ भव प्रत्ययिक अवधिज्ञान वाले दो  
 ८ क्षायोपशमिक अवधिज्ञान वाले दो  
 ९ क्षायोपशमिक अवधिज्ञान के छ भेद  
 १० क आनुगामिक अवधिज्ञान के दो भेद  
 ख- अतगत अवधिज्ञान के तीन भेद  
 ग प्रत्येक भेद की व्याख्या  
 घ मध्यगत अवधिज्ञान की व्याख्या  
 ङ अतगत और मध्यगत की विशेषता  
 ११ अनानुगामिक अवधिज्ञान की व्याख्या  
 १२ बधमान अवधिज्ञान की व्याख्या  
 गाथा ५५ क अवधिज्ञान का जघ प क्षेत्र  
 ५६ ख अवधिज्ञान का उत्कृष्ट क्षेत्र  
 ५७ ग अवधिज्ञान का मध्यम क्षेत्र  
 ५८ ६० घ क्षेत्र और काल की अपेक्षा अवधि ज्ञान का विस्तार  
 ६१ ङ क्षेत्र और काल की रुद्धि का नियम  
 ६२ च काल और क्षेत्र की सूक्ष्मता  
 सूत्र १३ हीयमान अवधिज्ञान की व्याख्या  
 १४ प्रतिपाति अवधिज्ञान की व्याख्या  
 १५ अप्रतिपाति अवधिज्ञान की व्याख्या  
 १६ अप्रतिपाति अवधिज्ञान के चार भेद  
 गाथा ६३ अवधिज्ञान के प्रत्येक भेद  
 ६४ क नियमित अवधिज्ञान वाले  
 ख पूरा अवधिज्ञान वाले

३६-

गाथा ८२ मति ज्ञान के चार भेद

८३ अवग्रह आदि चारों की परिभाषा

८४ अवग्रह आदि चारों की स्थिति

८५ शब्द और रूप अप्राप्यकारी

गंध, रस और स्पर्श प्राप्यकारी

८६ मम श्रेणि और विषमश्रेणि में सुनने योग्य शब्द

८७ मति-ज्ञान के समानार्थक शब्द

सूत्र ३७ श्रुतज्ञान के चौदह भेद

३८ क- अक्षर श्रुत के तीन भेद

ख- प्रत्येक भेद की व्याख्या

ग- अनक्षर श्रुत के अनेक भेद

३९ संज्ञि और असंज्ञि श्रुत के तीन भेद, प्रत्येक भेद की व्याख्या

४० मय्यक् श्रुत की व्याख्या

४१ मिथ्या श्रुत की व्याख्या

४२ क- मादि सान्त और अनादि अनन्त श्रुत के चार भेद

ख- मादि सान्त और अनादि अनन्त श्रुत के वैकल्पिक दो भेद

ग- ज्ञानावरण से अनावृत आत्म-प्रदेशों के आवृत होने पर अजीव होने की आशङ्का

घ- मेघाच्छादित चन्द्र-सूर्य का उदाहरण

४३ ख- गमिक, अगमिक श्रुत

ग- श्रुतज्ञान के वैकल्पिक दो भेद

ख- अगवाह्य श्रुत के दो भेद

घ- आवश्यक के छः भेद

ङ- आवश्यक व्यतिरिक्त के दो भेद

च- उत्कानिक श्रुत के अनेक भेद

छ- जालिक श्रुत के अनेक भेद

- २६ क आभिव्यक्तिगत ज्ञान के दो भेद  
 ल अशून्य निश्चिन आभिव्यक्तिगत ज्ञान के चार भेद
- गाथा ६८ चार प्रकार की बुद्धि  
 ६९ शीलान्तिकी बुद्धि की व्याख्या  
 ७० ७२ शीलान्तिकी बुद्धि के सत्तावीस दृष्टान्त
- गाथा ७३ विनयत्रा बुद्धि के सप्तम  
 ७४ ७५ विनयत्रा बुद्धि की पहलू बयाएँ  
 ७६ कमत्रा बुद्धि के सप्तम  
 ७७ कमत्रा बुद्धि की पहलू बयाएँ  
 ७८ पारिणामिकी बुद्धि का सप्तम  
 ७९ ८१ पारिणामिकी बुद्धि के इक्कीस उदाहरण
- मूल २६ अशून्य निश्चिन प्रतिज्ञान के चार भेद  
 २७ अवग्रह के दो भेद  
 २८ व्यञ्जनावग्रह के चार भेद  
 २९ अर्थावग्रह के छ भेद  
 ३० अवग्रह के पाँच समानाधिकार गण  
 ३१ ईहा के छ भेद  
 ३२ अर्थाव के छ भेद  
 ३३ धारणा के छ भेद  
 ३४ अवग्रह ईहा अर्थाव और धारणा की कान्त मर्षादा
- ३५ क व्यञ्जनावग्रह के दो दृष्टान्त  
 ल प्रतिबाधक दृष्टान्त का वचन  
 ग मालक दृष्टान्त का वचन  
 घ गण्ड रूप मध रूप स्था और स्वप्न के अवग्रह ईहा  
 अर्थाव तथा धारणा का क्रम

३६-

- गाथा ८२ मति ज्ञान के चार भेद  
 ८३ अदग्रह आदि चारों की परिभाषा  
 ८४ अदग्रह आदि चारों की स्थिति  
 ८५ शब्द और रूप अप्राप्यकारी  
 गव, रम और स्पर्श प्राप्यकारी  
 ८६ मम श्रेणि और विपमश्रेणि में सुनने योग्य शब्द  
 ८७ मति-ज्ञान के ममानार्थक शब्द

सूत्र ३७ श्रुतज्ञान के चौदह भेद

३८ क- अक्षर श्रुत के तीन भेद

ख- प्रत्येक भेद की व्याख्या

ग- अनक्षर श्रुत के अनेक भेद

३९ संज्ञि और असंज्ञि श्रुत के तीन भेद, प्रत्येक भेद की व्याख्या

४० सम्यक् श्रुत की व्याख्या

४१ मिथ्या श्रुत की व्याख्या

४२ क- सादि सान्त और अनादि अनन्त श्रुत के चार भेद

ख- सादि सान्त और अनादि अनन्त श्रुत के वैकल्पिक दो भेद

ग- ज्ञानावरण से अनावृत आत्म-प्रदेशों के आवृत होने पर अजीव होने की आशङ्का

घ- मेघाच्छादित चन्द्र-सूर्य का उदाहरण

४३ क- गमिक, अगमिक श्रुत

ख- श्रुतज्ञान के वैकल्पिक दो भेद

ग- अंगवाह्य श्रुत के दो भेद

घ- आवश्यक के छः भेद

ङ- आवश्यक व्यतिरिक्त के दो भेद

च- उत्कालिक श्रुत के अनेक भेद

छ- कालिक श्रुत के अनेक भेद

४४ अङ्ग प्रविष्ट युग के १२ भेद

४५ ५५ व्याचाराङ्ग यावन विपाक का वर्णन

५६ क दृष्टिवाद के पांच विभाग

ख- परिक्र्म के सात विभाग

ग सूत्र के बावीस विभाग

घ पूर्व चौदह

ङ- अनुयोग के दो विभाग

च पूर्वों की चूनिना

छ दृष्टिवाद का संक्षिप्त परिचय

५७ क गणिपिटक के विषय

ख गणिपिटक की विराचना का फल

ग गणिपिटक की आराधना का फल

घ गणिपिटक की नित्यता

भाषा ६४ ६५ अपृगुणधुतल को धुत का लाभ

६६ अनुशोध व्याख्या विधि

६७ शास्त्र ग्रहण करने वाले के सात कर्तव्य

णमो अणुभोगवराणं धेराणं

## द्रव्यानुयोग प्रधान अनुयोगद्वार सूत्र

द्वार	४
उपलब्ध मूलपाठ	१८६६ श्लोक प्रमाण
राघ सूत्र	१५२
पद्य सूत्र	१४३





## अनुयोग-द्वार विषय-सूची

- १ पाँच ज्ञान
- २ श्रुतज्ञान उद्देश आदि चार भेद
- ३ अनङ्ग प्रविष्टिक अनुयोग
- ४ उत्कालिक अनुयोग
- ५ आवश्यक के श्रुतस्कंध और अध्ययन
- ७ क- आवश्यक के निक्षेप कहने का संकल्प  
ख- श्रुत के निक्षेप कहने का संकल्प  
ग- स्कंध के निक्षेप कहने का संकल्प  
घ- अध्ययन के निक्षेप कहने का संकल्प
- ८ आवश्यक के चार निक्षेप
- ९ नाम आवश्यक की व्याख्या और उदाहरण
- १० स्थापना आवश्यक की व्याख्या और उदाहरण
- ११ नाम और स्थापना की विशेषता
- १२ द्रव्य आवश्यक के दो भेद
- १३ द्रव्य आवश्यक की व्याख्या
- १४ द्रव्य आवश्यक के सप्त नय
- १५ नो आगम (भाव रहित) द्रव्य आवश्यक के तीन भेद
- १६ ज्ञ-शरीर (आवश्यक जानने वाले का मृत शरीर) द्रव्याव-  
श्यक की व्याख्या और उदाहरण
- १७ भव्य शरीर (भाविशरीर से आवश्यक जानेगा) द्रव्यावश्यक  
की व्याख्या और उदाहरण
- १८ ज्ञ-शरीर, भव्य शरीर व्यतिरिक्त (भिन्न) द्रव्यावश्यक के

- १६ लौकिक द्रव्यावश्यक की व्याख्या  
 २० कृत्रावचनिक द्रव्य आवश्यक की व्याख्या  
 २१ लोकोत्तर द्रव्य आवश्यक की व्याख्या  
 २२ भाव आवश्यक के दो भेद  
 २३ आगम भाव आवश्यक की व्याख्या  
 २४ नो आगम भाव आवश्यक के तीन भेद  
 २५ लौकिक भाव आवश्यक की व्याख्या  
 २६ कृत्रावचनिक भाव आवश्यक की व्याख्या  
 २७ लोकोत्तर भाव आवश्यक की व्याख्या  
 २८ क लोकोत्तर भाव आवश्यक के पर्यापिवाची  
 ख आवश्यक की परिभाषा  
 २९ धुत के चार निशेष  
 ३० नाम धुत की व्याख्या और उदाहरण  
 ३१ क- स्थापना धुत की व्याख्या और उदाहरण  
 ख- नाम और स्थापना की विभाषना  
 ३२ द्रव्य धुत के दो भेद  
 ३३ क आगम स द्रव्य धुत की व्याख्या  
 ख " , व्याख्या विचारणा  
 ३४ नो आगम स द्रव्य धुत के तीन भेद  
 ३५ ज शरीर द्रव्य धुत की व्याख्या और उदाहरण  
 ३६ भव्य शरीर द्रव्य धुत की व्याख्या और उदाहरण  
 ३७ क ज शरीर और भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य धुत की व्याख्या  
 ख उसके पाँच भेद  
 ग प्रत्येक भेद की व्याख्या  
 (१) कीटज द्रव्य धुत सूत्र के पाँच भेद  
 (२) बाणज द्रव्य धुत-सूत्र-के पाँच भेद  
 ३८ भाव धुत के दो भेद

- ३६ आगम भाव श्रुत की व्याख्या  
 ४० नो आगम भाव श्रुत के दो भेद  
 ४१ नो आगम लौकिक भाव श्रुत की व्याख्या  
 ४२ नो आगम लौकोत्तर भाव श्रुत     "     "  
 ४३ श्रुत के पर्यायवाची  
 ४४ स्वयं के चार निक्षेप  
 ४५ नाम-स्वापना-सूत्र ३०, ३१ के ममान  
 ४६ क- द्रव्य स्वयं के दो भेद  
 ग- आगम द्रव्य स्वयं की व्याख्या और भेद  
 ग- ज-शरीर, भव्य शरीर, व्यतिरिक्त द्रव्यस्वयं के तीन भेद  
 ४७ मन्त्रित द्रव्य स्वयं अनेक प्रकार का  
 ४८ अचित्त द्रव्य स्वयं अनेक प्रकार का  
 ४९ मिश्र द्रव्य स्वयं अनेक प्रकार का  
 ५० ज-शरीर, गव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्यस्वयं के वैकल्पिक  
 तीन भेद  
 ५१ कृत्स्न-पूर्ण द्रव्यस्वयं अनेक प्रकार का  
 ५२ अकृत्स्न-अपूर्ण-द्रव्यस्वयं अनेक प्रकार का  
 ५३ अनेक द्रव्य वाले स्वयं की व्याख्या  
 ५४ भावस्वयं के दो भेद  
 ५५ आगम भावस्वयं की व्याख्या  
 ५६ नो आगम भावस्वयं की व्याख्या  
 ५७ स्वयं के पर्यायवाची  
 ५८ आवश्यक के छः अध्ययनों के विषय  
 ५९ क- आवश्यक के छः अध्ययन  
 ग- प्रथम अध्ययन के चार अनुयोग-द्वार  
 ६० क- उपक्रम के छः निक्षेप  
 ग- द्रव्य उपक्रम के दो भेद

- ग ज-दारीर, भक्ष्य दारीर स्थितिरिक्त इध्य उपक्रम के तीन भेद  
 ६१ क- त्रिविध इध्य उपक्रम के तीन भेद  
 ग- प्रत्यक्ष के दो दो भेद  
 ६२ द्विपद उपक्रम की व्याख्या  
 ६३ त्र्यनुपद उपक्रम की व्याख्या  
 ६४ अणु उपक्रम की व्याख्या  
 ६५ अविज्ञ इध्य उपक्रम की व्याख्या  
 ६६ मिश्र इध्य उपक्रम की व्याख्या  
 ६७ दोष उपक्रम की व्याख्या  
 ६८ ज्ञान उपक्रम की व्याख्या  
 ६९ क भाव उपक्रम के दो भेद  
 ग नो ज्ञानम भाव उपक्रम के दो भेद  
 ग प्रत्यक्ष भेद की व्याख्या  
 ७० उपक्रम के वैकल्पिक ६ भेद  
 ७१ आनुपूर्वी के दस भेद  
 ७२ क इध्य आनुपूर्वी के दो भेद  
 ग आद्यम इध्यानुपूर्वी की व्याख्या और नव विचारणा  
 ग- नो ज्ञानम इध्यानुपूर्वी के तीन भेद, प्रत्येक भेद की व्याख्या  
 ग- ज गरीर, भक्ष्य दारीर स्थितिरिक्त इध्यानुपूर्वी के दो भेद  
 इ- अनौपनिषिकी इध्यानुपूर्वी के दो भेद  
 ७३ नैवम और व्यवहार नव से अनौपनिषिकी इध्यानुपूर्वी के पाँच भेद  
 ७४ अर्थपद प्ररूपणा, इध्यानुपूर्वी की व्याख्या  
 ७५ अर्थपद प्ररूपणा का प्रयोजन  
 ७६ नैवम व्यवहार नव से अर्थपद प्ररूपणा के छठीन भग  
 ७७ अणु रूपन का प्रयोजन  
 ७८ नैवम-व्यवहार नव से अणु रूपन के आठ विचारण

- ७६ नैगम-व्यवहार नय मे समवतार की ध्याग्या  
 ८० अनुगम के नो भेद  
 ८१ क- नैगम-व्यवहार नय से आनुपूर्वी द्रव्यों की सत् पद प्ररूपणा  
 ग- नैगम-व्यवहार नय से अनानुपूर्वी द्रव्यों की सत् पद प्ररूपणा  
 ग- नैगम-व्यवहार नय मे अवयवतव्य द्रव्यों की सत् पदप्ररूपणा  
 ८२ नैगम-व्यवहार नय मे आनुपूर्वी अनानुपूर्वी और अवयवतव्य द्रव्यों का प्रमाण  
 ८३ नैगम-व्यवहार नय मे आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी. और अवयवतव्य द्रव्यों का क्षेत्र प्रमाण  
 ८४ नैगम-व्यवहार नय मे आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और अवयवतव्य द्रव्यों की क्षेत्र स्पर्शना  
 ८५ नैगम-व्यवहार नय से आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और अवयवतव्य द्रव्यों की कात मर्यादा  
 ८६ नैगम-व्यवहार नय मे आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी व अवयवतव्य द्रव्यों का अन्तर काल  
 ८७ नैगम-व्यवहार नयसे आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और अवयवतव्य द्रव्यों का क्षेत्र द्रव्यों की अपेक्षा परिमाण  
 ८८ नैगम-व्यवहार-नयसे आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और अवयवतव्य द्रव्यों की छः भावों में विचारणा  
 ८९ नैगम-व्यवहार-नय से आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और अवयवतव्य द्रव्यों के देश-प्रदेश और उभय की अल्प-बहुत्व  
 ९० संग्रह नय की अपेक्षा से अनीपधिकी द्रव्यानुपूर्वी के पाँच भेद  
 ९१ संग्रह नय से आनुपूर्वी-अनानुपूर्वी और अवयवतव्य स्कंध प्रदेशों की अर्यपद प्ररूपणा  
 ९२ क- अर्थ-पद प्ररूपणा का प्रयोजन  
 ख- संग्रह नय सप्तभंगी का र  
 ग- भंग कथन का प्रयोजन

- ६३ सप्रह नय से भग दान
- ६४ सप्रह नय से समवनार की व्याख्या
- ६५ क सप्रह नय मे अनुभम के आठ भेद  
ख सप्रह नय स आठ भेदों की व्याख्या
- ६६ औपनिषिती द्रव्यानुपूर्वी के तीन भेद
- ६७ क पूर्वानुपूर्वी की व्याख्या  
ख पदचानुपूर्वी की व्याख्या  
ग अचानुपूर्वी की व्याख्या
- ६८ क औपनिषिती द्रव्यानुपूर्वी के वैकल्पिक तीन भेद  
ख प्रत्येक भेद की व्याख्या
- ६९ क्षेत्रानुपूर्वी के दो भेद
- १०० अनौपनिषिती क्षेत्रानुपूर्वी के दो भेद
- १०१ क नैगम-व्यवहार नय मे अनौपनिषिती क्षेत्रानुपूर्वी के पांच भेद  
ख प्रत्येक भेद प्रभेद की व्याख्या
- १०२ क नैगम-व्यवहार नय से अनौपनिषिती क्षेत्रानुपूर्वी के पांच भेद  
ख प्रत्येक भेद प्रभेद की व्याख्या
- १०३ क औपनिषिती क्षेत्रानुपूर्वी के तीन भेद  
ख नियम्लोक क्षेत्रानुपूर्वी के तीन भेद  
घ उध्वनाक क्षेत्रानुपूर्वी के तीन भेद  
ङ- औपनिषिती क्षेत्रानुपूर्वी के वैकल्पिक तीन भेद
- १०४ कानानुपूर्वी के दो भेद
- १०५ अनौपनिषिती कानानुपूर्वी के दो भेद
- १०६ नैगम व्यवहार नय मे अनौपनिषिती कानानुपूर्वी के पांच भेद
- १०७ १११ प्रत्येक भेद प्रभेद की व्याख्या
- ११२ सप्रह नय मे अनौपनिषिती कालानुपूर्वी के पांच भेद
- ११३ ११४ प्रत्येक भेद की व्याख्या
- ११५ उत्कीर्तनानुपूर्वी के तीन भेद

- ११६ गणना-आनुपूर्वी के तीन भेद  
 ११७ संस्थान-आनुपूर्वी के तीन भेद  
 ११८ समाचारी आनुपूर्वी के तीन भेद  
 ११९ भाव आनुपूर्वी के तीन भेद  
 १२० नाम आनुपूर्वी के दस भेद  
 १२१ एक नाम आनुपूर्वी की व्याख्या  
 १२२ क- दो नाम आनुपूर्वी के दो भेद  
 ख- दो नाम आनुपूर्वी के वैकल्पिक दो भेद  
 १२३ क- तीन नाम आनुपूर्वी के तीन भेद  
 ख- द्रव्य नाम आनुपूर्वी के छः भेद  
 ग- गुणनाम आनुपूर्वी के पाँच भेद  
 घ- पर्यवनाम आनुपूर्वी के अनेक भेद  
 १२४ चार नाम आनुपूर्वी के चार भेद  
 १२५ पाँच नाम आनुपूर्वी के पाँच भेद  
 १२६ क- छः नाम आनुपूर्वी के छः भेद  
 ख- औदयिक भाव आनुपूर्वी के दो भेद  
 ग- प्रत्येक भेद की व्याख्या  
 घ- औपशमिक भाव आनुपूर्वी के भेद  
 ङ- प्रत्येक भेद की व्याख्या  
 च- क्षायिक भाव आनुपूर्वी के दो भेद  
 छ- प्रत्येक भेद की व्याख्या  
 ज- क्षायोपशमिक भाव आनुपूर्वी के दो भेद  
 झ- प्रत्येक भेद की व्याख्या  
 ञ- परिणामिक भाव आनुपूर्वी के दो भेद  
 ट- प्रत्येक भेद प्रभेद की व्याख्या  
 ठ- सांनिपातिक भाव आनुपूर्वी की व्याख्या



ड सानिपातिक भाव आनुपूर्वी के द्विक मयोगी-धावत्-पचक सयोगी भावे

१२७ क- सात नाम आनुपूर्वी के सात भेद

ख सात स्वरो की व्याख्या

१२८ क आठ नाम आनु पूर्वी के आठ भेद

ख आठ विभक्तियों की व्याख्या

१२९ क- नव नाम आनुपूर्वी के नौ भेद

ख नौ काव्य रसों की उदाहरण सहित व्याख्या

१३० क दस नाम आनुपूर्वी के दस भेद

ख गुणनिष्पन्न नाम आनुपूर्वी की व्याख्या

ग- निर्गुण निष्पन्न नाम आनुपूर्वी की व्याख्या

घ- आदान पद आनुपूर्वी की व्याख्या

ङ- प्रतिपक्ष पद आनुपूर्वी की व्याख्या

च प्रधान पद आनुपूर्वी की व्याख्या

छ- अनादिभिद्ध नाम आनुपूर्वी की व्याख्या

ज- नाम आनुपूर्वी की व्याख्या

झ- अवयव आनुपूर्वी की व्याख्या

ञ- सयोग आनुपूर्वी के चार भेद

ट- प्रत्येक भेद की व्याख्या

ठ- प्रमाण आनुपूर्वी के चार भेद

ड- नाम प्रमाण की व्याख्या

ढ- स्थापना प्रमाण के सात भेदों की व्याख्या

ण- द्रव्य प्रमाण के छ भेद

त भाव प्रमाण के चार भेद

थ- समास के सात भेद

द- तद्धित के आठ भेद

ध- धातु के अनेक भेद

न- निर्यात की व्याख्या

१३१ प्रमाण के चार भेद

१३२ क- द्रव्य प्रमाण के दो भेद

ख- प्रदेश निष्पन्न की व्याख्या

ग- विभाग निष्पन्न के पाँच भेद

घ- मान प्रमाण के दो भेद

ङ- उन्मान प्रमाण की व्याख्या

च- अवमान प्रमाण की व्याख्या

छ- अवमान प्रमाण का प्रयोजन

ज- गणित प्रमाण की व्याख्या

झ- गणित प्रमाण का प्रयोजन

१३३ क- क्षेत्र प्रमाण के दो भेद

ख- प्रत्येक भेद की व्याख्या

ग- अंगुल प्रमाण के तीन भेद

घ- आत्मांगुल प्रमाण की व्याख्या

ङ- आत्मांगुल प्रमाण का प्रयोजन

च- उत्सेधांगुल के अनेक भेद

छ- उत्सेधांगुल प्रमाण का प्रयोजन

चौबीस दण्डक के जीवों की अवगाहना

ज- प्रमाणांगुल की व्याख्या

झ- प्रमाणांगुल प्रमाण का प्रयोजन

ञ- प्रमाणांगुल के तीन भेद

ट- प्रत्येक भेद की व्याख्या

१३४ काल प्रभाव के दो भेद

१३५ प्रदेश निष्पन्न काल प्रमाण की व्याख्या

१३६ विभागनिष्पन्न काल प्रमाण की व्याख्या

१३७ क- समय की व्याख्या

- स आबनिजा-यावन् नीचप्रहेनिका पयत्त गमना कान  
 ग औपमिह कान के दो भेद  
 घ पत्सोपम के तीन भेद  
 ङ प्रत्येक भेद की व्याख्या  
 च सागरोपम का की व्याख्या  
 १३८ पत्सोपम सागरोपम कान का प्रयोजन  
 १३९ चौबीस दण्डक क जीवा की स्थिति  
 १४० क क्षेत्र पत्सोपम के दो भेद  
 म व्यवहारिक क्षेत्र पत्सोपम एवं सागरोपम की व्याख्या और  
 उमका प्रयोजन  
 १४१ क द्रव्य के दो भेद  
 स अजीव द्रव्य क दो भेद  
 ग अक्षुणी अजीव द्रव्य के दस भेद  
 घ क्षुणी अजीव द्रव्य के चार भेद  
 ङ अनन्त जीवद्रव्य  
 १४२ चौबीस दण्डक म पाँच दारीरो की बद्ध गुणत विचारणा  
 १४६ क भाव प्रमाण के तीन भेद  
 स प्रत्येक भेद प्रभेद का वर्णन  
 ग जीव गुण प्रमाण के तीन भेद  
 घ ज्ञान गुण प्रमाण के चार भेद  
 ङ प्रत्यक्ष अनुमान उपमान और आगम प्रमाण की व्याख्या  
 १४४ क दानन गुण प्रमाण के चार भेद  
 स चारित्र गुण प्रमाण के पाँच भेद  
 १४५ क त्वय प्रमाण के तीन भेद  
 स प्रत्येक दृष्टान्त  
 ग वसति दृष्टान्त  
 घ प्रवेग दृष्टान्त

- १४६ क- संख्या प्रमाण के आठ भेद  
 ख- प्रत्येक भेद की व्याख्या  
 ग- संख्यात असंख्यात और अनन्त की व्याख्या
- १४७ क- वक्तव्यता के तीन भेद,  
 ख- स्वसमय, परसमय और उभयसमय की नयों से व्याख्या
- १४८ आवश्यक के छः अर्थाधिकार
- १४९ आवश्यक के छः समवतार (चिन्तन)
- १५० क- निक्षेप के तीन भेद  
 ख- प्रत्येक भेद की व्याख्या
- १५१ क- अनुगम के दो भेद  
 ख- नियुक्ति अनुगम के तीन भेद  
 ग- प्रत्येक भेद की व्याख्या
- १५२ सात नय की व्याख्या



पमो वायणारियाणं

## चरणानुयोगमय वृहत्कल्प सूत्र

उद्देशक	६
अधिरार	८१
उपलब्ध मूल पाठ	१०३ ग्लोफ
मूत्र संग्रहा	२०६



## वृहत्कल्प विषय-सूचि

प्रथम उद्देशक

एषणा समिति

एषणा ग्रहणैषणा आहार कल्प

- १-५ कदलीफल के सम्बन्ध में विधि निषेध  
एषणा-परिभोगैषणा उपाश्रय कल्प
- ६-९ ग्राम-यावत्-राजधानी में रहने की काल मर्यादा
- १०-११ ग्राम-यावत्-राजधानी में निर्ग्रन्थी निवास सम्बन्धी विधि-निषेध
- १२-१३ दुकान-यावत्-दो दुकानों के मध्य के स्थान में निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थी  
निवास सम्बन्धी विधि-निषेध.
- १४-१५ कपाट रहित स्थान में निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थी निवास सम्बन्धी विधि-  
निषेध  
एषणा-परिभोगैषणा पात्र कल्प
- १६-१७ प्रथवण पात्र [ निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थी ] सम्बन्धी विधि निषेध  
एषणा-परिभोगैषणा वस्त्रकल्प
- १८ चिलमिलिका-परदा [ निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थी ] सम्बन्धी विधि निषेध  
एषणा स्थान आचार कल्प
- १९ जलाशय तट पर [ निर्ग्रन्थियों के लिए ] निषिद्ध कृत्य  
एषणा-गवेषणा वसति उपाश्रय कल्प
- २०-२१ चित्र सहित और चित्र रहित वसति में निर्ग्रन्थी निवास सम्बन्धी  
विधि निषेध  
एषणा-परिभोगैषणा वसति-निवास
- २२-२३ स्त्री के साथ निर्ग्रन्थी वसति निवास सम्बन्धी विधि-निषेध
- २४ पुरुष के साथ निर्ग्रन्थ वसति निवास सम्बन्धी विधि-निषेध



- २५ गृहस्थ के निवास स्थान में निग्रथ निग्रथी निवास निषेध
- २६ गृहस्थ रहित स्थान में निग्रथ निग्रथी के निवास का विधान
- २७ केवल स्त्री निवासवाले स्थान में निग्रथ निवास निषेध
- २८ केवल पुरुष निवास वाले स्थान में निवास विधान
- २९ केवल पुरुष निवासवाले स्थान में निग्रथी निवास निषेध
- ३० केवल स्त्री निवास वाले स्थान निग्रथी निवास विधान
- ३१ ३२ प्रतिबद्ध—शम्पा ठहरने के स्थान में निग्रथ निग्रथी निवास सम्बन्धी विधि निषेध
- ३३ ३४ गृहमध्य माण्डव स्थान में निग्रथी निग्रथी निवास सम्बन्धी विधि निषेध  
सद्य व्यवस्था
- ३५ कनह उपशमन क्षमापाचना  
[ आराधना विराधना ]  
ईया भूमिति विहार विषयक करण
- ३६ वर्षा ऋतु में निग्रथ निग्रथियों के विहार का निषेध  
प्रायश्चित्त सूत्र
- ३८ क राजा गृहीत राज्य में और शत्रु राज्य में निग्रथ निग्रथियों के जाने आने का निषेध  
ख जावे आवे तो प्रायश्चित्त  
पण्डिता समिति छाहार वस्त्र पात्र रजोहरण
- ३९ ४२ क आार गवेपणा  
ख वस्त्र पात्र और रजोहरण ग्रहणपणा  
ग गोचरा के चिये गये हुए निग्रथ निग्रथियों को वस्त्र पात्र रजोहरणा स्निधान की विधि  
घ स्वाध्याय भूमि के निमित्त गये हुए गण उपरोक्त के समान  
ङ स्थम्भित गौच भूमि के निमित्त गये हुए

## आहार ग्रहणपणा

- ४३ रात्रि तथा सन्ध्याकाल में [निग्रंथ-निग्रंथियों के] आहार लेने का निषेध । शय्या, संस्तारक ग्रहणपणा
- ४४ रात्रि तथा सन्ध्याकाल में [निग्रंथ-निग्रंथियों को] पूर्वं याचित एवं प्रेक्षित शय्या संस्तारक लेने का विधान.  
वस्त्र पात्र रजोहरण ग्रहणपणा
- ४५ रात्रि तथा सन्ध्या काल में [निग्रंथ-निग्रंथियों को] वस्त्र पात्र और रजोहरण लेने का निषेध.
- ४६ नुराये हुये वस्त्र पात्र रजोहरण लीटावे तो लेने का विधान.  
इया समिति-विहार कल्प
- ४७ रात्रि तथा सन्ध्याकाल में निग्रंथ निग्रंथियों के विहार का निषेध  
पण्डिता समिति—आहार गवेपणा
- ४८ सामूहिक भोज में निग्रंथ-निग्रंथियों को आहार के लिये जाने का निषेध  
संघ व्यवस्था
- ४९-५० क- रात्रि में तथा सन्ध्या में स्वाध्याय भूमि के निमित्त  
ग- रात्रि में तथा सन्ध्या में शौच-भूमि के निमित्त निग्रंथ-निग्रंथियों को अकेले जाने का निषेध.  
इया समिति विहार कल्प
- ५९ निग्रंथ-निग्रंथियों के विहार क्षेत्र की मर्यादा.  
द्वितीय उद्देशक  
पण्डिता समिति-वसति कल्प  
वसति गवेपणा
- १-१० क- शाली आदि धान्यवाले स्थान में निग्रंथ-निग्रंथी निवास संबंधी विधि-निषेध

ए सुरा आदि के भाण्डवाले स्थान मे  
 ग पानी-पात्र वाले स्थान मे  
 घ- दीपक, अग्नि आदि जलनेवाले स्थान मे  
 ङ- दूध दही आदि खाद्य पेय वाले स्थान मे—  
 वसति प्रदुर्गपणा

- ११ निग्रन्धिया के लिये निषिद्ध निवास स्थान  
 १२ निग्रन्धियो क लिये विहित निवास स्थान  
 सघ व्यवस्था  
 १३ सागारिक—ठहरने के लिए स्थान देने धारे स्थान स्वामी का  
 नियम  
 १४-२८ आहार प्रदुर्गपणा—निग्रन्ध निग्रन्धिया के लिये सागारिक मकान  
 मालिक के आहार सम्बन्धी विधि निषेध  
 वस्त्र परिभोगपणा  
 २९ निग्रन्धियो क लेने के योग्य पात्र प्रकार का वस्त्र  
 रजोहरण परिभोगपणा  
 ३० निग्र य निग्रन्धियो क लेने योग्य पात्र प्रकार के रजोहरण  
 तृतीय उद्देशक  
 सघ व्यवस्था  
 १ निग्रन्धो के उपाध्यय क निग्रन्ध के बैठने आदि का निषेध  
 २ निग्र य के उपाध्यय मे निग्रन्धो क बैठने आदि का निषेध  
 पण्डा मन्दिनि चर्म कल्प  
 ३ ६ निग्रन्ध निग्रन्धिया क लय सम्बन्धी विधि निषेध  
 वस्त्र कल्प प्रदुर्गपणा परिभोगपणा  
 ७ १० निग्र य निग्रन्धियो के वस्त्र सम्बन्धी विधि निषेध  
 ११ निग्रन्धो के लिये गुप्ताङ्ग आच्छादक आभय तर वस्त्र वीचीन  
 आदि रखने का निषेध

- १२ निर्ग्रन्थियों के लिए आम्यन्तर वस्त्र रखने का विधान
- १३-१४ निर्ग्रन्थी की वस्त्र ग्रहण विधि
- १५-१६ निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थियों की दीक्षा के समय वस्त्र पात्र रजोहरण लेने की मर्यादा
- १७ वर्षाकाल में [निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थियों को] वस्त्र लेने का निषेध
- १८ हेमन्त और ग्रीष्म में [निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थियों को] वस्त्र लेने का विधान
- १९ रात्निकों के लिये [निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थियों की] वस्त्र लेने की मर्यादा
- २० रात्निकों के लिये शय्या संस्तारक लेने की मर्यादा  
संघ-व्यवस्था
- २१ रात्निकों का वन्दना करने की मर्यादा
- २२ गृहस्थ के घर में  
क- बैठने आदि के सम्बन्ध में [निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थियों के] विधि निषेध  
ख- प्रश्नोत्तर आदि के सम्बन्ध में
- २३-२७ निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थियों के शय्या संस्तारक लेने देने सम्बन्धि नियम
- २८ निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थियों की भूल हुई वस्तुओं के परिभोग सम्बन्धि नियम  
पुण्या समिति—वसति कल्प
- २९-३१ स्वामी रहित स्थानों में निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थियों के ठहरने की विधि
- ३२ क- प्रायश्चित्त सूत्र, आहार ग्वेषणा  
मेना शिविरों के समीपवर्ती ग्रामों से आहार लाने की विधि  
ख- रात्रि में रहने का निषेध  
ग- रहे तो प्रायश्चित्त
- ३३ निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थियों के भिक्षाचर्या क्षेत्र की मर्यादा  
चतुर्थ उद्देशक

- २ प्रायश्चित्त सूत्र—पारिविश प्रायश्चित्त के अधिकारी
- ३ प्रायश्चित्त सूत्र—पुन दीक्षा के अयोग्य
- ४ दीक्षा के अयोग्य
- ५ साम्बोय ज्ञान प्राप्ति करने के अयोग्य
- ६ साम्बोय ज्ञान प्राप्ति करने के योग्य
- ७ जिन्हें समझाना अति कठिन है
- ८ जिन्हें समझाना सरल है
- ९-१० प्रायश्चित्त सूत्र—अप्य योग्य महायज्ञो के होने हुए ह्यप्य अवस्था मे विषम अवस्था मे निघ्न्यो निर्यन्य की और निघ्न्य निघ्न्यो की सेवा चाहे ता गुरु प्रायश्चित्त
- पूरणा स्वमिनि—परिभ्रीगैवशा
- ११ प्रायश्चित्त सूत्र—क्षान्तिनाम्त आहार का सेवन करे तो नपु प्रायश्चित्त
- १२ प्रायश्चित्त सूत्र—क्षेनाभियान्त आहार का सेवन करे तो नपु प्रायश्चित्त
- १३ शकारणद अवाह्य आहार सम्बन्धी विधि निषेध
- १४ क औहृष्टिक आहार की चोभवी
- सप्त व्यवस्था
- ख आवश्यक प्रतिक्रमण करने की मर्यादा
- गण्य सप्तमण्य
- १५ १७ क भिक्षु अथवा भिक्षुणी के गच्छ बदलने की विधि
- ख गणावच्छेदक के गच्छ बदलने की विधि
- ग आचार्य उपाध्याय के गच्छ बदलने की विधि
- घन्य गण्य के साथ आहार पानी का व्यवहार
- १८ २० क भिक्षु अथवा भिक्षुणी अचरण क साथ आहार पानी का व्यवहार करना चाहे तो उसकी विधि

ग- इमी प्रकार गणावच्छेदक

ग- इमी प्रकार आचार्य उपाध्याय

अन्य गण का अध्यापन

१-२३ क- भिक्षु अथवा भिक्षुणी अन्यगण के आचार्य-उपाध्याय को [प्रवर्तिनी आदि को] अध्यापन कराना चाहे तो उसकी विधि

ख- इमी प्रकार गणावच्छेदक

ग- इसी प्रकार आचार्य उपाध्याय

२४ मृत साधु सम्बन्धी विधि

कलह-उपशमन

२५ क- किसी के साथ कलह होने पर क्षमा याचना से पूर्व-आहार करने का निषेध

ख- किसी के साथ कलह होने पर क्षमा याचना से पूर्व-स्वाध्याय करने का निषेध

ग- किसी के साथ कलह होने पर क्षमा याचना से पूर्व-शीघ्र के लिए जाने का निषेध

घ- किसी के साथ कलह होने पर क्षमा याचना से पूर्व-विहार करने का निषेध

ङ- प्रायश्चित्त के लिये अन्यत्र जाने की विधि

वैशाख-विधि

२६ परिहार विशुद्ध चारित्र्य-तप-करने वाले की सेवा विधि  
इर्या समिति—नदी पार करने की मर्यादा

२७ पांच महानदियों को पार करने की विधि व मर्यादा

संघ व्यवस्था

२८-३६ तृणकुटी—पणकुटी आदि में

[वर्षा, हेमन्त और ग्रीष्म ऋतु में] रहने की विधि

- २ प्रायश्चित्त सूत्र—पारचिक प्रायश्चित्त के अधिकारी
- ३ प्रायश्चित्त सूत्र—पुन दीक्षा के अयोग्य
- ४ दीक्षा के अयोग्य
- ५ शास्त्रीय ज्ञान प्राप्त करने क अयोग्य
- ६ शास्त्रीय ज्ञान प्राप्त करने क योग्य
- ७ जिहें समझाना अनि कठिन है
- ८ जिहें समझाना सरल है
- ९ १० प्रायश्चित्त सूत्र—अप्य योग्य सहायकों के होने का हान अवस्था में विषम अवस्था में निग्रथी निग्रथ की और निग्रथ निग्रथी की सेवा चाहे तो गुरु प्रायश्चित्त
- पुपुषा समिति—परिभीर्गैश्या
- ११ प्रायश्चित्त सूत्र—कानार्तिशा त आहार का सेवन करे तो सधु प्रायश्चित्त
- १२ प्रायश्चित्त सूत्र—क्षेत्रा तथात आहार का सेवन करे तो सधु प्रायश्चित्त
- १३ गकार्त्त अग्राह्य आहार सम्बन्धी विधि निषेध
- १४ क औद्दृगिक आहार की चौभगी
- सद्य व्यवस्था
- ख वाचस्पक प्रतिश्रमण करने की मर्यादा
- गण सक्रमण
- १५ १७ क भिक्षु अथवा भिक्षुणी क गच्छ वस्त्रन की विधि
- ख गणावच्छेदक क गच्छ वस्त्रन की विधि
- ग आनाय उपाध्याय के गच्छ वस्त्रन की विधि
- अन्य गण के साथ आहार पानी का व्यवहार
- १८ २० क भिक्षु अथवा भिक्षुणी अथगण के साथ आहार पानी का व्यवहार करना चाह तो उसकी विधि

- २२-२३ निग्रन्धी के आत्तापना लेने सम्बन्धी विधि निषेध
- २४ निग्रन्धी के लिये दस अभिषहों का निषेध
- २५ निग्रन्धी के लिये भिक्षु प्रतिमाओं की आराधना का निषेध
- २६-३४ निग्रन्धी के लिये कतिपय आसनों से कार्यात्सर्ग करने का निषेध  
 ण्यपणा समिति—वस्त्र कल्प
- ३५-३६ निग्रन्ध निग्रन्धियों के आंकुचन पट्ट सम्बन्धी विधि निषेध  
 शय्या आसन परिभोगपणा
- ३७-४० निग्रन्ध निग्रन्धियों के शयनासन सम्बन्धी विधि-निषेध  
 पात्र परिभोगपणा
- ४१-४२ निग्रन्ध-निग्रन्धियों के तुम्बा पात्र सम्बन्धी विधि निषेध  
 प्रमार्जनिका—परिभोगपणा
- ४३-४४ निग्रन्ध निग्रन्धियों के प्रमार्जनिका सम्बन्धी विधि निषेध  
 रजोहरण परिभोगपणा
- ४५-४६ निग्रन्ध निग्रन्धियों के रजोहरण सम्बन्धी विधि-निषेध  
 रोग-चिकित्सा
- ४७-४८ निग्रन्ध निग्रन्धियों के मानव मूत्र लेने सम्बन्धी विधि-निषेध
- ४९-५३ क- निग्रन्ध निग्रन्धियों के कालातिप्रान्त आहार सम्बन्धी विधि-निषेध
- ख- निग्रन्ध निग्रन्धियों के कालातिप्रान्त विलेपन-सम्बन्धी विधि निषेध
- ग- निग्रन्ध निग्रन्धियों के कालातिप्रान्त अम्यङ्ग सम्बन्धी विधि निषेध
- घ- निग्रन्धियों के कालातिप्रान्त कल्कादि सम्बन्धी विधि-निषेध  
 संघ व्यवस्था-वैयावृत्य
- ५४ परिहार कल्प स्थित की स्थविर सेवा सम्बन्धी विशेष नियम



पञ्चम उद्देशक

- १४ चतुर्थं महाव्रत—प्रायश्चित्त सूत्र—देवी देवी वैक्य से रूप परिवर्तित कर निघ्न्य निघ्न्यी के साथ मंत्रित भवन करे और निघ्न्य निघ्न्यी उसका अनुमोदन करे ता गुरु प्रायश्चित्त  
 मर व्यवस्था—कलह उपशमन  
 प्रायश्चित्त सूत्र—कलह उपशमन से पूर्व गणान्तर सत्रमण का प्रायश्चित्त
- ६ १० ण्यशामभिति परिभोगैयणा  
 घने बादलो से आकाश आच्छादित हो उस समय यदि सूर्योन्म स पूर या सूर्यास्त पश्चान् आहार ले विद्या हो ता उसका गुरु प्रायश्चित्त
- ११ १२ मन्त्रेण आहार ने परठने (डालने) की विधि  
 चतुर्थं महाव्रत- प्रायश्चित्त सूत्र  
 निघ्न्यन्यियों के विशेष नियम
- १३ १४ निघ्न्यी पशु पतिया के स्वयं का अनुमोदन करे ता गुरु प्रायश्चित्त  
 सध व्यवस्था
- १५ निघ्न्यी के अकेली रहने का नियम
- १६ १८ क आहार-पानी के लिये निघ्न्यी को अकेली जाने का नियम  
 ख स्वाध्याय के लिये " " "  
 ग धौच के लिये " " "  
 घ अकेली निघ्न्यी के विहार करने का नियम
- १९ निघ्न्यी के नन्द रहने का नियम
- २० निघ्न्यी के करपात्र का नियम
- २१ निघ्न्यी के अनाहत देह रहने का नियम

## जीतकल्पसूत्र विषय-सूची

- गाथा १ क- प्रवचन वन्दना  
ख- अभिधेय-प्रायश्चित्त का संक्षिप्त वर्णन
- २-३ प्रायश्चित्त का माहात्म्य  
४ प्रायश्चित्त के दश भेद  
५-८ आलोचना प्रायश्चित्त के योग्य दोष  
९-१२ प्रतिक्रमण प्रायश्चित्त के योग्य दोष  
१३-१५ आलोचना और प्रायश्चित्त के योग्य दोष  
१६-१७ विवेक प्रायश्चित्त के योग्य दोष  
१८-२२ व्युत्सर्ग प्रायश्चित्त के योग्य दोष  
२३-२७ ज्ञानातिचारों के प्रायश्चित्त  
२८-३० दर्शनातिचारों के प्रायश्चित्त  
३१ प्रथम महाव्रत के अतिचारों का प्रायश्चित्त  
३२-३३ द्वितीय, तृतीय और पंचम महाव्रत के अतिचारों का प्रायश्चित्त  
३४ रात्रि भोजन विरति के अतिचारों का प्रायश्चित्त  
३५-३६ उपवास प्रायश्चित्त योग्य एषणा समिति के अतिचार  
३७-३८ आयम्ब्रल प्रायश्चित्त योग्य एषणा समिति के अतिचार  
३९ एकासन प्रायश्चित्त योग्य एषणा समिति के अतिचार  
४०-४२ पुरिमार्ध प्रायश्चित्त योग्य एषणा समिति के अतिचार  
४३-४४ निर्विकृति प्रायश्चित्त योग्य एषणा समिति के अतिचार  
४५-५६ तप प्रायश्चित्त योग्य कर्म  
६०-६३ सामान्य तथा विशेष दोष के अनुसार प्रायश्चित्त  
६४-६५ द्रव्य के अनुसार तप प्रायश्चित्त  
६६ क्षेत्र के अनुसार तप प्रायश्चित्त

- पूजना समिति—आहार कल्प
- ५५ निषिद्धी को एक घर से आहार मिलने पर दूसरे घर के लिये जाना या नहीं इसका निषेध  
पच्छ उद्देशक  
भाषा समिति
- १ निषेध निषिद्धियों के अवनव्य न कहने योग्य ६ वचन  
सद्यः स्थवस्था—प्रायश्चित्त विधान
- २ निषेध निषिद्धियों को प्रायश्चित्त देने के ६ प्रसङ्ग  
शिक्षिता निमित्त वैशाख्य
- ३ ६ निषेध निषिद्धियों की और निर्घृणी निषेध की विशेष  
प्रसंग से परिचर्या करे तो भगवान् की आज्ञा का अतिक्रमण  
नहीं करता
- ७ १२ निषिष्ट विशेष प्रसङ्गों में निषिद्धी की सहायता करे तो  
भगवान् की आज्ञा का अतिक्रमण नहीं करता
- १३ कल्प मर्यादा के पतिमन्वु—विनागक—६ कारण
- १४ कल्प स्थिति चारित्र्य ६ प्रकार का है



## जीतकल्पसूत्र विषय-सूची

- गाथा १ क- प्रवचन वन्दना  
ख- अभिधेय-प्रायश्चित्त का संक्षिप्त वर्णन
- २-३ प्रायश्चित्त का माहात्म्य  
४ प्रायश्चित्त के दश भेद  
५-८ आलोचना प्रायश्चित्त के योग्य दोष  
९-१२ प्रतिक्रमण प्रायश्चित्त के योग्य दोष  
१३-१५ आलोचना और प्रायश्चित्त के योग्य दोष  
१६-१७ विवेक प्रायश्चित्त के योग्य दोष  
१८-२२ व्युत्सर्ग प्रायश्चित्त के योग्य दोष  
२३-२७ ज्ञानातिचारों के प्रायश्चित्त  
२८-३० दर्शनातिचारों के प्रायश्चित्त  
३१ प्रथम महाव्रत के अतिचारों का प्रायश्चित्त  
३२-३३ द्वितीय, तृतीय और पंचम महाव्रत के अतिचारों का प्रायश्चित्त  
३४ रात्रि भोजन विरति के अतिचारों का प्रायश्चित्त  
३५-३६ उपवास प्रायश्चित्त योग्य एषणा समिति के अतिचार  
३७-३८ आयम्विल प्रायश्चित्त योग्य एषणा समिति के अतिचार  
३९ एकासन प्रायश्चित्त योग्य एषणा समिति के अतिचार  
४०-४२ पुरिमार्घ प्रायश्चित्त योग्य एषणा समिति के अतिचार  
४३-४४ निर्विकृति प्रायश्चित्त योग्य एषणा समिति के अतिचार  
४५-५६ तप प्रायश्चित्त योग्य कर्म  
६०-६३ सामान्य तथा विशेष दोष के अनुसार प्रायश्चित्त  
६४-६५ द्रव्य के अनुसार तप प्रायश्चित्त  
६६ क्षेत्र के अनुसार तप प्रायश्चित्त

- ६७ काल के अनुसार तप प्रायश्चित्त  
 ६८ मानसिक तप वा के अनुसार तप प्रायश्चित्त  
 ६९ गोताप अगोताप आदि सामान्य एवं विशिष्ट धर्मो  
 अनुसार प्रायश्चित्त रना  
 ७० धर्मणा के सामर्थ्य क अनुसार प्रायश्चित्त देना  
 ७१ ७२ कल्पस्थित और कल्पानीन को भिन्न २ प्रकार का  
 प्रायश्चित्त  
 ७३ जीनय त्र विधि  
 ७४ ७६ प्रतिसेवना के अनुसार प्रायश्चित्त  
 ८० ८२ छेद प्रायश्चित्त योग्य दोष  
 ८३ ८६ मूल प्रायश्चित्त योग्य दोष का सवन  
 ८७ ८९ अनवस्थाप्य प्रायश्चित्त के योग्य दोष का सेवन  
 ९४ १०२ अनवस्थाप्य और पाराचिक का वर्तमान में निषेध  
 १०३ उपसहार



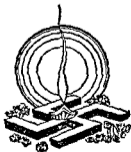
णमो अभयदयाणं

## चरणानुयोगमय व्यवहार सूत्र

उद्देशक	१०
उपलब्ध मूल पाठ	३७३ अनुष्टुप् दलोक प्रमाण
सूत्र संख्या	२६७

उद्देशक	सूत्र संख्या
१	३४
२	३०
३	२६
४	३२
५	२१
६	६
७	२३
८	१४
९	४५
१०	३०
	<hr/>
	२६७

- ६७ काल के अनुसार तप प्रायश्चित्त  
 ६८ मानसिक मन्त्रों के अनुसार तप प्रायश्चित्त  
 ६९ जीनकल्प अमानस्य अर्थात् सामान्य एवं विविध धर्मणो  
 अनुसार प्रायश्चित्त देना  
 ७० धर्मणा के सामान्य के अनुसार प्रायश्चित्त देना  
 ७१ ७२ कल्पस्थित और कल्पान्तीन को भिन्न २ प्रकार का  
 प्रायश्चित्त  
 ७३ जीनकल्प विधि  
 ७४ ७६ प्रतिसेवना के अनुसार प्रायश्चित्त  
 ८० ८२ द्वै- प्रायश्चित्त योग्य दोष  
 ८३ ८६ मूल प्रायश्चित्त योग्य दोष का सेवन  
 ८७ ९३ अनवस्थाप्य प्रायश्चित्त के योग्य दोष का सेवन  
 ९४ १०२ अनवस्थाप्य और पाराचिक्र का वर्तमान में विशेष  
 १०३ उपसंहार



णमो अभयदयाणं

## चरणानुयोगमय व्यवहार सूत्र

उद्देशक

१०

उपलब्ध मूल पाठ

३७३ अनुष्टुप् श्लोक प्रमाण

सूत्र संख्या

२६७

उद्देशक	सूत्र संख्या
१	३४
२	३०
३	२९
४	३२
५	२१
६	९
७	२३
८	१४
९	४५
१०	३०
	<hr/>
	२६७





## व्यवहार सूत्र विषय-सूची

### प्रथम उद्देशक

- १-२० निष्कपट और मकपट की आलोचना का प्रायश्चित्त  
 २१ पारिहारिक और अपारिहारिक का एक मास निवास  
 २२-२७ परिहार कल्प स्थित का सेवा के लिये अन्यत्र जाना  
 २५-३२ गण प्रवेश  
 क- गण में निकले हुए भिक्षु का पुनः गण प्रवेश  
 ग- " " गणावच्छेदक का पुनः गण-प्रवेश  
 ग- " " षाचार्य उपाध्याय का पुनः गण-प्रवेश  
 घ- पार्श्वस्थ भिक्षु का पुनः गण-प्रवेश  
 ङ- अपछन्द भिक्षु का पुनः गण-प्रवेश  
 च- कुशील भिक्षु का पुनः गण-प्रवेश  
 छ- अवगन्त भिक्षु का पुनः गण-प्रवेश  
 ज- मंगल, भिक्षु का पुनः गण-प्रवेश  
 ३३ पदचान्नापी की पुनः दीक्षा  
 ३४ आलोचना सुनने वाले योग्य व्यक्ति के अभाव में जिनके मामले  
 आलोचना करना उनका निर्देश

### द्वितीय उद्देशक

- १-४ प्रायश्चित्त काल में प्रमुख पद  
 क- दो में एक दोषी  
 ग- दो में दोनों दोषी  
 ग- अनेक में एक दोषी  
 घ- अनेक में सब दोषी

- ५ गण परिहार कल्पस्थित का नाश सेवन
- ६ १७ गण न निकालने का नियम
- क गणान परिहार कल्पस्थित को
- ख परिहार-कल्पस्थित को
- ग वारचिक प्रायश्चित्तस्थित को
- घ विंशत्य भिक्षु को
- ङ दशोत्सवभिक्षु को
- च दशविंश भिक्षु को
- छ उत्सव को
- ज उपसंग पीठित भिक्षु को
- झ शौचाद्य
- ञ प्रायश्चित्त सबी
- ट भवन पान प्रत्याख्यान भिक्षु को
- ठ मिष्ट प्रयोजन भिक्षु को
- गणावच्छेदक पद
- १८ २३ नाश मया को प्रमुख पद
- क भिक्षु-वेदी अन्तवस्थाप्य को न देना
- ख गृह वेदी को देना
- ग भिक्षु-वेदी वारचिक प्रायश्चित्त वेदी का न देना
- घ गृह वेदी को देना
- ङ च यज की सम्मति से दोनो को देना
- २४ कचक का निशय करना
- २५ मात्मन्तं का गण याग द्वार पुन गण प्रवेश से पुन मन्थिरो  
द्वारा नाश न निश्चय
- आचाय उपधायाय पद
- २६ गण की सम्मति से एक पत्नीय भिक्षु को आचाय उपधायाय पद  
देना

## परिहारकल्प और आहार-व्यवहार

- २७ पारित्यक्तः तीर अनादित्यक्त या परम्पर-व्यवहार  
 २८ पारित्यक्तः को म्परिगे को आजा मे आहार देना  
 रवधिर तेवा  
 २९ म्परिगे के दिने परिहार मन्वन्विन आहार पावे  
 ३० परिहार मन्वन्विन मन्व के पाप का उपयोग न करे

## तृतीय उद्देशक

- १-२ मण प्रमुग घनने का संकल्प  
 क- म्परिगे को पूरुदर मण प्रमुग घने  
 ग- बिना पूरे न घने  
 ग- बिना पूरे घने को प्रागन्विन  
 ३-१० मंघ प्रमुग पद  
 उपाध्याय पद  
 क- श्रुत चारित्र नम्पन्न तीन वर्ष के दीक्षित को देना  
 ग- श्रुत चारित्र रहित को न देना  
 आचार्य-उपाध्याय पद  
 ग- श्रुत चारित्र मन्वन्विन तीन वर्ष के दीक्षित को देना  
 ग- श्रुत चारित्र रहित को न देना  
 आचार्य, उपाध्याय और गणावच्छेदक पद  
 छ- श्रुत चारित्र नम्पन्न आठ वर्ष के दीक्षित को देना  
 च- श्रुत चारित्र रहित को न देना  
 छ- योग्य नव-दीक्षित को देना  
 ग- समय मे पतित योग्य व्यक्ति के पुनः संगमी घनने पर देना  
 ११-१२ प्रमुग के आधीन रहना

- क- तद्व्य निर्घन्थ को आचार्य उपाध्याय की मृत्यु के परचान् अन्य आचार्य-उपाध्याय की निष्ठा-आधीन रहना
- ख तद्व्य निर्घन्थी को अनराज्य प्रकार से रहना साथ ही प्रवर्तिनी की निष्ठा में रहना
- १३ २२ मीथुन सेवी भिक्षु और प्रमुख पद
- २३ २६ मृगावादी भिक्षु और प्रमुख पद
- चतुर्थ उद्देशक  
विहार-मर्यादा
- १ २ हेमन्त और शीतल में आचार्य उपाध्याय का एक अन्य निर्घन्थ सहित विहार
- ३-६ गणावच्छेदक का दो अन्य निर्घन्थ सहित विहार
- वर्षावास-मर्यादा
- ५ ६ दो अन्य निर्घन्थ सहित आचार्य उपाध्याय का वर्षावास
- ७-८ तीन अन्य निर्घन्थ सहित गणावच्छेदक का वर्षावास
- संघ सम्मेलन  
हेमन्त और शीतल में
- क ग्राम गणन-मन्त्रिणेण में मन्त्रिणिक अनेक आचार्य उपाध्यायों का हेमन्त और शीतल में एक एक निर्घन्थ सहित रहना
- ख गणावच्छेदक का दो दो निर्घन्थों के साथ रहना  
वर्षावास में
- १० क ग्राम य वन मन्त्रिणेण में आचार्य उपाध्यायों का दो दो निर्घन्थों सहित वर्षावास
- ख गणावच्छेदक का तीन तीन निर्घन्थों सहित वर्षावास
- ११ १२ प्रमुख निर्घन्थ की मृत्यु के परचान् प्रमुख पद
- क- हेमन्त और शीतल में

ख- वर्षादिगम में

ग- प्रमुख निर्ग्रन्थ के विना रहने पर प्रायश्चित्त

१३ घ- गण प्रमुख के आदेशानुसार प्रमुख पद देना

ङ- गण का विरोध होने पर प्रमुख पद का त्याग न करे तो प्रायश्चित्त

१४ च- अपध्यानी आचार्य-उपाध्याय के आदेशानुसार प्रमुख पद देना

छ- गण का विरोध होने पर प्रमुख पद का त्याग न करे तो प्रायश्चित्त

१५-१७ यावज्जीवन का सामायिक चारित्र

क-ग- उपस्थापना काल में उपस्थापना न करे तो आचार्य-उपाध्याय को प्रायश्चित्त

ग- कारणवश उपस्थापना न करे तो प्रायश्चित्त नहीं

१८ अन्य गण का श्राद्धन

प्रमुख निर्ग्रन्थ की निश्चा में रहना

बहुश्रुत की निश्चा में रहना

१९ स्वधर्मियों का साथ रहना

क- स्थविर को पूछ कर अनेक स्वधर्मों साथ रहें

ख- विना पूछे न रहे

ग- विना पूछे रहे तो प्रायश्चित्त

२०-२३ अकेले विचरने का प्रायश्चित्त

क- पाँच रात्रि पर्यन्त का प्रायश्चित्त

ख- पाँच रात्रि से अधिक का प्रायश्चित्त

ग- स्थविर के मिलने पर पाँच रात्रि पर्यन्त के प्रायश्चित्त की आलोचना

घ- स्थविर के मिलने पर पाँच रात्रि से अधिक के प्रायश्चित्त की आलोचना



प्रवर्तिनियों का चार-चार निर्ग्रन्थियों सहित तथा गणावच्छेदिनियों का पाँच-पाँच निर्ग्रन्थियों सहित निवास

### वर्षावास में

ग्राम यावत्-सन्निवेश में प्रवर्तिनियों का चार-चार निर्ग्रन्थियों सहित तथा गणावच्छेदिनियों का पाँच-पाँच निर्ग्रन्थियों सहित वर्षावास

११-१४ प्रमुख निर्ग्रन्थी की मृत्यु के पश्चात् प्रमुख पद

क- हेमन्त और ग्रीष्म में

ख- वर्षावास में

ग- बिना प्रमुख निर्ग्रन्थी के रहने पर प्रायश्चित्त

घ- रुग्ण प्रवर्तिनी के आदेशानुसार प्रवर्तिनी पद देना

ब- अपेक्ष्याना प्रवर्तिनी के आदेशानुसार प्रवर्तिनी पद देना

१५-१६ आचार प्रकल्प का विस्मरण और प्रमुख पद

क- प्रमाद से आचार प्रकल्प विस्मृत तरुण श्रमण को प्रमुख पद न देना

ख- शारीरिक द्विपत्ति से आचार-प्रकल्प विस्मृत तरुण को प्रमुख पद देना

ग-घ- तरुण निर्ग्रन्थी के 'क-ख' के समान दो विकल्प

ङ- आचार प्रकल्प स्थविर को प्रमुख पद देना

च- विस्मृत आचार प्रकल्प का पुनः कण्ठस्थ करना अनिवार्य

१६ आलोचना

क- आलोचना मुनने योग्य प्रमुख निर्ग्रन्थ के समीप आलोचना करना

ख- योग्य के अभाव में परस्पर आलोचना करना

२० वैद्यावृत्त्य-सेवा

क- निर्ग्रन्थ की निर्ग्रन्थी सेवा

ख- निर्ग्रन्थी की निर्ग्रन्थी सेवा



२१ सप्तश चिकि सा

- क निग्रय की सप्तश चिकि सा
- ख निग्रयो की सप्तश चिकि सा
- ग जिनकल्पी का आचार

षष्ठ उद्देशक

१ माह विषय और गवयणा

- क गुरु जना की आना मे सब सम्बन्धिया के घर भि राख जाना
- ख आचार लेने की विधि

२ अनिराध

आचार्य उपाध्याय के पांच अतिगय

३ एणावच्छेदक के दो अतिगय

४ ७ अल्पधन और बहुधन

- क निग्रय और निग्रयो को सबब छेत् सूत्र के पना के साथ रखा
- ख छेत् सूत्र के जाना के बिना रखा

८ ६ प्रायश्चित्त सूत्र द्वावय महायन

गुरु सब कर्म वाले को चानुसोनिह अनुष्थानिक प्रायश्चित्त

- १० ११ क अय गण की निग्रयो का प्रायश्चित्त बि दे बिना न भिजाना
- ख प्रायश्चित्त देकर भिजाना

सप्तम उद्देशक

१ क अय गण के निग्रयो का भिजाना

ख अन्य गण का निग्रयो का निग्रयो का भिजाना

२ ३ मन्वथ रिच्छेत्

मन्वथ दिते करना

ख इसी प्रकार निग्रयो का मन्वथ रिच्छेत् करना

४ ५ अनिल करना

क निग्रय द्वारा निग्रयो की दीक्षा

ग- निर्ग्रन्थी द्वारा निर्ग्रन्थ की दीक्षा

६-७ विहार

क- निर्ग्रन्थ का विहार

ख- निर्ग्रन्थी का विहार

८-९ क्षमा याचना

क- निर्ग्रन्थ की निर्ग्रन्थ से क्षमा याचना

निर्ग्रन्थ को निर्ग्रन्थी से क्षमा याचना

स्वाध्याय तथा वाचना देना

१०-११ विकट काल में स्वाध्याय करने का निषेध

१२-१३ अस्वाध्याय काल में स्वाध्याय करने का निषेध

१४ क- शारीरिक अस्वाध्याय होने पर स्वाध्याय करने का निषेध

ख- वाचना देने का विधान

उपाध्याय पद

१५ साध्वी को उपाध्याय पद देना

आचार्य पद

१६ साध्वी को आचार्य पद देना

मृत शरीर

१७ निर्ग्रन्थ के मृत शरीर को निर्ग्रन्थ एकान्त निर्जीव भूमि में छोड़े

वसती निवास

१८-१९ निर्ग्रन्थ की अवस्थिति में गृह या गृह विभाग के बेचने या किराये देने पर निर्ग्रन्थ के ठहरने के नियम

२० मकान मालिक की विधवा पुत्री या उसके पुत्र की भी आज्ञा लेना

२१ शून्य स्थानों में पथिक की आज्ञा लेना

२२-२३ राज्य परिवर्तन

नये राजा का राज्याभिषेक होने पर नये राजा की आज्ञा लेना

अष्टम उद्देशक

- १ वसति निवाम  
स्वदिरा की आपानुसार शमण का वसति विभाग में निवाम
- २-४ शक्या-मस्तारक  
सभी श्रुतुओं में आपभार के शक्या मस्तारक लाना
- ५ क स्वदिरा क उपकरण  
ख शक्या मस्तारक  
लौंगये हुए उपकरणों की दूसरी बार आना लाना  
ग शक्या मस्तारक अथवा ने जाने के नियम
- १० ११ आनागता की अनुपस्थिति में ठहरने की और आना लेने की विधि
- १२ १४ भूले हुए उपकरण को झौगना  
क गृहस्थ के घर में  
ख स्वाध्याय स्थान में  
ग नीच स्थान में  
घ माग में भूले हुए उपकरणों को लौटाना
- १५ अधिक पात्र  
अथ निग्र घ निग्र-घी के लिये स्वदिर की आपा में पात्र लाना
- १६ आहार-परिभाषण  
क आहार का प्रमाण  
ख प्रमाण न अधिक आहार खाने का निषेध  
नवम उद्देशक  
गृह स्थाना—  
१-३० वासनाकर गृहस्थानों का दास्य और अदास्य आहार  
३१ ३४ भिक्षु प्रतिमा  
क सप्त सप्तमिषा भिक्षु प्रतिमा

ख- अष्ट अष्टमिका भिक्षु प्रतिमा

ग- नव नवमिका " "

३५ मानव मूत्र सेवन विधि

क- लघु मोक प्रतिमा

ख- महा मोक प्रतिमा

३६-३६ शय्यातर—

गृहस्वामी का ग्राह्य-अग्राह्य आहार

भिक्षु प्रतिमा

४० अन्न दाति-धारा की संख्या

४१ पानि दाति-धारा की संख्या

४२-४३ अभिग्रह

क- तीन प्रकार के अभिग्रह

ख- " " के "

ग- " " के "

### दशम उद्देशक

१ भिक्षु प्रतिमा

क- यव मध्य चन्द्र प्रतिमा

ख- वज्र मध्य चन्द्र प्रतिमा

२ व्यवहार

पांच प्रकार का व्यवहार

३-१० श्रमण-परीक्षा

क- परोपकार करना और अभिमान करना श्रमण की चतुर्भंगी

ख- गण का उपकारना और " " " " "

ग- गण का संग्रह करना और " " " " "

घ- गण की शोभा बढ़ाना और " " " " "

ङ- गण की शुद्धि करना और " " " " "

- च वेद याग और धर्म-याग  
 छ धर्म त्याग और यज्ञ त्याग  
 ज प्रियधर्मी और हृदयधर्मी अमण की अनुभंगी
- ११ १२ आचार्य  
 क प्रवृत्त या उपस्थापना आचार्य चतुर्भंगी  
 ख उद्देशना वाचना
- १३ अज्ञेयान्ना शिष्य  
 शिष्य की अनुभंगी
- १४ स्थविर  
 तीन प्रकार के स्थविर
- १५ शिष्य  
 अल्पकालिक सामायक धारिष्य वाले तीन प्रकार के शिष्य
- १६ १७ दीक्षार्थी  
 लघु वय का दीक्षार्थी
- १८ ३३ अगमार्थ का अध्ययन काल
- ३४ वैयाकरण सेवा  
 क दण प्रकार की वैयाकरण  
 ख वैयाकरण का पत्न



दशमोऽध्यायः

## चरणानुयोगमय दशाश्रुतस्कंध सूत्र

आचार्य दशा

दशा	१०
प्रथमा दशा	१०३० अनुष्टुप् श्लोक प्रमाण
दश मूल	२१६
दश मूल	३२

---

प्रथमा दशा	गुण मन्वा २१
द्वितीया दशा	" २२
तृतीया दशा	" ३५
चतुर्थी दशा	" १६
पंचमी दशा	" २८
षष्ठी दशा	" २८
सप्तमी दशा	" ३४
अष्टमी दशा-वल्गु मूल	" १
नवमी दशा	" ४०
दशमी दशा	" ४०
	<hr/> २६८



## दशाश्रुतस्कंध विषय-सूची

### • प्रथमा दशा

१ उत्थानिका

२-२१ स्थविरोक्त वीम असमाधिस्थान  
द्वितीया दशा

१-३५ स्थविरोक्त इकवीस सबल दोष  
तृतीया दशा

१-३५ स्थविरोक्त तेतीस आशातना  
चतुर्थी दशा

१-१६ स्थविरोक्त आठ गणि सम्पदा  
विनय शिक्षा के चार भेद  
शिष्य-विनय के चार भेद  
• उपकरण उत्पादन के चार भेद  
सहायता के चार भेद  
गुणानुवाद के चार भेद  
गणभार वहन के चार भेद  
पंचमी दशा

१-२८ क- वाणिज्य ग्राम, दूतिपलाग चैत्य, जितशत्रु राजा, धारिणी  
रानी, भ० महावीर का समवसरण

ख- स्थविरोक्त दस चित्त समाधि स्थान

ग- दस चित्तसमाधि स्थान

• षष्ठी दशा

१-२८ क- स्थविरोक्त इग्यारह उपासक प्रतिमा



अक्रियावादी, और त्रिपावादी का वर्णन

सप्तमी दशा

१ ३४ स्थविरोक्त वारह भिक्षु प्रतिमा

अष्टमी पर्युषणा दशा

१ भ० महावीर के पांच कल्याण

नवमी दशा

१ ४० क- चणानगरी पुण भद्र चैत्य

कीर्णिक राजा धारिणी देवी

भ० महावीर का नमस्करण

ख तीस महामोहनीय स्थानों का वर्णन

दशमी आयती दशा

१ ४० क राजशूत्र, गुणशील चैत्य

शणिक भभसार

ख भ० महावीर का गदापण

घ शणिक का मारिषार भ० महावीर के दशन के लिये आना

घ शणिक और चेलणा को देखकर निग्रथ निग्रथियों के मन

में जो मकल्प पैदा हुए उनका वर्णन

ङ नव निदान कर्मों का वर्णन

च- निदान करने वालों की गति

छ निदान रहित समय का फल

ज निग्रथ निग्रथियों की आलोचना यावन् आराधना



णमो आचार्यकृष्णधराणं धेराणं

## चरणानुयोगमय निशीथ सूत्र

उद्देशक

२०

उत्पलध्व मूलपाठ

८१२ अनुष्टुप् श्लोक प्रमाण

गद्य सूत्र

१४०५



उद्देशक	सूत्र संख्या	उद्देशक	सूत्र संख्या
१	५८	११	६२
२	५९	१२	४२
३	७९	१३	७४
४	१११	१४	४५
५	७७	१५	१५४
६	७७	१६	५०
७	९१	१७	१५१
८	१७	१८	६४
९	२८	१९	३६
१०	४७	२०	५३
			<hr/>
			१४०५



## निशीथसूत्र विषय-सूचि

### प्रथम उद्देशक

- १-६ ब्रह्मचर्य-महाव्रत-प्रायश्चित्त  
वीर्यपात करना
- १० सुगंध  
सुगंधित पुष्प आदि सूघना  
प्रथम महाव्रत प्रायश्चित्त
- ११-१४ धन्यतीर्थ तथा गृहस्थ से कार्य करवाने का प्रायश्चित्त
- क- मार्ग आदि का निर्माण कार्य करवाना  
ख- पानी की नाली का निर्माण कार्य करवाना  
ग- छीका, डोरी का निर्माण कार्य करवाना  
घ- सूती, ऊनी डोरियों का निर्माण कार्य करवाना  
एपणा समिति का प्रायश्चित्त
- १५-३८ मूई, कैंची, नखहरणी और कर्ण-शोधनी सम्बन्धी नियमों  
का भंग करना
- ३९ पात्र का परिकर्म करना
- ४० दण्डादिका परिकर्म करना
- ४१-४६ पात्र का परिकर्म करना
- ४७-५६ वस्त्र का परिकर्म करना
- ५७ घर में धुआँ कराना
- ५८ सदोप आहार लेना
- द्वितीय उद्देशक
- १-८ रजोहरण  
अनावृत दारु दण्डवाले रजोहरण संबंधी प्रायश्चित्त



## पारिहारिक का अन्यतीर्थी गृहस्थ और अपारिहारिक के साथ रहना

- ४०-४३ क- भिक्षाचर्या में  
 ख- स्वाध्याय स्थल में  
 ग- शौच स्थल में  
 घ- विहार में

### एषणा समिति परिभोगैषणा-प्रायश्चित्त

- ४४-४६ पानी विषयक प्रायश्चित्त  
 ४७-४९ गृहस्वामी का आहार लेना  
 ५०-५८ शय्या-सस्तारक विषयक प्रायश्चित्त  
 ५९ मदीप प्रतिलेखना का प्रायश्चित्त  
 तृतीय उद्देशक

### एषणा समिति-प्रायश्चित्त

- १-१२ आहार की याचना सम्बन्धी प्रायश्चित्त  
 १३ एक घर में दुमरी वार भिक्षार्थ जाना  
 १४ सामूहिक भोज में भिक्षार्थ जाना  
 १५ सम्मुख लाया हुआ आहार लेना  
 ब्रह्मचर्य-महाव्रत-प्रायश्चित्त  
 १६-२१ पैरों का संस्कार करना  
 २२-२७ शरीर का संस्कार करना  
 २८-४० चिकित्सा करना  
 ४१-६७ प्रत्येक अंग उपांग का संस्कार करना  
 ६८ कपड़े आदि से मस्तक ढकना  
 ६९ वशीकरण यंत्र करना  
 ७०-७७ मल-मूत्रादि त्याग सम्बन्धी अविवेक करना

- ६ गंध  
समन्वित लेख अथवा मसूदा  
प्रथम मसूदा प्रायश्चित्त
- १० मास आदि का निर्माण काय करना
- ११ पानी की नाली का निर्माण काय करना
- १२ छारा डोरी का निर्माण काय करना
- १३ मूर्त्त आदि को टाँगियों का निर्माण काय करना
- १४ १७ मूर्त्त कबो नगहरणा और कण गादनी सम्बन्धी विषयों का भंग करना
- १८ १९ द्वितीय महाजन प्रायश्चित्त  
भाषा समिति प्रायश्चित्त
- २० तृतीय महाजन प्रायश्चित्त
- २१ ब्रह्मचर्य महाजन प्रायश्चित्त  
हस्तादि घनासन का प्रायश्चित्त  
एषणा समिति प्रायश्चित्त
- २२ अक्षरद्वय रचना
- २३ अक्षरद्वय रचना
- २४ अक्षरद्वय रचना
- २५ पाठ परिक्रम करना
- २६ अक्षरद्वय परिक्रम करना
- २७ ३१ अक्षरद्वय की अन्ता क बिना अक्षरद्वय रचना  
एषणा समिति परिभोग्यणा प्रायश्चित्त
- ३२ ३६ आहार विषयक प्रायश्चित्त
- ३७ संद्वय एक स्थान पर रहना
- ३८ दानार की प्रशंसा करना  
एषणा समिति प्रायश्चित्त
- ३९ स्व सम्बन्धियों से आहार लेना

- २५-३३ दण्डे आदि का रगना  
 ३४ नये ग्राम आदि में भिक्षार्थ जाना  
 ३५ नई खानों में भिक्षार्थ जाना  
 ३६-५६ विविध प्रकार के वाद्य बनाना  
 ६०-६२ सदोष शय्या का उपयोग करना  
 ६३ विपरीत समाचारी वालों के साथ व्यवहार करना  
 ६४-६६ वस्त्र पात्र और दण्ड आदि को जीर्ण होने से पहले डाल देना  
 ६७-७७ रजोहरण का अनुचित उपयोग करना  
 निर्ग्रन्थी के साथ निर्ग्रन्थ का व्यवहार  
**षष्ठ उद्देशक**  
 १-७७ मैथुन के सकल्प से निर्ग्रन्थी के साथ अमर्यादित व्यवहार करना  
**सप्तम उद्देशक**  
 १-८१ मैथुन के सकल्प से निर्ग्रन्थी के साथ अमर्यादित व्यवहार करना  
**अष्टम उद्देशक**  
 १-९ अकेली स्त्री के साथ अमर्यादित व्यवहार करना  
 १० स्त्री परिपद में असमय धर्म कथा कहना  
 ११ निर्ग्रन्थी के साथ अनुचित व्यवहार करना  
 १२ स्वजन परिजनों से सम्पर्क रखना  
 १३-१५ राज्य परिपद में सम्पर्क रखना  
 १६ खाद्य पदार्थों का ग्रहण करना  
 १७ त्याज्य  
**नवम**  
 १८ राज्य  
 १९ राज्य के लिए धार लेना  
 २० जाना आना



## चतुर्थ उद्देशक

- १ १८ राजाणि को वग करना
- १९ अस्वस्थ पक्ष फल या धान्य खाना
- २० आचार्य के दिये बिना आहार खाना
- २१ आचार्य उपाध्याय के दिये बिना दूध आदि विहित पदार्थ खाना
- २२ निषिद्ध कुल जान बिना भिलाय खाना
- २३ २४ निर्ग्रन्थी के उपाध्याय भ अविधि से प्रवेश करना
- २५ २६ बलहू करना
- २७ अग्नि हंसना
- २८ ३७ पादवस्थ आदि का वस्त्र देना
- ३८ ३९ आहार विषयक प्रायश्चित्त
- ४० ४८ ग्राम रक्षक आदि का वग करना
- ४९ १०१ क एक दूसरे के परा का परिक्रम करना  
ख एक दूसरे के गौर का संस्कार करना
- १०२ ११० मल-मूर्धादि सम्बन्धी अशुद्धि करना
- १११ परिहार कल्पस्थित क माघ आहार व्यवहार करना
- पञ्चम उद्देशक
- १ १२ सचिन-सञ्जीव वृक्ष क मूल से निषिद्ध काय करना
- १२ १३ अत्यन्त अधिक या गृहस्थ से काय करवाना  
क वस्त्र पिताना  
ख मर्दाना से अधिक सम्बा जोड़ा वस्त्र बनाना
- १४ फलों को पीन या उष्ण पानी से धोकर खाना
- १५ २३ लौटाने की शक्त करके खाये हुए पदार्थ नियत समय पर न खाना
- २४ अत्यधिक मन्त्रे होरे बनाना

- २५-३३ दण्डे आदि का रंगना  
 ३४ नये ग्राम आदि में भिक्षार्थ जाना  
 ३५ नई स्नानों में भिक्षार्थ जाना  
 ३६-५६ विविध प्रकार के वाद्य बनाना  
 ६०-६२ सदोष शय्या का उपयोग करना  
 ६३ विपरीत समाचारी वालों के साथ व्यवहार करना  
 ६४-६६ वस्त्र पात्र और दण्ड आदि को जीर्ण होने से पहले डाल देना  
 ६७-७७ रजोहरण का अनुचित उपयोग करना  
 निर्ग्रन्थी के साथ निर्ग्रन्थ का व्यवहार  
 षष्ठ उद्देशक  
 १-७७ मैथुन के संकल्प से निर्ग्रन्थी के साथ अमर्यादित व्यवहार करना  
 सप्तम उद्देशक  
 १-९१ मैथुन के संकल्प में निर्ग्रन्थी के साथ अमर्यादित व्यवहार करना  
 अष्टम उद्देशक  
 १-९ अकेली स्त्री के साथ अमर्यादित व्यवहार करना  
 १० स्त्री परिपद में असमय धर्म कथा कहना  
 ११ निर्ग्रन्थी के साथ अनुचित व्यवहार करना  
 १२ स्वजन परिजनों से सम्पर्क रखना  
 १३-१५ राज्य परिवार से सम्पर्क रखना  
 १६ खाद्य पदार्थों का संग्रह करना  
 १७ त्याज्य बाजार लेना  
 नवम उद्देशक  
 १-६ राज्य कुल का बाजार लेना  
 १० ६ दोषायतनों में जाना जाना

### चतुर्थ उद्देशक

- १-१८ राजादि को वश करना
- १९ अश्वघड पत्र फल या धान्य खाना
- २० आचार्य के दिये बिना आहार खाना
- २१ आचार्य-उपाध्याय के दिये बिना दूध आदि विवृति पदार्थ खाना
- २२ निषिद्ध कुल जाने बिना भिक्षार्थ जाना
- २३-२४ निर्गन्धी के उपाध्य में अविधि से प्रवेश करना
- २५-२६ कतहू करना
- २७ अति हसना
- २८ ३७ पादवंस्थ आदि को वस्त्र देना
- ३८-३९ आहार विषयक प्रायश्चित्त
- ४०-४८ ग्राम रक्षक आदि को वश करना
- ४९ १०१ क एक दूसरे के पैरो का परिकर्म करना  
ल एक दूसरे के शरीर का संस्कार करना
- १०२ ११० मय सूत्रादि नम्बन्धी अक्षिपेक करना
- १११ परिहार कल्पस्थित के माथ आहार व्यवहार करना
- ### पंचम उद्देशक
- १-१२ सचिन-सजीव वृक्ष के मूल में निषिद्ध कार्य करना
- १२ १३ अन्धनीर्थिक या गृहस्थ से कार्य करवाना
- क- वस्त्र सिनाना
- ख मर्यादा में अधिक लम्बा चौड़ा वस्त्र बनाना
- १४ फलों को शीत या उष्ण पानी से धोकर खाना
- १५-२३ लौटाने की धान करके साथे हुए पदार्थ नियत समय पर न लौटाना
- २४ अत्यधिक लम्बे होरे बनाना

- ६ धर्म की निन्दा करना
- १० अधर्म की प्रशंसा करना
- ११-६३ अन्यतीर्थिक अथवा गृहस्थ से कार्य करवाना
- क- पैरो का परिकर्म करवाना
- ख- शरीर का सस्कार करवाना
- ग- कपड़े आदि से मस्तक ढकना
- ६४-६५ स्वयं अथवा अन्य को भयभीत करना
- ६६-६७ ,, ,, आश्चर्यान्वित करना
- ६८-६९ स्वयं अथवा अन्य के साथ विपरीत आचरण करना
- ७० प्रशंसा करना
- ७१ दुश्मन के राज्य में जाना आना
- ७२ दिवा भोजन की निन्दा करना
- ७३ रात्रि भोजन की प्रशंसा करना
- ७४-७७ भोजन सम्बन्धी चतुर्भंगी
- ७८ रात्रि में आहारादि रखना
- ७९ रात्रि में रखे हुए—आहार का खाना पीना
- ८० मांस आहार लेना
- ८१ नैवेद्य खाना
- ८२ स्वच्छन्द श्रमण श्रमणी की प्रशंसा करना
- ८३ स्वच्छन्द श्रमण श्रमणी को वंदना करना
- ८४-८५ अयोग्य को दीक्षा देना
- ८६ क- अयोग्य से सेवा कराना
- ख- अयोग्य की सेवा करना,
- ८७-९० जिन कल्पी के साथ न रहना, चतुर्भंगी
- ९१ रात्रि में रखी हुई पिप्पली आदि का खाना
- ९२ बाल मरण मरना

- ८ ६ स्त्रियों के अगोपागो को देखना  
 १० मांस आहार लेना  
 ११ राजा के चले जाने पर राजा के निवास स्थान में रहना  
 १२ १७ यात्रियों से आहार लेना  
 १८ राज्याभिषेक के समय नगर में जाना जाना  
 १९ निदिष्ट दम राजधानियों में दारुधार जाना जाना  
 २० २८ राज्याधिकार परिवारों से आहार लेना

### दशम उद्देशक

- १-४ गुरुजनो का अविनय करना  
 ५ अनन्तकाय-वनस्पति समुच्चय आहार करना  
 ६ आधाकर्म सदोष आहार करना  
 ७ ८ ज्योतिष से वलमान और भविष्य इतना  
 ९ १० किसी के शिष्य को बहकाना अथवा भगाना  
 ११-१२ दीक्षार्थी को मिथ्या परामर्श देना  
 १३ आद्यन्तुक अमण अमणिया से आने का कारण जाने बिना  
 तीन दिन से अधिक साथ रखना  
 १४ लड़ भगडकर आये अनुपशान्त अमण अमणी को प्रायश्चित्त  
 दिये बिना तीन दिन से अधिक साथ रखना  
 १५ ३० दोषानुसार प्रायश्चित्त न करना तथा दोषानुसार प्रायश्चित्त  
 न लेने वाली क साथ आहारादि व्यवहार करना  
 ३१ ३४ सद्विध समय में आहार करना  
 ३५ सद्विध अन्न पानी को निगलना  
 ३६ ३९ रोगी अमण अमणी की परिचर्या न करना  
 ४०-४७ वर्षादान सम्बन्धी नियमों का भंग करना
- ### इग्यारहवाँ उद्देशक
- १ ८ पात्र सम्बन्धी मर्यादाशा का भंग करना

- ६ धर्म की निन्दा करना  
 १० अधर्म की प्रशंसा करना  
 ११-६३ अन्वयार्थिक अथवा गृहस्थ से कार्य करवाना  
 क- पैरों का परिकर्म करवाना  
 ग- शरीर का संस्कार करवाना  
 ग- कपड़े आदि से मस्तक ढकना  
 ६४-६५ स्वयं अथवा अन्य को भयभीत करना  
 ६६-६७ " " आश्चर्यान्वित करना  
 ६८-६९ स्वयं अथवा अन्य के साथ विपरीत आचरण करना  
 ७० प्रशंसा करना  
 ७१ दुश्मन के राज्य में जाना आना  
 ७२ दिवा भोजन की निन्दा करना  
 ७३ रात्रि भोजन की प्रशंसा करना  
 ७४-७७ भोजन सम्बन्धी चतुर्भंगी  
 ७८ रात्रि में आहारादि रखना  
 ७९ रात्रि में रखे हुए—आहार का खाना पीना  
 ८० मांस आहार लेना  
 ८१ नैवेद्य खाना  
 ८२ स्वच्छन्द श्रमण श्रमणी की प्रशंसा करना  
 ८३ स्वच्छन्द श्रमण श्रमणी को बदना करना  
 ८४-८५ अयोग्य को दीक्षा देना  
 ८६ क- अयोग्य से सेवा कराना  
 ख- अयोग्य की सेवा करना,  
 ८७-९० जिन कल्पों के साथ न रहना, चतुर्भंगी  
 ९१ रात्रि में रखी हुई पिप्पली आदि का खाना  
 ९२ बाल मरण मरना



- २८-२९ अन्यतीर्थी या गृहस्थ को घातुएँ या खजाना बताना  
 ३०-३७ किसी पदार्थ में प्रतिबिम्ब देखना  
 ३८-४१ स्वस्थ होते हुए चिकित्सा कराना  
 ४२-५० पार्श्वस्थ आदि को वन्दना करना  
 " की प्रशंसा करना  
 चौदहवाँ उद्देशक
- १-४५ पात्र-सम्बन्धी नियमों का भंग करना  
 पन्द्रहवाँ उद्देशक
- १-४ भिक्षु भिक्षुणी को कठोर शब्द कहना तथा उनके साथ अप्रिय व्यवहार करना
- ५-१२ सचित फल-अग्नि आदि से नहीं पकाया हुआ अखण्ड फल खाना
- १३-६५ क- अन्यतीर्थी अथवा गृहस्थ से पैरों का संस्कार करवाना  
 स- " " शरीर " "  
 ग- कपड़े आदि से अपना मस्तक ढकवाना
- ६६-७४ निषिद्ध स्थानों पर मल मूत्र त्यागना
- ७५-७६ अन्यतीर्थी अथवा गृहस्थ को आहार देना या उनसे लेना
- ७७-७८ अन्यतीर्थी अथवा गृहस्थ को वस्त्र पात्र आदि देना या उनसे लेना
- ७९-८८ पार्श्वस्थ आदि को आहार, वस्त्र, पात्र, रजोहरण देना या उनसे लेना
- ९९ निषिद्ध वस्त्र लेना
- १००-१५४ विभूषा निमित्त किसी भी कार्य का करना  
 सोलहवाँ उद्देशक
- १-३ वसति विषयक नियमों का भंग करना
- ४-११ सचित इक्षु आदि खाना



- १२ वन वासियो तथा वनचरो से (यात्रियो) स आहार लेना
- १३ १४ सयमी का असयमी और असयमी को सयमी कहना
- १५ सयमिमा के गण से असयमियो के गण म जाना
- १६ २४ कलह करके आये हुए श्रमण श्रमणियो से व्यवहार करना
- २५-२६ कुमान या कुप्रदेश म जाना
- २७ ३२ नि सकुलो से व्यवहार रखना
- ३३ ३५ निविद्ध स्थानो पर आहार करना
- ३६ ३७ अ यतीर्थिक अथवा गृहस्थ स्त्रियो के साथ भोजन करना
- ३८ आचार्य उपाध्याय क क्षया सस्तरक को टुकराना
- ३९ प्रमाण मे अधिक उपकरण रखना
- ४० ५० निविद्ध स्थानों पर मल मूत्र डालना  
सतरहवाँ उद्देशक
- १ १४ कुतूहल के लिये नाई कार्य करना
- १५ ११० अथतीर्थी अथवा गृहस्थ स कार्य करवाना  
क निग्रथ निग्रथ के पैरा का परिक्रम करावे  
शरीर  
का मस्तक छक्काये
- ख निग्रथ निग्रथी के पैरा का परिक्रम करावे  
के शरीर का  
का मस्तक छक्काये
- १२१ निग्रथ का निग्रथ का स्थान न देना
- १२२ निग्रथी का निग्रथी को स्थान न देना
- १२३ १३१ आहार सम्बन्धी नियमा का भंग करना
- १३२ पाना
- १३३ अपने आपको आचार्य पण क घोष्य कहना
- १३४ मनोविना क लिये गायन आदि काय करना
- १३५ १३६ विविध वाद्य सुनना

### अठारहवाँ उद्देशक

- १-२० नौका आरोहण सम्बन्धी नियमों का पालन न करना  
 २१-६६ वस्त्र विषयक नियमों का पालन न करना

### उन्नीसवाँ उद्देशक

- १-४ खरीद कर दी हुई प्रामुक वस्तु का लेना  
 ५ रोगी निर्ग्रन्थ के लिये प्रमाण से अधिक प्रामुक आहार लेना  
 ६ प्रामुक आहार लेकर दूसरे गाँव जाना  
 ७ प्रामुक खाद्य को पानी में गाल कर खाना पीना  
 ८ चार सन्ध्याओं में स्वाध्याय करना  
 ९-१० नियत संख्या से अधिक श्रुत विषयक प्रश्न पूछना  
 ११ चार महोत्सव दिनों में स्वाध्याय करना  
 १२ चार प्रतिपदाओं में स्वाध्याय करना  
 श्रुत स्वाध्यायविषयक नियमों का पालन न करना

### धीसवाँ उद्देशक

- १-२० क- निष्कपट और सकपट आलोचना का प्रायश्चित्त  
 ख- " " " "



## निशीथ-निर्देशित प्रायश्चित्त

उद्देशक	प्रायश्चित्त	उद्देशक	प्रायश्चित्त
१	गुरुमासिक	११	गुरु चौमासिक
२	लघुमासिक	१२	लघु चौमासिक
३		१३	
४		१४	
५		१५	
६	गुरु चौमासिक	१६	
७		१७	
८		१८	
९		१९	
१०		२०	ममुरचय

## प्रायश्चित्त संबंधी विशेष विवरण

## उद्देशक—१

प्रथम उद्देशक में निर्दिष्ट दोषों का परवश या अनुपयोग से सेवन करनेपर प्रायश्चित्त जघन्य ४। मध्यम १५। उत्कृष्ट ३० निर्विकृतिक।

प्रथम उद्देशक में निर्दिष्ट दोषों का आतुरता या उपयोग पूर्वक सेवन करनेपर प्रायश्चित्त जघन्य ४। मध्यम १५। उत्कृष्ट ३० आचाम्ल।

प्रथम उद्देशक में निर्दिष्ट दोषों का मोहोदय से सेवन करने पर प्रायश्चित्त जघन्य ४। मध्यम १५। उत्कृष्ट ३० उपवास।

## उद्देशक—२

द्वितीय उद्देशक में निर्दिष्ट दोषों का परवश या अनुपयोग से सेवन करने पर प्रायश्चित्त जघन्य ४। मध्यम १५। उत्कृष्ट २७ एकाग्र।

द्वितीय उद्देशक में निर्दिष्ट दोषों का आतुरता या उपयोग पूर्वक सेवन करने पर प्रायश्चित्त जघन्य ४। मध्यम १५। उत्कृष्ट २७।

आचाम्ल

द्वितीय उद्देशक में निर्दिष्ट दोषों का मोहोदय से सेवन करने पर प्रायश्चित्त जघन्य ४। मध्यम १५। उत्कृष्ट २८। उपवास

## उद्देशक—६

छठे उद्देशक में निर्दिष्ट दोषों का परवश या अनुपयोग से सेवन करने पर प्रायश्चित्त जघन्य ४ उपवास। मध्यम ४ पण्ड भक्त।

उत्कृष्ट १२० उपवास या चार मास का छेद।

छठे उद्देशक में निर्दिष्ट से दोषों का आतुरता या उपयोग पूर्वक सेवन करने पर प्रायश्चित्त जघन्य ४ पण्ड भक्त या चार दिन का छेद।

मध्यम ४ अष्टम भक्त या ६ दिन का छेद।

उत्कृष्ट १२० उपवास या चार मास का छेद।

छठे उद्गम में निर्दिष्ट दोषों का माहात्म्य से सेवन करने पर प्रायश्चित्त जघन्य ४ अष्टम भक्त पारणा में आचाम्न या ६० त्नि का छेद

मध्यम १५ अष्टम भक्त पारणा में आचाम्न या ६० त्नि का छेद  
उत्कृष्ट १२० उपवास पारणा में आचाम्न या पुन महाज्वररोपण

### उद्गमक—१२

बारहवें उद्गम में निर्दिष्ट दोषों का परवग या अनुपयोग से सेवन करने पर प्रायश्चित्त जघन्य ४ आचाम्न । मध्यम ६० निर्विकृतिक ।

उत्कृष्ट १६० उपवास

बारहवें उद्गम में निर्दिष्ट दोषों का आनुरता या उपयोग पूर्वक सेवन करने पर प्रायश्चित्त जघन्य ४ उपवास । मध्यम ६ पशु भक्त ।

उत्कृष्ट १०० उपवास पारणा में विकृति त्याग ।

बारहवें उद्गम में निर्दिष्ट दोषों का माहात्म्य से सेवन करने पर प्रायश्चित्त

जघन्य ४ पशु भक्त । मध्यम ४ अष्टम भक्त । उत्कृष्ट १०० उपवास पारणा में आचाम्न

क द्वितीय तनाय चतुर्थ और पंचम उद्गमक में निर्दिष्ट दोषों का प्रायश्चित्त समान है ।

ग षष्ठ में षष्ठांशमें उद्गमक पंचम ६ उद्गमक में निर्दिष्ट दोषों का प्रायश्चित्त समान है ।

ग बारहवें में उद्गमके उद्गमक पंचम ८ उद्गमक में निर्दिष्ट दोषों का प्रायश्चित्त समान है ।

षष्ठी गिदाण

## चरणानुयोगमय आवश्यक सूत्र

अभ्ययन	६
मृग पाठ	१०० इतिहास प्रमाण
गण मूत्र	७१
पण मूत्र	६

समणेण सावण य, अवस्सकायव्वयं हवइ जम्हा ।  
अंतो अहो-निसिस्स य, तम्हा आवस्सयं नाम ॥



# आवश्यक सूत्र विषय-सूची

## श्रमण-सूत्र

### प्रथम सामायिक अध्ययन

- १ सामायिक व्रत ग्रहण करने का पाठ  
द्वितीय चतुर्विंशतिस्तव अध्ययन

- १ चतुर्विंशतिस्तव का पाठ

### तृतीय वन्दन अध्ययन

- १ नमस्कार मंत्र
- २ गुरु वन्दना का पाठ
- ३ द्वादशावर्ते गुरु वन्दना का पाठ
- ४ अरिहंत वन्दना का पाठ

### चतुर्थ प्रतिक्रमण अध्ययन

- १ मंगल पाठ
- २ संक्षिप्त प्रतिक्रमण का पाठ
- ३ शयन सम्बन्धी अतिचारों के प्रतिक्रमण का पाठ
- ४ भिक्षाचर्या सम्बन्धी अतिचारों के प्रतिक्रमण का पाठ
- ५ कालप्रति लेखना सम्बन्धी अतिचारों के प्रतिक्रमण का पाठ
- ६ असंयम सम्बन्धी अतिचारों के " "
- ७ द्विविध वंचन सम्बन्धी अतिचारों के " "
- ८ त्रिविध दण्ड सम्बन्धी अतिचारों के " "
- ९ त्रिविध गुप्ति सम्बन्धी अतिचारों के " "
- १० " शल्य " "



- ११ गव
- १२ विराषना
- १३ चतुर्विध कषाय सम्बन्धी अनिवारो क
- १४ मृगा
- १५ विक्रया
- १६ ध्यान
- १७ पञ्चविध विद्या सम्बन्धी अनिवारो क प्रतिरुमण का पाठ
- १८ कामगुण
- १९ महावन
- २० समिति
- २१ षडविध जीविकाय
- २२ सत्या
- २३ मन्त्रविन भय
- २४ अष्ट मन्त्रान
- २५ तव वृहत्तचय गुप्ति
- २६ दण श्रमणयम
- २७ ग्यान्ह उपासक प्रतिमा
- २८ वारह भिन्नु प्रतिमा
- २९ तैरह नियो स्थान
- ३० धीन्ह भूतग्राम
- ३१ पन्ह परभाषामिक
- ३२ गाथा पोन्पक
- ३ सत्रह असयम
- ३४ अठारह अरुहचय
- ५ उन्नीस जाता यमकया अण्पयन
- ३६ बीस अममाचि
- ३७ इक्कीस गवत दोष

३८	वाइस परिपह	”	”
३९	तेईस सूत्रकृताग अध्ययन	”	”
४०	चौवीस देव	”	”
४१	पच्चोस महाव्रत भावना	”	”
४२	छ्दवीस दशा. कल्प. व्यवहार के अव्ययन	”	”
४३	सत्ताईस अनगार गुण	”	”
४४	अट्ठाईस आचार प्रकल्प	”	”
४५	उनतीस पापश्रुत	”	”
४६	तीस महामोहनीय स्थान	”	”
४७	इकतीस सिद्धगुण	”	”
४८	वत्तीस योग सग्रह	”	”
४९	तेतीस आशातना	”	”
५०	शेष मर्व अतिचारों के प्रतिक्रमण का पाठ		
५१	धर्म आराधना करने की प्रतिज्ञा का पाठ		
५२	ऐर्यापथिकी पापक्रिया के प्रतिक्रमण का पाठ		

### पंचन कायोत्सर्ग अध्ययन

- १ कायोत्सर्ग करने की प्रतिज्ञा का पाठ
- २ कायोत्सर्ग के आगारों का पाठ

### षष्ठ प्रत्याख्यान अध्ययन

- ३ नमस्कार सहित प्रत्याख्यान का पाठ
- २ पौरुपी प्रत्याख्यान का पाठ
- ३ पूर्वाधि प्रत्याख्यान का पाठ
- ४ एकाक्षान प्रत्याख्यान का पाठ
- ५ एकस्थान प्रत्याख्यान का पाठ
- ६ आचाम्ल प्रत्याख्यान पाठ
- ७ अभक्त प्रत्याख्यान पाठ

८ चरिम प्रत्याख्यान पाठ

९ अभिग्रह का पाठ

१० विकृति प्रत्याख्यान का पाठ

११ प्रत्याख्यान पारने का पाठ

अमणोपासक—आवश्यक सूत्र

प्रथम सामायक आवश्यक

१ सामायिक व्रत स्वीकार करने का पाठ

द्वितीय चतुर्विंशति स्तेव आवश्यक

तृतीय चन्दन आवश्यक

(ये दोनों आवश्यक अमण आवश्यक के समान है)

चतुर्थ प्रतिक्रमण आवश्यक

१ ज्ञानानिचारा का पाठ

२ दानानिचारी का पाठ

३ द्वादश श्रमतिचारा के पाठ

४ सुलेखना का पाठ

५ अठारह पापस्थानों का पाठ

६ क्षमापना का पाठ

पंचम कायोत्सर्ग आवश्यक

(अमण आवश्यक के समान)

षष्ठ प्रत्याख्यान आवश्यक

१ समुच्चय प्रत्याख्यान पाठ

## धर्मकथानुयोग प्रधान कल्प सूत्र

अध्ययन	१
मूल पाठ	१२१५ अनुष्टुप् श्लोक प्रमाण
गद्य सूत्र	३१२
पद्य सूत्र गाथा	१४

तेणं कालेणं तेणं समपणं समखे भगवं बहूणं समणीणं, महावीरे  
रायगिहे नयरे गुणसिलप उज्जाणे. बहूणं समणाणं. बहूणं  
सावयाणं, बहूणं सात्रियाणं, बहूणं देवाणं, बहूणं देवीणं मज्झमप  
चेव. एवं भासइ. एवं परणवेइ. एवं परूवेइ. पज्जोसग्गणा कप्पो नामं  
अज्झयणं सञ्चट्टं. महेउयं. मकारणं. समुत्तं. मञ्चट्टं. सटभय.  
मवागरणं. भुज्जो भुज्जो उवदंसेइ त्ति वेमि ।

८ चरिम प्रत्यास्थान पाठ

९ अभिग्रह का पाठ

१० त्रिकृति प्रत्यास्थान का पाठ

११ प्रत्यास्थान पारने का पाठ

श्रमणोपासक-आवश्यक सूत्र

प्रथम सामायक आवश्यक

१ सामायिक व्रत स्वीकार करने का पाठ

द्वितीय चतुर्विंशति स्तव आवश्यक

तृतीय वन्दन आवश्यक

(ये दोनों आवश्यक श्रमण आवश्यक के समान हैं)

चतुर्थ प्रतिक्रमण आवश्यक

१ ज्ञानानिचारा का पाठ

२ दानानिचारी का पाठ

३ द्वादश व्रतानिचारा के पाठ

४ सलेखना का पाठ

५ अठारह पापस्थानों का पाठ

६ समापना का पाठ

पंचम कायोत्तम आवश्यक

(श्रमण आवश्यक के समान)

षष्ठ प्रत्यास्थान आवश्यक

१ सनुच्चय प्रत्यास्थान पाठ

# कल्पसूत्र विषय-सूची

परमेष्ठी नमस्कार

भगवान महावीर

- १ भ० महावीर के पाँच कल्याण
- २ क- आपाढ़ शुक्ला पट्टी की रात्रि में देवलोक से च्यवन  
ख- चतुर्थ आरक के ७५ वर्ष अवशेष  
ग- माहणकुण्ड ग्राम का कोडाल गोत्रीय ऋषभदत्त ब्राह्मण,  
जालंवर-गोत्रिया देवानन्दा ब्राह्मणी  
घ- मध्यरात्रि में गर्भवितरण
- ३-४ भ- भ० महावीर के तीन ज्ञान  
ख- देवानन्दा के चौदह स्वप्न
- ५-६ ऋषभदत्त से स्वप्न दर्शन के सम्बन्ध में देवानन्दा का निवेदन
- ७-१० ऋषभदत्त का स्वप्नफल कथन
- ११-१२ देवानन्दा द्वारा स्वप्नफल धारणा
- १३-१४ शक्रेन्द्र का अवधिज्ञान द्वारा भ० महावीर का गर्भवितरण  
१५ शक्र स्तव, शक्र संकल्प
- १६-१७ तीर्थंकर उत्पत्तिकुल का चिन्तन
- १८ क- ब्राह्मणकुल में अवतरण एक आश्चर्यजनक घटना  
ख- घटना का मूल हेतु
- १९-२४ शक्र का स्वकर्तव्य चिन्तन  
२५ हरिणैगमेपी को गर्भ साहारण का आदेश
- २६-२८ क- हरिणैगमेपी का वैक्रय  
ख- देवानन्दा के गर्भ का साहारण  
ग- क्षत्रियकुण्डग्राम, काश्यप गोत्रीय सिद्धार्थ क्षत्रिय,







- वागिष्ठ गोत्रिया त्रिगता शत्रियाणी  
 घ त्रिगता को अवस्थापिनी निग  
 च हरिणमन्दी का स्वस्थान के लिए प्रस्थान और एक न म गभ  
 साहरण क सम्बन्ध म निवृत्त  
 २६ आश्विन कृष्णा त्रयोन्शी त्रिगामीका रात्रि म गभ साहरण  
 ३० म० महावार का अवधिज्ञान  
 ३१ ४७ क दवाना का स्वगभ साहरण का घोर त्रिगता के चीन्ह  
 स्वप्न  
 ४८ त्रिगता का सिद्धाथ को जगाना  
 ४९ ५७ त्रिगता को स्वप्न फल पृच्छा  
 ५१ ५४ सिद्धाथ का स्वप्नफल कथन  
 ५२ त्रिगता की स्वप्न फल धारणा  
 ५६ त्रिगता की घम जागरणा  
 ७ ६६ क बाह्य उपस्थान गाना के सजान का आग्य  
 ख सिद्धाथ के आवश्यक दैनिक कृत्य  
 ग बाह्य उपस्थान गाना म आगमन  
 घ त्रिगता के विद्ये तथा स्वप्न पाठको के लिए भगमना की  
 व्यवस्था  
 ङ स्वप्न पाठको को आमन्त्रण  
 ६७ ६८ स्वप्न पाठको का आगमन  
 ७० ७१ स्वप्न पाठको म सिद्धाथ की स्वप्नफल पृच्छा  
 क स्वप्न-पाठको का स्वप्न फल कथन  
 ७२ ७४ ख द्यानीस स्वप्न तीम म स्वप्न सब बृहत्तर स्वप्न  
 ग तीयकर और चक्रवर्ती की भावा के चीन्ह स्वप्न  
 ७५ वामुक्तेव माता के सात स्वप्न  
 ७६ वक्तेव माता के चार स्वप्न  
 ७७ मांडलिक माता का स्वप्न

- ७८ त्रिशला के चौदह स्वप्नो का फल-पुत्र लाभ
- ७९ युवा पुत्र का चक्रवर्ती या धर्मचक्रवर्ती होना
- ८०-८२ क- सिद्धार्थ की स्वप्न-फल धारणा
- ग- स्वप्न-पाठको को प्रीतिदान
- ग स्वप्न-पाठको का विमर्जन
- ८३-८७ क- सिद्धार्थ का त्रिशला को स्वप्न पाठको के कथन से अवगत कराना
- ख- त्रिशला का स्वस्थान गमन
- ८८ तिर्यक् जृम्भक देवो द्वारा राज्य कुल मे निधान की वृद्धि
- ८९-९० सिद्धार्थ और त्रिशला का सकल्प, वर्धमान नाम रखने का निश्चय
- ९१ माता की अनुसम्पा के लिये गर्भ मे भ० महावीर का स्थिर होना
- ९२ भ० महावीर के निश्चल होने से त्रिशला का चिन्तित होना
- ९३ क- भ० महावीर को त्रिशला के मनोगत भावो का अवधिज्ञान से जानना
- ख- भ० महावीर द्वारा स्वशरीर का स्पष्टन
- ९४ क- त्रिशला की प्रमन्नता
- ख- भ० महावीर का अभिग्रह
- ९५ सिद्धार्थ द्वारा त्रिशला के दोहद की पूर्ति, त्रिशला का गर्भ-पोषण, संरक्षण
- ९६ चैत्र शुक्ला त्रयोदशी के दिन भ० महावीर का जन्म
- ९७ जन्मोत्सव के लिये देव-देवियो का आगमन
- ९८ सिद्धार्थ के भवन मे देवो द्वारा हिरण्य आदि की दिव्य वर्षा
- ९९-१०२ सिद्धार्थ द्वारा दस दिवस पर्यन्त पुत्र जन्मोत्सव
- क- वन्दिमोचन
- ख- मान उन्मान की वृद्धि

- घ नगर की गफाई आदि  
 छ- दण्ड विषय, ऋणमुक्ति  
 १०३ यज्ञ दान आदि कृत्य  
 १०४ क- प्रथम दिन सिंगु स्थिति  
 ख तृतीय दिन चन्द्र भूय दर्शन  
 ग छट्टे दिन धमजागरण  
 घ द्वापारहवें दिन अशुचि में निवृत्ति  
 छ वारहवें दिन जाति भोज  
 १०५ १०७ वधमान नाम देना  
 १०८ भ० महावीर के गुण निष्पन्न तीन नाम  
 १०९ क भ० महावीर के पिता के तीन नाम  
 ख भ० महावीर की माता के तीन नाम  
 ग भ० महावीर के (पितृश्व) चाचा का नाम  
 घ भ० महावीर के बड़े भाजा का नाम  
 छ भ० महावीर की बहिन का नाम  
 च- भ० महावीर की भार्या का नाम  
 छ भ० महावीर की पुत्री का दो नाम  
 ज भ० महावीर की दोहिनो के दो नाम  
 ११० १११ क भ० महावीर की तीस वध की वध होने पर लौकान्तिक  
 देवो का आगमन

- ११६ क- आभरणादि का त्याग  
 ख- पंचमुष्टि लोच  
 ग- छट्टु तप  
 घ- एक देव-दृष्यवस्त्र का धारण करना  
 ङ- एकाकी भ० महावीर की अनगार प्रव्रज्या
- ११७ क- भ० महावीर का देव दृष्य धारण काल  
 ख- भ० महावीर का अचेलक होना  
 क- भ० महावीर का वारह वर्ष पर्यन्त उपसर्ग सहन करना  
 ख- भ० महावीर की समिति-गुप्ति आराधना  
 ग- भ० महावीर की इकवीस उपमा  
 घ- प्रतिबन्ध के चार भेद  
 ङ- अठारह पाप से सर्वथा विरति
- ११६ भ० महावीर का ग्रीष्म-हेमन्त में ग्राम नगर में ठहरने का काल  
 १२०-१२१ दीक्षा काल से तेरहवें वर्ष में जृंभक ग्राम के वहार वृजु-  
 वालिका नदी के तट पर चैत्य के समीप वैसाख शुक्ला दसमी  
 के दिन भ० महावीर को केवल ज्ञान
- १२२ भ० महावीर के वर्षावास  
 १२३ भ० महावीर का अन्तिम वर्षावास मध्यपावा में  
 १२४ कार्तिक कृष्णा अमावस्या के दिन भ० महावीर का निर्वाण  
 १२५-१२६ देवताओं द्वारा भ० महावीर का निर्वाण-महोत्सव  
 १२७ इन्द्रभूति गौतम गणधर को केवलज्ञान  
 १२८ क- कार्तिक कृष्णा अमावस्या के दिन अठारह गणराजाओं का  
 आहार त्याग कर पीपध करना  
 ख- राजाओं द्वारा दीपोद्योत  
 भस्मराशि नामक महाग्रह का भ० महावीर के जन्म नक्षत्र  
 के साथ संक्रमण
- १३०-१३१ भस्म-राशि महाग्रह का प्रभाव

- १३२-१३३ क- निर्वाण रात्रि मे कुयुओ की उत्पत्ति  
 ल- निर्गन्धो का भक्त प्रत्यम्पान  
 ग- कुंयुआ की उत्पत्ति का फलादस
- १३४ भ० महावीर के अनुयायी धमण
- १३५ भ० महावीर की अनुयायी धमणियाँ
- १३६ भ० महावीर के अनुयायी धमणापामक
- १३७ भ० महावीर की अनुयायी धमणोपातिचार्ये
- १३८ भ० महावीर क अनुयायी चतुर्दशपूर्वी मुनि
- १३९ भ० महावीर क अनुयायी अश्वधिज्ञानी मुनि
- १४१ भ० महावीर के अनुयायी वैश्रियलक्षि धारी मुनि
- १४२ भ० महावीर के अनुयायी मन् पयेंवज्ञानी मुनि
- १४३ भ० महावीर के अनुयायी बादलविद्य वाले मुनि
- १४४ क भ० महावीर क मुक्न होने वाले शिष्य  
 ख मुक्न हाने वाली आधिकार्ये
- १४५ अनुसर विमानो मे उत्पन्न होने वाल मुनि
- १४६ भ० महावीर के पश्चात् मुक्न होर वाले मुनि
- १४७ क भ० महावीर का गृहवास काल  
 ख भ० महावीर का सुषरथकाल  
 ग भ० महावीर का कवन्तज्ञान मुक्न जीवन  
 घ भ० महावीर का धमण जीवन  
 ङ भ० महावीर की सर्वायु  
 च भ० महावीर का निर्वाण काल
- १४८ कल्पसूत्र का लेखन काल  
 भ० पाद्वर्चनाय
- १४९ भ० पाद्वर्नाय क पच कल्पण
- १५० क वैश्र कृष्णा चतुर्थी क दिन प्राणत देवलोक से भ० पाद्वर्नाय की आत्मा का ज्यवन

- ख- जम्बूद्वीप, भरत, वाराणसी नगरी, अश्वसेन राजा, वामा रानी
- ग- वामारानी की कुक्षी में भ० पार्श्वनाथ का अवतरण
- १५१ क- भ० पार्श्वनाथ के तीन ज्ञान
- ख- स्वप्न दर्शन आदि सर्व वृतान्त
- १५२ पौष कृष्णा दसमी के दिन भ० पार्श्वनाथ का जन्म
- १५३ देवताओं द्वारा भ० पार्श्वनाथ का जन्मोत्सव
- १५४ पार्श्व कुमार नाम देने का हेतु
- १५५ भ० पार्श्वनाथ की तीस वय की वय होने पर लोकान्तिक देवों का आगमन
- १५६ भ० पार्श्वनाथ द्वारा वर्षादान
- १५७ पौष कृष्णा एकादशी के दिन भ० पार्श्वनाथ की तीन मी पुरुषों के साथ अनगर प्रव्रज्या
- १५८ त्रियासी दिन का उपसर्ग सहन काल
- १५९ भ० पार्श्वनाथ की समिति गुप्ति आराधना
- भ० पार्श्वनाथ को चैत्र कृष्णा चतुर्थी के दिन केवल ज्ञान
- १६० भ० पार्श्वनाथ के आठ गण और आठ गणधर
- १६१ भ० पार्श्वनाथ के अनुयायी श्रमण
- १६२ भ० पार्श्वनाथ की अनुयायी श्रमणियाँ
- १६३ भ० पार्श्वनाथ के श्रमणोपासक
- १६४ भ० पार्श्वनाथ की श्रमणोपासिकाएं
- १६५ भ० पार्श्वनाथ के अनुयायी चौदह पूर्वी मुनि
- १६६ क- भ० पार्श्वनाथ के अनुयायी अवधिज्ञानी मुनि
- ख- भ० पार्श्वनाथ के अनुयायी केवलज्ञानी मुनि
- ग- भ० पार्श्वनाथ के अनुयायी वैक्रिय लट्ठि मम्पन्न मुनि
- घ- भ० पार्श्वनाथ के अनुयायी मनः पर्यव ज्ञानी मुनि
- ङ- भ० पार्श्वनाथ के मुक्त होने वाले शिष्य

- च मुक्त होने वाली आदिकाएँ
- छ म० पार्श्वनाथ के अनुयायी विपुनभन्तों मन पवंब्र ज्ञानी मुनि
- ज म० पार्श्वनाथ के अनुयायी वाइलडिच सम्पन्न मुनि
- झ म० पार्श्वनाथ के अनुयायी अनुत्तर दिमानों म उत्पन्न होने वाले मुनि

१६७ म० पार्श्वनाथ के पदचात मुक्त होनेवाले मुनि

१६८ क म० पार्श्वनाथ का गृहवास काल

ख म० पार्श्वनाथ का लुप्तजीवन

ग म० पार्श्वनाथ का कयनगान युक्त जीवन

घ- म० पार्श्वनाथ का धमण जीवन

च म० पार्श्वनाथ का सर्वायु

ज धावण गुफना अष्टमी के दिन सम्मेलन शैल शिखर पर चौबीस पुरुषों के साथ म० पार्श्वनाथ का निर्वाण

१६९ कल्प मूत्र का जन्म काल

म० नेमनाथ

१७० म० अरिष्ट नेमिनाथ के पाँच कल्याण

१७१ क नानिक कृष्णा द्वादशी के दिन अपराजित विमान से म० अरिष्ट नेमिनाथ की आत्मा का उद्वहन

ख लम्बुदीप भरत तीर्थपुर नगर, समुद्रविजय राजा, शिवादेवी व शिवा देवी की कुली में म० अरिष्टनेमि की आत्मा का उद्वहन

घ चौदह स्वप्न गभपानन आदि

१७२ क धावण गुफना पंचमी के दिन म० अरिष्ट नेमिनाथ का जन्म  
ख अरिष्ट नेमिनाथ नाम देने का हेतु

ग- अरिष्ट नेमिनाथ की तीन सौ वर्ष की वय होने पर लौकिक देवों का आगमन

घ तीर्थ प्रवृत्त के निवे प्राथना

ड- भ० अरिष्टनेमि द्वारा वर्षोदान

- १७३ श्रावण शुक्ला पष्ठी के दिन भ० अरिष्टनेमिनाथ की अनगार प्रव्रज्या
- १७४ भ० अरिष्टनेमिनाथ का चौपन दिन का कायोत्सर्ग आश्विन कृष्णा अमावस्या के दिन उज्जयन्त शैल शिखर पर भ० अरिष्टनेमिनाथ को केवल ज्ञान
- १७५ भ० अरिष्टनेमिनाथ के अठारह गण और गणधर
- १७६ भ० अरिष्टनेमिनाथ के अनुयायी श्रमण
- १७७ भ० अरिष्टनेमिनाथ की अनुयायी श्रमणियां
- १७८ भ० अरिष्टनेमिनाथ के अनुयायी श्रमणोपासक  
भ० अरिष्टनेमिनाथ की अनुयायी श्रमणोपासिकाएँ
- १७९ भ० अरिष्टनेमिनाथ के अनुयायी चौदह पूर्वी मुनि
- १८० क- भ० अरिष्टनेमिनाथ के अनुयायी अवधि-ज्ञानि मुनि  
ख- " " केवल ज्ञानी मुनि  
ग- " " वैक्रेय लब्धि सम्पन्न मुनि  
घ- " " विपुल मति मुनि  
ड- भ० अरिष्टनेमिनाथ के अनुयायी वादलब्धि सम्पन्न मुनि  
च- भ० अरिष्टनेमिनाथ के अनुयायी अनुत्तर विमानो में उत्पन्न होनेवाले मुनि  
छ- भ० अरिष्टनेमिनाथ के अनुयायी सिद्ध होनेवाले मुनि  
ज- भ० अरिष्टनेमिनाथ की अनुयायी सिद्ध होनेवाली आर्थिकाएँ
- १८१ भ० अरिष्टनेमिनाथ के पश्चात् मुक्त होनेवाले मुनि
- १८२ क- भ० अरिष्टनेमिनाथ का कुमार जीवन  
ख- " " छद्मस्थ जीवन  
ग- " " केवलज्ञान युक्त जीवन  
घ- " " पूर्णायु  
ड- " " आपाठ शुक्ला अष्टमी



वा उग्रनाथ न गिर पर निर्वाण

- १८३ म० अग्निनाथ के परवान् कल्याण का वाचना काव  
 १८४ म० नमिनाथ के परवान् कल्याण का वाचना काव  
 १८५ म० मुनि मुद्रण के परवान् कल्याण का वाचना काव  
 १८६ म० मन्विनाथ के परवान् कल्याण का वाचना काव  
 १८७ म० अरनाथ के परवान् कल्याण का वाचना काव  
 १८८ म० कृपुनाथ के परवान् कल्याण का वाचना काव  
 १८९ म० नाथिनाथ के परवान् कल्याण का वाचना काव  
 १९० म० धमनाथ के परवान् कल्याण का वाचना काव  
 १९१ म० अनभनाथ के परवान् कल्याण का वाचना काव  
 १९२ म० विमवनाथ के परवान् कल्याण का वाचना काव  
 १९३ म० वासुपुत्र  
 १९४ म० धर्माथ नाथ  
 १९५ म० गीतनाथ  
 १९६ म० गुरुविधि नाथ  
 १९७ म० चन्द्र प्रभ  
 १९८ म० सुपात्रनाथ  
 १९९ म० पद्मप्रभ  
 २०० म० मुमनि नाथ  
 २०१ म० अभिनान  
 २०२ म० सम्भव नाथ  
 २०३ म० अविनाथ  
 म० श्रुतभदेव

२०४ २०५ म० श्रुतभदेव के पाँच कल्याण

२०६ के आषाढ कृष्ण चतुर्थी के दिन भगवान की आत्मा का देव लोक से च्यवन

ख- जम्बूद्वीप, भरत, इक्ष्वकुभूमिका, नाभिकुलकर, मरुदेवा भार्या

ग- मरुदेवा भार्या की कुक्षि में भगवान की आत्मा का अवतरण

२०७ क- भ० ऋषभदेव को तीन ज्ञान

ख- मरुदेवा के चौदह स्वप्न

ग- प्रथम स्वप्न वृषभ का

घ- नाभि कुलकर द्वारा स्वप्न फल कथन

२०८ चैत्र कृष्णा अष्टमी को भ० ऋषभदेव का जन्म

२०९ जन्मोत्सव आदि

२१० भ० ऋषभदेव के पाँच नाम

२११ क- भ० ऋषभदेव का कुमार जीवन

ख- भ० ऋषभदेव का राज्य काल

ग- भ० ऋषभदेव द्वारा कला व शिल्पकर्मों का उपदेश

घ- सो पुत्रों का राज्याभिषेक

ङ- लोकान्तिक देवों का आगमन

च- वर्षादान

छ- चैत्र कृष्णा अष्टमी को चार हजार पुरुषों के साथ भ० ऋषभदेव की अनगर प्रव्रज्या

२१२ एक हजार वर्ष पश्चात् फाल्गुन कृष्णा एकादशी को पुरिमताल नगर के बाहर शकटमुख. उद्यान में न्यग्रोध (बड़) वृक्ष के नीचे भ० ऋषभदेव को केवलज्ञान

२१३ भ० ऋषभदेव के गण और गणधर

२१४ भ० ऋषभदेव के अनुयायी श्रमणों की संख्या

२१५ भ० ऋषभदेव की अनुयायी श्रमणियों की संख्या

२१६ " के श्रमणोपासकों की संख्या

२१७ " की श्रमणोपासिकाओं की संख्या

२१८ " के चौदह-पूर्वी मुनि

का उज्ज्वलान्तराल गिराए पर निर्वाण

- १८३ भ० अरिष्ट नमिनाथ के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल  
 १८४ भ० नमिनाथ के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल  
 १८५ भ० मुनि सुव्रत के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल  
 १८६ भ० मन्दिनाथ के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल  
 १८७ भ० अरनाथ के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल  
 १८८ भ० कथुनाथ के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल  
 १८९ भ० गानिनाथ के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल  
 १९० भ० धमनाथ के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल  
 १९१ भ० अनाउनाथ के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल  
 १९२ भ० विमलनाथ के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल  
 १९३ भ० वासुपुत्राय  
 १९४ भ० धर्मासि नाथ  
 १९५ न० गीतल नाथ  
 १९६ भ० मुञ्जिधि नाथ  
 १९७ भ० स्रष्ट प्रभ  
 १९८ भ० सुपाश्वनाथ  
 १९९ भ० पद्मप्रभ  
 २०० भ० सुमति नाथ  
 २०१ भ० अभिनन्दन  
 २०२ भ० सम्भव नाथ  
 २०३ भ० अश्विजनाथ  
 भ० ऋषभदेव

२०४ २०५ भ० ऋषभदेव के पाँच कल्याण

२०६ क आपाड कृष्णा चतुर्थी के दिन भगवान की आत्मा का देव लोक से पवन

- ख- जम्बूद्वीप, भरत, इक्ष्वाकुभूमिका, नाभिकुलकर, मरुदेवा भार्या
- ग- मरुदेवा भार्या की कुक्षि में भगवान की आत्मा का अवतरण
- २०७ क- भ० ऋषभदेव की तीन ज्ञान
- ख- मरुदेवा के चौदह स्वप्न
- ग- प्रथम स्वप्न वृषभ का
- घ- नाभि कुलकर द्वारा स्वप्न फल कथन
- २०८ चैत्र कृष्णा अष्टमी को भ० ऋषभदेव का जन्म
- २०९ जन्मोत्सव आदि
- २१० भ० ऋषभदेव के पाँच नाम
- २११ क- भ० ऋषभदेव का कुमार जीवन
- ख- भ० ऋषभदेव का राज्य काल
- ग- भ० ऋषभदेव द्वारा कला व शिल्पकर्मों का उपदेश
- घ- मो पुत्रों का राज्याभिषेक
- ङ- लोकान्तिक देवों का आगमन
- च- वर्षादान
- छ- चैत्र कृष्णा अष्टमी को चार हजार पुरुषों के साथ भ० ऋषभदेव की अनगर प्रव्रज्या
- २१२ एक हजार वर्ष पश्चात् फाल्गुन कृष्णा एकादशी को पुरिमताल नगर के बाहर शकटमुख उद्यान में न्यग्रोध (वड़) वृक्ष के नीचे भ० ऋषभदेव का केवलज्ञान
- २१३ भ० ऋषभदेव के गण और गणधर
- २१४ भ० ऋषभदेव के अनुयायी श्रमणों की संख्या
- २१५ भ० ऋषभदेव की अनुयायी श्रमणियों की संख्या
- २१६ " के श्रमणोपासकों की संख्या
- २१७ " की श्रमणोपासिकाओं की संख्या
- २१८ " के चौदह-पूर्वी मुनि

- २१६ भ० ऋषभदेव के अनुयायी अवधिज्ञानी मुनि  
 २२० वचनज्ञानी मुनि  
 २२१ अश्विपत्निय सम्पन्न मुनि  
 २२२ विपुनमति मन पयस ज्ञानी मुनि  
 २२३ वात्सल्यिय सम्पन्न मुनि  
 २२४ क मुक्त होनेवाले पिप्य  
 ल मुक्त होनेवाली आविष्कार  
 २२५ अनुत्तर विमानों में उतर न होनेवाले मुनि  
 २२६ भ० ऋषभदेव के ९ बात मुक्त होनेवाले पिप्यों की परम्परा  
 २२७ क भ० ऋषभदेव का कुमार जीवन  
 ल रा म काल  
 ग गृहवास काल  
 घ छसम्पन्न जीवन  
 ङ वैकुण्ठज्ञान पुस्तक जीवन  
 च धर्मज्ञ जीवन  
 छ सर्वसिद्धि  
 ज निर्वाण काल  
 झ माघ कृष्णा त्रयोदशी को निर्वाण  
 २२८ भ० ऋषभदेव के पश्चान्तर कल्पसूत्र का वाचना काल  
 भ० महावीर  
 १ भ० महावीर के ती गण इन्दारह गणधर  
 २ क ती गण होने का कारण  
 ल गणधरो के गोत्र  
 ग गणधरो ने त्रिन मुनियों को वाचना दी उनकी संख्या  
 ४ क इन्दारह गणधरो का आनाम पान  
 ल निर्वाण स्थान

ग- इग्यारह गणधरों का निर्वाण काल

- ५-२० क- मुधर्मा का शिष्य परिवार
- माथा १४ ग- स्थविरावली-स्थविरो के कुल, गोत्र, शाखा आदि  
वर्षावास समाचारी
- १ भ० महावीर का वर्षावास निश्चय
- २ पचास दिन पश्चात् वर्षावास निश्चित करने का हेतु
- ३-८ भ० महावीर का अनुमरण
- ६ वर्षावास में निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थियों का अवग्रह क्षेत्र
- १० वर्षावास में निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थियों का भिक्षाचर्या क्षेत्र
- ११ गहरे जलवाली नदियों के पार करने का निषेध
- १२-१३ अल्प जलवाली नदियों को पार करने की विधि
- १४-१६ ग्लान के निमित्त लार्ड हुई वस्तु ग्लान को ही देने का विधान
- १७ स्वस्थ सबल साधक को बारम्बार नो प्रकार की विकृति लेने का निषेध
- १८-१९ ग्लान के निमित्त आवश्यक वस्तु लाने की विधि
- २० क- एक ही बार भिक्षा लाने का नियम  
ग- आचार्यादि के निमित्त दूसरी बार भिक्षा लाने का विधान
- २१ उपवास के पारणा के दिन आवश्यक हो तो दो बार भिक्षा लाने का विधान
- २२-२४ क- दो उपवास और तीन उपवास के पारणा के दिन सूत्र २१ के ममान  
ग- उत्कृष्ट तप के पारणा के दिन स्वेच्छानुसार भिक्षाकाल
- २५ नित्यभोजी और तपस्थियों के लेने योग्य पानी
- २६ आहार-पानी की (दात) अल्पद घाग की मंग्या
- २७ क- उपवाध्रय के पारवर्षों घरों से भिक्षा लेने का निषेध  
ग- गृह मंग्या के तीन विधान
- २८ वर्षा में (अत्यल्प वर्षा में) भिक्षा के लिये जाने का निषेध

- २१६ भ० ऋषभदेव के अनुप गी अर्वाग्ज्ञानी मुनि  
 २१७ अवलगानी मुनि  
 २१८ वक्रियर्त्ति ३ मन्व न मुनि  
 २१९ विपुत्रमनि मन पदव ज्ञानी मुनि  
 २२० वात्सन्धि सम्पन्न मुनि  
 २२४ क मुक्ता होनेवाले गिण्य  
 ख मुक्ता होनेवाली आधिकार्य  
 २२५ अनुत्तर विमाना म ऊर व होनेवाले मुनि  
 २२६ भ० ऋषभ व के पश्चान मुक्ता होनेवाले गिण्यों की परम्परा  
 २२७ क भ० ऋषभदेव का कुमार जीवन  
 ख रा य वाउ  
 ग गृहवास काल  
 घ छद्म्य जीवन  
 ङ केवलज्ञान मुक्ता जीवन  
 च धमण जीवन  
 छ मवापु  
 ज निर्वाण काल  
 झ माघ वृष्णा षयोन्ती १० निर्वाण  
 २२८ भ० ऋषभदेव के पश्चान कल्पसूत्र का वाचना काल  
 भ० महावीर  
 १ भ० महावीर के नौ गण इन्दारह गणधर  
 २ क नौ गण होने का कारण  
 ख गणधरो के गोत्र  
 ग गणधरो ने जिन मुनियो को वाचना दी उनकी संख्या  
 ४ क इन्दारह गणधरो का अ म नाम  
 ख निर्वाण स्थान

- छ- " स्नेह सूक्ष्म
- ४६ क- आचार्यादि मे पूछकर भिक्षा के लिये जाने का विधान  
 ख- पूछकर जाने का कारण
- ४७ क- स्वाध्याय के लिये आचार्यादि से पूछ कर जाने का विधान  
 ख- शौच के लिये आचार्यादि से पूछ कर जाने का विधान  
 ग- आचार्यादि से पूछ कर ही विहार करने का विधान
- ४८ क- आवश्यकता ही तो आचार्यादि से पूछ कर ही विक्रति  
 भेदन का विधान  
 ख- पूछने का हेतु
- ४९ क- आचार्यादि से पूछ कर ही चिकित्सा कराने का विधान  
 ख- पूछने का हेतु
- ५० आचार्यादि से पूछ कर ही तपश्चर्या करने का विधान
- ५१ क- आचार्यादि से पूछ कर ही सलेमना-भक्त प्रत्यास्थान  
 करने का विधान  
 ख- पूछने का कारण
- ५२ क- वस्त्रादिको धूप मे मुखाकर भिक्षा के लिये जाने का निषेध  
 ख- " " " " स्वाध्याय के लिये " "  
 ग- " " " " कायोत्सर्ग करने का निषेध
- ५३-५४ विना आमन शयन के सोने बैठने का निषेध
- ५५ क- मग-मूत्रादि मे निवृत्त होने के लिये तीन स्थान  
 ख- तीन स्थान देवने का हेतु
- ५६ तीन पात्र लेने का विधान
- ५७ लोच का विधान  
 लोच के विकल्प
- ५८-५९ क- क्षमा याचना  
 ख- उपशम भाव से आराधना



- २६ सुते आशान के निच भोजन करने का निषेध
- ३० पाणिपात्र भिगु को वर्षा में भिगाय जाने का निषेध
- ३१ क पात्रधारी भिगु भिगुणी को अधिक वर्षा में भिगाय जाने का निषेध  
 ख पात्रधारी भिगु भिगुणी को अल्प वर्षा में भिगाय जाने का विधान
- ३२ वर्षा में टहरने के स्थान
- ३३-३५ गृह प्रवेश में पूव पक्व आहार के ही लेने का विधान
- ३६ क एक एक कर वर्षा हो तो भोजन करने की विधि  
 ख भाग्यकाल में पूव ही उपाध्यय में आने का विधान
- ३७ एक एक कर वर्षा हो तो निष्य निष्यी को एक स्थान पर रकने का निषेध
- ३८ निष्य निष्यी के एकत्र रकने के अनेक विकल्प
- ३९ एकत्र रकने की चतुर्भन्दी
- ४०-४१ क बिना पूछे आहार लाने का निषेध  
 ख निषेध का हेतु
- ४२ क पानी से शरीर गीला हो तो भोजन करने का निषेध  
 ख गील रहनेवाले स्थान
- ४३ पानी सूखने पर भोजन करने का विधान
- ४४ क आठ सूक्ष्म  
 ख पाँच पक्क
- ४५ क पाँच पक्क सूक्ष्म  
 ख बीज सूक्ष्म  
 ग हरित सूक्ष्म  
 घ पुष्प सूक्ष्म  
 ङ अण्ड सूक्ष्म  
 च लयन सूक्ष्म



- ग अनुपशम भाव मे विराघना  
 घ साधुता का मार
- ६० तीत उपाश्रय की याचना  
 ६१ भिक्षाचर्या के लिये दिशा ॐ  
 ६२ दग्ण धमण के लिये आव  
 का परिमाण
- ६३ अपसहार—समाचारी की आरा  
 ६४ भ० महावीर का चतुर्विध सव के  
 का प्रवचन



## दस प्रकीर्णक विषय-सूची

### १ चतुश्शरण प्रकीर्णक

- १ आवश्यक के छः अध्ययन
- २ मामाधिक आवश्यक मे चारित्र्य शुद्धि
- ३ चतुर्विंशति जिन स्तव से दर्शन शुद्धि
- ४ वन्दना आवश्यक मे ज्ञान शुद्धि
- ५ प्रतिक्रमण मे ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य शुद्धि
- ६ कार्यात्सर्ग से तप शुद्धि
- ७ पञ्चमखाण मे वीर्य शुद्धि
- ८ चौदह स्वप्न
- ९ उपोद्घात
- १० गण के कर्तव्य त्रय
- ११-२३ अहंत् शरण
- २४-३० मिद्ध शरण
- ३१-४१ साधु शरण
- ४२-४८ धर्म शरण
- ४९-५४ दृग्कृत गद्दी
- ५५-६१ मुकृत अनुमोदन
- ६२-६३ उपमहार

### २ आतुर प्रत्याख्यान प्रकीर्णक

- १ बान पण्डित मरण की व्याख्या
- २ देशयति की व्याख्या
- ३ पाच अणुव्रत



## दस प्रकीर्णक विषय-सूची

### १ चतुश्शरण प्रकीर्णक

- १ आवश्यक के छः अव्ययन
- २ सामाधिक आवश्यक मे चारित्र्य शुद्धि
- ३ चतुर्विंशति जिन स्तव मे दर्शन शुद्धि
- ४ वन्दना आवश्यक से ज्ञान शुद्धि
- ५ प्रतिक्रमण से ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य शुद्धि
- ६ कायोत्सर्ग से तप शुद्धि
- ७ पञ्चपखाण से वीर्य शुद्धि
- ८ चौदह स्वप्न
- ९ उपोद्घात
- १० गण के कर्तव्य त्रय

११-२३ अहंत् शरण

२४-३० मिद्ध शरण

३१-४१ साधु शरण

४२-४८ धर्म शरण

४९-५४ दुष्कृत गर्हा

५५-६१ सुकृत अनुमोदन

६२-६३ उपसहार

### २ आतुर प्रत्याख्यान प्रकीर्णक

- १ बाल पण्डित मरण की व्याख्या
- २ देशयति की व्याख्या
- ३ पाच अणुव्रत

१८ २२	आलोचना नि दा, गहीं
२३	निवशत्य की वृद्धि
२४ २६	सशम्य की वृद्धि नहीं
३० ३२	आलोचना नि दा प्रायश्चित्त
३३ ३४	सब बिरति
३५	बुद्ध आराधना
३६	बुद्ध प्रत्याख्यान
३७	अनृप्ति
३८	अन ग रोदन
३९ ४०	सकत्र ज म भरण
४१ ४२	पण्डित भरण की भावना
४३ ४४	अशरण भावना
४५ ५०	पण्डित भरण की भावना
५१ ६४	काम भोगी में अनृप्ति
६५	नि दा गहीं
६६	सुखित
६७	गृह्यु की प्रतीक्षा में
६८ ७६	पच महाव्रत रक्षा
७७ ७९	सकचा वरण
८० ८४	आत्म प्रयाजन का निदि
८५ ८८	निदान रहित होकर भरण की प्रतीक्षा करना
८९	मम्यक तप का मामध्य
९० ९२	पण्डित भरण
९३ ९४	आराधना की कठिनता
९५	आराधना की श्रद्धता
९६	वास्तविक सथारा

- ६८ इन्द्रिय रूप चीर
- ८६-१०० कर्म क्षय
- १०१ ज्ञानी और अज्ञानी के कर्म क्षय में अन्तर
- १०२ अन्तिम समय में द्वादशाङ्ग श्रुत चिन्तन असम्भव
- १०३-१०६ क- संवेग की वृद्धि  
ख- संवेगी के कर्तव्य
- १०७ मोक्ष मार्ग
- १०८ श्रमण व संयत
- १०९-११२ सर्व-प्रत्याख्यान
- ११३-११६ चार मंगल, चार शरण, पाप-प्रत्याख्यान
- १२० आराधक
- १२१-१२७ चिन्तन-मनन
- १२८ तप का आराधन
- १२९ आराधन ध्वज
- १३० वास्तविक सधारे से सर्वथा कर्मक्षय
- १३१ आराधक की तीन भव से मुक्ति
- १३२-१३५ पताका हरण
- १३६ भाव जागरण
- १३७ क- चार प्रकार की आराधना  
ख- तीन प्रकार की आराधना
- १३८-१३९ क- उत्कृष्ट आराधना से उसी भव से मोक्ष  
ख- जघन्य आराधना से सात आठ भव से मोक्ष
- १४० क्षमा याचना
- १४१ धीर और अधीर की मृत्यु
- १४२ उपसंहार-सम्यक् आराधना का फल



## ४ भक्त-परिज्ञा प्रकीर्णक

- १ क महावीरबदना  
 ल भवन परिज्ञा का कथन
- २ जिन गानव स्तुति  
 ३ गान सम्पादक
- ४ ४ वास्तविक सुख  
 ६ ८ जिनाणा का आराधन  
 ६ पण्डित मरण के तीन भेद  
 १० भवन परिज्ञा के दो भङ्ग  
 ११ भवन परिज्ञा का कथन
- १२ १५ भवन परिज्ञा की उपाधेयता  
 १६ दुःख भव समुद्र  
 १७ १८ भव समुद्र निरन्ने का मङ्गल  
 १९ गुरु का आदेश  
 २० गुरु वचना
- २१ २२ सम्यक आशोधना  
 २३ २८ महाजन स्थापना  
 २६ अगुजन आराधना  
 ३० गुरु मध और स्वधर्मी की पूजा  
 ३१ इत्य वा सदुपयोग
- ३२ ३४ सामायिक चारित्र की धारणा  
 ३५ भवन-परिज्ञा का आराधना  
 ३६ आराधना दोषों की आशोधना
- ३७ क अतिम प्रत्याख्यान  
 ल तीन आहार का त्याग या सबको त्याग
- ३८ ३९ चिन्तन मनन

- ४० मुग्ध विरेचन  
 ४१ नीतल तवाय का पान  
 ४२ मधुर विरेचन  
 ४३ यावज्जीवन के लिये तीन आहार का त्याग  
 ४४ आचार्य या सध से निवेदन  
 ४५-४६ चार आहार का त्याग  
 ४७-५० क्षमा याचना  
 ५१-५८ आचार्य का उपदेश  
 ५९ क- मिथ्यात्व का त्याग  
 ख- सम्यक्त्व में दृढता  
 ग- नमस्कार सूत्र का जाप  
 ६०-६२ मिथ्यात्व का फल  
 ६३ अप्रमाद का उपदेश  
 ६४ चार प्रकार का प्रशस्तराग  
 ६५-६६ दर्शन भ्रष्ट और चारित्र्य भ्रष्टमें अन्तर  
 ६७ अविरत का तीर्थंकर नाम कर्म सम्पादन  
 ६८-६९ सम्यक् दर्शन महिमा  
 ७०-७५ भक्ति मार्ग  
 ७६-८१ नमस्कार सूत्र आराधना का फल  
 ८२-८३ ज्ञान महिमा  
 ८४-८५ चञ्चल मन का बधन-ध्यान  
 ८६-८८ श्रुत-महिमा  
 ८९ हिंसा का त्याग  
 ९० दयाधर्म की आराधना  
 ९१ अहिंसा की महिमा  
 ९२-९३ जीव हिंसा स्वहिंसा है  
 ९४ हिंसा का फल

७	गर्भस्थजीव	की नरकगति और उसका हेतु
८		के वक्रम लक्षण
९	क	वा घम ध्वज
	ख	का गणनामनादि

साधा

१८	२१	गर्भविम्बा वजन
मद्य पा०	क	गर्भस्थ जीव का वजन
सूत्र १०		
२२	२३	स स्त्री पुरुष आदि होने का हेतु
सूत्र ११		
	२४	क तान प्रकार म प्रभव
		ख उद्दृष्ट यम स्थिति
२५		जन्म और मरण समय का दुःख और उसका विस्मरण
२६		प्रभव पीडा
२७	३०	गर्भस्थ जीव की दशा
३१		दश दशाब्दा के नाम
३२		(१) बाल दशा
३३		(२) क्रीडा दशा
३४		(३) मदा दशा
३५		(४) बला दशा
३६		(५) प्रज दशा
३७		(६) हापनी दशा
३८		(७) प्ररथा दशा
३९		(८) प्राग्भारा दशा
४०		(९) मु मुन्वी दशा
४१		(१०) शायनी दशा
४२	४४	दस दशाओं का प्रकारान्तर से वर्णन

४५-४७ धर्माचरण का उपदेश  
 ४८-४९ पुण्य करने के निमित्त प्रेरक वचन

गद्य पाठ

सूत्र १३ अप्रमाद का उपदेश  
 १४ युगल-मनुष्यो वा उपदेश  
 १५ छः सहन, छः सम्थान

गाथा

५०-५५ अवमपिणी कान (ह्यानवान्) का प्रभाव

गद्यपाठ ५६ क- सो वर्ष वी आयु मे तन्दुल आहार का परिमाण  
 ख- मागधप्रस्थ का मान  
 घ- तन्दुल आहार का प्रमाण  
 ट- अन्य भोज्य द्रव्य का प्रमाण

५७-५८ व्यवहार कालगणना

५९-६९ एक अहोरात्र के श्वासोच्छ्वास

७० एक मास "

७१ एक वर्ष के "

७२-७३ सौ वर्ष के "

७४ क- एक अहोरात्र के मुहूर्त

ख- एक मास के मुहूर्त

७५ सौ वर्ष के ऋतु

७६-७८ शलायु क्षय का क्रम

७९-८० धर्माचरण का उपदेश

८१-८२ आयु क्षय का रूपक

गद्यपाठ

सूत्र १६ क- प्रिय शरीर का ि  
 ख- प्रत्येक अंगोपांग  
 ग- शिरा आदि का

- घ- रोगों की उत्पत्ति का हेतु  
 छ- शरीरस्थ रक्तों का प्रमाण

गद्य पाठ

सूत्र १७

८३-८४

मानव शरीर का अन्तरङ्ग वर्णन

सूत्र १८

८५-८५

देह की अपवित्रता का वर्णन

८६-१२१

क- व्यक्ति की राग दृष्टि

ख- राग निवारण का उपदेश

गद्य पाठ

सूत्र १९

स्त्रियों की विकृत दगा का वर्णन

स्त्रियों के विकृत जीवन के सूचक ८३ नाम

स्त्री वाचक शब्दों का निरूपण

१२२ १२९

स्त्रियों के कुटिल दृश्य का वर्णन

१३०

मोहान्ध को उपदेश देना निरर्थक

१३१

मोह की निरर्थकता

१३२ १३५

धर्माचरण के नियम उपदेश

१३६

धर्म का फल

१३७ १३९

उपसंहार

### ६ सस्तारक प्रकीर्णक

१ १५

सथारे (अंतिम गाथना) की महिमा

१६ ३०

सथारा करने वालों का अनुमोदन

३१-३२

प्रपस्त सथारा

३३ ३५

अप्रशस्त सथारा

३६ ४३

पशस्त सथारा

४४ ५०

सथारे से लाभ

५१-५५	यथायं संथारा
५६-८८	अनीम में संथारा करनेवाली महान् आत्माओं का संक्षिप्त जीवन
८९-९०	सागरी संथारा
९१-९२	क्षमा याचना
९३-९८	चिन्तन-मनन
९९-१०२	ममत्त्व त्याग
१०३-१०६	क्षमा याचना
१०७-१०८	संथारे में कर्म क्षय
१०९-११३	संथारा करनेवाले को उपदेश
११४-११६	संथारा करने से कर्म क्षय
११७	तीन भव से मोक्ष
११८-१२२	संथारे की महिमा
१२३	उपमहार

### ७ गच्छाचार प्रकीर्णक

१	महावीर वन्दना-आदि वाक्य—
२	उन्मार्गगामियों का भव भ्रमण
३-७	श्रेष्ठ गच्छ में रहने का फल
८-९	आचार्य लक्षण जिज्ञासा
१०-११	अधम आचार्य के लक्षण
१२-१३	आचार्य अन्य के आचार्य समक्ष आलोचना करे
१४	श्रेष्ठ आचार्य
१५-१६	निकृष्ट आचार्य
१७	श्रेष्ठ और निकृष्ट आचा
१८	निकृष्ट शिष्य
१९	प्रमादी भ्रमण का उद्बो

२०-२२	श्रेष्ठ आचार्य
२३ २४	निकृष्ट आचार्य
२५ २६	श्रेष्ठ आचार्य
२७ २८	निकृष्ट आचार्य
२९ ३१	कनिष्ठ आचार्य का त्याग
३२ ३६	सावन्त पाक्षिव मुनि (साधु श्रावक से भिन्न तृतीय त्यागी वर्ग)
३७	निकृष्ट आचार्य का नाम भी न लेना
३८	आचार्य का वनव्य
३९	माता विराधक आचार्य
४०	गन्ध लक्षण का प्रज्ञापन
४१ ४२	गीताथ उपामना
४३	अगीतार्थ परित्याग
४४ ४५	गीताथ आराधना
४६-४९	अगीताथ परित्याग
५०	अश्रेष्ठ गन्ध का अनुपमन निविद्य
५१	श्रेष्ठ गन्ध से लाभ
५२-५८	श्रेष्ठ मुनि के सक्षण
५९	आहार करने के छ कारण
६० ६२	श्रेष्ठ गन्ध का वचन
६३ ७०	साध्विद्या के अमर्षादिष ममर्ग का निषेध
७१ ७५	श्रेष्ठ गन्ध का वर्णन
७६	उपाध्यय प्रमात्रन
७७ ८४	श्रेष्ठ गन्ध का वचन
८५	मुनगुण श्रेष्ठ मुनि
८६ ८७	श्रेष्ठ गन्ध
८८-९१	निकृष्ट गन्ध
९०	श्रेष्ठ गन्ध

६१-६६	निकृष्ट गच्छ
६७-१०२	श्रेष्ठ गच्छ
१०३	निकृष्ट गच्छ
१०४-१०५	श्रेष्ठ गच्छ
१०६	निकृष्ट गच्छ
१०७-११६	निकृष्ट माध्वी गच्छ
११७	श्रेष्ठ माध्वी मघ
११८-१२२	निकृष्ट माध्वी मघ
१२३	श्रेष्ठ माध्वी मघ
१२४-१२६	अमाध्वी लक्षण
१२७-१२८	श्रेष्ठ माध्वी लक्षण
१२९	निकृष्ट माध्वी लक्षण
१३०-१३१	श्रेष्ठ माध्वी मघ
१३२-१३४	निकृष्ट माध्वी लक्षण

### ८ गणिविद्या प्रकीर्णक

१	आदि वाक्य
२	नौ प्रकार के बल
३-७	विहार के लिए शुभाशुभ तिथियाँ
८	शिष्य का निष्क्रमण
९	तिथियों के नाम
१०	दीक्षा के लिए श्रेष्ठ तिथियाँ
११	नौ नक्षत्रों में गमन करना शुभ
१२-१४	प्रस्थान के लिये उपयुक्त नक्षत्र
१५	निषिद्ध नक्षत्र
१६-२०	निषिद्ध नक्षत्रों का फल
२१	पादपोषण करने के नक्षत्र



- २२ दीगा मून म निषिद्ध नगत्र  
 २३ ज्ञान वृद्धि करने वाच नगत्र  
 २४ लोच क लिए खेष्ट नगत्र  
 २५ ताच के निवे अनिष्ट नगत्र  
 २६ क दीगा व लिये खष्ट नगत्र  
 म गभी और वाचन ग् देने के निवे खेष्ट नगत्र  
 २७ स्थिर वाच के निग खष्ट नगत्र  
 २८ शीघ्र वाच सपान्न क निग खष्ट नगत्र  
 २९ ज्ञान सपान्न के निग खेष्ट नगत्र  
 ३० ३३ मृदु वाचों क निग खष्ट नगत्र  
 ३४ ३५ तप प्रारम्भ करने क निग खष्ट नगत्र  
 ३६ सस्तारक ग्रहण करने के लिए खष्ट न गत्र  
 ३७ ४० सध क वाचों क लिए खष्ट नगत्र  
 ४१ ४७ करण के नाम गुप्त वाचों क निग करण  
 ४८ ५२ छाया महत्त  
 ५३ ५५ गुप्त वाचों के लिए खष्ट योग  
 ५६ तीन प्रकार के शकुन  
 ५७ ६० तीर प्रकार के शकुनो म विच जाने वाल वाच  
 ६१ ६८ प्रशस्त और अप्रशस्त सम  
 ६९ मिथ्या और सत्य निमित्त  
 ७० ७३ तीन प्रकार के निमित्त  
 ७४ निमित्त की मत्स्यता  
 ७५ ७६ प्रशस्त निमित्तो मे प्रशस्त वाच  
 ७७ ७८ अप्रशस्त निमित्त में मव वाचों का निवेध  
 ७९ ८१ नव बलों मे उत्तरोत्तर बलवान  
 ८२ उपसहार

## ६ देवेन्द्रस्तव प्रकीर्णक

- १ जिन वन्दना  
 २ पति द्वारा भ० वर्द्धमान की स्तुति  
 ३ पत्नि का स्तुति श्रवण  
 ४-६ पति पत्नि की संयुक्त वर्द्धमान वंदना  
 ७ वत्तीस देवेन्द्रों के सम्बन्ध में पत्नि की जिज्ञासा  
 ८-१० वत्तीस देवेन्द्रों के सम्बन्ध में छः प्रश्न  
 क- वत्तीस इन्द्र कौन २ से ?  
 ख- वत्तीस इन्द्रों के रहने स्थान ?  
 ग- वत्तीस इन्द्रों की स्थिति  
 घ- वत्तीस इन्द्रों के अधिकार में भवन या विमान  
 ङ- भवनों और विमानों की लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई, वर्ण  
 आदि  
 च- वत्तीस इन्द्रों के अवधि ज्ञान का क्षेत्र  
 भवनवासी देवों का वर्णन  
 ११-१६ बीस भवनेन्द्रों के नाम  
 २०-२७ भवन संख्या  
 २८-३१ भवनेन्द्रों की स्थिति  
 ३२-४२ भवनेन्द्रों के नगर और भवन  
 ४३-४४ त्रायस्त्रिंशक देव, लोकपाल, परिपद और सामानिक देव,  
 सब इन्द्रों के सामानिक देव (संख्या में) समान हैं ।  
 ४५ भवनेन्द्रों की अग्रमहीपियां  
 ४६-५० भवनेन्द्रों के आवास स्थान और उत्पात पर्वत  
 ५१-६५ भवनेन्द्रों का बल-वीर्य  
 व्यन्तर देवों का वर्णन  
 ६६-६७ आठ प्रकार के व्यन्तर देव

- ६८ ७२ व्यतर देवी के महद्विक सोलह इत्र  
 ७३ क तीनों लोक में व्यतरे द्रा के स्थान  
 ख क्षीणलोक में भवन ७ के स्थान  
 ७४ ७८ व्यतरे द्रो के भवना का जब य मध्यम और उच्छृ  
 विस्तार  
 ७६ व्यतरे द्रा की स्थिति

### ज्योतिषी देवी का वर्णन

- ८० ८१ पाच ज्योतिषी दव  
 ८२ ज्योतिषी दवों के विमानों का स्थान  
 ८३ ८६ धरणिजल में ज्योतिषी देवा की ऊंचाई  
 ८७ ६२ ज्योतिषी देवा के मण्डल मण्डलों का आयाम विष्कम्भ  
 बाह्य परिधि  
 ६३ ज्योतिषी देवा क विमानों को सहन करने वाले देवों  
 की सख्या  
 ६४ ६५ ज्योतिषी देवों की गति  
 ६६ ज्योतिषी देवों की श्रद्धि  
 ६७ सब आभ्यन्तर सब बाह्य सर्वोपरि और सबमें नीचे  
 भ्रमण करने वाले नक्षत्र  
 ६८ १०० तार जा का अन्तर  
 १०१ १०४ चन्द्र क साथ याग करने वाले नक्षत्र  
 १०५ १०८ सूर्य के साथ योग करने वाले नक्षत्र  
 १०६ ११० अम्बुद्वीप में चन्द्र आदि पाच ज्योतिषी देव  
 १११ ११२ लवण समुद्र में  
 ११३ ११४ धातकी लवण में  
 ११५ ११७ कालोद समुद्र में

- ११८-१२० पुष्करवर द्वीप में चन्द्र आदि पांच ज्योतिषी देव  
 १२१-१२३ पुष्करार्ध द्वीप में " "
- १२४-१२६ मनुष्य लोक में " "
- १२७ क- मनुष्य लोक के बाहर चन्द्र आदि पांच ज्योतिषी देव  
 ख- ज्योतिषी देवों की गति का संस्थान
- १२८-१३६ ज्योतिषी देवों की पवित्रता
- १३७ क- चन्द्र सूर्य और मण्डलों में प्रदक्षिणावर्त गति  
 ख- नक्षत्र और ताराओं के अवस्थित मण्डल
- १३८-१३९ ज्योतिषी देवों की गति का मनुष्यों पर प्रभाव
- १४०-१४१ चन्द्र सूर्य का ताप क्षेत्र
- १४२-१४६ चन्द्र की हानि वृद्धि का कारण
- १४७-१४८ चर स्थिर ज्योतिषी देव
- १४९-१५२ मनुष्य क्षेत्र के चन्द्र सूर्य
- १५३ चन्द्र सूर्य का नक्षत्रों से योग
- १५४-१५६ क- चन्द्र सूर्य का अन्तर  
 ख- सूर्य से सूर्य का अन्तर  
 ग- चन्द्र से चन्द्र का अन्तर
- १५७-१५८ एक चन्द्र का परिवार
- १५९-१६२ ज्योतिषी देवों की स्थिति
- १६३-१६५ वारह देवलोकों के वाग्देव इन्द्र
- १६६ अहमिन्द्र ग्रैवेयक देव
- १६७-१६८ ग्रैवेयक देवों में उपपात
- १६९-१७३ वारह देवलोकों की विमान संस्था
- १७४-१७६ वैमानिक देवों की स्थिति
- १८०-१८६ ग्रैवेयक देव और अनुत्तर देवों की स्थिति
- १८७-१८८ विमानों के संस्थान
- १८९-१९० विमानों का आधार

१६१	१६३	देवताओं में लेख्या
१६४	१६८	देवताओं की अवगाहना
१६९	२०२	देवताओं का प्रविचार (मधुन)
	२०३	देवताओं की गंध
२०४	२१७	विमानों की अवस्थिति
२१८	२२०	भवनों और विमानों का अाप बहुत
२२१	२२४	अनुत्तर देवा का वणन
२२५	२२२	देवताओं की आहारेच्छा और स्वामीच्छवात्
२३३	२४०	देवताओं के अवधिज्ञान का क्षेत्र
२४१	२४७	विमानों की ऊचाई आदि का वणन
२४८	२७३	देवताओं का सामान्य परिचय तथा प्रामादों का वणन
२७४	२७६	ईषन्प्राम्भारा का वणन
२८०	३०२	सिद्धों का वणन (श्रीपदान्तिक क समान)
३०२	३०६	जिने का महिमा
	३०७	उपमहार

## १० मरण समाधि प्रकीर्णक

	१	मगनाचरण आदि वाक्य
	२७	अभ्युद्यत मरण की जिज्ञासा
	८११	अभ्युद्यत मरण का कथन
१२	१४	आमोचन है वह आराधिक है
	१५	तीन प्रकार की आराधना
१६	३५	दणन आराधक आराधक का अ प समार
३६	३७	आहार करने के छ कारण
	३८	आहार न करने के छ कारण
३६	४	आराधन का नाम
४४	४६	पठित मरण के लिये उपनेग

- ४७ आराधना से शुद्धि  
 ४८-५२ शल्य रहित की शुद्धि  
 ५३-५४ संवृत और असंवृत की निर्जरा  
 ५५ पीन और संयम में भाव शुद्धि  
 ५६ विमुक्त चारित्र्य में दुःख क्षय  
 ५७-५८ निःशल्य होने से विमुक्त चारित्र्य  
 ५९ पान नविलप्ट भावनाओं का त्याग  
 ६० एक असन्वितपृ भावना का समाहर  
 ६१ क- कन्दर्प भावना  
 ६२ ग- किल्विपक भावना  
 ६३ ग- अभियोगी भावना  
 ६४ घ- आश्रयी भावना  
 ६५ छ- सांमोही भावना  
 ६६ असंविनष्ट भावना से शुद्ध  
 ६७-७७ बाल मरण वर्णन  
 ७८ निःशल्य आलोचक है वह आराधक है  
 ७९-८५ आलोचना आदि चौदह प्रकार की विधि  
 ८६-८७ क- आचार्य के गुण  
 ख- अट्टारह स्थान  
 ग- आठ स्थान  
 ८८-८९ उपस्थापना के दस स्थान  
 ९०-९३ आचार्य के गुण  
 ९४-१२६ क- शल्य है वह आराधक नहीं  
 ख- निःशल्य है वह आराधक है  
 ग- आलोचना के दस दोष  
 घ- ज्ञान प्राप्ति के लिए पुरुषार्थ करने का उपदेश  
 १२७-१२८ वारह प्रकार के तप का आचरण

- १०६ म्यान्मार का मणिमा  
 ११० युनान का वाइनाप  
 १११ १ ० निम्नभावा नामा का अर्थिक निवारा  
 ११६ धार्मिक अन्त  
 ११५ अन्तर्गत नामा का निवारा म अन्तर  
 ११ १६३ ज्ञान का मणिमा  
 १४६ १६० कथन का मणिमा  
 १६ १ १ ज्ञान और धार्मिक म कथन  
 १७० १ ० क मन्त्रना का विधि  
 म मन्त्रना का मन्त्र  
 १८८ ०८ क मन्त्रना का मन्त्र  
 ०८ ११ अन्तर्गत का मन्त्र  
 ११ ०१६ अन्तर्गत  
 ११ १ अन्तर्गत का अन्तर्गत  
 १७ १ अन्तर्गत अन्तर्गत  
 मिथ्या अन्तर्गत  
 २ २०३ क अन्तर्गत अन्तर्गत  
 म अन्तर्गत अन्तर्गत  
 ०६ २०६ अन्तर्गत अन्तर्गत  
 ००७ २ ६ क अन्तर्गत अन्तर्गत  
 म अन्तर्गत अन्तर्गत



## पिण्ड निर्युक्ति विषय-सूचि

गाथा	१	क- पिण्ड निर्जीवन के भाव भेद
गाथा	२	पिण्ड शब्द के पर्याय
गाथा	३	पिण्ड के चार भावना दर्शनयोग
गाथा	४-५	पिण्ड के द्वा-निर्देश
गाथा	६	नाम पिण्ड की व्याख्या
गाथा	७	स्वात्मना पिण्ड की व्याख्या
गाथा	८-९	अध्वयित के तीन भेद ग- प्रत्येक के भी भेद
गाथा	१०-११	क- पृथ्वीकाय के तीन भेद ग- अचित्त-मर्जीव-पृथ्वीकाय के दो भेद
गाथा	१२	मिश्र पृथ्वीकाय की व्याख्या
गाथा	१३	अचित्त-निर्जीव-पृथ्वीकाय
गाथा	१४-१५	अचित्त पृथ्वीकाय में प्रयोजन
गाथा	१६-१७	क- अध्वय के वेद, तीन भेद ग- सभित्त अध्वय के दो भेद
गाथा	१८	मिश्र अध्वय
गाथा	१९	मिश्र अध्वय के सम्बन्ध में तीन विभिन्न मत
गाथा	२०	तीनों मतों का निराकरण
गाथा	२१	आगम सम्मत मत का प्रतिपादन
गाथा	२२	अचित्त अध्वय की व्याख्या
गाथा	२३	अचित्त अध्वय से प्रयोजन
गाथा	२४	क- वर्षाकाल के प्रारम्भ में वस्त्र धोने का विधान क- अन्य ऋतुओं में वस्त्र धोने का विधान



		ग	अथ शतुभा म वस्त्र धोने न लगनेवाने दोष
गाथा	२५		वर्षाकाल क प्रारम्भ म वस्त्र न धोने से लगनेवाले दोष
गाथा	२६		धोने योग्य उपधि का परिमाण
गाथा	२७		आचार्य द्वार ग्जान माधु क वस्त्र सभी ऋतुओं मे धोने का विधान
गाथा	२८		सदव समीप रखने योग्य उपधि की विधि
गाथा	२९	क	अथ वस्त्रो की परीक्षा
		ख	परीक्षा के पश्चात् धोने का विधान
गाथा	३१		वस्त्र परीक्षा के सम्बन्ध मे विभि न मत
गाथा	३२		संघादक लेने की विधि
गाथा	३३		वस्त्र धान का ऋत
गाथा	३४		वस्त्र धोने की विधि
गाथा	३५	क	तेजस्काय के तीन भेद
		ख	सचित्त तेजस्काय क दो भेद
		ग	मिथ तेजस्काय
गाथा	३७		अचित्त तेजस्काय
गाथा	३८		वायुकाय क तीन भेद
गाथा	३९	क	सचित्त वायु के दो भेद
		ख	अचित्त वायुकाय
गाथा	४१	क	अचित्त वायुकाय की क्षेप एव काल मर्त्या
		ख	मिथ वायुकाय
गाथा	४२		अचित्त वायुकाय स प्रयोजन
गाथा	४३	क	वनस्पतिकाय तीन भेद
		ख	सचित्त वनस्पतिकाय क दो भेद
गाथा	४४		मिथ वनस्पतिकाय
गाथा	४५		अचित्त वनस्पतिकाय



गाथा १६६	आधाकम स्वात्मि स्वात्मि का उदाहरण
गाथा १७० १७१	निर्मित्त और कृत गण का अर्थ
गाथा १७ १७६	कृत की द्वाया के सम्बन्ध में कल्प अक्षय्य का निरणय
गाथा १७७ १७८	निर्मित्त और कृत की चतुर्भगी
गाथा १७९	अनित्रमात्ति चार दोष
गाथा १८०	आधाकम आहार का निष् निमत्रण
गाथा १८१ १८२	क आधाकम आहार ग्रहण करने में अनित्रमात्ति दोष
	ख अनित्रमात्ति दोष का उदाहरण
गाथा १८३ १८८	आधाकम आहार ग्रहण करने में आनाभग आत्ति चार दोष
गाथा १८६	अक्षय्य आधाकम विषयक श्रुति
गाथा १९०	आधाकम अभा य है
गाथा १९१ १९४	अक्षय्य और अभा य का उदाहरण
गाथा १९५	आधाकम आहार ग स्पृष्ट आहार भी अक्षय्य है
गाथा १९६	आधाकम आहारवान् वाच में कुछ आहार भी अक्षय्य है
गाथा १९७ २००	आय वस आहार का विधि पूर्वक और अविधि पूर्वक पाप
गाथा २०४ ६	य न कृ ग आधाकम आहार का निरणय
गाथा २०७	आयवृत्ति का सुख आहार आयव परिणाम
गाथा २०	कुछ आहार पत्र पर भ अक्षय्य आहारि जाया न अनुस्र कर्षी का कृ
गाथा २०६ २११	कुछ आहार पत्रों को अनुस्र आहार विधाने

गाथा २१२-२१६	क- आज्ञाकेआराधक का सदोष आहार भी निर्दोष ख- आज्ञा विराधक का निर्दोष आहार भी सदोष.
गाथा २१७	आधाकर्म भोजी की दुर्गति का उदाहरण.
गाथा २१८	औद्देशिक आहार के दो भेद.
गाथा २१९	विभाग औद्देशिक के वारह भेद.
गाथा २२०-२२१	औष औद्देशिक का उदाहरण.
गाथा २२२-२२७	औष औद्देशिक आहार का ज्ञान.
गाथा २२८	विभाग औद्देशिक.
गाथा २२९-२३०	औद्देशिक आदि चार भेदों की व्याख्या.
गाथा २३१	क- उद्दिष्ट औद्देशिक के दो भेद. ख- प्रत्येक भेद के चार चार भेद.
गाथा २३२	अच्छिन्न द्रव्य औद्देशिक आहार.
गाथा २३३	च्छिन्न द्रव्य औद्देशिक आहार.
गाथा २३४-२३६	कल्प्य और अकल्प्य उद्दिष्ट आहार.
गाथा २३७	उद्दिष्ट औद्देशिक आहार.
गाथा २३८-२३९	कृत औद्देशिक आहार.
गाथा २४०	कर्म औद्देशिक आहार.
गाथा २४१-२४२	कल्प्य और अकल्प्य कर्म औद्देशिक आहार.
गाथा २४३	क- पूतिकर्म के चार भेद. ख- द्रव्य पूतिकर्म का उदाहरण. ग- भाव पूतिकर्म के दो भेद.
गाथा २४४	द्रव्य पूति की व्याख्या.
गाथा २४५-२४६	द्रव्य पूति का उदाहरण.
गाथा २४७-२४८	भाव पूति की व्याख्या.
गाथा २४९	क- भावपूति के दो भेद ख- वादर भावपूति के दो भेद
गाथा २५०	भवत-पान पति की व्याख्या

गाथा ८६	द्रव्य और भाव उत्पन्न का स्वल्प
गाथा ८७ ९०	द्रव्य उदगम का उदाहरण
गाथा ९१	क दान गुद्धि से चारित्र्य गुद्धि
	ख उदगम गुद्धि से चारित्र्य गुद्धि
गाथा ९२ ९३	सात्वत उदगम दोष
गाथा ९४	आधाकम सप्त्ति ३ चार द्वार
गाथा ९५	आधाकम के समानाधिक पद
गाथा ९६	व्ये आधा की व्याख्या
गाथा ९७	भाव आधा की व्याख्या
गाथा ९८	द्रव्य अथ कम की व्याख्या
गाथा ९९	भाव अथ कम की व्याख्या
गाथा १०० १०२	आपानम म अधोगति
गाथा १०२	आत्मघ्न की व्याख्या
गाथा १०४	द्रव्य आत्मघ्न और भाव आत्मघ्न
गाथा १०५	चारित्र्य के नाश से ज्ञान दर्शन का नाश तथा इस सम्बन्ध में निश्चय दृष्टि और व्यवहार दृष्टि
गाथा १०६	क द्रव्य आत्मघ्न
	ख भाव आत्मघ्न के दो भेद
गाथा १०७	भाव आत्मघ्न की व्याख्या
गाथा १०८ ११०	क परकृत कम का आत्मकमरूप में परिणत होना
	ख कृत उपमा का त्रिवचन से विरोध
	ग भावकृत से कम बध
गाथा १११	आधाकम आहार ग्रहण करने से कम बध
गाथा ११२	प्रतिभवेना प्रतिधवेना सवासन और अनुमोदन की कर्मशुद्धता लघुता
गाथा ११३	प्रतिभवेना आदि चार द्वार
गाथा ११४ ११५	प्रतिभवेना की व्याख्या

गाथा	११६	प्रतिश्रवणा की व्याख्या.
गाथा	११७	संवास और अनुमोदन की व्याख्या
गाथा	११८-१२४	प्रतिसेवना और प्रतिश्रवणा के उदाहरण.
गाथा	१२५-१२६	सवास का उदाहरण.
गाथा	१२७-१२८	अनुमोदन का उदाहरण,
गाथा	१२९-१३०	आधाकर्म शब्द के समानार्थक शब्दों की अर्थ विपयक चतुर्भंगी.
गाथा	१३१-१३२	चतुर्भंगी के उदाहरण.
गाथा	१३३-१३४	आधाकर्म शब्द के सवध में चतुर्भंगी.
गाथा	१३५	आधाकर्म शब्द के समानार्थक शब्द.
गाथा	१३६	आधाकर्म आहार ग्रहण करने से आत्मा की अधो-गति.
गाथा	१३७	सार्धमिक के निमित्त बनाहुआ आहार आधा-कर्म है.
गाथा	१३८	सार्धमिक के वारह भेद.
गाथा	१३९-१४१	वारह प्रकार के लक्षण.
गाथा	१४२-१४३	नाम सार्धमिक सवधी कल्प्य अकल्प्य विधि.
गाथा	१४४	स्थापना सार्धमिक और द्रव्य सार्धमिक सवधी विधि.
गाथा	१४५	क्षेत्र सार्धमिक संबन्धी कल्प्य अकल्प्य विधि.
गाथा	१४६-१५६	प्रवचन आदि सात पदों के इकवीस भग और उनके उदाहरण.
गाथा	१६०	आधाकर्म का स्वरूप ममभाने के लिए अशन आदि की व्याख्या.
गाथा	१६१	अशनादि सम्बन्धी चतुर्भंगी.
गाथा	१६२-१६७	आधाकर्म अशन का उदाहरण
गाथा	१६८	आधाकर्म पेय का उदाहरण.

गाथा १६६	आधाकम स्वाग्निं स्वाग्निं का उग्रहरण
गाथा १७० १७१	निग्निं और कृत गन् का अय
गाथा १७०-१७६	कृत की द्वाया क मन्वाध म कल्प अरुण्य का निषय
गाथा १७७ १७८	निग्निं और कृत का चतुभमी
गाथा १७६	अतिक्रमाग्निं चार दोष
गाथा १८०	आधाकम आगार क विण निमदन
गाथा १८१ १८२	क आधाकम आहार ग्रहण करने से अतिक्रमाग्निं दोष
	म अतिक्रमाग्निं दोष का उग्रहरण
गाथा १८३ १८८	आधाकम आगार ग्रहण करने से आजाभग आग्निं चार गण
गाथा १८६	अनल्प आधाकम विषय ५ गार
गाथा १९०	आधाकम यथाय है
गाथा १९१ १९४	अकल्प्य और अभा २ क उग्रहरण
गाथा १९२	आधाकम अहार म मृष्ट आगार भी अकल्प्य है
गाथा १९६	आधाकम आगारिभान पाय म गुड आहार भी अकल्प्य है
गाथा १९७ २०३	आग्निं कम आहार का विधि पूर्व और अग्निं पूर्व क गीत
गाथा २०४ ६	ग व ३ ग २ गाम आगार का निषय
गाथा ०७	आग्निगति का मूत्र आगार अ म परिणाम
गाथा ०८	गुड आगार जन पर म अग्निगत आग्निगति गाथा ० अनुभ कथों का क १
गाथा २०६ २११	गुड आहार स्वर्गी की अनुड आगार पित्रने पर भा गण न

- गाथा २१२-२१६ क- आज्ञाके आराधक का सदोप आहार भी निर्दोष  
 ग- आज्ञा विराधक का निर्दोष आहार भी सदोप.  
 गाथा २१७ आधाकर्म भोजी की दुर्गति का उदाहरण.  
 गाथा २१८ औद्देशिक आहार के दो भेद.  
 गाथा २१९ विभाग औद्देशिक के चारह भेद.  
 गाथा २२०-२२१ औष औद्देशिक का उदाहरण.  
 गाथा २२२-२२७ बोध औद्देशिक आहार का ज्ञान.  
 गाथा २२८ विभाग औद्देशिक.  
 गाथा २२९-२३० औद्देशिक आदि चार भेदों की व्याख्या.  
 गाथा २३१ क- उद्विष्ट औद्देशिक के दो भेद.  
 ग- प्रत्येक भेद के चार चार भेद.  
 गाथा २३२ अछिन्न द्रव्य औद्देशिक आहार.  
 गाथा २३३ छिन्न द्रव्य औद्देशिक आहार.  
 गाथा २३४-२३६ कल्प्य और अकल्प्य उद्विष्ट आहार.  
 गाथा २३७ उद्विष्ट औद्देशिक आहार.  
 गाथा २३८-२३९ कृत औद्देशिक आहार.  
 गाथा २४० कर्म औद्देशिक आहार.  
 गाथा २४१-२४२ कल्प्य और अकल्प्य कर्म औद्देशिक आहार.  
 गाथा २४३ क- पूतिकर्म के चार भेद.  
 ग- द्रव्य पूतिकर्म का उदाहरण.  
 ग- भाव पूतिकर्म के दो भेद.  
 गाथा २४४ द्रव्य पूति की व्याख्या.  
 गाथा २४५-२४६ द्रव्य पूति का उदाहरण.  
 गाथा २४७-२४८ भाव पूति की व्याख्या.  
 गाथा २४९ क- भावपूति के दो भेद।  
 ग- वादर भावपूति के दो भेद  
 गाथा २५० भवत-पान पूति की व्याख्या



गाथा	२५१	उपकरण पुति क भय
गाथा	२५२ २५६	मिथ्र भवन पान पुति
गाथा	२५७ २६१	सूक्ष्मपुति की व्याख्या
गाथा	२६२	दो प्रकार के वाय
गाथा	२६३ २६५	सूक्ष्मपुति का परिहार नश्य नहीं है ।
गाथा	२६६ २६८	द्वैतपुति के कल्प्य अकल्प्य का विधान
गाथा	२६९	आधाकम और पुति की भि नना
गाथा	२७०	आधाकम और पुतिकम व जानने की विधि
गाथा	२७१	मिथ्रज्ञ न क नीन भेद
गाथा	२७२	साधनबिक मिथ्र जानने की विधि
गाथा	२७३	पाख जो मिथ्र और हाव मित्र जानने की विधि
गाथा	२७४ २७५	अकल्प्य मिथ्रज्ञान की भयवरता का उदाहरण
गाथा	२७६	पात्रपुति की विधि
गाथा	२७७	स्थापना नष्ट क दा भेद
गाथा	२७८	परस्थ न स्थापना के अनेक भेद
गाथा	२७९	स्वस्थान स्थापना और परस्थान स्थापना के दो
		दो भेद
गाथा	२८०	दो प्रकार क द्वय
गाथा	२८१ २८३	परपरा स्थापित का उदाहरण
गाथा	२८४	प्राभृतिका
गाथा	२८५	क प्राभृतिका के दो भेद
		ख प्रथम प्राभृतिका के दो दो भेद
गाथा	२८६ २९०	प्राभृतिका के उदाहरण
गाथा	२९१	प्राभृतिका आहार करनवाय की दुगति
गाथा	२९२ २९७	प्रादुस्करण की व्याख्या
गाथा	२९८ २९९	क प्रादुस्करण के दो भेद
		ख वाय शुद्धि

गाथा ३००-३०२	प्रगटीकरण के उदाहरण
गाथा ३०३-३०४	कल्प्य और अकल्प्य प्रकार का करण
गाथा ३०५	पात्र मुद्धि
गाथा ३०६	क- प्रीतकृत के दो भेद ख- प्रत्येक प्रीतकृत के दो दो भेद ग- परद्रव्य प्रीत के तीन भेद
गाथा ३०७	आत्मप्रीत के दो भेद
गाथा ३०८	आत्मप्रीत दोष की व्याख्या
गाथा ३०९-३११	क- परभाव प्रीत दोष की व्याख्या ख- परभाव प्रीत दोष के सहभावी तीन दोषों का उदाहरण
गाथा ३१२-३१५	आत्मभाव प्रीत के अनेक भेद
गाथा ३१६	प्रामित्य दोष के दो भेद
गाथा ३१७-३२०	लौकिक प्रामित्य दोष का उदाहरण
गाथा ३२१	लोकोत्तर प्रामित्य के दो भेद
गाथा ३२२	लोकोत्तर प्रामित्य का अपवाद
गाथा ३२३	क- परिचर्तित दोष के दो भेद ख- प्रत्येक परिचर्तित दोष के दो दो भेद
गाथा ३२४-३२६	लौकिक परिचर्तित का उदाहरण
गाथा ३२७-३२८	लोकोत्तर परिचर्तित की व्याख्या
गाथा ३२९	क- अभ्याहृत के दो भेद ख- प्रत्येक अभ्याहृत दोष के दो दो भेद
गाथा ३३०	नो निशीथ अभ्याहृत के भेदानुभेद
गाथा ३३१-३३२	जलमार्ग अभ्याहृत के अनेक भेद
गाथा ३३३-३३५	क- स्व ग्रामे अभ्याहृत के दो भेद ख- नो गृहांतक अभ्याहृत के अनेक भेद
गाथा ३३६	निशीथ अभ्याहृत की व्याख्या

गाथा	२५१	उपकरण पुनि क भग
गाथा	२५२ २५६	मिश्र भवन-दान पुनि
गाथा	२५७ २६१	मूढमपुनि की व्याख्या
गाथा	२६२	दो प्रकार क वाय
गाथा	२६३ २६५	नूत्रमपुनि का परिहार शक्य नहीं है ।
गाथा	२६६ २६८	द्रव्यपुति के कल्प्य अकल्प्य का विधान
गाथा	२६९	आधाकम और पूति का भिन्नता
गाथा	२७०	आधाकम और पूतिकम क जानन की विधि
गाथा	२७१	मिश्रजान क जान नद
गाथा	२७२	व्यवहारिक मिश्र जानन की विधि
गाथा	२७३	पाखंडा मिश्र और मानु मिश्र जानने की विधि
गाथा	२७४ २७५	अकल्प्य मिश्रजान की भयकरता का उदाहरण
गाथा	२७६	पात्रगुद्धि की विधि
गाथा	२७७	स्थापना दाप के दो भेद
गाथा	२७८	परस्थान स्थापना के अनेक भेद
गाथा	२७९	स्वस्थान स्थापना और परस्थान स्थापना के दो दो भेद
गाथा	२८०	दो प्रकार क द्रव्य
गाथा	२८१ २८३	परपरा स्थापित का उदाहरण
गाथा	२८४	प्राभृतिका
गाथा	२८५	क प्राभृतिका के दो भेद ख प्रत्येक प्राभृतिका क दो दो भेद
गाथा	२८६ २९०	प्राभृतिका क उदाहरण
गाथा	२९१	प्राभृतिका आहार करनेवान की दुर्गति
गाथा	२९२ २९७	प्रादुष्करण की व्याख्या
गाथा	२९८ २९९	क प्रादुष्करण के दो भेद ख पात्र शुद्धि

गाथा ३६३	अविशोधि कोटि का उद्गम
गाथा ३६४	अविशोधि कोटि उद्गम के दो भेद
गाथा ३६५-३६६	विशोधिकोटि उद्गम के चार भेद
गाथा ३६७-४००	विशोधि कोटि की चतुर्भंगी
गाथा ४०१	क- कोटिकरण के दो भेद ख- उद्गम कोटि के छः भेद
गाथा ४०२	विशोधि कोटि के अनेक भेद
गाथा ४०३	उद्गम और उत्पादन की भिन्नता
गाथा ४०४	क- उत्पादन के चार भेद ख- द्रव्य उत्पादना के तीन भेद ग- भाव उत्पादना के सोलह भेद
गाथा ४०५	सचित्त द्रव्योत्पादना
गाथा ४०६	क- अचित्त द्रव्योत्पादना ख- मिश्र द्रव्योत्पादना
गाथा ४०७	भाव उत्पादना के दो भेद
गाथा ४०८-४०९	अप्रशस्त भावोत्पादना के सोलह भेद
गाथा ४१०	क- पाच प्रकार की धात्रिया ख- प्रत्येक धात्री के दो दो भेद
गाथा ४११	धात्री शब्द की व्युत्पत्ति
गाथा ४१२-४२०	क्षीर धात्री दोष का वर्णन
गाथा ४२१-४२७	मज्जन धात्री आदि शेष धात्री दोष
गाथा ४२८	दूती दोष के दो भेद
गाथा ४२९	क- प्रत्येक दूती दोष के दो दो भेद ख- छन्न दूती के दो भेद
गाथा ४३०	स्वग्राम और परग्राम प्रकट दूती
गाथा ४३१	स्व ग्राम-परग्राम लोकोत्तर छन्न दूती
गाथा ४३२	स्व ग्राम लौकिक-लोकोत्तर छन्न दूती

गाथा ४३३-४३४	शमट परशाम दूती का उदाहरण
गाथा ४३५	निमित्त दोष
गाथा ४३६	निमित्त दोष का उदाहरण
गाथा ४३७	आज्रीविका के पाच भेद
गाथा ४३८	पाच भेदों की व्याख्या
गाथा ४३९ ४४०	क- ज्ञानि उपज्रीविका ख- ज्ञानि उपज्रीविका का उदाहरण
गाथा ४४१	कृत्त आज्रीविका
गाथा ४४२	निम्न आज्रीविका
गाथा ४४३	पाच प्रकार के वनीपक
गाथा ४४४	वनीपक दाद का निरुद्ध
गाथा ४४५	पाच प्रकार के श्मण
गाथा ४४६	श्मण वनीपक
गाथा ४४७	श्मण वनीपक की दोष रूपता
गाथा ४४८	स्राह्यण वनीपक
गाथा ४४९	कृपण वनीपक
गाथा ४५०	अनिधि वनीपक
गाथा ४५१ ४५२	श्वान वनीपक
गाथा ४५३	स्राह्यण वनीपक आदि की दोष रूपता
गाथा ४५४	बाकार्दि वनीपक
गाथा ४५५	अपात्र श्मणा दोष
गाथा ४५६	क- चिदित्मा दोष ख- चिदित्मा के तीन भेद
गाथा ४५७ ४५८	चिदित्मा के तीनों के भेदों की व्याख्या
गाथा ४६०	चिदित्मा में दोषों की संभावना
गाथा ४६१	शोषादि पाच प्रकार के विण्ड
४६२-४६४	शोषविण्ड का उदाहरण

गाथा ४६५-४७३	मानपिण्ड का उदाहरण
गाथा ४७४-४८०	मायापिण्ड का उदाहरण
गाथा ४८१-४८३	तोभपिण्ड का उदाहरण
गाथा ४८४	क- संस्तव के दो भेद ख- प्रत्येक भेद के दो दो भेद
गाथा ४८५	पूर्व संस्तव और पश्चात् संस्तव
गाथा ४८६	परिचय करने की विधि
गाथा ४८७	पूर्व संस्तव का उदाहरण
गाथा ४८८	पश्चात् संस्तव का उदाहरण
गाथा ४८९	पूर्व-पश्चात् संस्तव के दोष
गाथा ४९०	वचन संस्तव की व्याख्या
गाथा ४९१	पूर्व संस्तव की व्याख्या
गाथा ४९२	पश्चात् संस्तव की व्याख्या
गाथा ४९३-४९९	विद्या और मंत्र दोष के उदाहरण
गाथा ५००	क- चूर्ण योग और मूलकर्म दोष ख- चूर्ण योग और मूलकर्म के उदाहरण
गाथा ५०१	चूर्ण दोष
गाथा ५०२	योग के दो भेद
गाथा ५०३-५०५	आहार्य पाद-लेपन योग का उदाहरण
गाथा ५०६-५०७	मूलकर्म का उदाहरण
गाथा ५०८-५०९	विवाह दोष का उदाहरण
गाथा ५१०-५११	गर्भपात का उदाहरण
गाथा ५१२	मूलकर्म दोष की दोष रूपता
गाथा ५१३	ग्रहर्षण की विधुद्धि
गाथा ५१४	गवेपणा और ग्रहर्षण की भिन्नता का कथन
गाथा ५१५	क- संकित और अपरिणत ए दो दोष साधु स्वयं लगाता है ।

	ख	गप आठ दीप वृत्तस्थ लगाते हैं
गाथा ५१६	क	ग्रहणपणा के चार नि ११
	ख	द्रव्य ग्रहणपणा का उपा रण
	ग	भाव प्र गणना के दस भेद
गाथा ५१७ ५१६	द	प्र य ग्रहणपणा का उपाहरण
गाथा ५२०		अप्राम्त भाव ग्रहणपणा के दस भेद
गाथा ५२१	क	शक्ति दीप की चतुर्भगी
	ख	एक भव गुड है गेप भग अगुड है
गाथा ५२२		सोमह उदगम दाप और नव अग्निनामि दीप ये २५ दीप
गाथा ५२३		उपयोग मुक्त छमरख अतज्ञानी वा लिया हुआ सन्तोष आचार भी गुड है
गाथा ५२४		अतज्ञानी द्वारा नाए हुए आहार का केवली द्वारा ग्रहण करना
गाथा ५२५		धन के अप्रामाण्य होने पर चारित्र्य शाराधना का व्यथ होना
गाथा ५२६ ५२८	घ	गु और परिभाषा सम्बन्धा चतुर्भगी
गाथा ५२६		सब दोषों की मूल गका
गाथा ५३०		एषणीय और अतपणाश का मूल आधार गुडा शुद्ध परिणाम
गाथा ५३१	क	अक्षित के पा भ
	ख	अचिन अग्नि के तीन भेद
	ग	अचिन अग्नि के दो भेद
गाथा ५३२		अग्नि अग्नि बल्य और अक्षय्य
गाथा ५३३		अग्नि वृत्तिकाय अग्नि के दो भेद
गाथा ५३४	क	अग्नि अक्षय्य अग्नि के चार भेद
	ख	अग्नि वृत्तिकाय अग्नि के चार भेद

- गाथा ५३५ . तेजस्काय वायुकाय और त्रसकाय अक्षित का निषेध
- गाथा ५३६ ख- प्रारम्भ के तीन भंग अशुद्ध और एक भंग शुद्ध
- गाथा ५३७ क- अक्षित पृथ्वीकाय अक्षित की चतुर्भंगी  
ख- अगर्हित का ग्रहण और गर्हित का निषेध
- गाथा ५३८ अगर्हित अक्षित का निषेध
- गाथा ५३९ गर्हित अक्षित का निषेध
- गाथा ५४० क- निक्षिप्त के दो भेद  
ख- प्रत्येक भेद दो-दो भेद
- गाथा ५४१ पृथ्वीकाय अक्षित के ६ भेद  
इसी प्रकार शेष पाँच काय अक्षित के ६-६ भेद  
सब मिलकर षट्काय अक्षित के भेद
- गाथा ५४२-५४३ नक्षित पृथ्वीकाय अक्षित के भंगों का वर्णन
- गाथा ५४४ नक्षित पृथ्वीकाय अक्षित के ४३२ भाँगे बनाने की विधि
- गाथा ५४५-५४८ कल्प्य और अकल्प्य अक्षित सक्षित
- गाथा ५४९ तेजस्काय अक्षित के सात भेद
- गाथा ५५०-५५१ सात भेदों की व्याख्या
- गाथा ५५२-५५३ अक्षित तेजस्काय अक्षित के यतनापूर्वक लेने की विधि
- गाथा ५५४-५५५ क- सोलह भंगों का विवरण  
ख- प्रथम भंग-शुद्ध और शेष भंग अशुद्ध
- गाथा ५५६ क- अत्युष्ण इक्षुरस आदि लेने से दो प्रकार की विराधना  
ग- वायुकाय निक्षिप्त के दो भेद
- गाथा ५५७ क- वनस्पतिकाय और वनकाय निक्षिप्त का वर्णन  
ख- अनंतर निक्षिप्त लेने का निषेध



	ग	परम्पर निनिष्ठ नेने का निषेध सचित्त अचित्त और मिथ्य विहित की चतुर्भंगी अथान्तर भग ४३२ कतामे की विधि अनन्तरा विहित और परपरा विहित का वधन अनित्त विहित की चतुर्भंगी
गाथा १५८		
गाथा ५५६		
गाथा ५६०-५६१		
गाथा ५६२		
गाथा ५६३	घ	सचित्त अचित्त मिथ्य और साधारण से सत्त्व ग तीन चतुर्भंगी
गाथा ५६४		चार सौ बत्तीम अथान्तर भग सहज की व्याख्या
गाथा १६५		सचित्त अचित्त की चतुर्भंगी
गाथा ५६६		आद्र और शुष्क की चतुर्भंगी
गाथा १६७		अल्प और अधिक की चतुर्भंगी
गाथा ५६८		कल्प्य और अकल्प्य सहज की चतुर्भंगी
गाथा १६९-५७१		दायक के चारोस भद्र
गाथा ५७२ ५७७		
गाथा ५७८	ङ	अववाद में २५ दायका में सेना
गाथा ५७९	च	५ दृष्ट दायका में अववाद में भी न लना वातव में आहारादि लेने का निषेध रुद्ध से आहारादि लेने का निषेध मत्त और उ मत्त में आहारादि लेने का निषेध कम्पित हाथदागो में भी उ ज्वर प्रसूत में आहारादि लेने का निषेध
गाथा ५८०		
गाथा ५८१		
गाथा ५८२		
गाथा ५८३		अव और नानिग कुष्ठ बाल से आहारान्क लेने का निषेध
गाथा ५८४		पादुका पहने हुए से रुद्ध से और दृष्टपाद छिन्न से आहारान्क लेने का निषेध
गाथा ५८५		नपुंसक के हाथ से आहारादि लेने का निषेध
गाथा ५८६		सभिषी और बालवत्पा से आहारादि लेने का

- गाथा ५८७ भोजन करती हृष्ट से तथा मंथन करती हुई से आहारादि लेने का निषेध
- गाथा ५८८ आठ प्रकार की निषेध दान्त्यों से आहारादि लेने का निषेध
- गाथा ५८९-५९० पाच प्रकार की दान्त्यों से आहारादि लेने का निषेध
- गाथा ५९१ पटुताय व्यग्रहृन्ता से आहारादि लेने का निषेध
- गाथा ५९२ इस संक्षेप में एक आचार्य का मत
- गाथा ५९३ दो प्रकार की दान्त्यों से आहारादि लेने का निषेध
- गाथा ५९४ साधारण तथा चोरी की वस्तु लेने का निषेध
- गाथा ५९५ प्राभृतिका भवाय और स्थापित द्रव्य लेने का निषेध
- गाथा ५९६ उपयोग युक्त और उपयोग रहित दाता की व्याख्या
- गाथा ५९७ ६०४ निषिद्ध दाताओं से अपवाद में आहारादि लेने का विधान
- गाथा ६०५-६०८ मित्र द्रव्यों के अनेक भंग
- गाथा ६०९ क- अपरिणत द्रव्य के भेद  
ख- द्रव्य अपरिणत के ६ भेद
- गाथा ६१० द्रव्य अपरिणत की व्याख्या
- गाथा ६११ भाव अपरिणत दाता
- गाथा ६१२ भाव अपरिणत ग्रहिता
- गाथा ६१३-६२२ क- लेपकृत द्रव्य लेने का विधान  
ख- लेपकृत द्रव्य के संबंध में प्रश्नोत्तर

गाथा ६२३	अनेपवाले द्रव्य
गाथा ६२४	आप सपवाले द्रव्य
गाथा ६२५	बहु उपवाले द्रव्य
गाथा ६२६	समृष्ट असमृष्ट भावशेष और निरवशेष के आठ भेद
गाथा ६२७	क छान्ति की तीन चतुर्भंगी
	ख चार नौ बस्तीम अथा तरभग
गाथा ६२८	छान्ति ग्रहण करने से लगनेवाले दोष
गाथा ६२९	क ग्रामैषणा के चार निशेष
	ख द्रव्य ग्रामैषणा का उन्नाहरण
	ग भाव ग्रामैषणा के पांच भेद
गाथा ६३० ६३३	द्रव्य ग्रामैषणा के दो उदाहरण
गाथा ६३४	ग्रामैषणा का उपशेष
गाथा ६३५	ख भाव ग्रामैषणा के दो भेद
	ख अप्रगल्भ भाव ग्रामैषणा के पांच भेद
गाथा ६३६	ब समीक्षा के दो भेद
	ख द्वाद समीक्षा के दो भेद
गाथा ६३७ ६३-	वास्तु मयाजना की व्याख्या
गाथा ६३९	भाव समीक्षा की व्याख्या
गाथा ६४० ६४१	द्रव्य समीक्षा के अष्टाव
गाथा ६४ ६४३	आहार का प्रमाण
गाथा ६४४ ६४७	प्रमाण नीच के पांच भेद
गाथा ६४८	अल्पकार के गुण
गाथा ६४९	त्रि अत्रि की व्याख्या
गाथा ६५०	मिनाहार की व्याख्या
गाथा ६५१	वात के तीन भेद
गाथा ६५२ ६५४	तीनही उपवाच और तापारण काय के

	आहार और पानी के विभाग
गाथा ६५५	सांगार और सधूम दोष
गाथा ६५६-६५६	अगार और धूम की व्याख्या,
गाथा ६६०	आहार करने का प्रयोजन
गाथा ६६१	क- आहार करने के ६ कारण
	ख- आहार न करने के ६ कारण
गाथा ६६२-६६४	आहार करने के ६ कारणों का विवेचन
गाथा ६६५	आहार त्यागने का उपदेश
गाथा ६६६-६६८	आहार त्यागने के ६ कारणों का विवेचन
गाथा ६६९	एषणा के सैंतालीस दोष
गाथा ६७०-६७१	उपसहार

जस्सारद्धा एए कहवि समत्तंति विग्घरहियस्स ।  
 सो लक्खिज्जइ भव्वो, पुव्वरिसी एवं भासंति ॥  
 तम्हा जिणपण्णत्ते, अणंतगमपज्जवेहि संजुत्ते ।  
 सज्झाए जहाजोगं, गुरुपसाया अहिज्झिज्जा ॥







# महानिशीह-सुयक्खंध

(महानिशीय-श्रुतस्कन्ध)

यह ग्रंथ अभी मुद्रित नहीं हुआ है। मुनिराज श्री पुण्यविजयजी के द्वारा तैयार की गयी प्रेम-कापी पर से यह विवरण तैयार किया गया है।

## प्रथम अध्ययन 'सल्लुद्धरण'

पृष्ठ १ शास्त्र का प्रयोजन

आरम्भ में तीर्थ और अर्हंतों को नमस्कार। तत्पश्चात् 'सुयं में' वाक्य से विषय प्रारम्भ। तुरन्त ही ऐसा कथन कि छद्मस्थ साधु और साध्वी महानिशीय श्रुतस्कन्ध के अनुसार आचरण करने वाले हों तो एकाग्रचित्त होकर आत्मा में अभिरमण करते हैं।

पृ० २ वैराग्य-वर्धक गाथाएँ जिनमें निःशल्यता प्राप्त करने पर भार दिया है

शार्दूल विक्रीडित छन्द का प्रयोग-(गाथा १२)

पृ० ४ 'ह्य नाण' इत्यादि आवश्यक नियुक्ति को उद्धृत गाथाएँ (गाथा ३५ इत्यादि)

पृ० ६ शास्त्रोद्धार की विधि प्रतिमा-वंदन और श्रुतदेवता विद्या का लेखन—इससे मंत्रित होकर सोने पर स्वप्न की सफलता

पृ० ६ निःशल्य होकर सबको क्षमायना करना।

पृ० ७ इससे केवल की भी प्राप्ति (गाथा ६४)

पृ० ७ दूषित आलोचना के दृष्टांत (गाथा ७३ आदि)



पृ० १० मोक्ष प्राप्त करनेवाली निगल्य श्रमणिदा के नाम

पृ० १४ अपने अपराध क्षुपाने वाला की दुर्गति

पृ० १६ दशवर्षकालिक की गाथा (गाथा १६६)

प्रथम अध्ययन के अन्त में मैंने इस अध्याय नहीं लिखा ऐसा मुझ पर दोष नहीं लिया जाय क्योंकि मरे समय जो आशय प्रति है पर भुटि है । ऐसा लिखा है ।

द्वितीय अध्ययन 'कम्मविदागवागरण'

प्रथम उद्देश (पृ० २० में सम्पूर्ण हुआ है)

(द्वितीय से पंचम उद्देश तक पर्यन्त लुप्त मान्यमान हुआ है)

पृ० २० जीवा का दुःख वर्णन

छठा उद्देश

पृ० २६ धारीरिक और अन्य दुःखों का वर्णन । आश्रयदाता के निरोध से दुःखों का अन्त

सातवाँ उद्देश

पृ० २६ स्त्रीव्रजन का उपदेन

स्त्रीव्रजन सम्बन्धी गौतम महावीर सवाण

पृ० ३७ कथमादि पुष्टपा की स्त्री अभिलाषा तथा मित्रियों के काम का वर्णन

पृ० ४५ परिषद लोग

अमण और भावक धम के दो पद्य

तृतीय अध्ययन (तृतीय उद्देश)

पृ० ४६ प्रारम्भ में लिखा है कि उपर्युक्त दोनों अध्ययनों का समावेश मायात्मक वाचना में है

इसके अन्त में धार अध्ययन (३१) योग्य के लिए ही है ।

अयोग्य व्यक्ति के लिए नहीं है

- पृ. ४६ इन चार अव्ययनों के लिए निर्दिष्ट तपस्या
- पृ. ५० सांगोपांग श्रुत का सार—ये चार अव्ययन हैं
- पृ. ५० मभी श्रेय में विघ्न होता है अतएव मंगल करणीय है.
- पृ. ५१ मंत्र, तंत्र, आदि अनेक विद्याओं के नाम
- पृ. ५२ पांच मंगलों के उपधान का प्रश्न
- पृ. ५४ उपधान विधि
- पृ. ५६ नमस्कार सूत्र के पदादि  
(देखिए “नमस्कार म्वाध्याय” पृ० ६०, ८१) (यह पुस्तक बंबई से प्रकाशित है)
- पृ. ५७ नमस्कार सूत्र का अर्थ
- पृ. ६३ जिनपूजा की चर्चा
- पृ. ६८ तीर्थंकर स्तव में वर्धमान की कथा के प्रसंगों का संक्षेप
- पृ. ७० पंचमंगल की नियुक्ति भाष्य और चूर्ण का उल्लेख
- पृ. ७० “ये सत्र व्युत्थिन्न हो गये थे। वज्रस्वामी ने उद्धार कर मूल सूत्र में लिखा” है। “आचार्य हरिभद्र द्वारा खंडित प्रति के आधार से उद्धार हुआ है च्युति मानूम पड़े तो दोष नहीं देना”—ऐसा उल्लेख है
- पृ. ७१ सिद्धसेन दिवाकर, बृहृवाडी, (बृहृवादी), जकवसेण, (यक्षसेन)देवगुप्त, यशोवर्धन क्षमाश्रमण के शिष्य रविगुप्त, नेमिचन्द्र, जिनदाम गणि क्षमाश्रमण, सत्यश्री प्रमुख युग-प्रधान आचार्यों द्वारा महानिशीथ का बहुत मान हुआ है
- पृ. ७१ पंचनमस्कार के पश्चात् इरियावहिय आदि कहना—  
ऐसा निर्देश—
- पृ. ७४ क्रम से द्वादश अंगों की भी तपस्या विधि और उससे लाभ इत्यादि  
(पृ० ८६ में तृतीय उद्देश समान ऐसा उल्लेख आता है, किन्तु प्रथम-दूसरे के विषय में कोई निर्देश नहीं है)

- पृ ८६ यहाँ लिखा है कि यहाँ अक्षरप्रति भ्रष्ट है अतएव सज्य यहाँ अथ वाचनाभ्रों से सशोधन करलें
- पृ ८६ अथ न लिखा है—तद्द्वयभय ॥ उद्देश १६ ॥

### चतुर्थ अध्ययन

- पृ ८६ कुमभ के टूटा तत्त्व सुप्रति का कथानक
- पृ ९१ माधुभ्रों के कितने न निबिवाचारों की गणना
- पृ ९८ प्रश्न-व्याकरण वृद्ध विवरण का उल्लेख ।
- पृ १०० निबिवाचार क समथन म दाप  
निबिवाचार मे जनभग
- पृ १०२ चौथे अध्ययन का मार यह है कि कुशीन समग से अनत ससार होना है और कुशीन समग छोड़नेवाले की निडि मिलती है ।
- पृ १०२ हरिभद्र का मत है कि चौथे अध्याय के कितने ही वाक्यांक थडा मान्य नहीं है परन्तु वृद्धवाद के अनुसार इनम क्षर नही करनी चाहिए । स्थानाथ खाडि मे वही भी इन अध्ययनमन मूल धान का समथन नहीं किया गया है यह भी हरिभद्राचाय ने लिखा है ।

### पंचम अध्ययन गद्यणीयसार

- पृ १०३ गच्छ म कैसे रहना—इसकी सची
- पृ १०६ गच्छ की मर्यादा दुपगत आचाय नर रहेगी ।
- पृ १०९ गच्छ के स्वल्प का वजन और तत्कालीन निबिवाचारों का उल्लेख
- पृ ११६ अतिम होनेवाले गाधु गाथी भावन और धारिता इन वार द्वारा मर्यादा मान्य ।
- पृ ११७ मज्जभव (मध्यभव) की आम पत्तरीन बनाया गया है
- पृ १२८ तीसरावा मे गाधु का अन्वय

- पृ० १२६ कल्पी के ममत्र में "क्षिरिप्पभ" अनगार का प्रादुर्भाव  
 पृ० १२७ योग्य-अयोग्य अणगार का विवेक  
 पृ० १३३ दस आश्चर्य का वर्णन  
 पृ० १३६ द्रव्यस्तव करने वाला असयत  
 पृ० १३८ जिनालयों का संरक्षण आवश्यक  
 पृ० १३९ उमके जीर्णोद्धार संबंधी चर्चा,  
 पृ० १३९ सावद्याचार्य का महानिशीथ की ६३वीं गाथा की व्याख्या करने में हित्चकिचाना । कारण यह था कि किसी नमय आर्या ने नमस्कार करते समय उनका स्पर्श किया था ।  
 पृ० १४२ उत्सर्ग-अपवाद मार्ग का अयोग्य के समक्ष निरूपण करने के कारण उन्होंने (सावद्याचार्य ने) अनंत ससार बांधा तथा उनके अनेक भव

### षष्ठ अध्यायन—गीयत्थ विहार

- पृ० १४७ दशपूर्वी नदिपेण वेश्यागृह मे  
 पृ० १४८ इसमे दोष-मेवन होने पर गुरु को लिंग (वेप) सौंप देना और प्रायश्चित्त करना—इमका समर्थन  
 पृ० १४२ प्रायश्चित्त की विधि  
 पृ० १४५ मेघमाला का दृष्टांत  
 पृ० १४६ आरंभ-त्याग का उपदेश  
 पृ० १४७ आरंभ-त्याग की अशक्यता के विषय में ईसर का दृष्टान्त,  
 पृ० १४८ ईसर गीसालक हुआ यह निरूपण  
 पृ० १४९ रज्जा आर्यिका का दृष्टांत  
 प्राशुक्त पानी की निद्रा के कारण दुर्विपाक  
 पृ० १६३ अगोतार्य के विषय में लक्षणार्या का दृष्टान्त

### द्वितीय चूलिका

- पृ० १७७ विधिपूर्वक धर्माचरणे की प्रज्ञा

- १८१ चैत्रवदन भवघी प्रायश्चित्त  
स्वाध्याय से वाष्पा देन दावे क लिपि प्रायश्चित्त
- १८३ प्रतिक्रमण तथा पञ्चव्येहा के प्रायश्चित्त
- १८४ पान्दिष्ठापनिका के तथा मुहणनग के प्रायश्चित्त
- १८४ ज्ञानग्रहण सम्बन्धी प्रायश्चित्त
- १६० भिक्षा सम्बन्धी प्रायश्चित्त
- १९० 'धम्मो मंगल' गथा
- १९४ प्रायश्चित्त सूत्र के विच्छेद की चर्चा
- १९८ विद्या मत्रों की चर्चा का जगादि से रखा करता है
- २०१ प्रायश्चित्त विशेष की चर्चा
- २०२ आलाचनादि प्रायश्चित्त
- २०८ हिना सम्बन्धी सुमह की कथा
- २२० यत्नारहित रहने से नसार के विषयी से राजकुल बालिका की कथा
- २३५ सुमह सिद्ध थी का पुत्र था — यह निर्देश
- २४१ २४१ लि वेमि से समाप्ति । ५४५४ अन्त्याय



